



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.1

न्यूःशुवाचं प्रमहे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः ।
नूचिद्धि रत्नं ससता मिवाविदन्न दुष्टुति र्द्विविणो देषु शस्यते ॥

(नि – भरामहे से पूर्व लगाकर) (सुवाचम) उत्तम वाणियाँ (प्रार्थनाओं तथा पूजा की) (प्र – भरामहे से पूर्व लगाकर) (महे) महान् (भरामहे – नि प्र भरामहे) निश्चित रूप से विनप्रता के साथ प्राप्त रवाता है (गिर) स्तुति की वाणियाँ (इन्द्राय) इन्द्र के लिए, परमात्मा के लिए (सदने) घर में (विवस्वतः) यज्ञ करने वाले विद्वान् (नूचित्हि) निश्चित रूप से शीघ्र (रत्नम्) सम्पदा (ससताम् इव) निद्रा की अवस्था से, आलस्य और अकर्मण्यता से (आविदत) वापिस प्राप्त करते हैं (न) नहीं (दुष्टुतिः) कुटिल व्यक्तियों के द्वारा की गई प्रशंसा (द्रविणो देषु) दान देने वालों के बीच में या उनके सम्बन्ध में (शस्यते) मूल्यांकन।

व्याख्या :-

यज्ञ के स्थान पर किस प्रकार के वातावरण का निर्माण होता है?

यज्ञ करने वाले विद्वानों के घर पर प्रार्थना, पूजा और इन्द्र अर्थात् परमात्मा की स्तुति की ध्वनियाँ पूरी विनप्रता के साथ उपलब्ध होती हैं। दूसरी तरफ निद्रालीन, आलसी और थके हुए लोगों से सम्पदा निश्चित रूप से चली जाती है। उदार और दानी लोगों की उपस्थिति में धूर्त और कुटिल लोगों की प्रशंसा का कोई मूल्य नहीं होता।

जीवन में सार्थकता :-

वास्तविक यज्ञ करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?

जो लोग वास्तविक यज्ञ करते हैं अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए अपना सहयोग देते हैं, उन्हें निश्चित रूप से परमात्मा की भक्ति का उपहार मिलता है। वे इसलिए यज्ञ करते हैं क्योंकि वे महसूस करते हैं कि उनकी सम्पदा पर अन्य जरूरतमंद लोगों का सामाजिक अधिकार है; क्योंकि वे जरूरतमंद लोगों के प्रति विनप्र होते हैं; क्योंकि उन्हें इस बात की अनुभूति होती है कि सम्पदा का वास्तविक दाता तो केवल भगवान है।

अतः ऐसे विवस्वतः लोगों को परमात्मा की पूजा और स्तुति रूपी विनप्र वाणियाँ उपहार में मिलती हैं। यह एक मूल वास्तविकता है कि वास्तविक यज्ञ करने वाले लोग ही वास्तविक परमात्म तत्व के अनुभूतिकर्ता होते हैं, क्योंकि वास्तविक यज्ञ उन्हें अहकार रहित और इच्छा रहित बना देता है।

जबकि अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति सोये हुए लोगों से उनकी सम्पदा दिव्य शक्तियों के द्वारा वापिस ले ली जाती है।

उदार और दानी लोगों की प्रशंसा सर्वत्र होती है, परन्तु ऐसे लोगों के मध्य धूर्त और कुटिल लोगों की प्रशंसा को कोई मान्यता नहीं मिलती।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.1

न्यूःशुवाचं प्रमहे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः ।
नूचिद्धि रत्नं ससता मिवाविदन्न दुष्टुति र्द्विविणो देषु शस्यते ॥

(नि – भरामहे से पूर्व लगाकर) (सुवाचम) उत्तम वाणियाँ (प्रार्थनाओं तथा पूजा की) (प्र – भरामहे से पूर्व लगाकर) (महे) महान् (भरामहे – नि प्र भरामहे) निश्चित रूप से विनप्रता के साथ प्राप्त रवाता है (गिर) स्तुति की वाणियाँ (इन्द्राय) इन्द्र के लिए, परमात्मा के लिए (सदने) घर में (विवस्वतः) यज्ञ करने वाले विद्वान् (नूचित्हि) निश्चित रूप से शीघ्र (रत्नम्) सम्पदा (ससताम् इव) निद्रा की अवस्था से, आलस्य और अकर्मण्यता से (आविदत) वापिस प्राप्त करते हैं (न) नहीं (दुष्टुतिः) कुटिल व्यक्तियों के द्वारा की गई प्रशंसा (द्रविणो देषु) दान देने वालों के बीच में या उनके सम्बन्ध में (शस्यते) मूल्यांकन।

व्याख्या :-

यज्ञ के स्थान पर किस प्रकार के वातावरण का निर्माण होता है?

यज्ञ करने वाले विद्वानों के घर पर प्रार्थना, पूजा और इन्द्र अर्थात् परमात्मा की स्तुति की ध्वनियाँ पूरी विनप्रता के साथ उपलब्ध होती हैं। दूसरी तरफ निद्रालीन, आलसी और थके हुए लोगों से सम्पदा निश्चित रूप से चली जाती है। उदार और दानी लोगों की उपस्थिति में धूर्त और कुटिल लोगों की प्रशंसा का कोई मूल्य नहीं होता।

जीवन में सार्थकता :-

वास्तविक यज्ञ करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का होता है?

जो लोग वास्तविक यज्ञ करते हैं अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए अपना सहयोग देते हैं, उन्हें निश्चित रूप से परमात्मा की भक्ति का उपहार मिलता है। वे इसलिए यज्ञ करते हैं क्योंकि वे महसूस करते हैं कि उनकी सम्पदा पर अन्य जरूरतमंद लोगों का सामाजिक अधिकार है; क्योंकि वे जरूरतमंद लोगों के प्रति विनप्र होते हैं; क्योंकि उन्हें इस बात की अनुभूति होती है कि सम्पदा का वास्तविक दाता तो केवल भगवान है।

अतः ऐसे विवस्वतः लोगों को परमात्मा की पूजा और स्तुति रूपी विनप्र वाणियाँ उपहार में मिलती हैं। यह एक मूल वास्तविकता है कि वास्तविक यज्ञ करने वाले लोग ही वास्तविक परमात्म तत्व के अनुभूतिकर्ता होते हैं, क्योंकि वास्तविक यज्ञ उन्हें अहकार रहित और इच्छा रहित बना देता है।

जबकि अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति सोये हुए लोगों से उनकी सम्पदा दिव्य शक्तियों के द्वारा वापिस ले ली जाती है।

उदार और दानी लोगों की प्रशंसा सर्वत्र होती है, परन्तु ऐसे लोगों के मध्य धूर्त और कुटिल लोगों की प्रशंसा को कोई मान्यता नहीं मिलती।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.2

दुरोअश्वस्य दुरइन्द्रगोरसिदुरो यवस्य वसुनइनस्पतिः ।
शिक्षानरः प्रदिवोअकामकर्शनः सखासखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि ॥

(दुरः) दाता, सुखों का द्वार (अश्वस्य) अश्वों का, कर्मन्द्रियों का (दुरः) दाता, सुखों का द्वार (इन्द्र) परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (गोः) गाय आदि का, ज्ञानेन्द्रियों का (असि) हो (दुरः) दाता, सुखों का द्वार (यवस्य) यव आदि का (वसुनः) आवास के साधनों का (इनः) स्वामी (पतिः) संरक्षक (शिक्षानरः) शिक्षा देने के लिए (प्रदिवः) शिक्षा लागू करने के लिए प्रकाशित (अकाम कर्शनः) आलसी और अकर्मण्य लोगों को नष्ट करना (सखा सखिभ्यः) मित्रों के लिए मित्र (तम) आपके लिए (इदम्) यह (प्रार्थना, निवेदन) (गृणीमसि) हम स्तुति करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें क्या देता है?

इन्द्र अर्थात् परमात्मा के निम्न लक्षणों के कारण हम परमात्मा की महिमा में अपने शब्दों को प्रस्तुत करते हैं :-

- (1) वह अश्वों का दाता है। अश्व अर्थात् यातायात के सभी साधन तथा हमारी कर्मन्द्रियाँ।
- (2) वह गऊओं का दाता है। गाय अर्थात् लाभकारी पशु तथा हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ।
- (3) वह जौ अर्थात् सभी अनाजों का दाता है।
- (4) वह सभी प्रकार के आवासों का मालिक तथा संरक्षक है।
- (5) वह हमें सभी प्रकार के ज्ञान और प्रकाश देता है जिससे हम उसके ज्ञान का क्रियान्वयन कर सकें।
- (6) वह आलसी और थके हुए लोगों को कुचल देता है।
- (7) वह मित्रों का मित्र है।

जीवन में सार्थकता :-

सर्वोच्च इन्द्र की महिमा के लिए शब्द प्रस्तुत करने में कौन सक्षम है?

सर्वोच्च इन्द्र के द्वारा कौन कुचला जाता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, इन्द्र अर्थात् परमात्मा ने बिना किसी भेदभाव के सब जीवों के प्रयोग करने के लिए यह सृष्टि प्रदान की है। जो मानव अपनी इन्द्रियों पर यथार्थ में नियंत्रण करके इन्द्र बनते हैं, केवल वही सर्वोच्च इन्द्र की महिमागान के लिए अपने शब्द और वाणियाँ प्रस्तुत करने के योग्य होते हैं। केवल वीर पुरुष ही इस सृष्टि तथा इस जीवन के महत्त्व और सदुपयोग के प्रति चेतन होता है। इन्द्र के अतिरिक्त अन्य सभी लोग सर्वोच्च इन्द्र के प्रति लगाव के बिना अचेतन रहकर इस सृष्टि का भोग करते हैं। इस प्रकार ऐसे सभी लोग केवल पाश्विक जीवन जीते हुए यथार्थ में परमात्मा की महिमा में अपने शब्द प्रस्तुत करने के योग्य नहीं होते। सबसे घटिया स्तर पर आलसी और थके हुए लोग तो सर्वोच्च इन्द्र के द्वारा सामान्य रूप से ही कुचल दिये जाते हैं।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.2

दुरोअश्वस्य दुरइन्द्रगोरसिदुरो यवस्य वसुनइनस्पतिः ।
शिक्षानरः प्रदिवोअकामकर्शनः सखासखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि ॥

(दुरः) दाता, सुखों का द्वार (अश्वस्य) अश्वों का, कर्मन्द्रियों का (दुरः) दाता, सुखों का द्वार (इन्द्र) परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (गोः) गाय आदि का, ज्ञानेन्द्रियों का (असि) हो (दुरः) दाता, सुखों का द्वार (यवस्य) यव आदि का (वसुनः) आवास के साधनों का (इनः) स्वामी (पतिः) संरक्षक (शिक्षानरः) शिक्षा देने के लिए (प्रदिवः) शिक्षा लागू करने के लिए प्रकाशित (अकाम कर्शनः) आलसी और अकर्मण्य लोगों को नष्ट करना (सखा सखिभ्यः) मित्रों के लिए मित्र (तम) आपके लिए (इदम्) यह (प्रार्थना, निवेदन) (गृणीमसि) हम स्तुति करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें क्या देता है?

इन्द्र अर्थात् परमात्मा के निम्न लक्षणों के कारण हम परमात्मा की महिमा में अपने शब्दों को प्रस्तुत करते हैं :—

- (1) वह अश्वों का दाता है। अश्व अर्थात् यातायात के सभी साधन तथा हमारी कर्मन्द्रियाँ।
- (2) वह गऊओं का दाता है। गाय अर्थात् लाभकारी पशु तथा हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ।
- (3) वह जौ अर्थात् सभी अनाजों का दाता है।
- (4) वह सभी प्रकार के आवासों का मालिक तथा संरक्षक है।
- (5) वह हमें सभी प्रकार के ज्ञान और प्रकाश देता है जिससे हम उसके ज्ञान का क्रियान्वयन कर सकें।
- (6) वह आलसी और थके हुए लोगों को कुचल देता है।
- (7) वह मित्रों का मित्र है।

जीवन में सार्थकता :-

सर्वोच्च इन्द्र की महिमा के लिए शब्द प्रस्तुत करने में कौन सक्षम है?

सर्वोच्च इन्द्र के द्वारा कौन कुचला जाता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, इन्द्र अर्थात् परमात्मा ने बिना किसी भेदभाव के सब जीवों के प्रयोग करने के लिए यह सृष्टि प्रदान की है। जो मानव अपनी इन्द्रियों पर यथार्थ में नियंत्रण करके इन्द्र बनते हैं, केवल वही सर्वोच्च इन्द्र की महिमागान के लिए अपने शब्द और वाणियाँ प्रस्तुत करने के योग्य होते हैं। केवल वीर पुरुष ही इस सृष्टि तथा इस जीवन के महत्त्व और सदुपयोग के प्रति चेतन होता है। इन्द्र के अतिरिक्त अन्य सभी लोग सर्वोच्च इन्द्र के प्रति लगाव के बिना अचेतन रहकर इस सृष्टि का भोग करते हैं। इस प्रकार ऐसे सभी लोग केवल पाश्विक जीवन जीते हुए यथार्थ में परमात्मा की महिमा में अपने शब्द प्रस्तुत करने के योग्य नहीं होते। सबसे घटिया स्तर पर आलसी और थके हुए लोग तो सर्वोच्च इन्द्र के द्वारा सामान्य रूप से ही कुचल दिये जाते हैं।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.3

शचीवइन्द्रपुरुकृद् द्युमत्तमतवेदिदमभितश्चेकितेवसु ।
अतः संगृभ्याभिभूताभरमात्वायतोजरितुः काममूनयीः ॥

(शचीवः) सभी विद्वानों में सर्वोच्च विद्वता, सभी शक्तियों, बलों और ऊर्जाओं का स्रोत (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (पुरुकृत) प्रत्येक को धारण और पूर्ण करता है (द्युमत्तम) सभी ज्ञानों का सर्वोच्च प्रकाश (तवेत) केवल आपका है (इदम्) यह (अभितः) सभी दिशाओं में (चेकिते) यह सर्वत्र जाना जाता है (वसु) समस्त सम्पदा, सभी आवास (अतः) इसमें से (संगृभ्यः) प्राप्त करो और प्रयोग करो (अभिभूते) सभी बुराईयों और शत्रुओं का नाशक (आभरः) हमें पूर्ण करो (मा) नहीं (त्वायतः) आपको अपनाने का इच्छुक (जरितुः) आपकी महिमा गाने वालों का (कामम्) इच्छाएँ (उनयीः) अपूर्ण ।

व्याख्या :-

सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा कौन है?
किसकी इच्छाएँ अपूर्ण नहीं रहती?

सर्वोच्च इन्द्र अर्थात् परमात्मा :-

- (1) शचीवः – सभी विद्वानों में सर्वोच्च विद्वता, सभी शक्तियों, बलों और ऊर्जाओं का स्रोत
- (2) पुरुकृत – प्रत्येक को धारण और पूर्ण करता है
- (3) द्युमत्तम – सभी ज्ञानों का सर्वोच्च प्रकाश ।

यह सर्वमान्य है कि सभी सम्पदाएं और सभी दिशाओं में सभी आवास केवल उसी के हैं। उस सर्वोच्च इन्द्र की सम्पदा का एक छोटा सा भाग मैं प्राप्त करता हूँ और प्रयोग करता हूँ। कृपया मेरे जीवन को पूर्ण करो। आप सभी बुराईयों और शत्रुओं का नाश करने वाले हो। जो लोग आपकी इच्छा करते हैं और आपकी महिमा गाते हैं, आप उनकी इच्छाओं को अपूर्ण नहीं छोड़ते ।

जीवन में सार्थकता :-

जब हम सर्वोच्च आध्यात्मिक इच्छा को धारण कर लेते हैं तो क्या होता है?

उच्च अधिकारियों के साथ पवित्र और दिव्य सम्बन्धों का क्या महत्त्व है?

हमारी सर्वोच्च इच्छा एक ही होनी चाहिए कि हम सर्वोच्च ऊर्जा अर्थात् परमात्मा के साथ अटूट सम्बन्ध की अनुभूति प्राप्त कर सकें। एक बार जब हम इस सर्वोच्च आध्यात्मिक इच्छा की पूर्ति के लिए अग्रसर होते हैं तो हम निम्न स्तरीय सांसारिक इच्छाओं से असम्बद्ध हो जाते हैं और यदि किसी अवस्था में हम कुछ भी इच्छा करते हैं तो वे इच्छाएँ परमात्मा के द्वारा निश्चित रूप से पूरी की जाती हैं। सर्वोच्च आध्यात्मिक इच्छा के बिना प्रत्येक व्यक्ति सांसारिक स्तर का निम्न जीवन जीता है। यह ऐसा होता है जैसे सर्वोच्च दाता से जुड़े बिना भौतिक वस्तुओं के पीछे भागना।

इसी वर्ग या समाज में कार्य करते हुए यदि हम अपने सर्वोच्च अधिकारियों या नेतृत्वकर्ता की संगति की इच्छा करते हैं तो हमारे लिए निम्न स्तर की इच्छाएँ निरर्थक हो जाती हैं या उन्हें प्राप्त करना सरल हो जाता है। अतः उच्च अधिकारियों के साथ सदैव शुद्ध और दिव्य सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करो।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.3

शचीवइन्द्रपुरुकृद् द्युमत्तमतवेदिदमभितश्चेकितेवसु ।
अतः संगृभ्याभिभूताभरमात्वायतोजरितुः काममूनयीः ॥

(शचीवः) सभी विद्वानों में सर्वोच्च विद्वता, सभी शक्तियों, बलों और ऊर्जाओं का स्रोत (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (पुरुकृत) प्रत्येक को धारण और पूर्ण करता है (द्युमत्तम) सभी ज्ञानों का सर्वोच्च प्रकाश (तवेत) केवल आपका है (इदम्) यह (अभितः) सभी दिशाओं में (चेकिते) यह सर्वत्र जाना जाता है (वसु) समस्त सम्पदा, सभी आवास (अतः) इसमें से (संगृभ्यः) प्राप्त करो और प्रयोग करो (अभिभूते) सभी बुराईयों और शत्रुओं का नाशक (आभरः) हमें पूर्ण करो (मा) नहीं (त्वायतः) आपको अपनाने का इच्छुक (जरितुः) आपकी महिमा गाने वालों का (कामम्) इच्छाएँ (उनयीः) अपूर्ण ।

व्याख्या :-

सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा कौन है?
किसकी इच्छाएँ अपूर्ण नहीं रहती?

सर्वोच्च इन्द्र अर्थात् परमात्मा :-

- (1) शचीवः – सभी विद्वानों में सर्वोच्च विद्वता, सभी शक्तियों, बलों और ऊर्जाओं का स्रोत
- (2) पुरुकृत – प्रत्येक को धारण और पूर्ण करता है
- (3) द्युमत्तम – सभी ज्ञानों का सर्वोच्च प्रकाश ।

यह सर्वमान्य है कि सभी सम्पदाएं और सभी दिशाओं में सभी आवास केवल उसी के हैं। उस सर्वोच्च इन्द्र की सम्पदा का एक छोटा सा भाग मैं प्राप्त करता हूँ और प्रयोग करता हूँ। कृपया मेरे जीवन को पूर्ण करो। आप सभी बुराईयों और शत्रुओं का नाश करने वाले हो। जो लोग आपकी इच्छा करते हैं और आपकी महिमा गाते हैं, आप उनकी इच्छाओं को अपूर्ण नहीं छोड़ते ।

जीवन में सार्थकता :-

जब हम सर्वोच्च आध्यात्मिक इच्छा को धारण कर लेते हैं तो क्या होता है?

उच्च अधिकारियों के साथ पवित्र और दिव्य सम्बन्धों का क्या महत्त्व है?

हमारी सर्वोच्च इच्छा एक ही होनी चाहिए कि हम सर्वोच्च ऊर्जा अर्थात् परमात्मा के साथ अटूट सम्बन्ध की अनुभूति प्राप्त कर सकें। एक बार जब हम इस सर्वोच्च आध्यात्मिक इच्छा की पूर्ति के लिए अग्रसर होते हैं तो हम निम्न स्तरीय सांसारिक इच्छाओं से असम्बद्ध हो जाते हैं और यदि किसी अवस्था में हम कुछ भी इच्छा करते हैं तो वे इच्छाएँ परमात्मा के द्वारा निश्चित रूप से पूरी की जाती हैं। सर्वोच्च आध्यात्मिक इच्छा के बिना प्रत्येक व्यक्ति सांसारिक स्तर का निम्न जीवन जीता है। यह ऐसा होता है जैसे सर्वोच्च दाता से जुड़े बिना भौतिक वस्तुओं के पीछे भागना।

इसी वर्ग या समाज में कार्य करते हुए यदि हम अपने सर्वोच्च अधिकारियों या नेतृत्वकर्ता की संगति की इच्छा करते हैं तो हमारे लिए निम्न स्तर की इच्छाएँ निरर्थक हो जाती हैं या उन्हें प्राप्त करना सरल हो जाता है। अतः उच्च अधिकारियों के साथ सदैव शुद्ध और दिव्य सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करो।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.4

एभिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानोअमतिंगोभिरश्विना ।
इन्द्रेणदस्युंदरयन्त्तइन्दुभिर्युतद्वेषसः समिषारभेमहि ॥

(एभिः) इसके साथ (द्युभिः) प्रकाशित करने वाला ज्ञान (सुमनः) महान्, पवित्र तथा दिव्य मन बनो (एभिः) इनके साथ (इन्दुभिः) महान् गुणों के साथ (निरुन्धानः) रोक दो, बाधित करो (अमतिम्) अज्ञानता आदि (गोभिः) गाय आदि, ज्ञानेन्द्रियाँ (अश्विना) प्राणों का जोड़ा (इन्द्रेण) इन्द्रियों का नियंत्रण करके (दस्युम्) धूर्त मानसिकता को (दरयन्त) नष्ट करते हुए (इन्दुभिः युत द्वेषसः) बिना शत्रुता के (सम – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (इषा) दिव्य प्रेरणाओं के साथ (रभेमहि – सम रभेमहि) प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करें।

व्याख्या :-

अज्ञानता का नाश कैसे किया जाये?

एक दिव्य जीवन कैसे बना जाये?

अज्ञानता का नाश करने के लिए गजओं अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों के साथ, प्राणों के साथ तथा अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करके अपने जीवन और अन्य लोगों के जीवन में से धूर्त मानसिकता का नाश करके एक पवित्र, महान् और दिव्य मन का निर्माण करें जिसमें प्रकाशित ज्ञान और महान् शुभ गुण हों। शुभ गुणों के साथ ही अन्य लोगों से शत्रुता किये बिना हम एक दिव्य जीवन बन सकते हैं। अपना प्रत्येक कार्य दिव्य निर्देशों के साथ प्रारम्भ करो।

जीवन में सार्थकता :-

एक दिव्य जीवन शत्रुता रहित कैसे होता है?

दिव्य जीवन के लक्षणों को निम्न प्रकार से सूचीबद्ध किया जा सकता है :-

(1) प्रकाशित ज्ञान, (2) महान् शुभ गुण, (3) स्वरथ भोजन ग्रहण करके अच्छा स्वास्थ्य, (4) प्राणों के जोड़े पर नियंत्रण, (5) इन्द्रियों पर नियंत्रण तथा (6) प्रत्येक कार्य दिव्य प्रेरणाओं के साथ प्रारम्भ करना।

ऐसा महान्, पवित्र और दिव्य जीवन अन्ततः शत्रुता मुक्त ही होगा। न तो उसका किसी के प्रति शत्रुता भाव होगा और न किसी का उसके प्रति शत्रुता भाव होगा।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.4

एभिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानोअमतिंगोभिरश्विना ।
इन्द्रेणदस्युंदरयन्त्तइन्दुभिर्युतद्वेषसः समिषारभेमहि ॥

(एभिः) इसके साथ (द्युभिः) प्रकाशित करने वाला ज्ञान (सुमनः) महान्, पवित्र तथा दिव्य मन बनो (एभिः) इनके साथ (इन्दुभिः) महान् गुणों के साथ (निरुन्धानः) रोक दो, बाधित करो (अमतिम्) अज्ञानता आदि (गोभिः) गाय आदि, ज्ञानेन्द्रियाँ (अश्विना) प्राणों का जोड़ा (इन्द्रेण) इन्द्रियों का नियंत्रण करके (दस्युम्) धूर्त मानसिकता को (दरयन्त) नष्ट करते हुए (इन्दुभिः युत द्वेषसः) बिना शत्रुता के (सम – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (इषा) दिव्य प्रेरणाओं के साथ (रभेमहि – सम रभेमहि) प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करें।

व्याख्या :-

अज्ञानता का नाश कैसे किया जाये?

एक दिव्य जीवन कैसे बना जाये?

अज्ञानता का नाश करने के लिए गजओं अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों के साथ, प्राणों के साथ तथा अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करके अपने जीवन और अन्य लोगों के जीवन में से धूर्त मानसिकता का नाश करके एक पवित्र, महान् और दिव्य मन का निर्माण करें जिसमें प्रकाशित ज्ञान और महान् शुभ गुण हों। शुभ गुणों के साथ ही अन्य लोगों से शत्रुता किये बिना हम एक दिव्य जीवन बन सकते हैं। अपना प्रत्येक कार्य दिव्य निर्देशों के साथ प्रारम्भ करो।

जीवन में सार्थकता :-

एक दिव्य जीवन शत्रुता रहित कैसे होता है?

दिव्य जीवन के लक्षणों को निम्न प्रकार से सूचीबद्ध किया जा सकता है :-

(1) प्रकाशित ज्ञान, (2) महान् शुभ गुण, (3) स्वरथ भोजन ग्रहण करके अच्छा स्वास्थ्य, (4) प्राणों के जोड़े पर नियंत्रण, (5) इन्द्रियों पर नियंत्रण तथा (6) प्रत्येक कार्य दिव्य प्रेरणाओं के साथ प्रारम्भ करना।

ऐसा महान्, पवित्र और दिव्य जीवन अन्ततः शत्रुता मुक्त ही होगा। न तो उसका किसी के प्रति शत्रुता भाव होगा और न किसी का उसके प्रति शत्रुता भाव होगा।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.5

समिन्द्ररायासमिषारभेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः ।
सं देव्याप्रमत्यावीरशुष्यागोअग्रयाश्वत्यारभेमहि ॥

(सम् – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (राया) गौरवशाली सम्पदा के साथ (सम् – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (इषा) दिव्य प्रेरणाओं के साथ (रभेमहि – सम् रभेमहि) प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करो (सम् वाजेभिः) सभी शक्तियों के साथ (पुरुश्चन्द्रैः) धारण करने वाली और पूर्ण करने वाली (अभिद्युभिः) प्रकाशित ज्ञान के साथ (सम् – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (देव्या) दिव्य लक्षणों के साथ (प्रमत्या) तीक्ष्ण बुद्धि (वीर शुष्या) शत्रुओं को कम्पित करने वाली बहादुरी (गो अग्रया) ज्ञानेन्द्रियों का महत्व (अश्वावत्या) बलशाली कर्मेन्द्रियाँ (रभेमहि – सम् रभेमहि) प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करो।

व्याख्या :-

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के लिए किन शक्तियों की आवश्यकता होती है? हे इन्द्र, सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा! हम अपना प्रत्येक कार्य अपने पास उपलब्ध निम्न शक्तियों के साथ कर पायें :-

(1) गौरवशाली सम्पदा के साथ, (2) दिव्य प्रेरणाओं के साथ, (3) स्वयं को पोषण और पूर्ण करने की सभी शक्तियों के साथ, (4) प्रकाशित ज्ञान के साथ, (5) दिव्य लक्षणों के साथ, (6) तीक्ष्ण बुद्धि के साथ, (7) शत्रुओं को कम्पित करने योग्य साहस के साथ, (8) ज्ञानेन्द्रियों को उचित महत्व देते हुए, (9) बलशाली कर्मेन्द्रियों के साथ।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे जीवन को आध्यात्मिक बनाने के लिए क्या आवश्यक है?

हमें सर्वोच्च शक्ति से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि एक तेजस्वी चमकदार जीवन के लिए हमें दिव्यताओं सहित सभी शक्तियाँ तथा पदार्थ प्रदान करें। केवल भौतिक सुविधाओं के पीछे भागने से यह सम्भव नहीं होता, अपितु इसके लिए हमें सर्वोच्च शक्ति परमात्मा से दिव्यताओं की प्राप्ति के लिए एक साधक का जीवन जीना पड़ता है। परमात्मा के प्रति पूर्ण साधना और दिव्य लक्षणों के अभाव में सभी पदार्थ तथा सामाजिक शक्तियाँ हमें भौतिकतावाद के पथ पर ही ले जायेंगी। जबकि साधना, श्रद्धा और दिव्यताएं हमारे जीवन को आध्यात्मिक बना देती हैं।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.5

समिन्द्ररायासमिषारभेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः ।
सं देव्याप्रमत्यावीरशुष्यागोअग्रयाश्वत्यारभेमहि ॥

(सम् – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (राया) गौरवशाली सम्पदा के साथ (सम् – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (इषा) दिव्य प्रेरणाओं के साथ (रभेमहि – सम् रभेमहि) प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करो (सम् वाजेभिः) सभी शक्तियों के साथ (पुरुश्चन्द्रैः) धारण करने वाली और पूर्ण करने वाली (अभिद्युभिः) प्रकाशित ज्ञान के साथ (सम् – रभेमहि से पूर्व लगाकर) (देव्या) दिव्य लक्षणों के साथ (प्रमत्या) तीक्ष्ण बुद्धि (वीर शुष्या) शत्रुओं को कम्पित करने वाली बहादुरी (गो अग्रया) ज्ञानेन्द्रियों का महत्व (अश्वावत्या) बलशाली कर्मेन्द्रियाँ (रभेमहि – सम् रभेमहि) प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करो।

व्याख्या :-

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के लिए किन शक्तियों की आवश्यकता होती है? हे इन्द्र, सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा! हम अपना प्रत्येक कार्य अपने पास उपलब्ध निम्न शक्तियों के साथ कर पायें :-

(1) गौरवशाली सम्पदा के साथ, (2) दिव्य प्रेरणाओं के साथ, (3) स्वयं को पोषण और पूर्ण करने की सभी शक्तियों के साथ, (4) प्रकाशित ज्ञान के साथ, (5) दिव्य लक्षणों के साथ, (6) तीक्ष्ण बुद्धि के साथ, (7) शत्रुओं को कम्पित करने योग्य साहस के साथ, (8) ज्ञानेन्द्रियों को उचित महत्व देते हुए, (9) बलशाली कर्मेन्द्रियों के साथ।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे जीवन को आध्यात्मिक बनाने के लिए क्या आवश्यक है?

हमें सर्वोच्च शक्ति से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि एक तेजस्वी चमकदार जीवन के लिए हमें दिव्यताओं सहित सभी शक्तियाँ तथा पदार्थ प्रदान करें। केवल भौतिक सुविधाओं के पीछे भागने से यह सम्भव नहीं होता, अपितु इसके लिए हमें सर्वोच्च शक्ति परमात्मा से दिव्यताओं की प्राप्ति के लिए एक साधक का जीवन जीना पड़ता है। परमात्मा के प्रति पूर्ण साधना और दिव्य लक्षणों के अभाव में सभी पदार्थ तथा सामाजिक शक्तियाँ हमें भौतिकतावाद के पथ पर ही ले जायेंगी। जबकि साधना, श्रद्धा और दिव्यताएं हमारे जीवन को आध्यात्मिक बना देती हैं।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.6

तेत्वामदाअमदन्तानिवृष्ण्यातेसोमासो वृत्रहत्येषुसत्यते ।
यत्कारवेदश वृत्राण्यप्रतिबर्हिष्मतेनिसहस्राणिबर्हयः ॥

(ते) वे (त्वा) आपको (मदः) हर्ष पूर्ण (अमदन) प्रसन्नता देने वाले बनों (तानि) वे (वृष्ण्या) वर्षा करते हुए (सब पर प्रसन्नता की) (ते) वे (सोमासः) शुभ गुण, शुभ कार्य (वृत्र हत्येषु) मन की वृत्तियों और आवरणों के नाश में (सत्पते) सत्य का संरक्षक (परमात्मा) (यत्) जिसको (आप) (कारवे) कार्य करते हुए (दश) दसियों (वृत्राणि) आवरण, वृत्तियाँ (अप्रति) नापसन्द (बर्हिष्मते) प्रकाशित मन के लिए (नि – बर्हयः से पूर्व लगाकर) (सहस्राणि) हजारों (बर्हयः – नि बर्हयः) पूरी तरह नष्ट करते हैं।

व्याख्या :-

चित्त की वृत्तियों का नाश कौन कर सकता है?

हे सत्पते, सत्य के संरक्षक! आपके आनन्दित लोग सबको और आपको भी प्रसन्नता देने योग्य हों। ऐसे लोगों के द्वारा की गई वर्षा, उनके सद्कार्य तथा शुभ गुण मन की वृत्तियों के प्रति निश्चयात्मक हों जिससे दसियों हजारों निरर्थक वृत्तियों और आवरणों को नष्ट करके आपका आनन्द ही उनके लिए प्रकाशित बुद्धि का आनन्द दे सकता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा को प्रसन्न कैसे करें?

परमात्मा सत्य का संरक्षक है। इसका अभिप्राय है कि परमात्मा सत्य को प्रेम करता है। केवल सत्य के द्वारा ही हम परमात्मा को प्रसन्न कर सकते हैं और शुभ कार्य, शुभ लक्षणों और परिणामतः सब पर प्रसन्नता की वर्षा कर सकते हैं। एक बार जब हम पूर्ण सत्य के मार्ग पर चल पड़ते हैं तो एक प्रकाशित मन अपनी वृत्तियों से भी छुटकारा पा लेता है। ऐसा जीवन सभी नापसन्द वृत्तियों का नाश करने के लिए सफलता पूर्वक परमात्मा के आनन्द को प्राप्त कर लेता है।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.6

तेत्वामदाअमदन्तानिवृष्ण्यातेसोमासो वृत्रहत्येषुसत्यते ।
यत्कारवेदश वृत्राण्यप्रतिबर्हिष्मतेनिसहस्राणिबर्हयः ॥

(ते) वे (त्वा) आपको (मदः) हर्ष पूर्ण (अमदन) प्रसन्नता देने वाले बनों (तानि) वे (वृष्ण्या) वर्षा करते हुए (सब पर प्रसन्नता की) (ते) वे (सोमासः) शुभ गुण, शुभ कार्य (वृत्र हत्येषु) मन की वृत्तियों और आवरणों के नाश में (सत्पते) सत्य का संरक्षक (परमात्मा) (यत्) जिसको (आप) (कारवे) कार्य करते हुए (दश) दसियों (वृत्राणि) आवरण, वृत्तियाँ (अप्रति) नापसन्द (बर्हिष्मते) प्रकाशित मन के लिए (नि – बर्हयः से पूर्व लगाकर) (सहस्राणि) हजारों (बर्हयः – नि बर्हयः) पूरी तरह नष्ट करते हैं।

व्याख्या :-

चित्त की वृत्तियों का नाश कौन कर सकता है?

हे सत्पते, सत्य के संरक्षक! आपके आनन्दित लोग सबको और आपको भी प्रसन्नता देने योग्य हों। ऐसे लोगों के द्वारा की गई वर्षा, उनके सद्कार्य तथा शुभ गुण मन की वृत्तियों के प्रति निश्चयात्मक हों जिससे दसियों हजारों निरर्थक वृत्तियों और आवरणों को नष्ट करके आपका आनन्द ही उनके लिए प्रकाशित बुद्धि का आनन्द दे सकता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा को प्रसन्न कैसे करें?

परमात्मा सत्य का संरक्षक है। इसका अभिप्राय है कि परमात्मा सत्य को प्रेम करता है। केवल सत्य के द्वारा ही हम परमात्मा को प्रसन्न कर सकते हैं और शुभ कार्य, शुभ लक्षणों और परिणामतः सब पर प्रसन्नता की वर्षा कर सकते हैं। एक बार जब हम पूर्ण सत्य के मार्ग पर चल पड़ते हैं तो एक प्रकाशित मन अपनी वृत्तियों से भी छुटकारा पा लेता है। ऐसा जीवन सभी नापसन्द वृत्तियों का नाश करने के लिए सफलता पूर्वक परमात्मा के आनन्द को प्राप्त कर लेता है।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.7

युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुयापुरापुरंसमिदंहस्योजसा ।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावतिनिबर्हयोनमुचिं नाम मायिनम् ॥

(युधा युधम) एक के बाद दूसरा युद्ध (उप – एषि से पूर्व लगाकर) (घ इत) निश्चय से (एषि – उप एषि) अत्यन्त निकट प्राप्त करते हैं (धृष्णुया) दृढ़, शत्रुओं को मिट्टी में मिलाने में सक्षम (पुरा पुरम्) एक के बाद दूसरा शहर, किला (सम् – हंसि से पूर्व लगाकर) (इदम्) ये (हंसि – सम् हंसि) पूरी तरह नष्ट करते हैं (ओजसा) महिमावान बल के साथ (नम्या) विनप्रता के साथ (यत्) जब (इन्द्र) इन्द्रियों के नियंत्रक (सख्या) मित्र की सहायता से (परावति) अत्यन्त दूर (निर्बहयः) निश्चित रूप से नाश करता है (नमुचिम्) अन्त तक पीछा करने वाला (नाम) नाम का अहंकार (मायिनम्) मायावी, कपटी ।

व्याख्या :-

किस व्यक्ति को परमात्मा की निकट मित्रता प्राप्त होती है और कैसे?

कौन व्यक्ति अपने नाम, रूप और विचारों के अहंकार का नाश कर सकता है?

एक इन्द्र पुरुष अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक एक के बाद एक संघर्ष को पार करता हुआ परमात्मा की मित्रता को प्राप्त करता है और उसके बहुत निकट हो जाता है। वह शत्रुओं को नाश करने के अपने संकल्प और शक्ति के साथ एक के बाद एक समस्याओं के किलों को तोड़ता जाता है। वह अपनी गौरवशाली सम्पदा के सहारे भी समस्याओं का पूर्ण नाश कर देता है। पूरी विनप्रता के साथ वह परमात्मा की मित्रता का आनन्द लेता है और निश्चित रूप से अपने नाम, रूप और विचारों का नाश करके उन्हें दूर फेंक देता है, जो अन्यथा इतनी रहस्यमयी, मायावी और दिखावा करने वाली होती हैं कि ये अन्त तक पीछा नहीं छोड़ती ।

जीवन में सार्थकता :-

नाम, रूप और विचारों के मूल अहंकार का नाश करने के लिए कौन सा पथ है?

एक इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बनने के लिए आध्यात्मिक पथ पर चलना प्राथमिक योग्यता है। केवल एक इन्द्र ही परमात्मा की मित्रता का आनन्द ले सकता है। इन्द्र का अर्थ है वह व्यक्ति जिसने सफलता पूर्वक मन सहित अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया हो जिससे उसका बाहरी अहंकार और इच्छाएं समाप्त हो जायें। उसके बाद नाम, रूप और विचारों के मूल अहंकार को वह परमात्मा की दिव्य मित्रता से दूर फेंक पाता है। दिव्य सहायता के बिना यह मूल अहंकार प्रत्येक व्यक्ति को अन्तिम समय तक पकड़े रखता है।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.7

युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुयापुरापुरंसमिदंहस्योजसा ।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावतिनिबर्हयोनमुचिं नाम मायिनम् ॥

(युधा युधम) एक के बाद दूसरा युद्ध (उप – एषि से पूर्व लगाकर) (घ इत) निश्चय से (एषि – उप एषि) अत्यन्त निकट प्राप्त करते हैं (धृष्णुया) दृढ़, शत्रुओं को मिट्टी में मिलाने में सक्षम (पुरा पुरम्) एक के बाद दूसरा शहर, किला (सम् – हंसि से पूर्व लगाकर) (इदम्) ये (हंसि – सम् हंसि) पूरी तरह नष्ट करते हैं (ओजसा) महिमावान बल के साथ (नम्या) विनप्रता के साथ (यत्) जब (इन्द्र) इन्द्रियों के नियंत्रक (सख्या) मित्र की सहायता से (परावति) अत्यन्त दूर (निर्बहयः) निश्चित रूप से नाश करता है (नमुचिम्) अन्त तक पीछा करने वाला (नाम) नाम का अहंकार (मायिनम्) मायावी, कपटी ।

व्याख्या :-

किस व्यक्ति को परमात्मा की निकट मित्रता प्राप्त होती है और कैसे?

कौन व्यक्ति अपने नाम, रूप और विचारों के अहंकार का नाश कर सकता है?

एक इन्द्र पुरुष अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक एक के बाद एक संघर्ष को पार करता हुआ परमात्मा की मित्रता को प्राप्त करता है और उसके बहुत निकट हो जाता है। वह शत्रुओं को नाश करने के अपने संकल्प और शक्ति के साथ एक के बाद एक समस्याओं के किलों को तोड़ता जाता है। वह अपनी गौरवशाली सम्पदा के सहारे भी समस्याओं का पूर्ण नाश कर देता है। पूरी विनप्रता के साथ वह परमात्मा की मित्रता का आनन्द लेता है और निश्चित रूप से अपने नाम, रूप और विचारों का नाश करके उन्हें दूर फेंक देता है, जो अन्यथा इतनी रहस्यमयी, मायावी और दिखावा करने वाली होती हैं कि ये अन्त तक पीछा नहीं छोड़ती ।

जीवन में सार्थकता :-

नाम, रूप और विचारों के मूल अहंकार का नाश करने के लिए कौन सा पथ है?

एक इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बनने के लिए आध्यात्मिक पथ पर चलना प्राथमिक योग्यता है। केवल एक इन्द्र ही परमात्मा की मित्रता का आनन्द ले सकता है। इन्द्र का अर्थ है वह व्यक्ति जिसने सफलता पूर्वक मन सहित अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया हो जिससे उसका बाहरी अहंकार और इच्छाएं समाप्त हो जायें। उसके बाद नाम, रूप और विचारों के मूल अहंकार को वह परमात्मा की दिव्य मित्रता से दूर फेंक पाता है। दिव्य सहायता के बिना यह मूल अहंकार प्रत्येक व्यक्ति को अन्तिम समय तक पकड़े रखता है।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.8

त्वंकरंजमुतपर्णयं वधीस्तेजिष्ठयातिथिगवस्य वर्तनी ।
त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत्पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना ॥

(त्वम्) आप (परमात्मा, परमात्मा का मित्र) (करंजम) श्रेष्ठ पुरुषों को दुःख देने वाला (उत) और (पर्णयम्) पराई वस्तुओं को चुराने वाला (वधीः) नाश (तेजिष्ठया) गति और बल के साथ (अतिथिगवस्य) अतिथियों का (परमात्मा का तथा परमात्मा के मित्र का) (वर्तनी) संरक्षण करता है (त्वम्) आप (शता) सैकड़ों (वङ्गृदस्य) दूसरों को विष देने वाला (अभिनत्) नाश करता है (पुरः) नगर, किले (अऽनानुदः) शत्रुओं के द्वारा धकेला न जाने योग्य (परिषूता) सभी दिशाओं से घेरा गया (ऋजिश्वना) सत्य, ईमानदारी के मार्ग पर चलते हुए ।

व्याख्या :-

जो लोग दिव्य श्रेष्ठ पुरुषों का निरादर करते हैं उसका क्या फल होता है?

आप (परमात्मा, परमात्मा के मित्र) उन लोगों का नाश कर देते हों जो दिव्य श्रेष्ठ महापुरुषों का निरादर करते हैं या उनके लिए समस्या पैदा करते हैं या अन्य लोगों की वस्तुएं चुराते हैं। आप गति और बल के साथ अतिथियों अर्थात् परमात्मा की दिव्यताओं और परमात्मा के मित्रों की रक्षा करते हों।

आप (परमात्मा, परमात्मा के मित्र) शत्रुओं के द्वारा धकेले जाने के योग्य नहीं हों। इसका अभिप्राय है कि आप अपराजित हों। आप उन लोगों के हजारों किलों और शहरों को नष्ट कर देते हों जो अन्यों को विष देते हैं। क्योंकि आप सबको घेर कर सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर चलाते हों।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य, श्रेष्ठ और पवित्र आत्माओं शक्ति क्या है?

जो व्यक्ति दिव्यता से प्रेम करता है और गति तथा बल के साथ उनकी तरफ अग्रसर होता है, केवल वही अन्य लोगों को कष्ट देने और वस्तुएं चुराने की प्रवृत्तियों का नाश करने में सक्षम होता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में परमात्मा की दिव्यता का स्वागत करता है केवल वही बुराईयों को नष्ट करने में सक्षम होता है। जो व्यक्ति निर्माता के पीछे भागता है, वह निर्मित सृष्टि के पीछे नहीं भागता। पवित्रता से प्रेम करने वाला व्यक्ति इतना बलवान हो जाता है कि वह शत्रुओं के द्वारा धकेला नहीं जाता। बल्कि ऐसा व्यक्ति सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर चलते हुए उन लोगों को भी घेर लेता है जो दूसरों को विष देते हैं और दिग्प्रभित करते हैं।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.8

त्वंकरंजमुतपर्णयं वधीस्तेजिष्ठयातिथिगवस्य वर्तनी ।
त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत्पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना ॥

(त्वम्) आप (परमात्मा, परमात्मा का मित्र) (करंजम) श्रेष्ठ पुरुषों को दुःख देने वाला (उत) और (पर्णयम्) पराई वस्तुओं को चुराने वाला (वधीः) नाश (तेजिष्ठया) गति और बल के साथ (अतिथिगवस्य) अतिथियों का (परमात्मा का तथा परमात्मा के मित्र का) (वर्तनी) संरक्षण करता है (त्वम्) आप (शता) सैकड़ों (वङ्गृदस्य) दूसरों को विष देने वाला (अभिनत्) नाश करता है (पुरः) नगर, किले (अऽनानुदः) शत्रुओं के द्वारा धकेला न जाने योग्य (परिषूता) सभी दिशाओं से घेरा गया (ऋजिश्वना) सत्य, ईमानदारी के मार्ग पर चलते हुए ।

व्याख्या :-

जो लोग दिव्य श्रेष्ठ पुरुषों का निरादर करते हैं उसका क्या फल होता है?

आप (परमात्मा, परमात्मा के मित्र) उन लोगों का नाश कर देते हों जो दिव्य श्रेष्ठ महापुरुषों का निरादर करते हैं या उनके लिए समस्या पैदा करते हैं या अन्य लोगों की वस्तुएं चुराते हैं। आप गति और बल के साथ अतिथियों अर्थात् परमात्मा की दिव्यताओं और परमात्मा के मित्रों की रक्षा करते हों।

आप (परमात्मा, परमात्मा के मित्र) शत्रुओं के द्वारा धकेले जाने के योग्य नहीं हों। इसका अभिप्राय है कि आप अपराजित हों। आप उन लोगों के हजारों किलों और शहरों को नष्ट कर देते हों जो अन्यों को विष देते हैं। क्योंकि आप सबको घेर कर सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर चलाते हों।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य, श्रेष्ठ और पवित्र आत्माओं शक्ति क्या है?

जो व्यक्ति दिव्यता से प्रेम करता है और गति तथा बल के साथ उनकी तरफ अग्रसर होता है, केवल वही अन्य लोगों को कष्ट देने और वस्तुएं चुराने की प्रवृत्तियों का नाश करने में सक्षम होता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में परमात्मा की दिव्यता का स्वागत करता है केवल वही बुराईयों को नष्ट करने में सक्षम होता है। जो व्यक्ति निर्माता के पीछे भागता है, वह निर्मित सृष्टि के पीछे नहीं भागता। पवित्रता से प्रेम करने वाला व्यक्ति इतना बलवान हो जाता है कि वह शत्रुओं के द्वारा धकेला नहीं जाता। बल्कि ऐसा व्यक्ति सच्चाई और ईमानदारी के मार्ग पर चलते हुए उन लोगों को भी घेर लेता है जो दूसरों को विष देते हैं और दिग्प्रभित करते हैं।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.9

त्वमेतांजनराजोद्विदशाऽबन्धुनासुश्रवसोपजग्मुषः ।
षष्ठिंसहस्रा नवतिंनवश्रुतोनिचक्रेणरथ्या दुष्पदावृणक् ॥

(त्वम्) आप (एतान) इन (जनराजः) जनता पर शासन करने वाले (द्वि: दश) बीस (अऽबन्धुना) बन्धनहीन, किसी का मित्र नहीं (सुश्रवसा) दिव्यता का उत्तम श्रोता, उत्तम सुने जाने योग्य (ज्ञान और अनुभूति के लिए) (उपजग्मुष) अत्यन्त निकट (षष्ठिम्) साठ (सहस्रा) हजारों (नवतिम्) नब्बे (नव) नौ (श्रुतः) सुनने वाला (परमात्मा) (नि) निश्चित रूप से (चक्रेण) चक्र, गति (रथ्या) शरीर रथ का (दुष्पदा) कठिन मार्ग (अवृणक्) दूर रखो ।

व्याख्या :-

कौन सर्वोच्च श्रोता है?

जनता पर शासन करने वाले बीस शासक कौन हैं?

सर्वोच्च श्रोता किस व्यक्ति को इन बीस शासकों से बचाता है?

आप, सर्वोच्च श्रोता, निश्चित रूप से जनता के ऊपर शासन करने वाले बीस शासकों को उन महान् आत्माओं से दूर रखते हो, शरीर की गतिविधियों के कठिन मार्ग से, रथ के पहियों से, जो बन्धन में नहीं हैं और किसी के मित्र नहीं हैं, परन्तु जो दिव्यता के उत्तम श्रोता हैं और जिन्हें उनके ज्ञान और अनुभूति के कारण अन्य लोग उत्तम प्रकार से सुनते हैं और जो आपके अत्यन्त निकट हैं। यह शासक साठों हजार हैं। परन्तु महान् आत्माएं ऐसे शासकों से 99 वर्ष से भी अधिक अवधि तक दूर रहते हैं। यह बीस शासक हैं – दस इन्द्रियां, पांच प्राण, मन, बुद्धि, अहंकार, हृदय तथा चेतना। परमात्मा सर्वोच्च श्रोता है।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्यता के अत्यन्त निकट कौन होता है?

बीस शासकों ने पूरा कुशासन किस प्रकार रचा हुआ है?

1. जो व्यक्ति इस सृष्टि में किसी चीज से बंधा नहीं है और जिसकी अपनी कोई इच्छा नहीं है,
2. जो दिव्यताओं को उत्तम प्रकार से सुनता है और जो अपने महान् और दिव्य ज्ञान तथा अनुभूति के कारण दिव्यता के अत्यन्त निकट होता है और जिसे अन्य लोग अच्छी प्रकार से सुनते हैं।

जब एक व्यक्ति दिव्यता के निकट हो जाता है तो वह निश्चित रूप से सर्वोच्च श्रोता के द्वारा सुना जाता है और जनता पर शासन करने वाले शासकों से दूर रहता है। यह एक आश्चर्य है कि दिव्य लोगों को छोड़कर सभी लोग इन बीस शासकों से शासित होते हैं। इन बीस शासकों का शासन वास्तव में एक ऐसा कुशासन है जो जीवन की सभी समस्याओं और पेचिदिगियों को जन्म देता है। अतः इस कुशासन से मुक्ति पाने के लिए हमें सृष्टि की किसी भी वस्तु के बन्धन से मुक्त रहना चाहिए, यहाँ तक कि अपनी इन्द्रियों से भी।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.9

त्वमेतांजनराजोद्विदशाऽबन्धुनासुश्रवसोपजग्मुषः ।
षष्ठिंसहस्रा नवतिंनवश्रुतोनिचक्रेणरथ्या दुष्पदावृणक् ॥

(त्वम्) आप (एतान) इन (जनराजः) जनता पर शासन करने वाले (द्वि: दश) बीस (अऽबन्धुना) बन्धनहीन, किसी का मित्र नहीं (सुश्रवसा) दिव्यता का उत्तम श्रोता, उत्तम सुने जाने योग्य (ज्ञान और अनुभूति के लिए) (उपजग्मुष) अत्यन्त निकट (षष्ठिम्) साठ (सहस्रा) हजारों (नवतिम्) नब्बे (नव) नौ (श्रुतः) सुनने वाला (परमात्मा) (नि) निश्चित रूप से (चक्रेण) चक्र, गति (रथ्या) शरीर रथ का (दुष्पदा) कठिन मार्ग (अवृणक्) दूर रखो ।

व्याख्या :-

कौन सर्वोच्च श्रोता है?

जनता पर शासन करने वाले बीस शासक कौन हैं?

सर्वोच्च श्रोता किस व्यक्ति को इन बीस शासकों से बचाता है?

आप, सर्वोच्च श्रोता, निश्चित रूप से जनता के ऊपर शासन करने वाले बीस शासकों को उन महान् आत्माओं से दूर रखते हो, शरीर की गतिविधियों के कठिन मार्ग से, रथ के पहियों से, जो बन्धन में नहीं हैं और किसी के मित्र नहीं हैं, परन्तु जो दिव्यता के उत्तम श्रोता हैं और जिन्हें उनके ज्ञान और अनुभूति के कारण अन्य लोग उत्तम प्रकार से सुनते हैं और जो आपके अत्यन्त निकट हैं। यह शासक साठों हजार हैं। परन्तु महान् आत्माएं ऐसे शासकों से 99 वर्ष से भी अधिक अवधि तक दूर रहते हैं। यह बीस शासक हैं – दस इन्द्रियां, पांच प्राण, मन, बुद्धि, अहंकार, हृदय तथा चेतना। परमात्मा सर्वोच्च श्रोता है।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्यता के अत्यन्त निकट कौन होता है?

बीस शासकों ने पूरा कुशासन किस प्रकार रचा हुआ है?

1. जो व्यक्ति इस सृष्टि में किसी चीज से बंधा नहीं है और जिसकी अपनी कोई इच्छा नहीं है,
2. जो दिव्यताओं को उत्तम प्रकार से सुनता है और जो अपने महान् और दिव्य ज्ञान तथा अनुभूति के कारण दिव्यता के अत्यन्त निकट होता है और जिसे अन्य लोग अच्छी प्रकार से सुनते हैं।

जब एक व्यक्ति दिव्यता के निकट हो जाता है तो वह निश्चित रूप से सर्वोच्च श्रोता के द्वारा सुना जाता है और जनता पर शासन करने वाले शासकों से दूर रहता है। यह एक आश्चर्य है कि दिव्य लोगों को छोड़कर सभी लोग इन बीस शासकों से शासित होते हैं। इन बीस शासकों का शासन वास्तव में एक ऐसा कुशासन है जो जीवन की सभी समस्याओं और पेचिदिगियों को जन्म देता है। अतः इस कुशासन से मुक्ति पाने के लिए हमें सृष्टि की किसी भी वस्तु के बन्धन से मुक्त रहना चाहिए, यहाँ तक कि अपनी इन्द्रियों से भी।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.10

त्वमाविथसुश्रवसंतवोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्रतूर्याणाम् ।
त्वमस्मैकुत्समतिथिग्वमायुंमहेराङ्गे यूनेरन्धनायः ॥

(त्वम्) आप (आविथ) रक्षा करते हो (सुश्रवसम्) उत्तम स्रोता (दिव्यता का), सुने जाने के लिए उत्तम (अपने ज्ञान और अनुभूति के लिए) (तब ऊतिभिः) आपके द्वारा संरक्षण साधनों के साथ (तब त्रामभिः) आपके द्वारा पालन पोषण के साधनों के साथ (इन्द्र) परमात्मा (तूर्याणाम्) सभी बुराईयों और दुर्गुणों पर आक्रमण करते हुए (त्वम्) आप (अस्मै) यह (कुत्सम्) बुराईयों और दुर्गुणों का नाशक (अतिथिग्वम्) अतिथियों का स्वागत करने वाले (आयुंम्) सक्रिय व्यक्ति (महे) महान् (राङ्गे) राजा, नियंत्रण करने वाला शासक (यूने) युवा अवस्था (अरन्धनायः) पूर्ण व्यक्तित्व, वज्र वाली ताकत ।

व्याख्या :-

परमात्मा किसको संरक्षित करता है?

हे इन्द्र, भगवान्! आप अपने सुरक्षा और पोषण के साधनों से उन लोगों की रक्षा करते हो जिनमें निम्न लक्षण होते हैं :-

1. सुश्रवसम् – उत्तम स्रोता (दिव्यता का), सुने जाने के लिए उत्तम (अपने ज्ञान और अनुभूति के लिए),
2. तूर्याणाम् – सभी बुराईयों और दुर्गुणों पर आक्रमण करते हुए ।

आप महान् राजा को शक्तिशाली गर्जने वाली ताकत तथा पूर्ण व्यक्तित्व प्रदान करते हो, जो बुराईयों और दुर्गुणों का नाशक होता है और जो अपनी युवा अवस्था से ही अतिथियों का स्वागत करने में सक्रिय होता है ।

जीवन में सार्थकता :-

प्रेम और भक्ति साधना का जीवन कब फलदायक होता है?

यदि हम अधिकांश महान् लोगों जैसे आदि गुरु शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महर्षि रमन, श्री अरविन्दो आदि के जीवन का उनकी आयु के आधार पर सूक्ष्म अध्ययन करें तो सबका अनुपात यह निकलता है कि इन सभी आत्माओं ने अपनी युवा अवस्था में एक पूर्ण व्यक्तित्व बनकर शक्तिशाली गर्जती हुई ताकत प्राप्त कर ली थी। इसका अभिप्राय यह है कि परमात्मा के प्रति प्रेम और भक्ति साधना तथा उसकी अनुभूति पूर्व जन्मों के समर्पित प्रयासों से ही सफल होती है। अन्ततः युवा अवस्था में ही अनुभूति चमकने लगती है।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.10

त्वमाविथसुश्रवसंतवोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्रतूर्याणाम् ।
त्वमस्मैकुत्समतिथिग्वमायुंमहेराङ्गे यूनेरन्धनायः ॥

(त्वम्) आप (आविथ) रक्षा करते हो (सुश्रवसम्) उत्तम स्रोता (दिव्यता का), सुने जाने के लिए उत्तम (अपने ज्ञान और अनुभूति के लिए) (तब ऊतिभिः) आपके द्वारा संरक्षण साधनों के साथ (तब त्रामभिः) आपके द्वारा पालन पोषण के साधनों के साथ (इन्द्र) परमात्मा (तूर्याणाम्) सभी बुराईयों और दुर्गुणों पर आक्रमण करते हुए (त्वम्) आप (अस्मै) यह (कुत्सम्) बुराईयों और दुर्गुणों का नाशक (अतिथिग्वम्) अतिथियों का स्वागत करने वाले (आयुंम्) सक्रिय व्यक्ति (महे) महान् (राङ्गे) राजा, नियंत्रण करने वाला शासक (यूने) युवा अवस्था (अरन्धनायः) पूर्ण व्यक्तित्व, वज्र वाली ताकत ।

व्याख्या :-

परमात्मा किसको संरक्षित करता है?

हे इन्द्र, भगवान्! आप अपने सुरक्षा और पोषण के साधनों से उन लोगों की रक्षा करते हो जिनमें निम्न लक्षण होते हैं :-

1. सुश्रवसम् – उत्तम स्रोता (दिव्यता का), सुने जाने के लिए उत्तम (अपने ज्ञान और अनुभूति के लिए),
2. तूर्याणाम् – सभी बुराईयों और दुर्गुणों पर आक्रमण करते हुए ।

आप महान् राजा को शक्तिशाली गर्जने वाली ताकत तथा पूर्ण व्यक्तित्व प्रदान करते हो, जो बुराईयों और दुर्गुणों का नाशक होता है और जो अपनी युवा अवस्था से ही अतिथियों का स्वागत करने में सक्रिय होता है ।

जीवन में सार्थकता :-

प्रेम और भक्ति साधना का जीवन कब फलदायक होता है?

यदि हम अधिकांश महान् लोगों जैसे आदि गुरु शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महर्षि रमन, श्री अरविन्दो आदि के जीवन का उनकी आयु के आधार पर सूक्ष्म अध्ययन करें तो सबका अनुपात यह निकलता है कि इन सभी आत्माओं ने अपनी युवा अवस्था में एक पूर्ण व्यक्तित्व बनकर शक्तिशाली गर्जती हुई ताकत प्राप्त कर ली थी। इसका अभिप्राय यह है कि परमात्मा के प्रति प्रेम और भक्ति साधना तथा उसकी अनुभूति पूर्व जन्मों के समर्पित प्रयासों से ही सफल होती है। अन्ततः युवा अवस्था में ही अनुभूति चमकने लगती है।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.11

य उदृचीन्द्रदेवगोपाः सखायस्तेषिवतमाअसाम |
त्वां स्तोषामत्वयासुवीराद्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ||

(ये) वो हम (उदृचि) उत्तम ऋचाओं के साथ अर्थात् वैदिक मन्त्र, ज्ञान और तरंगों के साथ (इन्द्र) परमात्मा (देवगोपा:) दिव्य संरक्षण वाला, दिव्यताओं का संरक्षित करने वाला (सखाय) मित्र (ते) आपके (शिवतमा) कल्याण के लक्षणों के साथ (असाम) होवो (त्वाम्) आप (स्तोषाम्) प्रशंसा करते हुए, महिमागान करते हुए (त्वया) आपके साथ (संगति और संरक्षण) (सुवीरा:) उत्तम बल वाला (द्राघीय:) लम्बा (आयुः) जीवन (प्रतरम्) उत्तम (स्वस्थ एवं आध्यात्मिक) (दधानाः) धारण करते हैं।

व्याख्या :-

पूर्ण कल्याण का जीवन किसको प्राप्त होता है?

उत्तम साहसिक व्यक्ति कौन बनता है?

हे इन्द्र, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! वे हम जो उत्तम ऋचाओं अर्थात् वेद मंत्रों, वैदिक विवेक, ज्ञान और दिव्य तरंगों के साथ परमात्मा के प्रति प्रेम और भक्ति साधना में पड़े हैं; जिनके पास दिव्य संरक्षण हैं और जो दिव्यताओं की रक्षा करते हैं; जो आपकी मित्रता प्राप्त करने के बाद अपने कल्याण से पूर्ण हैं और दूसरों का भी कल्याण करते हैं। आपकी प्रशंसा और स्तुति में जीवन जीने वाले हम लोग आपकी संगति और संरक्षण में उत्तम साहसी व्यक्ति बन सकें। हम लम्बा और उत्तम जीवन अर्थात् स्वस्थ और आध्यात्मिक जीवन प्राप्त कर सकें।

जीवन में सार्थकता :-

उत्तम आध्यात्मिक जीवन के क्या लक्षण हैं?

उत्तम आध्यात्मिक जीवन के निम्न लक्षण हैं :-

1. उदृचि – उत्तम ऋचाओं के साथ अर्थात् वैदिक मन्त्र, ज्ञान और तरंगों के साथ,
2. देवगोपा: – दिव्य संरक्षण वाला, दिव्यताओं का संरक्षित करने वाला,
3. सखाय ते – आपके मित्र,
4. शिवतमा – कल्याण के लक्षणों के साथ,
5. त्वाम् स्तोषाम् – आपकी प्रशंसा, महिमागान करते हुए,
6. त्वया सुवीरा: – आपकी संगति और संरक्षण के साथ, उत्तम बल वाला,
7. द्राघीयः आयुः प्रतरम् दधानाः – उत्तम लम्बा जीवन जीने वाला अर्थात् स्वस्थ और आध्यात्मिक जीवन।



ऋग्वेदमन्त्र 1.53.11

य उदृचीन्द्रदेवगोपाः सखायस्तेषिवतमाअसाम |
त्वां स्तोषामत्वयासुवीराद्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ||

(ये) वो हम (उदृचि) उत्तम ऋचाओं के साथ अर्थात् वैदिक मन्त्र, ज्ञान और तरंगों के साथ (इन्द्र) परमात्मा (देवगोपा:) दिव्य संरक्षण वाला, दिव्यताओं का संरक्षित करने वाला (सखाय) मित्र (ते) आपके (शिवतमा) कल्याण के लक्षणों के साथ (असाम) होवो (त्वाम्) आप (स्तोषाम्) प्रशंसा करते हुए, महिमागान करते हुए (त्वया) आपके साथ (संगति और संरक्षण) (सुवीरा:) उत्तम बल वाला (द्राघीय:) लम्बा (आयुः) जीवन (प्रतरम्) उत्तम (स्वस्थ एवं आध्यात्मिक) (दधानाः) धारण करते हैं।

व्याख्या :-

पूर्ण कल्याण का जीवन किसको प्राप्त होता है?

उत्तम साहसिक व्यक्ति कौन बनता है?

हे इन्द्र, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! वे हम जो उत्तम ऋचाओं अर्थात् वेद मंत्रों, वैदिक विवेक, ज्ञान और दिव्य तरंगों के साथ परमात्मा के प्रति प्रेम और भक्ति साधना में पड़े हैं; जिनके पास दिव्य संरक्षण हैं और जो दिव्यताओं की रक्षा करते हैं; जो आपकी मित्रता प्राप्त करने के बाद अपने कल्याण से पूर्ण हैं और दूसरों का भी कल्याण करते हैं। आपकी प्रशंसा और स्तुति में जीवन जीने वाले हम लोग आपकी संगति और संरक्षण में उत्तम साहसी व्यक्ति बन सकें। हम लम्बा और उत्तम जीवन अर्थात् स्वस्थ और आध्यात्मिक जीवन प्राप्त कर सकें।

जीवन में सार्थकता :-

उत्तम आध्यात्मिक जीवन के क्या लक्षण हैं?

उत्तम आध्यात्मिक जीवन के निम्न लक्षण हैं :-

1. उदृचि – उत्तम ऋचाओं के साथ अर्थात् वैदिक मन्त्र, ज्ञान और तरंगों के साथ,
2. देवगोपा: – दिव्य संरक्षण वाला, दिव्यताओं का संरक्षित करने वाला,
3. सखाय ते – आपके मित्र,
4. शिवतमा – कल्याण के लक्षणों के साथ,
5. त्वाम् स्तोषाम् – आपकी प्रशंसा, महिमागान करते हुए,
6. त्वया सुवीरा: – आपकी संगति और संरक्षण के साथ, उत्तम बल वाला,
7. द्राघीयः आयुः प्रतरम् दधानाः – उत्तम लम्बा जीवन जीने वाला अर्थात् स्वस्थ और आध्यात्मिक जीवन।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.1

त्रिशिंशो अृद्या भवतं नवेदसा विभुर्वा याम् उत गुति रश्वना ।
युवोर्हि युन्नं हिष्येव वाससोऽभ्यायुसेन्या भवतं मनीषिभिः ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (चित्) निश्चय से (नः) हमारे (अद्य) आज (भवतम्) होओ (नवेदसा) पूर्ण ज्ञान देने वाले (विभुः) सब दिशाओं में व्याप्त (वाम्) तुम दोनों (यामः) रथ

(उत्) और (रातिः) त्याग, दान, इच्छारहित, अहंकाररहित (अश्विना) दोनों (प्राण-अपान, दिन और रात) (युवोः) तुम दोनों का ही (हि) निश्चय से (यन्त्रम्) प्रबन्ध, सम्बन्ध (हिम्या) रात्रि से (इव) जैसे कि (वाससः) सूर्य की किरणों से आच्छादित दिन (अभ्यायम् सेन्या) किसी उद्देश्य से जुड़ना, मिशन (भवतम्) हो (मनीषिभिः) मन पर शासन करने वाले ।

व्याख्या :-

पूर्ण और सम्पन्न प्रयासों का मार्ग क्या है?

हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें समस्त पूर्ण ज्ञान के देने वाले हों, आज ही तीन बार अर्थात बार-बार, तीन प्रकार का ज्ञान अर्थात परमात्मा, आत्मा और पदार्थ, तीन गुण अर्थात सत्त्व, रज और तम, तीन दोष अर्थात वात, पित्त और कफ। इस दिव्य ज्ञान के साथ दोनों प्राणों वाला हमारा शरीर रथ सभी दिशाओं में अपने त्याग, दान, इच्छारहित और अहंकाररहित प्रकृति और गतिविधियों के कारण व्याप्त होता है। आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध तथा प्रबन्ध दिन और रात्रि के समान है, जो सूर्य के द्वारा व्याप्त होते हैं। दोनों ही लगातार प्रतिक्षण अटूट सम्बन्ध से जुड़े होते हैं और एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। इसलिए परमात्मा और आत्मा एवं प्राण और अपान दोनों का सम्बन्ध एक महान दिव्य उद्देश्य एवं मिशन के लिए सदैव संयुक्त रहना चाहिए, जो मन पर शासन कर सके।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण और सम्पन्न प्रयासों को कैसे सुनिश्चित किया जाये?

हमें आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक स्तर पर सभी गतिविधियों में अत्यन्त गहरा और गम्भीर होना चाहिए :-

(क) आध्यात्मिक स्तर पर परमात्मा और आत्मा के परस्पर सम्बन्ध पर ध्यान एकाग्र करने का दिव्य महत्व होता है।

(ख) मानसिक स्तर पर हमारे उद्देश्यों, मिशन और विचारों पर एकाग्रता भी दिन और रात्रि के तरह होनी चाहिए। इससे जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता सुनिश्चित की जा सकती है।

(ग) शारीरिक स्तर पर प्राण और अपान के बीच सम्बन्ध पर एकाग्रता पूर्ण स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है।

हमें अपने जीवन की गतिविधियों में गहरा और गम्भीर होना चाहिए, जिससे हम यह सुनिश्चित कर सकें कि वे दिन और रात्रि की तरह प्रत्येक स्थान पर जारी रहें।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.1

त्रिशिंशो अृद्या भवतं नवेदसा विभुर्वा याम् उत गुति रश्वना ।
युवोर्हि युन्नं हिष्येव वाससोऽभ्यायुसेन्या भवतं मनीषिभिः ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (चित्) निश्चय से (नः) हमारे (अद्य) आज (भवतम्) होओ (नवेदसा) पूर्ण ज्ञान देने वाले (विभुः) सब दिशाओं में व्याप्त (वाम्) तुम दोनों (यामः) रथ

(उत्) और (रातिः) त्याग, दान, इच्छारहित, अहंकाररहित (अश्विना) दोनों (प्राण-अपान, दिन और रात) (युवोः) तुम दोनों का ही (हि) निश्चय से (यन्त्रम्) प्रबन्ध, सम्बन्ध (हिम्या) रात्रि से (इव) जैसे कि (वाससः) सूर्य की किरणों से आच्छादित दिन (अभ्यायम् सेन्या) किसी उद्देश्य से जुड़ना, मिशन (भवतम्) हो (मनीषिभिः) मन पर शासन करने वाले ।

व्याख्या :-

पूर्ण और सम्पन्न प्रयासों का मार्ग क्या है?

हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें समस्त पूर्ण ज्ञान के देने वाले हों, आज ही तीन बार अर्थात बार-बार, तीन प्रकार का ज्ञान अर्थात परमात्मा, आत्मा और पदार्थ, तीन गुण अर्थात सत्त्व, रज और तम, तीन दोष अर्थात वात, पित्त और कफ। इस दिव्य ज्ञान के साथ दोनों प्राणों वाला हमारा शरीर रथ सभी दिशाओं में अपने त्याग, दान, इच्छारहित और अहंकाररहित प्रकृति और गतिविधियों के कारण व्याप्त होता है। आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध तथा प्रबन्ध दिन और रात्रि के समान है, जो सूर्य के द्वारा व्याप्त होते हैं। दोनों ही लगातार प्रतिक्षण अटूट सम्बन्ध से जुड़े होते हैं और एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। इसलिए परमात्मा और आत्मा एवं प्राण और अपान दोनों का सम्बन्ध एक महान दिव्य उद्देश्य एवं मिशन के लिए सदैव संयुक्त रहना चाहिए, जो मन पर शासन कर सके।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण और सम्पन्न प्रयासों को कैसे सुनिश्चित किया जाये?

हमें आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक स्तर पर सभी गतिविधियों में अत्यन्त गहरा और गम्भीर होना चाहिए :-

(क) आध्यात्मिक स्तर पर परमात्मा और आत्मा के परस्पर सम्बन्ध पर ध्यान एकाग्र करने का दिव्य महत्व होता है।

(ख) मानसिक स्तर पर हमारे उद्देश्यों, मिशन और विचारों पर एकाग्रता भी दिन और रात्रि के तरह होनी चाहिए। इससे जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता सुनिश्चित की जा सकती है।

(ग) शारीरिक स्तर पर प्राण और अपान के बीच सम्बन्ध पर एकाग्रता पूर्ण स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है।

हमें अपने जीवन की गतिविधियों में गहरा और गम्भीर होना चाहिए, जिससे हम यह सुनिश्चित कर सकें कि वे दिन और रात्रि की तरह प्रत्येक स्थान पर जारी रहें।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.2

त्रयः पुवयौ मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः।
त्रयः स्कृम्भासः स्कृभितास आरभे त्रिनक्त याथस्त्रिवशिवना दिवा।।

(त्रयः) तीन (पवयः) पवित्र करने वाले पहिये - इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि (मधु वाहने) मधुरता पैदा करने वाले, सुविधाजनक (रथ) रथ के लिए (सोमस्य) सात्त्विक शक्ति (वेनाम्) प्रशंसायें
(अनु) अनुपात में (विश्वे) सब (इत्) निश्चित रूप से (विदुः) जानते हैं (त्रयः) तीन (स्कृम्भासः) बाँधने के खम्भे (स्कृभितासः) स्थापित (आरभे) यात्रा प्रारम्भ करने के लिए (त्रिः) तीन बार (नक्तम्) रात्रि में (याथः) प्रगति (त्रिः) तीन बार (अश्विना) तुम दोनों (दिवा) दिन में।

व्याख्या :-

हमारे शरीर रथ के तीन पहिये कौन से हैं?

हमारे शरीर रथ के तीन पहिये (इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि) मधुरता पैदा करने वाले और हमारी जीवन यात्रा को सुखपूर्वक बनाने वाले हैं। यह तीनों पहिये गुणों और प्राण शक्ति की चमक के अनुपात में ही ज्ञानवान होते हैं, प्राणशक्ति की चमक जितनी अधिक होगी, उतना ही इन्द्रियों, मन और बुद्धि के ज्ञान का स्तर होगा। यह तीनों पहिए हमारी जीवन यात्रा की शुरुआत को स्थापित करने और उसे बांधने के मजबूत स्तम्भ होते हैं। केवल यही तीनों स्तम्भ हमारे शरीर, मन और आत्मा की प्रगति सुनिश्चित कर सकते हैं - तीन बार अर्थात बार-बार, दिन में और रात में भी।

जीवन में सार्थकता

जीवन की प्रगति और यात्रा को सुविधाजनक कैसे बनाया जाये?

एक प्रगतिशील जीवन यात्रा को सुनिश्चित करने के लिए इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि का मजबूत होना अत्यन्त आवश्यक है।

हमारे शरीर रथ के यह तीन पहिए जीवन यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने हवाई जहाज के तीन पहिए, जो अत्यन्त सुविधाजनक वाहन हैं।

यह तीनों पहिए प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में गुणों और प्राण शक्ति से भरपूर होने चाहिए। यदि यह स्तम्भ मजबूत हैं तो हमारी जीवन यात्रा निश्चित रूप से परमात्मा की अनुभूति के लक्ष्य की ओर शानदार रूप से प्रगति करेगी, अन्यथा यह रथ निम्न योनियों में ही घूमता रह जायेगा और समस्त दुखों को भोगता रहेगा। मजबूत स्तम्भ के साथ हम बार-बार दिन-रात और प्रतिक्षण अपनी प्रगति की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.2

त्रयः पुवयौ मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः।
त्रयः स्कृम्भासः स्कृभितास आरभे त्रिनक्त याथस्त्रिवशिवना दिवा।।

(त्रयः) तीन (पवयः) पवित्र करने वाले पहिये - इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि (मधु वाहने) मधुरता पैदा करने वाले, सुविधाजनक (रथ) रथ के लिए (सोमस्य) सात्त्विक शक्ति (वेनाम्) प्रशंसायें

(अनु) अनुपात में (विश्वे) सब (इत्) निश्चित रूप से (विदुः) जानते हैं (त्रयः) तीन (स्कृम्भासः) बाँधने के खम्भे (स्कृभितासः) स्थापित (आरभे) यात्रा प्रारम्भ करने के लिए (त्रिः) तीन बार (नक्तम्) रात्रि में (याथः) प्रगति (त्रिः) तीन बार (अश्विना) तुम दोनों (दिवा) दिन में।

व्याख्या :-

हमारे शरीर रथ के तीन पहिये कौन से हैं?

हमारे शरीर रथ के तीन पहिये (इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि) मधुरता पैदा करने वाले और हमारी जीवन यात्रा को सुखपूर्वक बनाने वाले हैं। यह तीनों पहिये गुणों और प्राण शक्ति की चमक के अनुपात में ही ज्ञानवान होते हैं, प्राणशक्ति की चमक जितनी अधिक होगी, उतना ही इन्द्रियों, मन और बुद्धि के ज्ञान का स्तर होगा। यह तीनों पहिए हमारी जीवन यात्रा की शुरुआत को स्थापित करने और उसे बांधने के मजबूत स्तम्भ होते हैं। केवल यही तीनों स्तम्भ हमारे शरीर, मन और आत्मा की प्रगति सुनिश्चित कर सकते हैं - तीन बार अर्थात बार-बार, दिन में और रात में भी।

जीवन में सार्थकता

जीवन की प्रगति और यात्रा को सुविधाजनक कैसे बनाया जाये?

एक प्रगतिशील जीवन यात्रा को सुनिश्चित करने के लिए इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि का मजबूत होना अत्यन्त आवश्यक है।

हमारे शरीर रथ के यह तीन पहिए जीवन यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने हवाई जहाज के तीन पहिए, जो अत्यन्त सुविधाजनक वाहन हैं।

यह तीनों पहिए प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में गुणों और प्राण शक्ति से भरपूर होने चाहिए। यदि यह स्तम्भ मजबूत हैं तो हमारी जीवन यात्रा निश्चित रूप से परमात्मा की अनुभूति के लक्ष्य की ओर शानदार रूप से प्रगति करेगी, अन्यथा यह रथ निम्न योनियों में ही घूमता रह जायेगा और समस्त दुखों को भोगता रहेगा। मजबूत स्तम्भ के साथ हम बार-बार दिन-रात और प्रतिक्षण अपनी प्रगति की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.3

सुमाने अहुन्निरवद्यगोहना त्रिरुद्य युज्ञं मधुना मिमिक्षतम् ।
त्रिवर्जिवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अुस्मभ्यमुपसंच पिन्वतम् ॥

(समाने) सम भाव से, महान सुविधाजनक, उन्नत (अहन्) दिन (त्रिः) तीन बारए बार-बार, तीन स्तरों पर (अवद्य गोहना) सब बुराईयों, दोषों से बचाने वाले (त्रिः) तीन बार, बार-बार (अद्य) आज (यज्ञम्) त्यागमयी जीवन (मधुना) मधुरता के साथ (मिमिक्षतम्) सिंचाई करो, पूर्ण सन्तुष्ट करो (त्रिः) तीन बारए बार-बार (वाजवतीः - सुविधाएं और प्रसन्नता देने वाले (इषः) इच्छित (अश्विना) जोड़ा (युवम्) दोनों का (दोषा) रात्रि में, अज्ञानता में, चन्द्रमा (अस्मभ्यम्) हमारे लिए (उषसः) दिन में, ज्ञान में (च) और (पिन्वतम्) स्वीकार।

व्याख्या :-

प्रसन्न, सुविधाजनक और मधुर जीवन के लिए तीन कदम कौन से हैं?

प्रार्थना - दिन में तीन बार का अर्थ है बार-बार (क) कृपया हमारा दिन महान सुविधाओं के साथ उन्नत तरीके से समभावपूर्वक बीते, (ख) हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों स्तरों पर बुराईयों से बचायें, (ग) हमारे त्याग पूर्ण रूप से सन्तुष्टि पैदा करने वाले हों और मधुरता से सिंचित हों, (घ) हमारा जीवन सुविधाओं और प्रसन्नताओं के साथ बीते, (ड.) मेरा ज्ञान और अज्ञान सूर्य और चन्द्रमा की तरह दिन-रात आपको स्वीकृत हो।

जीवन में सार्थकता

समभाव की भूमिका और महत्व क्या है?

शरीर और मन का समभाव सदैव बना रहना चाहिए। इसके कई कारण हैं :-

(क) यदि हमारे शरीर और मन, प्राण और अपान में समभाव है, अर्थात् सन्तुलन है तो हमारा जीवन प्रगतिशील और उन्नत होगा।

(ख) यदि हम अपने ज्ञान और कर्मों को बुराईयों से बचा कर रखते हैं तो निश्चित रूप से हम रोग रहित सुविधाजनक जीवन जी सकते हैं।

(ग) यदि हम अपने जीवन को त्यागपूर्वक व्यतीत करते हैं तो हमारा जीवन मधुरता से सिंचित हो जाता है।

(घ) यदि हम अपनी सारी योग्यतायें - ज्ञान और अज्ञान, सब कुछ परमात्मा को समर्पित कर देते हैं तो हमारा जीवन समभाव और सन्तुष्ट हो जाता है। जीवन का यह समभाव दिन और रात्रि प्रतिक्षण चलना चाहिए।

इन्द्रियों पर नियन्त्रण के लिए समभाव प्रथम शर्त है, जो हमें त्याग के मार्ग पर चलने के लिए और अपने समस्त प्रयास, ज्ञान और अज्ञान सब कुछ परमात्मा को समर्पित करने के लिए प्रेरित करती है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.3

सुमाने अहुन्निरवद्यगोहना त्रिरुद्य युज्ञं मधुना मिमिक्षतम् ।
त्रिवर्जिवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अुस्मभ्यमुपसंच पिन्वतम् ॥

(समाने) सम भाव से, महान सुविधाजनक, उन्नत (अहन्) दिन (त्रिः) तीन बारए बार-बार, तीन स्तरों पर (अवद्य गोहना) सब बुराईयों, दोषों से बचाने वाले (त्रिः) तीन बार, बार-बार (अद्य) आज (यज्ञम्) त्यागमयी जीवन (मधुना) मधुरता के साथ (मिमिक्षतम्) सिंचाई करो, पूर्ण सन्तुष्ट करो (त्रिः) तीन बारए बार-बार (वाजवतीः - सुविधाएं और प्रसन्नता देने वाले (इषः) इच्छित (अश्विना) जोड़ा (युवम्) दोनों का (दोषा) रात्रि में, अज्ञानता में, चन्द्रमा (अस्मभ्यम्) हमारे लिए (उषसः) दिन में, ज्ञान में (च) और (पिन्वतम्) स्वीकार।

व्याख्या :-

प्रसन्न, सुविधाजनक और मधुर जीवन के लिए तीन कदम कौन से हैं?

प्रार्थना - दिन में तीन बार का अर्थ है बार-बार (क) कृपया हमारा दिन महान सुविधाओं के साथ उन्नत तरीके से समभावपूर्वक बीते, (ख) हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों स्तरों पर बुराईयों से बचायें, (ग) हमारे त्याग पूर्ण रूप से सन्तुष्टि पैदा करने वाले हों और मधुरता से सिंचित हों, (घ) हमारा जीवन सुविधाओं और प्रसन्नताओं के साथ बीते, (ड.) मेरा ज्ञान और अज्ञान सूर्य और चन्द्रमा की तरह दिन-रात आपको स्वीकृत हो।

जीवन में सार्थकता

समभाव की भूमिका और महत्व क्या है?

शरीर और मन का समभाव सदैव बना रहना चाहिए। इसके कई कारण हैं :-

(क) यदि हमारे शरीर और मन, प्राण और अपान में समभाव है, अर्थात् सन्तुलन है तो हमारा जीवन प्रगतिशील और उन्नत होगा।

(ख) यदि हम अपने ज्ञान और कर्मों को बुराईयों से बचा कर रखते हैं तो निश्चित रूप से हम रोग रहित सुविधाजनक जीवन जी सकते हैं।

(ग) यदि हम अपने जीवन को त्यागपूर्वक व्यतीत करते हैं तो हमारा जीवन मधुरता से सिंचित हो जाता है।

(घ) यदि हम अपनी सारी योग्यतायें - ज्ञान और अज्ञान, सब कुछ परमात्मा को समर्पित कर देते हैं तो हमारा जीवन समभाव और सन्तुष्ट हो जाता है। जीवन का यह समभाव दिन और रात्रि प्रतिक्षण चलना चाहिए।

इन्द्रियों पर नियन्त्रण के लिए समभाव प्रथम शर्त है, जो हमें त्याग के मार्ग पर चलने के लिए और अपने समस्त प्रयास, ज्ञान और अज्ञान सब कुछ परमात्मा को समर्पित करने के लिए प्रेरित करती है।



॥ पवित्र वेद ॥

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमार्थ निकालन, स्वर्गाश्रम, अद्विकेश (भारत)

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.4

त्रिवर्तीर्यांतुं त्रिरुद्रते जने त्रिः सुप्राव्ये त्रेधेवं शिक्षतम् ।
त्रिनृन्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः पृक्षो अुस्मे अुक्षरैव पिन्वतम् ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (वर्ति:) महान पथ (यातम्) अनुसरण करो (त्रिः) तीन बार (बार-बार) (अनुव्रते जने) संकल्पशील लोग (त्रिः) तीन बार, बार-बार (सुप्राव्ये) उत्तम रूप से संरक्षण करने में सक्षम (त्रेधा इव) तीन प्रकार से (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) (शिक्षितम्) शिक्षित करो, शक्तिशाली बनाओ (त्रिः) तीन बार, बार-बार (नान्द्यम्) प्रसन्नता के लिए सम्पन्नता (वहतम्) प्राप्त कराओ (अश्विना) जोड़ा (युवम्) तुम दोनों का (त्रिः) तीन बार, बार-बार (पृक्षः) ज्ञान तथा भौतिक वस्तुयें (अस्मे) हमारे लिए (अक्षरा इव) जल की तरह (पिन्वतम्) हमें प्राप्त करो ।

व्याख्या :-

महान श्रेष्ठ पथ का अनुसरण कैसे करें?

हम महान श्रेष्ठ पथ का अनुसरण बार-बार निम्न प्रकार से कर सकते हैं :-

- (क) बार-बार संकल्पशील व्यक्तियों का अनुसरण करें।
- (ख) बार-बार उत्तम रूप से संरक्षण के योग्य बनें।
- (ग) स्वयं को तीन तरफ से शिक्षित करें और ताकतवर बनायें - शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक।
- (घ) समृद्धि और प्रसन्नता के लिए प्रार्थना और प्रयास करें।
- (ङ) जिस प्रकार जल सबके कल्याण के लिए बहता रहता है, उसी प्रकार हम भी बार-बार सबके कल्याण के लिए ज्ञान और समस्त भौतिक सम्पदायें धारण करें।

जीवन में सार्थकता

महान श्रेष्ठ मार्ग को सर्वमान्य कैसे बनायें?

हमारे जीवन में महान श्रेष्ठ मार्ग मुक्ति तक सर्वमान्य बना रहे।

यदि आप बार-बार महान श्रेष्ठ मार्ग के अनुसार का संकल्प करते हो तो 5 प्रयास पूरी आस्था के साथ करने चाहिये, आपको निश्चित रूप से प्रगतिशील और प्रसन्न जीवन प्राप्त होगा। इस संकल्प का अनुसरण करते हुए आपके संकल्प और आपके कार्य आपको बार-बार मानव जीवन प्राप्त करवायेंगे, जब तक आप मुक्ति की अवस्था को प्राप्त न कर लें और प्रत्येक जन्म में आप इस महान श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करते रहें। इस महान श्रेष्ठ मार्ग के 5 प्रयास आपको जीवन में पूरे क्रियात्मक रूप से शामिल कर लेने चाहिए :-

- (क) अनुवृते - संकल्पशील लोगों का अनुसरण करो।
- (ख) सुप्राव्ये - अपने आपको तथा अन्यों को संरक्षण देने के योग्य बनो।
- (ग) शिक्षतम् - तीनों स्तरों की पूर्ण शिक्षा ग्रहण करो।
- (घ) नान्द्यम् - प्रसन्नता के लिए समृद्धि प्राप्त करो।
- (ङ) पृक्षः अक्षरा इव - ज्ञान और सम्पदा को जल की तरह धारण करो।



॥ पवित्र वेद ॥

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमार्थ निकालन, स्वर्गाश्रम, अद्विकेश (भारत)

ऋग्वेद मन्त्र 1.34.4

त्रिवर्तीर्यांतुं त्रिरुद्रते जने त्रिः सुप्राव्ये त्रेधेवं शिक्षतम् ।
त्रिनृन्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः पृक्षो अुस्मे अुक्षरैव पिन्वतम् ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (वर्ति:) महान पथ (यातम्) अनुसरण करो (त्रिः) तीन बार (बार-बार) (अनुव्रते जने) संकल्पशील लोग (त्रिः) तीन बार, बार-बार (सुप्राव्ये) उत्तम रूप से संरक्षण करने में सक्षम (त्रेधा इव) तीन प्रकार से (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) (शिक्षितम्) शिक्षित करो, शक्तिशाली बनाओ (त्रि) तीन बार, बार-बार (नान्द्यम्) प्रसन्नता के लिए सम्पन्नता (वहतम्) प्राप्त कराओ (अश्विना) जोड़ा (युवम्) तुम दोनों का (त्रिः) तीन बार, बार-बार (पृक्षः) ज्ञान तथा भौतिक वस्तुयें (अस्मे) हमारे लिए (अक्षरा इव) जल की तरह (पिन्वतम्) हमें प्राप्त करो ।

व्याख्या :-

महान श्रेष्ठ पथ का अनुसरण कैसे करें?

हम महान श्रेष्ठ पथ का अनुसरण बार-बार निम्न प्रकार से कर सकते हैं :-

- (क) बार-बार संकल्पशील व्यक्तियों का अनुसरण करें।
- (ख) बार-बार उत्तम रूप से संरक्षण के योग्य बनें।
- (ग) स्वयं को तीन तरफ से शिक्षित करें और ताकतवर बनायें - शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक।
- (घ) समृद्धि और प्रसन्नता के लिए प्रार्थना और प्रयास करें।
- (ङ) जिस प्रकार जल सबके कल्याण के लिए बहता रहता है, उसी प्रकार हम भी बार-बार सबके कल्याण के लिए ज्ञान और समस्त भौतिक सम्पदायें धारण करें।

जीवन में सार्थकता

महान श्रेष्ठ मार्ग को सर्वमान्य कैसे बनायें?

हमारे जीवन में महान श्रेष्ठ मार्ग मुक्ति तक सर्वमान्य बना रहे।

यदि आप बार-बार महान श्रेष्ठ मार्ग के अनुसार का संकल्प करते हो तो 5 प्रयास पूरी आस्था के साथ करने चाहिये, आपको निश्चित रूप से प्रगतिशील और प्रसन्न जीवन प्राप्त होगा। इस संकल्प का अनुसरण करते हुए आपके संकल्प और आपके कार्य आपको बार-बार मानव जीवन प्राप्त करवायेंगे, जब तक आप मुक्ति की अवस्था को प्राप्त न कर लें और प्रत्येक जन्म में आप इस महान श्रेष्ठ मार्ग का अनुसरण करते रहें। इस महान श्रेष्ठ मार्ग के 5 प्रयास आपको जीवन में पूरे क्रियात्मक रूप से शामिल कर लेने चाहिए :-

- (क) अनुवृते - संकल्पशील लोगों का अनुसरण करो।
- (ख) सुप्राव्ये - अपने आपको तथा अन्यों को संरक्षण देने के योग्य बनो।
- (ग) शिक्षतम् - तीनों स्तरों की पूर्ण शिक्षा ग्रहण करो।
- (घ) नान्द्यम् - प्रसन्नता के लिए समृद्धि प्राप्त करो।
- (ङ) पृक्षः अक्षरा इव - ज्ञान और सम्पदा को जल की तरह धारण करो।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.5

त्रिनौ रुयिं वहतमश्विना युवं त्रिर्द्वताता त्रिरुतावतं धियः ।
त्रिः सौभग्यत्वं त्रिरुतं श्रवांसि नस्त्रिष्ठं वां सुरे दुहिता रुहुद्रथम् ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (नः) हमारे लिए (रयिम्) गौरवशाली सम्पदा (वहतम्) प्राप्त कराओ
(अश्विना) दोनों (प्राण-अपान, धरती और आकाश की तरह) (युवम्) तुम दोनों के (त्रिः) तीन बार, बार-बार (देवताता)
दिव्यतायें बढ़ाओ (त्रिः) तीन बार, बार-बार (उत) और (अवतम्) संरक्षित करो (धियः) बुद्धियाँ (त्रिः) तीन बार, बार-बार
(सौभग्यत्वम्) उत्तम सुविधाएं और सौभाग्य (त्रिः) तीन बार, बार-बार (उत) और (श्रवांसि) सुनने योग्य (नः) हमारे (त्रिष्ठम्)
तीन स्थापित (शरीर, मन और आत्मा), (इन्द्रियां, मन और बुद्धि) (वाम्) तुम्हारे (सूरे:) सूर्य की
(दुहिता) पुत्री (प्रशंसनीय प्रकाश) (अरुहत्) आरुङ्, स्थापित (रथम्) रथ (शरीर) ।

व्याख्या :-

प्रगति और समृद्धि के लिए हमारी क्या प्रार्थनायें होना चाहिए?

समृद्धि का उद्देश्य क्या है?

प्रगति और समृद्धि के लिए 5 प्रार्थनायें हैं। ये प्रार्थनायें अश्विना अर्थात् दोनों प्राणों, धरती-आकाश और परमात्मा-प्रगति
को की गयी हैं :-

- (क) हमें बार-बार गौरवशाली सम्पदा प्राप्त करवाओ (रयिम्) ।
- (ख) हमारे अन्दर बार-बार दिव्यताओं की वृद्धि करो (देवताता) ।
- (ग) विद्वानों को बार-बार संरक्षित करो (अवतम् धियः) ।
- (घ) उत्तम सुख और सौभाग्य हमें बार-बार उपलब्ध करवाओ (सौभग्यत्वम्) ।
- (ङ) हमें सुनने लायक वाणी अर्थात् वेद बार-बार उपलब्ध करवाओ (श्रवांसि) ।

इन प्रार्थनाओं का उद्देश्य यह है कि हमारे तीन दृष्टिकोण (शरीर, मन और आत्मा) (इन्द्रियां, मन और बुद्धि) इस शरीर
रथ पर सूर्य के यश के समान यशस्वी रूप में यात्रा कर सकें, जो स्वतः ही चमकता है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य के यश के समान अपने जीवन को स्वतः चमकने वाला कैसे बनायें?

हमारी सम्पत्ति, दिव्यताओं, संरक्षण, सौभाग्य और महान ज्ञान का उद्देश्य सूरे दुहिता के समान लक्षण धारण करना
होना चाहिए। सूरे दुहिता का अर्थ है सूर्य की बेटी अर्थात् यशस्वी प्रकाश की किरणें। हमें स्वतः चमक वाला होना चाहिए,
जो दूसरों को भी देखने में सहायक बन सके। कोई भी लक्षण जो केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन तक सीमित रहता है,
वह निरर्थक है। वह न हमारे लिए लाभकारी है और न अन्यों के लिए। हमारी सभी वस्तुयें और ज्ञान आदि बहते हुए
जल की तरह होनी चाहिए। जैसा इस सूक्त के चौथे मन्त्र में बताया गया है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.5

त्रिनौ रुयिं वहतमश्विना युवं त्रिर्द्वताता त्रिरुतावतं धियः ।
त्रिः सौभग्यत्वं त्रिरुतं श्रवांसि नस्त्रिष्ठं वां सुरे दुहिता रुहुद्रथम् ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (नः) हमारे लिए (रयिम्) गौरवशाली सम्पदा (वहतम्) प्राप्त कराओ
(अश्विना) दोनों (प्राण-अपान, धरती और आकाश की तरह) (युवम्) तुम दोनों के (त्रिः) तीन बार, बार-बार (देवताता)
दिव्यतायें बढ़ाओ (त्रिः) तीन बार, बार-बार (उत) और (अवतम्) संरक्षित करो (धियः) बुद्धियाँ (त्रिः) तीन बार, बार-बार
(सौभग्यत्वम्) उत्तम सुविधाएं और सौभाग्य (त्रिः) तीन बार, बार-बार (उत) और (श्रवांसि) सुनने योग्य (नः) हमारे (त्रिष्ठम्)
तीन स्थापित (शरीर, मन और आत्मा), (इन्द्रियां, मन और बुद्धि) (वाम्) तुम्हारे (सूरे:) सूर्य की
(दुहिता) पुत्री (प्रशंसनीय प्रकाश) (अरुहत्) आरुङ्, स्थापित (रथम्) रथ (शरीर) ।

व्याख्या :-

प्रगति और समृद्धि के लिए हमारी क्या प्रार्थनायें होना चाहिए?

समृद्धि का उद्देश्य क्या है?

प्रगति और समृद्धि के लिए 5 प्रार्थनायें हैं। ये प्रार्थनायें अश्विना अर्थात् दोनों प्राणों, धरती-आकाश और परमात्मा-प्रगति
को की गयी हैं :-

- (क) हमें बार-बार गौरवशाली सम्पदा प्राप्त करवाओ (रयिम्) ।
- (ख) हमारे अन्दर बार-बार दिव्यताओं की वृद्धि करो (देवताता) ।
- (ग) विद्वानों को बार-बार संरक्षित करो (अवतम् धियः) ।
- (घ) उत्तम सुख और सौभाग्य हमें बार-बार उपलब्ध करवाओ (सौभग्यत्वम्) ।
- (ङ) हमें सुनने लायक वाणी अर्थात् वेद बार-बार उपलब्ध करवाओ (श्रवांसि) ।

इन प्रार्थनाओं का उद्देश्य यह है कि हमारे तीन दृष्टिकोण (शरीर, मन और आत्मा) (इन्द्रियां, मन और बुद्धि) इस शरीर
रथ पर सूर्य के यश के समान यशस्वी रूप में यात्रा कर सकें, जो स्वतः ही चमकता है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य के यश के समान अपने जीवन को स्वतः चमकने वाला कैसे बनायें?

हमारी सम्पत्ति, दिव्यताओं, संरक्षण, सौभाग्य और महान ज्ञान का उद्देश्य सूरे दुहिता के समान लक्षण धारण करना
होना चाहिए। सूरे दुहिता का अर्थ है सूर्य की बेटी अर्थात् यशस्वी प्रकाश की किरणें। हमें स्वतः चमक वाला होना चाहिए,
जो दूसरों को भी देखने में सहायक बन सके। कोई भी लक्षण जो केवल हमारे व्यक्तिगत जीवन तक सीमित रहता है,
वह निरर्थक है। वह न हमारे लिए लाभकारी है और न अन्यों के लिए। हमारी सभी वस्तुयें और ज्ञान आदि बहते हुए
जल की तरह होनी चाहिए। जैसा इस सूक्त के चौथे मन्त्र में बताया गया है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.6

त्रिनौ अश्विना दिव्यानि भेषुजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमुद्भः ।
ओमानं शुयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (नः) हमारे लिए (अश्विना) दोनों (दिव्यानि) दिव्यता से (भेषजा) औषधि, भोजन (त्रिः) तीन बार, बार-बार (पार्थिवानि) पृथ्वी से (त्रिः) तीन बारए बार-बार (उ) और (दत्तम्) दीजिए (अदभ्यः) जल से, वायुमण्डल से, अन्तरिक्ष से (ओमानम्) व्यवहार, शान्ति और आनन्द के संरक्षण के लिए (शंयोः) प्रसन्नता के लिए, सुविधाजनक जीवन के लिए (ममकाय) मेरे लिए (सूनवे) वैदिक विवेक की प्रेरणा (त्रिधातु) तेज के तीन गुण (वात, पित्त, कफ), (सत्त्व, रज, तम) (शर्म) सन्तुलित, समन्वय (वहतम्) उपलब्ध कराओ (शुभस्पती) कल्याणकारी गतिविधियाँ ।

व्याख्या :-

तीन प्रकार के भोजन और औषधियाँ क्या हैं?

इन भोजन और औषधियों के क्या परिणाम हैं?

परमात्मा और प्रकृति माता से प्रार्थना है कि वे हमें तीन प्रकार के भोजन और औषधियां प्राप्त करायें :-

(क) दिव्यता से हमें आध्यात्मिक प्रकाश प्राप्त हो, जिससे हम अपनी आन्तरिक शक्ति पर ध्यान लगाकर परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकें।

(ख) धरती से हमें भिन्न-2 प्रकार के भोजन और औषधियाँ प्राप्त हों।

(ग) जल, वायुमण्डल तथा अन्तरिक्ष से हमें वायु तथा जलीय औषधियाँ प्राप्त हों।

इन तीन प्रकार के भोजन और औषधियों के फलस्वरूप हमें निम्न परिणाम प्राप्त होते हैं :-

(क) संरक्षण योग्य व्यवहार की शक्ति, शान्ति और आनन्द,

(ख) प्रसन्नता और सुखी जीवन,

(ग) वैदिक विवेक की हमारी अपनी प्रेरणा,

(घ) प्राण शक्ति की तीनों धातुओं की एक सन्तुलित अवस्था,

(ङ) सबके कल्याण के लिए सभी गतिविधियाँ ।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण स्वस्थ कैसे सुनिश्चित करें?

पूर्ण स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक भोजन और औषधि हमें शुद्ध रूप में प्राप्त होनी चाहिए। हमारी एकाग्रता इन तीनों प्रकार के भोजनों को उनके शुद्ध रूप में, बिना मिलावट के, औषधि की तरह भोग करने में होनी चाहिए। दिव्य कार्यों में तो शुद्धता की नितान्त आवश्यकता है। अनुभूति का परम्पराओं से न्यून सम्बन्ध नहीं है। स्वास्थ्य के लिए दिव्य औषधि सर्वोच्च कारक है।

इन तीन प्रकार के भोजनों और औषधियों के परिणाम स्वरूप एक व्यक्ति ही नहीं, अपितु पूरे समाज का पूर्ण विकास सम्भव है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.6

त्रिनौ अश्विना दिव्यानि भेषुजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमुद्भः ।
ओमानं शुयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (नः) हमारे लिए (अश्विना) दोनों (दिव्यानि) दिव्यता से (भेषजा) औषधि, भोजन (त्रिः) तीन बार, बार-बार (पार्थिवानि) पृथ्वी से (त्रिः) तीन बारए बार-बार (उ) और (दत्तम्) दीजिए (अदभ्यः) जल से, वायुमण्डल से, अन्तरिक्ष से (ओमानम्) व्यवहार, शान्ति और आनन्द के संरक्षण के लिए (शंयोः) प्रसन्नता के लिए, सुविधाजनक जीवन के लिए (ममकाय) मेरे लिए (सूनवे) वैदिक विवेक की प्रेरणा (त्रिधातु) तेज के तीन गुण (वात, पित्त, कफ), (सत्त्व, रज, तम) (शर्म) सन्तुलित, समन्वय (वहतम्) उपलब्ध कराओ (शुभस्पती) कल्याणकारी गतिविधियाँ ।

व्याख्या :-

तीन प्रकार के भोजन और औषधियाँ क्या हैं?

इन भोजन और औषधियों के क्या परिणाम हैं?

परमात्मा और प्रकृति माता से प्रार्थना है कि वे हमें तीन प्रकार के भोजन और औषधियां प्राप्त करायें :-

(क) दिव्यता से हमें आध्यात्मिक प्रकाश प्राप्त हो, जिससे हम अपनी आन्तरिक शक्ति पर ध्यान लगाकर परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकें।

(ख) धरती से हमें भिन्न-2 प्रकार के भोजन और औषधियाँ प्राप्त हों।

(ग) जल, वायुमण्डल तथा अन्तरिक्ष से हमें वायु तथा जलीय औषधियाँ प्राप्त हों।

इन तीन प्रकार के भोजन और औषधियों के फलस्वरूप हमें निम्न परिणाम प्राप्त होते हैं :-

(क) संरक्षण योग्य व्यवहार की शक्ति, शान्ति और आनन्द,

(ख) प्रसन्नता और सुखी जीवन,

(ग) वैदिक विवेक की हमारी अपनी प्रेरणा,

(घ) प्राण शक्ति की तीनों धातुओं की एक सन्तुलित अवस्था,

(ङ) सबके कल्याण के लिए सभी गतिविधियाँ ।

जीवन में सार्थकता

पूर्ण स्वस्थ कैसे सुनिश्चित करें?

पूर्ण स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक भोजन और औषधि हमें शुद्ध रूप में प्राप्त होनी चाहिए। हमारी एकाग्रता इन तीनों प्रकार के भोजनों को उनके शुद्ध रूप में, बिना मिलावट के, औषधि की तरह भोग करने में होनी चाहिए। दिव्य कार्यों में तो शुद्धता की नितान्त आवश्यकता है। अनुभूति का परम्पराओं से न्यून सम्बन्ध नहीं है। स्वास्थ्य के लिए दिव्य औषधि सर्वोच्च कारक है।

इन तीन प्रकार के भोजनों और औषधियों के परिणाम स्वरूप एक व्यक्ति ही नहीं, अपितु पूरे समाज का पूर्ण विकास सम्भव है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.7

त्रिनों अश्विना यजुता द्विवेदिवे परि त्रिधातुं पृथिवीमशायतम् ।
तिस्रो नासत्या रथ्या परावत् आत्मेव वातुः स्वसराणि गच्छतम् ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (नः) हमें (अश्विना) दोनों (आत्मा और परमात्मा, प्राण और अपान) (यजता) संगति (दिवे दिवे) प्रतिदिन (परि) व्याप्त (त्रिधातु) तीन तत्व (वात, पित्त, कफ), (सत्त्व, रज, तम) (पृथिवीम्) भौतिक शरीर में, पृथ्वी में (अशायतम्) निवास करते हैं (तिस्रः) तीन स्तर (शरीर, मन और आत्मा), (वायु के तीन मार्ग - इड़ा, पिंगला और सरस्वती) (नासत्या) असत्य को स्वीकार न करने वाला (रथ्या) शरीर रथ (परावतः) सुदूर (आत्मा इव) आत्मा की तरह (वातः) सदैव गतिशील (स्वसराणि) आत्मा के लक्ष्य की ओर प्रगति करते हुए, आत्मा के लिए निर्धारित लक्ष्यों की गतिविधि यों के लिए (गच्छतम्) जाते हैं।

व्याख्या :-

आत्मा के गन्तव्य तक पहुँचने में कौन हमारी सहायता करता है?

अश्विना अर्थात् दोनों प्राण-अपान तथा आत्मा-परमात्मा का जोड़ा प्रतिदिन बार-बार मिलता रहे और तीनों तत्वों के बीच सदैव व्याप्त रहे - वात-पित्त-कफ, सत्त्व-रज-तम आदि।

वे दोनों जीवन के किसी भी स्तर अथवा किसी भी वायु मार्ग में असत्य को अन्दर नहीं आने देते। जीवन के तीन स्तर हैं - शरीर, मन और आत्मा, जीवन के तीन वायु मार्ग हैं - इड़ा, पिंगला और सरस्वती। वे सदैव शरीर को बहुत दूर ले जाते हैं, जहाँ आत्मा का गन्तव्य स्थान है और आत्मा के निर्धारित कर्तव्य हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा और आत्मा के संगतिकरण का क्या प्रभाव है?

परमात्मा और आत्मा की संगतिकरण अर्थात् सामूहिक वास हमारे जीवन का एक सर्वमान्य लक्षण है। हमारे शरीर और मन पर भिन्न-2 तत्वों जैसे वात-पित्त-कफ तथा सत्त्व-रज-तम का भिन्न-2 प्रभाव हो सकता है, परन्तु परमात्मा और आत्मा का संगतिकरण जीवन की हर अवस्था से परे है। यह वास्तव में इन तत्वों से भी ऊपर है। हमारे जीवन की आन्तरिक और सर्वमान्य शक्ति कभी भी असत्य और अशुद्धि को अनुमति नहीं देती। यह हमारे शरीर और मन की अज्ञानता के विषय हैं। यदि हम अश्विना अर्थात् प्राण और अपान की सहायता से परमात्मा और आत्मा की मूल आन्तरिक शक्ति पर ध्यान एकाग्र करें तो ये निश्चित रूप से हमें आत्मा के गन्तव्य तक ले जाते हैं और उसके बीच में अन्य पूर्व निर्धारित लक्ष्यों पर भी ले जाते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.7

त्रिनों अश्विना यजुता द्विवेदिवे परि त्रिधातुं पृथिवीमशायतम् ।
त्रिसो नासत्या रथ्या परावत् आत्मेव वातुः स्वसराणि गच्छतम् ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार (नः) हमें (अश्विना) दोनों (आत्मा और परमात्मा, प्राण और अपान) (यजता) संगति (दिवे दिवे) प्रतिदिन (परि) व्याप्त (त्रिधातु) तीन तत्व (वात, पित्त, कफ), (सत्त्व, रज, तम) (पृथिवीम्) भौतिक शरीर में, पृथ्वी में (अशायतम्) निवास करते हैं (तिस्रः) तीन स्तर (शरीर, मन और आत्मा), (वायु के तीन मार्ग - इड़ा, पिंगला और सरस्वती) (नासत्या) असत्य को स्वीकार न करने वाला (रथ्या) शरीर रथ (परावतः) सुदूर (आत्मा इव) आत्मा की तरह (वातः) सदैव गतिशील (स्वसराणि) आत्मा के लक्ष्य की ओर प्रगति करते हुए, आत्मा के लिए निर्धारित लक्ष्यों की गतिविधि यों के लिए (गच्छतम्) जाते हैं।

व्याख्या :-

आत्मा के गन्तव्य तक पहुँचने में कौन हमारी सहायता करता है?

अश्विना अर्थात् दोनों प्राण-अपान तथा आत्मा-परमात्मा का जोड़ा प्रतिदिन बार-बार मिलता रहे और तीनों तत्वों के बीच सदैव व्याप्त रहे - वात-पित्त-कफ, सत्त्व-रज-तम आदि।

वे दोनों जीवन के किसी भी स्तर अथवा किसी भी वायु मार्ग में असत्य को अन्दर नहीं आने देते। जीवन के तीन स्तर हैं - शरीर, मन और आत्मा, जीवन के तीन वायु मार्ग हैं - इड़ा, पिंगला और सरस्वती। वे सदैव शरीर को बहुत दूर ले जाते हैं, जहाँ आत्मा का गन्तव्य स्थान है और आत्मा के निर्धारित कर्तव्य हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा और आत्मा के संगतिकरण का क्या प्रभाव है?

परमात्मा और आत्मा की संगतिकरण अर्थात् सामूहिक वास हमारे जीवन का एक सर्वमान्य लक्षण है। हमारे शरीर और मन पर भिन्न-2 तत्वों जैसे वात-पित्त-कफ तथा सत्त्व-रज-तम का भिन्न-2 प्रभाव हो सकता है, परन्तु परमात्मा और आत्मा का संगतिकरण जीवन की हर अवस्था से परे है। यह वास्तव में इन तत्वों से भी ऊपर है। हमारे जीवन की आन्तरिक और सर्वमान्य शक्ति कभी भी असत्य और अशुद्धि को अनुमति नहीं देती। यह हमारे शरीर और मन की अज्ञानता के विषय हैं। यदि हम अश्विना अर्थात् प्राण और अपान की सहायता से परमात्मा और आत्मा की मूल आन्तरिक शक्ति पर ध्यान एकाग्र करें तो ये निश्चित रूप से हमें आत्मा के गन्तव्य तक ले जाते हैं और उसके बीच में अन्य पूर्व निर्धारित लक्ष्यों पर भी ले जाते हैं।



त्रिरश्विना सिन्धुभिः सुप्तमातृभिस्त्रये आहावास्त्रेधा हृविष्कृतम् ।

तिस्रः पृथिवीरूपरि प्रवा दिवो नाकं रक्षेष्ये द्युभिरकुभिर्हृतम् ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार, जीवन की तीन अवस्थाएँ - बचपन, युवा तथा वृद्ध (अश्विना) दोनों (परमात्मा और आत्मा, प्राण और अपान) (सिन्धुभिः) जल (वीर्य) (सप्त मातृभिः) मातृत्व वाले सात तत्व (त्रयः) तीन (आहावा:) जल के आधार (त्रेधा) तीन प्रकार के (हविः कृतम्) त्यागपूर्ण कार्य, आहुतियाँ (तिस्रः) तीन (पृथिवीः) शरीर (स्थूल, सूक्ष्म और कारण)

(उपरि) उच्च (प्रवा) उठाने वाले (दिवः) दिव्य (नाकम्) क्रीड़ा से (रक्षेष्ये) सुरक्षित करते हो

(द्युभिः) दिन, प्रकाश (अक्तुभिः) प्रकाश की किरणों के साथ (हितम्) स्थापित ।

व्याख्या :-

हम स्वयं को जीवन के कष्टदायक खेल से कैसे संरक्षित करें?

एक सर्वमान्य तथ्य बार-बार दोहराया जाता है कि हमारी जीवन के निम्न पहलू पूरी तरह से अश्विना अर्थात् आत्मा और परमात्मा की एकता वाली ताकत पर निर्भर हैं अर्थात् हमारे दिव्य जीवन पर निर्भर हैं और हमारे प्राण, अपान की शक्ति अर्थात् हमारी श्वासों पर निर्भर हैं :-

(क) हमारा पूर्ण जीवन अर्थात् हमारा बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था,

(ख) हमारा वीर्य अर्थात् हमारे भोजन का अन्तिम परिणाम,

(ग) मातृत्व रूपी सात धातुएँ जिन्हें हमारा भोजन उत्पन्न करता है - रस, रक्त, मांस, मेध, अस्थि, मज्जा और वीर्य ।

हमारे शरीर में वीर्य की पूर्ण शक्ति ही हमारी इन्द्रियों, मन और बुद्धि की शक्ति का आधार है ।

इस प्रकार हमारे त्यागपूर्ण कार्यों में महान् शक्ति प्रदर्शित होती है ।

(क) इन्द्रियों के स्तर पर, हम केवल श्रेष्ठ कार्य ही करते हैं,

(ख) मानसिक स्तर पर, हम अहंकारहित और इच्छारहित हो जाते हैं,

(ग) बुद्धि के स्तर पर, हम स्व-अनुभूति की तरफ बढ़ते और प्रगति करते हैं ।

जीवन की ऐसी यात्रा हमें सदा के लिए शरीर के तीनों स्तरों - स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर, से ऊपर उठा देती है ।

जीवन का ऐसा स्तर ही जीवन के कष्टदायक खेल से सुरक्षित करने के योग्य हो सकता है और जीवन को कष्टरहित बना सकता है, जिससे किरणों के प्रकाश के साथ हम प्रकाश की ओर बढ़ सकें ।

जीवन में सार्थकता

एक महान् आध्यात्मिक जीवन के 5 कदम क्या हैं?

(क) हमारा सम्पूर्ण जीवन हमारे प्राणों पर तथा परमात्मा और आत्मा की एकता के ध्यान केन्द्रित करने पर निर्भर है ।

(ख) हमारे शरीर की मूल शक्ति, हमारा वीर्य हमारी इन्द्रियों, मन और बुद्धि का आधार है । यदि वीर्य को संरक्षित रखा जाये तो यह तीनों श्रेष्ठ रूप में कार्य करते हैं ।

(ग) ऐसा वीर्य तीन प्रकार के त्यागपूर्ण कार्यों में अपनी शक्ति परिलक्षित करता है ।

(घ) ऐसा जीवन स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के स्तरों से ऊपर उठ जाता है ।

(ङ) केवल ऐसा जीवन ही जीवन के खेल से बच जाता है, जो प्रत्येक स्तर पर कष्टदायक होता है ।



त्रिरश्विना सिन्धुभिः सुप्तमातृभिस्त्रये आहावास्त्रेधा हृविष्कृतम् ।

तिस्रः पृथिवीरूपरि प्रवा दिवो नाकं रक्षेष्ये द्युभिरकुभिर्हृतम् ॥

(त्रिः) तीन बार, बार-बार, जीवन की तीन अवस्थाएँ - बचपन, युवा तथा वृद्ध (अश्विना) दोनों (परमात्मा और आत्मा, प्राण और अपान) (सिन्धुभिः) जल (वीर्य) (सप्त मातृभिः) मातृत्व वाले सात तत्व (त्रयः) तीन (आहावा:) जल के आधार (त्रेधा) तीन प्रकार के (हविः कृतम्) त्यागपूर्ण कार्य, आहुतियाँ (तिस्रः) तीन (पृथिवीः) शरीर (स्थूल, सूक्ष्म और कारण)

(उपरि) उच्च (प्रवा) उठाने वाले (दिवः) दिव्य (नाकम्) क्रीड़ा से (रक्षेष्ये) सुरक्षित करते हो

(द्युभिः) दिन, प्रकाश (अक्तुभिः) प्रकाश की किरणों के साथ (हितम्) स्थापित ।

व्याख्या :-

हम स्वयं को जीवन के कष्टदायक खेल से कैसे संरक्षित करें?

एक सर्वमान्य तथ्य बार-बार दोहराया जाता है कि हमारी जीवन के निम्न पहलू पूरी तरह से अश्विना अर्थात् आत्मा और परमात्मा की एकता वाली ताकत पर निर्भर हैं अर्थात् हमारे दिव्य जीवन पर निर्भर हैं और हमारे प्राण, अपान की शक्ति अर्थात् हमारी श्वासों पर निर्भर हैं :-

(क) हमारा पूर्ण जीवन अर्थात् हमारा बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था,

(ख) हमारा वीर्य अर्थात् हमारे भोजन का अन्तिम परिणाम,

(ग) मातृत्व रूपी सात धातुएँ जिन्हें हमारा भोजन उत्पन्न करता है - रस, रक्त, मांस, मेध, अस्थि, मज्जा और वीर्य ।

हमारे शरीर में वीर्य की पूर्ण शक्ति ही हमारी इन्द्रियों, मन और बुद्धि की शक्ति का आधार है ।

इस प्रकार हमारे त्यागपूर्ण कार्यों में महान् शक्ति प्रदर्शित होती है ।

(क) इन्द्रियों के स्तर पर, हम केवल श्रेष्ठ कार्य ही करते हैं,

(ख) मानसिक स्तर पर, हम अहंकारहित और इच्छारहित हो जाते हैं,

(ग) बुद्धि के स्तर पर, हम स्व-अनुभूति की तरफ बढ़ते और प्रगति करते हैं ।

जीवन की ऐसी यात्रा हमें सदा के लिए शरीर के तीनों स्तरों - स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर, से ऊपर उठा देती है ।

जीवन का ऐसा स्तर ही जीवन के कष्टदायक खेल से सुरक्षित करने के योग्य हो सकता है और जीवन को कष्टरहित बना सकता है, जिससे किरणों के प्रकाश के साथ हम प्रकाश की ओर बढ़ सकें ।

जीवन में सार्थकता

एक महान् आध्यात्मिक जीवन के 5 कदम क्या हैं?

(क) हमारा सम्पूर्ण जीवन हमारे प्राणों पर तथा परमात्मा और आत्मा की एकता के ध्यान केन्द्रित करने पर निर्भर है ।

(ख) हमारे शरीर की मूल शक्ति, हमारा वीर्य हमारी इन्द्रियों, मन और बुद्धि का आधार है । यदि वीर्य को संरक्षित रखा जाये तो यह तीनों श्रेष्ठ रूप में कार्य करते हैं ।

(ग) ऐसा वीर्य तीन प्रकार के त्यागपूर्ण कार्यों में अपनी शक्ति परिलक्षित करता है ।

(घ) ऐसा जीवन स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के स्तरों से ऊपर उठ जाता है ।

(ङ) केवल ऐसा जीवन ही जीवन के खेल से बच जाता है, जो प्रत्येक स्तर पर कष्टदायक होता है ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.9

क्वृ त्री चुक्रा त्रिवृतो रथस्य क्वृ त्रयो बन्धुरो ये सनीलाः ।

कुदा योगो वाजिनो रासभस्य येन्युजां नासत्योपयाथः ॥

(क्व) कहाँ हैं (त्री) तीन (चक्र) पहिए (त्रिवृतः) तीन चक्र (रथस्य) इस रथ के, शरीर के (क्व) कहाँ हैं (त्रयः) तीन (बन्धुरः) बन्धन (ये) जो, कहाँ (सनीलाः) मिलकर रहना (कदा) कब (योगः) योग, मेल (वाजिनः) शक्तिशाली (रासभस्य) सर्वोच्च आनन्ददायक ज्ञान के देने वाले (येन) जिसके साथ (यज्ञम्) त्यागपूर्ण कार्य (नासत्या) कभी असत्य नहीं, स्थाई सत्य, परमात्मा (उपयाथः) समीपता से प्राप्त ।

व्याख्या :-

इस रथ के तीन वृत कौन से हैं?

इस रथ के तीन पहिये कौन से हैं?

तीन बंधन कौन से हैं और वे कहाँ पर हैं?

सर्वोच्च आनन्ददायक ज्ञान के दाता जो करीब से समस्त त्यागपूर्ण कार्यों को प्राप्त करता है, उसके साथ मैं एकता की अनुभूति कब करूँगा?

इन सब प्रश्नों के उत्तर के रूप में कहा जा सकता है कि वह जो कभी असत्य नहीं है अर्थात् सदा सत्य है, अर्थात् परमात्मा है। इन सब प्रश्नों के आध्यात्मिक उत्तर इस प्रकार हैं :-

(क) तीन वृत तीन पथ हैं या मानव जीवन के तीन प्रयास हैं - धर्म (नैतिकता), अर्थ (धन शक्ति) तथा काम (इन्द्रियां या सांसारिक इच्छाएं)। प्रत्येक जीवन इन तीन पथों पर चलता है।

(ख) तीन पहिये हैं - हमारी इन्द्रियां, मन और बुद्धि जिनके आधार पर हमारा शरीर रथ उपरोक्त तीन पथों पर चलता है।

(ग) तीन बंधन हैं - शारीरिक स्तर पर वात, पित्त, कफ और मानसिक स्तर पर सत्त्व, रज, तम। रोगों को दूर रखने के लिए हमें इन तीनों बंधनों को संतुलित अवस्था में रखना चाहिए। हमें इन तीनों मानसिक बंधनों से ऊपर उठना चाहिए, जिससे हम अपनी बुद्धि को परमात्मा की अनुभूति के योग्य बना सकें।

(घ) जब हम सत्त्व, रज और तम से ऊपर उठ जाते हैं, तभी हम उस सर्वमान्य सत्य अर्थात् परमात्मा के साथ एकता की आशा कर सकते हैं, जो हमारे त्याग को करीब से प्राप्त करता है। बिना त्याग के हम सत्त्व, रज और तम से ऊपर नहीं उठ सकते।

जीवन में सार्थकता

विवाद और झगड़े से मुक्त जीवन कैसे जिया जा सकता है?

मानव जीवन में बहु आयामी गतिविधियाँ और प्रभाव होते हैं। प्रत्येक मानव धर्म, अर्थ और काम में व्यस्त है। विरला ही कोई एक इन तीन वृतों से मुक्त होकर मोक्ष मार्ग की तरफ बढ़ता है।

इन तीन वृतों पर हम तीन पहियों की सहायता प्राप्त करते हैं - हमारी इन्द्रियां, मन और बुद्धि। एक जीवन तभी श्रेष्ठ माना जाता है, जिसमें ये तीन पहिये मजबूत और चमकदार हों, अन्यथा जीवन स्वयं ही एक नरक बन जाता है, जो रोगों और बुरे कार्यों से आच्छादित होता है। ये तीनों बंधन हमेशा जीवन को परेशान करते हैं। अतः इस मन्त्र का मूल भाव यह निकलता है कि हमें शारीरिक बंधनों को संतुलित अवस्था में रखना चाहिए, जिससे हमारा शरीर स्वस्थ रह सके। इसके उपरान्त बुराईयों, विवादों और कलह से ऊपर उठने के लिए हमें मानसिक बंधनों से ऊपर उठना चाहिए। जब कोई व्यक्ति मानसिक बंधनों से ऊपर उठने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित कर लेता है और जब वह सत्त्व, रज और तम की अपनी समझ के आधार पर अच्छे और बुरे निष्कर्ष से अलग हो जाता है, तभी वह विवाद और कलह से मुक्त जीवन जी सकता है। हमें किसी भी अवस्था पर अपनी समझ के आधार पर अच्छा या बुरा निष्कर्ष निकालने से स्वयं को रोकना चाहिए। किसी अवस्था के कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं, जो हमारे ज्ञान में न हों।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.9

क्वृ त्री चुक्रा त्रिवृतो रथस्य क्वृ त्रयो बन्धुरो ये सनीलाः ।

कुदा योगो वाजिनो रासभस्य येन्युजां नासत्योपयाथः ॥

(क्व) कहाँ हैं (त्री) तीन (चक्र) पहिए (त्रिवृतः) तीन चक्र (रथस्य) इस रथ के, शरीर के (क्व) कहाँ हैं (त्रयः) तीन (बन्धुरः) बन्धन (ये) जो, कहाँ (सनीलाः) मिलकर रहना (कदा) कब (योगः) योग, मेल (वाजिनः) शक्तिशाली (रासभस्य) सर्वोच्च आनन्ददायक ज्ञान के देने वाले (येन) जिसके साथ (यज्ञम्) त्यागपूर्ण कार्य (नासत्या) कभी असत्य नहीं, स्थाई सत्य, परमात्मा (उपयाथः) समीपता से प्राप्त ।

व्याख्या :-

इस रथ के तीन वृत कौन से हैं?

इस रथ के तीन पहिये कौन से हैं?

तीन बंधन कौन से हैं और वे कहाँ पर हैं?

सर्वोच्च आनन्ददायक ज्ञान के दाता जो करीब से समस्त त्यागपूर्ण कार्यों को प्राप्त करता है, उसके साथ मैं एकता की अनुभूति कब करूँगा?

इन सब प्रश्नों के उत्तर के रूप में कहा जा सकता है कि वह जो कभी असत्य नहीं है अर्थात् सदा सत्य है, अर्थात् परमात्मा है। इन सब प्रश्नों के आध्यात्मिक उत्तर इस प्रकार हैं :-

(क) तीन वृत तीन पथ हैं या मानव जीवन के तीन प्रयास हैं - धर्म (नैतिकता), अर्थ (धन शक्ति) तथा काम (इन्द्रियां या सांसारिक इच्छाएं)। प्रत्येक जीवन इन तीन पथों पर चलता है।

(ख) तीन पहिये हैं - हमारी इन्द्रियां, मन और बुद्धि जिनके आधार पर हमारा शरीर रथ उपरोक्त तीन पथों पर चलता है।

(ग) तीन बंधन हैं - शारीरिक स्तर पर वात, पित्त, कफ और मानसिक स्तर पर सत्त्व, रज, तम। रोगों को दूर रखने के लिए हमें इन तीनों बंधनों को संतुलित अवस्था में रखना चाहिए। हमें इन तीनों मानसिक बंधनों से ऊपर उठना चाहिए, जिससे हम अपनी बुद्धि को परमात्मा की अनुभूति के योग्य बना सकें।

(घ) जब हम सत्त्व, रज और तम से ऊपर उठ जाते हैं, तभी हम उस सर्वमान्य सत्य अर्थात् परमात्मा के साथ एकता की आशा कर सकते हैं, जो हमारे त्याग को करीब से प्राप्त करता है। बिना त्याग के हम सत्त्व, रज और तम से ऊपर नहीं उठ सकते।

जीवन में सार्थकता

विवाद और झगड़े से मुक्त जीवन कैसे जिया जा सकता है?

मानव जीवन में बहु आयामी गतिविधियाँ और प्रभाव होते हैं। प्रत्येक मानव धर्म, अर्थ और काम में व्यस्त है। विरला ही कोई एक इन तीन वृतों से मुक्त होकर मोक्ष मार्ग की तरफ बढ़ता है।

इन तीन वृतों पर हम तीन पहियों की सहायता प्राप्त करते हैं - हमारी इन्द्रियां, मन और बुद्धि। एक जीवन तभी श्रेष्ठ माना जाता है, जिसमें ये तीन पहिये मजबूत और चमकदार हों, अन्यथा जीवन स्वयं ही एक नरक बन जाता है, जो रोगों और बुरे कार्यों से आच्छादित होता है। ये तीनों बंधन हमेशा जीवन को परेशान करते हैं। अतः इस मन्त्र का मूल भाव यह निकलता है कि हमें शारीरिक बंधनों को संतुलित अवस्था में रखना चाहिए, जिससे हमारा शरीर स्वस्थ रह सके। इसके उपरान्त बुराईयों, विवादों और कलह से ऊपर उठने के लिए हमें मानसिक बंधनों से ऊपर उठना चाहिए। जब कोई व्यक्ति मानसिक बंधनों से ऊपर उठने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित कर लेता है और जब वह सत्त्व, रज और तम की अपनी समझ के आधार पर अच्छे और बुरे निष्कर्ष से अलग हो जाता है, तभी वह विवाद और कलह से मुक्त जीवन जी सकता है। हमें किसी भी अवस्था पर अपनी समझ के आधार पर अच्छा या बुरा निष्कर्ष निकालने से स्वयं को रोकना चाहिए। किसी अवस्था के कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं, जो हमारे ज्ञान में न हों।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.10

आ नासत्या गच्छतं हृयते हृविर्मध्वः पिबतं मधुपेभिरुसभिः ।
युवोर्हि पूर्वं सविताषसो रथमृताय चित्रं घृतवन्तुमिष्यति ॥

(आ) आओ (नासत्या) कभी असत्य नहीं, स्थाई सत्य, परमात्मा (गच्छतम्) जाओ (हृयते) प्रस्तुत (हविः) आहुतियाँ (त्यागपूर्वक की गई) (मध्वः) मधुर, तरल (पिबतम्) पीओ (मधुपेभिः) मधुर का पान करो (आसभिः) मुख से (युवोः) तुम दोनों (हि) निश्चित (पूर्वम्) पूर्व

(सविता) निर्माता, प्रकाश देने वाला (उषसः) सूर्य की प्रथम किरणें (रथम्) रथ, शरीर (ऋताय) सच्ची प्रसन्नता के लिए (चित्रम्) अद्भुत गुणों वाले (घृतवन्तम्) शुद्ध एवं प्रकाशवान (इष्यति) प्रेरित करता है।

व्याख्या :-

त्याग में दी जाने वाली आहुतियों का दाता और प्राप्तकर्ता कौन है?

त्याग में दी जाने वाली आहुतियाँ उसी स्थायी सत्य, परमात्मा, से आती हैं और वहीं पर जाती हैं। यह आहुतियाँ मधुर पेय प्राप्त करवाती हैं, जो हम अपने मुख से पीते हैं, जो केवल शुद्ध और पोषक भोजन के रसों को पीने के लिए ही बना है क्योंकि केवल शुद्ध भोजन ही हमें त्याग के लिए प्रेरित कर सकता है।

प्राण और अपान दोनों निश्चित रूप से अपनी गतिविधियाँ जारी रखते हैं, जिससे वे हमारे लिए प्रसन्नता अर्जित कर सकें, यहाँ तक कि सूर्य की प्रथम किरणों के आने से पूर्व। परमात्मा उन्हें प्रेरित करता है और योग्य बनाता है कि वे हमें शुद्ध और प्रकाशवान सर्वोच्च गुण प्रदान कर सकें।

जीवन में सार्थकता

त्याग में आहुतियों की तुलना प्राण और अपान से किस प्रकार की गयी है?

आहुतियों का स्रोत केवल परमात्मा ही है और त्याग के बाद ये आहुतियाँ परमात्मा के पास ही जाती हैं। इस प्रकार उस स्थायी सत्य, परमात्मा, के साथ सम्पर्क बनाने के लिए यह एक समुचित मार्ग है। इसके बदले हमें हर प्रकार के मधुर और पोषक रस प्राप्त होते हैं।

जिस प्रकार प्राण और अपान सूर्य की प्रथम किरणों के आगमन से भी पूर्ण सम्पूर्ण जीवन सक्रिय रहते हैं, हमें भी ऐसी ही प्रेरणा की प्रार्थना करनी चाहिए, जिससे हम आवश्यकता पड़ने पर कभी भी और कहीं भी त्याग के लिए अग्रणी रहें। जिस प्रकार प्राण और अपान परमात्मा से आते हैं और परमात्मा के पास जाते हैं, जो सर्व विद्यमान है, हमारे त्याग भी परमात्मा से आते हैं और परमात्मा के पास ही जाते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.10

आ नासत्या गच्छतं हृयते हृविर्मध्वः पिबतं मधुपेभिरुसभिः ।
युवोर्हि पूर्वं सविताषसो रथमृताय चित्रं घृतवन्तुमिष्यति ॥

(आ) आओ (नासत्या) कभी असत्य नहीं, स्थाई सत्य, परमात्मा (गच्छतम्) जाओ (हृयते) प्रस्तुत (हविः) आहुतियाँ (त्यागपूर्वक की गई) (मध्वः) मधुर, तरल (पिबतम्) पीओ (मधुपेभिः) मधुर का पान करो (आसभिः) मुख से (युवोः) तुम दोनों (हि) निश्चित (पूर्वम्) पूर्व

(सविता) निर्माता, प्रकाश देने वाला (उषसः) सूर्य की प्रथम किरणें (रथम्) रथ, शरीर (ऋताय) सच्ची प्रसन्नता के लिए (चित्रम्) अद्भुत गुणों वाले (घृतवन्तम्) शुद्ध एवं प्रकाशवान (इष्यति) प्रेरित करता है।

व्याख्या :-

त्याग में दी जाने वाली आहुतियों का दाता और प्राप्तकर्ता कौन है?

त्याग में दी जाने वाली आहुतियाँ उसी स्थायी सत्य, परमात्मा, से आती हैं और वहीं पर जाती हैं। यह आहुतियाँ मधुर पेय प्राप्त करवाती हैं, जो हम अपने मुख से पीते हैं, जो केवल शुद्ध और पोषक भोजन के रसों को पीने के लिए ही बना है क्योंकि केवल शुद्ध भोजन ही हमें त्याग के लिए प्रेरित कर सकता है।

प्राण और अपान दोनों निश्चित रूप से अपनी गतिविधियाँ जारी रखते हैं, जिससे वे हमारे लिए प्रसन्नता अर्जित कर सकें, यहाँ तक कि सूर्य की प्रथम किरणों के आने से पूर्व। परमात्मा उन्हें प्रेरित करता है और योग्य बनाता है कि वे हमें शुद्ध और प्रकाशवान सर्वोच्च गुण प्रदान कर सकें।

जीवन में सार्थकता

त्याग में आहुतियों की तुलना प्राण और अपान से किस प्रकार की गयी है?

आहुतियों का स्रोत केवल परमात्मा ही है और त्याग के बाद ये आहुतियाँ परमात्मा के पास ही जाती हैं। इस प्रकार उस स्थायी सत्य, परमात्मा, के साथ सम्पर्क बनाने के लिए यह एक समुचित मार्ग है। इसके बदले हमें हर प्रकार के मधुर और पोषक रस प्राप्त होते हैं।

जिस प्रकार प्राण और अपान सूर्य की प्रथम किरणों के आगमन से भी पूर्ण सम्पूर्ण जीवन सक्रिय रहते हैं, हमें भी ऐसी ही प्रेरणा की प्रार्थना करनी चाहिए, जिससे हम आवश्यकता पड़ने पर कभी भी और कहीं भी त्याग के लिए अग्रणी रहें। जिस प्रकार प्राण और अपान परमात्मा से आते हैं और परमात्मा के पास जाते हैं, जो सर्व विद्यमान है, हमारे त्याग भी परमात्मा से आते हैं और परमात्मा के पास ही जाते हैं।



आ नासत्या त्रिभिरेकादृशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना ।
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतुं सेधतुं द्वेषो भवतं सचाभुवा ॥

(आ - यातम से पूर्व लगाकर) (नासत्या) कभी असत्य नहीं, स्थाई सत्य, परमात्मा (त्रिभिः एकादशैः) तीन बार ग्यारह अर्थात् तैंतीस (इह) यहाँ, इस शरीर में (देवेभिः) दिव्य शक्ति (यातम् - आ यातम्) - आओ (मधु पेयम्) मधुर तरल, दिव्य औषधि, वीर्य (अश्विना) दोनों (प्र - तारिष्टम से पूर्व लगाकर) (आयुः) आयु (तारिष्टम - प्र तारिष्टम) - विस्तृत करने के लिए (निः - ऋक्षतम् और सेधतम् से पूर्व लगाकर) (रपांसि) बुराईयां और गलतियां (ऋक्षतम् - निः ऋक्षतम्) - पूरी तरह से दूर करके (सेधतम् - निः सेधतम्) - रोक दो (द्वेषः) द्वेष पूर्ण विचार (भवतम्) होओ (सचाभुवा) सत्य एवं स्थाई ।

व्याख्या :-

मधुर पेय अर्थात् दिव्य औषधि किस प्रकार प्राप्त करें?

प्राण और अपान, परमात्मा और आत्मा तैंतीस शक्तियों की दिव्यता सुनिश्चित कराने के लिए आते हैं, जिससे मधुर पेय अर्थात् दिव्य औषधियाँ सोम तथा वीर्य प्राप्त होता है। जीवन के तीन स्तर अर्थात् शरीर, मन और आत्मा को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दस इन्द्रियां और एक मन शुद्ध रहे। इस प्रकार तैंतीस शक्तियाँ होती हैं - ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि शरीर के स्तर पर, ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि मन के स्तर पर और ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि आध्यात्मिक स्तर पर।

इसके परिणामस्वरूप प्राप्त मधुर पेय निश्चित रूप से निम्न परिणाम सुनिश्चित करेगा :-

- (क) आयु की वृद्धि,
- (ख) बुराईयों और दोषों का पूर्ण निवारण,
- (ग) शत्रुतापूर्ण विचारों का निवारण,
- (घ) परमात्मा की सच्ची और स्थाई संगति ।

जीवन में सार्थकता

मधुर पेय अर्थात् दिव्य औषधि के क्या परिणाम हैं?

प्रेय मार्ग और श्रेय मार्ग क्या हैं?

जीवन के सभी स्तरों पर ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि कार्यशैली एक सुन्दर पथ का निर्माण कर सकती है, जिस पर आध्यात्मिक प्रगति सम्भव हो। ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि का प्रयोग महान और दिव्य गतिविधियों के लिए किया जाना चाहिए। ऐसी दिव्य इन्द्रियां मधुर रस पैदा करती हैं। हमारी इन्द्रियों को निर्थक और हानिकारक गतिविधियों में संलिप्त नहीं होना चाहिए क्योंकि केवल विलासिताओं से इन्द्रियों की संतुष्टि उन्हें कमजोर ही करती है, जब कि श्रेष्ठ कार्यों के लिए इन्द्रियों का प्रयोग मधुर पेय प्राप्त करवाता है। इसलिए दोनों में से एक स्पष्ट पथ का चयन करना चाहिए - (क) पेय मार्ग अर्थात् प्रिय मार्ग और (ख) श्रेय मार्ग अर्थात् श्रेष्ठ मार्ग ।

श्रेय मार्ग पर चलते हुए ही आप अपनी ग्यारह इन्द्रियों को शरीर, मन और आत्मा के उत्थान के लिए लगा सकते हैं और अन्ततः भगवान पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।



आ नासत्या त्रिभिरेकादृशैरिह द्वेभिर्यातं मधुपेयमश्विना ।
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतुं सेधतुं द्वेषो भवतं सचाभुवा ॥

(आ - यातम से पूर्व लगाकर) (नासत्या) कभी असत्य नहीं, स्थाई सत्य, परमात्मा (त्रिभिः एकादशैः) तीन बार ग्यारह अर्थात् तैंतीस (इह) यहाँ, इस शरीर में (देवेभिः) दिव्य शक्ति (यातम् - आ यातम्) - आओ (मधु पेयम्) मधुर तरल, दिव्य औषधि, वीर्य (अश्विना) दोनों (प्र - तारिष्टम से पूर्व लगाकर) (आयुः) आयु (तारिष्टम - प्र तारिष्टम) - विस्तृत करने के लिए (निः - ऋक्षतम् और सेधतम् से पूर्व लगाकर) (रपांसि) बुराईयां और गलतियां (ऋक्षतम् - निः ऋक्षतम्) - पूरी तरह से दूर करके (सेधतम् - निः सेधतम्) - रोक दो (द्वेषः) द्वेष पूर्ण विचार (भवतम्) होओ (सचाभुवा) सत्य एवं स्थाई ।

व्याख्या :-

मधुर पेय अर्थात् दिव्य औषधि किस प्रकार प्राप्त करें?

प्राण और अपान, परमात्मा और आत्मा तैंतीस शक्तियों की दिव्यता सुनिश्चित कराने के लिए आते हैं, जिससे मधुर पेय अर्थात् दिव्य औषधियाँ सोम तथा वीर्य प्राप्त होता है। जीवन के तीन स्तर अर्थात् शरीर, मन और आत्मा को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दस इन्द्रियां और एक मन शुद्ध रहे। इस प्रकार तैंतीस शक्तियाँ होती हैं - ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि शरीर के स्तर पर, ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि मन के स्तर पर और ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि आध्यात्मिक स्तर पर।

इसके परिणामस्वरूप प्राप्त मधुर पेय निश्चित रूप से निम्न परिणाम सुनिश्चित करेगा :-

- (क) आयु की वृद्धि,
- (ख) बुराईयों और दोषों का पूर्ण निवारण,
- (ग) शत्रुतापूर्ण विचारों का निवारण,
- (घ) परमात्मा की सच्ची और स्थाई संगति ।

जीवन में सार्थकता

मधुर पेय अर्थात् दिव्य औषधि के क्या परिणाम हैं?

प्रेय मार्ग और श्रेय मार्ग क्या हैं?

जीवन के सभी स्तरों पर ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि कार्यशैली एक सुन्दर पथ का निर्माण कर सकती है, जिस पर आध्यात्मिक प्रगति सम्भव हो। ग्यारह इन्द्रियों की शुद्धि का प्रयोग महान और दिव्य गतिविधियों के लिए किया जाना चाहिए। ऐसी दिव्य इन्द्रियां मधुर रस पैदा करती हैं। हमारी इन्द्रियों को निर्थक और हानिकारक गतिविधियों में संलिप्त नहीं होना चाहिए क्योंकि केवल विलासिताओं से इन्द्रियों की संतुष्टि उन्हें कमजोर ही करती है, जब कि श्रेष्ठ कार्यों के लिए इन्द्रियों का प्रयोग मधुर पेय प्राप्त करवाता है। इसलिए दोनों में से एक स्पष्ट पथ का चयन करना चाहिए - (क) पेय मार्ग अर्थात् प्रिय मार्ग और (ख) श्रेय मार्ग अर्थात् श्रेष्ठ मार्ग ।

श्रेय मार्ग पर चलते हुए ही आप अपनी ग्यारह इन्द्रियों को शरीर, मन और आत्मा के उत्थान के लिए लगा सकते हैं और अन्ततः भगवान पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.12

आ नों अश्विना त्रिवृता रथेनाऽवाज्चं सुयं वहतं सुवीरम् ।
शृण्वन्ता वामवसे जोहवीमि वृथे चं नो भवतुं वाजसातौ ॥

(आ) वहतम से पूर्व लगाकर (नः) हमारे लिए (अश्विना) दोनों (त्रिवृता) तीन चक्र, तीन मानवीय प्रयास - धर्म, अर्थ और काम अर्थात् श्रेष्ठ कर्म, अर्थ व्यवस्था और इच्छाएं (रथेन) रथ, मानव शरीर (अर्वाज्चम्) ऊपर से नीचे तक, पूर्णरूपेण (रयिम्) गौरवशाली सम्पदा (वहतम - आ वहतम) - प्राप्त करवाईए (सुवीरम्) वीरता के साथ, उत्तमता के साथ (शृण्वन्ता) मेरी प्रार्थनाओं को सुनने योग्य (वाम) आप (अवसे) पूर्ण सुरक्षा के लिए (जोहवीमि) आपको बार-बार बुलाता हूँ (वृथे) प्रगति और सफलता के लिए (च) और (नः) हमारे (भवतम्) होओ (वाजसातौ) संग्रामों में ।

व्याख्या :-

तीन दायित्व अर्थात् मानव जीवन के तीन प्रयास पूर्ण करने के लिए किसको प्रार्थना करें?

हम परमात्मा और आत्मा के साथ-साथ प्राण और अपान रूपी अश्विना जोड़ों को प्रार्थना करते हैं कि हमें वीरता और ऊपर से नीचे तक श्रेष्ठता सहित समस्त गौरवशाली सम्पदा प्रदान करें, जिससे हम मानव जीवन के तीन प्रयास अर्थात् धर्म, अर्थ और काम को पूर्ण कर सकें ।

तुम दोनों अश्विना ही पूर्ण संरक्षण के लिए प्रगति और सफलता के लिए तथा समस्त संग्रामों में हमारे साथ रहने के लिए हमारी प्रार्थनायें सुनने में सक्षम हों । इसलिए हम बार-बार तुम्हारा आहवान करते हैं ।

जीवन में सार्थकता

मानव अस्तित्व के चौथे और अन्तिम स्तर अर्थात् मुक्ति को कैसे प्राप्त किया जाये?

मानव होने के नाते हम सबकी तीन मूल जिम्मेदारियाँ हैं - धर्म, अर्थ और काम, जिनका हमें पूरी वीरता और श्रेष्ठता के साथ निर्वहन करना चाहिए । केवल परमात्मा और आत्मा, हमारे प्राण और अपान ही जीवन में हमारी सहायता कर सकते हैं । इस प्रकार हमें ध्यान करते हुए, प्रार्थना करते हुए तथा सहायता मांगते हुए केवल आन्तरिक शक्तियों पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए । हमें अपना समय, साधन और शक्तियाँ धर्म के नाम पर निर्धारित प्रक्रियाओं में व्यर्थ नहीं करना चाहिए । धार्मिक होने का अर्थ है गहराई से अन्दर आध्यात्मिक होना और बाहर श्रेष्ठ तथा मानवीय होना । यह सिद्धान्त हमें अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन में सहायता कर सकता है और हम निश्चित रूप से मानव अस्तित्व के चौथे और अन्तिम स्तर अर्थात् मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.34.12

आ नों अश्विना त्रिवृता रथेनाऽवाज्चं सुयं वहतं सुवीरम् ।
शृण्वन्ता वामवसे जोहवीमि वृथे चं नो भवतुं वाजसातौ ॥

(आ) वहतम से पूर्व लगाकर (नः) हमारे लिए (अश्विना) दोनों (त्रिवृता) तीन चक्र, तीन मानवीय प्रयास - धर्म, अर्थ और काम अर्थात् श्रेष्ठ कर्म, अर्थ व्यवस्था और इच्छाएं (रथेन) रथ, मानव शरीर (अर्वाज्चम्) ऊपर से नीचे तक, पूर्णरूपेण (रयिम्) गौरवशाली सम्पदा (वहतम - आ वहतम) - प्राप्त करवाईए (सुवीरम्) वीरता के साथ, उत्तमता के साथ (शृण्वन्ता) मेरी प्रार्थनाओं को सुनने योग्य (वाम) आप (अवसे) पूर्ण सुरक्षा के लिए (जोहवीमि) आपको बार-बार बुलाता हूँ (वृथे) प्रगति और सफलता के लिए (च) और (नः) हमारे (भवतम्) होओ (वाजसातौ) संग्रामों में ।

व्याख्या :-

तीन दायित्व अर्थात् मानव जीवन के तीन प्रयास पूर्ण करने के लिए किसको प्रार्थना करें?

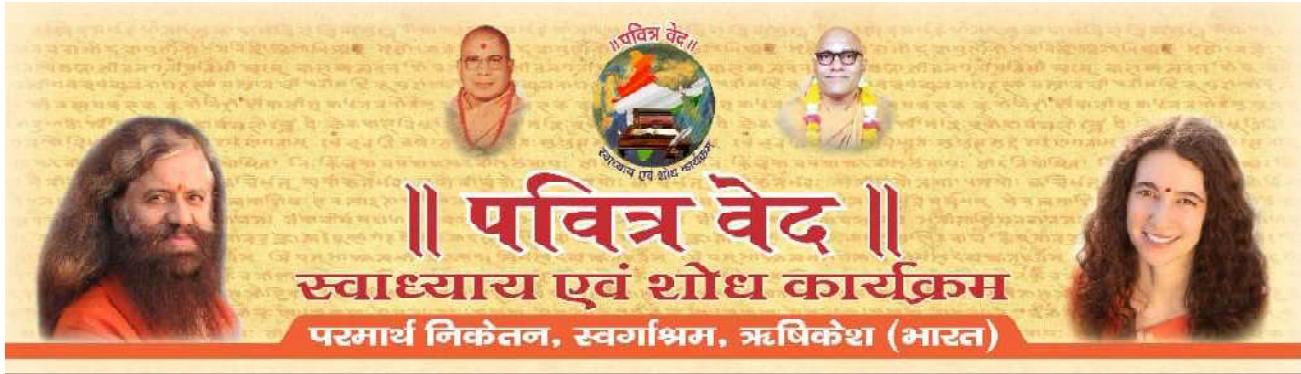
हम परमात्मा और आत्मा के साथ-साथ प्राण और अपान रूपी अश्विना जोड़ों को प्रार्थना करते हैं कि हमें वीरता और ऊपर से नीचे तक श्रेष्ठता सहित समस्त गौरवशाली सम्पदा प्रदान करें, जिससे हम मानव जीवन के तीन प्रयास अर्थात् धर्म, अर्थ और काम को पूर्ण कर सकें ।

तुम दोनों अश्विना ही पूर्ण संरक्षण के लिए प्रगति और सफलता के लिए तथा समस्त संग्रामों में हमारे साथ रहने के लिए हमारी प्रार्थनायें सुनने में सक्षम हों । इसलिए हम बार-बार तुम्हारा आहवान करते हैं ।

जीवन में सार्थकता

मानव अस्तित्व के चौथे और अन्तिम स्तर अर्थात् मुक्ति को कैसे प्राप्त किया जाये?

मानव होने के नाते हम सबकी तीन मूल जिम्मेदारियाँ हैं - धर्म, अर्थ और काम, जिनका हमें पूरी वीरता और श्रेष्ठता के साथ निर्वहन करना चाहिए । केवल परमात्मा और आत्मा, हमारे प्राण और अपान ही जीवन में हमारी सहायता कर सकते हैं । इस प्रकार हमें ध्यान करते हुए, प्रार्थना करते हुए तथा सहायता मांगते हुए केवल आन्तरिक शक्तियों पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए । हमें अपना समय, साधन और शक्तियाँ धर्म के नाम पर निर्धारित प्रक्रियाओं में व्यर्थ नहीं करना चाहिए । धार्मिक होने का अर्थ है गहराई से अन्दर आध्यात्मिक होना और बाहर श्रेष्ठ तथा मानवीय होना । यह सिद्धान्त हमें अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन में सहायता कर सकता है और हम निश्चित रूप से मानव अस्तित्व के चौथे और अन्तिम स्तर अर्थात् मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.5

ता मुहान्ता सदुस्पती इन्द्रांनी रक्षि उज्जतम् ।
अप्रजाः सन्त्वत्रिणः ।

(ता) वे (महान्ता) महान् (सदस्पती) समाज के रक्षक (इन्द्रांनी) ऊर्जा, गर्भी और प्रकाश (रक्षि) राक्षसी व्यवहार (उज्जतम्) नष्ट होते हैं (अप्रजाः) सन्तानहीन (सन्तु) हों (अत्रिणः) शत्रु, अशुभ प्रवृत्तियाँ ।

व्याख्या :-

ऊर्जा तथा गर्भी के क्या लक्षण हैं?

हम ऊर्जा तथा गर्भी को निम्न कारणों से पुकारते हैं:-

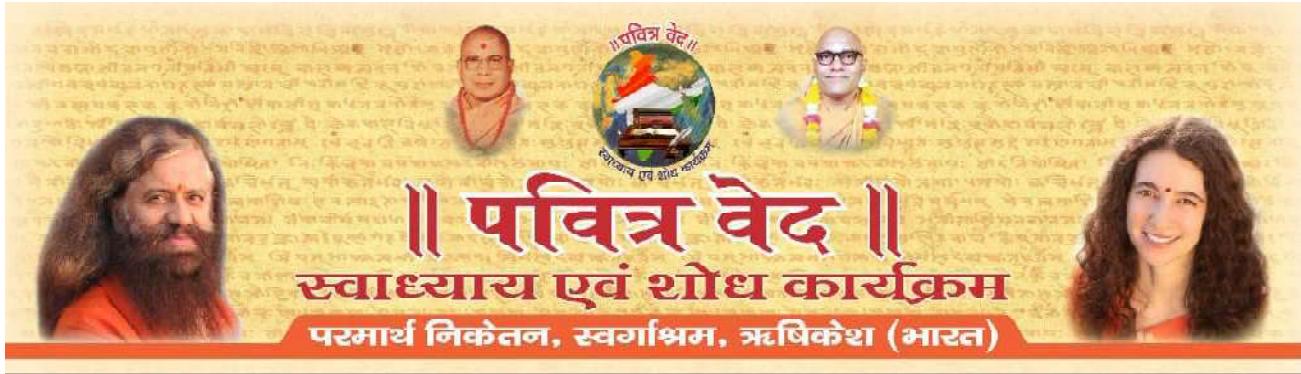
मन्त्र चार से आगे के लक्षण -

(ड.) यह महानतम शक्तियाँ हैं ।

(च) यह पूरे समाज की रक्षक हैं ।

(छ) यह दुष्ट प्रवृत्तियों की नाशक हैं ।

(ज) यह शत्रुओं और बुराईयों को सन्तानहीन बना देती हैं ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.5

ता मुहान्ता सदुस्पती इन्द्रांनी रक्षि उज्जतम् ।
अप्रजाः सन्त्वत्रिणः ।

(ता) वे (महान्ता) महान् (सदस्पती) समाज के रक्षक (इन्द्रांनी) ऊर्जा, गर्भी और प्रकाश (रक्षि) राक्षसी व्यवहार (उज्जतम्) नष्ट होते हैं (अप्रजाः) सन्तानहीन (सन्तु) हों (अत्रिणः) शत्रु, अशुभ प्रवृत्तियाँ ।

व्याख्या :-

ऊर्जा तथा गर्भी के क्या लक्षण हैं?

हम ऊर्जा तथा गर्भी को निम्न कारणों से पुकारते हैं:-

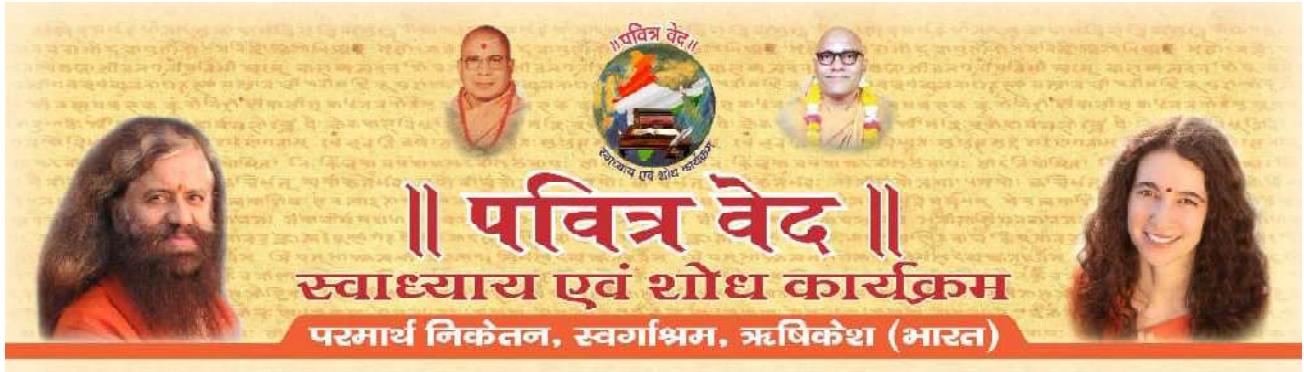
मन्त्र चार से आगे के लक्षण -

(ड.) यह महानतम शक्तियाँ हैं ।

(च) यह पूरे समाज की रक्षक हैं ।

(छ) यह दुष्ट प्रवृत्तियों की नाशक हैं ।

(ज) यह शत्रुओं और बुराईयों को सन्तानहीन बना देती हैं ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.6

तेन॑ सुत्येन॑ जागृतमधि॑ प्रचेतुन॑ पुदे॑ ।
इन्द्रांशी॑ शर्म॑ यच्छतम्॑ ।

(तेन) वे (सत्येन) अनाशवान (जागृतम् अधि) अपने जागृत लक्षणों के लिए प्रसिद्ध (प्रचेतुने) आनन्ददायक, महान् चेतना (पदे) व्यवहार (इन्द्रांशी) ऊर्जा, गर्भी और प्रकाश (शर्मी) उत्तम सुख (यच्छतम्) देने वाले।

व्याख्या :-

ऊर्जा तथा गर्भी के क्या लक्षण हैं?

हम ऊर्जा तथा गर्भी को निम्न कारणों से पुकारते हैं:-

मन्त्र पाँच से आगे के लक्षण -

(अ) ये अनाशवान शक्तियाँ हैं।

(ट) ये अपने जागृत लक्षणों के लिए प्रसिद्ध हैं।

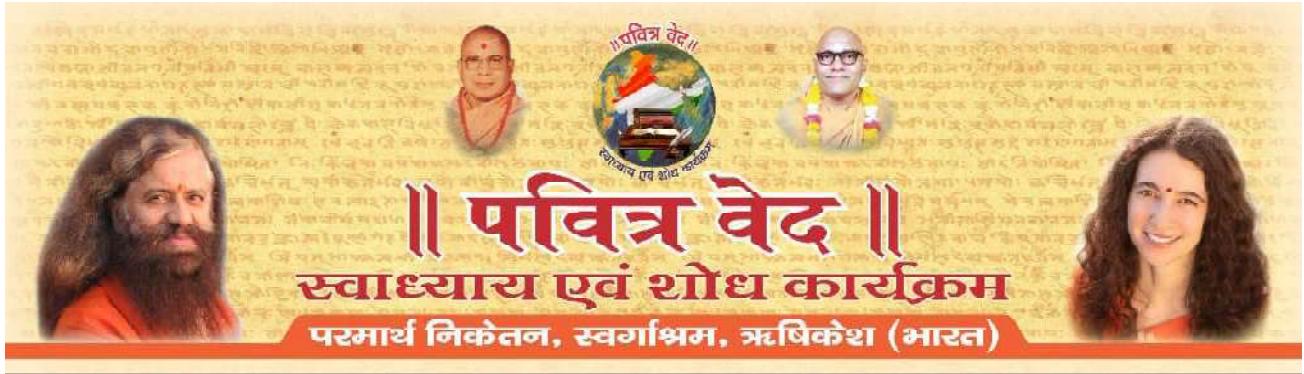
(ठ) ये आनन्ददायक तथा महान् चेतनापूर्ण व्यवहार उत्पन्न करती हैं।

(ड) यह उत्तम सुविधायें प्रदान करती हैं।

जीवन में सार्थकता

अपने जीवन में ऊर्जा और गर्भी का संरक्षण कैसे करें?

यह सूक्त ऊर्जा और गर्भी (प्रकाश) के महत्व पर प्रकाश डालता है। हमें इन शक्तियों के अधिकतम प्रयोग के लिए इनका संरक्षण करना चाहिए। इनको संरक्षित करने का सर्वोत्तम उपाय है, इन्हें व्यर्थ होने से बचायें। हमें इन शक्तियों तथा इनके देने वाले सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की प्रशंसा का गुणगान करके अपनी चेतना और विवेकशीलता का विकास करना चाहिए। इस प्रकार हम चेतन और ज्ञान से प्रकाशित हो जायेंगे तो स्वतः ही इनका व्यर्थ उपयोग समाप्त होगा और हम इनका सदुपयोग जीवन के वास्तविक उद्देश्य के लिए कर पायेंगे। जीवन का वास्तविक उद्देश्य है परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना, जिसके लिए हमें राक्षसी जीवन से उठकर मानवीय जीवन और अन्ततः दिव्य जीवन की ओर बढ़ना होगा।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.6

तेन॑ सुत्येन॑ जागृतमधि॑ प्रचेतुन॑ पुदे।
इन्द्रांगी॒ शर्म॑ यच्छतम्॒ ।

(तेन) वे (सत्येन) अनाशवान (जागृतम् अधि) अपने जागृत लक्षणों के लिए प्रसिद्ध (प्रचेतुने) आनन्ददायक, महान् चेतना (पदे) व्यवहार (इन्द्रांगी) ऊर्जा, गर्भी और प्रकाश (शर्मी) उत्तम सुख (यच्छतम्) देने वाले।

व्याख्या :-

ऊर्जा तथा गर्भी के क्या लक्षण हैं?

हम ऊर्जा तथा गर्भी को निम्न कारणों से पुकारते हैं:-

मन्त्र पाँच से आगे के लक्षण -

(झ) ये अनाशवान शक्तियाँ हैं।

(ट) ये अपने जागृत लक्षणों के लिए प्रसिद्ध हैं।

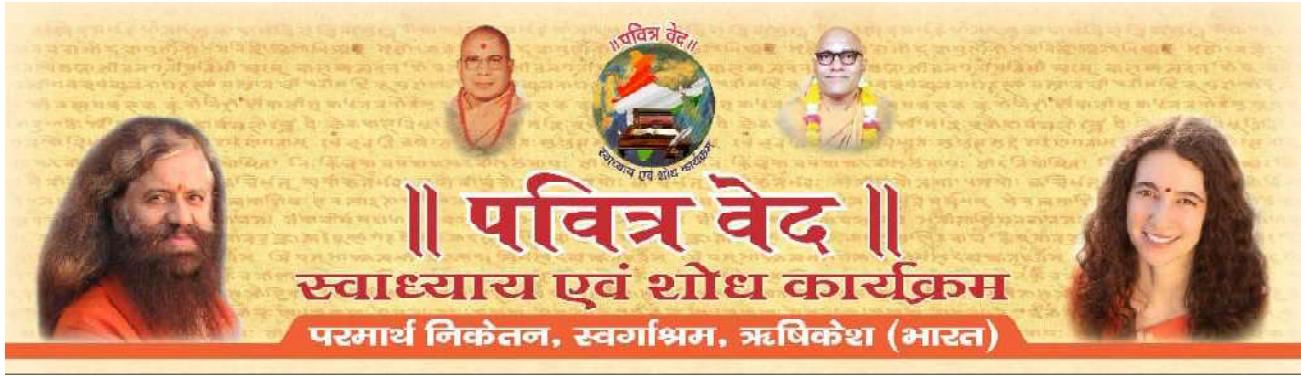
(ठ) ये आनन्ददायक तथा महान् चेतनापूर्ण व्यवहार उत्पन्न करती हैं।

(ड) यह उत्तम सुविधायें प्रदान करती हैं।

जीवन में सार्थकता

अपने जीवन में ऊर्जा और गर्भी का संरक्षण कैसे करें?

यह सूक्त ऊर्जा और गर्भी (प्रकाश) के महत्व पर प्रकाश डालता है। हमें इन शक्तियों के अधिकतम प्रयोग के लिए इनका संरक्षण करना चाहिए। इनको संरक्षित करने का सर्वोत्तम उपाय है, इन्हें व्यर्थ होने से बचायें। हमें इन शक्तियों तथा इनके देने वाले सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा की प्रशंसा का गुणगान करके अपनी चेतना और विवेकशीलता का विकास करना चाहिए। इस प्रकार हम चेतन और ज्ञान से प्रकाशित हो जायेंगे तो स्वतः ही इनका व्यर्थ उपयोग समाप्त होगा और हम इनका सदुपयोग जीवन के वास्तविक उद्देश्य के लिए कर पायेंगे। जीवन का वास्तविक उद्देश्य है परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना, जिसके लिए हमें राक्षसी जीवन से उठकर मानवीय जीवन और अन्ततः दिव्य जीवन की ओर बढ़ना होगा।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.1

इहेन्द्राग्नी उप॑ हये तयोरित्तोम॑श्मसि ।
ता सोमं सोमपातंमा ।

(इह) यहाँ (इस जीवन में, ब्रह्माण्ड में) (इन्द्राग्नी) इन्द्र का अर्थ ऊर्जा, अग्नि का अर्थ आग, ताप, गर्मी और प्रकाश (उप हये) पूजा करते हैं, निकट बुलाते हैं (तयोः) उनसे (इत्) और (स्तोमम्) प्रशंसा, स्तुति को (उश्मसि) चाहते हैं (ता) वे (सोमम्) शुभ गुणों के रक्षक (सोमपातमा) शुभ गुणों के धारक।

व्याख्या :-

हमें ऊर्जा एवं प्रकाश की आवश्यकता क्यों होती है?

वर्तमान 21वाँ सूक्त इन्द्र और अग्नि पर प्रकाश डालता है। इन्द्र अर्थात् ऊर्जा और अग्नि अर्थात् आग, ताप, गर्मी और प्रकाश। यह दो शक्तियाँ एक ही तत्व के लक्षण हैं। ऊर्जा, अपने प्रकाश और गर्मी के साथ, ब्रह्माण्ड का मूल तत्व है। सभी जड़ पदार्थों और चेतन जीवों साहित समस्त गतिविधियों और समूचे ब्रह्माण्ड का मूल तत्व ऊर्जा ही है।

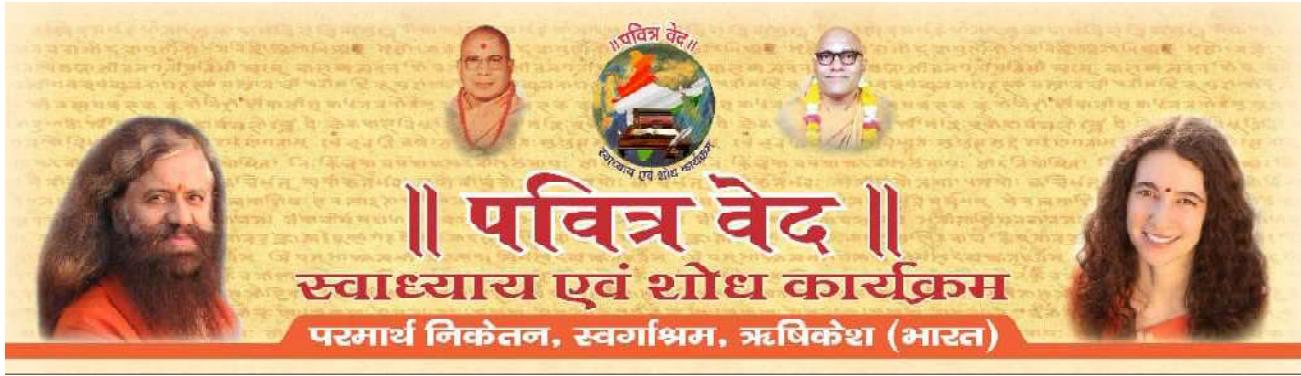
मानव जीवन में ऊर्जा से अभिप्राय शारीरिक बल है और प्रकाश से अभिप्राय मानसिक बल है। मैं इन्द्र और अग्नि अर्थात् ऊर्जा और प्रकाश दोनों की ही पूजा करता हूँ और उन्हें इस जीवन में अपने निकट चाहता हूँ। इन दो शक्तियों का उचित प्रयोग करके मैं उनसे प्रशंसा और स्तुति चाहता हूँ। आध्यात्मिक जीवन में, भौतिक तथा वैज्ञानिक कार्यों में, प्रशंसा एवं स्तुतियाँ अर्जित करने के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को इन दोनों शक्तियों का समुचित प्रयोग करना चाहिए। इन महत्वपूर्ण शक्तियों को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए।

यदि इन शक्तियों का समुचित प्रयोग किया जाये तो ये हमारे ज्ञान, शुभ गुणों और समस्त पदार्थों की वास्तविक रक्षक सिद्ध होंगी। इस प्रकार इन्द्र एवं अग्नि अर्थात् ऊर्जा और प्रकाश हमारे समस्त पदार्थों आदि की पालक बन जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

ऊर्जा तथा प्रकाश किस प्रकार हमारे वास्तविक संरक्षक हैं?

सभी जीव, प्राणियों तथा निर्जीव तत्वों में ऊर्जा तथा अग्नि विद्यमान होती है। यदि हम उनके महत्व को समझ लें और अपने लक्ष्य उनके साथ निर्धारित करें तो हम अपने आपको कभी भी ऐसे किसी कार्य में शामिल नहीं करेंगे जिनसे यह शक्तियाँ व्यर्थ जायें। जीवन के किसी भी क्षेत्र में हम तभी प्रशंसा तथा अन्य कीमती वस्तुयें प्राप्त कर सकते हैं, यदि हम अपनी ऊर्जा और ज्ञान का उचित प्रयोग सुनिश्चित करें। इसलिए हमें इनकी पूजा अवश्य करनी चाहिए। उन्हें अपने जीवन में आमंत्रित करो और उनका विकास करो क्योंकि वे हमारे जीवन में प्रत्येक वस्तु के वास्तविक पालक और संरक्षक हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.1

इहेन्द्राग्नी उपै हये तयोरित्तोम॑श्मसि ।
ता सोमं सोमपातंमा ।

(इह) यहाँ (इस जीवन में, ब्रह्माण्ड में) (इन्द्राग्नी) इन्द्र का अर्थ ऊर्जा, अग्नि का अर्थ आग, ताप, गर्मी और प्रकाश (उप हये) पूजा करते हैं, निकट बुलाते हैं (तयोः) उनसे (इत्) और (स्तोमम्) प्रशंसा, स्तुति को (उश्मसि) चाहते हैं (ता) वे (सोमम्) शुभ गुणों के रक्षक (सोमपातमा) शुभ गुणों के धारक।

व्याख्या :-

हमें ऊर्जा एवं प्रकाश की आवश्यकता क्यों होती है?

वर्तमान 21वाँ सूक्त इन्द्र और अग्नि पर प्रकाश डालता है। इन्द्र अर्थात् ऊर्जा और अग्नि अर्थात् आग, ताप, गर्मी और प्रकाश। यह दो शक्तियाँ एक ही तत्व के लक्षण हैं। ऊर्जा, अपने प्रकाश और गर्मी के साथ, ब्रह्माण्ड का मूल तत्व है। सभी जड़ पदार्थों और चेतन जीवों सहित समस्त गतिविधियों और समूचे ब्रह्माण्ड का मूल तत्व ऊर्जा ही है।

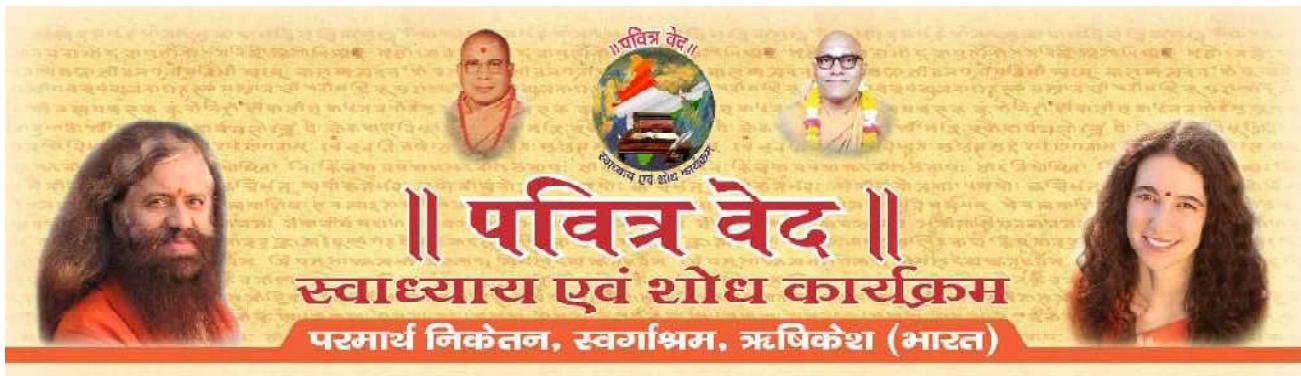
मानव जीवन में ऊर्जा से अभिप्राय शारीरिक बल है और प्रकाश से अभिप्राय मानसिक बल है। मैं इन्द्र और अग्नि अर्थात् ऊर्जा और प्रकाश दोनों की ही पूजा करता हूँ और उन्हें इस जीवन में अपने निकट चाहता हूँ। इन दो शक्तियों का उचित प्रयोग करके मैं उनसे प्रशंसा और स्तुति चाहता हूँ। आध्यात्मिक जीवन में, भौतिक तथा वैज्ञानिक कार्यों में, प्रशंसा एवं स्तुतियाँ अर्जित करने के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को इन दोनों शक्तियों का समुचित प्रयोग करना चाहिए। इन महत्वपूर्ण शक्तियों को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए।

यदि इन शक्तियों का समुचित प्रयोग किया जाये तो ये हमारे ज्ञान, शुभ गुणों और समस्त पदार्थों की वास्तविक रक्षक सिद्ध होंगी। इस प्रकार इन्द्र एवं अग्नि अर्थात् ऊर्जा और प्रकाश हमारे समस्त पदार्थों आदि की पालक बन जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

ऊर्जा तथा प्रकाश किस प्रकार हमारे वास्तविक संरक्षक हैं?

सभी जीव, प्राणियों तथा निर्जीव तत्वों में ऊर्जा तथा अग्नि विद्यमान होती है। यदि हम उनके महत्व को समझ लें और अपने लक्ष्य उनके साथ निर्धारित करें तो हम अपने आपको कभी भी ऐसे किसी कार्य में शामिल नहीं करेंगे जिनसे यह शक्तियाँ व्यर्थ जायें। जीवन के किसी भी क्षेत्र में हम तभी प्रशंसा तथा अन्य कीमती वस्तुयें प्राप्त कर सकते हैं, यदि हम अपनी ऊर्जा और ज्ञान का उचित प्रयोग सुनिश्चित करें। इसलिए हमें इनकी पूजा अवश्य करनी चाहिए। उन्हें अपने जीवन में आमंत्रित करो और उनका विकास करो क्योंकि वे हमारे जीवन में प्रत्येक वस्तु के वास्तविक पालक और संरक्षक हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.2

ता युज्ञेषु प्रशंसतेन्द्राग्नी शुभ्मता नरः ।
ता गायुत्रेषु गायत ।

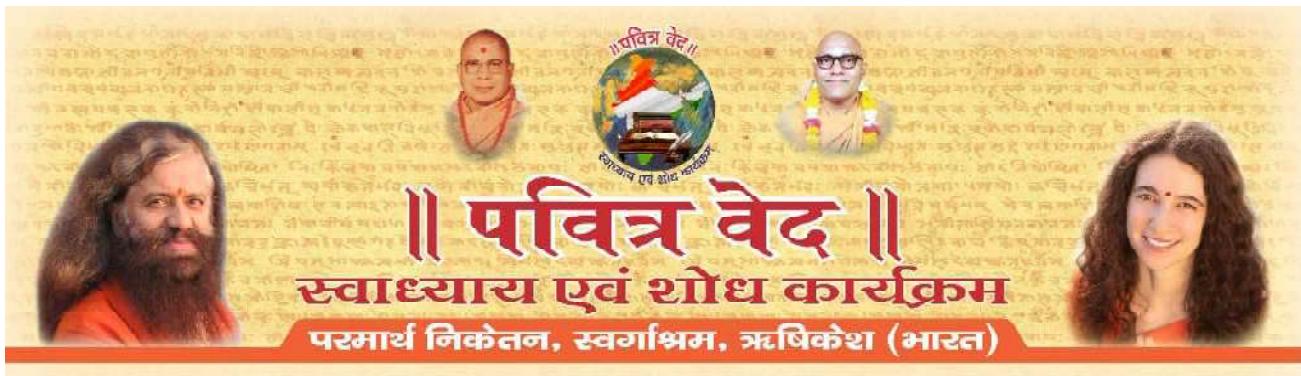
(ता) उनको (यज्ञेषु) कल्याण के लिए किये गये त्याग में (प्र शंसत) प्रशंसित करो, उनके सद्गुणों का प्रयोग करो (इन्द्राग्नी) ऊर्जा तथा प्रकाश (शुभ्मता) अलंकृत (नरः) व्यक्ति (जो इन्द्र और अग्नि का समुचित प्रयोग करते हैं) (ता) उनको (गायुत्रेषु) प्राणों के रक्षक (गाय का अर्थ है प्राण, त्रा का अर्थ है रक्षा) (गायत) गान करो ।

व्याख्या :-

हमें ऊर्जा तथा प्रकाश का स्तुति गान क्यों करना चाहिए?

ऊर्जा और गर्मी अर्थात् इन्द्र और अग्नि के समस्त शुभ गुणों को प्रशंसित एवं उनका उचित प्रयोग भिन्न-भिन्न प्रकार के त्याग एवं कल्याण कार्यों में करना चाहिए। वे निश्चित रूप से आपके जीवन को अलंकृत कर देंगे। उसके बाद इस ऊर्जा और ताप की प्रशंसा में गीत गाओ क्योंकि वे हमारे प्राणों के रक्षक हैं।

आपकी ऊर्जा तथा प्रकाश आपके प्राणों के रक्षक होने के नाते आपके जीवन के रक्षक हैं। अतः हमें उनका प्रयोग केवल कल्याणकारी त्याग कार्यों में करना चाहिए, जिससे हमें चारों तरफ से प्रशंसा और स्तुतियाँ प्राप्त हों। इसीलिए हमें अपनी ऊर्जा और प्रकाश की भी प्रशंसा और स्तुति करना चाहिए।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.2

ता युज्ञेषु प्रशंसतेन्द्राग्नी शुभ्मता नरः ।
ता गायुत्रेषु गायत ।

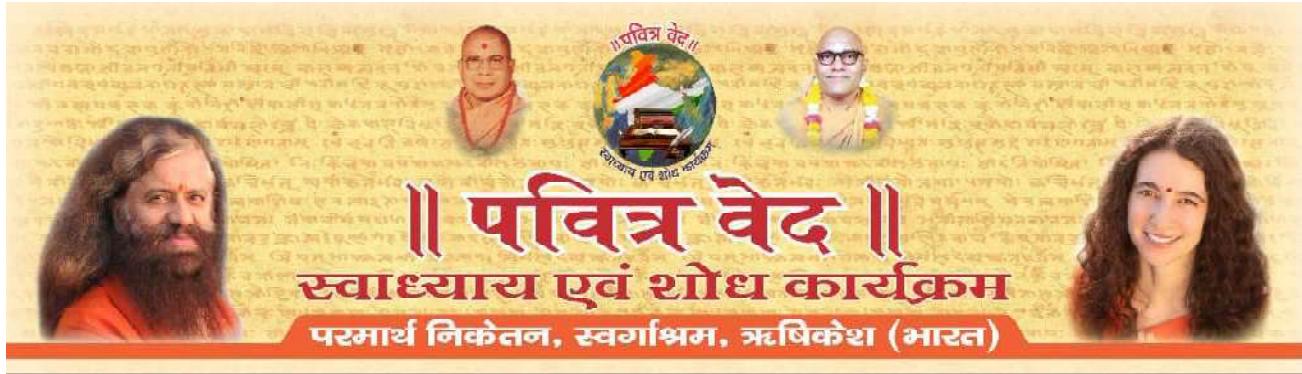
(ता) उनको (यज्ञेषु) कल्याण के लिए किये गये त्याग में (प्र शंसत) प्रशंसित करो, उनके सद्गुणों का प्रयोग करो (इन्द्राग्नी) ऊर्जा तथा प्रकाश (शुभ्मता) अलंकृत (नरः) व्यक्ति (जो इन्द्र और अग्नि का समुचित प्रयोग करते हैं) (ता) उनको (गायुत्रेषु) प्राणों के रक्षक (गाय का अर्थ है प्राण, त्रा का अर्थ है रक्षा) (गायत) गान करो ।

व्याख्या :-

हमें ऊर्जा तथा प्रकाश का स्तुति गान क्यों करना चाहिए?

ऊर्जा और गर्मी अर्थात् इन्द्र और अग्नि के समस्त शुभ गुणों को प्रशंसित एवं उनका उचित प्रयोग भिन्न-भिन्न प्रकार के त्याग एवं कल्याण कार्यों में करना चाहिए। वे निश्चित रूप से आपके जीवन को अलंकृत कर देंगे। उसके बाद इस ऊर्जा और ताप की प्रशंसा में गीत गाओ क्योंकि वे हमारे प्राणों के रक्षक हैं।

आपकी ऊर्जा तथा प्रकाश आपके प्राणों के रक्षक होने के नाते आपके जीवन के रक्षक हैं। अतः हमें उनका प्रयोग केवल कल्याणकारी त्याग कार्यों में करना चाहिए, जिससे हमें चारों तरफ से प्रशंसा और स्तुतियाँ प्राप्त हों। इसीलिए हमें अपनी ऊर्जा और प्रकाश की भी प्रशंसा और स्तुति करना चाहिए।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.3

ता मित्रस्य प्रशस्तय इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
सोमुपा सोमपीतये ।

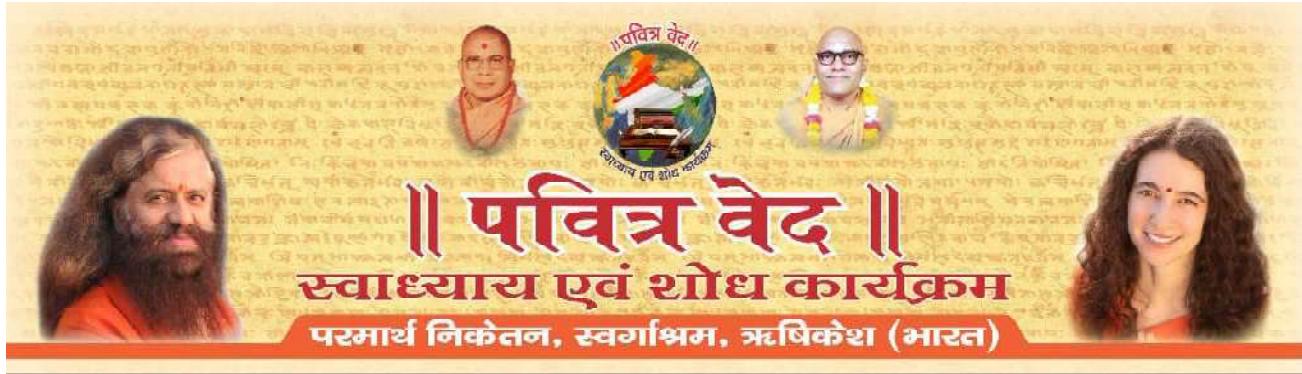
(ता) वे (मित्रस्य) मित्र की (प्रशस्तय) प्रशंसायें (इन्द्राग्नी) ऊर्जा तथा गर्मि (प्रकाश) (ता) वे (हवामहे) में पुकारता हूँ (सोमपा) शुभ गुणों के रक्षक (सोमपीतये) शुभ गुणों के धारक ।

व्याख्या :-

हमें ऊर्जा तथा प्रकाश की आवश्यकता क्यों है?

हम ऊर्जा और प्रकाश को बुलाते हैं और स्वीकार करते हैं, जिससे हम अपने मित्र, परमात्मा, की प्रशंसा कर सकें। जीवन की इन मूल शक्तियों का संरक्षण करके ही हम परमात्मा की अनुभूति के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। यह शक्तियाँ परमात्मा की भेट हैं, इसलिए परमात्मा द्वारा प्रदत्त प्रत्येक वस्तु की वे पालक और रक्षक हैं।

परमात्मा ने हमें बहुत सी वस्तुयें दी हैं। वह इन सबका पालन तथा रक्षा हमारी ऊर्जा और प्रकाश के माध्यम से ही सुनिश्चित करता है। इसलिए हमें भौतिक सुख सुविधाओं के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रगति के लिए भी इस ऊर्जा और प्रकाश की भी आवश्यकता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.3

ता मित्रस्य प्रशंस्तय इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
सुमुपा सोमपीतये ।

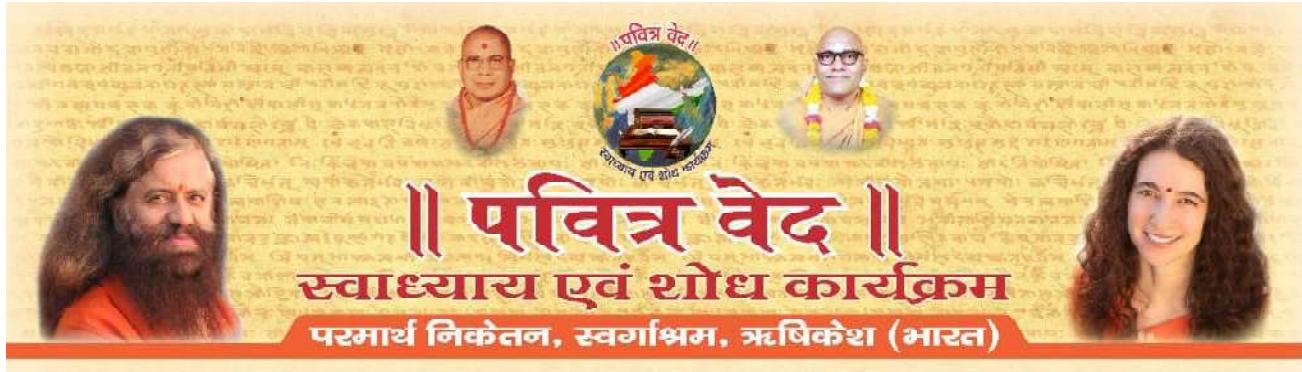
(ता) वे (मित्रस्य) मित्र की (प्रशंस्तय) प्रशंसायें (इन्द्राग्नी) ऊर्जा तथा गर्मि (प्रकाश) (ता) वे (हवामहे) में पुकारता हूँ (सोमपा) शुभ गुणों के रक्षक (सोमपीतये) शुभ गुणों के धारक ।

व्याख्या :-

हमें ऊर्जा तथा प्रकाश की आवश्यकता क्यों है?

हम ऊर्जा और प्रकाश को बुलाते हैं और स्वीकार करते हैं, जिससे हम अपने मित्र, परमात्मा, की प्रशंसा कर सकें। जीवन की इन मूल शक्तियों का संरक्षण करके ही हम परमात्मा की अनुभूति के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। यह शक्तियाँ परमात्मा की भेट हैं, इसलिए परमात्मा द्वारा प्रदत्त प्रत्येक वस्तु की वे पालक और रक्षक हैं।

परमात्मा ने हमें बहुत सी वस्तुयें दी हैं। वह इन सबका पालन तथा रक्षा हमारी ऊर्जा और प्रकाश के माध्यम से ही सुनिश्चित करता है। इसलिए हमें भौतिक सुख सुविधाओं के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रगति के लिए भी इस ऊर्जा और प्रकाश की भी आवश्यकता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.4

उग्रा सन्ता हवामहु उपेदं सवनं सुतम् ।
इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ।

(उग्रा) शक्तिशाली (वर्तमान तथा प्रगतिशील) (सन्ता) होती हुई (हवामहे) हम पुकारते हैं (उप इदम्) अपने निकट (सवनम्) त्याग के लिए (सुतम्) शुभ गुणों के लिए (इन्द्राग्नी) ऊर्जा तथा गर्भी (इह) यहाँ इस जीवन में (आगच्छताम्) प्राप्त हों ।

व्याख्या :-

ऊर्जा तथा गर्भी के क्या लक्षण हैं?

हम ऊर्जा तथा गर्भी को कई कारणों से आमंत्रित करते हैं :-

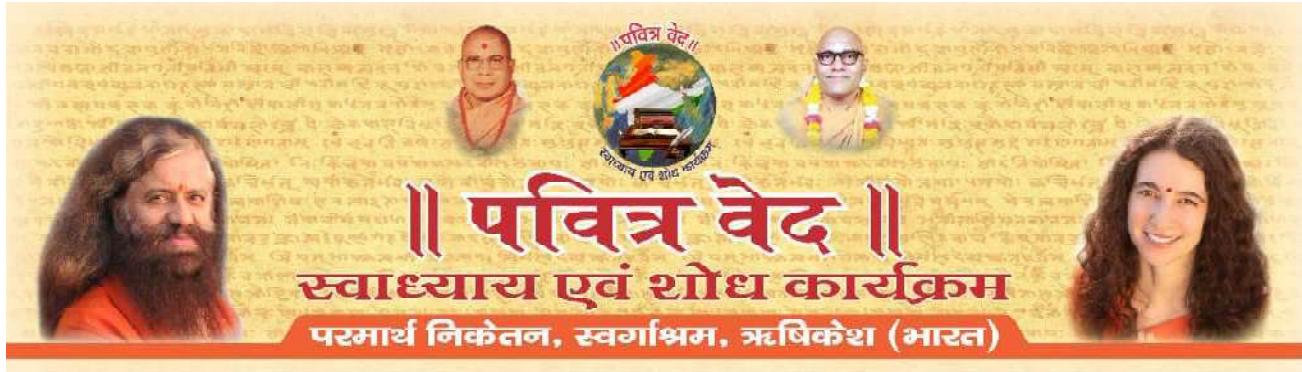
(क) यह शक्तिशाली हैं ।

(ख) यह वर्तमान और प्रगतिशील हैं ।

(ग) इनका प्रयोग त्याग कार्यों में होता है ।

(घ) इनका प्रयोग शुभ गुणों और ज्ञान को प्राप्त करने में होता है ।

शेष गुण मन्त्र पाँच में दिये गये हैं ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.21.4

उग्रा सन्ता हवामहु उपेदं सवनं सुतम् ।
इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ।

(उग्रा) शक्तिशाली (वर्तमान तथा प्रगतिशील) (सन्ता) होती हुई (हवामहे) हम पुकारते हैं (उप इदम्) अपने निकट (सवनम्) त्याग के लिए (सुतम्) शुभ गुणों के लिए (इन्द्राग्नी) ऊर्जा तथा गर्भी (इह) यहाँ इस जीवन में (आगच्छताम्) प्राप्त हों ।

व्याख्या :-

ऊर्जा तथा गर्भी के क्या लक्षण हैं?

हम ऊर्जा तथा गर्भी को कई कारणों से आमंत्रित करते हैं :-

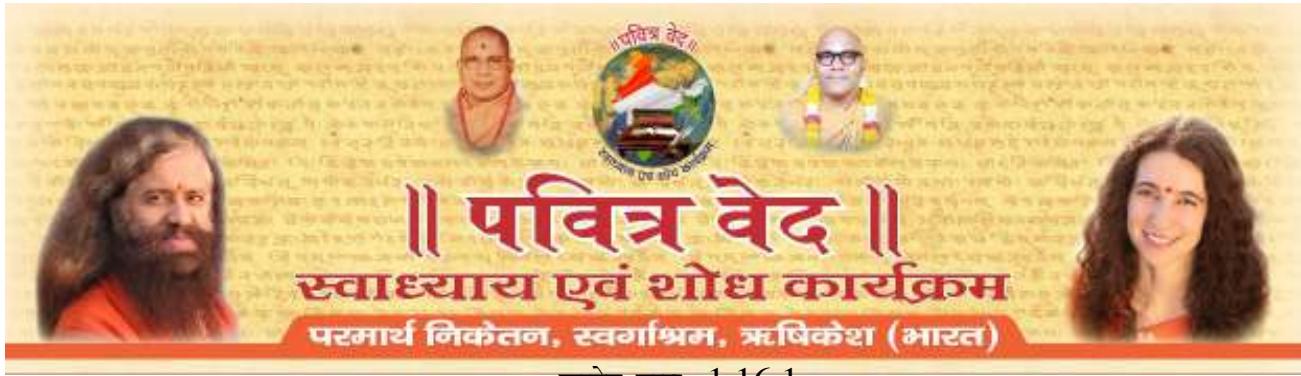
(क) यह शक्तिशाली हैं ।

(ख) यह वर्तमान और प्रगतिशील हैं ।

(ग) इनका प्रयोग त्याग कार्यों में होता है ।

(घ) इनका प्रयोग शुभ गुणों और ज्ञान को प्राप्त करने में होता है ।

शेष गुण मन्त्र पाँच में दिये गये हैं ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.1

आ त्वा॑ वहन्तु हरयो॒ वृष्ण॑ं सोमपीतये ।
इन्द्र॑ त्वा॒ सूरचक्षसः ।

आ (वहन्तु से पूर्व लगाकर) (त्वा) आप (परमात्मा) वहन्तु (आ वहन्तु) बुलाता हूँ (हरय:) दुःखों के हरने वाले, यज्ञों का आहरण करने वाले (वृष्णं) सुखों की वर्षा करने वाले (सोमपीतये) ज्ञान और शुभ गुणों का धारण और रक्षण करने वाले (इन्द्रम्) परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च नियन्त्रक, जीव अर्थात् इन्द्रियों का नियन्त्रक (त्वा) आप (सूरचक्षसः) सूर्य में दर्शनीय, दिव्य, शुभ ज्ञान तथा व्यवहार में दर्शनीय

व्याख्या :-

परमात्मा के दर्शन कहाँ पर हो सकते हैं?

परमात्मा की अनुभूति कैसे हो सकती है?

हम उस सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा को बुलाते हैं, जो :- (क) दुखों का हरने वाला है, (ख) सुखों की वर्षा करने वाला है, (ग) ज्ञान और शुभ गुणों की रक्षा करने वाला है, (घ) दिव्य शुभ गुणों, व्यवहार तथा सूर्य में दर्शनीय है।

इस मन्त्र की व्याख्या एक अन्य प्रकार से यह होती है कि जिस ईश्वरानुरागी व्यक्ति में निम्न लक्षण होते हैं, केवल वे ही परमात्मा को अपनी अनुभूति में बुलाने के योग्य होते हैं :- (क) जो अन्य लोगों के दुखों का हरने वाला है, (ख) जो सब पर सुखों की वर्षा करने वाला है, (ग) जो ज्ञान और शुभ गुणों की रक्षा करने वाला है, (घ) जो अपने दिव्य शुभ गुणों, ज्ञान तथा व्यवहार आदि में दर्शनीय है।

इस मन्त्र की एक तीसरी व्याख्या के अनुसार सूर्य में यह सभी लक्षण होते हैं, अतः परमात्मा सूर्य के माध्यम से दर्शनीय होते हैं। (क) सूर्य धरती से हर वस्तु के तत्वों का आहरण करता है, (ख) सूर्य धरती पर जल की वर्षा के माध्यम से सब पर सुखों की वर्षा करता है, (ग) सूर्य सोम अर्थात् जड़ी बूटियों एवं वनस्पतियों के तत्वों की रक्षा करता है, (घ) सूर्य अपनी दिव्य शक्तियों जैसे ऊर्जा, प्रकाश तथा समस्त आकाशीय पिण्डों को अपनी चुम्बकीय शक्ति से धारण करने के कारण दर्शनीय होता है।

जीवन में सार्थकता

ज्ञान तथा दर्जे में उच्च लोगों की संगति कैसे प्राप्त की जा सकती है?

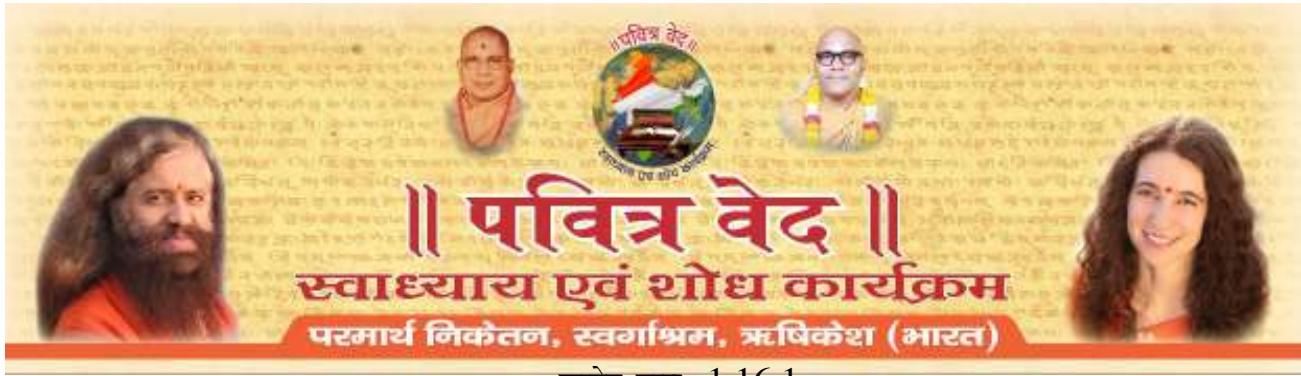
जब आप किसी उच्चाधिकारी या किसी सम्मानित बड़े व्यक्ति की संगति या आशीर्वाद को चाहते हैं तो स्वाभाविक रूप से आपके मन में उनसे कुछ लाभ लेने की इच्छा होती है। आप उनकी संगति तथा आशीर्वाद तभी प्राप्त कर सकते हो, जब वास्तव में आप उन्हीं के लक्षणों को धारण करें और उनका अनुसरण करें। किसी भी व्यक्ति के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने के लिए आपको उन्हीं के पथ का अनुसरण करना होगा। सर्वोच्च अवस्था में यदि आप परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको उस सर्वोच्च शक्तिमान के महान् और दिव्य लक्षणों का अनुसरण करना पड़ेगा।

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.1

आ त्वा॑ वहन्तु हरयो॒ वृष्ण॑ं सोमपीतये ।
इन्द्र॑ त्वा॒ सूरचक्षसः ।

आ (वहन्तु से पूर्व लगाकर) (त्वा) आप (परमात्मा) वहन्तु (आ वहन्तु) बुलाता हूँ (हरय:) दुःखों के हरने वाले, यज्ञों का आहरण करने वाले (वृष्णं) सुखों की वर्षा करने वाले (सोमपीतये) ज्ञान और शुभ गुणों का धारण और रक्षण करने वाले (इन्द्रम्) परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च नियन्त्रक, जीव अर्थात् इन्द्रियों का नियन्त्रक (त्वा) आप (सूरचक्षसः) सूर्य में दर्शनीय, दिव्य, शुभ ज्ञान तथा व्यवहार में दर्शनीय

व्याख्या :-

परमात्मा के दर्शन कहाँ पर हो सकते हैं?

परमात्मा की अनुभूति कैसे हो सकती है?

हम उस सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा को बुलाते हैं, जो :- (क) दुखों का हरने वाला है, (ख) सुखों की वर्षा करने वाला है, (ग) ज्ञान और शुभ गुणों की रक्षा करने वाला है, (घ) दिव्य शुभ गुणों, व्यवहार तथा सूर्य में दर्शनीय है।

इस मन्त्र की व्याख्या एक अन्य प्रकार से यह होती है कि जिस ईश्वरानुरागी व्यक्ति में निम्न लक्षण होते हैं, केवल वे ही परमात्मा को अपनी अनुभूति में बुलाने के योग्य होते हैं :- (क) जो अन्य लोगों के दुखों का हरने वाला है, (ख) जो सब पर सुखों की वर्षा करने वाला है, (ग) जो ज्ञान और शुभ गुणों की रक्षा करने वाला है, (घ) जो अपने दिव्य शुभ गुणों, ज्ञान तथा व्यवहार आदि में दर्शनीय है।

इस मन्त्र की एक तीसरी व्याख्या के अनुसार सूर्य में यह सभी लक्षण होते हैं, अतः परमात्मा सूर्य के माध्यम से दर्शनीय होते हैं। (क) सूर्य धरती से हर वस्तु के तत्वों का आहरण करता है, (ख) सूर्य धरती पर जल की वर्षा के माध्यम से सब पर सुखों की वर्षा करता है, (ग) सूर्य सोम अर्थात् जड़ी बूटियों एवं वनस्पतियों के तत्वों की रक्षा करता है, (घ) सूर्य अपनी दिव्य शक्तियों जैसे ऊर्जा, प्रकाश तथा समस्त आकाशीय पिण्डों को अपनी चुम्बकीय शक्ति से धारण करने के कारण दर्शनीय होता है।

जीवन में सार्थकता

ज्ञान तथा दर्जे में उच्च लोगों की संगति कैसे प्राप्त की जा सकती है?

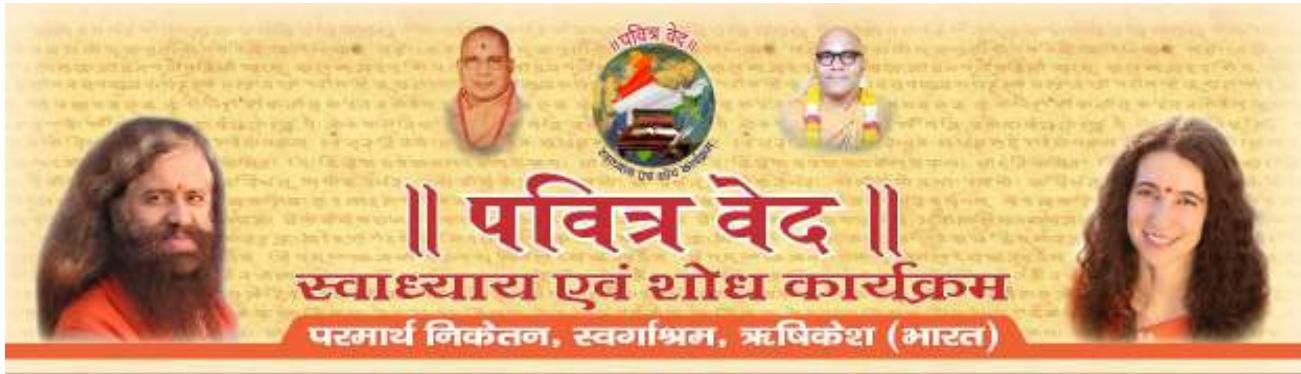
जब आप किसी उच्चाधिकारी या किसी सम्मानित बड़े व्यक्ति की संगति या आशीर्वाद को चाहते हैं तो स्वाभाविक रूप से आपके मन में उनसे कुछ लाभ लेने की इच्छा होती है। आप उनकी संगति तथा आशीर्वाद तभी प्राप्त कर सकते हो, जब वास्तव में आप उन्हीं के लक्षणों को धारण करें और उनका अनुसरण करें। किसी भी व्यक्ति के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने के लिए आपको उन्हीं के पथ का अनुसरण करना होगा। सर्वोच्च अवस्था में यदि आप परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको उस सर्वोच्च शक्तिमान के महान् और दिव्य लक्षणों का अनुसरण करना पड़ेगा।

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.2

इमा धाना घृतस्तुवो हरी इहोप॑ वक्षतः ।
इन्द्रं सुखतमे रथे ।

(इमा) यह (धाना) धारण करने वाली (घृतस्तुवो) ज्ञान और पवित्रता को चारों ओर फैलाने वाली (हरी) किरणें, इन्द्रियाँ, दुःखों को हरने वाली, पदार्थों को हरने वाली (इह) यहाँ (उप) समीप (वक्षतः) प्राप्त करते हैं (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (सुखतमे) सुख के लिए (रथे) रथ, शरीर ।

व्याख्या :-

किसी व्यक्ति की तुलना सूर्य से किस प्रकार की जा सकती है?

वैज्ञानिक व्याख्या - सूर्य सभी वस्तुओं के सार तत्व को लेता है, उन्हें धारण करता है और पवित्र रूप में उन्हें सब तरफ फैला देता है। वाहन उपलब्ध करवा कर हमारी गति को सुविधाजनक बनाता है। सूर्य ही हमारे शरीर को गति के लिये शक्ति देता है।

आध्यात्मिक व्याख्या - एक व्यक्ति अपनी जीवात्मा को शक्तिशाली बनाने के बाद अपनी इन्द्रियों का नियंत्रक बन जाता है, उन्हें धारण करके उनकी शुद्धता को चारों तरफ प्रसारित करता है, अशुद्धताओं का नाश करके दुःखों को दूर करता है। इस प्रकार ऐसा जीव भी हरी बनकर अपने निकट अर्थात् अपने शरीर रूपी रथ में ही परमात्मा की अनुभूति का कार्य सरल कर लेता है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य की तरह कार्य करने के लिए हम अपने आपको किस प्रकार प्रशिक्षित कर सकते हैं?

सूर्य की तरह कार्य करने के लिए हम अपने आपको निम्न प्रकार से प्रशिक्षित कर सकते हैं :-

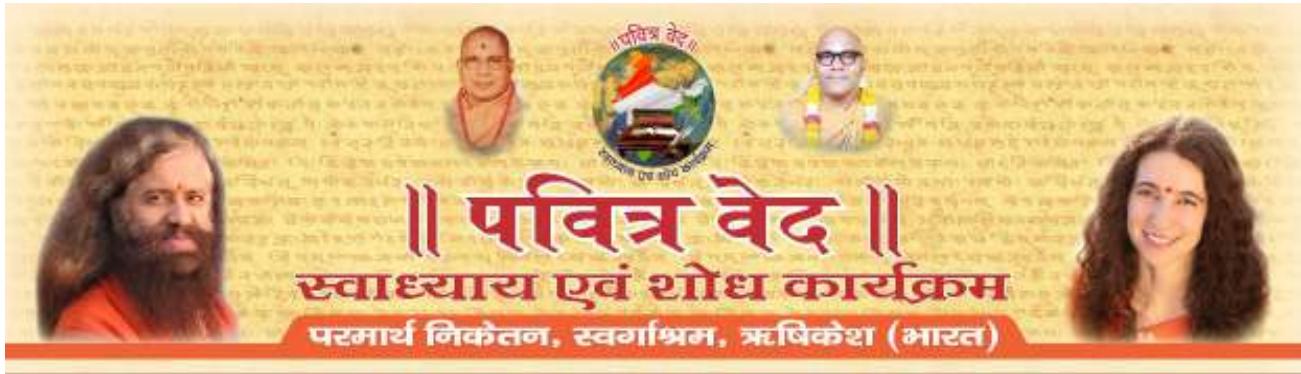
क) हरी अर्थात् अपने तथा अन्य लोगों के जीवन से अशुद्धताओं का हरण करना ।

ख) घृतस्तुवो अर्थात् ज्ञान और पवित्रता को चारों ओर फैलाने वाला

इस प्रकार अपने शरीर रूपी रथ के माध्यम से हम सुखतमे रथे अर्थात् अपनी जीवन यात्रा को सुविधाजनक रूप में आनन्दित कर पायेंगे और दिव्यता को अपने निकट ही अनुभव कर पायेंगे ।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.2

इमा धाना घृतस्तुवो हरी इहोप॑ वक्षतः ।
इन्द्रं सुखतमे रथे ।

(इमा) यह (धाना) धारण करने वाली (घृतस्तुवो) ज्ञान और पवित्रता को चारों ओर फैलाने वाली (हरी) किरणें, इन्द्रियाँ, दुःखों को हरने वाली, पदार्थों को हरने वाली (इह) यहाँ (उप) समीप (वक्षतः) प्राप्त करते हैं (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (सुखतमे) सुख के लिए (रथे) रथ, शरीर ।

व्याख्या :-

किसी व्यक्ति की तुलना सूर्य से किस प्रकार की जा सकती है?

वैज्ञानिक व्याख्या - सूर्य सभी वस्तुओं के सार तत्व को लेता है, उन्हें धारण करता है और पवित्र रूप में उन्हें सब तरफ फैला देता है। वाहन उपलब्ध करवा कर हमारी गति को सुविधाजनक बनाता है। सूर्य ही हमारे शरीर को गति के लिये शक्ति देता है।

आध्यात्मिक व्याख्या - एक व्यक्ति अपनी जीवात्मा को शक्तिशाली बनाने के बाद अपनी इन्द्रियों का नियंत्रक बन जाता है, उन्हें धारण करके उनकी शुद्धता को चारों तरफ प्रसारित करता है, अशुद्धताओं का नाश करके दुःखों को दूर करता है। इस प्रकार ऐसा जीव भी हरी बनकर अपने निकट अर्थात् अपने शरीर रूपी रथ में ही परमात्मा की अनुभूति का कार्य सरल कर लेता है।

जीवन में सार्थकता

सूर्य की तरह कार्य करने के लिए हम अपने आपको किस प्रकार प्रशिक्षित कर सकते हैं?

सूर्य की तरह कार्य करने के लिए हम अपने आपको निम्न प्रकार से प्रशिक्षित कर सकते हैं :-

क) हरी अर्थात् अपने तथा अन्य लोगों के जीवन से अशुद्धताओं का हरण करना ।

ख) घृतस्तुवो अर्थात् ज्ञान और पवित्रता को चारों ओर फैलाने वाला

इस प्रकार अपने शरीर रूपी रथ के माध्यम से हम सुखतमे रथे अर्थात् अपनी जीवन यात्रा को सुविधाजनक रूप में आनन्दित कर पायेंगे और दिव्यता को अपने निकट ही अनुभव कर पायेंगे ।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



॥ पवित्र वेद ॥

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमार्थ निकेतन, स्वगांध्रम, कर्णाटक (भारत)

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.3

इन्द्रं प्रातहैवामहु इन्द्रं प्रयुत्यध्वरे ।
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।

(इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (प्रातः) प्रतिदिन प्रातःकाल (हवामहे) आवाहन, प्रार्थना करें (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (प्रयति) उत्तम ज्ञान का देने वाला, प्रकाश और ऊर्जा का देने वाला (अध्वरे) दोषरहित पवित्र त्याग (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (सोमस्य) समस्त जड़ी बूटियों और वनस्पतियों के सार रस, ज्ञान तथा शुभ गुण (पीतये) पीता है, संरक्षण के लिए आहरण करता है।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा का, सूर्य का और अपनी आन्तरिक शक्तियों का आहान प्रतिदिन क्यों करना चाहिए?

वैज्ञानिक व्याख्या - हम सूर्य का आहान तथा स्वागत प्रतिदिन प्रातःकाल करते हैं क्योंकि यह हमें हमारी समस्त गतिविधियों, त्याग तथा यज्ञों आदि के लिए प्रकाश और ऊर्जा देता है। यह समस्त पदार्थों के रस का आहरण करता है, जिससे कई गुना अधिक करके हमें वापस दे सके। यह मन्त्र ऊर्जा तथा वायु पर भी इसी प्रकार से लागू होता है।

आध्यात्मिक व्याख्या - हम प्रतिदिन प्रातःकाल परमात्मा का आहान करते हैं कि वे हमारी अनुभूति में आयें क्योंकि उन्हीं से हमें उत्तम ज्ञान प्राप्त होता है जिससे हम सभी शुद्ध गतिविधियों, त्याग तथा कल्याण के कार्य कर पाते हैं। वही हमारे सोम रसों अर्थात् ज्ञान, शुभ गुणों तथा श्रेष्ठताओं के रक्षक हैं।

प्रतिदिन हम इन्द्रियों के नियंत्रक अपनी आत्मा का भी आहान करते हैं कि वह उस परमात्मा की अनुभूति करे, जो महान् और सर्वोच्च ज्ञान का धारक है, पवित्र त्याग आदि कार्यों का करने वाला है और समस्त शुभ लक्षणों का रक्षक है।

अतः प्रतिदिन परमात्मा का आहान दो मुख्य कारणों से करना चाहिए :-

क) अपने अन्दर शुद्धता, बुद्धिमत्ता और त्याग को बढ़ाने के लिए

ख) अपने अन्दर अशुद्धता, अज्ञानता और इच्छाओं को कम करने के लिए

जीवन में सार्थकता

जीवन में नियमित प्रगति सुनिश्चित किस प्रकार की जाये?

हमें लगातार अपने जीवन में सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा का आहान करना चाहिए। हमारे अन्दर सर्वोच्च शक्ति के उजागर होते ही प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति की योग्यतायें बढ़ जायेंगी। सर्वोच्च शक्ति में ज्ञान, गुण, श्रेष्ठ लक्षण तथा उत्तम योग्यतायें शामिल हैं। प्रगतिशील लोग सदैव इन शुभ लक्षणों की प्रगति में ही लगे रहते हैं।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



॥ पवित्र वेद ॥

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमार्थ निकेतन, स्वगांध्रम, कर्णाटक (भारत)

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.3

इन्द्रं प्रातहैवामहु इन्द्रं प्रयुत्यध्वरे ।
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।

(इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (प्रातः) प्रतिदिन प्रातःकाल (हवामहे) आवाहन, प्रार्थना करें (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (प्रयति) उत्तम ज्ञान का देने वाला, प्रकाश और ऊर्जा का देने वाला (अध्वरे) दोषरहित पवित्र त्याग (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (सोमस्य) समस्त जड़ी बूटियों और वनस्पतियों के सार रस, ज्ञान तथा शुभ गुण (पीतये) पीता है, संरक्षण के लिए आहरण करता है।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा का, सूर्य का और अपनी आन्तरिक शक्तियों का आहान प्रतिदिन क्यों करना चाहिए?

वैज्ञानिक व्याख्या - हम सूर्य का आहान तथा स्वागत प्रतिदिन प्रातःकाल करते हैं क्योंकि यह हमें हमारी समस्त गतिविधियों, त्याग तथा यज्ञों आदि के लिए प्रकाश और ऊर्जा देता है। यह समस्त पदार्थों के रस का आहरण करता है, जिससे कई गुना अधिक करके हमें वापस दे सके। यह मन्त्र ऊर्जा तथा वायु पर भी इसी प्रकार से लागू होता है।

आध्यात्मिक व्याख्या - हम प्रतिदिन प्रातःकाल परमात्मा का आहान करते हैं कि वे हमारी अनुभूति में आयें क्योंकि उन्हीं से हमें उत्तम ज्ञान प्राप्त होता है जिससे हम सभी शुद्ध गतिविधियों, त्याग तथा कल्याण के कार्य कर पाते हैं। वही हमारे सोम रसों अर्थात् ज्ञान, शुभ गुणों तथा श्रेष्ठताओं के रक्षक हैं।

प्रतिदिन हम इन्द्रियों के नियंत्रक अपनी आत्मा का भी आहान करते हैं कि वह उस परमात्मा की अनुभूति करे, जो महान् और सर्वोच्च ज्ञान का धारक है, पवित्र त्याग आदि कार्यों का करने वाला है और समस्त शुभ लक्षणों का रक्षक है।

अतः प्रतिदिन परमात्मा का आहान दो मुख्य कारणों से करना चाहिए :-

क) अपने अन्दर शुद्धता, बुद्धिमत्ता और त्याग को बढ़ाने के लिए

ख) अपने अन्दर अशुद्धता, अज्ञानता और इच्छाओं को कम करने के लिए

जीवन में सार्थकता

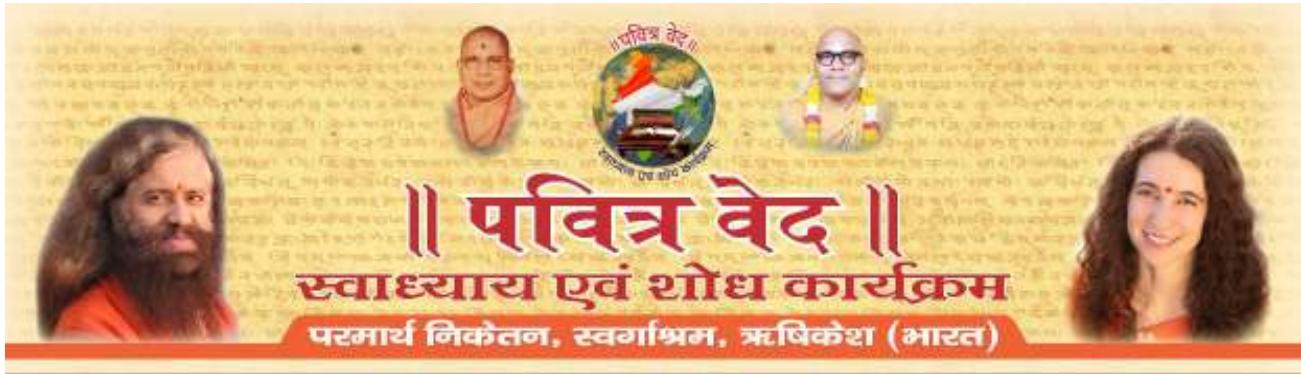
जीवन में नियमित प्रगति सुनिश्चित किस प्रकार की जाये?

हमें लगातार अपने जीवन में सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा का आहान करना चाहिए। हमारे अन्दर सर्वोच्च शक्ति के उजागर होते ही प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति की योग्यतायें बढ़ जायेंगी। सर्वोच्च शक्ति में ज्ञान, गुण, श्रेष्ठ लक्षण तथा उत्तम योग्यतायें शामिल हैं। प्रगतिशील लोग सदैव इन शुभ लक्षणों की प्रगति में ही लगे रहते हैं।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.4

उप॑ नः सुतमा गहि॒ हरिभिरन्द्र कृशिभिः॑ ।
सुते॒ हि त्वा॒ हवामहे॑ ।

(उप) निकट (नः) हमारे (सुतम) उत्पन्न हुए (आगहि) प्राप्त (हरिभिः) हरण करने की शक्ति सहित (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (कृशिभिः) केश, किरणें, बहुआयामी शक्तियाँ (सुते) उत्तम व्यवहारों के साथ (हि) निश्चित रूप से (त्वा) आपको (हवामहे) ग्रहण करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति किस प्रकार करें और उसके द्वारा किस प्रकार पसन्द किये जायें?

मनुष्य के लिए यह निर्देश है कि वह सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के साथ सम्पर्क बनायें और यह प्रार्थना करें कि वह शक्ति अपने द्वारा उत्पन्न की गयी हर वस्तु के साथ स्वयं उसकी अनुभूति में आये।

सूर्य, वायु, सर्वव्यापक ऊर्जा और यहाँ तक कि हमारी व्यक्तिगत जीवात्मा के पास भी अनेकों शक्तियाँ हैं, जिससे वे बहुमूल्य सार तत्वों का आहरण कर सकें और उससे दुःखों का नाश कर सकें। इन सभी शक्तियों के साथ जब वह उत्तम व्यवहार करता है तो निश्चित रूप से उसे परमात्मा की अनुभूति होती है।

इस मन्त्र को परमात्मा की तरफ से प्रत्येक मानव जीवात्मा को एक आश्वासन की तरह से भी समझा जा सकता है कि इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक होने के नाते वह सोम रसों का आहरण करे अर्थात् महान् ज्ञान, शुभ गुणों और श्रेष्ठताओं को अपने निकट धारण करे। इन सबका आहरण करने के लिए वह अपनी बहुआयामी शक्तियों का प्रयोग करे। परमात्मा निश्चित रूप से उत्तम व्यवहार और कर्मों को करने वाले ऐसे लोगों का स्वागत करेंगे।

जीवन में सार्थकता

सबके द्वारा हम पसन्द कैसे किये जायें?

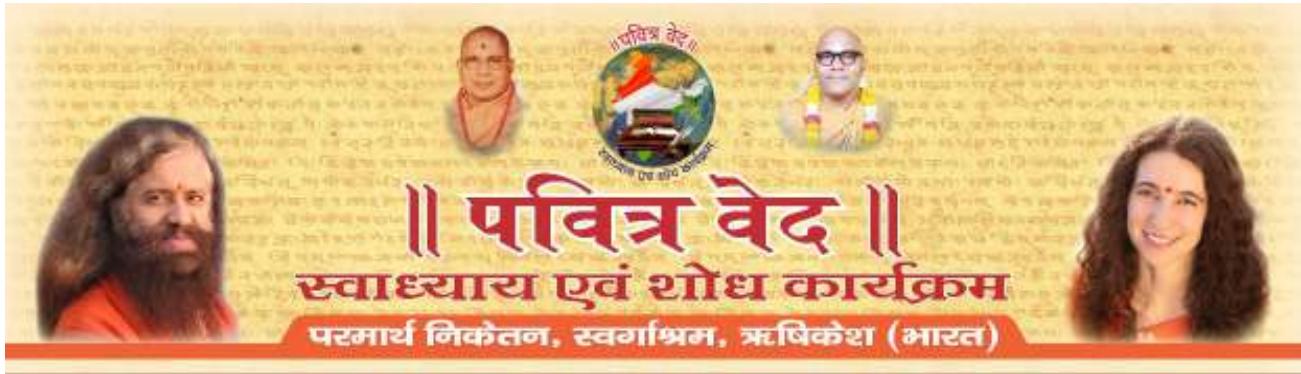
यदि आप चाहते हैं कि सब लोग आपको पसन्द करें, विशेष रूप से आपके उच्चाधिकारी तथा वृद्ध जन आदि तो आपको निम्न प्रयास करने चाहिए :-

क) महान् ज्ञान, शुभ गुणों और श्रेष्ठ आचरण को अपने भीतर उत्पन्न करें तथा उनकी वृद्धि करें।

ख) परमात्मा द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को प्रदत्त बहुआयामी शक्तियों का प्रयोग करते हुए अपनी अशुद्धताओं और अज्ञानताओं को समाप्त करके अपने दुःखों को दूर करें।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



॥ पवित्र वेद ॥

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

परमार्थ निकेतन, स्वगांग्रह, कृष्णकेश (भारत)

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.4

उप॑ नः सुतमा गहि॒ हरिभिरन्द्र कैशिभिः॑ ।
सुते॒ हि त्वा॒ हवामहे॑ ।

(उप) निकट (नः) हमारे (सुतम) उत्पन्न हुए (आगहि) प्राप्त (हरिभिः) हरण करने की शक्ति सहित (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (कैशिभिः) केश, किरणें, बहुआयामी शक्तियाँ (सुते) उत्तम व्यवहारों के साथ (हि) निश्चित रूप से (त्वा) आपको (हवामहे) ग्रहण करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति किस प्रकार करें और उसके द्वारा किस प्रकार पसन्द किये जायें?

मनुष्य के लिए यह निर्देश है कि वह सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के साथ सम्पर्क बनायें और यह प्रार्थना करें कि वह शक्ति अपने द्वारा उत्पन्न की गयी हर वस्तु के साथ स्वयं उसकी अनुभूति में आये।

सूर्य, वायु, सर्वव्यापक ऊर्जा और यहाँ तक कि हमारी व्यक्तिगत जीवात्मा के पास भी अनेकों शक्तियाँ हैं, जिससे वे बहुमूल्य सार तत्वों का आहरण कर सकें और उससे दुःखों का नाश कर सकें। इन सभी शक्तियों के साथ जब वह उत्तम व्यवहार करता है तो निश्चित रूप से उसे परमात्मा की अनुभूति होती है।

इस मन्त्र को परमात्मा की तरफ से प्रत्येक मानव जीवात्मा को एक आश्वासन की तरह से भी समझा जा सकता है कि इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक होने के नाते वह सोम रसों का आहरण करे अर्थात् महान् ज्ञान, शुभ गुणों और श्रेष्ठताओं को अपने निकट धारण करे। इन सबका आहरण करने के लिए वह अपनी बहुआयामी शक्तियों का प्रयोग करे। परमात्मा निश्चित रूप से उत्तम व्यवहार और कर्मों को करने वाले ऐसे लोगों का स्वागत करेंगे।

जीवन में सार्थकता

सबके द्वारा हम पसन्द कैसे किये जायें?

यदि आप चाहते हैं कि सब लोग आपको पसन्द करें, विशेष रूप से आपके उच्चाधिकारी तथा वृद्ध जन आदि तो आपको निम्न प्रयास करने चाहिए :-

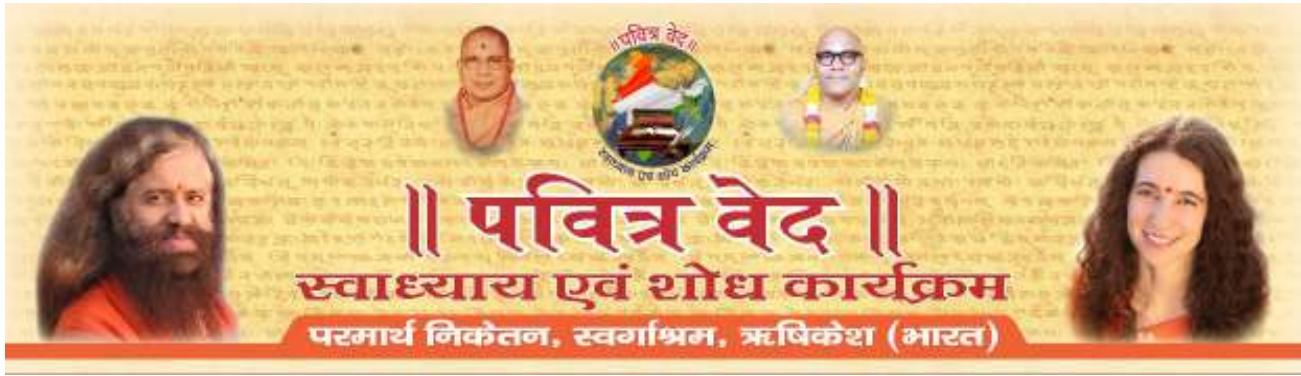
क) महान् ज्ञान, शुभ गुणों और श्रेष्ठ आचरण को अपने भीतर उत्पन्न करें तथा उनकी वृद्धि करें।

ख) परमात्मा द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को प्रदत्त बहुआयामी शक्तियों का प्रयोग करते हुए अपनी अशुद्धताओं और अज्ञानताओं को समाप्त करके अपने दुःखों को दूर करें।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



॥ पवित्र वेद ॥

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम
परमार्थ निकेतन, स्वगांध्रम, ऋषिकेश (भारत)

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.5

सेमं नः स्तोमुमा गृह्णुपेदं सवनं सुतम् ।
गौरो न तृष्णितः पिंव ।

(सः) वह (इमम्) इन (नः) हमारे (स्तोमम्) स्तुतियों, सबके लिए लाभदायक प्रशंसनीय कार्यों (आगाहि इदम्) इन्हें ग्रहण करने वाला, स्वीकार और पसन्द करने वाला (सवनम्) शुभ कार्य (सुतम्) दूसरों के कल्याण के लिए उत्पन्न (गौरः) हिरण (नः) जैसे (तृष्णितः) प्यासे (पिब) पीता है ।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की अनुभूति के लिए कामना करते हैं। क्या परमात्मा भी हमारी कामना करता है?

इस मन्त्र को वैदिक निर्देश देने वाले एक दृष्टान्त के साथ समझा जा सकता है। एक हिरण जब प्यासा होता है तो वह पानी पीने के लिए भागता है। यदि हमारी प्यास परमात्मा की अनुभूति के लिए है तो हमें इस मन्त्र में दिये निम्न तीन निर्देशों का पालन करना चाहिए :-

क) स्तोमम् - हमारी परमात्मा के प्रति स्तुतियाँ और सबके लिए लाभदायक प्रशंसनीय कार्य वास्तव में परमात्मा के द्वारा भी स्तुति एवं प्रशंसा के योग्य होते हैं।

ख) सवनम् - सभी शुभ कार्य परमात्मा के द्वारा प्रशंसनीय होते हैं।

ग) सुतम् - हमें दूसरों के कल्याण के लिए ही वस्तुएं और विचार उत्पन्न करने चाहिए।

जब हम क्रियात्मक जीवन में इन तीन निर्देशों का पालन करते हैं तो परमात्मा हमारी अनुभूति में आ जाता है। हमें ऐसे जीवन की तरफ उसी प्रकार भागना चाहिए, जैसे एक प्यासा हिरण पानी पीने के लिए भागता है। प्रतिक्रियात्मक रूप में परमात्मा भी हमारी अनुभूति के लिए भागेगा।

एक प्यासे हिरण की तरह ही सूर्य भी अपनी किरणों के साथ हमारी तरफ भागता है जब हम यज्ञ करते हैं अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं। ऐसे कार्यों से ही परमात्मा की स्तुति भी होती है।

जीवन में सार्थकता

हमें अपने वृद्धजनों एवं उच्चाधिकारियों के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

जीवन के किसी भी क्षेत्र में हमें निम्न तीन सिद्धान्त क्रियात्मक रूप में सुनिश्चित ही करने ही चाहिए :-

क) स्तोमम् - हमेशा अपने वृद्धजनों, उच्चाधिकारियों आदि की प्रशंसायें पूरे सम्मान के साथ करें। कभी किसी की निन्दा, अपमान या आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

ख) सवनम् - आपके सभी कार्य श्रेष्ठ तथा सबके कल्याण के लिए होने चाहिए, जिससे आपके वृद्धजन तथा उच्चाधिकारी आप पर गर्व करें।

ग) सुतम् - आपको दूसरों के कल्याण के लिए ही वस्तुएं और विचार उत्पन्न करने चाहिए।

यदि हम इन तीन निर्देशों का पालन उसी उत्साह के साथ करें, जैसा प्यासे हिरण में पानी की तरफ भागते हुए दिखायी देता है, तो हमारे वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के आशीर्वाद और शुभ कामनायें भी हमारी तरफ प्यासे हिरण की तरह ही भागेंगी।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



॥ पवित्र वेद ॥

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम
परमार्थ निकेतन, स्वगांध्रम, ऋषिकेश (भारत)

ऋग्वेद मन्त्र 1.16.5

सेमं नः स्तोमुमा गृह्णुपेदं सवनं सुतम् ।
गौरो न तृष्णितः पिंव ।

(सः) वह (इमम्) इन (नः) हमारे (स्तोमम्) स्तुतियों, सबके लिए लाभदायक प्रशंसनीय कार्यों (आगाहि इदम्) इन्हें ग्रहण करने वाला, स्वीकार और पसन्द करने वाला (सवनम्) शुभ कार्य (सुतम्) दूसरों के कल्याण के लिए उत्पन्न (गौरः) हिरण (नः) जैसे (तृष्णितः) प्यासे (पिब) पीता है ।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की अनुभूति के लिए कामना करते हैं। क्या परमात्मा भी हमारी कामना करता है?

इस मन्त्र को वैदिक निर्देश देने वाले एक दृष्टान्त के साथ समझा जा सकता है। एक हिरण जब प्यासा होता है तो वह पानी पीने के लिए भागता है। यदि हमारी प्यास परमात्मा की अनुभूति के लिए है तो हमें इस मन्त्र में दिये निम्न तीन निर्देशों का पालन करना चाहिए :-

क) स्तोमम् - हमारी परमात्मा के प्रति स्तुतियाँ और सबके लिए लाभदायक प्रशंसनीय कार्य वास्तव में परमात्मा के द्वारा भी स्तुति एवं प्रशंसा के योग्य होते हैं।

ख) सवनम् - सभी शुभ कार्य परमात्मा के द्वारा प्रशंसनीय होते हैं।

ग) सुतम् - हमें दूसरों के कल्याण के लिए ही वस्तुएं और विचार उत्पन्न करने चाहिए।

जब हम क्रियात्मक जीवन में इन तीन निर्देशों का पालन करते हैं तो परमात्मा हमारी अनुभूति में आ जाता है। हमें ऐसे जीवन की तरफ उसी प्रकार भागना चाहिए, जैसे एक प्यासा हिरण पानी पीने के लिए भागता है। प्रतिक्रियात्मक रूप में परमात्मा भी हमारी अनुभूति के लिए भागेगा।

एक प्यासे हिरण की तरह ही सूर्य भी अपनी किरणों के साथ हमारी तरफ भागता है जब हम यज्ञ करते हैं अर्थात् दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं। ऐसे कार्यों से ही परमात्मा की स्तुति भी होती है।

जीवन में सार्थकता

हमें अपने वृद्धजनों एवं उच्चाधिकारियों के आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

जीवन के किसी भी क्षेत्र में हमें निम्न तीन सिद्धान्त क्रियात्मक रूप में सुनिश्चित ही करने ही चाहिए :-

क) स्तोमम् - हमेशा अपने वृद्धजनों, उच्चाधिकारियों आदि की प्रशंसायें पूरे सम्मान के साथ करें। कभी किसी की निन्दा, अपमान या आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

ख) सवनम् - आपके सभी कार्य श्रेष्ठ तथा सबके कल्याण के लिए होने चाहिए, जिससे आपके वृद्धजन तथा उच्चाधिकारी आप पर गर्व करें।

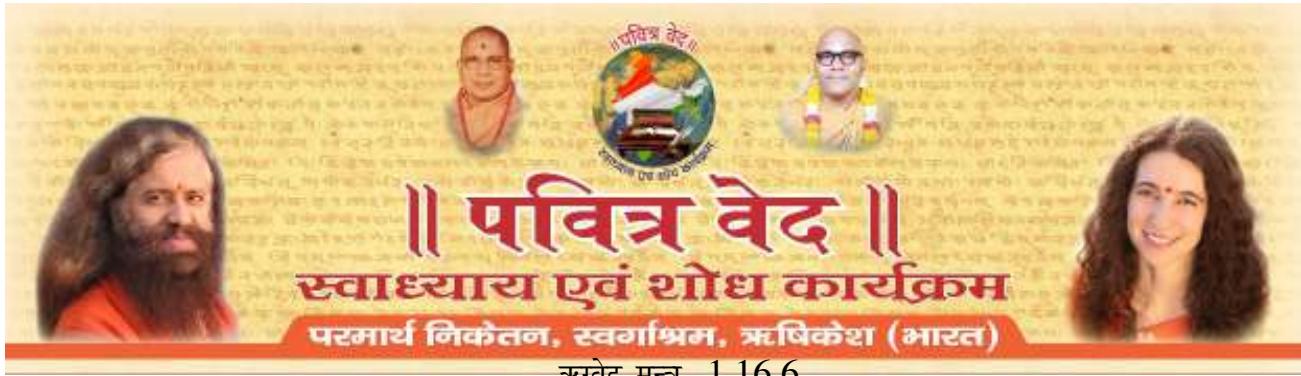
ग) सुतम् - आपको दूसरों के कल्याण के लिए ही वस्तुएं और विचार उत्पन्न करने चाहिए।

यदि हम इन तीन निर्देशों का पालन उसी उत्साह के साथ करें, जैसा प्यासे हिरण में पानी की तरफ भागते हुए दिखायी देता है, तो हमारे वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के आशीर्वाद और शुभ कामनायें भी हमारी तरफ प्यासे हिरण की तरह ही भागेंगी।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



इमे सोमांसु इन्द्रवः सुतासो अधि॑ बुर्हिषि॑ ।

ताँ इन्द्र॑ सहसे पिब ।

(इमे) ये (सोमासः) महान् ज्ञान, शुभ गुण तथा श्रेष्ठतायें (इन्द्रवः) शक्तिशाली बनाने वाले (सुतासा) परमात्मा के द्वारा उत्पन्न (अधि॑) बढ़ते हैं (बुर्हिषि॑) वासना/इच्छा शून्य हृदय और मस्तिष्क में, अन्तरिक्ष में (तान्) उन (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (सहसे) सहनशक्ति, बल (पिब) पीओ ।

व्याख्या :-

महान् ज्ञान और समस्त पदार्थों का निर्माण कैसे होता है?

महान् ज्ञान और पदार्थों का प्रभाव कैसे बढ़ता है?

महान् ज्ञान, शुभ गुण, श्रेष्ठतायें और समस्त पदार्थ आदि परमात्मा के द्वारा रचे जाते हैं। इनका विस्तार अन्तरिक्ष में होता है। इनका उद्देश्य हमारी सहनशक्ति, ताकत और बल को बढ़ाना होता है।

वैज्ञानिक रूप से इन्द्र का अर्थ सूर्य तथा वायु से है जो धरती के समस्त पदार्थों के सार तत्वों का आहरण करते हैं, उन्हें अन्तरिक्ष में ले जाते हैं और उन्हें कई गुना बढ़ा कर वापिस बढ़ी हुई ताकत के साथ धरती को देते हैं। लोग ऐसे सभी पदार्थों और ज्ञान धाराओं का उपयोग करते हैं, जिन्हें प्राकृतिक शक्तियों ने उनकी ताकत और बल के लिए पैदा किया है।

आध्यात्मिक रूप से सभी पदार्थों, ज्ञान धाराओं, शुभ गुणों और श्रेष्ठताओं का उत्पत्तिकर्ता परमात्मा ही है। यदि हम इन्हें अपने गहरे मस्तिष्क और हृदय में ले जायें, उन पर एकाग्रतापूर्वक ध्यान करें तो यह सभी लक्षण हमारे जीवन में बढ़ने लगते हैं। इन्द्रियों का नियन्त्रक जीव इसी प्रकार अपनी शक्ति के लिए इनका पान करता है।

जीवन में सार्थकता

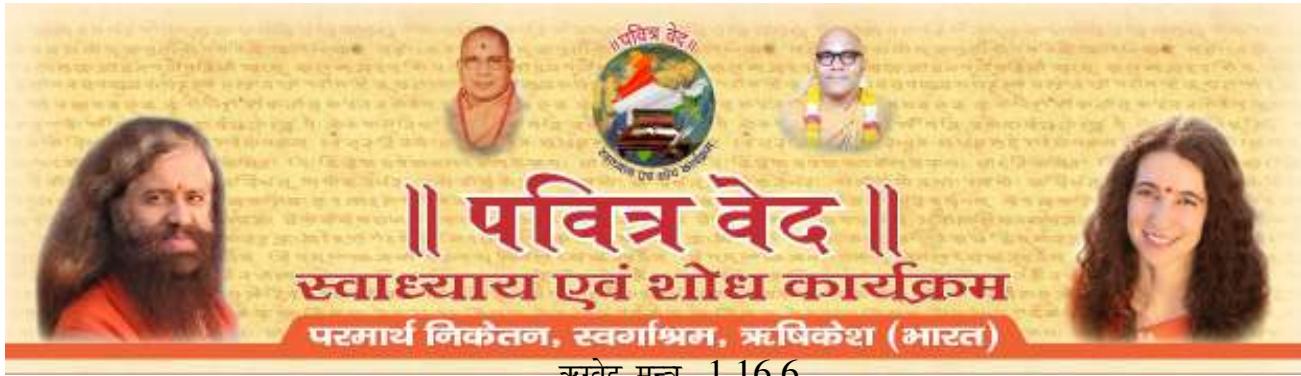
किसी भी कार्य को करते हुए हमें अपने हृदय और मस्तिष्क को एकाग्र क्यों करना चाहिए?

हम जिन पदार्थों का भी प्रयोग करते हैं या विचारों को धारण करते हैं, उन सबका प्रभाव हमें अपने मस्तिष्क और हृदय की गहराई तक ले जाना चाहिए। इससे हमारे शक्ति और उत्साह में वृद्धि होगी। उदाहरण के लिए जब हम भोजन करते हैं तो हमें अपना मस्तिष्क भोजन को चबाने में लगने वाले प्रत्येक क्षण पर केन्द्रित रखना चाहिए और अपने शरीर और मस्तिष्क पर पड़ने वाले उस भोजन के प्रभाव पर विचारशील रहना चाहिए। ऐसे समय हमें एकदम शान्त और स्थिर मस्तिष्क रखना चाहिए। ऐसे भोजन का प्रभाव निश्चित रूप से बढ़ जाता है।

इसी प्रकार जब हम किसी भी रूप में किसी अन्य की सेवा करते हैं तो हमें वह कर्तव्य हृदय की गहराई और एकाग्र मन के साथ करना चाहिए। इससे हमारे कार्यों का प्रभाव बढ़ जायेगा और भविष्य के लिए हमें अधिक ताकत और उत्साह प्राप्त होगा।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



इमे सोमांसु इन्द्रवः सुतासो अधि॑ बुर्हिषि॑।

ताँ इन्द्र॑ सहसे पिब ।

(इमे) ये (सोमासः) महान् ज्ञान, शुभ गुण तथा श्रेष्ठतायें (इन्द्रवः) शक्तिशाली बनाने वाले (सुतासा) परमात्मा के द्वारा उत्पन्न (अधि॑) बढ़ते हैं (बुर्हिषि॑) वासना/इच्छा शून्य हृदय और मस्तिष्क में, अन्तरिक्ष में (तान्) उन (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (सहसे) सहनशक्ति, बल (पिब) पीओ ।

व्याख्या :-

महान् ज्ञान और समस्त पदार्थों का निर्माण कैसे होता है?

महान् ज्ञान और पदार्थों का प्रभाव कैसे बढ़ता है?

महान् ज्ञान, शुभ गुण, श्रेष्ठतायें और समस्त पदार्थ आदि परमात्मा के द्वारा रचे जाते हैं। इनका विस्तार अन्तरिक्ष में होता है। इनका उद्देश्य हमारी सहनशक्ति, ताकत और बल को बढ़ाना होता है।

वैज्ञानिक रूप से इन्द्र का अर्थ सूर्य तथा वायु से है जो धरती के समस्त पदार्थों के सार तत्वों का आहरण करते हैं, उन्हें अन्तरिक्ष में ले जाते हैं और उन्हें कई गुना बढ़ा कर वापिस बढ़ी हुई ताकत के साथ धरती को देते हैं। लोग ऐसे सभी पदार्थों और ज्ञान धाराओं का उपयोग करते हैं, जिन्हें प्राकृतिक शक्तियों ने उनकी ताकत और बल के लिए पैदा किया है।

आध्यात्मिक रूप से सभी पदार्थों, ज्ञान धाराओं, शुभ गुणों और श्रेष्ठताओं का उत्पत्तिकर्ता परमात्मा ही है। यदि हम इन्हें अपने गहरे मस्तिष्क और हृदय में ले जायें, उन पर एकाग्रतापूर्वक ध्यान करें तो यह सभी लक्षण हमारे जीवन में बढ़ने लगते हैं। इन्द्रियों का नियन्त्रक जीव इसी प्रकार अपनी शक्ति के लिए इनका पान करता है।

जीवन में सार्थकता

किसी भी कार्य को करते हुए हमें अपने हृदय और मस्तिष्क को एकाग्र क्यों करना चाहिए?

हम जिन पदार्थों का भी प्रयोग करते हैं या विचारों को धारण करते हैं, उन सबका प्रभाव हमे अपने मस्तिष्क और हृदय की गहराई तक ले जाना चाहिए। इससे हमारे शक्ति और उत्साह में वृद्धि होगी। उदाहरण के लिए जब हम भोजन करते हैं तो हमें अपना मस्तिष्क भोजन को चबाने में लगने वाले प्रत्येक क्षण पर केन्द्रित रखना चाहिए और अपने शरीर और मस्तिष्क पर पड़ने वाले उस भोजन के प्रभाव पर विचारशील रहना चाहिए। ऐसे समय हमें एकदम शान्त और स्थिर मस्तिष्क रखना चाहिए। ऐसे भोजन का प्रभाव निश्चित रूप से बढ़ जाता है।

इसी प्रकार जब हम किसी भी रूप में किसी अन्य की सेवा करते हैं तो हमें वह कर्तव्य हृदय की गहराई और एकाग्र मन के साथ करना चाहिए। इससे हमारे कार्यों का प्रभाव बढ़ जायेगा और भविष्य के लिए हमें अधिक ताकत और उत्साह प्राप्त होगा।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.7

अुं ते स्तोमो अग्नियो हृदिस्पृगस्तु शन्तमः ।
अथा सोमं सुतं पिंब ।

(अयम्) यह (ते) आपका (स्तोमः) परमात्मा की स्तुतियाँ, प्रशंसनीय कार्य (अग्नियः) प्रगतिशील (हृदिस्पृक अस्तु) हृदय को छूने वाले हों, गहरा संतोष देने वाले हों (शन्तमः) शान्ति देने वाले (अथा) अतः (सोमम्) पदार्थ, ज्ञान, शुभ गुण तथा श्रेष्ठतायें (सुतम्) परमात्मा द्वारा उत्पन्न (पिंब) पीओ ।

व्याख्या :-

अपने जीवन की गतिविधियों को दिव्य कैसे बनायें?

दिव्य जीवन का क्या परिणाम होता है?

जब भी हम किसी भौतिक पदार्थ या ज्ञान का प्रयोग करते हैं तो हमारे अन्दर यह चेतना भाव होना चाहिए कि सब कुछ परमात्मा के द्वारा दिया गया है। प्रत्येक पदार्थ और ज्ञान के लिए इस प्रकार की चेतना उसे सोम सुतम् अर्थात् परमात्मा द्वारा उत्पन्न किया हुआ ही सिद्ध कर देती है। इससे हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण और प्रत्येक गतिविधि को दिव्य स्पर्श मिल जाता है।

इस प्रकार की चेतना के साथ ही परमात्मा के प्रति हमारी स्तुतियाँ और हमारे प्रशंसनीय कार्य निम्न परिणाम देते हैं :- क) जीवन में प्रगतिशील उन्नति ख) हृदयस्पर्शी गहरा सन्तोष ग) पूर्ण शान्ति ।

जीवन में सार्थकता

जीवन में प्रगति, शान्ति और सन्तोष कैसे प्राप्त करें?

जीवन में प्रगति, शान्ति और सन्तोष प्राप्त करने के लिए हमें एक मूल वास्तविकता पर गहरी चेतना बनाकर रखनी चाहिए कि समस्त वस्तुएं तथा ज्ञान ईश्वर प्रदत्त हैं और हम भगवान के इन दिव्य उपहारों का केवल प्रयोग कर रह हैं। इस प्रकार हमें अहंकार रहित होकर जीने का प्रशिक्षण प्राप्त हो जायेगा। हम अपने कार्यों पर और अधिक एकाग्र होकर ध्यान केन्द्रित कर सकेंगे तथा सबके प्रति कल्याण की भावना धारण कर सकेंगे। हमारे व्यवहार और कार्यों में एक अच्छा बदलाव आयेगा, अच्छे परिणाम मिलेंगे।

हमारे परिवार में भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि धन सम्पत्तियाँ तथा अन्य साधन हमारे माता-पिता तथा पूर्वजों के द्वारा दिये गये हैं। लगातार चलने वाली यह चेतना हमारे वृद्धजनों के प्रति हमें सम्मान और श्रद्धा से भरपूर कर देगी। हम अहंकाररहित हो जायेंगे। केवल अपने स्वार्थ पर केन्द्रित न होकर हम पूरे परिवार के कल्याण पर ध्यान लगा सकेंगे।

इसी प्रकार किसी संस्था में कार्य करते हुए हमें इस तथ्य के प्रति चेतन रहना चाहिए कि इस संस्था का स्वामित्व तथा प्रबन्धन हमारे उच्च अधिकारियों के हाथ में है, जो हमारे ही कल्याण के लिए है। हमें अहंकाररहित रहकर और संस्था तथा उच्चाधिकारियों के प्रति समर्पण भाव से कार्य करना चाहिए।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.7

अुं ते स्तोमो अग्नियो हृदिस्पृगस्तु शन्तमः ।
अथा सोमं सुतं पिंब ।

(अयम्) यह (ते) आपका (स्तोमः) परमात्मा की स्तुतियाँ, प्रशंसनीय कार्य (अग्नियः) प्रगतिशील (हृदिस्पृक अस्तु) हृदय को छूने वाले हों, गहरा संतोष देने वाले हों (शन्तमः) शान्ति देने वाले (अथा) अतः (सोमम्) पदार्थ, ज्ञान, शुभ गुण तथा श्रेष्ठतायें (सुतम्) परमात्मा द्वारा उत्पन्न (पिंब) पीओ ।

व्याख्या :-

अपने जीवन की गतिविधियों को दिव्य कैसे बनायें?

दिव्य जीवन का क्या परिणाम होता है?

जब भी हम किसी भौतिक पदार्थ या ज्ञान का प्रयोग करते हैं तो हमारे अन्दर यह चेतना भाव होना चाहिए कि सब कुछ परमात्मा के द्वारा दिया गया है। प्रत्येक पदार्थ और ज्ञान के लिए इस प्रकार की चेतना उसे सोम सुतम् अर्थात् परमात्मा द्वारा उत्पन्न किया हुआ ही सिद्ध कर देती है। इससे हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण और प्रत्येक गतिविधि को दिव्य स्पर्श मिल जाता है।

इस प्रकार की चेतना के साथ ही परमात्मा के प्रति हमारी स्तुतियाँ और हमारे प्रशंसनीय कार्य निम्न परिणाम देते हैं :- क) जीवन में प्रगतिशील उन्नति ख) हृदयस्पर्शी गहरा सन्तोष ग) पूर्ण शान्ति ।

जीवन में सार्थकता

जीवन में प्रगति, शान्ति और सन्तोष कैसे प्राप्त करें?

जीवन में प्रगति, शान्ति और सन्तोष प्राप्त करने के लिए हमें एक मूल वास्तविकता पर गहरी चेतना बनाकर रखनी चाहिए कि समस्त वस्तुएं तथा ज्ञान ईश्वर प्रदत्त हैं और हम भगवान के इन दिव्य उपहारों का केवल प्रयोग कर रह हैं। इस प्रकार हमें अहंकार रहित होकर जीने का प्रशिक्षण प्राप्त हो जायेगा। हम अपने कार्यों पर और अधिक एकाग्र होकर ध्यान केन्द्रित कर सकेंगे तथा सबके प्रति कल्याण की भावना धारण कर सकेंगे। हमारे व्यवहार और कार्यों में एक अच्छा बदलाव आयेगा, अच्छे परिणाम मिलेंगे।

हमारे परिवार में भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि धन सम्पत्तियाँ तथा अन्य साधन हमारे माता-पिता तथा पूर्वजों के द्वारा दिये गये हैं। लगातार चलने वाली यह चेतना हमारे वृद्धजनों के प्रति हमें सम्मान और श्रद्धा से भरपूर कर देगी। हम अहंकाररहित हो जायेंगे। केवल अपने स्वार्थ पर केन्द्रित न होकर हम पूरे परिवार के कल्याण पर ध्यान लगा सकेंगे।

इसी प्रकार किसी संस्था में कार्य करते हुए हमें इस तथ्य के प्रति चेतन रहना चाहिए कि इस संस्था का स्वामित्व तथा प्रबन्धन हमारे उच्च अधिकारियों के हाथ में है, जो हमारे ही कल्याण के लिए है। हमें अहंकाररहित रहकर और संस्था तथा उच्चाधिकारियों के प्रति समर्पण भाव से कार्य करना चाहिए।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.8

विश्वमित्सवर्णं सुतमिन्द्रो मदाय गच्छति ।
वृत्रहा सोमपीतये ।

(विश्वम्) सर्वकालिक, सब स्थानों पर (इत) निश्चित रूप से (सवनम्) महान् त्याग कार्य (सुतम्) उत्पन्न हुए परिणाम (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (मदाय) आनन्द के लिए (गच्छति) प्राप्त करता है (वृत्रहा) वृत्रों, अज्ञान तथा मेघ का नाशक (सोम) दिव्यतायें (पीतये) संरक्षक ।

व्याख्या :-

त्यागमय जीवन के क्या परिणाम होते हैं?

जब एक व्यक्ति सत्य रूप में इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बन जाता है और महान् त्याग कार्यों का करता है तो निश्चित रूप से वह एक महान् आनन्दमयी अवस्था में पहुँच जाता है। तब वह अपनी अज्ञानमयी वृत्तियों का नाश करके अपनी दिव्यताओं का रक्षक बन जाता है। इस प्रकार से वह अपने त्यागमय जीवन द्वारा निम्न तीन परिणाम सुनिश्चित करता है :-

- क) महान् आनन्दरिक आनन्द
- ख) अज्ञान वृत्तियों का नाश
- ग) दिव्यताओं का संरक्षक

जीवन में सार्थकता

किस प्रकार कुछ लोग महान् बन जाते हैं?

समस्त महान् व्यक्तियों के पीछे त्याग की एक प्रबल पृष्ठभूमि देखी जा सकती है। केवल त्याग ही व्यक्ति को महान् बनाते हैं।

एक व्यक्ति जो परिवार के सभी सदस्यों को प्रेम करने वाला, उनका ध्यान रखने वाला और उनके लिए त्याग करने वाला होता है, उसी को महान् समझा जाता है।

एक कर्मचारी जो ईमानदार हो, अपने कर्तव्यों प्रति समर्पित हो और संस्था के उत्थान के लिए हर प्रयास को करने के लिए तत्पर हो, उसे महान् समझा जाता है।

वे सामाजिक और धार्मिक नेता महान् समझे जाते हैं, जो लोगों के दुःख दर्दों को अपने ऊपर ले लेते हैं।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.8

विश्वमित्सवंनं सुतमिन्द्रो मदाय गच्छति ।
वृत्रहा सोमपीतये ।

(विश्वम्) सर्वकालिक, सब स्थानों पर (इत) निश्चित रूप से (सवनम्) महान् त्याग कार्य (सुतम्) उत्पन्न हुए परिणाम (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा, सूर्य, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाला (मदाय) आनन्द के लिए (गच्छति) प्राप्त करता है (वृत्रहा) वृत्रों, अज्ञान तथा मेघ का नाशक (सोम) दिव्यतायें (पीतये) संरक्षक ।

व्याख्या :-

त्यागमय जीवन के क्या परिणाम होते हैं?

जब एक व्यक्ति सत्य रूप में इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बन जाता है और महान् त्याग कार्यों का करता है तो निश्चित रूप से वह एक महान् आनन्दमयी अवस्था में पहुँच जाता है। तब वह अपनी अज्ञानमयी वृत्तियों का नाश करके अपनी दिव्यताओं का रक्षक बन जाता है। इस प्रकार से वह अपने त्यागमय जीवन द्वारा निम्न तीन परिणाम सुनिश्चित करता है :-

- क) महान् आनन्दरिक आनन्द
- ख) अज्ञान वृत्तियों का नाश
- ग) दिव्यताओं का संरक्षक

जीवन में सार्थकता

किस प्रकार कुछ लोग महान् बन जाते हैं?

समस्त महान् व्यक्तियों के पीछे त्याग की एक प्रबल पृष्ठभूमि देखी जा सकती है। केवल त्याग ही व्यक्ति को महान् बनाते हैं।

एक व्यक्ति जो परिवार के सभी सदस्यों को प्रेम करने वाला, उनका ध्यान रखने वाला और उनके लिए त्याग करने वाला होता है, उसी को महान् समझा जाता है।

एक कर्मचारी जो ईमानदार हो, अपने कर्तव्यों प्रति समर्पित हो और संस्था के उत्थान के लिए हर प्रयास को करने के लिए तत्पर हो, उसे महान् समझा जाता है।

वे सामाजिक और धार्मिक नेता महान् समझे जाते हैं, जो लोगों के दुःख दर्दों को अपने ऊपर ले लेते हैं।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.9

सेमं नः कामुमा पृण् गोभिरश्वैः शतक्रतो ।
स्तवाम त्वा स्वाध्यः ।

(सः) वह (परमात्मा) (इमम्) इस (नः) हमारी (कामम्) इच्छा (अपृण) सर्वथा पूरी करे (गोभिः) ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा (अश्वैः) कर्मेन्द्रियों के द्वारा (शतक्रतो) असंख्य कार्यों को सिद्ध करने वाला (स्तवाम) स्तुतियाँ, प्रशंसायें और पूजा (त्वा) आपकी (स्वाध्यः) एकाग्रतापूर्वक ध्यान ।

व्याख्या :-

हमारी मुख्य इच्छा क्या होनी चाहिए?

परमात्मा असंख्य कार्यों को सिद्ध करने वाला है। हमारे अन्दर ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को प्रेरित करके वह हमारी इच्छाओं को पूर्ण करता है। हमारी प्रार्थना केवल एक विषय पर केन्द्रित होनी चाहिए - “एकाग्रतापूर्वक ध्यान करते हुए हम केवल आपकी ही पूजा करें (स्तवाम त्वा स्वाध्यः)”

जीवन में सार्थकता

क्रियात्मक रूप में कर्मफल सिद्धान्त क्या है?

हमारे चारों तरफ जो कुछ भी होता हुआ दिखायी देता है, वह वास्तव में परमात्मा के द्वारा ही होता है। परमात्मा असंख्य कार्यों को सिद्ध करने वाला है। हम तो कार्यों को करते हुए केवल दिखायी देते हैं, परन्तु वास्तविकता में परमात्मा ही हर कार्य का कर्ता है।

अपनी दिनचर्या की गतिविधियों को करते हुए हमें एकाग्रतापूर्वक ध्यान लगाकर उसकी पूजा अवश्य करनी चाहिए। अपने अस्तित्व रूपी अहंकार को अपने समस्त कृत्यों से अलग देखते हुए तथा परिणामों की इच्छा से भी अलग रखते हुए यह पूजा सम्भव होती है।

कर्म फल का यह मूल सिद्धान्त है - कर्ता भाव से पृथक रह कर हर कार्य को करो। अपनी आन्तरिक शक्ति को ध्यान के माध्यम से परमात्मा के साथ जोड़ दो।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.16.9

सेमं नः कामुमा पृण् गोभिरश्वैः शतक्रतो ।
स्तवाम त्वा स्वाध्यः ।

(सः) वह (परमात्मा) (इमम्) इस (नः) हमारी (कामम्) इच्छा (अपृण) सर्वथा पूरी करे (गोभिः) ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा (अश्वैः) कर्मेन्द्रियों के द्वारा (शतक्रतो) असंख्य कार्यों को सिद्ध करने वाला (स्तवाम) स्तुतियाँ, प्रशंसायें और पूजा (त्वा) आपकी (स्वाध्यः) एकाग्रतापूर्वक ध्यान ।

व्याख्या :-

हमारी मुख्य इच्छा क्या होनी चाहिए?

परमात्मा असंख्य कार्यों को सिद्ध करने वाला है। हमारे अन्दर ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को प्रेरित करके वह हमारी इच्छाओं को पूर्ण करता है। हमारी प्रार्थना केवल एक विषय पर केन्द्रित होनी चाहिए - “एकाग्रतापूर्वक ध्यान करते हुए हम केवल आपकी ही पूजा करें (स्तवाम त्वा स्वाध्यः)”

जीवन में सार्थकता

क्रियात्मक रूप में कर्मफल सिद्धान्त क्या है?

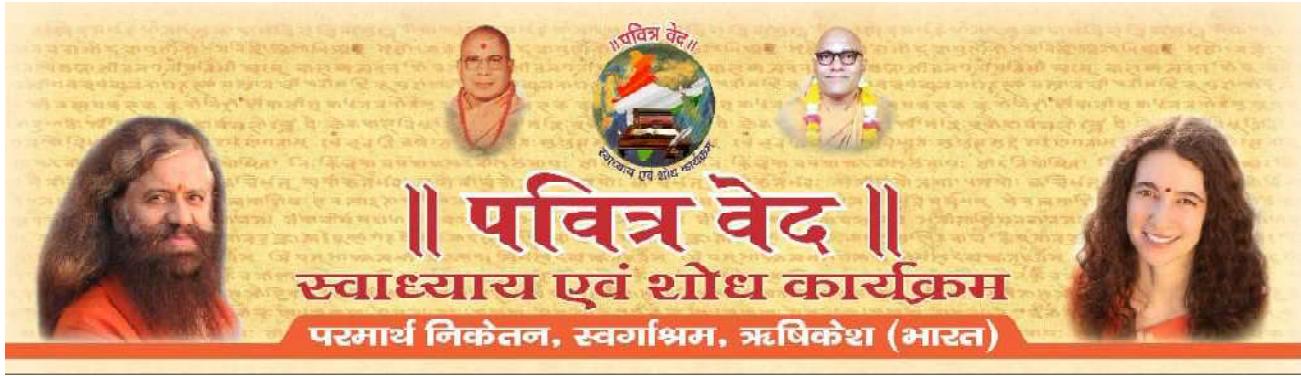
हमारे चारों तरफ जो कुछ भी होता हुआ दिखायी देता है, वह वास्तव में परमात्मा के द्वारा ही होता है। परमात्मा असंख्य कार्यों को सिद्ध करने वाला है। हम तो कार्यों को करते हुए केवल दिखायी देते हैं, परन्तु वास्तविकता में परमात्मा ही हर कार्य का कर्ता है।

अपनी दिनचर्या की गतिविधियों को करते हुए हमें एकाग्रतापूर्वक ध्यान लगाकर उसकी पूजा अवश्य करनी चाहिए। अपने अस्तित्व रूपी अहंकार को अपने समस्त कृत्यों से अलग देखते हुए तथा परिणामों की इच्छा से भी अलग रखते हुए यह पूजा सम्भव होती है।

कर्म फल का यह मूल सिद्धान्त है - कर्ता भाव से पृथक रह कर हर कार्य को करो। अपनी आन्तरिक शक्ति को ध्यान के माध्यम से परमात्मा के साथ जोड़ दो।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.1

इन्द्रु सोमुं पिब॑ ऋतुना त्वा॒ विशुन्त्वन्दवः ।
मुत्सुरासुस्तदौकसः ।

(इन्द्र) सूर्य, इन्द्रियों का नियन्त्रक (सोमम्) सब वनस्पतियों के रस, ज्ञान, शुभ गुण, श्रेष्ठतायें (पिब) पीना (ऋतुना) उचित प्रकार से, ऋतुओं के अनुसार (त्वा) तुङ्गमें (अविशन्तु) प्रवेश करें (इन्दवः) बल देने वाले (मत्सरासः) आनन्ददायक, तृप्ति देने वाले (तदोकसः) दिव्यताओं के निवास

व्याख्या :-

सूर्य किस प्रकार हमें बल देता है?

महान् शुभ गुण किस प्रकार हमें बल देते हैं?

वैज्ञानिक अर्थ - सूर्य भिन्न-भिन्न ऋतुओं में सभी वनस्पतियों के रस को पीता है, जो वापिस सभी जीव और निर्जीव पदार्थों में प्रवेश करके बलदायक होता है। यह बलदायक तत्व सबके लिए आनन्द देने वाले होते हैं और दिव्यताओं का निवास समझे जाते हैं।

आध्यात्मिक रूप से, हमारे लिए निर्देश है कि हम इन्द्र बनें, इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखें और सोम अर्थात् ज्ञान, शुभ गुण तथा श्रेष्ठताओं का पान करें। जब यह सोम हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं, वे बलदायक तथा हमारी आध्यात्मिक प्रगति के लिए आनन्ददायक होते हैं क्योंकि सोम में ही दिव्यताओं का निवास माना जाता है। सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा सोम में ही वास करता है। कोई व्यक्ति सोम का पान तभी कर सकता है यदि वह पहले इन्द्र हो अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक हो। अतः इन्द्र होना ही दिव्य जीवन की प्राथमिक स्थिति है।

जीवन में सार्थकता

एक दिव्य जीवन की मूल स्थिति क्या है?

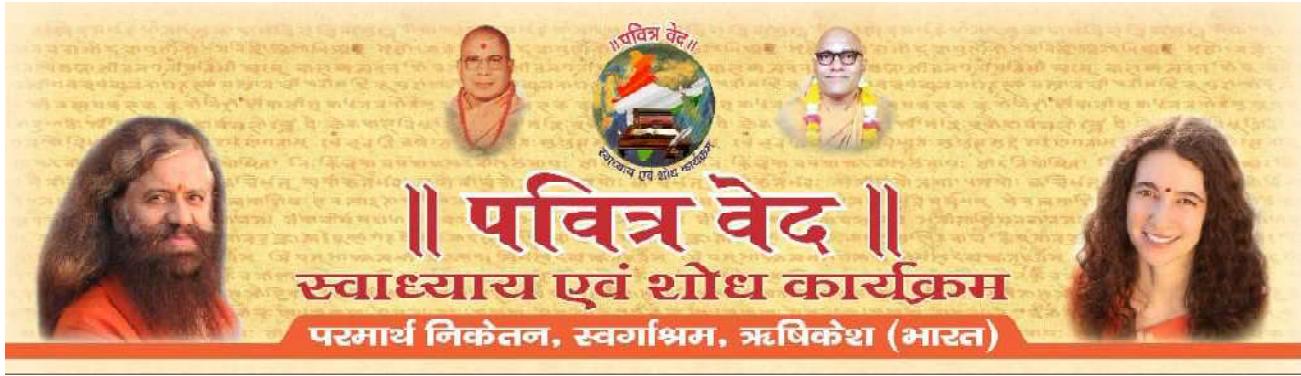
हमें अपने जीवन में उचित प्रकार से तथा उचित अवस्था में सभी महान् लक्षणों को धारण करना चाहिए। माता-पिता तथा गुरुओं को इस पर ध्यान देना चाहिए। इस मन्त्र का क्रियान्वयन करने के लिए वे अति उत्तम निर्देशक हो सकते हैं। एक बार समय निकल जाने पर मस्तिष्क अपने विश्वास तथा आदतों में ही परिपक्व हो जाता है और आदतों तथा बचपन में बने हुए चरित्र को भेदना अत्यन्त कठिन कार्य होता है। केवल महान् लक्षण ही हमारा मूल बल तथा आनन्द देने वाले होते हैं क्योंकि दिव्य गुणों में ही दिव्यता का वास होता है।

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.1

इन्द्रु सोमुं पिब॑ ऋतुना त्वा॒ विशुन्त्वन्दवः ।
मुत्सरासुस्तदौकसः ।

(इन्द्र) सूर्य, इन्द्रियों का नियन्त्रक (सोमम्) सब वनस्पतियों के रस, ज्ञान, शुभ गुण, श्रेष्ठतायें (पिब) पीना (ऋतुना) उचित प्रकार से, ऋतुओं के अनुसार (त्वा) तुङ्गमें (अविशन्तु) प्रवेश करें (इन्दवः) बल देने वाले (मत्सरासः) आनन्ददायक, तृप्ति देने वाले (तदोकसः) दिव्यताओं के निवास

व्याख्या :-

सूर्य किस प्रकार हमें बल देता है?

महान् शुभ गुण किस प्रकार हमें बल देते हैं?

वैज्ञानिक अर्थ - सूर्य भिन्न-भिन्न ऋतुओं में सभी वनस्पतियों के रस को पीता है, जो वापिस सभी जीव और निर्जीव पदार्थों में प्रवेश करके बलदायक होता है। यह बलदायक तत्व सबके लिए आनन्द देने वाले होते हैं और दिव्यताओं का निवास समझे जाते हैं।

आध्यात्मिक रूप से, हमारे लिए निर्देश है कि हम इन्द्र बनें, इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखें और सोम अर्थात् ज्ञान, शुभ गुण तथा श्रेष्ठताओं का पान करें। जब यह सोम हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं, वे बलदायक तथा हमारी आध्यात्मिक प्रगति के लिए आनन्ददायक होते हैं क्योंकि सोम में ही दिव्यताओं का निवास माना जाता है। सर्वोच्च शक्तिमान परमात्मा सोम में ही वास करता है। कोई व्यक्ति सोम का पान तभी कर सकता है यदि वह पहले इन्द्र हो अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक हो। अतः इन्द्र होना ही दिव्य जीवन की प्राथमिक स्थिति है।

जीवन में सार्थकता

एक दिव्य जीवन की मूल स्थिति क्या है?

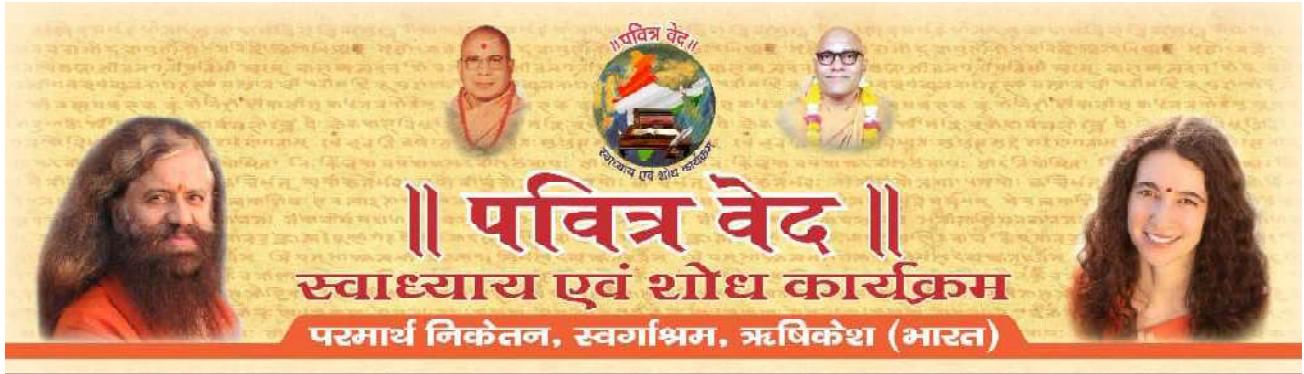
हमें अपने जीवन में उचित प्रकार से तथा उचित अवस्था में सभी महान् लक्षणों को धारण करना चाहिए। माता-पिता तथा गुरुओं को इस पर ध्यान देना चाहिए। इस मन्त्र का क्रियान्वयन करने के लिए वे अति उत्तम निर्देशक हो सकते हैं। एक बार समय निकल जाने पर मस्तिष्क अपने विश्वास तथा आदतों में ही परिपक्व हो जाता है और आदतों तथा बचपन में बने हुए चरित्र को भेदना अत्यन्त कठिन कार्य होता है। केवल महान् लक्षण ही हमारा मूल बल तथा आनन्द देने वाले होते हैं क्योंकि दिव्य गुणों में ही दिव्यता का वास होता है।

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.2

मरुतः पिबते क्रृतुना पोत्राद् युज्ञं पुनीतन ।
यूयं हि ष्ठा सुदानवः ।

(मरुतः) वायु, श्वास (पिबते) पीना (क्रृतुना) उचित प्रकार से, क्रृतुओं के अनुसार (पोत्राद्) पवित्र करने वाले (यज्ञम्) त्याग (पुनीतन) पवित्र कर दो (यूयम्) आप (हि) निश्चय से (स्था) हो (सुदानवः) बुराईयों के नाशक, प्रत्येक वस्तु सुन्दरता से उपलब्ध करवाने वाले

व्याख्या :-

हमारे लिए वायु का क्या महत्व है?
श्वास हमें किस प्रकार पवित्र करते हैं?

वैज्ञानिक रूप से - जिस प्रकार सूर्य समस्त वनस्पतियों के रस को पीता है, वायु भी उन्हीं रसों को पीती है। इस मन्त्र में सोम अव्यक्त है। वायु शुद्धि करने वाली है, अतः यह शुद्ध करती है और हमारे त्याग का विस्तार करती है। वायु निश्चित रूप से सभी बुराईयों की नाशक है जैसे दुर्गन्ध इत्यादि की। इस प्रकार वायु हमें सब कुछ सुन्दर तरीके से उपलब्ध कराती है।

आध्यात्मिक रूप से - हमारे श्वास अर्थात् प्राण तथा अपान, जिस वायु को हम शरीर के अन्दर ले जाते हैं और बाहर छोड़ते हैं, हमारे शरीर को पूरी तरह से शुद्ध करती है। वायु में शुद्ध करने वाले गुण होते हैं। हमारे प्राण हमें शुद्ध करने के साथ-साथ हमारा संरक्षण भी करते हैं और हमारे त्याग को विस्तृत करते हैं। इस प्रकार हमारे प्राण अर्थात् वायु हमारे मस्तिष्क में से निश्चित रूप से सभी बुरे विचारों का नाश कर देती है।

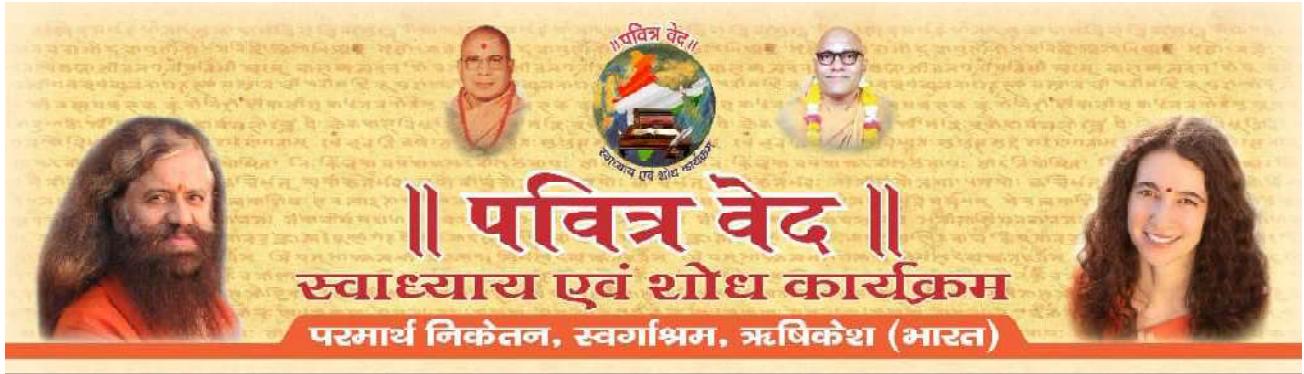
जीवन में सार्थकता

दिव्य शक्तियों का विकास कैसे करें?

बृहद स्तर पर परमात्मा वायुमंडलीय हवा के माध्यम से ही हमें संरक्षित तथा शुद्ध करते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर हमारे द्वारा लिये गये श्वास-प्रश्वास हमें संरक्षित करते हैं, शुद्ध करते हैं और हमारे त्याग का विस्तार करते हैं, शुभ लक्षणों की वृद्धि करते हैं और बुरे विचारों का नाश करते हैं। हमें सदैव इन दिव्य शक्तियों पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए, जो हम सबको सर्वोच्च दिव्य शक्ति परमात्मा की तरफ से प्रदान किये गये हैं। महान् दिव्य आत्मायें अपनी दिव्यताओं का विस्तार अपने श्वास से भी करते हैं। उनकी उपस्थिति और यहाँ तक कि उन दिव्य आत्माओं का ध्यान अवस्था में विचार करने से ही हमें उनके त्यागमय जीवन का परिणाम प्राप्त होता है।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.2

मरुतः पिबते क्रृतुना पोत्राद् युज्ञं पुनीतन ।
यूयं हि प्षा सुदानवः ।

(मरुतः) वायु, श्वास (पिबते) पीना (क्रृतुना) उचित प्रकार से, क्रृतुओं के अनुसार (पोत्राद्) पवित्र करने वाले (यज्ञम्) त्याग (पुनीतन) पवित्र कर दो (यूयम्) आप (हि) निश्चय से (स्था) हो (सुदानवः) बुराईयों के नाशक, प्रत्येक वस्तु सुन्दरता से उपलब्ध करवाने वाले

व्याख्या :-

हमारे लिए वायु का क्या महत्व है?
श्वास हमें किस प्रकार पवित्र करते हैं?

वैज्ञानिक रूप से - जिस प्रकार सूर्य समस्त वनस्पतियों के रस को पीता है, वायु भी उन्हीं रसों को पीती है। इस मन्त्र में सोम अव्यक्त है। वायु शुद्धि करने वाली है, अतः यह शुद्ध करती है और हमारे त्याग का विस्तार करती है। वायु निश्चित रूप से सभी बुराईयों की नाशक है जैसे दुर्गन्ध इत्यादि की। इस प्रकार वायु हमें सब कुछ सुन्दर तरीके से उपलब्ध कराती है।

आध्यात्मिक रूप से - हमारे श्वास अर्थात् प्राण तथा अपान, जिस वायु को हम शरीर के अन्दर ले जाते हैं और बाहर छोड़ते हैं, हमारे शरीर को पूरी तरह से शुद्ध करती है। वायु में शुद्ध करने वाले गुण होते हैं। हमारे प्राण हमें शुद्ध करने के साथ-साथ हमारा संरक्षण भी करते हैं और हमारे त्याग को विस्तृत करते हैं। इस प्रकार हमारे प्राण अर्थात् वायु हमारे मस्तिष्क में से निश्चित रूप से सभी बुरे विचारों का नाश कर देती है।

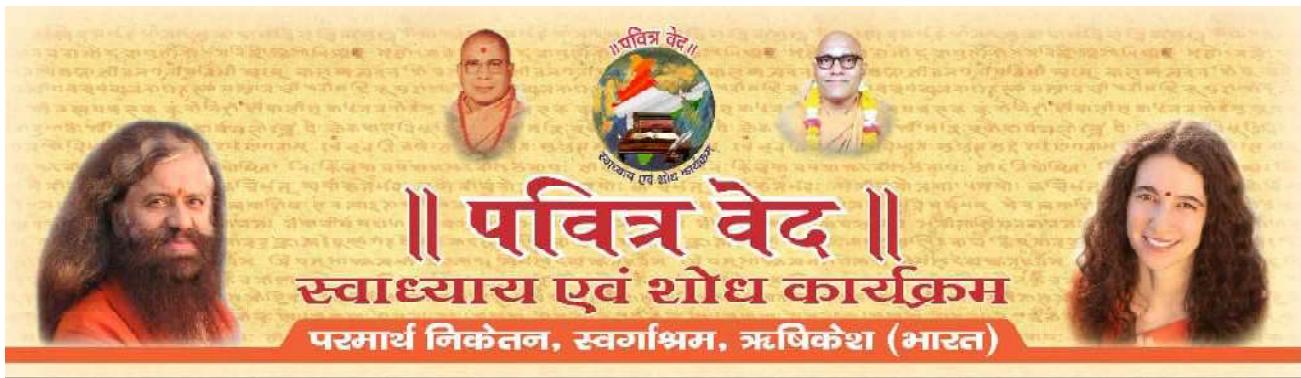
जीवन में सार्थकता

दिव्य शक्तियों का विकास कैसे करें?

बृहद स्तर पर परमात्मा वायुमंडलीय हवा के माध्यम से ही हमें संरक्षित तथा शुद्ध करते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर हमारे द्वारा लिये गये श्वास-प्रश्वास हमें संरक्षित करते हैं, शुद्ध करते हैं और हमारे त्याग का विस्तार करते हैं, शुभ लक्षणों की वृद्धि करते हैं और बुरे विचारों का नाश करते हैं। हमें सदैव इन दिव्य शक्तियों पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए, जो हम सबको सर्वोच्च दिव्य शक्ति परमात्मा की तरफ से प्रदान किये गये हैं। महान् दिव्य आत्मायें अपनी दिव्यताओं का विस्तार अपने श्वास से भी करते हैं। उनकी उपस्थिति और यहाँ तक कि उन दिव्य आत्माओं का ध्यान अवस्था में विचार करने से ही हमें उनके त्यागमय जीवन का परिणाम प्राप्त होता है।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.3

अभि यज्ञं गृणीहि नो ज्ञावो नेष्टुः पिब॑ ऋतुना॑।
त्वं हि रल्धा असि॑।

(अभि) लक्ष्य करके, समस्त दिशाओं से (यज्ञम्) त्याग (गृणीहि) स्वीकार करना (नः) हमारे (ग्नावः) सभी पदार्थों को देने योग्य (नेष्टः) विद्युत (अग्नि की अत्यंत सूक्ष्म अवस्था), महान् बुद्धि अर्थात् ज्ञान की अग्नि धारण करने वाली (पिब) पीना (ऋतुना) ऋतुओं के अनुसार, उचित प्रकार से (त्वम्) आप (हि) निश्चय से (रल्धा) उत्तम पदार्थों के धारक (असि) हो व्याख्या

विद्युत करेंट का मूल विज्ञान क्या है?

विद्युत किस प्रकार हमें सुविधा सम्पन्न करती है?

वैज्ञानिक अर्थ - इस मन्त्र का केन्द्रीय विचार नेष्टः है अर्थात् विद्युत, अग्नि का उत्तम रूप जो व्यापक है और सभी कणों को धारण करता है तथा उन्हें प्रथक-प्रथक कर देता है। अग्नि की उत्पत्ति विद्युत करंट के सूक्ष्म रूप से होती है और वापिस उसी में मिल जाती है। विद्युत शक्ति में शुद्धि करने तथा पोषित करने के गुण होते हैं। ब्रह्मांड की यह विद्युत शक्ति करंट रूप में ही हर प्रकार के त्याग को धारण करती है और उन्हें स्वीकार करती है। यह हमें हर प्रकार के पदार्थ उपलब्ध कराती है। ब्रह्मांड की यह विद्युत शक्ति सोम अर्थात् वनस्पतियों के रस तथा सभी पदार्थों की शक्तियों को पी जाती है और इस प्रकार वह उत्तम पदार्थों की धारक बन जाती है।

आध्यात्मिक अर्थ - नेष्टः का अर्थ महान् बुद्धिमत्ता भी होता है। ऐसे विद्वान् लोग ही त्याग का सम्मान करते हैं, स्वीकार करते हैं और स्वयं धारण करते हैं। ऐसे लोग हमें अपने विषय का लाभदायक ज्ञान तथा विशेषज्ञतः प्रदान करते हैं। वे सोम अर्थात् ज्ञान शुभ गुण तथा श्रेष्ठताओं का नियमित और उचित प्रकार से पान करते हैं। इसलिए वे उच्च सम्पन्नता के समान हमारे लिए उत्तम ज्ञान धारण करते हैं। ऐसे महान् विद्वानों की तुलना आध्यात्मिक विद्युत शक्ति से की जाती है, जो हमारे अन्दर आध्यात्मिकता को सक्रिय करने में सक्षम होती है।

जीवन में सार्थकता

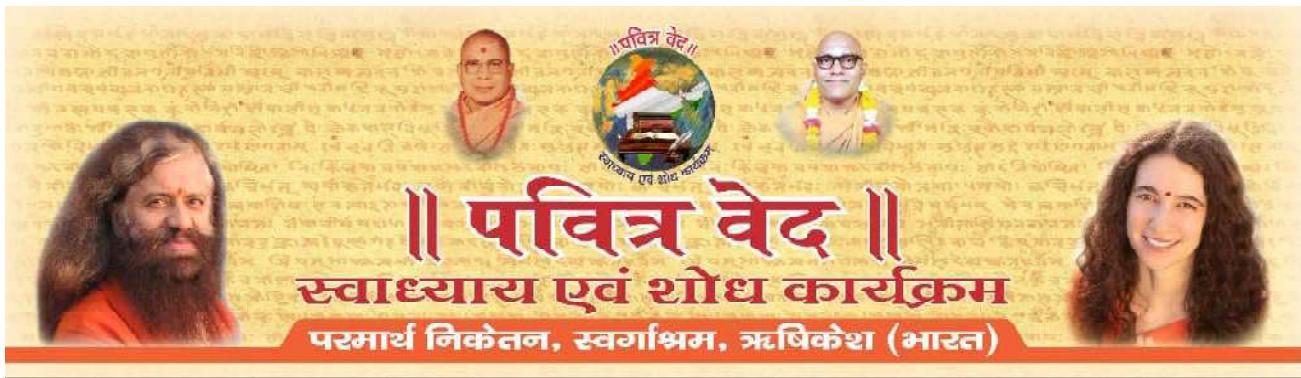
महान् विद्वानों की तुलना विद्युत करंट से क्यों की जाती है?

भौतिक रूप में विद्युत करंट हमारे सब सुविधाओं का मूल है, हमारे त्याग को स्वीकार करता है और हमें उत्तम पदार्थ प्रदान करता है।

आध्यात्मिक रूप से महान् विद्वत्ता हमारी समस्त मानसिक गतिविधियों का मूल विद्युत करंट है। ऐसे विद्वान् ही ज्ञान, श्रेष्ठ गुणों आदि का सोमपान करते हैं, अतः वे विश्वसनीय होते हैं और हमारे जीवन पथ को सुविधाजनक रूप से प्रगतिशील बनाने में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। उनके केवल दर्शनमात्र से, स्पर्श से या उनकी विद्वत्ता के विचार मात्र से हमारे अन्दर भी विद्युत करंट की तरंगें पैदा हो जाती हैं।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.3

अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्नावो नेष्टुः पिब॑ ऋतुना॑।
त्वं हि रल्धा असि॑।

(अभि) लक्ष्य करके, समस्त दिशाओं से (यज्ञम्) त्याग (गृणीहि) स्वीकार करना (नः) हमारे (ग्नावः) सभी पदार्थों को देने योग्य (नेष्टः) विद्युत (अग्नि की अत्यंत सूक्ष्म अवस्था), महान् बुद्धि अर्थात् ज्ञान की अग्नि धारण करने वाली (पिब) पीना (ऋतुना) ऋतुओं के अनुसार, उचित प्रकार से (त्वम्) आप (हि) निश्चय से (रल्धा) उत्तम पदार्थों के धारक (असि) हो व्याख्या

विद्युत करेंट का मूल विज्ञान क्या है?

विद्युत किस प्रकार हमें सुविधा सम्पन्न करती है?

वैज्ञानिक अर्थ - इस मन्त्र का केन्द्रीय विचार नेष्टः है अर्थात् विद्युत, अग्नि का उत्तम रूप जो व्यापक है और सभी कणों को धारण करता है तथा उन्हें प्रथक-प्रथक कर देता है। अग्नि की उत्पत्ति विद्युत करंट के सूक्ष्म रूप से होती है और वापिस उसी में मिल जाती है। विद्युत शक्ति में शुद्धि करने तथा पोषित करने के गुण होते हैं। ब्रह्मांड की यह विद्युत शक्ति करंट रूप में ही हर प्रकार के त्याग को धारण करती है और उन्हें स्वीकार करती है। यह हमें हर प्रकार के पदार्थ उपलब्ध कराती है। ब्रह्मांड की यह विद्युत शक्ति सोम अर्थात् वनस्पतियों के रस तथा सभी पदार्थों की शक्तियों को पी जाती है और इस प्रकार वह उत्तम पदार्थों की धारक बन जाती है।

आध्यात्मिक अर्थ - नेष्टः का अर्थ महान् बुद्धिमत्ता भी होता है। ऐसे विद्वान् लोग ही त्याग का सम्मान करते हैं, स्वीकार करते हैं और स्वयं धारण करते हैं। ऐसे लोग हमें अपने विषय का लाभदायक ज्ञान तथा विशेषज्ञतः प्रदान करते हैं। वे सोम अर्थात् ज्ञान शुभ गुण तथा श्रेष्ठताओं का नियमित और उचित प्रकार से पान करते हैं। इसलिए वे उच्च सम्पन्नता के समान हमारे लिए उत्तम ज्ञान धारण करते हैं। ऐसे महान् विद्वानों की तुलना आध्यात्मिक विद्युत शक्ति से की जाती है, जो हमारे अन्दर आध्यात्मिकता को सक्रिय करने में सक्षम होती है।

जीवन में सार्थकता

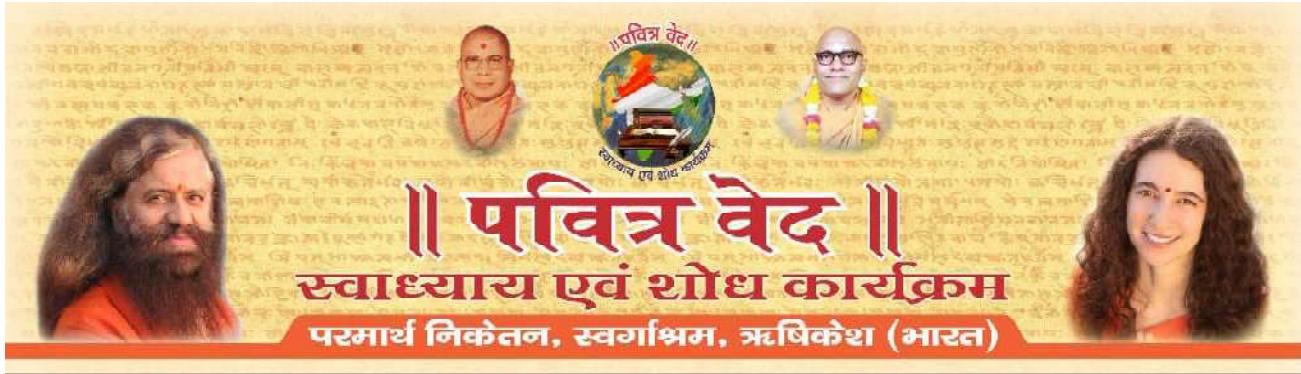
महान् विद्वानों की तुलना विद्युत करंट से क्यों की जाती है?

भौतिक रूप में विद्युत करंट हमारे सब सुविधाओं का मूल है, हमारे त्याग को स्वीकार करता है और हमें उत्तम पदार्थ प्रदान करता है।

आध्यात्मिक रूप से महान् विद्वत्ता हमारी समस्त मानसिक गतिविधियों का मूल विद्युत करंट है। ऐसे विद्वान् ही ज्ञान, श्रेष्ठ गुणों आदि का सोमपान करते हैं, अतः वे विश्वसनीय होते हैं और हमारे जीवन पथ को सुविधाजनक रूप से प्रगतिशील बनाने में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। उनके केवल दर्शनमात्र से, स्पर्श से या उनकी विद्वत्ता के विचार मात्र से हमारे अन्दर भी विद्युत करंट की तरंगें पैदा हो जाती हैं।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.4

अग्ने देवां इहावहं सुदया योनिषु त्रिषु ।
परि भूषु पिबं ऋतुना ।

(अग्ने) अग्नि अर्थात् जलती हुई अग्नि या ज्ञान की अग्नि या ईश्वर प्रेम की अग्नि (देवान्) दिव्यतायें (इह) यहाँ, इस जीवन में (आवह) उपलब्ध करायें (सादया) स्थापित (योनिषु) स्थानों पर (त्रिषु) तीन (परि भूष) हर तरफ से अलंकृत (पिब) पीना (ऋतुना) ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से

व्याख्या :-

अग्नि क्या है और यह हमारे जीवन को किस प्रकार से अलंकृत करती है?

प्रज्जवलित अग्नि दिव्यताओं का पान करती है, आहुतियों को स्वीकार करती है जिससे उन्हें दिव्य पदार्थों में परिवर्तित करके तीनों स्थानों पर उपलब्ध करा सके - ऊपर, नीचे और मध्य में। इस प्रकार अग्नि हर तरफ से सबके जीवन को अलंकृत करती है।

आध्यात्मिक रूप से महान् ज्ञान तथा परमात्मा के लिए प्रेम की अग्नि सोम अर्थात् श्रेष्ठताओं और शुभ गुणों का पान करती है, जिससे हमारे तीनों स्थानों को दिव्य बना सके - हमारी इन्द्रियां हमारा मन और हमारी बुद्धि। यही अग्नि आध्यात्मिक प्रगति के साथ हमारे जीवन को अलंकृत करती है। ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ क्रमशः ज्ञान-यज्ञ तथा कर्म-यज्ञ का सम्पादन करती हैं। मन, भक्ति-यज्ञ का सम्पादन करता है। बुद्धि परमात्मा की अनुभूति में सहायता करती है।

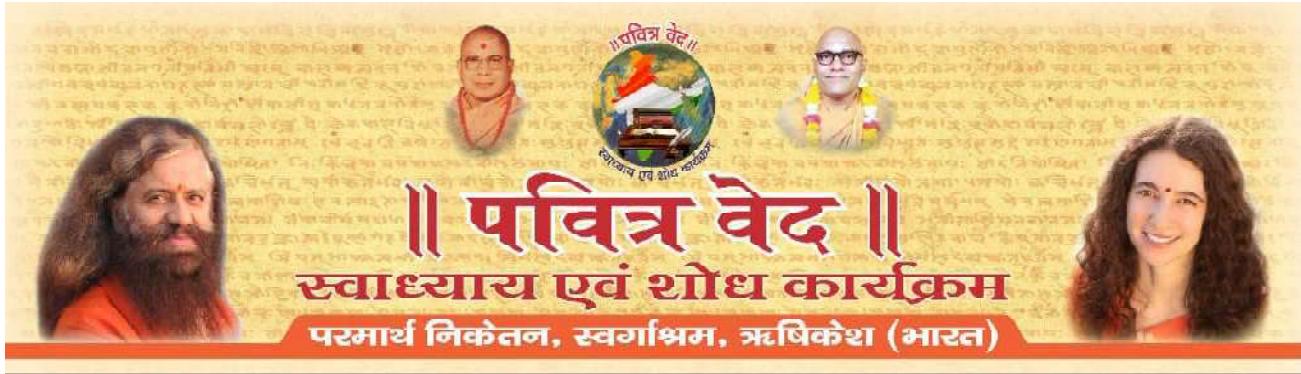
जीवन में सार्थकता

हमारी आन्तरिक अग्नि के द्वारा क्या कार्य किये जाते हैं?

अग्नि का सर्वोत्तम कार्य हमारी आहुतियों और हमारे त्याग को स्वीकार करना है। यही हमारे जीवन को अलंकृत करती हैं। हमारी आन्तरिक अर्थात् आध्यात्मिक अग्नि में हमें ज्ञान-यज्ञ, कर्म-यज्ञ तथा भक्ति-यज्ञ करना चाहिए, जिससे हम इन तीनों यज्ञों के फल से अपनी अन्तरात्मा को अलंकृत कर सकें।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.4

अग्ने देवां इहावहं सुदया योनिषु त्रिषु ।
परि भूषु पिबं ऋतुना ।

(अग्ने) अग्नि अर्थात् जलती हुई अग्नि या ज्ञान की अग्नि या ईश्वर प्रेम की अग्नि (देवान्) दिव्यतायें (इह) यहाँ, इस जीवन में (आवह) उपलब्ध करायें (सादया) स्थापित (योनिषु) स्थानों पर (त्रिषु) तीन (परि भूष) हर तरफ से अलंकृत (पिब) पीना (ऋतुना) ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से

व्याख्या :-

अग्नि क्या है और यह हमारे जीवन को किस प्रकार से अलंकृत करती है?

प्रज्जवलित अग्नि दिव्यताओं का पान करती है, आहुतियों को स्वीकार करती है जिससे उन्हें दिव्य पदार्थों में परिवर्तित करके तीनों स्थानों पर उपलब्ध करा सके - ऊपर, नीचे और मध्य में। इस प्रकार अग्नि हर तरफ से सबके जीवन को अलंकृत करती है।

आध्यात्मिक रूप से महान् ज्ञान तथा परमात्मा के लिए प्रेम की अग्नि सोम अर्थात् श्रेष्ठताओं और शुभ गुणों का पान करती है, जिससे हमारे तीनों स्थानों को दिव्य बना सके - हमारी इन्द्रियां हमारा मन और हमारी बुद्धि। यही अग्नि आध्यात्मिक प्रगति के साथ हमारे जीवन को अलंकृत करती है। ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ क्रमशः ज्ञान-यज्ञ तथा कर्म-यज्ञ का सम्पादन करती हैं। मन, भक्ति-यज्ञ का सम्पादन करता है। बुद्धि परमात्मा की अनुभूति में सहायता करती है।

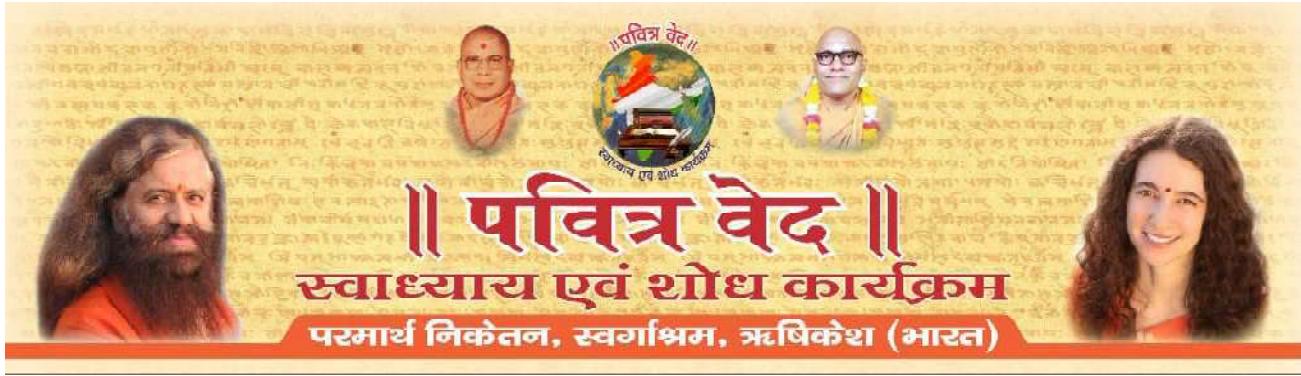
जीवन में सार्थकता

हमारी आन्तरिक अग्नि के द्वारा क्या कार्य किये जाते हैं?

अग्नि का सर्वोत्तम कार्य हमारी आहुतियों और हमारे त्याग को स्वीकार करना है। यही हमारे जीवन को अलंकृत करती हैं। हमारी आन्तरिक अर्थात् आध्यात्मिक अग्नि में हमें ज्ञान-यज्ञ, कर्म-यज्ञ तथा भक्ति-यज्ञ करना चाहिए, जिससे हम इन तीनों यज्ञों के फल से अपनी अन्तरात्मा को अलंकृत कर सकें।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.5

ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूर्नु ।
तवेष्टि सुख्यमस्तृतम् ।

(ब्राह्मणात्) सबसे बृहद के लिए, ब्रह्म से सम्बन्धित (इन्द्र) वायु, इन्द्रियों का नियन्त्रणकर्ता (राधसः) सम्पत्तियाँ (पिब) पान (सोमम्) दिव्यता का सार (ऋतू अनु) ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से (तव) तेरा (इत) है (हि) निश्चित रूप से (सुख्यम्) मित्र, ब्रह्म (अस्तृतम्) अन्तहीन, अविच्छिन्न

व्याख्या :-

सबसे बड़ी सम्पत्ति कौन सी है?

भौतिकवादी दृष्टिकोण - यहाँ इन्द्र का अभिप्राय वायु से है जो सबसे बड़ी सम्पत्ति है, जो ऋतु अनुसार समस्त पदार्थों के सार तत्व को स्वीकार करती है। वायु ही हमारा अन्तहीन तथा अविच्छिन्न मित्र है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण - इन्द्र से अभिप्राय जीव से है जो इन्द्रियों का नियन्त्रणकर्ता है तथा जिसके लिए ब्रह्म अर्थात् परमात्मा ही सबसे बड़ी सम्पत्ति है। हमें, इन्द्र के रूप में, उचित प्रकार से सोम अर्थात् दिव्यताओं का पान करना चाहिए। सोम का अर्थ है महान् ज्ञान, दिव्यतायें तथा श्रेष्ठ गुण आदि जो सबके लिए शान्तिदायक होते हैं। ब्रह्म रूपी यही सम्पत्ति हमारे लिए अन्तहीन तथा अविच्छिन्न मित्र है। इसके अतिरिक्त सभी मित्र कम या अधिक समय के बाद, एक अवस्था में या दूसरी अवस्था में विच्छिन्न होने योग्य हैं।

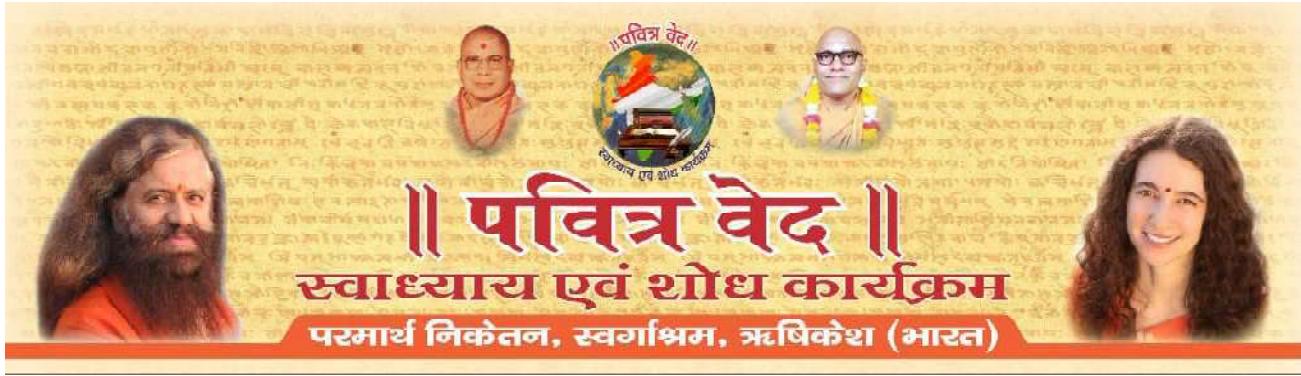
जीवन में सार्थकता

हमारे सम्बन्ध किस प्रकार अविच्छिन्न हो सकते हैं?

हमारे जीवन में सबसे बड़ी सम्पत्ति ब्रह्म के साथ हमारी सहचरता है। यह मित्रता हमारी अनुभूति में तभी अविच्छिन्न होगी, यदि हम नियमित तथा उचित रूप से सोम का पान करें। इस मानसिकता के साथ तथा इस मित्रता का विधिवत अनुभव करते हुए कि यही हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति है, अब इस सिद्धान्त को घर के भीतर या बाहर अपने सभी सांसारिक सम्बन्धों पर लागू कर सकते हैं। हम सभी सम्बन्धों को अविच्छिन्न बना सकते हैं, यदि हम इन सबमें श्रेष्ठता, शुभ गुणों, ईमानदारी और अन्तरंगता का पालन करें। अनैतिक, दुराचारी या स्वार्थी सम्बन्ध लम्बी अवधि तक नहीं चलते और न ही उन्हें अपनी सम्पत्ति समझा जा सकता है क्योंकि वे एक बोझ के समान होते हैं।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.5

ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूर्नु ।
तवेष्टि सुख्यमस्तृतम् ।

(ब्राह्मणात्) सबसे बृहद के लिए, ब्रह्म से सम्बन्धित (इन्द्र) वायु, इन्द्रियों का नियन्त्रणकर्ता (राधसः) सम्पत्तियाँ (पिब) पान (सोमम्) दिव्यता का सार (ऋतू अनु) ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से (तव) तेरा (इत) है (हि) निश्चित रूप से (सुख्यम्) मित्र, ब्रह्म (अस्तृतम्) अन्तहीन, अविच्छिन्न

व्याख्या :-

सबसे बड़ी सम्पत्ति कौन सी है?

भौतिकवादी दृष्टिकोण - यहाँ इन्द्र का अभिप्राय वायु से है जो सबसे बड़ी सम्पत्ति है, जो ऋतु अनुसार समस्त पदार्थों के सार तत्व को स्वीकार करती है। वायु ही हमारा अन्तहीन तथा अविच्छिन्न मित्र है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण - इन्द्र से अभिप्राय जीव से है जो इन्द्रियों का नियन्त्रणकर्ता है तथा जिसके लिए ब्रह्म अर्थात् परमात्मा ही सबसे बड़ी सम्पत्ति है। हमें, इन्द्र के रूप में, उचित प्रकार से सोम अर्थात् दिव्यताओं का पान करना चाहिए। सोम का अर्थ है महान् ज्ञान, दिव्यतायें तथा श्रेष्ठ गुण आदि जो सबके लिए शान्तिदायक होते हैं। ब्रह्म रूपी यही सम्पत्ति हमारे लिए अन्तहीन तथा अविच्छिन्न मित्र है। इसके अतिरिक्त सभी मित्र कम या अधिक समय के बाद, एक अवस्था में या दूसरी अवस्था में विच्छिन्न होने योग्य हैं।

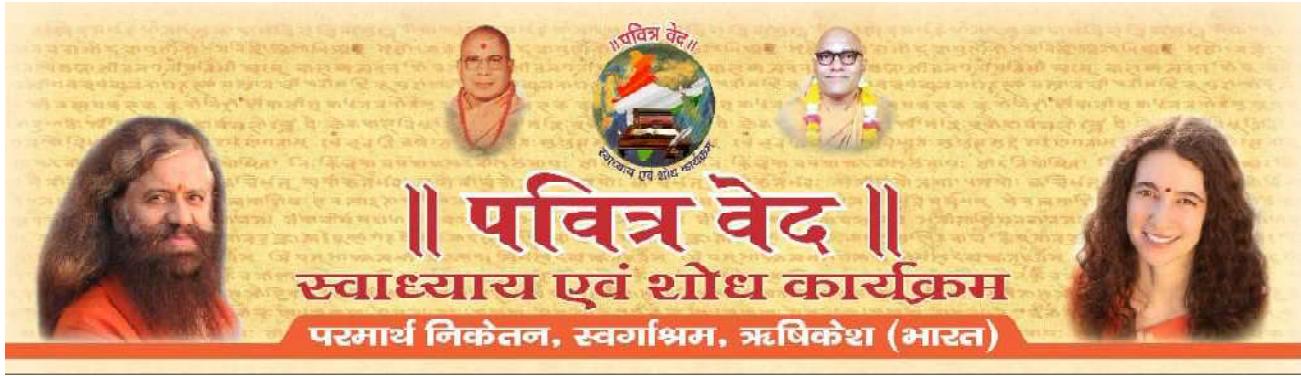
जीवन में सार्थकता

हमारे सम्बन्ध किस प्रकार अविच्छिन्न हो सकते हैं?

हमारे जीवन में सबसे बड़ी सम्पत्ति ब्रह्म के साथ हमारी सहचरता है। यह मित्रता हमारी अनुभूति में तभी अविच्छिन्न होगी, यदि हम नियमित तथा उचित रूप से सोम का पान करें। इस मानसिकता के साथ तथा इस मित्रता का विधिवत अनुभव करते हुए कि यही हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति है, अब इस सिद्धान्त को घर के भीतर या बाहर अपने सभी सांसारिक सम्बन्धों पर लागू कर सकते हैं। हम सभी सम्बन्धों को अविच्छिन्न बना सकते हैं, यदि हम इन सबमें श्रेष्ठता, शुभ गुणों, ईमानदारी और अन्तरंगता का पालन करें। अनैतिक, दुराचारी या स्वार्थी सम्बन्ध लम्बी अवधि तक नहीं चलते और न ही उन्हें अपनी सम्पत्ति समझा जा सकता है क्योंकि वे एक बोझ के समान होते हैं।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.6

युवं दक्षं धृतव्रतु मित्रावरुण दूलभम् ।
ऋतुना यज्ञमांशाथे ।

(युवम्) तुम दोनों (दक्षम्) बल देने वाले (धृतव्रता) पवित्रता का संकल्प (मित्रा वरुणा) सूर्य एवं वायु, प्राण एवं अपान, प्रेम तथा कल्याण, अश्विन का जोड़ा (दूलभम्) अहिंसक (ऋतुना) ऋतुओं के साथ (यज्ञम्) त्याग (आशाथे) व्याप्त

व्याख्या :-

कल्याणकारी कार्यों के लिए कौन से कारक हमें बल प्रदान करते हैं?

वैज्ञानिक दृष्टिकोण - सूर्य तथा वायु दो ऐसे सहचर हैं जिनके पास सबको बल देने की शक्ति है, जिससे वे अपनी पवित्रता तथा अहिंसा के संकल्प के साथ प्रदान करते हैं। वे हम सबके कल्याण के लिए तथा आवश्यकतानुसार अनेकों कार्य करते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण - हमारे प्राण तथा अपान, प्रेम तथा कल्याण के लक्षण संयुक्त रूप से पवित्रता तथा बल प्रदान करते हैं जिनसे हमारे जीवन में आवश्यकतानुसार अनेकों कल्याणकारी कार्य सम्पन्न होते हैं।

जीवन में सार्थकता

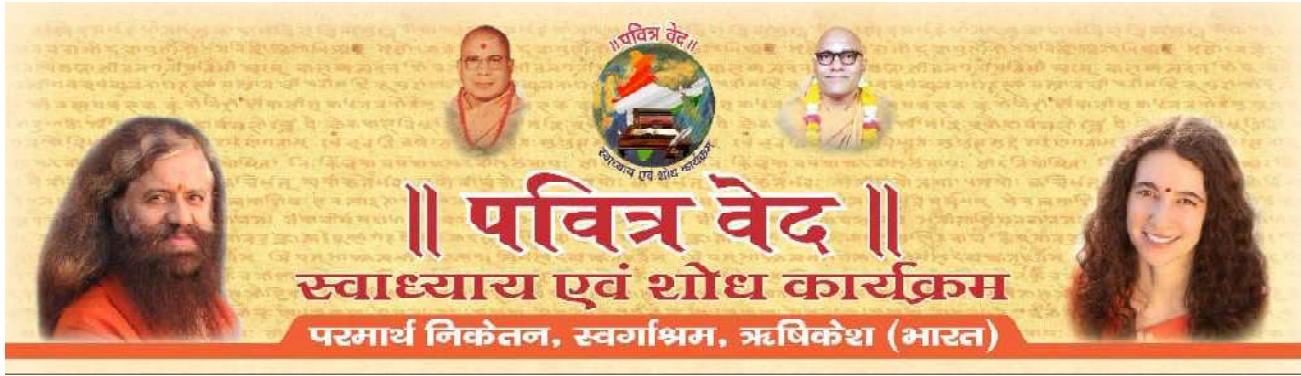
पवित्रता और समन्वय का मूल सिद्धान्त क्या है?

हमारे क्रियात्मक जीवन में मित्र तथा वरुण किसी भी जोड़े को कहा जा सकता है, जैसे शरीर और मन, दायाँ और बायाँ मस्तिष्क, दो भाई, बहिनें, पति तथा पत्नी या कोई भी सम्बन्धी। हमें दूसरों के कल्याण के लिए पवित्रता, निःस्वार्थ भावना तथा त्याग भाव से दोनों की शक्तियों का सर्वोत्तम प्रयोग करना चाहिए। तभी हम अपने जीवन में एक महान् बल की उत्पत्ति कर पायेंगे, जिससे त्याग के अनेकों श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न हो सकें।

भौतिकवाद का एक मूल सिद्धान्त मानव के बलशाली होने में भी लागू होता है। दो किनारों के बीच पवित्रता तथा समन्वय एक ऐसा मूल नियम है, जिससे करंट, बल आदि की उत्पत्ति होती है, जिसका प्रयोग त्याग तथा कल्याणकारी कार्यों के लिए किया जा सकता है।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.6

युवं दक्षं धृतव्रतु मित्रावरुण दूलभम् ।
ऋतुना यज्ञमांशाथे ।

(युवम्) तुम दोनों (दक्षम्) बल देने वाले (धृतव्रता) पवित्रता का संकल्प (मित्रा वरुणा) सूर्य एवं वायु, प्राण एवं अपान, प्रेम तथा कल्याण, अश्विन का जोड़ा (दूलभम्) अहिंसक (ऋतुना) ऋतुओं के साथ (यज्ञम्) त्याग (आशाथे) व्याप्त

व्याख्या :-

कल्याणकारी कार्यों के लिए कौन से कारक हमें बल प्रदान करते हैं?

वैज्ञानिक दृष्टिकोण - सूर्य तथा वायु दो ऐसे सहचर हैं जिनके पास सबको बल देने की शक्ति है, जिससे वे अपनी पवित्रता तथा अहिंसा के संकल्प के साथ प्रदान करते हैं। वे हम सबके कल्याण के लिए तथा आवश्यकतानुसार अनेकों कार्य करते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण - हमारे प्राण तथा अपान, प्रेम तथा कल्याण के लक्षण संयुक्त रूप से पवित्रता तथा बल प्रदान करते हैं जिनसे हमारे जीवन में आवश्यकतानुसार अनेकों कल्याणकारी कार्य सम्पन्न होते हैं।

जीवन में सार्थकता

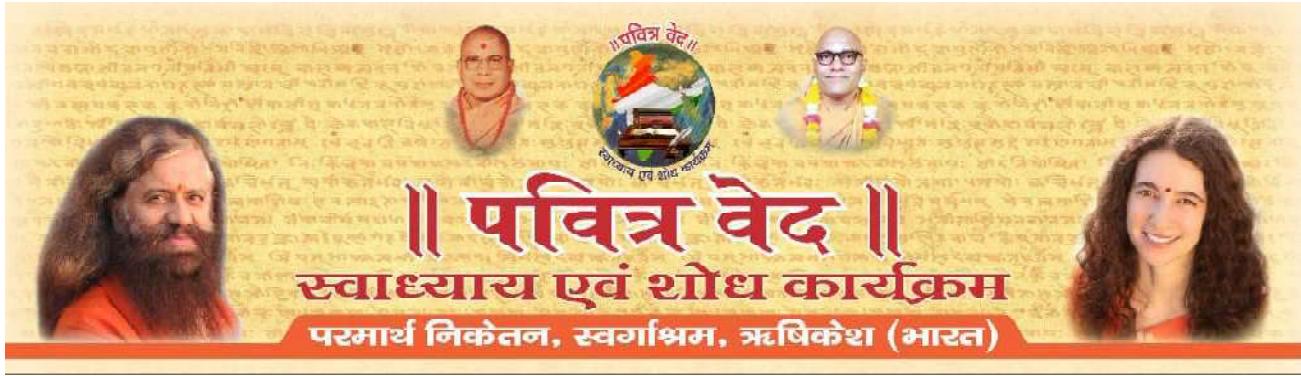
पवित्रता और समन्वय का मूल सिद्धान्त क्या है?

हमारे क्रियात्मक जीवन में मित्र तथा वरुण किसी भी जोड़े को कहा जा सकता है, जैसे शरीर और मन, दायाँ और बायाँ मस्तिष्क, दो भाई, बहिनें, पति तथा पत्नी या कोई भी सम्बन्धी। हमें दूसरों के कल्याण के लिए पवित्रता, निःस्वार्थ भावना तथा त्याग भाव से दोनों की शक्तियों का सर्वोत्तम प्रयोग करना चाहिए। तभी हम अपने जीवन में एक महान् बल की उत्पत्ति कर पायेंगे, जिससे त्याग के अनेकों श्रेष्ठ कार्य सम्पन्न हो सकें।

भौतिकवाद का एक मूल सिद्धान्त मानव के बलशाली होने में भी लागू होता है। दो किनारों के बीच पवित्रता तथा समन्वय एक ऐसा मूल नियम है, जिससे करंट, बल आदि की उत्पत्ति होती है, जिसका प्रयोग त्याग तथा कल्याणकारी कार्यों के लिए किया जा सकता है।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.7

द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अध्वरे ।
यज्ञेषु देवर्मीङ्गते ।

(द्रविणोदा:) धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों का फल देने वाला (द्रविणस:) धन और बल का इच्छुक, कर्मों का इच्छुक (ग्रावहस्तास:) अपने हाथ में पूजा की शक्ति लिये (त्याग के द्वारा) (अद्वरे) अहिंसक (यज्ञेषु) त्याग के द्वारा (देवम्) परमात्मा, सर्वोच्च दिव्य शक्ति (ईङ्गते) पूजन

व्याख्या :-

‘अपने हाथों पर परमात्मा की पूजा’ से क्या अभिप्राय है?

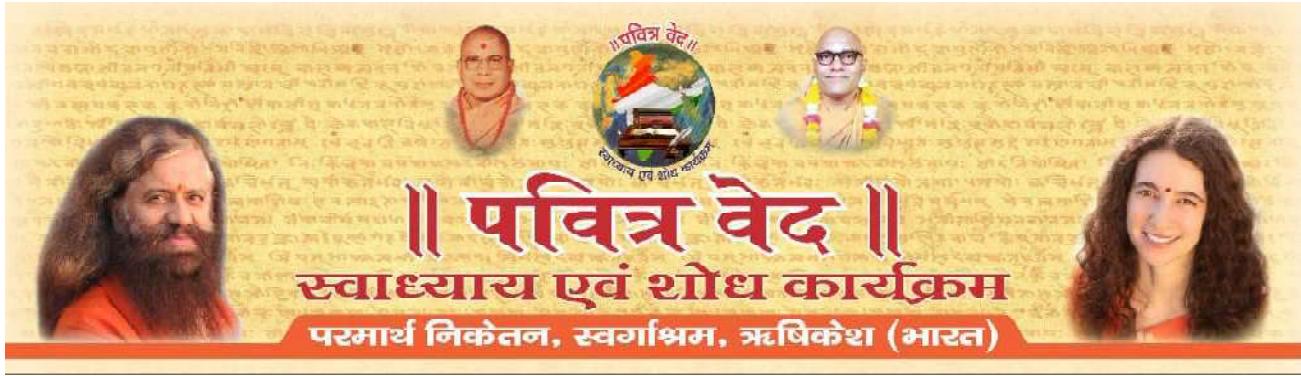
जो लोग परमात्मा के नाम पर त्याग कर्म करते हैं, परमात्मा के लिए परमात्मा से धन और बल माँगते हैं, ऐसे लोग अपने हाथों पर परमात्मा की पूजा करते हैं।

जिस व्यक्ति ने अपने जीवन को त्याग की प्रतिमूर्ति बना लिया हो, ऐसा व्यक्ति यदि धन और बल की इच्छा करता है तो वह भी त्याग के लिए ही होगी। परमात्मा की पूजा त्याग के द्वारा ही होती है। इसलिए ऐसे व्यक्तियों के द्वारा धन और बल की इच्छा भी परमात्मा की इच्छा के समान है।

परमात्मा हमारे कर्मों के फल देने वाले हैं। इसलिए हमारे कर्म इतने शुद्ध और त्यागमयी होने चाहिए, जिन्हें परमात्मा सरलतापूर्वक स्वीकार कर लें। हमें सभी कर्म परमात्मा की पूजा की तरह ही करने चाहिए। इस प्रकार हम परमात्मा का पूजन बड़े गौरवशाली तरीके से अपने हाथों पर ही कर पायेंगे और गर्व से उनके फलों की कामना करेंगे जो परमात्मा के प्रेम के रूप में हमें प्राप्त होंगे।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.7

द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अध्वरे ।
यज्ञेषु देवर्मीङ्गते ।

(द्रविणोदा:) धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों का फल देने वाला (द्रविणस:) धन और बल का इच्छुक, कर्मों का इच्छुक (ग्रावहस्तास:) अपने हाथ में पूजा की शक्ति लिये (त्याग के द्वारा) (अद्वरे) अहिंसक (यज्ञेषु) त्याग के द्वारा (देवम्) परमात्मा, सर्वोच्च दिव्य शक्ति (ईङ्गते) पूजन

व्याख्या :-

‘अपने हाथों पर परमात्मा की पूजा’ से क्या अभिप्राय है?

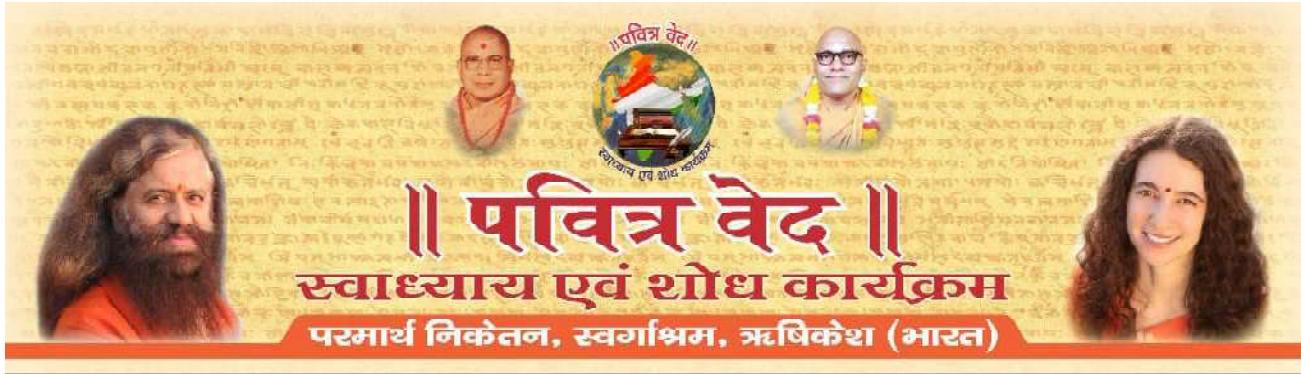
जो लोग परमात्मा के नाम पर त्याग कर्म करते हैं, परमात्मा के लिए परमात्मा से धन और बल माँगते हैं, ऐसे लोग अपने हाथों पर परमात्मा की पूजा करते हैं।

जिस व्यक्ति ने अपने जीवन को त्याग की प्रतिमूर्ति बना लिया हो, ऐसा व्यक्ति यदि धन और बल की इच्छा करता है तो वह भी त्याग के लिए ही होगी। परमात्मा की पूजा त्याग के द्वारा ही होती है। इसलिए ऐसे व्यक्तियों के द्वारा धन और बल की इच्छा भी परमात्मा की इच्छा के समान है।

परमात्मा हमारे कर्मों के फल देने वाले हैं। इसलिए हमारे कर्म इतने शुद्ध और त्यागमयी होने चाहिए, जिन्हें परमात्मा सरलतापूर्वक स्वीकार कर लें। हमें सभी कर्म परमात्मा की पूजा की तरह ही करने चाहिए। इस प्रकार हम परमात्मा का पूजन बड़े गौरवशाली तरीके से अपने हाथों पर ही कर पायेंगे और गर्व से उनके फलों की कामना करेंगे जो परमात्मा के प्रेम के रूप में हमें प्राप्त होंगे।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.8

द्रविणोदा ददातु नो वसूनि यानि शृण्वरे ।
द्वेषु ता वनामहे ।

(द्रविणोदाः) धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों का फल देने वाला (ददातु) दे (नः) हमें (वसूनि) वह धन और बल (यानि) जो कि (शृण्वरे) सुना जाये (द्वेषु) दिव्य उद्देश्यों के लिए (ता) उन्हें (धन और बल) (वनामहे) हम स्वीकार और सेवन करते हैं

व्याख्या :-

हमारे कार्य और उनके फल कब सबके द्वारा सुने जाते हैं?

इस मन्त्र में धन और बल के दाता से यह प्रार्थना की गयी है कि हमें केवल वही धन और बल दे जो सबके द्वारा सुने जाने योग्य हो। इसमें यह प्रतिज्ञा की गयी है कि हम उस धन और बल को केवल दिव्य उद्देश्यों के लिए ही स्वीकार करेंगे तथा सेवन करेंगे।

इसका अभिप्राय यह है कि जब धन और बल का प्रयोग दिव्य उद्देश्यों के लिए किया जाता है, त्याग और कल्याण के लिए ही किया जाता है, ऐसा धन और बल सबके द्वारा सुना जाता है। ऐसे धन और बल का परिणाम इसके धारक और प्रयोग करने वाले के लिए एक महान् और सम्मानजनक प्रसिद्धि के रूप में प्राप्त होता है।

यदि हमारे कर्म शुद्ध और त्यागपूर्ण हैं तो निश्चित रूप से वे सबके द्वारा सुने जाते हैं और ऐसे कर्मों के परिणाम भी सबके द्वारा सुने जाते हैं।

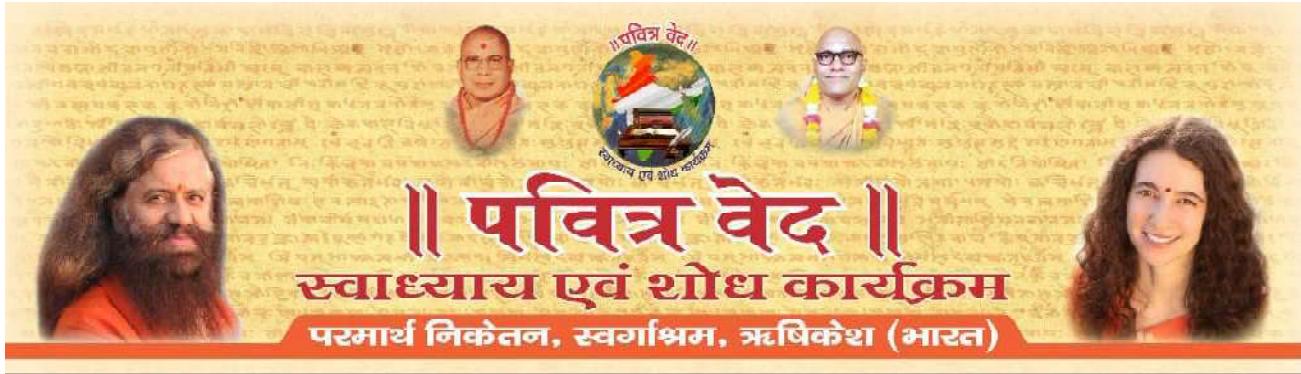
जीवन में सार्थकता

धन और बल का प्रयोग कैसे करें?

यह मन्त्र सभी धन-सम्पन्न, सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ताओं के लिए एक महान् निर्देश है, जिससे वे उस धन और बल का प्रयोग केवल दिव्य उद्देश्यों के लिए ही करें जैसे त्याग, कल्याण आदि। ऐसे दिव्य कार्यों से महान् प्रसिद्धि प्राप्त होती है क्योंकि दिव्य कार्य ही सुनने के योग्य होते हैं। ऐसे दिव्य कार्य स्वयं ही बोलते हैं।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.8

द्रविणोदा ददातु नो वसूनि यानि शृण्वरे ।
द्वेषु ता वनामहे ।

(द्रविणोदाः) धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों का फल देने वाला (ददातु) दे (नः) हमें (वसूनि) वह धन और बल (यानि) जो कि (शृण्वरे) सुना जाये (द्वेषु) दिव्य उद्देश्यों के लिए (ता) उन्हें (धन और बल) (वनामहे) हम स्वीकार और सेवन करते हैं

व्याख्या :-

हमारे कार्य और उनके फल कब सबके द्वारा सुने जाते हैं?

इस मन्त्र में धन और बल के दाता से यह प्रार्थना की गयी है कि हमें केवल वही धन और बल दे जो सबके द्वारा सुने जाने योग्य हो। इसमें यह प्रतिज्ञा की गयी है कि हम उस धन और बल को केवल दिव्य उद्देश्यों के लिए ही स्वीकार करेंगे तथा सेवन करेंगे।

इसका अभिप्राय यह है कि जब धन और बल का प्रयोग दिव्य उद्देश्यों के लिए किया जाता है, त्याग और कल्याण के लिए ही किया जाता है, ऐसा धन और बल सबके द्वारा सुना जाता है। ऐसे धन और बल का परिणाम इसके धारक और प्रयोग करने वाले के लिए एक महान् और सम्मानजनक प्रसिद्धि के रूप में प्राप्त होता है।

यदि हमारे कर्म शुद्ध और त्यागपूर्ण हैं तो निश्चित रूप से वे सबके द्वारा सुने जाते हैं और ऐसे कर्मों के परिणाम भी सबके द्वारा सुने जाते हैं।

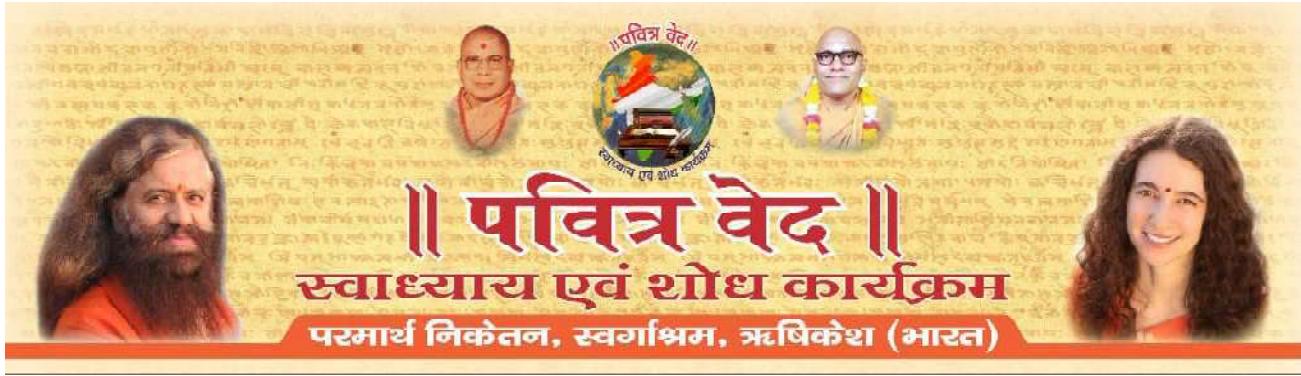
जीवन में सार्थकता

धन और बल का प्रयोग कैसे करें?

यह मन्त्र सभी धन-सम्पन्न, सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ताओं के लिए एक महान् निर्देश है, जिससे वे उस धन और बल का प्रयोग केवल दिव्य उद्देश्यों के लिए ही करें जैसे त्याग, कल्याण आदि। ऐसे दिव्य कार्यों से महान् प्रसिद्धि प्राप्त होती है क्योंकि दिव्य कार्य ही सुनने के योग्य होते हैं। ऐसे दिव्य कार्य स्वयं ही बोलते हैं।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.9

द्रविणोदाः पिपीषति जुहोतु प्र च तिष्ठत ।
नेष्टादृतुभिरिष्यत ।

(द्रविणोदाः) धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों का फल देने वाला (पिपीषति) पीता है (जुहोत) त्याग के लिए प्रयोग करना (प्र - तिष्ठत से पूर्व लगाकर) (च) और (तिष्ठत - प्र तिष्ठत) - प्रतिष्ठा को प्राप्त करो, उत्थान (नेष्टादृत्) प्रगतिशील भविष्य के लिए (ऋतुभिः) ऋतु के अनुसार, आवश्यकतानुसार (इष्टत्) कामना करो

व्याख्या :-

आध्यात्मिक पथ पर उत्थान कैसे प्राप्त करें?

यदि हम अपने धन और बल का प्रयोग केवल त्याग के लिए करें तो एक तरफ हमें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त होता है और हमें आध्यात्मिक पथ पर भी उत्थान मिलता है, दूसरी तरफ त्याग का सेवन धन और बल के दाता भगवान करते हैं अर्थात् वे उन्हें स्वीकार करते हैं। जीवन में उन्नति करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे ही धन और बल की कामना करनी चाहिए और भिन्न-भिन्न प्रकार से त्याग करने में ही उनका प्रयोग होना चाहिए। त्याग को भगवान पसन्द करते हैं और हमारी आध्यात्मिक यात्रा का उत्थान भी त्याग के माध्यम से ही होता है।

यदि हमारे कार्य पूरी तरह शुद्ध होते हैं तो भगवान उनका सेवन अर्थात् उन्हें स्वीकार करते हैं। ऐसे कार्यों का परिणाम ही मुक्ति के रूप में प्राप्त होता है अर्थात् परमात्मा की गोद में हमारा वास तथा जन्म-मृत्यु से मुक्ति

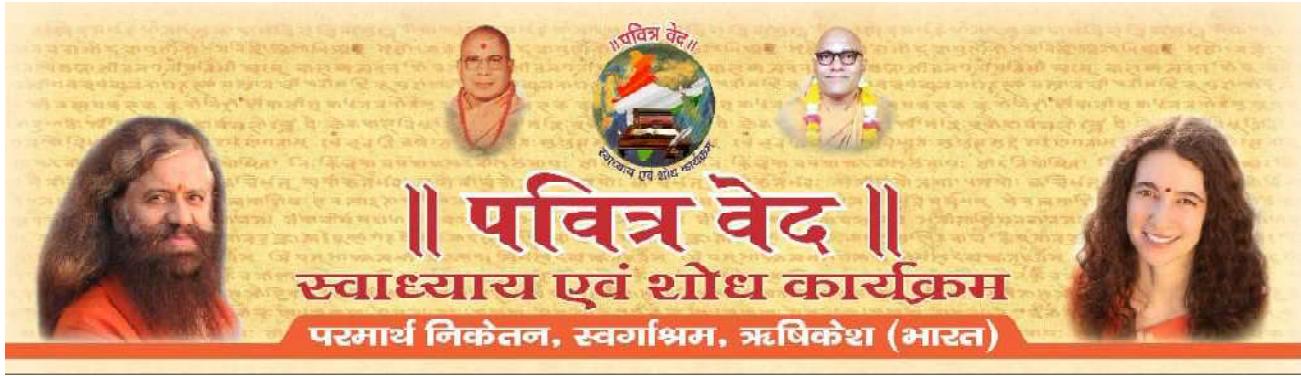
जीवन में सार्थकता

अपने से वृद्धजनों तथा अपने उच्च अधिकारियों की दृष्टि में कैसे ऊपर उठें?

अन्य लोगों के कल्याण के लिए किये गये हमारे त्याग कर्म अत्यन्त श्रेष्ठ माने जाते हैं, जिन्हें हमारे वृद्ध जन तथा उच्चाधिकारी पसन्द करते हैं। हमें उनकी दृष्टि में उत्थान प्राप्त होता है, वे हमारे कार्यों का पान करते हैं अर्थात् उन्हें स्वीकार करते हैं, उन्हें पसन्द करते हैं और उन पर गर्व करते हैं। जीवन के किसी भी क्षेत्र में हमें बिना आलस्य के और बिना समय गंवाये जब भी आवश्यक हो तुरन्त श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.9

द्रविणोदाः पिपीषति जुहोतु प्र च तिष्ठत ।
नेष्टादृतुभिरिष्यत ।

(द्रविणोदाः) धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों का फल देने वाला (पिपीषति) पीता है (जुहोत) त्याग के लिए प्रयोग करना (प्र - तिष्ठत से पूर्व लगाकर) (च) और (तिष्ठत - प्र तिष्ठत) - प्रतिष्ठा को प्राप्त करो, उत्थान (नेष्टादृत्) प्रगतिशील भविष्य के लिए (ऋतुभिः) ऋतु के अनुसार, आवश्यकतानुसार (इष्टत्) कामना करो

व्याख्या :-

आध्यात्मिक पथ पर उत्थान कैसे प्राप्त करें?

यदि हम अपने धन और बल का प्रयोग केवल त्याग के लिए करें तो एक तरफ हमें समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त होता है और हमें आध्यात्मिक पथ पर भी उत्थान मिलता है, दूसरी तरफ त्याग का सेवन धन और बल के दाता भगवान करते हैं अर्थात् वे उन्हें स्वीकार करते हैं। जीवन में उन्नति करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे ही धन और बल की कामना करनी चाहिए और भिन्न-भिन्न प्रकार से त्याग करने में ही उनका प्रयोग होना चाहिए। त्याग को भगवान पसन्द करते हैं और हमारी आध्यात्मिक यात्रा का उत्थान भी त्याग के माध्यम से ही होता है।

यदि हमारे कार्य पूरी तरह शुद्ध होते हैं तो भगवान उनका सेवन अर्थात् उन्हें स्वीकार करते हैं। ऐसे कार्यों का परिणाम ही मुक्ति के रूप में प्राप्त होता है अर्थात् परमात्मा की गोद में हमारा वास तथा जन्म-मृत्यु से मुक्ति

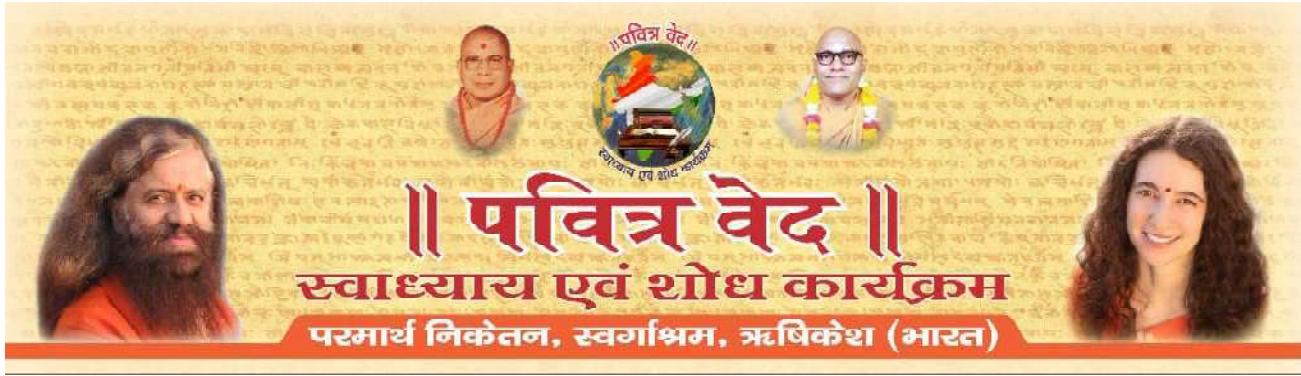
जीवन में सार्थकता

अपने से वृद्धजनों तथा अपने उच्च अधिकारियों की दृष्टि में कैसे ऊपर उठें?

अन्य लोगों के कल्याण के लिए किये गये हमारे त्याग कर्म अत्यन्त श्रेष्ठ माने जाते हैं, जिन्हें हमारे वृद्ध जन तथा उच्चाधिकारी पसन्द करते हैं। हमें उनकी दृष्टि में उत्थान प्राप्त होता है, वे हमारे कार्यों का पान करते हैं अर्थात् उन्हें स्वीकार करते हैं, उन्हें पसन्द करते हैं और उन पर गर्व करते हैं। जीवन के किसी भी क्षेत्र में हमें बिना आलस्य के और बिना समय गंवाये जब भी आवश्यक हो तुरन्त श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.10

यत्त्वा॑ तुरीय॑मृतुभिर्विणोदो॒ यजामहे ।
अथ॑ स्मा नो दुदिर्भव॑ ।

(यत्) जिस (त्वा) आपको (तुरीयम्) परमात्मा (स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के बाद की अवस्था), परमात्मा चौथी अवस्था है, जो कारण शरीरों का भी कारण है (ऋतुभिः) ऋतु के अनुसार, उचित रूप से (द्विविणोदः) धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों के फल का देने वाला (यजामह) - पूजते हैं (अथ) अब (स्मा) आपको (नः) हमारे लिए (ददिः) दाता (भव) होवो

व्याख्या :-

हम परमात्मा को कहाँ पर अनुभव और उसका पूजन कर सकते हैं?

परमात्मा हमारे शरीर में चौथी अवस्था है, उसी अवस्था में हम उसका पूजन और उसकी अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। शरीर की चार अवस्थायें इस प्रकार हैं :-

- क) स्थूल शरीर अर्थात् भौतिक शरीर
- ख) सूक्ष्म शरीर अर्थात् मानसिक शरीर
- ग) कारण शरीर अर्थात् जीवात्मा

घ) कारण शरीर का कारण अर्थात् हमारी मूल और आन्तरिक शक्ति, इस जीवन का पूर्ण और अन्तिम कारण, परमात्मा ।

इस चौथी अवस्था में परमात्मा की पूजा लगातार और उचित प्रकार से हर समय चलनी चाहिए क्योंकि वही समस्त धन और बल का देने वाला है, वही हमारे कर्मों के फल देता है। हम उसी शक्ति से प्रार्थना करते हैं कि वह अपनी कृपा और अपनी अनुभूति प्रदान करना सदैव जारी रखे ।

जीवन में सार्थकता

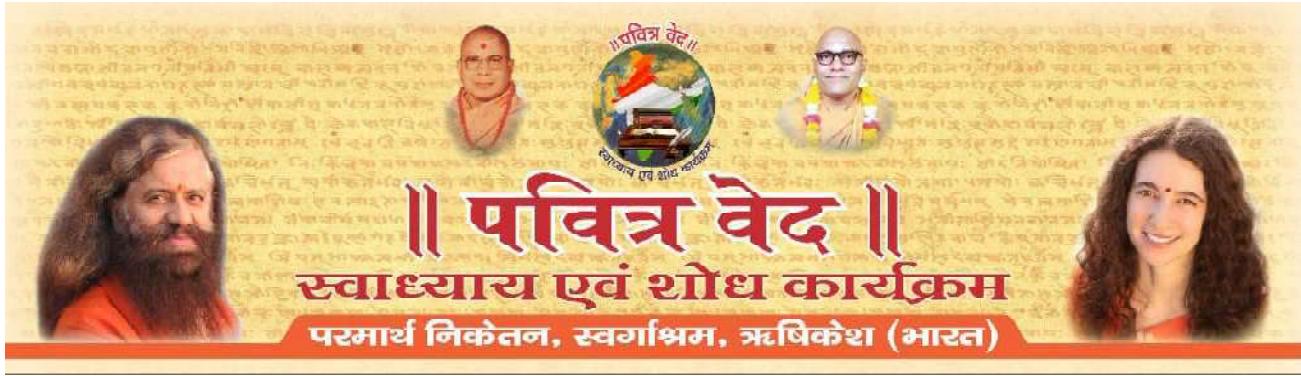
क्या परमात्मा सबके लिए एक ही सर्वोच्च शक्ति है?

जी हाँ, परमात्मा सबके लिए एक ही सर्वोच्च शक्ति है जो हमारे शरीर के भीतर और बाहर विद्यमान है। चौथी अवस्था अर्थात् तुरीयम् कारण शरीर का भी कारण है, जो हमारे शरीर के भीतर ही है और यही सबसे निकट स्थल है, जहाँ हम परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। हमें परमात्मा की पूजा भीतर ही करनी चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि परमात्मा के पास हमें सब कुछ देने की शक्ति है। यहाँ तक कि मुक्ति भी परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त होती है।

एक बार यदि हम यह विश्वास कर लें कि परमात्मा हमारे जीवन की चौथी अवस्था है अर्थात् शरीर, मन और आत्मा से परे, स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर से भी परे, तो उसकी अनुभूति के लिए हमें भी इन तीनों स्तरों से ऊपर उठकर उसी तुरीया अवस्था में पहुँचने का प्रयास करना चाहिए, जहाँ न कोई अच्छा है, न बुरा, न कुछ खोया, न पाया, न कोई अहंकार और न इच्छायें।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.10

यत्त्वा॑ तुरीय॑मृतुभिर्विणोदो॒ यजामहे ।
अथ॑ स्मा नो दुदिर्भव॑ ।

(यत्) जिस (त्वा) आपको (तुरीयम्) परमात्मा (स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के बाद की अवस्था), परमात्मा चौथी अवस्था है, जो कारण शरीरों का भी कारण है (ऋतुभिः) ऋतु के अनुसार, उचित रूप से (द्विविणोदः) धन और बल का देने वाला, हमारे कर्मों के फल का देने वाला (यजामह) - पूजते हैं (अथ) अब (स्मा) आपको (नः) हमारे लिए (ददिः) दाता (भव) होवो

व्याख्या :-

हम परमात्मा को कहाँ पर अनुभव और उसका पूजन कर सकते हैं?

परमात्मा हमारे शरीर में चौथी अवस्था है, उसी अवस्था में हम उसका पूजन और उसकी अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। शरीर की चार अवस्थायें इस प्रकार हैं :-

- क) स्थूल शरीर अर्थात् भौतिक शरीर
- ख) सूक्ष्म शरीर अर्थात् मानसिक शरीर
- ग) कारण शरीर अर्थात् जीवात्मा

घ) कारण शरीर का कारण अर्थात् हमारी मूल और आन्तरिक शक्ति, इस जीवन का पूर्ण और अन्तिम कारण, परमात्मा ।

इस चौथी अवस्था में परमात्मा की पूजा लगातार और उचित प्रकार से हर समय चलनी चाहिए क्योंकि वही समस्त धन और बल का देने वाला है, वही हमारे कर्मों के फल देता है। हम उसी शक्ति से प्रार्थना करते हैं कि वह अपनी कृपा और अपनी अनुभूति प्रदान करना सदैव जारी रखे ।

जीवन में सार्थकता

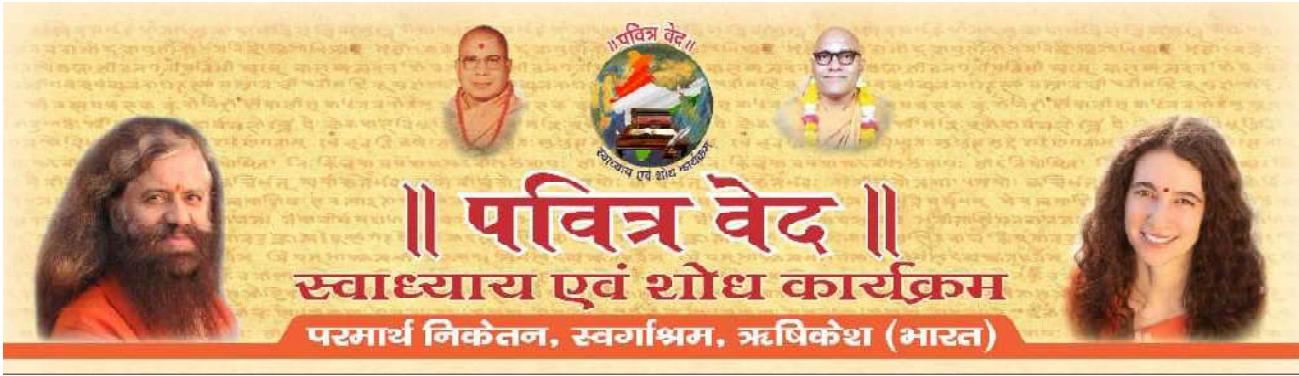
क्या परमात्मा सबके लिए एक ही सर्वोच्च शक्ति है?

जी हाँ, परमात्मा सबके लिए एक ही सर्वोच्च शक्ति है जो हमारे शरीर के भीतर और बाहर विद्यमान है। चौथी अवस्था अर्थात् तुरीयम् कारण शरीर का भी कारण है, जो हमारे शरीर के भीतर ही है और यही सबसे निकट स्थल है, जहाँ हम परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। हमें परमात्मा की पूजा भीतर ही करनी चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि परमात्मा के पास हमें सब कुछ देने की शक्ति है। यहाँ तक कि मुक्ति भी परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त होती है।

एक बार यदि हम यह विश्वास कर लें कि परमात्मा हमारे जीवन की चौथी अवस्था है अर्थात् शरीर, मन और आत्मा से परे, स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर से भी परे, तो उसकी अनुभूति के लिए हमें भी इन तीनों स्तरों से ऊपर उठकर उसी तुरीया अवस्था में पहुँचने का प्रयास करना चाहिए, जहाँ न कोई अच्छा है, न बुरा, न कुछ खोया, न पाया, न कोई अहंकार और न इच्छायें।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



॥ पवित्र वेद ॥

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम
परमार्थ निकेतन, स्वर्गाभ्यम्, ऋषिकेश (भारत)

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.11

अशिवना पिबतुं मधु दीद्यग्नी शुचिव्रता ।

ऋतुना॑ यज्ञवाहसा ।

(अशिवना) दो का जोड़ा, शरीर और मन, प्राण और अपान, परमात्मा और जीवात्मा (पिबतम्) पीते हैं (मधु) मधुर (कर्मों के फल) (दीद्यग्नी) प्रकाश के लिए (शुचिव्रता) शुद्धि करने वाले (ऋतुना) ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से (यज्ञवाहसा) त्याग को धारण करने वाला

व्याख्या :-

हम त्याग, शुद्धि, प्रकाश और अनुभूति के चक्र का प्रबन्धन कैसे कर सकते हैं?

अशिवना, दो का जोड़ा, कर्मों के मधुर फलों को ऋतु अनुसार अर्थात् उचित प्रकार से पीता है क्योंकि यही जोड़ा सभी त्यागों को धारण करता है। उन्हीं त्यागों का परिणाम शुद्धि और ज्ञान के प्रकाश के रूप में प्राप्त होता है।

एक बार जब हम यह अनुभूति प्राप्त कर लें कि परमात्मा ही हमारे सभी कर्मों के फलों का देने वाला है तो हमें अपने जीवन के प्रत्येक क्षण पर लगातार दृष्टि रखनी चाहिए, जिससे हम केवल पवित्र, पावन और त्यागमयी कार्यों को ही कर पायें, तभी हमारा शरीर और मस्तिष्क अपने कार्यों के मधुर फलों का पान कर पायेंगे, तभी हमारा शरीर और मस्तिष्क आगे शुद्धि के लिए तथा ज्ञान के प्रकाश के रूप में मिलने वाले कर्म फलों का मधुर पान कर पायेंगे। हमारा जीवन त्याग, शुद्धि, ज्ञान प्रकाश अर्थात् अनुभूति का एक चक्र बन जायेगा। इस प्रकार जीवन का यह मूल सिद्धान्त समझ आयेगा कि परमात्मा ही हमारे कर्मों के फल का देने वाला है। अपने जीवन को शुद्ध करने के लिए इस पर विश्वास करना चाहिए

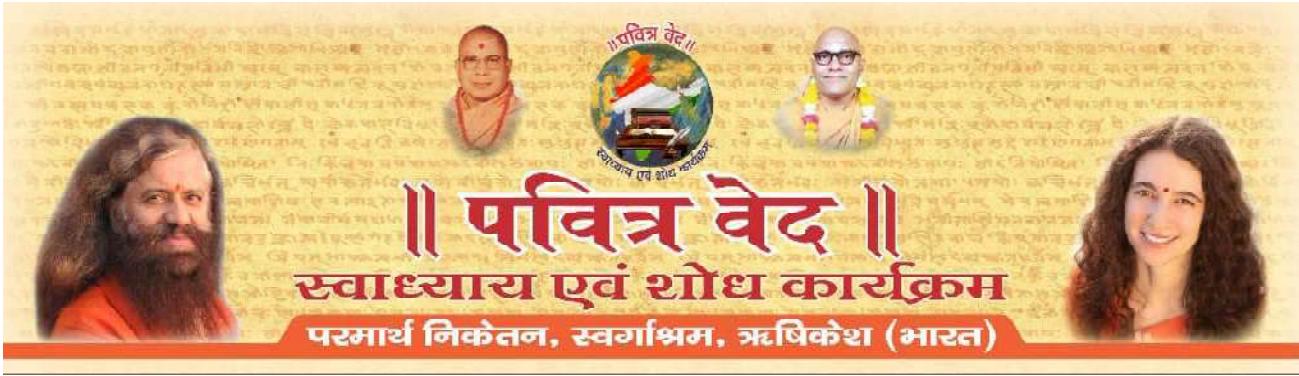
जीवन में सार्थकता

समाज में बुरे कार्यों के लिए लोगों को दण्डित और श्रेष्ठ कार्यों के लिए पुरुस्कृत क्यों किया जाता है?

सामान्यतः हमारे परिवारों में और पूरे समाज में हमारे माता-पिता, वृद्धजन, उच्चाधिकारी तथा सरकारें कर्मों का फल देने वाले होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को बुरे कार्यों के फलस्वरूप प्रताड़ना तथा दण्ड मिलता है। अच्छे और श्रेष्ठ कार्यों के लिए प्रत्येक व्यक्ति प्रशंसित और पुरुस्कृत होता है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य शुद्धिकरण तथा ज्ञान प्रकाश पैदा करना है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति बुरे कार्य करने से हतोत्साहित हो और अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित हो। प्रत्येक स्तर पर कानूनों और नियमों की रचना भी शुद्धि तथा ज्ञान प्रकाश की स्थापना के लिए ही की जाती है।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



॥ पवित्र वेद ॥

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम
परमार्थ निकेतन, स्वर्गाभ्यम्, ऋषिकेश (भारत)

ऋग्वेद मन्त्र 1.15.11

अशिवना पिबतुं मधु दीद्यग्नी शुचिव्रता ।

ऋतुना॑ यज्ञवाहसा ।

(अशिवना) दो का जोड़ा, शरीर और मन, प्राण और अपान, परमात्मा और जीवात्मा (पिबतम्) पीते हैं (मधु) मधुर (कर्मों के फल) (दीद्यग्नी) प्रकाश के लिए (शुचिव्रता) शुद्धि करने वाले (ऋतुना) ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से (यज्ञवाहसा) त्याग को धारण करने वाला

व्याख्या :-

हम त्याग, शुद्धि, प्रकाश और अनुभूति के चक्र का प्रबन्धन कैसे कर सकते हैं?

अशिवना, दो का जोड़ा, कर्मों के मधुर फलों को ऋतु अनुसार अर्थात् उचित प्रकार से पीता है क्योंकि यही जोड़ा सभी त्यागों को धारण करता है। उन्हीं त्यागों का परिणाम शुद्धि और ज्ञान के प्रकाश के रूप में प्राप्त होता है।

एक बार जब हम यह अनुभूति प्राप्त कर लें कि परमात्मा ही हमारे सभी कर्मों के फलों का देने वाला है तो हमें अपने जीवन के प्रत्येक क्षण पर लगातार दृष्टि रखनी चाहिए, जिससे हम केवल पवित्र, पावन और त्यागमयी कार्यों को ही कर पायें, तभी हमारा शरीर और मस्तिष्क अपने कार्यों के मधुर फलों का पान कर पायेंगे, तभी हमारा शरीर और मस्तिष्क आगे शुद्धि के लिए तथा ज्ञान के प्रकाश के रूप में मिलने वाले कर्म फलों का मधुर पान कर पायेंगे। हमारा जीवन त्याग, शुद्धि, ज्ञान प्रकाश अर्थात् अनुभूति का एक चक्र बन जायेगा। इस प्रकार जीवन का यह मूल सिद्धान्त समझ आयेगा कि परमात्मा ही हमारे कर्मों के फल का देने वाला है। अपने जीवन को शुद्ध करने के लिए इस पर विश्वास करना चाहिए

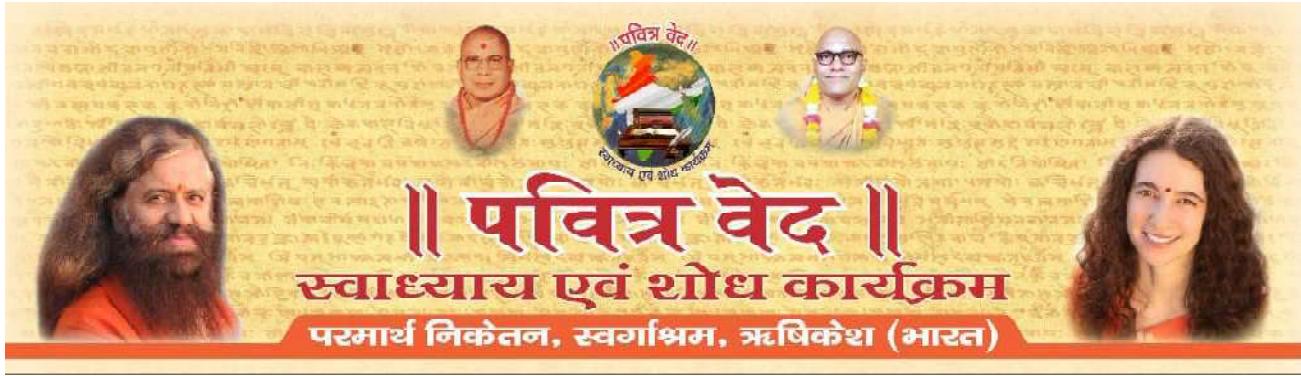
जीवन में सार्थकता

समाज में बुरे कार्यों के लिए लोगों को दण्डित और श्रेष्ठ कार्यों के लिए पुरुस्कृत क्यों किया जाता है?

सामान्यतः हमारे परिवारों में और पूरे समाज में हमारे माता-पिता, वृद्धजन, उच्चाधिकारी तथा सरकारें कर्मों का फल देने वाले होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को बुरे कार्यों के फलस्वरूप प्रताड़ना तथा दण्ड मिलता है। अच्छे और श्रेष्ठ कार्यों के लिए प्रत्येक व्यक्ति प्रशंसित और पुरुस्कृत होता है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य शुद्धिकरण तथा ज्ञान प्रकाश पैदा करना है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति बुरे कार्य करने से हतोत्साहित हो और अच्छे कार्यों के लिए प्रोत्साहित हो। प्रत्येक स्तर पर कानूनों और नियमों की रचना भी शुद्धि तथा ज्ञान प्रकाश की स्थापना के लिए ही की जाती है।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.12

गाह॑पत्येन सन्त्य ऋतुना॑ यज्ञनीरसि ।
देवान् देवयुते यंज ।

(गाह॑पत्येन) गृहस्थ जीवन में कर्तव्यों और व्यवहारों के लिए (सन्त्य) परमात्मा, सब पदार्थों का देने वाला (ऋतुना) ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से (यज्ञनीः) त्याग करने के योग्य (असि) हमें प्राप्त कराओ (देवान्) दिव्य गुण और लक्षण (देवयुते) दिव्यता के इच्छुक के लिए (यज) संगम कीजिए ।

व्याख्या :-

एक श्रेष्ठ गृहस्थी परमात्मा से क्या प्रार्थना करता है?

एक श्रेष्ठ गृहस्थी सब पदार्थों के देने वाले परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उसे त्याग के योग्य बनाओ । एक श्रेष्ठ गृहस्थी आध्यात्मिक स्तर पर दिव्यता का इच्छुक भी होता है । इसलिए ऐसे दिव्यता के इच्छुक का संगम स्वतः ही दिव्य लक्षणों के साथ होता है ।

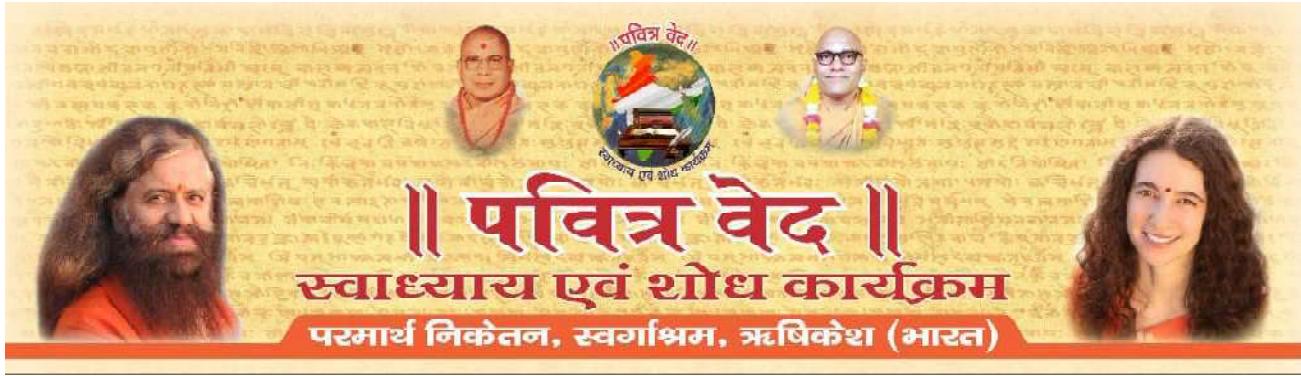
जीवन में सार्थकता

दिव्यता की प्राप्ति कैसे हो?

यदि आपको दिव्यता चाहिए तो आपको दिव्य लक्षण प्राप्त होंगे । दिव्यता के बारे में एक लगातार चेतन विचार ही निश्चित रूप से आपको दिव्य बना देगा । दिव्यता का चेतन विचार नियमित रूप से लम्बी ध्यान साधना के माध्यम से और बलशाली किया जा सकता है ।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

- (1) Download TELEGRAM,
- (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
- (3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



ऋग्वेद मन्त्र 1.15.12

गाह॑पत्येन सन्त्य ऋतुना॑ यज्ञनीरसि ।
देवान् देवयुते यंज ।

(गाह॑पत्येन) गृहस्थ जीवन में कर्तव्यों और व्यवहारों के लिए (सन्त्य) परमात्मा, सब पदार्थों का देने वाला (ऋतुना) ऋतु के अनुसार, उचित प्रकार से (यज्ञनीः) त्याग करने के योग्य (असि) हमें प्राप्त कराओ (देवान्) दिव्य गुण और लक्षण (देवयुते) दिव्यता के इच्छुक के लिए (यज) संगम कीजिए ।

व्याख्या :-

एक श्रेष्ठ गृहस्थी परमात्मा से क्या प्रार्थना करता है?

एक श्रेष्ठ गृहस्थी सब पदार्थों के देने वाले परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उसे त्याग के योग्य बनाओ । एक श्रेष्ठ गृहस्थी आध्यात्मिक स्तर पर दिव्यता का इच्छुक भी होता है । इसलिए ऐसे दिव्यता के इच्छुक का संगम स्वतः ही दिव्य लक्षणों के साथ होता है ।

जीवन में सार्थकता

दिव्यता की प्राप्ति कैसे हो?

यदि आपको दिव्यता चाहिए तो आपको दिव्य लक्षण प्राप्त होंगे । दिव्यता के बारे में एक लगातार चेतन विचार ही निश्चित रूप से आपको दिव्य बना देगा । दिव्यता का चेतन विचार नियमित रूप से लम्बी ध्यान साधना के माध्यम से और बलशाली किया जा सकता है ।

**Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.
Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.**

- (1) Download TELEGRAM,
- (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
- (3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.1

अग्ने विवस्वदुषस्थिच्चां राधों अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमुद्या देवाँ उषुर्बुधः ॥

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (विवस्वत्) स्व प्रकाशित के समान (उषसः) ब्रह्म वेला (प्रातः वेला) (चित्रम्) अद्भुत चेतना (राधः) सम्पदा (अमर्त्यः) न मरने योग्य (आ - वह से पूर्व लगाकर) (दाशुषे) त्यागशील, दानशील (जातवेदः) सबका ज्ञाता (जो पैदा हुआ या उत्पन्न हुआ) (वह - आवह) प्राप्त करवाईए (त्वम्) आप (अद्य) आज (देवान्) दिव्य लोगों को (उषुर्बुधः) प्रातःकालीन ब्रह्म वेला में जागृत होने वाले ।

व्याख्या :-

सर्वोच्च चेतना की प्रकृति क्या है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! जो कुछ भी पैदा हुआ या उत्पन्न किया गया, आपको उन सबका ज्ञान है। कृपया स्वप्रकाशित ज्ञान की तरह अद्भुत चेतना उन लोगों को भी उपलब्ध कराईए, जो ब्रह्म वेला में प्रातःकाल ही जाग्रत होते हैं और त्यागशील हैं। आपकी वह स्वप्रकाशित चेतना न मरने योग्य है। समस्त दिव्य लोगों को यह सम्पदा आज ही प्राप्त हो।

जीवन में सार्थकता

ब्रह्म वेला में जाग्रत होने के क्या लाभ हैं?

परमात्मा द्वारा उपलब्ध कराई गई चेतना स्व प्रकाशित ज्ञान की तरह है, जो कभी नष्ट नहीं होती।

जो कुछ भी इस सृष्टि में पैदा हुआ या निर्मित किया गया, उस सबके बारे में केवल परमात्मा को ही सर्वोच्च ज्ञान है क्योंकि प्रत्येक कण और प्रत्येक जीवन परमात्मा की अनुभूति है।

परमात्मा वह दिव्य चेतना उन लोगों को उपलब्ध कराते हैं :-

- (क) जो ब्रह्म वेला में प्रातः काल जल्दी जाग्रत हो जाते हैं।
- (ख) जो सब कुछ त्याग कर इच्छा रहित जीवन जीते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.1

अग्ने विवस्वदुषस्थिच्चां राधों अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमुद्या देवाँ उषुर्बुधः ॥

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (विवस्वत्) स्व प्रकाशित के समान (उषसः) ब्रह्म वेला (प्रातः वेला) (चित्रम्) अद्भुत चेतना (राधः) सम्पदा (अमर्त्यः) न मरने योग्य (आ - वह से पूर्व लगाकर) (दाशुषे) त्यागशील, दानशील (जातवेदः) सबका ज्ञाता (जो पैदा हुआ या उत्पन्न हुआ) (वह - आवह) प्राप्त करवाईए (त्वम्) आप (अद्य) आज (देवान्) दिव्य लोगों को (उषुर्बुधः) प्रातःकालीन ब्रह्म वेला में जागृत होने वाले ।

व्याख्या :-

सर्वोच्च चेतना की प्रकृति क्या है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! जो कुछ भी पैदा हुआ या उत्पन्न किया गया, आपको उन सबका ज्ञान है। कृपया स्वप्रकाशित ज्ञान की तरह अद्भुत चेतना उन लोगों को भी उपलब्ध कराईए, जो ब्रह्म वेला में प्रातःकाल ही जाग्रत होते हैं और त्यागशील हैं। आपकी वह स्वप्रकाशित चेतना न मरने योग्य है। समस्त दिव्य लोगों को यह सम्पदा आज ही प्राप्त हो।

जीवन में सार्थकता

ब्रह्म वेला में जाग्रत होने के क्या लाभ हैं?

परमात्मा द्वारा उपलब्ध कराई गई चेतना स्व प्रकाशित ज्ञान की तरह है, जो कभी नष्ट नहीं होती।

जो कुछ भी इस सृष्टि में पैदा हुआ या निर्मित किया गया, उस सबके बारे में केवल परमात्मा को ही सर्वोच्च ज्ञान है क्योंकि प्रत्येक कण और प्रत्येक जीवन परमात्मा की अनुभूति है।

परमात्मा वह दिव्य चेतना उन लोगों को उपलब्ध कराते हैं :-

- (क) जो ब्रह्म वेला में प्रातः काल जल्दी जाग्रत हो जाते हैं।
- (ख) जो सब कुछ त्याग कर इच्छा रहित जीवन जीते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.2

जुष्टे हि दूतो असि हव्यवाहनोऽग्नेरुथीरध्वराणाम् ।
सुजूरशिवभ्यामुषसा सुवीर्यमुस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥

(जुष्टः) प्रीतिपूर्वक, प्रेम करने योग्य (हि) निश्चित रूप से (दूतः) दूत, धूर्त शत्रुओं के नाशक (असि) हैं (हव्यवाहनः) सब पदार्थों और वाहनों के देने वाले (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (रथीः) रथचालक (अध्वराणाम्) अहिंसक त्याग (सजूः) के साथ (अशिवभ्याम्) वायु तथा ऊर्जा (उषसा) प्रातःकाल, सूर्योदय (सुवीर्यम्) उत्तम ऊर्जा (अस्मे) हमारे लिए, हमारे भीतर (धेहि) स्थापित करो, प्रदान करो (श्रवः) सुनने योग्य (बृहत्) बड़ा ।

व्याख्या :-

परमात्मा का दूत बनने के योग्य कौन है?

एक दिव्य दूत को परमात्मा से क्या प्राप्त होता है?

निश्चित रूप से एक प्रसन्न और प्रेम करने वाला व्यक्ति धूर्त शत्रुओं का नाश करके आपका दूत बनने के योग्य है। सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, केवल आप ही हिंसारहित त्याग कार्यों के सारथी होने के नाते समस्त पदार्थों तथा वाहनों के दाता हैं।

आप प्रत्येक प्रातः सूर्योदय के समय वायु और ऊर्जा सहित हमारे साथ संयुक्त होते हो। कृपया हमारे अन्दर सर्वोत्तम ऊर्जा को स्थापित कर दो, जो सुनने योग्य बड़े त्याग कार्यों के लिए हो।

जीवन में सार्थकता

एक अच्छे दूत तथा प्रतिनिधि से क्या लक्षण अपेक्षित हैं?

दूत किसी उच्च अधिकारी का प्रतिनिधि होता है। हम सब अपने परिवार, उसकी परम्पराओं, अपने समाज तथा उसके रीति-रिवाजों, अपने-अपने संस्थानों और कभी-कभी अपने राष्ट्र और उसकी संस्कृति के दूत होते हैं। अतः यह हमारा निश्चित कर्तव्य है कि हम जिस उच्च संस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसका संरक्षण करें। यदि हम स्वयं को एक सच्चा प्रतिनिधि सिद्ध करते हैं तो वह उच्च संस्था निश्चित रूप से हमें सभी आवश्यक पदार्थ, वाहन तथा शक्तियाँ उपलब्ध करायेगी।

एक अच्छा दूत तथा प्रतिनिधि बनने के लिए हमें निम्न लक्षणों को सुनिश्चित करना चाहिए :-

(क) हम प्रसन्न तथा प्रेम करने वाले हों।

(ख) हम शत्रुओं के नाशक हों।

(ग) प्रत्येक सूर्योदय के समय हम अपने कर्तव्यों के बारे में विचार प्रारम्भ करें और उन्हें सम्पन्न करें।

(घ) हम सुनने योग्य सभी बड़े से बड़े त्याग कार्यों के लिए तैयार रहें।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.2

जुष्टे हि दूतो असि हव्यवाहनोऽग्ने रुथीरध्वराणाम् ।
सुजूरशिवभ्यामुषसा सुवीर्यमुस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥

(जुष्टः) प्रीतिपूर्वक, प्रेम करने योग्य (हि) निश्चित रूप से (दूतः) दूत, धूर्त शत्रुओं के नाशक (असि) हैं (हव्यवाहनः) सब पदार्थों और वाहनों के देने वाले (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (रथीः) रथचालक (अध्वराणाम्) अहिंसक त्याग (सजूः) के साथ (अशिवभ्याम्) वायु तथा ऊर्जा (उषसा) प्रातःकाल, सूर्योदय (सुवीर्यम्) उत्तम ऊर्जा (अस्मे) हमारे लिए, हमारे भीतर (धेहि) स्थापित करो, प्रदान करो (श्रवः) सुनने योग्य (बृहत्) बड़ा ।

व्याख्या :-

परमात्मा का दूत बनने के योग्य कौन है?

एक दिव्य दूत को परमात्मा से क्या प्राप्त होता है?

निश्चित रूप से एक प्रसन्न और प्रेम करने वाला व्यक्ति धूर्त शत्रुओं का नाश करके आपका दूत बनने के योग्य है। सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, केवल आप ही हिंसारहित त्याग कार्यों के सारथी होने के नाते समस्त पदार्थों तथा वाहनों के दाता हैं।

आप प्रत्येक प्रातः सूर्योदय के समय वायु और ऊर्जा सहित हमारे साथ संयुक्त होते हो। कृपया हमारे अन्दर सर्वोत्तम ऊर्जा को स्थापित कर दो, जो सुनने योग्य बड़े त्याग कार्यों के लिए हो।

जीवन में सार्थकता

एक अच्छे दूत तथा प्रतिनिधि से क्या लक्षण अपेक्षित हैं?

दूत किसी उच्च अधिकारी का प्रतिनिधि होता है। हम सब अपने परिवार, उसकी परम्पराओं, अपने समाज तथा उसके रीति-रिवाजों, अपने-अपने संस्थानों और कभी-कभी अपने राष्ट्र और उसकी संस्कृति के दूत होते हैं। अतः यह हमारा निश्चित कर्तव्य है कि हम जिस उच्च संस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसका संरक्षण करें। यदि हम स्वयं को एक सच्चा प्रतिनिधि सिद्ध करते हैं तो वह उच्च संस्था निश्चित रूप से हमें सभी आवश्यक पदार्थ, वाहन तथा शक्तियाँ उपलब्ध करायेगी।

एक अच्छा दूत तथा प्रतिनिधि बनने के लिए हमें निम्न लक्षणों को सुनिश्चित करना चाहिए :-

(क) हम प्रसन्न तथा प्रेम करने वाले हों।

(ख) हम शत्रुओं के नाशक हों।

(ग) प्रत्येक सूर्योदय के समय हम अपने कर्तव्यों के बारे में विचार प्रारम्भ करें और उन्हें सम्पन्न करें।

(घ) हम सुनने योग्य सभी बड़े से बड़े त्याग कार्यों के लिए तैयार रहें।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.3

अद्या दूतं वृणीमहे वसुमयिं पुरुषियम् ।
धूमकेतुं भात्रजीकुं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम् ॥

(अद्य) आज (दूतम्) दूत को (वृणीमहे) वरण करते हैं (वसुम्) निवास (अग्निम्) समस्त अग्नियाँ (पुरुषियम्) समाज में सबके प्रिय (धूमकेतुम्) जिसकी महिमा एक ध्वज की तरह वायुमण्डल में है (भात्रजीकम्) कामनाओं का प्रकाश (व्युष्टिषु) समस्त कामनाओं में (यज्ञानाम्) समस्त यज्ञों में (अध्वर श्रियम्) हिंसारहित यज्ञों अर्थात् त्याग की महिमा ।

व्याख्या :-

एक दिव्य दूत के क्या लक्षण हैं?

आज हम उस दूत या प्रतिनिधि को स्वीकार करते हैं, जो निम्न लक्षणों से सुसज्जित है :-

(क) वसुम् अग्निम् - समस्त अग्नियों का निवास ।

(ख) पुरु प्रियम् - समाज में सबके प्रिय ।

(ग) धूमकेतुम् - जिसकी महिमा एक ध्वज की तरह वायुमण्डल में है ।

(घ) भात्रजीकम् व्युष्टिषु - जो समस्त कामनाओं में कामनाओं का प्रकाश है ।

(ड.) यज्ञानाम् अध्वर श्रियम् - जो समस्त यज्ञों में हिंसारहित यज्ञों अर्थात् त्याग की महिमा है ।

जीवन में सार्थकता

हमें किसको अपना प्रतिनिधि चुनना चाहिए?

राष्ट्र का शासन करने के लिए हमें अपने प्रतिनिधि चुनने पड़ते हैं। जो लोग समाज और राष्ट्र का संचालन करना चाहते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे निम्न विशेष लक्षणों को धारण करते हैं और अपने अन्दर उनका विकास करते हैं :-

(क) वे समाज के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित अपार ज्ञान के साथ ऊर्जावान हों। लोग उनसे ज्ञान तथा ऊर्जा प्राप्त करने की प्रेरणाओं को प्राप्त करें ।

(ख) वे बिना भेदभाव के सबको समान रूप से प्रेम करने वाले हों और सबका ध्यान रखें। इसके बदले वे लोगों से गहरा प्रेम और सम्मान प्राप्त करें ।

(ग) उनके कल्याण, प्रेम और त्याग के कार्य इतने महान होने चाहिए कि वे उनकी महिमा का सर्वोच्च ध्वज दिखाई देते हों ।

(घ) वे लोगों की कामनाओं को पूरा करने में ऐसे सक्रिय हों, जिससे प्रत्येक व्यक्ति उनके भीतर अपनी ही कामनाओं और इच्छाओं को देखने लगे ।

(ड.) वे समाज में प्रत्येक कार्य में सक्रिय भागीदार हों। वे स्वयं त्यागशील पुरुष होने चाहिए, जो सबके सामान्य कल्याण के लिए दूसरों को भी त्याग के लिए प्रेरित कर सकें ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.3

अद्या दूतं वृणीमहे वसुमयिं पुरुषियम् ।
धूमकेतुं भात्रजीकुं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम् ॥

(अद्य) आज (दूतम्) दूत को (वृणीमहे) वरण करते हैं (वसुम्) निवास (अग्निम्) समस्त अग्नियाँ (पुरुषियम्) समाज में सबके प्रिय (धूमकेतुम्) जिसकी महिमा एक ध्वज की तरह वायुमण्डल में है (भात्रजीकम्) कामनाओं का प्रकाश (व्युष्टिषु) समस्त कामनाओं में (यज्ञानाम्) समस्त यज्ञों में (अध्वर श्रियम्) हिंसारहित यज्ञों अर्थात् त्याग की महिमा ।

व्याख्या :-

एक दिव्य दूत के क्या लक्षण हैं?

आज हम उस दूत या प्रतिनिधि को स्वीकार करते हैं, जो निम्न लक्षणों से सुसज्जित है :-

(क) वसुम् अग्निम् - समस्त अग्नियों का निवास ।

(ख) पुरु प्रियम् - समाज में सबके प्रिय ।

(ग) धूमकेतुम् - जिसकी महिमा एक ध्वज की तरह वायुमण्डल में है ।

(घ) भात्रजीकम् व्युष्टिषु - जो समस्त कामनाओं में कामनाओं का प्रकाश है ।

(ड.) यज्ञानाम् अध्वर श्रियम् - जो समस्त यज्ञों में हिंसारहित यज्ञों अर्थात् त्याग की महिमा है ।

जीवन में सार्थकता

हमें किसको अपना प्रतिनिधि चुनना चाहिए?

राष्ट्र का शासन करने के लिए हमें अपने प्रतिनिधि चुनने पड़ते हैं। जो लोग समाज और राष्ट्र का संचालन करना चाहते हैं, उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे निम्न विशेष लक्षणों को धारण करते हैं और अपने अन्दर उनका विकास करते हैं :-

(क) वे समाज के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित अपार ज्ञान के साथ ऊर्जावान हों। लोग उनसे ज्ञान तथा ऊर्जा प्राप्त करने की प्रेरणाओं को प्राप्त करें ।

(ख) वे बिना भेदभाव के सबको समान रूप से प्रेम करने वाले हों और सबका ध्यान रखें। इसके बदले वे लोगों से गहरा प्रेम और सम्मान प्राप्त करें ।

(ग) उनके कल्याण, प्रेम और त्याग के कार्य इतने महान होने चाहिए कि वे उनकी महिमा का सर्वोच्च ध्वज दिखाई देते हों ।

(घ) वे लोगों की कामनाओं को पूरा करने में ऐसे सक्रिय हों, जिससे प्रत्येक व्यक्ति उनके भीतर अपनी ही कामनाओं और इच्छाओं को देखने लगे ।

(ड.) वे समाज में प्रत्येक कार्य में सक्रिय भागीदार हों। वे स्वयं त्यागशील पुरुष होने चाहिए, जो सबके सामान्य कल्याण के लिए दूसरों को भी त्याग के लिए प्रेरित कर सकें ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.4

श्रेष्ठं यविष्ठुमतिथिं स्वाहुतं जुष्टं जनाय दाशुषे ।

देवाँ अच्छा यातवै जातवेदसमग्रिमीळे व्युष्टिषु ॥

(श्रेष्ठम्) सर्वोत्तम (यविष्ठम्) सबसे शक्तिशाली (अतिथिम्) सेवा के योग्य (स्वाहुतम्) सबके दाता (जुष्टम्) प्रीति वाले (जनाय) उन मनुष्यों के लिए (दाशुषे) जो सब कुछ त्याग करते हैं (देवान्) दिव्य लोगों के लिए (अच्छ) इच्छा (यातवै) प्राप्त करने के लिए (जातवेदसम्) सबका ज्ञान रखने वाले (अग्रिम्) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (ईळे) पूजा (व्युष्टिषु) विशेष कामनाओं में, दिन के प्रारम्भ में।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की पूजा क्यों करते हैं?

हम दिन के प्रारम्भ में ही अपनी विशेष कामनाओं में सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा की पूजा करते हैं क्योंकि वह जातवेदसम है अर्थात् उसे सबका सर्वोच्च ज्ञान है।

हम दिव्यता तथा दिव्य लोगों को भी प्राप्त करना चाहते हैं, जो अन्य लोगों के लिए सब कुछ त्याग कर देते हैं। परमात्मा भी ऐसे लोगों को प्रेम करते हैं। परमात्मा तथा ऐसे लोग निम्न प्रकार के होते हैं :-

- (क) श्रेष्ठम् अर्थात् सर्वोत्तम,
- (ख) यविष्ठम् अर्थात् सबसे शक्तिशाली,
- (ग) अतिथिम् अर्थात् सेवा के योग्य,
- (घ) स्वाहुतम् अर्थात् सबके दाता।

इन सबका सार यह है कि परमात्मा एक त्यागशील व्यक्ति को प्रेम करते हैं।

जीवन में सार्थकता

हमें दिव्य लोगों का सम्मान तथा उनकी महिमा क्यों करनी चाहिए?

एक दिव्य पहेली - हम परमात्मा की कई कारणों से पूजा करते हैं, परन्तु परमात्मा दिव्य लोगों को केवल एक मुख्य कारण से प्रेम करता है, वह क्या कारण है?

हम परमात्मा की कई कारणों से पूजा करते हैं। लेकिन परमात्मा दिव्य लोगों को केवल एक मुख्य कारण से प्रेम करते हैं और वह है, उनका अन्य लोगों के लिए त्यागशील जीवन। ऐसे दिव्य लोग बिना किसी अहंकार के सब कुछ त्याग करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

परमात्मा तथा सभी दिव्य लोगों में चार मुख्य समानताएं होती हैं :-

- (क) श्रेष्ठम् - दोनों सर्वोत्तम होते हैं,
- (ख) यविष्ठम् - दोनों सबसे शक्तिशाली होते हैं,
- (ग) अतिथिम् - दोनों सेवा के योग्य होते हैं,
- (घ) स्वाहुतम् - दोनों सबके दाता होते हैं।

इसलिए हम परमात्मा तथा ऐसे सभी दिव्य लोगों की पूजा और महिमा करते हैं। प्रतिदिन हमारी विशेष कामनाएं हैं कि हमें उनके दिव्य गुण प्राप्त हों और हम स्वयं को वासना पूर्ण कामनाओं से सुरक्षित कर सकें।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.4

श्रेष्ठं यविष्ठुमतिथिं स्वाहुतं जुष्टं जनाय दाशुषे ।

देवाँ अच्छा यातवै जातवेदसमग्रिमीळे व्युष्टिषु ॥

(श्रेष्ठम्) सर्वोत्तम (यविष्ठम्) सबसे शक्तिशाली (अतिथिम्) सेवा के योग्य (स्वाहुतम्) सबके दाता (जुष्टम्) प्रीति वाले (जनाय) उन मनुष्यों के लिए (दाशुषे) जो सब कुछ त्याग करते हैं (देवान्) दिव्य लोगों के लिए (अच्छ) इच्छा (यातवै) प्राप्त करने के लिए (जातवेदसम्) सबका ज्ञान रखने वाले (अग्रिम्) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (ईळे) पूजा (व्युष्टिषु) विशेष कामनाओं में, दिन के प्रारम्भ में।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की पूजा क्यों करते हैं?

हम दिन के प्रारम्भ में ही अपनी विशेष कामनाओं में सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा की पूजा करते हैं क्योंकि वह जातवेदसम है अर्थात् उसे सबका सर्वोच्च ज्ञान है।

हम दिव्यता तथा दिव्य लोगों को भी प्राप्त करना चाहते हैं, जो अन्य लोगों के लिए सब कुछ त्याग कर देते हैं। परमात्मा भी ऐसे लोगों को प्रेम करते हैं। परमात्मा तथा ऐसे लोग निम्न प्रकार के होते हैं :-

- (क) श्रेष्ठम् अर्थात् सर्वोत्तम,
- (ख) यविष्ठम् अर्थात् सबसे शक्तिशाली,
- (ग) अतिथिम् अर्थात् सेवा के योग्य,
- (घ) स्वाहुतम् अर्थात् सबके दाता।

इन सबका सार यह है कि परमात्मा एक त्यागशील व्यक्ति को प्रेम करते हैं।

जीवन में सार्थकता

हमें दिव्य लोगों का सम्मान तथा उनकी महिमा क्यों करनी चाहिए?

एक दिव्य पहेली - हम परमात्मा की कई कारणों से पूजा करते हैं, परन्तु परमात्मा दिव्य लोगों को केवल एक मुख्य कारण से प्रेम करता है, वह क्या कारण है?

हम परमात्मा की कई कारणों से पूजा करते हैं। लेकिन परमात्मा दिव्य लोगों को केवल एक मुख्य कारण से प्रेम करते हैं और वह है, उनका अन्य लोगों के लिए त्यागशील जीवन। ऐसे दिव्य लोग बिना किसी अहंकार के सब कुछ त्याग करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

परमात्मा तथा सभी दिव्य लोगों में चार मुख्य समानताएं होती हैं :-

- (क) श्रेष्ठम् - दोनों सर्वोत्तम होते हैं,
- (ख) यविष्ठम् - दोनों सबसे शक्तिशाली होते हैं,
- (ग) अतिथिम् - दोनों सेवा के योग्य होते हैं,
- (घ) स्वाहुतम् - दोनों सबके दाता होते हैं।

इसलिए हम परमात्मा तथा ऐसे सभी दिव्य लोगों की पूजा और महिमा करते हैं। प्रतिदिन हमारी विशेष कामनाएं हैं कि हमें उनके दिव्य गुण प्राप्त हों और हम स्वयं को वासना पूर्ण कामनाओं से सुरक्षित कर सकें।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.5

स्तविष्यामि त्वामुहं विश्वस्यामृत भोजन।

अग्ने त्रातारमूर्त मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन ॥

(स्तविष्यामि) महिमा गान करेंगे, पूजा करेंगे (त्वाम्) आपकी (अहम्) मैं (विश्वस्य) सबका (अमृत) न मरने योग्य, न नष्ट होने योग्य (भोजन) पालन के लिए भोजन (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (त्रातारम्) संरक्षक (अमृतम्) हमें न मरने योग्य बनाने वाले, सांसारिक कामनाओं से हटाकर (मियेध्य) संगतिकरण के योग्य (यजिष्ठम्) यज्ञ, त्याग करने के लिए (अहव्यवाहन) त्याग के लिए समस्त वस्तुओं को लाने वाले ।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की पूजा तथा महिमा क्यों करते हैं?

मैं तीन कारणों से सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा की पूजा तथा महिमा करूँगा :-

(क) विश्वस्य अमृत भोजन आप सबके पालन के लिए वह भोजन देते हो, जो न मरने योग्य और न नष्ट होने योग्य हैं।

(ख) त्रातारम् अमृतम् आप हमारे संरक्षक हो और हमें न मरने योग्य बनाने वाले हो। हमें सांसारिक कामनाओं से हटाते हो।

(ग) मियेध्य यजिष्ठम् हव्यवाहन - आप संगतिकरण के योग्य हो, जिससे हम यज्ञ, त्याग करने में सक्षम होते हैं क्योंकि त्याग के लिए समस्त वस्तुओं को लाने वाले केवल आप ही हो।

जीवन में सार्थकता

जो व्यक्ति यज्ञ अर्थात् त्याग करता है, उसके क्या लक्षण होते हैं?

यज्ञ के तीन लक्षणों को कैसे सुनिश्चित करें?

तीन सबसे महत्वपूर्ण कारण जिसके लिए सबको यज्ञ करना चाहिए :-

(क) क्योंकि पालन के लिए समस्त भोजन को देने वाले परमात्मा हैं,

(ख) क्योंकि वह सबके संरक्षक हैं,

(ग) क्योंकि वह यज्ञों में संगतिकरण के योग्य हैं, क्योंकि यज्ञ के लिए सभी पदार्थ वही उपलब्ध कराते हैं।

यही तीन कारण हमारे जीवन का लक्ष्य होने चाहिए। परमात्मा की पूजा हमें परमात्मा के लक्षणों को अपने भीतर दारण करने के योग्य बनाती है।

यदि हम परमात्मा की भक्ति की इस प्रकृति पर ध्यान एकाग्र करें तो हमारे अन्दर भी निम्न लक्षण दिखाई देने लगेंगे :-

(क) हम भी दूसरों के पालन-पोषण के लिए उनकी सहायता और मार्गदर्शन करने योग्य बन जाएंगे। इसे दान कहते हैं।

(ख) हम अन्य लोगों को अपनी आन्तरिक न मरने वाली शक्ति पर ध्यान करने में मार्गदर्शक बन सकते हैं, जो सामान्यतया भौतिक जीवन के लिए मरने वाली वस्तुओं पर ध्यान करते हैं। इसे अमृत दिव्यता की पूजा कहते हैं। यह देव पूजा है।

(ग) हम यह अनुभूति प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं कि परमात्मा की संगति के कारण ही हमें यह जीवन मिला और हम यज्ञ करने के योग्य बने। इसे दिव्य संगतिकरण कहते हैं।

वास्तव में यज्ञ या त्यागशील जीवन के यही तीन लक्षण हैं।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query - Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.5

स्तविष्यामि त्वामुहं विश्वस्यामृत भोजन।

अग्ने त्रातारमूर्त मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन ॥

(स्तविष्यामि) महिमा गान करेंगे, पूजा करेंगे (त्वाम्) आपकी (अहम्) मैं (विश्वस्य) सबका (अमृत) न मरने योग्य, न नष्ट होने योग्य (भोजन) पालन के लिए भोजन (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (त्रातारम्) संरक्षक (अमृतम्) हमें न मरने योग्य बनाने वाले, सांसारिक कामनाओं से हटाकर (मियेध्य) संगतिकरण के योग्य (यजिष्ठम्) यज्ञ, त्याग करने के लिए (अहव्यवाहन) त्याग के लिए समस्त वस्तुओं को लाने वाले ।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की पूजा तथा महिमा क्यों करते हैं?

मैं तीन कारणों से सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा की पूजा तथा महिमा करूँगा :-

(क) विश्वस्य अमृत भोजन आप सबके पालन के लिए वह भोजन देते हो, जो न मरने योग्य और न नष्ट होने योग्य हैं।

(ख) त्रातारम् अमृतम् आप हमारे संरक्षक हो और हमें न मरने योग्य बनाने वाले हो। हमें सांसारिक कामनाओं से हटाते हो।

(ग) मियेध्य यजिष्ठम् हव्यवाहन - आप संगतिकरण के योग्य हो, जिससे हम यज्ञ, त्याग करने में सक्षम होते हैं क्योंकि त्याग के लिए समस्त वस्तुओं को लाने वाले केवल आप ही हो।

जीवन में सार्थकता

जो व्यक्ति यज्ञ अर्थात् त्याग करता है, उसके क्या लक्षण होते हैं?

यज्ञ के तीन लक्षणों को कैसे सुनिश्चित करें?

तीन सबसे महत्वपूर्ण कारण जिसके लिए सबको यज्ञ करना चाहिए :-

(क) क्योंकि पालन के लिए समस्त भोजन को देने वाले परमात्मा हैं,

(ख) क्योंकि वह सबके संरक्षक हैं,

(ग) क्योंकि वह यज्ञों में संगतिकरण के योग्य हैं, क्योंकि यज्ञ के लिए सभी पदार्थ वही उपलब्ध कराते हैं।

यही तीन कारण हमारे जीवन का लक्ष्य होने चाहिए। परमात्मा की पूजा हमें परमात्मा के लक्षणों को अपने भीतर दारण करने के योग्य बनाती है।

यदि हम परमात्मा की भक्ति की इस प्रकृति पर ध्यान एकाग्र करें तो हमारे अन्दर भी निम्न लक्षण दिखाई देने लगेंगे :-

(क) हम भी दूसरों के पालन-पोषण के लिए उनकी सहायता और मार्गदर्शन करने योग्य बन जाएंगे। इसे दान कहते हैं।

(ख) हम अन्य लोगों को अपनी आन्तरिक न मरने वाली शक्ति पर ध्यान करने में मार्गदर्शक बन सकते हैं, जो सामान्यतया भौतिक जीवन के लिए मरने वाली वस्तुओं पर ध्यान करते हैं। इसे अमृत दिव्यता की पूजा कहते हैं। यह देव पूजा है।

(ग) हम यह अनुभूति प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं कि परमात्मा की संगति के कारण ही हमें यह जीवन मिला और हम यज्ञ करने के योग्य बने। इसे दिव्य संगतिकरण कहते हैं।

वास्तव में यज्ञ या त्यागशील जीवन के यही तीन लक्षण हैं।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query - Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.6

सुशंसा॑ बोधि गृणते यविष्ठ्य मधुजिह्वः स्वाहुतः ।
प्रस्कर्णवस्य प्रतिरन्नायुर्जीवसे॑ नमस्या॒ दैव्यं॒ जनम्॒ ॥

(सुशंसः) उत्तम महिमा प्राप्त (बोधि) ज्ञान (गृणते) आपकी और सत्यता की महिमा करने वालों के लिए (यविष्ठ्ये) शत्रुओं को पराजित करने में सबसे शक्तिशाली (मधुजिह्वः) मधुर वाणी वाले (स्वाहुतः) उत्तम आहुति यज्ञ के लिए (प्रस्कर्णवस्य) महान विद्वान (प्रतिरन्न) दुःखों और दर्दों से ऊपर उठने की शक्ति (आयुः) आयु (जीवसे) जीवन के लिए (नमस्या) मेरा प्रणाम और पूजा (दैव्यम्) दिव्य लोगों के (जनम्) जीवन को ।

व्याख्या :-

परमात्मा की महिमा के क्या लाभ हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, शत्रुओं को पराजित करने के लिए सबसे महिमा प्राप्त तथा शक्तिशाली सत्ता है। वह उन लोगों में भी निम्न लक्षण सुनिश्चित करता है, जो उसकी महिमा करते हैं और सत्यता से उसका अनुसरण करते हैं :-

- (क) बोधि - ज्ञान का प्रकाश,
- (ख) मधुजिह्वः - मधुर वाणी वाले,
- (ग) स्वाहुतः - उत्तम आहुति यज्ञ के लिए,
- (घ) प्रस्कर्णवस्य प्रतिरन्न आयुः जीवसे - ऐसे महान विद्वानों में स्वस्थ जीवन और दीर्घायु के लिए दुःखों और दर्दों से ऊपर उठने की शक्ति देते हैं।

आईए! परमात्मा तथा ऐसे दिव्य जीवन वाले लोगों को अपने प्रणाम प्रस्तुत करें - नमस्या॒ दैव्यम्॒ जनम्॒ ।

जीवन में सार्थकता

अपने उच्चाधिकारियों का सम्मान और उनका अनुसरण करने के क्या लाभ होते हैं?

हमारे पारिवारिक या सामाजिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को अपने वृद्धजनों तथा उच्चाधिकारियों के साथ गहरा और गम्भीर सम्बन्ध बनाकर रखना चाहिए। निम्न लाभ प्राप्त करने के लिए उनका सम्मान, उनकी महिमा तथा उनका अनुसरण होना चाहिए :-

- (क) उनके ज्ञान के साथ उनका प्रकाश। महिमा प्राप्त उच्चाधिकारी अपने श्रद्धालुओं और अनुशासित लोगों पर अपने ज्ञान की वर्षा करते हैं।
- (ख) वृद्ध जनों के साथ हमारा दिव्य सम्बन्ध हमें मधुर भाषी बना देता है।
- (ग) हम समस्त त्याग कार्यों के लिए तैयार हो जाते हैं क्योंकि हम यह जान जाते हैं कि हमारे उच्चाधिकारी हमें उसका पर्याप्त प्रतिफल देंगे।
- (घ) महिमा प्राप्त उच्चाधिकारी ऐसे श्रद्धालुओं को इतनी शक्ति देते हैं कि वे कष्टों और दर्दों को सहन कर सकें क्योंकि वे भी उच्चाधिकारियों की तरह दूरदर्शी हो जाते हैं।

वे सब लोग जो वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मान, महिमा और अनुसरण करते हैं, उन्हें प्रत्येक संस्थान में सम्मान और प्रगति प्राप्त होती है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.6

सुशंसा॑ बोधि गृणते यविष्ठ्य मधुजिह्वः स्वाहुतः ।
प्रस्कर्णवस्य प्रतिरन्नायुर्जीवसे॑ नमस्या॒ दैव्यं॒ जनम्॒ ॥

(सुशंसः) उत्तम महिमा प्राप्त (बोधि) ज्ञान (गृणते) आपकी और सत्यता की महिमा करने वालों के लिए (यविष्ठ्ये) शत्रुओं को पराजित करने में सबसे शक्तिशाली (मधुजिह्वः) मधुर वाणी वाले (स्वाहुतः) उत्तम आहुति यज्ञ के लिए (प्रस्कर्णवस्य) महान विद्वान (प्रतिरन्न) दुःखों और दर्दों से ऊपर उठने की शक्ति (आयुः) आयु (जीवसे) जीवन के लिए (नमस्या) मेरा प्रणाम और पूजा (दैव्यम्) दिव्य लोगों के (जनम्) जीवन को ।

व्याख्या :-

परमात्मा की महिमा के क्या लाभ हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, शत्रुओं को पराजित करने के लिए सबसे महिमा प्राप्त तथा शक्तिशाली सत्ता है। वह उन लोगों में भी निम्न लक्षण सुनिश्चित करता है, जो उसकी महिमा करते हैं और सत्यता से उसका अनुसरण करते हैं :-

- (क) बोधि - ज्ञान का प्रकाश,
- (ख) मधुजिह्वः - मधुर वाणी वाले,
- (ग) स्वाहुतः - उत्तम आहुति यज्ञ के लिए,
- (घ) प्रस्कर्णवस्य प्रतिरन्न आयुः जीवसे - ऐसे महान विद्वानों में स्वस्थ जीवन और दीर्घायु के लिए दुःखों और दर्दों से ऊपर उठने की शक्ति देते हैं।

आईए! परमात्मा तथा ऐसे दिव्य जीवन वाले लोगों को अपने प्रणाम प्रस्तुत करें - नमस्या॒ दैव्यम्॒ जनम्॒ ।

जीवन में सार्थकता

अपने उच्चाधिकारियों का सम्मान और उनका अनुसरण करने के क्या लाभ होते हैं?

हमारे पारिवारिक या सामाजिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को अपने वृद्धजनों तथा उच्चाधिकारियों के साथ गहरा और गम्भीर सम्बन्ध बनाकर रखना चाहिए। निम्न लाभ प्राप्त करने के लिए उनका सम्मान, उनकी महिमा तथा उनका अनुसरण होना चाहिए :-

- (क) उनके ज्ञान के साथ उनका प्रकाश। महिमा प्राप्त उच्चाधिकारी अपने श्रद्धालुओं और अनुशासित लोगों पर अपने ज्ञान की वर्षा करते हैं।
- (ख) वृद्ध जनों के साथ हमारा दिव्य सम्बन्ध हमें मधुर भाषी बना देता है।
- (ग) हम समस्त त्याग कार्यों के लिए तैयार हो जाते हैं क्योंकि हम यह जान जाते हैं कि हमारे उच्चाधिकारी हमें उसका पर्याप्त प्रतिफल देंगे।
- (घ) महिमा प्राप्त उच्चाधिकारी ऐसे श्रद्धालुओं को इतनी शक्ति देते हैं कि वे कष्टों और दर्दों को सहन कर सकें क्योंकि वे भी उच्चाधिकारियों की तरह दूरदर्शी हो जाते हैं।

वे सब लोग जो वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मान, महिमा और अनुसरण करते हैं, उन्हें प्रत्येक संस्थान में सम्मान और प्रगति प्राप्त होती है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.7

होतारं विश्ववेदसुं सं हि त्वा विशं इन्धते ।
स आ वहं पुरुहुत् प्रचेतुसोऽग्ने देवाँ इह द्रवत् ॥

(होतारम) त्याग के लिए सब पदार्थों के दाता (विश्व वेदसम्) सबका धान रखने वाले (सम - इन्धते से पूर्व लगाकर) (हि) निश्चय से (त्वा) आप (विशः) सब प्रजाएं (इन्धते - सम इन्धते) हमारे हृदयों में स्थापित होकर प्रकाशित कीजिए (सः) वह (परमात्मा) (आवह) प्राप्त होवो (पुरुहूत) अनेकों द्वारा पुकारे गए (प्रचेतसः) प्रकाशवान चेतना वाले (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (देवान्) दिव्य (इह) यहाँ, इस जीवन में (द्रवत्) शीघ्र ।

व्याख्या :-

कौन परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकता है?

त्याग के लिए समस्त पदार्थों के दाता और सबके ज्ञाता, आप निश्चित रूप से सब जीवों के हृदय में स्थापित हों और सबको प्रकाशित करते हो। उन्हें सब बुलाते हैं, परन्तु वे केवल उन दिव्य लोगों की अनुभूति में आते हैं, जिनके पास प्रकाशित चेतना है।

जीवन में सार्थकता

हम जीवन में किसकी खोज कर रहे हैं?

परमात्मा सबमें स्थापित है, परन्तु केवल उन्हीं दिव्य लोगों की अनुभूति में होते हैं, जिनके पास प्रकाशित चेतना है। सांसारिक पदार्थों के लिए चलने वाले मन से ऊपर होती है प्रकाशित चेतना। यह इस सृष्टि की अव्यक्त सत्ता है। यह परमात्मा से सम्बन्धित है और इसीलिए यह दिव्य है। जो व्यक्ति इस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, पर ध्यान एकाग्र करता है, वह निश्चित रूप से प्रकाशित चेतना और परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

इसीलिए आध्यात्मिक खोज में लगे हुए लोग ऐसे दिव्य लोगों की खोज करते रहते हैं, जिससे उन्हें भी उच्च चेतना को प्राप्त करने का मार्गदर्शन मिल सके और वे भी परमात्मा की संगति के पथ पर अग्रसर हो सकें। ऐसे दिव्य लोगों की दृष्टि, उनका स्पर्श और उनकी वाणी सदैव प्रेरणादायक होती है।

इसी प्रकार, सांसारिक जीवन में भी हमें अपने वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के साथ श्रद्धावान सम्बन्ध बना कर रखने चाहिए, जिससे उत्तम प्रकार से हमारा उत्थान सम्भव हो। यदि हम अपने वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के रूप में ऐसे महान आत्माओं, दयालु और समर्थक हृदयों की संगति प्राप्त कर सकें तो हमारी प्रगति निश्चित है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.7

होतारं विश्ववेदसुं सं हि त्वा विशं इन्धते।
स आ वहं पुरुहुत् प्रचेतुसोऽग्ने देवाँ इह द्रवत् ॥

(होतारम्) त्याग के लिए सब पदार्थों के दाता (विश्व वेदसम्) सबका धान रखने वाले (सम - इन्धते से पूर्व लगाकर) (हि) निश्चय से (त्वा) आप (विशः) सब प्रजाएं (इन्धते - सम इन्धते) हमारे हृदयों में स्थापित होकर प्रकाशित कीजिए (सः) वह (परमात्मा) (आवह) प्राप्त होवो (पुरुहूत) अनेकों द्वारा पुकारे गए (प्रचेतसः) प्रकाशवान् चेतना वाले (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (देवान्) दिव्य (इह) यहाँ, इस जीवन में (द्रवत्) शीघ्र।

व्याख्या :-

कौन परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर सकता है?

त्याग के लिए समस्त पदार्थों के दाता और सबके ज्ञाता, आप निश्चित रूप से सब जीवों के हृदय में स्थापित हों और सबको प्रकाशित करते हो। उन्हें सब बुलाते हैं, परन्तु वे केवल उन दिव्य लोगों की अनुभूति में आते हैं, जिनके पास प्रकाशित चेतना है।

जीवन में सार्थकता

हम जीवन में किसकी खोज कर रहे हैं?

परमात्मा सबमें स्थापित है, परन्तु केवल उन्हीं दिव्य लोगों की अनुभूति में होते हैं, जिनके पास प्रकाशित चेतना है। सांसारिक पदार्थों के लिए चलने वाले मन से ऊपर होती है प्रकाशित चेतना। यह इस सृष्टि की अव्यक्त सत्ता है। यह परमात्मा से सम्बन्धित है और इसीलिए यह दिव्य है। जो व्यक्ति इस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, पर ध्यान एकाग्र करता है, वह निश्चित रूप से प्रकाशित चेतना और परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

इसीलिए आध्यात्मिक खोज में लगे हुए लोग ऐसे दिव्य लोगों की खोज करते रहते हैं, जिससे उन्हें भी उच्च चेतना को प्राप्त करने का मार्गदर्शन मिल सके और वे भी परमात्मा की संगति के पथ पर अग्रसर हो सकें। ऐसे दिव्य लोगों की दृष्टि, उनका स्पर्श और उनकी वाणी सदैव प्रेरणादायक होती है।

इसी प्रकार, सांसारिक जीवन में भी हमें अपने वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के साथ श्रद्धावान् सम्बन्ध बना कर रखने चाहिए, जिससे उत्तम प्रकार से हमारा उत्थान सम्भव हो। यदि हम अपने वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों के रूप में ऐसे महान् आत्माओं, दयालु और समर्थक हृदयों की संगति प्राप्त कर सकें तो हमारी प्रगति निश्चित है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.8

सुवितार्मुषसमिश्वना भगमुपि वृष्टिषु क्षपः ।
कण्वासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाह॑ स्वधर ॥

(सवितारम्) सूर्य को (उषसम्) ऊषाकाल के प्रकाश को (अश्विना) दोनों (वायु और जल) (भगम्) सुविधाओं को (अग्निम्) ऊर्जा को (वृष्टिषु) कामनाओं में, दिन में (क्षपः) रात्रि में (कण्वासः) महान विद्वान (त्वा) आपक (सुतसोमासः) उत्तम लक्षणों को उत्पन्न करने वाले, स्वयं में बुद्धिमान (इन्धते) उनमें दीप्ति कीजिए, प्रकाशित कीजिए (हव्यवाहम्) त्याग के लिए वस्तुएं देने वाले (स्वधर) स्वयं को त्याग के लिए प्रस्तुत करने वाले ।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें क्या देते हैं?

हमारा आध्यात्मिक दायित्व क्या है?

जीवन का प्रधान आध्यात्मिक उद्देश्य क्या है?

हे परमात्मा! आप त्याग के लिए सब पदार्थों को प्रदान करते हैं और दोषरहित सभी त्याग कार्यों में आप ही सफलता प्रदान करते हो। जो लोग सर्वोच्च दाता का अनुसरण करते हैं, वे स्वयं को त्याग के लिए समर्पित कर देते हैं।

आपके महान विद्वान, आपके प्रेमी उत्तम लक्षणों, बुद्धि और अपनी कामनाओं में सूर्य के प्रकाश और उसकी ऊर्जा जैसी दिव्य शक्तियों को धारण करके स्वयं को प्रकाशित करते हैं, जिससे उन्हें दिन और रात सुविधा प्राप्त हो।

यह मन्त्र हमें प्रेरित करता है कि हम सदैव यह ध्यान रखें कि इस जीवन का प्रधान और आध्यात्मिक उद्देश्य त्याग करना ही है।

जीवन में सार्थकता

हमारे माता-पिता हमारे लिए क्या करते हैं?

सांसारिक जीवन में हमारे क्या दायित्व हैं?

सांसारिक जीवन का प्रधान उद्देश्य क्या है?

परमात्मा की तरह हमारे माता-पिता, उच्चाधिकारी और मार्गदर्शक आदि हमारे जीवन के लिए दो महत्वपूर्ण दायित्व निभाते हैं:-

(क) वे हमारे सुविधाजनक जीवन के लिए सभी पदार्थ प्रदान करते हैं।

(ख) प्रत्येक कदम पर वे हमारी सफलता के लिए हमें आशीर्वाद देते हैं।

इस पृष्ठभूमि के साथ, यह हमारा कर्तव्य है कि :-

(क) हम उत्तम चारित्रिक लक्षणों और बुद्धि के साथ अपने मन और मस्तिष्क को प्रकाशित करें।

(ख) अपने शान्तिपूर्ण और सन्तुलित जीवन के लिए प्रतिक्षण हम आत्मा की ऊर्जा और उसके प्रकाश को बनाकर रखें, यही सांसारिक जीवन का प्रधान उद्देश्य समझा जाना चाहिए। इन लक्षणों और बुद्धि के साथ हम अपने लिए तथा अपने उच्चाधिकारियों और माता-पिता के लिए एक अच्छा नाम अर्जित कर सकते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.8

सुवितार्मुषसमिश्वना भगमुपि वृष्टिषु क्षपः ।
कण्वासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाह॑ स्वधर ॥

(सवितारम्) सूर्य को (उषसम्) ऊषाकाल के प्रकाश को (अश्विना) दोनों (वायु और जल) (भगम्) सुविधाओं को (अग्निम्) ऊर्जा को (वृष्टिषु) कामनाओं में, दिन में (क्षपः) रात्रि में (कण्वासः) महान विद्वान (त्वा) आपक (सुतसोमासः) उत्तम लक्षणों को उत्पन्न करने वाले, स्वयं में बुद्धिमान (इन्धते) उनमें दीप्ति कीजिए, प्रकाशित कीजिए (हव्यवाहम्) त्याग के लिए वस्तुएं देने वाले (स्वधर) स्वयं को त्याग के लिए प्रस्तुत करने वाले ।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें क्या देते हैं?

हमारा आध्यात्मिक दायित्व क्या है?

जीवन का प्रधान आध्यात्मिक उद्देश्य क्या है?

हे परमात्मा! आप त्याग के लिए सब पदार्थों को प्रदान करते हैं और दोषरहित सभी त्याग कार्यों में आप ही सफलता प्रदान करते हो। जो लोग सर्वोच्च दाता का अनुसरण करते हैं, वे स्वयं को त्याग के लिए समर्पित कर देते हैं।

आपके महान विद्वान, आपके प्रेमी उत्तम लक्षणों, बुद्धि और अपनी कामनाओं में सूर्य के प्रकाश और उसकी ऊर्जा जैसी दिव्य शक्तियों को धारण करके स्वयं को प्रकाशित करते हैं, जिससे उन्हें दिन और रात सुविधा प्राप्त हो।

यह मन्त्र हमें प्रेरित करता है कि हम सदैव यह ध्यान रखें कि इस जीवन का प्रधान और आध्यात्मिक उद्देश्य त्याग करना ही है।

जीवन में सार्थकता

हमारे माता-पिता हमारे लिए क्या करते हैं?

सांसारिक जीवन में हमारे क्या दायित्व हैं?

सांसारिक जीवन का प्रधान उद्देश्य क्या है?

परमात्मा की तरह हमारे माता-पिता, उच्चाधिकारी और मार्गदर्शक आदि हमारे जीवन के लिए दो महत्वपूर्ण दायित्व निभाते हैं:-

(क) वे हमारे सुविधाजनक जीवन के लिए सभी पदार्थ प्रदान करते हैं।

(ख) प्रत्येक कदम पर वे हमारी सफलता के लिए हमें आशीर्वाद देते हैं।

इस पृष्ठभूमि के साथ, यह हमारा कर्तव्य है कि :-

(क) हम उत्तम चारित्रिक लक्षणों और बुद्धि के साथ अपने मन और मस्तिष्क को प्रकाशित करें।

(ख) अपने शान्तिपूर्ण और सन्तुलित जीवन के लिए प्रतिक्षण हम आत्मा की ऊर्जा और उसके प्रकाश को बनाकर रखें, यही सांसारिक जीवन का प्रधान उद्देश्य समझा जाना चाहिए। इन लक्षणों और बुद्धि के साथ हम अपने लिए तथा अपने उच्चाधिकारियों और माता-पिता के लिए एक अच्छा नाम अर्जित कर सकते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.9

पतिहृद्युराणामग्ने दूतो विशामसि ।
उष्रुद्यु आ वहु सोमपीतये देवाँ अ॒य स्वर्दृशः ॥

(पतिः) पालक, संरक्षक (अध्वराणाम्) हिंसारहित त्याग कार्यों के (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (दूतः) दूत (विशाम्) समस्त जीव (असि) हो (उष्रुद्युः) प्रातः वेला में जागृत (आवह) प्राप्त होवो (सोमपीतये) दिव्य लक्षणों, आदतों को धारण और सेवन करने वाले (देवान्) दिव्य लोगों को (अ॒य) आज (स्वः दृशः) स्वः की अनुभूति प्राप्त करने वाले ।

व्याख्या :-

आध्यात्मिक पथ पर उन्नति किस प्रकार प्राप्त हो सकती है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उन समस्त हिंसारहित त्याग कार्यों का पालक और संरक्षक है, जो वास्तव में शुद्ध होते हैं। वह सब जीवों का दूत है।

प्रातःकालीन ब्रह्मबेला में उठने वाले लोग उसके दिव्य लक्षणों का पान करके और उन्हें धारण करके स्वयं उस ब्रह्म को प्राप्त करते हैं। ऐसे दिव्य लोगों के लिए वह ब्रह्म ही उनकी स्व-अनुभूति का अन्तिम लक्ष्य बन जाता है, जो परमात्मा की अनुभूति के बराबर होता है।

जीवन में सार्थकता

सांसारिक जीवन में उन्नति कैसे सुनिश्चित करें?

परमात्मा की अनुभूति और उसकी प्राप्ति हमारे अपने ही रूप में तथा हमारे अपने ही भीतर होगी। जीवन में उस स्तर को प्राप्त करने के लिए दिव्यता की प्राप्ति ही स्पष्ट मार्ग है। प्रातःकालीन वेला में उठने वाले लोगों को ध्यान साधनाओं और शुद्ध त्याग कार्यों से ही दिव्यता की प्राप्ति होती है।

- (क) त्याग कार्य (शरीर की शुद्धता अर्थात् अहंकाररहित अवस्था के साथ)
- (ख) ध्यान स्थित जीवन (मन की शुद्धता अर्थात् कामनारहित अवस्था के साथ)

त्याग और ध्यानपूर्ण जीवन जी दिव्यता की तरफ ले जाता है।

दिव्यता स्व-अनुभूति अर्थात् परमात्मा की अनुभूति की तरफ ले जाती है।

परमात्मा की अनुभूति के इस मार्ग से जो अनुपातिक सूत्र निकलता है, वह सांसारिक उपलब्धियों में भी लागू होता है। अपने समस्त प्रयास प्रधान लक्ष्य के लिए आहूत करो, जो आपके सामने हैं और गहरे ज्ञान की आहूति देकर उस पर अपना ध्यान एकाग्र करो। गहरा ज्ञान और अथक प्रयास किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करवा सकते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.9

पतिहृद्युराणामग्ने दूतो विशामसि ।
उष्रुद्यु आ वहु सोमपीतये द्रुवाँ अृद्य स्वर्दृशः ॥

(पतिः) पालक, संरक्षक (अध्वराणाम्) हिंसारहित त्याग कार्यों के (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (दूतः) दूत (विशाम्) समस्त जीव (असि) हो (उष्रुद्युः) प्रातः वेला में जागृत (आवह) प्राप्त होवो (सोमपीतये) दिव्य लक्षणों, आदतों को धारण और सेवन करने वाले (देवान्) दिव्य लोगों को (अद्य) आज (स्वः दृशः) स्वः की अनुभूति प्राप्त करने वाले ।

व्याख्या :-

आध्यात्मिक पथ पर उन्नति किस प्रकार प्राप्त हो सकती है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उन समस्त हिंसारहित त्याग कार्यों का पालक और संरक्षक है, जो वास्तव में शुद्ध होते हैं। वह सब जीवों का दूत है।

प्रातःकालीन ब्रह्मबेला में उठने वाले लोग उसके दिव्य लक्षणों का पान करके और उन्हें धारण करके स्वयं उस ब्रह्म को प्राप्त करते हैं। ऐसे दिव्य लोगों के लिए वह ब्रह्म ही उनकी स्व-अनुभूति का अन्तिम लक्ष्य बन जाता है, जो परमात्मा की अनुभूति के बराबर होता है।

जीवन में सार्थकता

सांसारिक जीवन में उन्नति कैसे सुनिश्चित करें?

परमात्मा की अनुभूति और उसकी प्राप्ति हमारे अपने ही रूप में तथा हमारे अपने ही भीतर होगी। जीवन में उस स्तर को प्राप्त करने के लिए दिव्यता की प्राप्ति ही स्पष्ट मार्ग है। प्रातःकालीन वेला में उठने वाले लोगों को ध्यान साधनाओं और शुद्ध त्याग कार्यों से ही दिव्यता की प्राप्ति होती है।

- (क) त्याग कार्य (शरीर की शुद्धता अर्थात् अहंकाररहित अवस्था के साथ)
- (ख) ध्यान स्थित जीवन (मन की शुद्धता अर्थात् कामनारहित अवस्था के साथ)

त्याग और ध्यानपूर्ण जीवन जी दिव्यता की तरफ ले जाता है।

दिव्यता स्व-अनुभूति अर्थात् परमात्मा की अनुभूति की तरफ ले जाती है।

परमात्मा की अनुभूति के इस मार्ग से जो अनुपातिक सूत्र निकलता है, वह सांसारिक उपलब्धियों में भी लागू होता है। अपने समस्त प्रयास प्रधान लक्ष्य के लिए आहूत करो, जो आपके सामने हैं और गहरे ज्ञान की आहूति देकर उस पर अपना ध्यान एकाग्र करो। गहरा ज्ञान और अथक प्रयास किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करवा सकते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.11

नि त्वा युजस्यु साधनम् ग्रे होतारं मृत्विजम् ।
मनुष्ठद्वे धीमहि प्रचेतसं जीरं दूतमर्त्यम् ॥

(नि) धीमहि से पूर्व लगाकर) (त्वा) आपके (यज्ञस्य) त्याग कार्यों के लिए (साधनम्) त्याग कार्यों को सफल बनाने के साधन (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (होतारम्) सब पदार्थों के देने वाले (यज्ञ के लिए) (ऋत्विजम्) पूजा के योग्य (यज्ञ में) (मनुष्य वत्) विचारशील मनुष्य (इव) जैसे (धीमहि) नि धीमहि) - लगातार धारण करते हैं (प्रचेतसम्) प्रकाशित ज्ञान धारण करने वाले (जीरम्) हमारे दुर्गणों को कमज़ोर करने वाले, गति वाले (अदूतम्) समस्त ज्ञान के दूत (अमर्त्यम्) न मरने योग्य ।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार यज्ञ कार्य में सहायता करते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! एक सच्चे मानव की तरह, हम लगातार आपको यज्ञों अर्थात् त्याग कार्यों की सफलता के साधन के रूप में धारण करते हैं।

- (क) आप होतारम् हो अर्थात् आप यज्ञ के लिए सब पदार्थों के देने वाले हैं।
- (ख) आप ऋत्विजम् हो अर्थात् आप यज्ञ में पूजा के योग्य हो।
- (ग) आप प्रचेतसम् हो अर्थात् प्रकाशित ज्ञान धारण करने वाली एकमात्र शक्ति।
- (घ) आप जीरम् हो अर्थात् हमारे दुर्गणों को कमज़ोर करने वाले और गति वाले हो।
- (ङ) आप दूतम् हो अर्थात् समस्त ज्ञान के दूत हो।
- (च) आप अमर्त्यम् हो अर्थात् केवल एकमात्र न मरने योग्य सत्ता।

परमात्मा के यह सब गुण-लक्षण त्यागशील पुरुषों द्वारा अपनाए जाते हैं, जिसके बदले में उनके त्याग कार्यों में उन्हें परमात्मा से सहायता प्राप्त होती है।

जीवन में सार्थकता

कौन वास्तविक मानव है?

किसे समाज से महान सम्मान और प्रेम प्राप्त होता है?

परमात्मा केवल त्याग कार्यों के माध्यम से ही इस सृष्टि का पालन करते हैं और जो लोग त्याग कार्य करते हैं, वही वास्तविक मानव हैं। इसलिए केवल ऐसे ही लोग परमात्मा के साथ निकटता और एकता का आनन्द लेते हुए उसकी अनुभूति प्राप्त करते हैं।

इसी प्रकार परिवार और समाज में त्याग करने वाला व्यक्ति समाज से महान सम्मान और प्रेम प्राप्त करता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.11

नि त्वा युजस्यु साधनम् ग्रे होतारं मृत्विजम् ।
मनुष्ठद्वे धीमहि प्रचेतसं जीरं दूतमर्त्यम् ॥

(नि) धीमहि से पूर्व लगाकर) (त्वा) आपके (यज्ञस्य) त्याग कार्यों के लिए (साधनम्) त्याग कार्यों को सफल बनाने के साधन (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (होतारम्) सब पदार्थों के देने वाले (यज्ञ के लिए) (ऋत्विजम्) पूजा के योग्य (यज्ञ में) (मनुष्य वत्) विचारशील मनुष्य (इव) जैसे (धीमहि) नि धीमहि) - लगातार धारण करते हैं (प्रचेतसम्) प्रकाशित ज्ञान धारण करने वाले (जीरम्) हमारे दुर्गणों को कमज़ोर करने वाले, गति वाले (अदूतम्) समस्त ज्ञान के दूत (अमर्त्यम्) न मरने योग्य ।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार यज्ञ कार्य में सहायता करते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! एक सच्चे मानव की तरह, हम लगातार आपको यज्ञों अर्थात् त्याग कार्यों की सफलता के साधन के रूप में धारण करते हैं।

- (क) आप होतारम् हो अर्थात् आप यज्ञ के लिए सब पदार्थों के देने वाले हैं।
- (ख) आप ऋत्विजम् हो अर्थात् आप यज्ञ में पूजा के योग्य हो।
- (ग) आप प्रचेतसम् हो अर्थात् प्रकाशित ज्ञान धारण करने वाली एकमात्र शक्ति।
- (घ) आप जीरम् हो अर्थात् हमारे दुर्गणों को कमज़ोर करने वाले और गति वाले हो।
- (ङ) आप दूतम् हो अर्थात् समस्त ज्ञान के दूत हो।
- (च) आप अमर्त्यम् हो अर्थात् केवल एकमात्र न मरने योग्य सत्ता।

परमात्मा के यह सब गुण-लक्षण त्यागशील पुरुषों द्वारा अपनाए जाते हैं, जिसके बदले में उनके त्याग कार्यों में उन्हें परमात्मा से सहायता प्राप्त होती है।

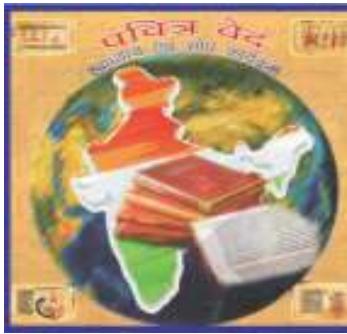
जीवन में सार्थकता

कौन वास्तविक मानव है?

किसे समाज से महान सम्मान और प्रेम प्राप्त होता है?

परमात्मा केवल त्याग कार्यों के माध्यम से ही इस सृष्टि का पालन करते हैं और जो लोग त्याग कार्य करते हैं, वही वास्तविक मानव हैं। इसलिए केवल ऐसे ही लोग परमात्मा के साथ निकटता और एकता का आनन्द लेते हुए उसकी अनुभूति प्राप्त करते हैं।

इसी प्रकार परिवार और समाज में त्याग करने वाला व्यक्ति समाज से महान सम्मान और प्रेम प्राप्त करता है।



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.10

अग्ने पूर्वा अनुषसो विभावसो दीदेथ॑ विश्वदर्शतः ।
असु ग्रामेष्वविता पुरोहितोऽसि॑ यज्ञेषु मानुषः ॥

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (पूर्वा:) पूर्व काल में (अनु) अनुसरण करते (उषसः) वर्तमान और भविष्य में (विभावसो) विशेष प्रकाश की वर्षा करने वाले (दीदेथ) अच्छे प्रकार से जानते हो (विश्व दर्शतः) समूचे ब्रह्माण्ड को देखने वाले (असि) हो (ग्रामेषु) समस्त आवास (अविता) संरक्षक (पुरोहितः) समूची सृष्टि का कल्याण करने वाले (असि) हो (यज्ञेषु) त्याग कार्यों में (मानुषः) मनुष्यों के।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सबका कल्याण सुनिश्चित करते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, पूर्व काल से विशेष प्रकाश की वर्षा करते रहे हैं और वर्तमान में भी कर रहे हैं। हमें यह जानना चाहिए कि वे समूचे संसार को जानने में सक्षम हैं।

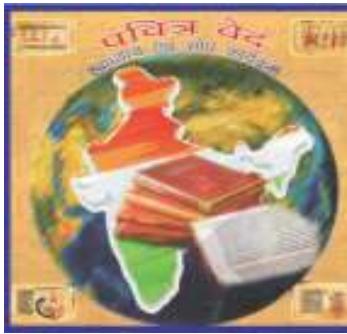
वे समस्त जीवों के संरक्षक हैं।

वे समूची सृष्टि का कल्याण महान व्यक्तियों के त्याग कार्यों अर्थात् यज्ञों से करते हैं।

जीवन में सार्थकता

एक नेता को सबका कल्याण कैसे सुनिश्चित करना चाहिए?

परमात्मा के सर्वोच्च नियम का अनुसरण करते हुए, प्रत्येक परिवार, संस्थान और राष्ट्र के मुखिया को त्याग कार्य करते हुए उदाहरण निर्धारित करने चाहिए, जिससे उनके सब अनुयायी भी त्याग पथ का अनुसरण कर सकें। त्याग का यह सिद्धान्त ही सबका कल्याण सुनिश्चित कर सकता है। आधुनिक युग की राजनीति धन लूटने पर केन्द्रित है, जब कि वैदिक विवेकशीलता समस्त राजनीतिज्ञों को यह प्रेरित करती है कि वे सबके कल्याण के लिए त्याग के पथ का अनुसरण करें। केवल यही नियम लोगों के हृदय और मन में शासकों को स्थापित कर सकता है।



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.10

अग्ने पूर्वा अनुषसो विभावसो दीदेथ॑ विश्वदर्शतः ।
असु ग्रामेष्विता पुरोहितोऽसि॑ यज्ञेषु मानुषः ॥

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (पूर्वा:) पूर्व काल में (अनु) अनुसरण करते (उषसः) वर्तमान और भविष्य में (विभावसो) विशेष प्रकाश की वर्षा करने वाले (दीदेथ) अच्छे प्रकार से जानते हो (विश्व दर्शतः) समूचे ब्रह्माण्ड को देखने वाले (असि) हो (ग्रामेषु) समस्त आवास (अविता) संरक्षक (पुरोहितः) समूची सृष्टि का कल्याण करने वाले (असि) हो (यज्ञेषु) त्याग कार्यों में (मानुषः) मनुष्यों के।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सबका कल्याण सुनिश्चित करते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, पूर्व काल से विशेष प्रकाश की वर्षा करते रहे हैं और वर्तमान में भी कर रहे हैं। हमें यह जानना चाहिए कि वे समूचे संसार को जानने में सक्षम हैं।

वे समस्त जीवों के संरक्षक हैं।

वे समूची सृष्टि का कल्याण महान व्यक्तियों के त्याग कार्यों अर्थात् यज्ञों से करते हैं।

जीवन में सार्थकता

एक नेता को सबका कल्याण कैसे सुनिश्चित करना चाहिए?

परमात्मा के सर्वोच्च नियम का अनुसरण करते हुए, प्रत्येक परिवार, संस्थान और राष्ट्र के मुखिया को त्याग कार्य करते हुए उदाहरण निर्धारित करने चाहिए, जिससे उनके सब अनुयायी भी त्याग पथ का अनुसरण कर सकें। त्याग का यह सिद्धान्त ही सबका कल्याण सुनिश्चित कर सकता है। आधुनिक युग की राजनीति धन लूटने पर केन्द्रित है, जब कि वैदिक विवेकशीलता समस्त राजनीतिज्ञों को यह प्रेरित करती है कि वे सबके कल्याण के लिए त्याग के पथ का अनुसरण करें। केवल यही नियम लोगों के हृदय और मन में शासकों को स्थापित कर सकता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.12

यद्गेवाना॑ मित्रमहः पुरोहितो ऽन्तरो यासि॑ दूत्यम् ।
सिन्धोरिव प्रस्वनितास ऊर्मयो ऽनेष्ट्राजन्ते अर्चयः ॥

(यत्) जब, जो (देवानाम्) दिव्य विद्वानों के (मित्रमहः) सर्वोच्च मित्र (पुरोहितः) सबका कल्याण करने वाले (अन्तरः) अन्तरःकाश, अन्तर्हृदय में स्थापित (यासि) प्राप्त होते हो (दूत्यम्) दूत की तरह, दूत का व्यवहार (सिन्धोरिव) समुद्र की तरह (प्रस्वनितास) ध्वनि करते हुए (ऊर्मयः) लहरें (अग्नेः) दिव्य लोगों के जीवन (भ्राजन्ते) चमकते हैं (अर्चयः) ज्ञान की किरणें ।

व्याख्या :-

किसके हृदय में परमात्मा स्थापित हैं?

दिव्य लोग दिखने में कैसे लगते हैं?

जो दिव्य विद्वान दूसरों के कल्याण के लिए त्याग कार्य करते हैं, उनका सर्वोच्च मित्र उनके हृदय में स्थापित होता है। वह ऐसे लोगों को दिव्य दूत के रूप में प्राप्त होता है और वैसा ही दिखाई देता है। ऐसे दिव्य लोगों का जीवन ज्ञानरूपी किरणों के रूप में इस प्रकार चमकता है, जैसे समुद्र की लहरें ध्वनि करती हुई उपस्थित होती हैं।

जीवन में सार्थकता

प्रेरणादायक प्रसिद्धि और महिमा किसको प्राप्त होती है?

जो लोग अपने हितों का त्याग कर देते हैं, वे दिव्य समझे जाते हैं क्योंकि उनके हृदय में परमात्मा स्थापित होते हैं। उनके त्याग समाज में चर्चा का विषय बनते हैं और स्वयं में बोलते हुए दिखाई देते हैं। ऐसे लोग समाज के ढारा गहरे हृदय को स्पर्श करती हुई प्रशंसा के साथ महान और दिव्य प्रेरणा के रूप में स्वीकार होते हैं। वे दिव्य रूप में चमकते हैं क्योंकि उनके भीतर दिव्यता की किरणें चमकती हैं। इसलिए केवल पवित्र और पूर्ण त्याग ही दिव्य ज्ञान के रूप में प्रकट होते हैं और प्रेरणादायक प्रसिद्धि और महिमा का कारण बनते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.12

यद्गेवाना॑ मित्रमहः पुरोहितो ऽन्तरो यासि॑ दूत्यम् ।
सिन्धोरिव प्रस्वनितास ऊर्मयो ऽनेष्ट्राजन्ते अर्चयः ॥

(यत्) जब, जो (देवानाम्) दिव्य विद्वानों के (मित्रमहः) सर्वोच्च मित्र (पुरोहितः) सबका कल्याण करने वाले (अन्तरः) अन्तरःकाश, अन्तर्हृदय में स्थापित (यासि) प्राप्त होते हो (दूत्यम्) दूत की तरह, दूत का व्यवहार (सिन्धोरिव) समुद्र की तरह (प्रस्वनितास) ध्वनि करते हुए (ऊर्मयः) लहरें (अग्नेः) दिव्य लोगों के जीवन (भ्राजन्ते) चमकते हैं (अर्चयः) ज्ञान की किरणें ।

व्याख्या :-

किसके हृदय में परमात्मा स्थापित हैं?

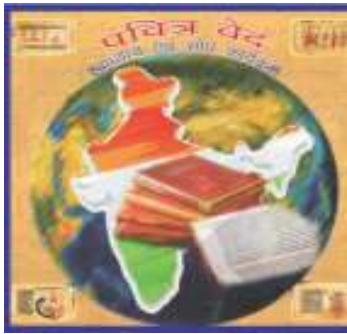
दिव्य लोग दिखने में कैसे लगते हैं?

जो दिव्य विद्वान दूसरों के कल्याण के लिए त्याग कार्य करते हैं, उनका सर्वोच्च मित्र उनके हृदय में स्थापित होता है। वह ऐसे लोगों को दिव्य दूत के रूप में प्राप्त होता है और वैसा ही दिखाई देता है। ऐसे दिव्य लोगों का जीवन ज्ञानरूपी किरणों के रूप में इस प्रकार चमकता है, जैसे समुद्र की लहरें ध्वनि करती हुई उपस्थित होती हैं।

जीवन में सार्थकता

प्रेरणादायक प्रसिद्धि और महिमा किसको प्राप्त होती है?

जो लोग अपने हितों का त्याग कर देते हैं, वे दिव्य समझे जाते हैं क्योंकि उनके हृदय में परमात्मा स्थापित होते हैं। उनके त्याग समाज में चर्चा का विषय बनते हैं और स्वयं में बोलते हुए दिखाई देते हैं। ऐसे लोग समाज के ढारा गहरे हृदय को स्पर्श करती हुई प्रशंसा के साथ महान और दिव्य प्रेरणा के रूप में स्वीकार होते हैं। वे दिव्य रूप में चमकते हैं क्योंकि उनके भीतर दिव्यता की किरणें चमकती हैं। इसलिए केवल पवित्र और पूर्ण त्याग ही दिव्य ज्ञान के रूप में प्रकट होते हैं और प्रेरणादायक प्रसिद्धि और महिमा का कारण बनते हैं।



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.13

श्रुधि श्रुत्कर्णु वह्निभिर्द्वैरग्ने सुयावभिः ।
आ सीदन्तु बुर्हिषि मित्रो अर्युमा प्रातुर्यावाणो अध्वरम ॥

(श्रुधि) सुनो (श्रुत्कर्ण) सुनने के लिए सक्षम (वह्निभिः) मुक्ति देने में सक्षम, सत्य अवस्था (देवैः) दिव्य (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (सयावभिः) सबके साथ (समान रूप से) (आ सीदन्तु) प्राप्त होने के लिए, स्थापित होने के लिए (बुर्हिषि) हृदयाकाश में (मित्रः) प्रिय और लाभकारी (अर्यमा) न्यायकारी बुद्धि (प्रातुर्यावाणः) प्रतिदिन सक्रिय (अध्वरम) दोषरहित, हिंसारहित त्याग ।

व्याख्या :-

हमारी प्रार्थनाओं को सुनने के लिए कौन सक्षम है?

वह किसकी सुनता है?

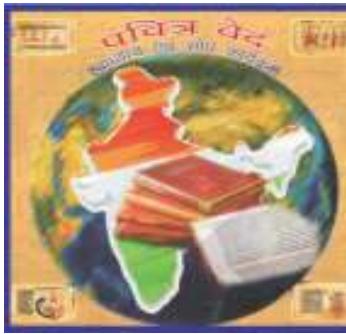
केवल दिव्य सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ही हमारी प्रार्थनाओं को सुन सकता है क्योंकि वह सुनने में सक्षम है; मुक्ति अर्थात् सत्य अवस्था प्रदान करने में सक्षम है; प्राप्त करने तथा अपने हृदय आकाश में स्थापित करने के योग्य है क्योंकि वह सबके साथ एक है; वह सबका प्रिय और लाभकारी है; वह न्यायिक बुद्धि वाला तथा सर्वोच्च कर्ता है।

वह केवल उनकी सुनता है, जो प्रतिदिन प्रातः काल से दोषरहित तथा हिंसारहित त्याग कार्यों के लिए सक्रिय रहते हैं ।

जीवन में सार्थकता

कौन सबसे गहरे हृदय स्पर्शी सम्मान के साथ उच्च अवस्था को प्राप्त करता है?

हमारा जीवन सदैव शुद्ध, दोष रहित तथा हिंसा रहित त्याग कार्यों में लगा रहना चाहिए। ऐसा जीवन ही अहंकार रहित तथा इच्छा रहित मानसिकता वाला हो सकता है। हमारे माता-पिता तथा उच्चाधिकारियों सहित सारा समाज केवल ऐसे ही इच्छा रहित और लाभकारी लोगों को पसन्द करता है और उन्हें हर सम्भव सहायता देता है। समाज अहंकार रहित और लाभकारी सहयोग को लेने के लिए सदैव तैयार रहता है। इस पृष्ठभूमि के साथ ही हम समाज में उच्च स्तर तथा सबका हृदय स्पर्शी सम्मान प्राप्त कर सकते हैं।



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.44.13

श्रुधि श्रुत्कर्णु वह्निभिर्द्वैरग्ने सुयावभिः ।
आ सीदन्तु बुर्हिषि मित्रो अर्युमा प्रातुर्यावाणो अध्वरम ॥

(श्रुधि) सुनो (श्रुत्कर्ण) सुनने के लिए सक्षम (वह्निभिः) मुक्ति देने में सक्षम, सत्य अवस्था (देवैः) दिव्य (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (सयावभिः) सबके साथ (समान रूप से) (आ सीदन्तु) प्राप्त होने के लिए, स्थापित होने के लिए (बुर्हिषि) हृदयाकाश में (मित्रः) प्रिय और लाभकारी (अर्यमा) न्यायकारी बुद्धि (प्रातुर्यावाणः) प्रतिदिन सक्रिय (अध्वरम) दोषरहित, हिंसारहित त्याग ।

व्याख्या :-

हमारी प्रार्थनाओं को सुनने के लिए कौन सक्षम है?

वह किसकी सुनता है?

केवल दिव्य सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ही हमारी प्रार्थनाओं को सुन सकता है क्योंकि वह सुनने में सक्षम है; मुक्ति अर्थात् सत्य अवस्था प्रदान करने में सक्षम है; प्राप्त करने तथा अपने हृदय आकाश में स्थापित करने के योग्य है क्योंकि वह सबके साथ एक है; वह सबका प्रिय और लाभकारी है; वह न्यायिक बुद्धि वाला तथा सर्वोच्च कर्ता है ।

वह केवल उनकी सुनता है, जो प्रतिदिन प्रातः काल से दोषरहित तथा हिंसारहित त्याग कार्यों के लिए सक्रिय रहते हैं ।

जीवन में सार्थकता

कौन सबसे गहरे हृदय स्पर्शी सम्मान के साथ उच्च अवस्था को प्राप्त करता है?

हमारा जीवन सदैव शुद्ध, दोष रहित तथा हिंसा रहित त्याग कार्यों में लगा रहना चाहिए । ऐसा जीवन ही अहंकार रहित तथा इच्छा रहित मानसिकता वाला हो सकता है । हमारे माता-पिता तथा उच्चाधिकारियों सहित सारा समाज केवल ऐसे ही इच्छा रहित और लाभकारी लोगों को पसन्द करता है और उन्हें हर सम्भव सहायता देता है । समाज अहंकार रहित और लाभकारी सहयोग को लेने के लिए सदैव तैयार रहता है । इस पृष्ठभूमि के साथ ही हम समाज में उच्च स्तर तथा सबका हृदय स्पर्शी सम्मान प्राप्त कर सकते हैं ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.14

शृण्वन्तु स्तोमं मुरुतः सुदानवोऽग्निजिह्वा ऋत्तावृथः ।
पिबतु सोमुं वरुणो धृतत्रतोऽ शिवभ्यासुषसा सजूः ॥

(शृण्वन्तु) सुनो (स्तोमम्) ज्ञान की महिमा और प्रकाश (मरुतः) शरीर और मन से सक्रिय (सुदानवः) उत्तम दानी (अग्नि जिह्वा) दिव्य ज्ञान वाली वाणी (ऋत्तावृथः) सत्य और उत्तम कार्यों के सम्बद्धक (पिबतु) पीओ (सोमम्) गुण (वरुणः) सबके मित्र (धृतत्रतः) उत्तम संकल्पों को धारण करने वाले (अशिवभ्याम्) अश्विनों के साथ, दोनों प्राणों के साथ (उपसा सजूः) प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के साथ।

व्याख्या :-

कौन परमात्मा की महिमा सुनने के योग्य है?

परमात्मा की महिमा सुनने के क्या परिणाम हैं?

जो परमात्मा की महिमाओं को या उसके ज्ञान के प्रकाश को सुनता है, वह निम्न लक्षणों को प्राप्त कर लेता है :-

(क) मरुतः - वह शरीर और मन से सक्रिय होता है।

(ख) सुदानवः - वह उत्तम दानी होता है।

(ग) अग्नि जिह्वा - वह दिव्य ज्ञान वाली वाणी प्राप्त करता है।

(घ) ऋत्तावृथः - वह सत्य और उत्तम कार्यों का सम्बद्धन करता है।

परमात्मा की महिमाओं को सुनने के योग्य बनाने के लिए, हमें निम्न लक्षण धारण करने चाहिए :-

(क) पिबतु सोमम् - हमें जीवन में गुणों को पीकर अपनाना चाहिए।

(ख) वरुणः - हमें सबके मित्र की तरह व्यवहार करना चाहिए।

(ग) धृतत्रतः अशिवभ्याम् उपसा सजूः - हमें अश्विनों अर्थात् दोनों प्राणों के साथ तथा प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के साथ उत्तम संकल्पों को धारण करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

दिव्य लक्षण क्या हैं?

दिव्य लक्षणों को कैसे प्राप्त करें?

जो व्यक्ति एक पूर्वयोग्यता की तरह जीवन में निम्न तीन लक्षणों को धारण करता है, उसे परिणाम की तरह चार लक्षण स्वाभाविक रूप से प्राप्त होते हैं।

तीन मूल लक्षण निम्न हैं :-

(क) सद्गुणों को अपनाओ,

(ख) सबके मित्र बनो,

(ग) सदैव उत्तम संकल्पों को धारण करो।

उपरोक्त के परिणाम स्वरूप चार दिव्य लक्षण प्राप्त होंगे :-

(क) वह सदैव शरीर और मन में सक्रिय रहता है और कभी रोगी नहीं होता।

(ख) वह समाज में उत्तम दानी बनता है। वह केवल भौतिक सामान ही वितरित नहीं करता, अपितु महान ज्ञान और आशीर्वाद भी वितरित करता है।

(ग) वह दिव्य ज्ञान की वाणी धारण करता है। वह सत्य बोलता है और उसके विचारों को समाज में निर्धारित सम्मान प्राप्त होता है।

(घ) वह सत्य, सद्गुणों और उत्तम त्याग कार्यों का समाज में सम्बद्धन करता है।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query - Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेद मन्त्र 1.44.14

शृण्वन्तु स्तोमं मुरुतः सुदानवोऽग्निजिह्वा ऋत्तावृथः ।
पिबतु सोमुं वरुणो धृतत्रतोऽ शिवभ्यासुषसा सजूः ॥

(शृण्वन्तु) सुनो (स्तोमम्) ज्ञान की महिमा और प्रकाश (मरुतः) शरीर और मन से सक्रिय (सुदानवः) उत्तम दानी (अग्नि जिह्वा) दिव्य ज्ञान वाली वाणी (ऋत्तावृथः) सत्य और उत्तम कार्यों के सम्बद्धक (पिबतु) पीओ (सोमम्) गुण (वरुणः) सबके मित्र (धृतत्रतः) उत्तम संकल्पों को धारण करने वाले (अशिवभ्याम्) अश्विनों के साथ, दोनों प्राणों के साथ (उपसा सजूः) प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के साथ।

व्याख्या :-

कौन परमात्मा की महिमा सुनने के योग्य है?

परमात्मा की महिमा सुनने के क्या परिणाम हैं?

जो परमात्मा की महिमाओं को या उसके ज्ञान के प्रकाश को सुनता है, वह निम्न लक्षणों को प्राप्त कर लेता है :-

(क) मरुतः - वह शरीर और मन से सक्रिय होता है।

(ख) सुदानवः - वह उत्तम दानी होता है।

(ग) अग्नि जिह्वा - वह दिव्य ज्ञान वाली वाणी प्राप्त करता है।

(घ) ऋत्तावृथः - वह सत्य और उत्तम कार्यों का सम्बद्धन करता है।

परमात्मा की महिमाओं को सुनने के योग्य बनाने के लिए, हमें निम्न लक्षण धारण करने चाहिए :-

(क) पिबतु सोमम् - हमें जीवन में गुणों को पीकर अपनाना चाहिए।

(ख) वरुणः - हमें सबके मित्र की तरह व्यवहार करना चाहिए।

(ग) धृतत्रतः अशिवभ्याम् उपसा सजूः - हमें अश्विनों अर्थात् दोनों प्राणों के साथ तथा प्रातःकालीन सूर्य की किरणों के साथ उत्तम संकल्पों को धारण करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता

दिव्य लक्षण क्या हैं?

दिव्य लक्षणों को कैसे प्राप्त करें?

जो व्यक्ति एक पूर्वयोग्यता की तरह जीवन में निम्न तीन लक्षणों को धारण करता है, उसे परिणाम की तरह चार लक्षण स्वाभाविक रूप से प्राप्त होते हैं।

तीन मूल लक्षण निम्न हैं :-

(क) सद्गुणों को अपनाओ,

(ख) सबके मित्र बनो,

(ग) सदैव उत्तम संकल्पों को धारण करो।

उपरोक्त के परिणाम स्वरूप चार दिव्य लक्षण प्राप्त होंगे :-

(क) वह सदैव शरीर और मन में सक्रिय रहता है और कभी रोगी नहीं होता।

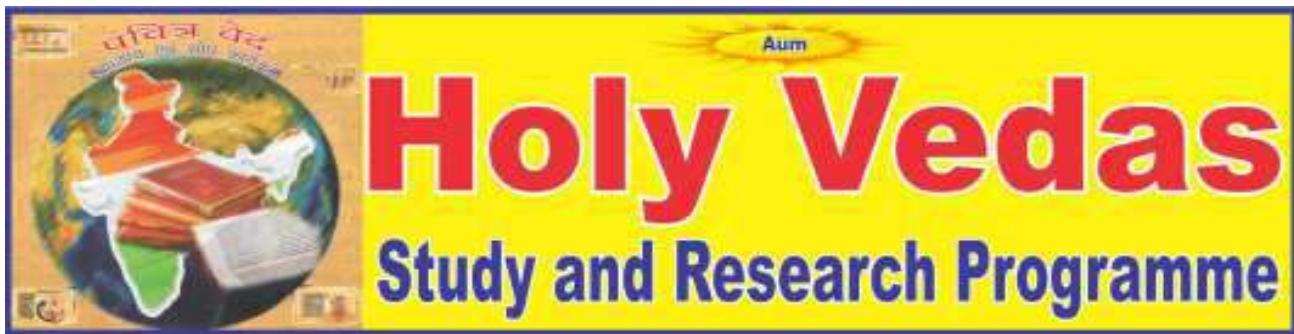
(ख) वह समाज में उत्तम दानी बनता है। वह केवल भौतिक सामान ही वितरित नहीं करता, अपितु महान ज्ञान और आशीर्वाद भी वितरित करता है।

(ग) वह दिव्य ज्ञान की वाणी धारण करता है। वह सत्य बोलता है और उसके विचारों को समाज में निर्धारित सम्मान प्राप्त होता है।

(घ) वह सत्य, सद्गुणों और उत्तम त्याग कार्यों का समाज में सम्बद्धन करता है।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query - Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.1

त्वमर्गु वसूरिह रुद्राँ आदित्याँ उत ।
यजा॑ स्वध्वरं जनु॑ मनुजातं घृतपृष्ठम् ॥

(त्वम्) आप (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (वसून्) सर्वत्र व्यापक (इह) यहाँ, इस जीवन में (रुद्रान्) बुराईयों को रुलाने वाले (सब कर्मों का फल देने की शक्ति से) (आदित्यान्) ज्ञान का सर्वोच्च प्रकाश (उत) और (यज) संगति करो (स्वध्वरम्) दोषरहित और हिंसारहित त्याग कार्य (जनम्) उत्पन्न, प्रोत्साहित (मनुजातम्) वास्तविक मानव (परमात्मा तथा उसके ज्ञान की संगति के लिए समर्पित) (घृतपृष्ठम्) पोषक, शक्तिदाता (शुद्ध धी की तरह)।

व्याख्या :-

परमात्मा के क्या लक्षण हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप निम्न लक्षणों से सुसज्जित हो :-

- (क) वसून् - सर्वत्र व्यापक,
- (ख) रुद्रान् - बुराईयों को रुलाने वाले (सब कर्मों का फल देने की शक्ति से),
- (ग) आदित्यान् - ज्ञान का सर्वोच्च प्रकाश।

परमात्मा हमें इस जीवन में निम्न लक्षणों से संयुक्त कर सकते हैं :-

- (क) स्वध्वरम् - दोषरहित और हिंसारहित त्याग कार्यों को करने में सक्षम बनाते हैं।
- (ख) जनम् मनुजातम् - हमें वास्तविक मानव (परमात्मा तथा उसके ज्ञान की संगति के लिए समर्पित) उत्पन्न करने और प्रोत्साहित करने के योग्य बनाते हैं।
- (ग) घृतपृष्ठम् - हमें शुद्ध धी की तरह पोषक और शक्तिदाता बनाते हैं।

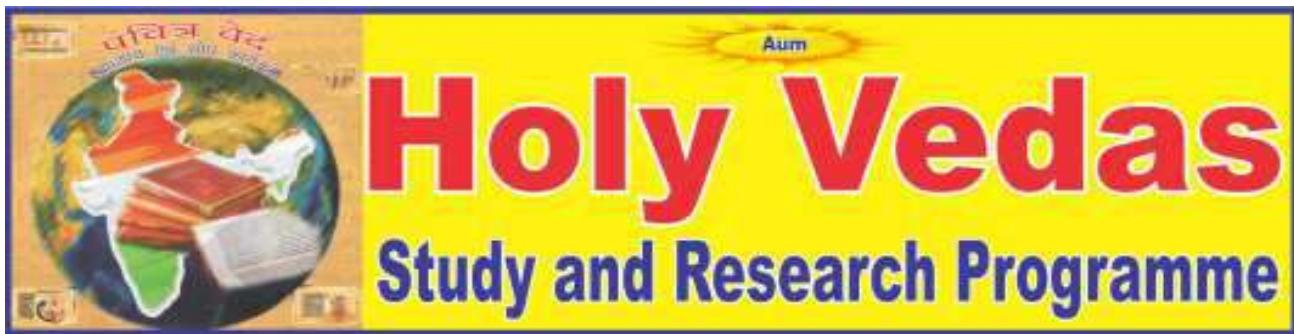
जीवन में सार्थकता

जो लोग ईश्वर पर ध्यान करते हैं, उनके क्या लक्षण होते हैं?

परमात्मा के तीन महत्वपूर्ण लक्षण हैं - सर्वविद्यमान, न्यायकारी और सर्वोच्च ज्ञान।

बच्चों का यह मनोविज्ञान है कि वे नकल करते हैं और बिना किसी निर्देश के दूसरों का अनुसरण करते हैं। यदि आप बच्चे को अहिंसक बनाना चाहते हैं तो आपको अपने गुस्से पर पूर्ण नियन्त्रण करना चाहिए। आप सदा सत्य बोलने वाले बन जाओ, आपके बच्चे भी सत्यवादी होंगे।

यदि आप परमात्मा पर और उनके लक्षणों पर ध्यान लगाओ तो आप भी स्वतः ही वही बन जाओगे। उपरोक्त तीन लक्षणों पर ध्यान लगाओ और धारणा बना लो कि वह सर्वव्यापक है तो आपके दोषरहित और हिंसारहित त्याग कार्य आपको भी सर्वत्र प्रसिद्ध कर देंगे। उसकी न्यायकारी बुद्धि पर ध्यान लगाओ तो सभी महान और न्यायिक विवेक वाले लोग आपकी बुद्धि को पसंद करेंगे। उसके सर्वोच्च ज्ञान पर ध्यान लगाओ तो आपका मन, आपके विचार और आपका सम्पूर्ण व्यक्तित्व सबके लिए लाभकारी और शक्तिदाता बन जाएगा।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.1

त्वमर्गु वसूरिह रुद्राँ आदित्याँ उत ।
यजा॑ स्वध्वरं जनु॑ मनुजातं घृतपृष्ठम् ॥

(त्वम्) आप (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (वसून्) सर्वत्र व्यापक (इह) यहाँ, इस जीवन में (रुद्रान्) बुराईयों को रुलाने वाले (सब कर्मों का फल देने की शक्ति से) (आदित्यान्) ज्ञान का सर्वोच्च प्रकाश (उत) और (यज) संगति करो (स्वध्वरम्) दोषरहित और हिंसारहित त्याग कार्य (जनम्) उत्पन्न, प्रोत्साहित (मनुजातम्) वास्तविक मानव (परमात्मा तथा उसके ज्ञान की संगति के लिए समर्पित) (घृतपृष्ठम्) पोषक, शक्तिदाता (शुद्ध धी की तरह)।

व्याख्या :-

परमात्मा के क्या लक्षण हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! आप निम्न लक्षणों से सुसज्जित हो :-

- (क) वसून् - सर्वत्र व्यापक,
- (ख) रुद्रान् - बुराईयों को रुलाने वाले (सब कर्मों का फल देने की शक्ति से),
- (ग) आदित्यान् - ज्ञान का सर्वोच्च प्रकाश।

परमात्मा हमें इस जीवन में निम्न लक्षणों से संयुक्त कर सकते हैं :-

- (क) स्वध्वरम् - दोषरहित और हिंसारहित त्याग कार्यों को करने में सक्षम बनाते हैं।
- (ख) जनम् मनुजातम् - हमें वास्तविक मानव (परमात्मा तथा उसके ज्ञान की संगति के लिए समर्पित) उत्पन्न करने और प्रोत्साहित करने के योग्य बनाते हैं।
- (ग) घृतपृष्ठम् - हमें शुद्ध धी की तरह पोषक और शक्तिदाता बनाते हैं।

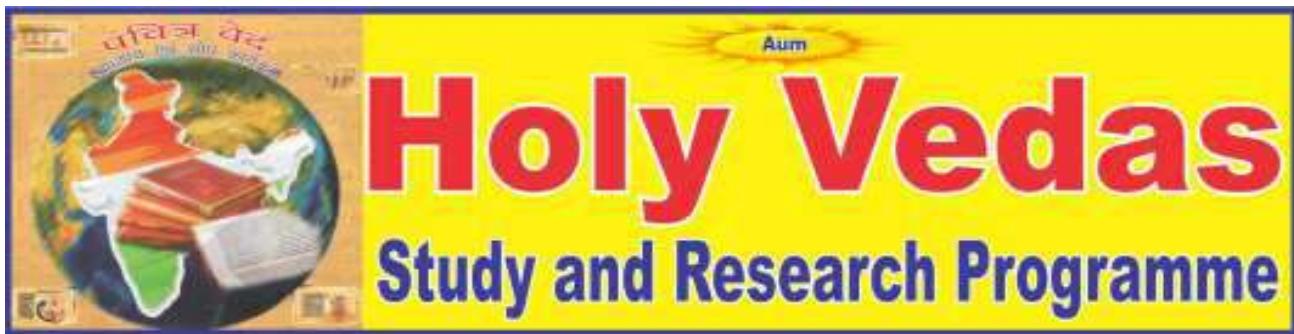
जीवन में सार्थकता

जो लोग ईश्वर पर ध्यान करते हैं, उनके क्या लक्षण होते हैं?

परमात्मा के तीन महत्वपूर्ण लक्षण हैं - सर्वविद्यमान, न्यायकारी और सर्वोच्च ज्ञान।

बच्चों का यह मनोविज्ञान है कि वे नकल करते हैं और बिना किसी निर्देश के दूसरों का अनुसरण करते हैं। यदि आप बच्चे को अहिंसक बनाना चाहते हैं तो आपको अपने गुस्से पर पूर्ण नियन्त्रण करना चाहिए। आप सदा सत्य बोलने वाले बन जाओ, आपके बच्चे भी सत्यवादी होंगे।

यदि आप परमात्मा पर और उनके लक्षणों पर ध्यान लगाओ तो आप भी स्वतः ही वही बन जाओगे। उपरोक्त तीन लक्षणों पर ध्यान लगाओ और धारणा बना लो कि वह सर्वव्यापक है तो आपके दोषरहित और हिंसारहित त्याग कार्य आपको भी सर्वत्र प्रसिद्ध कर देंगे। उसकी न्यायकारी बुद्धि पर ध्यान लगाओ तो सभी महान और न्यायिक विवेक वाले लोग आपकी बुद्धि को पसंद करेंगे। उसके सर्वोच्च ज्ञान पर ध्यान लगाओ तो आपका मन, आपके विचार और आपका सम्पूर्ण व्यक्तित्व सबके लिए लाभकारी और शक्तिदाता बन जाएगा।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.2

श्रृष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः ।
तान् रोहिदश्व गिर्वणुस्त्रयस्त्रिंशतुमा वंह ॥

(श्रृष्टीवानः) सृष्टि की वास्तविकता को जानने वाला (हि) निश्चित रूप से (दाशुषे) उत्तम दानी और त्यागशील व्यक्ति (देवाः) दिव्य लोग (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (विचेतसः) विशेष चेतना (तान्) वे (रोहिदश्व) सदैव प्रगतिशील और सर्वत्र व्यापक, हमारी इन्द्रियों को शक्तिशाली बनाने में सहायक (गिर्वणः) विशेष वाणियों से प्रशंसित (त्रयस्त्रिंशतम्) 33 दिव्य गुण (आवह) उन्हें हमें प्राप्त कराईए।

व्याख्या :-

सृष्टि की वास्तविकता को जानने के बाद क्या प्राप्त होता है?

दिव्यता प्राप्त करने के बाद कोई क्या बन जाता है?

श्रृष्टीवानः हि दाशुषे - सृष्टि की वास्तविकता को जानने वाला निश्चित रूप से उत्तम दानी और त्यागशील व्यक्ति होता है।

देवाः अग्ने विचेतसः : - सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा दिव्य लोगों को विशेष चेतना के साथ चमका देता है।

परमात्मा सदैव प्रगतिशील है और सर्वत्र व्यापक है, इन्द्रियों को शक्तिशाली बनाने में सबका सहायक है। अतः उसकी विशेष वाणियों से प्रशंसा होती है। वही समस्त सृष्टिवानः तथा देवाः लोगों को 33 दिव्य शुभ गुण प्राप्त करने के योग्य बनाता है।

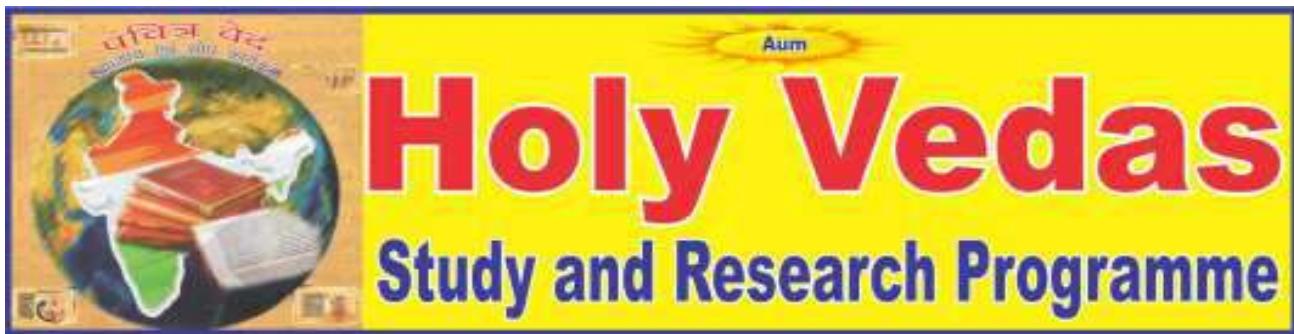
जीवन में सार्थकता

इस सृष्टि की क्या वास्तविकता है?

विशेष चेतना क्या है?

इस सृष्टि की वास्तविकता है कि सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! ने स्वयं को असंख्य रूपों और प्रकारों में प्रकट किया है, जिससे सृष्टि कहते हैं और जिसमें समस्त जीव तथा निर्जीव तत्व सम्मिलित हैं। उस सृष्टि निर्माता के साथ अपने मन को ध्यान के माध्यम से जोड़ने के स्थान पर तथा उसकी अनुभूति प्राप्त करने के स्थान पर सामान्यतया मानव मन इस सृष्टि का आनन्द लेने में ही लगा रहता है। एक बार जब व्यक्ति गहराई से सृष्टि की वास्तविकता को समझ लेता है तो वह निश्चित रूप से उस निर्माता के साथ अपने आपको जोड़कर आनन्दमयी अवस्था का आनन्द लेता है और स्वयं को सृष्टि से पृथक रखता है। इस प्रकार वह उत्तम दानी और त्यागशील व्यक्ति बन जाता है।

अनुभूति के इस पथ पर चलते हुए वह निश्चित रूप से एक दिव्य मन बन जाएगा और उसे परमात्मा के साथ स्थाई सम्बन्ध के रूप में सर्वोच्च उपहार प्राप्त होगा, जिसका नाम है विशेष चेतना। ऐसा व्यक्ति अन्य लोगों को कई प्रकार से प्रेरित करने के योग्य होता है - देखकर, स्पर्श करके या वार्ता करके।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.2

श्रृष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः ।
तान् रोहिदश्व गिर्वणुस्त्रयस्त्रिंशतुमा वंह ॥

(श्रृष्टीवानः) सृष्टि की वास्तविकता को जानने वाला (हि) निश्चित रूप से (दाशुषे) उत्तम दानी और त्यागशील व्यक्ति (देवाः) दिव्य लोग (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (विचेतसः) विशेष चेतना (तान्) वे (रोहिदश्व) सदैव प्रगतिशील और सर्वत्र व्यापक, हमारी इन्द्रियों को शक्तिशाली बनाने में सहायक (गिर्वणः) विशेष वाणियों से प्रशंसित (त्रयस्त्रिंशतम्) 33 दिव्य गुण (आवह) उन्हें हमें प्राप्त कराईए।

व्याख्या :-

सृष्टि की वास्तविकता को जानने के बाद क्या प्राप्त होता है?

दिव्यता प्राप्त करने के बाद कोई क्या बन जाता है?

श्रृष्टीवानः हि दाशुषे - सृष्टि की वास्तविकता को जानने वाला निश्चित रूप से उत्तम दानी और त्यागशील व्यक्ति होता है।

देवाः अग्ने विचेतसः : - सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा दिव्य लोगों को विशेष चेतना के साथ चमका देता है।

परमात्मा सदैव प्रगतिशील है और सर्वत्र व्यापक है, इन्द्रियों को शक्तिशाली बनाने में सबका सहायक है। अतः उसकी विशेष वाणियों से प्रशंसा होती है। वही समस्त सृष्टिवानः तथा देवाः लोगों को 33 दिव्य शुभ गुण प्राप्त करने के योग्य बनाता है।

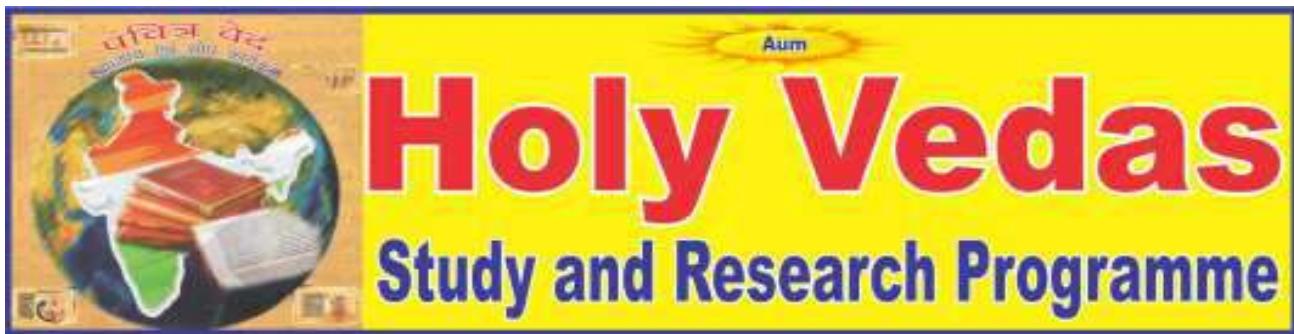
जीवन में सार्थकता

इस सृष्टि की क्या वास्तविकता है?

विशेष चेतना क्या है?

इस सृष्टि की वास्तविकता है कि सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! ने स्वयं को असंख्य रूपों और प्रकारों में प्रकट किया है, जिससे सृष्टि कहते हैं और जिसमें समस्त जीव तथा निर्जीव तत्व सम्मिलित हैं। उस सृष्टि निर्माता के साथ अपने मन को ध्यान के माध्यम से जोड़ने के स्थान पर तथा उसकी अनुभूति प्राप्त करने के स्थान पर सामान्यतया मानव मन इस सृष्टि का आनन्द लेने में ही लगा रहता है। एक बार जब व्यक्ति गहराई से सृष्टि की वास्तविकता को समझ लेता है तो वह निश्चित रूप से उस निर्माता के साथ अपने आपको जोड़कर आनन्दमयी अवस्था का आनन्द लेता है और स्वयं को सृष्टि से पृथक रखता है। इस प्रकार वह उत्तम दानी और त्यागशील व्यक्ति बन जाता है।

अनुभूति के इस पथ पर चलते हुए वह निश्चित रूप से एक दिव्य मन बन जाएगा और उसे परमात्मा के साथ स्थाई सम्बन्ध के रूप में सर्वोच्च उपहार प्राप्त होगा, जिसका नाम है विशेष चेतना। ऐसा व्यक्ति अन्य लोगों को कई प्रकार से प्रेरित करने के योग्य होता है - देखकर, स्पर्श करके या वार्ता करके।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.3

प्रियमेधवद्त्रिवज्जातवेदो विरूपवत् ।
अङ्गिरस्वन्महिव्रतु प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम् ॥

(प्रियमेधवत्) परमात्मा के दिव्य प्रकाश की इच्छा और प्रेम करने वाले (अत्रिवत्) तीन प्रकार के दुःखों और बंधनों से अबाधित (काम, क्रोध और लोभ) (जातवेदः) पूर्ण ज्ञान वाले परमात्मा (विरूपवत्) अनेकों योग्यताओं वाले, महिमावान चेहरा (अङ्गिरस्वत्) स्वास्थ्य की संतुलित अवस्था वाले (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) (महिव्रत) महान व्रतों वाले (प्रस्कण्वस्य) ऐसे महान विद्वान की (श्रुधी) सुनो (हवम्) पुकार, प्रार्थना ।

व्याख्या :-

परमात्मा किसकी प्रार्थनाओं को सुनता है?

वह सर्वज्ञाता, परमात्मा! उन सब महान विद्वानों की प्रार्थना सुनता है, जिनमें निम्न लक्षण हों :-

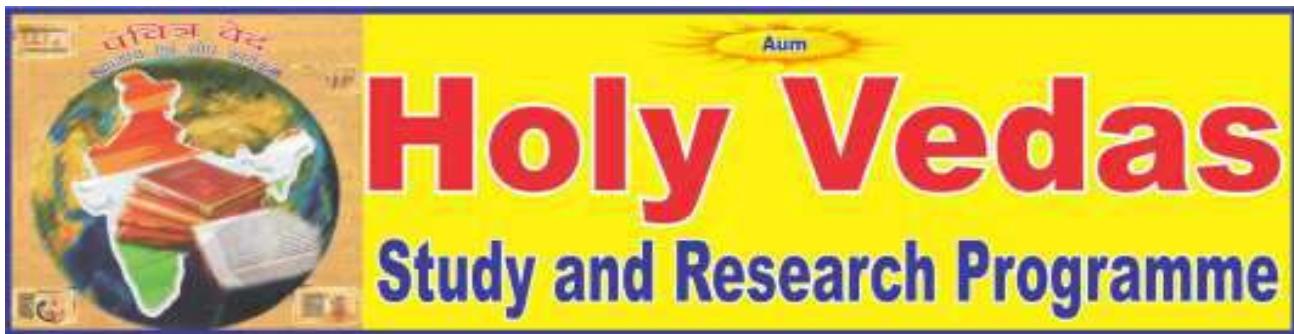
- (क) प्रियमेधवत् - परमात्मा के दिव्य प्रकाश की इच्छा और प्रेम करने वाले,
- (ख) अत्रिवत् - तीन प्रकार के दुःखों और बंधनों से अबाधित (काम, क्रोध और लोभ),
- (ग) विरूपवत् - अनेकों योग्यताओं वाले, महिमावान चेहरा,
- (घ) अङ्गिरस्वत् - स्वास्थ्य की संतुलित अवस्था वाले (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक),
- (ङ) महिव्रत - महान व्रतों वाले ।

जीवन में सार्थकता

सब लोग किसकी पुकार और प्रार्थनाएं सुनते हैं?

भौतिकवादी सांसारिक जीवन में भी यदि हम चाहते हैं कि हमारी स्थापना एक ऐसे व्यक्ति के रूप में हो, जिसके कथनों और प्रार्थनाओं को सभी छोटे-बड़े सुनें तो हमारे अन्दर निम्न लक्षण होने चाहिए :-

- (क) हमें सदैव ज्ञान की प्यास होनी चाहिए, सभी स्रोतों से ज्ञान को प्राप्त करें और एकत्रित करें।
- (ख) हमें विवाद और संकटों से मुक्त जीवन जीना चाहिए। किसी भी छोटी सी असुविधाजनक अवस्था में हमें कभी भी नकारात्मक या शिकायतकर्ता नहीं बनना चाहिए।
- (ग) हमें अनेकों योग्यताओं वाला बनना चाहिए, जो अधिक से अधिक अवस्थाओं को संभालने में सक्षम हो।
- (घ) हमें पूर्ण स्वास्थ्य की संतुलित अवस्था धारण करनी चाहिए।
- (ङ) हमें अपनी जीवन में दूसरों के कल्याण से सम्बन्धित महान व्रतों को अपना कर उन्हें धारण करना चाहिए।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.3

प्रियमेधवद्त्रिवज्जातवेदो विरूपवत् ।
अङ्गिरस्वन्महिव्रतु प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम् ॥

(प्रियमेधवत्) परमात्मा के दिव्य प्रकाश की इच्छा और प्रेम करने वाले (अत्रिवत्) तीन प्रकार के दुःखों और बंधनों से अबाधित (काम, क्रोध और लोभ) (जातवेदः) पूर्ण ज्ञान वाले परमात्मा (विरूपवत्) अनेकों योग्यताओं वाले, महिमावान चेहरा (अङ्गिरस्वत्) स्वास्थ्य की संतुलित अवस्था वाले (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) (महिव्रत) महान व्रतों वाले (प्रस्कण्वस्य) ऐसे महान विद्वान की (श्रुधी) सुनो (हवम्) पुकार, प्रार्थना ।

व्याख्या :-

परमात्मा किसकी प्रार्थनाओं को सुनता है?

वह सर्वज्ञाता, परमात्मा! उन सब महान विद्वानों की प्रार्थना सुनता है, जिनमें निम्न लक्षण हों :-

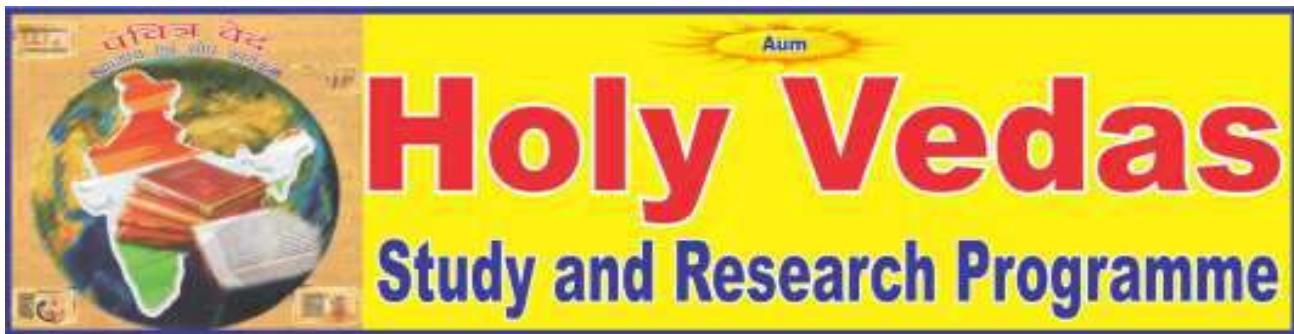
- (क) प्रियमेधवत् - परमात्मा के दिव्य प्रकाश की इच्छा और प्रेम करने वाले,
- (ख) अत्रिवत् - तीन प्रकार के दुःखों और बंधनों से अबाधित (काम, क्रोध और लोभ),
- (ग) विरूपवत् - अनेकों योग्यताओं वाले, महिमावान चेहरा,
- (घ) अङ्गिरस्वत् - स्वास्थ्य की संतुलित अवस्था वाले (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक),
- (ङ) महिव्रत - महान व्रतों वाले ।

जीवन में सार्थकता

सब लोग किसकी पुकार और प्रार्थनाएं सुनते हैं?

भौतिकवादी सांसारिक जीवन में भी यदि हम चाहते हैं कि हमारी स्थापना एक ऐसे व्यक्ति के रूप में हो, जिसके कथनों और प्रार्थनाओं को सभी छोटे-बड़े सुनें तो हमारे अन्दर निम्न लक्षण होने चाहिए :-

- (क) हमें सदैव ज्ञान की प्यास होनी चाहिए, सभी स्रोतों से ज्ञान को प्राप्त करें और एकत्रित करें।
- (ख) हमें विवाद और संकटों से मुक्त जीवन जीना चाहिए। किसी भी छोटी सी असुविधाजनक अवस्था में हमें कभी भी नकारात्मक या शिकायतकर्ता नहीं बनना चाहिए।
- (ग) हमें अनेकों योग्यताओं वाला बनना चाहिए, जो अधिक से अधिक अवस्थाओं को संभालने में सक्षम हो।
- (घ) हमें पूर्ण स्वास्थ्य की संतुलित अवस्था धारण करनी चाहिए।
- (ङ) हमें अपनी जीवन में दूसरों के कल्याण से सम्बन्धित महान व्रतों को अपना कर उन्हें धारण करना चाहिए।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.4

महिकेरव ऊतये प्रियमेधा अहूषत ।
राजन्त्मध्वराणामुग्निं शुक्रेण शोचिषा ॥

(महिकेरव:) सुन्दरता से उत्तम कार्य करने वाले (ऊतये) संरक्षण के लिए (प्रियमेधा) उत्तम तथा दिव्य बुद्धि को प्रेम करने वाले (अहूषत) पुकारते हैं, प्रार्थना करते हैं (राजन्त्म) चमकते हुए, महिमा प्राप्त (अध्वराणाम) हिंसारहित त्याग (अग्निम्) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (शुक्रेण) पवित्र, ज्ञान से प्रकाशित (शोचिषा) शुद्ध, ईमानदार।

व्याख्या :-

कौन अपने कार्यों में परमात्मा की उपस्थिति सुनिश्चित करता है?

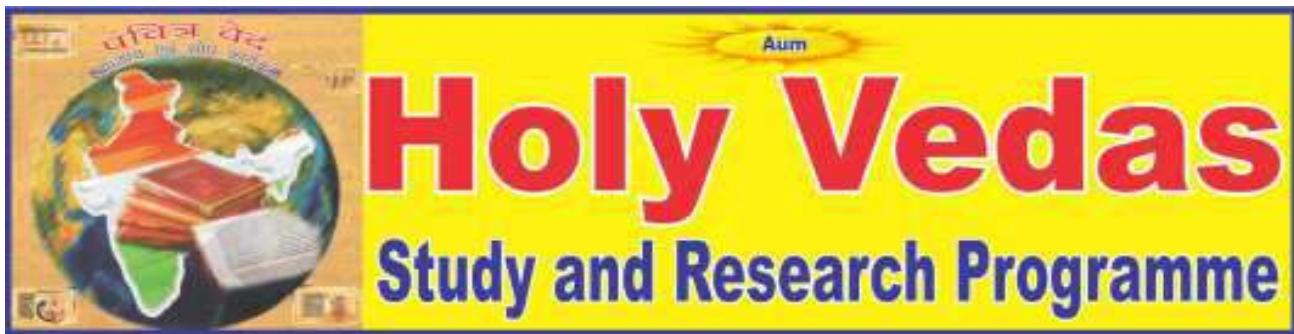
जो लोग सुन्दरता से उत्तम कार्य करते हैं और उत्तम तथा दिव्य बुद्धि से प्रेम करते हैं, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को पुकारते हैं और उसी से प्रार्थना करते हैं कि वे उनके चमकते हुए और महिमावान हिंसारहित त्याग कार्यों को संरक्षित करें क्योंकि वे शुद्ध, प्रकाशित और अपने कार्यों में ईमानदार हैं। केवल ऐसे ही लोगों को यह आध्यात्मिक अधिकार होता है कि वे अपने पवित्र और दिव्य कार्यों में परमात्मा की उपस्थिति सुनिश्चित करवा सकें।

जीवन में सार्थकता

हमें अपने कार्यों में क्या लक्षण धारण करने चाहिए, जिससे हम परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उन लोगों के अधिकारों का सम्मान करता है, जो शुद्ध और दिव्य त्याग करते हैं। जिस प्रकार भगवान राम ऋषियों और सन्तों के द्वारा संरक्षण की पुकार पर उनके दिव्य यज्ञों में उपस्थित रहते थे; जिस प्रकार भगवान कृष्ण दिव्य न्याय की रक्षा के लिए पाण्डवों के साथ युद्ध में खड़े रहे, उसी प्रकार सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हमारे वास्तविक पवित्र और दिव्य ब्रतों और प्रयासों में आशीर्वाद देते हैं। परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए हमें अपनी गतिविधियों में निम्न लक्षण सुनिश्चित करने चाहिए :-

- (क) उत्कृष्टता के साथ उत्तम कार्यों को करना,
- (ख) उत्तम बुद्धि के लिए प्रेम,
- (ग) अपने सभी कर्तव्य सदैव त्याग की भावना से करना,
- (घ) पूर्ण ज्ञानवान के स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करना,
- (ङ) अपने व्यवहार में शुद्धता और ईमानदारी को बनाकर रखना।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.4

महिकेरव ऊतये प्रियमेधा अहूषत ।
राजन्त्मध्वराणामुग्निं शुक्रेण शोचिषा ॥

(महिकेरव:) सुन्दरता से उत्तम कार्य करने वाले (ऊतये) संरक्षण के लिए (प्रियमेधा) उत्तम तथा दिव्य बुद्धि को प्रेम करने वाले (अहूषत) पुकारते हैं, प्रार्थना करते हैं (राजन्त्म) चमकते हुए, महिमा प्राप्त (अध्वराणाम) हिंसारहित त्याग (अग्निम्) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (शुक्रेण) पवित्र, ज्ञान से प्रकाशित (शोचिषा) शुद्ध, ईमानदार।

व्याख्या :-

कौन अपने कार्यों में परमात्मा की उपस्थिति सुनिश्चित करता है?

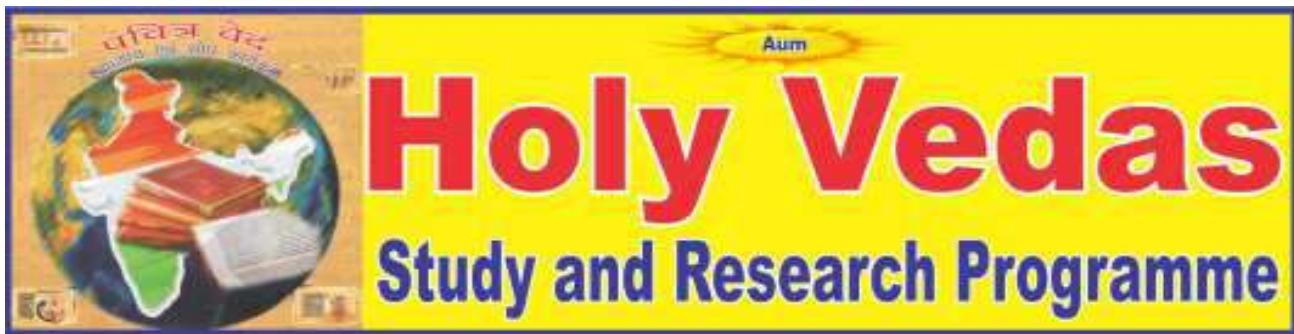
जो लोग सुन्दरता से उत्तम कार्य करते हैं और उत्तम तथा दिव्य बुद्धि से प्रेम करते हैं, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को पुकारते हैं और उसी से प्रार्थना करते हैं कि वे उनके चमकते हुए और महिमावान हिंसारहित त्याग कार्यों को संरक्षित करें क्योंकि वे शुद्ध, प्रकाशित और अपने कार्यों में ईमानदार हैं। केवल ऐसे ही लोगों को यह आध्यात्मिक अधिकार होता है कि वे अपने पवित्र और दिव्य कार्यों में परमात्मा की उपस्थिति सुनिश्चित करवा सकें।

जीवन में सार्थकता

हमें अपने कार्यों में क्या लक्षण धारण करने चाहिए, जिससे हम परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त कर सकें?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उन लोगों के अधिकारों का सम्मान करता है, जो शुद्ध और दिव्य त्याग करते हैं। जिस प्रकार भगवान राम ऋषियों और सन्तों के द्वारा संरक्षण की पुकार पर उनके दिव्य यज्ञों में उपस्थित रहते थे; जिस प्रकार भगवान कृष्ण दिव्य न्याय की रक्षा के लिए पाण्डवों के साथ युद्ध में खड़े रहे, उसी प्रकार सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हमारे वास्तविक पवित्र और दिव्य ब्रतों और प्रयासों में आशीर्वाद देते हैं। परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए हमें अपनी गतिविधियों में निम्न लक्षण सुनिश्चित करने चाहिए :-

- (क) उत्कृष्टता के साथ उत्तम कार्यों को करना,
- (ख) उत्तम बुद्धि के लिए प्रेम,
- (ग) अपने सभी कर्तव्य सदैव त्याग की भावना से करना,
- (घ) पूर्ण ज्ञानवान के स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करना,
- (ङ) अपने व्यवहार में शुद्धता और ईमानदारी को बनाकर रखना।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.5

घृताहवन सन्ध्येमा उ षु श्रुधी गिरः ।
याभिः कण्वस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा ॥

(घृताहवन्) त्याग के लिए उत्तम साधनों को प्रयोग करने वाले (असन्त्य) प्रसन्नता और सुविधा के लिए (इमाः) ये (उ) निश्चित रूप से (सु) उत्तम प्रकार से (श्रुधी) सुनिए (गिरः) वाणियाँ, प्रार्थनाएँ (याभिः) जिन वाणियों से (कण्वस्य) महान विद्वानों के (सूनवः) पुत्र, अनुयायी (हवन्ते) पुकारते हैं, प्रार्थना करते हैं (अवसे) संरक्षण के लिए (त्वा) आपको ।

व्याख्या :-

परमात्मा किसकी वाणियों को सुनता है?

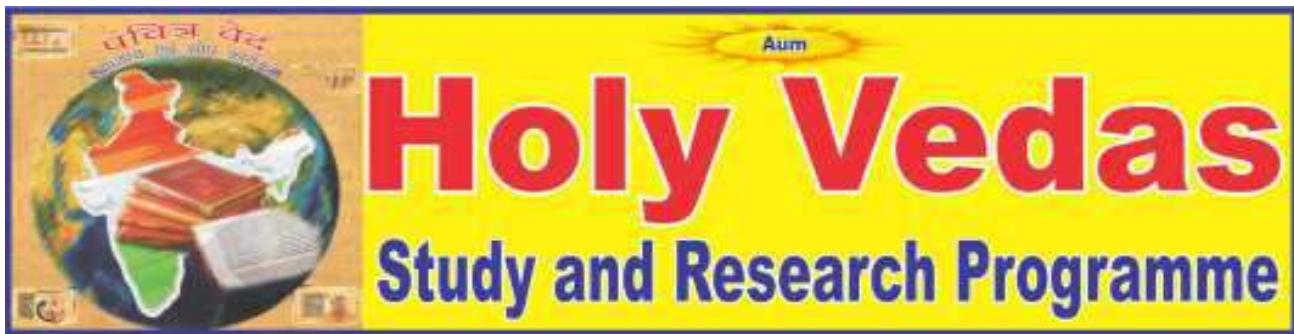
जो अन्य लोगों की प्रसन्नता और सुविधाओं के लिए त्याग में उत्तम साधनों का सदुपयोग करते हैं, उनकी वाणियाँ भी निश्चित रूप से परमात्मा द्वारा उत्तम रूप में सुनी जाती हैं।

महान विद्वानों के सुपुत्र और शिष्य जब भी संरक्षण के लिए भगवान को पुकारते हैं तो उनकी वाणियाँ भी परमात्मा द्वारा सुनी जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

गुरु की दिव्यता का उसके सच्चे अनुयायियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

यदि कोई व्यक्ति वास्तविक त्याग करता है तो वह दिव्यता में अधिकार प्राप्त कर लेता है। यहाँ तक कि उनके वंशज पुत्र, पुत्रियाँ और शिष्य यदि गुरु का सत्यता में अनुसरण करते हैं तो वे भी दिव्यता में अधिकार प्राप्त करते हैं। सच्चे अनुयायी और शिष्य महान और दिव्य आत्माओं के परिवार की तरह होते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.5

घृताहवन सन्ध्येमा उ षु श्रुधी गिरः ।
याभिः कण्वस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा ॥

(घृताहवन्) त्याग के लिए उत्तम साधनों को प्रयोग करने वाले (असन्त्य) प्रसन्नता और सुविधा के लिए (इमाः) ये (उ) निश्चित रूप से (सु) उत्तम प्रकार से (श्रुधी) सुनिए (गिरः) वाणियाँ, प्रार्थनाएँ (याभिः) जिन वाणियों से (कण्वस्य) महान विद्वानों के (सूनवः) पुत्र, अनुयायी (हवन्ते) पुकारते हैं, प्रार्थना करते हैं (अवसे) संरक्षण के लिए (त्वा) आपको ।

व्याख्या :-

परमात्मा किसकी वाणियों को सुनता है?

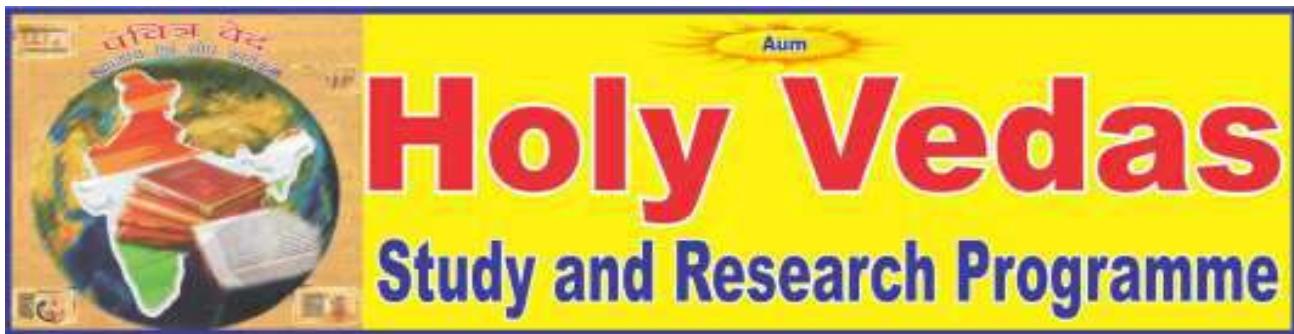
जो अन्य लोगों की प्रसन्नता और सुविधाओं के लिए त्याग में उत्तम साधनों का सदुपयोग करते हैं, उनकी वाणियाँ भी निश्चित रूप से परमात्मा द्वारा उत्तम रूप में सुनी जाती हैं।

महान विद्वानों के सुपुत्र और शिष्य जब भी संरक्षण के लिए भगवान को पुकारते हैं तो उनकी वाणियाँ भी परमात्मा द्वारा सुनी जाती हैं।

जीवन में सार्थकता

गुरु की दिव्यता का उसके सच्चे अनुयायियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

यदि कोई व्यक्ति वास्तविक त्याग करता है तो वह दिव्यता में अधिकार प्राप्त कर लेता है। यहाँ तक कि उनके वंशज पुत्र, पुत्रियाँ और शिष्य यदि गुरु का सत्यता में अनुसरण करते हैं तो वे भी दिव्यता में अधिकार प्राप्त करते हैं। सच्चे अनुयायी और शिष्य महान और दिव्य आत्माओं के परिवार की तरह होते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.6

त्वां चित्रश्वस्तम् हवन्ते विक्षु जन्तवः ।
शोचिष्केशं पुरुप्रियाऽग्ने हव्यायु वोळहवे ॥

(त्वाम) आपको (चित्र श्वस्तम्) सुनने योग्य दिव्य शक्तिशाली रूप में प्रकट, परमात्मा (हवन्ते) स्वीकार करते हैं, पुकारते हैं (विक्षु) सर्वत्र व्याप्त (जन्तवः) यहाँ उत्पन्न हुए (शोचिष्केशम्) ज्ञान के प्रकाश की दिव्य और शुद्ध किरणों को धारण करने वाले (पुरुप्रिय) सबको प्रेम करने वाले (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (हव्याय) त्याग कार्यों को करने के लिए (वोळहवे) ज्ञान प्राप्त करने के लिए ।

व्याख्या :-

उस परमात्मा के क्या लक्षण हैं, जिसे हम बुलाते और स्वीकार करते हैं?

जीवन के प्रधान उद्देश्य क्या हैं?

वे सब जो यहाँ जन्मे हैं, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को पुकारते और स्वीकार करते हैं, जिसमें निम्न लक्षण हैं :-

- (क) चित्र श्वस्तम् - सुनने योग्य दिव्य शक्तिशाली रूप में प्रकट, परमात्मा,
- (ख) विक्षु - सर्वत्र व्याप्त,
- (ग) शोचिष्केशम् - ज्ञान के प्रकाश की दिव्य और शुद्ध किरणों को धारण करने वाले,
- (घ) पुरुप्रिय - सबको प्रेम करने वाले ।

अतः हम आपको निम्न दो प्रधान उद्देश्यों के कारण पुकारते हैं :-

- (क) त्याग कार्य करने के लिए,
- (ख) ज्ञान प्राप्त करने के लिए ।

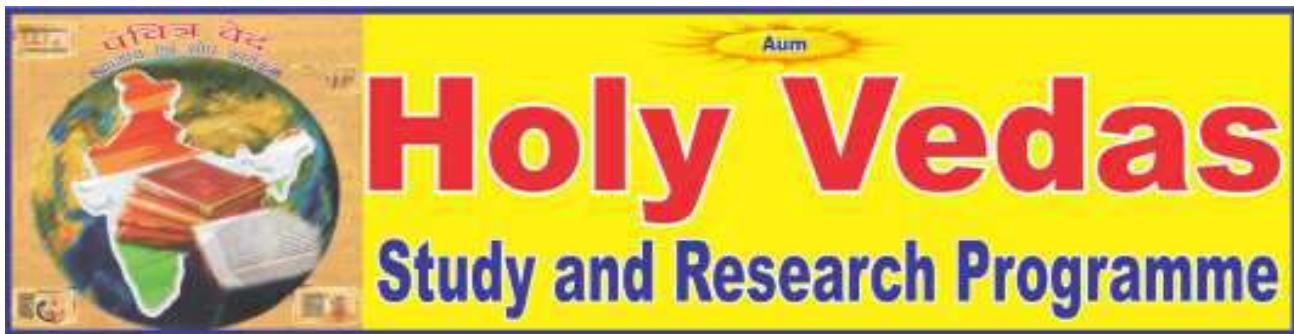
जीवन में सार्थकता

दूसरों के साथ हमारा सम्बन्ध किस पर निर्भर करता है?

परमात्मा के साथ निकट सम्बन्ध की अनुभूति प्राप्त करने के लिए हमारे जीवन के दो प्रधान उद्देश्य हैं ।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में अन्य लोगों के साथ हमारा सम्बन्ध भी दो प्रश्नों पर ही निर्भर है :-

- (क) हम दूसरों के लिए कितने त्यागशील हैं?
- (ख) दूसरों के कल्याण के लिए हमें कितना गहरा ज्ञान है और उसके लिए हमारी कितनी गहरी तत्परता है?



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.6

त्वां चित्रश्वस्तम् हवन्ते विक्षु जन्तवः ।
शोचिष्केशं पुरुप्रियाऽग्ने हव्यायु वोळहवे ॥

(त्वाम) आपको (चित्र श्वस्तम्) सुनने योग्य दिव्य शक्तिशाली रूप में प्रकट, परमात्मा (हवन्ते) स्वीकार करते हैं, पुकारते हैं (विक्षु) सर्वत्र व्याप्त (जन्तवः) यहाँ उत्पन्न हुए (शोचिष्केशम्) ज्ञान के प्रकाश की दिव्य और शुद्ध किरणों को धारण करने वाले (पुरुप्रिय) सबको प्रेम करने वाले (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (हव्याय) त्याग कार्यों को करने के लिए (वोळहवे) ज्ञान प्राप्त करने के लिए ।

व्याख्या :-

उस परमात्मा के क्या लक्षण हैं, जिसे हम बुलाते और स्वीकार करते हैं?

जीवन के प्रधान उद्देश्य क्या हैं?

वे सब जो यहाँ जन्मे हैं, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को पुकारते और स्वीकार करते हैं, जिसमें निम्न लक्षण हैं :-

- (क) चित्र श्वस्तम् - सुनने योग्य दिव्य शक्तिशाली रूप में प्रकट, परमात्मा,
- (ख) विक्षु - सर्वत्र व्याप्त,
- (ग) शोचिष्केशम् - ज्ञान के प्रकाश की दिव्य और शुद्ध किरणों को धारण करने वाले,
- (घ) पुरुप्रिय - सबको प्रेम करने वाले ।

अतः हम आपको निम्न दो प्रधान उद्देश्यों के कारण पुकारते हैं :-

- (क) त्याग कार्य करने के लिए,
- (ख) ज्ञान प्राप्त करने के लिए ।

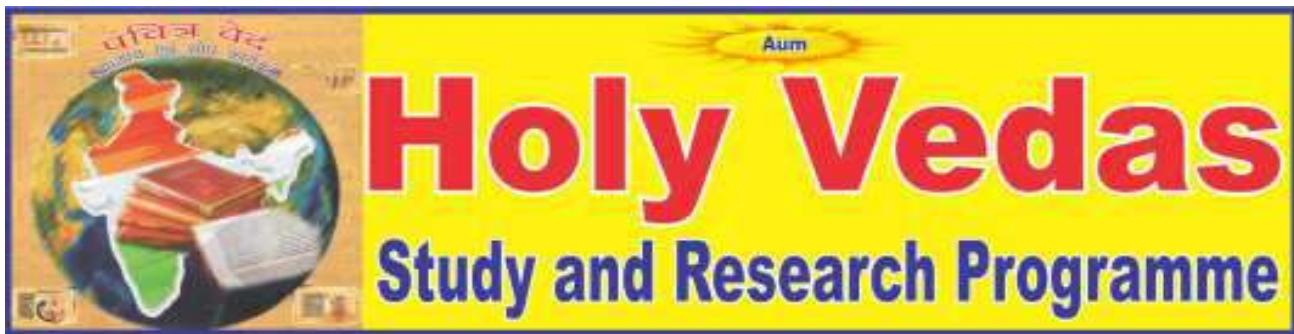
जीवन में सार्थकता

दूसरों के साथ हमारा सम्बन्ध किस पर निर्भर करता है?

परमात्मा के साथ निकट सम्बन्ध की अनुभूति प्राप्त करने के लिए हमारे जीवन के दो प्रधान उद्देश्य हैं ।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में अन्य लोगों के साथ हमारा सम्बन्ध भी दो प्रश्नों पर ही निर्भर है :-

- (क) हम दूसरों के लिए कितने त्यागशील हैं?
- (ख) दूसरों के कल्याण के लिए हमें कितना गहरा ज्ञान है और उसके लिए हमारी कितनी गहरी तत्परता है?



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.7

नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तम् ।
श्रुत्कर्णं सुप्रथस्तम् विप्रा अग्ने दिविष्टिषु ॥

(नि) निश्चित रूप से (त्वा) आप (होतारम्) इस सृष्टि में सब वस्तुओं को देने वाले, परमात्मा (ऋत्विजम्) सदैव संगति के योग्य, परमात्मा (दधिरे) धारण करते हैं (वसुवित्तम्) सबको आवास देने वाले, परमात्मा (श्रुत्कर्णम्) सबकी प्रार्थना सुनने वाले, परमात्मा (सप्रथस्तम्) चारों तरफ पूर्ण रूप से व्यापक, परमात्मा (विप्राः) महान् विद्वान् (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (दिवि इष्टिषु) दिव्य लक्ष्यों के लिए (परमात्मा का सर्वोच्च प्रकाश प्राप्त करने के लिए)।

व्याख्या :-

हम किस दिव्य उद्देश्य के लिए परमात्मा को धारण करते हैं?

परमात्मा के क्या दिव्य गुण-लक्षण हैं?

महान विद्वान आपको अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को आपके सर्वोच्च प्रकाश की प्राप्ति रूपी दिव्य उद्देश्य के लिए धारण करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि आपके निम्न गुण लक्षण हैं :-

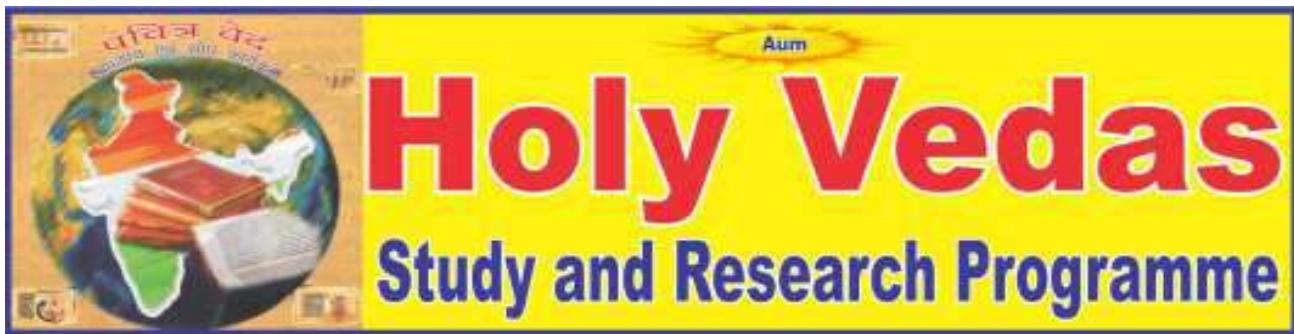
- (क) होतारम् - इस सृष्टि में सब वस्तुओं को देने वाले, परमात्मा,
- (ख) ऋत्विजम् - सदैव संगति के योग्य, परमात्मा,
- (ग) वसुवित्तम् - सबको आवास देने वाले, परमात्मा,
- (घ) श्रुत्कर्णम् - सबकी प्रार्थना सुनने वाले, परमात्मा,
- (ङ) सप्रथस्तम् - चारों तरफ पूर्ण रूप से व्यापक, परमात्मा।

सभी महान विद्वान यह जानते हैं कि जो व्यक्ति परमात्मा को धारण करता है, उसके बदले परमात्मा भी उसे धारण करते हैं।

जीवन में सार्थकता

हम अपने वृद्धजनों का सम्मान और आज्ञा पालन क्यों करें?

आध्यात्मिकता के सिद्धान्त मानव और सामाजिक सम्बन्धों पर भी लागू होते हैं। आप अपने वृद्धजनों तथा समस्त दाता लोगों के लिए एक सम्मान धारण करते हो और उनकी आज्ञा का पालन करते हो। इसके बदले वे भी आपको आशीर्वाद और अन्य कई लाभ प्रदान करते हैं। हमें एक सच्चाई की अनुभूति रखनी चाहिए कि सभी वृद्धजन तथा उच्चाधिकारी किसी न किसी प्रकार से हमें देते ही हैं। इस अनुभूति के बाद हम अपने जीवन में ऐसे लोगों के लिए महान सम्मान निश्चित रूप से धारण करेंगे और इसके बदले उनके आशीर्वाद तथा लाभ प्राप्त करते रहेंगे।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.7

नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तम् ।
श्रुत्कर्णं सुप्रथस्तम् विप्रा अग्ने दिविष्टिषु ॥

(नि) निश्चित रूप से (त्वा) आप (होतारम्) इस सृष्टि में सब वस्तुओं को देने वाले, परमात्मा (ऋत्विजम्) सदैव संगति के योग्य, परमात्मा (दधिरे) धारण करते हैं (वसुवित्तम्) सबको आवास देने वाले, परमात्मा (श्रुत्कर्णम्) सबकी प्रार्थना सुनने वाले, परमात्मा (सप्रथस्तम्) चारों तरफ पूर्ण रूप से व्यापक, परमात्मा (विप्राः) महान् विद्वान् (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (दिवि इष्टिषु) दिव्य लक्ष्यों के लिए (परमात्मा का सर्वोच्च प्रकाश प्राप्त करने के लिए)।

व्याख्या :-

हम किस दिव्य उद्देश्य के लिए परमात्मा को धारण करते हैं?

परमात्मा के क्या दिव्य गुण-लक्षण हैं?

महान विद्वान आपको अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को आपके सर्वोच्च प्रकाश की प्राप्ति रूपी दिव्य उद्देश्य के लिए धारण करते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि आपके निम्न गुण लक्षण हैं :-

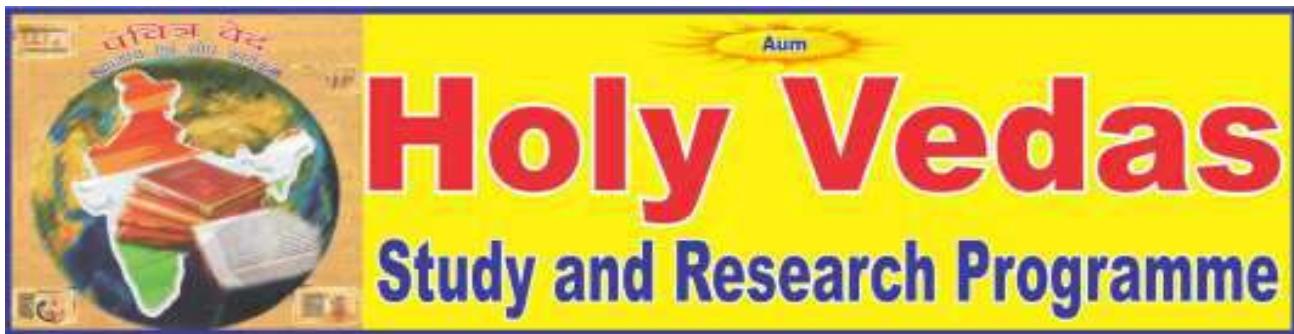
- (क) होतारम् - इस सृष्टि में सब वस्तुओं को देने वाले, परमात्मा,
- (ख) ऋत्विजम् - सदैव संगति के योग्य, परमात्मा,
- (ग) वसुवित्तम् - सबको आवास देने वाले, परमात्मा,
- (घ) श्रुत्कर्णम् - सबकी प्रार्थना सुनने वाले, परमात्मा,
- (ङ) सप्रथस्तम् - चारों तरफ पूर्ण रूप से व्यापक, परमात्मा।

सभी महान विद्वान यह जानते हैं कि जो व्यक्ति परमात्मा को धारण करता है, उसके बदले परमात्मा भी उसे धारण करते हैं।

जीवन में सार्थकता

हम अपने वृद्धजनों का सम्मान और आज्ञा पालन क्यों करें?

आध्यात्मिकता के सिद्धान्त मानव और सामाजिक सम्बन्धों पर भी लागू होते हैं। आप अपने वृद्धजनों तथा समस्त दाता लोगों के लिए एक सम्मान धारण करते हो और उनकी आज्ञा का पालन करते हो। इसके बदले वे भी आपको आशीर्वाद और अन्य कई लाभ प्रदान करते हैं। हमें एक सच्चाई की अनुभूति रखनी चाहिए कि सभी वृद्धजन तथा उच्चाधिकारी किसी न किसी प्रकार से हमें देते ही हैं। इस अनुभूति के बाद हम अपने जीवन में ऐसे लोगों के लिए महान सम्मान निश्चित रूप से धारण करेंगे और इसके बदले उनके आशीर्वाद तथा लाभ प्राप्त करते रहेंगे।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.8

आ त्वा विप्रा॑ अचुच्युः सुतसो॑मा अ॒भि प्रयः।
बृहद्बा॒ विभ्रंतो हविरग्ने॑ मर्ताय दाशुषे॑॥

(आ त्वा) आपको (विप्रा) महान विद्वान (अचुच्युः) प्राप्त करते हैं (सुतसोमा) शुभ गुण पैदा करने के लिए (अभि) प्रत्येक क्षण, प्रत्येक दिशा में (प्रयः) भोजन आदि को (बृहत भा:) उल्कृष्ट और अपार ज्ञान (विभ्रंतः) धारण करते हैं (हविः) त्याग में प्रस्तुत करने के लिए, आहुति (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (मर्ताय) मरने योग्य पुरुष (दाशुषे) पूर्ण दानी।

व्याख्या :-

महान विद्वान परमात्मा की अनुभूति क्यों प्राप्त करते हैं?

हम भोजन तथा व्यापक ज्ञान क्यों धारण करते हैं?

सभी महान विद्वान आपको अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को समस्त दिशाओं से और प्रतिक्षण गुणों और प्रेरणाओं को पैदा करने के लिए प्राप्त करते हैं।

वे सभी मरणशील मनुष्य, जो पूर्ण दानी हैं, भोजन तथा व्यापक ज्ञान धारण करते हैं, जिससे वे अन्य लोगों के लिए त्याग करते हुए सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को आहुतियाँ प्रदान कर सकें।

जीवन में सार्थकता

मानवों द्वारा अपनाए जाने के लिए दो मार्ग कौन से हैं?

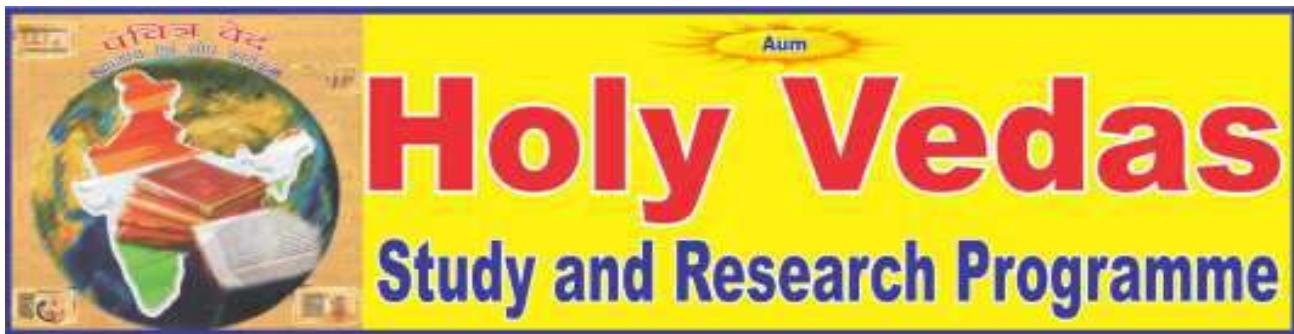
एक आध्यात्मिक व्यक्ति तथा एक भौतिकवादी व्यक्ति के बीच क्या अन्तर है और क्या समानताएं हैं?

समूची सृष्टि परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च दिव्य ऊर्जा का प्रकट स्वरूप है। लोगों द्वारा अपनाए जाने के लिए दो प्रकार के मार्ग हैं - परमात्मा की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक मार्ग और/अथवा भौतिक सुख-सम्पदाओं की प्रार्थना करने के लिए भौतिकवादी मार्ग। आध्यात्मिक व्यक्ति निर्माता का ध्यान करता है, जबकि भौतिकवादी व्यक्ति निर्माण अर्थात् भौतिक वस्तुओं पर ध्यान करता है।

आध्यात्मिक व्यक्ति परमात्मा की संगति चाहता है। परमात्मा के साथ एकता का अनुभव करके वे दूसरों के मार्गदर्शन के लिए अनेकों गुण और प्रेरणाएं पैदा करते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों को प्रेम करते हैं।

भौतिकवादी व्यक्ति भोजन, कपड़ा और मकान आदि सुविधाओं की तथा उनका प्रयोग करने के लिए व्यापक ज्ञान की कामना करता है। इस मार्ग पर वे यह अनुभव करें कि एक दिन सब कुछ छोड़ के वे मृत्यु को प्राप्त होंगे, इसलिए उनसे आशा की जाती है कि वे पूर्ण दानी बनें। उन्हें अपने पदार्थ तथा ज्ञान अन्य लोगों के कल्याण के लिए आहुति की तरह त्याग करने चाहिए। परमात्मा ऐसे लोगों को भी प्यार करते हैं।

इस प्रकार दोनों प्रकार के लोगों को परमात्मा प्रेम करते हैं। आध्यात्मिक व्यक्ति परमात्मा के साथ सीधे सम्बन्धित होते हैं, जबकि भौतिकवादी व्यक्ति त्याग कार्यों के रूप में अपने कर्तव्य पूर्ण करके अप्रत्यक्ष रूप से परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति प्राप्त करने की तरफ अग्रसर होते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.8

आ त्वा विप्रा॑ अचुच्युः सुतसो॑मा अ॒भि प्रयः।
बृहद्बा॒ विभ्रंतो हविरग्ने॑ मर्ताय दाशुषे॑॥

(आ त्वा) आपको (विप्रा) महान विद्वान (अचुच्युः) प्राप्त करते हैं (सुतसोमा) शुभ गुण पैदा करने के लिए (अभि) प्रत्येक क्षण, प्रत्येक दिशा में (प्रयः) भोजन आदि को (बृहत भा:) उल्कृष्ट और अपार ज्ञान (विभ्रंतः) धारण करते हैं (हविः) त्याग में प्रस्तुत करने के लिए, आहुति (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (मर्ताय) मरने योग्य पुरुष (दाशुषे) पूर्ण दानी।

व्याख्या :-

महान विद्वान परमात्मा की अनुभूति क्यों प्राप्त करते हैं?

हम भोजन तथा व्यापक ज्ञान क्यों धारण करते हैं?

सभी महान विद्वान आपको अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को समस्त दिशाओं से और प्रतिक्षण गुणों और प्रेरणाओं को पैदा करने के लिए प्राप्त करते हैं।

वे सभी मरणशील मनुष्य, जो पूर्ण दानी हैं, भोजन तथा व्यापक ज्ञान धारण करते हैं, जिससे वे अन्य लोगों के लिए त्याग करते हुए सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, को आहुतियाँ प्रदान कर सकें।

जीवन में सार्थकता

मानवों द्वारा अपनाए जाने के लिए दो मार्ग कौन से हैं?

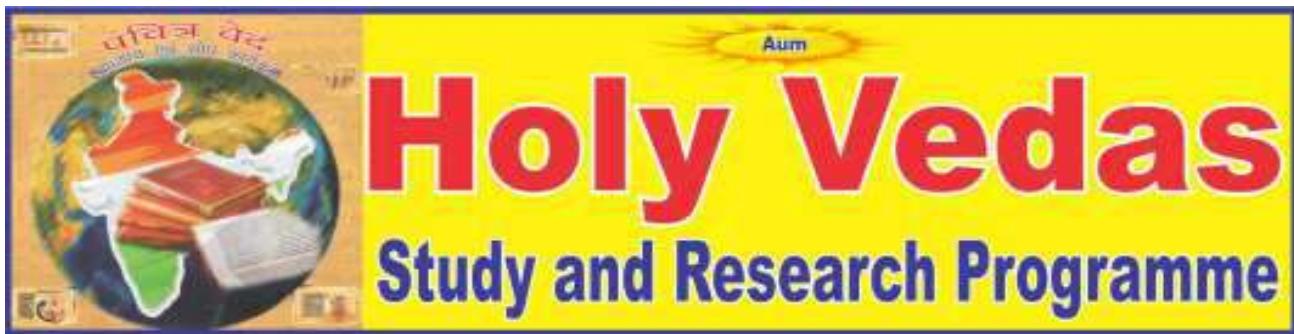
एक आध्यात्मिक व्यक्ति तथा एक भौतिकवादी व्यक्ति के बीच क्या अन्तर है और क्या समानताएं हैं?

समूची सृष्टि परमात्मा अर्थात् सर्वोच्च दिव्य ऊर्जा का प्रकट स्वरूप है। लोगों द्वारा अपनाए जाने के लिए दो प्रकार के मार्ग हैं - परमात्मा की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक मार्ग और/अथवा भौतिक सुख-सम्पदाओं की प्रार्थना करने के लिए भौतिकवादी मार्ग। आध्यात्मिक व्यक्ति निर्माता का ध्यान करता है, जबकि भौतिकवादी व्यक्ति निर्माण अर्थात् भौतिक वस्तुओं पर ध्यान करता है।

आध्यात्मिक व्यक्ति परमात्मा की संगति चाहता है। परमात्मा के साथ एकता का अनुभव करके वे दूसरों के मार्गदर्शन के लिए अनेकों गुण और प्रेरणाएं पैदा करते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों को प्रेम करते हैं।

भौतिकवादी व्यक्ति भोजन, कपड़ा और मकान आदि सुविधाओं की तथा उनका प्रयोग करने के लिए व्यापक ज्ञान की कामना करता है। इस मार्ग पर वे यह अनुभव करें कि एक दिन सब कुछ छोड़ के वे मृत्यु को प्राप्त होंगे, इसलिए उनसे आशा की जाती है कि वे पूर्ण दानी बनें। उन्हें अपने पदार्थ तथा ज्ञान अन्य लोगों के कल्याण के लिए आहुति की तरह त्याग करने चाहिए। परमात्मा ऐसे लोगों को भी प्यार करते हैं।

इस प्रकार दोनों प्रकार के लोगों को परमात्मा प्रेम करते हैं। आध्यात्मिक व्यक्ति परमात्मा के साथ सीधे सम्बन्धित होते हैं, जबकि भौतिकवादी व्यक्ति त्याग कार्यों के रूप में अपने कर्तव्य पूर्ण करके अप्रत्यक्ष रूप से परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति प्राप्त करने की तरफ अग्रसर होते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.9

प्रातर्याणः सहस्रृतं सोमपेयाय सन्त्य ।

इहाय दैव्यं जनं बुर्हिरा सांदया वसो ॥

(प्रातर्याणः) प्रातः काल से अपने लक्ष्य के लिए समर्पित (सहस्रृत) वीर, अपने कर्तव्यों को सरलता से पूरा करने वाला (सोमपेयाय) गुणों को धारण करने और सुरक्षित करने के लिए (सन्त्य) प्रसन्नता और सुविधा के लिए (इह) यहाँ (अद्य) अभी (दैव्यम् जनम्) दिव्य लोग (बुर्हिः) गहरे हृदयाकाश में (आसादया) प्राप्त कराईए। (वसो) सबका वास ।

व्याख्या :-

दिव्य लोग कौन होते हैं?

उनके लिए विशेष क्या होता है?

निम्न लक्षणों वाले लोग दिव्य जीवन होते हैं :-

(क) प्रातर्याणः - वे प्रातः काल से अपने लक्ष्य के लिए समर्पित होते हैं।

(ख) सहस्रृत - वे वीर, अपने कर्तव्यों को सरलता से पूरा करने वाले होते हैं।

(ग) सोमपेयाय - वे गुणों को धारण करने और सुरक्षित करने वाले होते हैं।

(घ) सन्त्य - वे सदैव प्रसन्न और सुविधाजनक रहते हैं।

ऐसे लोगों को परमात्मा की तरफ से यह आश्वासन होता है कि वह उनके गहरे हृदयाकाश में यहाँ इसी जीवन में प्राप्त होगा क्योंकि परमात्मा सबका वास है।

जीवन में सार्थकता

दिव्य लोग दिव्य पैदा होते हैं या कोई भी व्यक्ति दिव्य बन सकता है?

यह चर्चा का प्रश्न है कि क्या दिव्य लोग दिव्य ही पैदा होते हैं या दिव्य जीवन के चार लक्षणों को अपने अन्दर स्थापित करके कोई भी दिव्य बन सकता है। दोनों प्रकार से उत्तर सकारात्मक है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हम कुछ महान सन्तों को बहादुर, आध्यात्मिक योद्धा के रूप में दिव्य जन्म लेते हुए देखते हैं क्योंकि बचपन से ही उनमें दिव्यता की झलक मिलती है।

परन्तु यह भी समान रूप से सत्य है कि वे जन्मजात दिव्य लोग अक्सर अनेकों लोगों के लिए गहरी प्रेरणा का स्रोत बन जाते हैं, जो दिव्यता के लक्षणों का अनुसरण करते हैं। इस प्रकार दिव्यता का विकास भी किया जा सकता है।

अपने जीवन में निम्न लक्षणों को स्थापित करना न तो असम्भव है और न अत्यन्त कठिन :-

(क) प्रातःकाल जल्दी ब्रह्मबेला में उठना और अपने जीवन तथा गतिविधियों पर विचार करना। परमात्मा की भक्ति तथा मानवता का कल्याण निश्चित रूप से साथ-साथ चल सकते हैं।

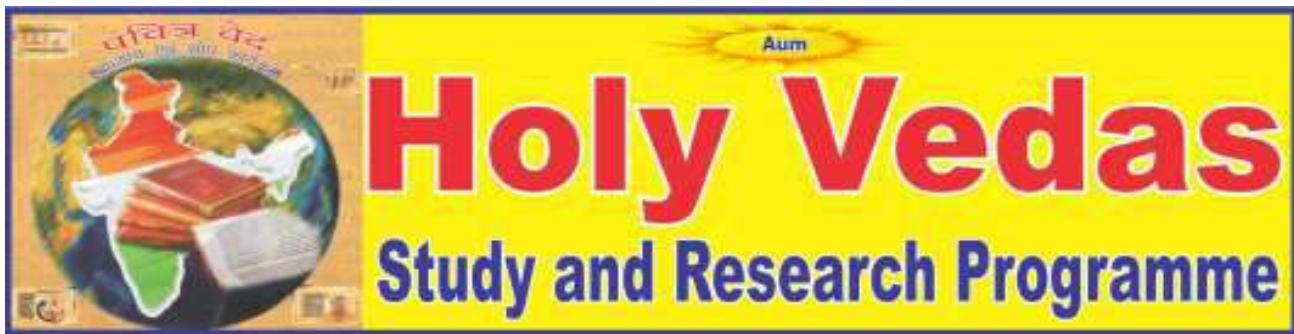
(ख) एक बार जब हम अपने जीवन और गतिविधियों पर प्रातःकाल से ध्यान करते हैं तो हमारे अन्दर प्रत्येक अवस्था में विजय प्राप्त करने की सम्भावना बढ़ जाती है। हम शक्तिशाली और वीर समझे जाते हैं।

(ग) ऐसे समर्पित जीवन के साथ, हमें शुभ गुणों को भी धारण करना चाहिए। ऐसे जीवन का सबके द्वारा सम्मान होता है।

(घ) अन्ततः हम अपने जीवन को प्रसन्न और सुविधाजनक बना पाते हैं और दूसरों को भी प्रत्येक अवस्था में प्रसन्न और सुविधाजनक रहने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query - Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.9

प्रातर्याणः सहस्रृतं सोमपेयाय सन्त्य ।

इहाय दैव्यं जनं बुर्हिरा सांदया वसो ॥

(प्रातर्याणः) प्रातः काल से अपने लक्ष्य के लिए समर्पित (सहस्रृत) वीर, अपने कर्तव्यों को सरलता से पूरा करने वाला (सोमपेयाय) गुणों को धारण करने और सुरक्षित करने के लिए (सन्त्य) प्रसन्नता और सुविधा के लिए (इह) यहाँ (अद्य) अभी (दैव्यम् जनम्) दिव्य लोग (बुर्हिः) गहरे हृदयाकाश में (आसादया) प्राप्त कराईए। (वसो) सबका वास ।

व्याख्या :-

दिव्य लोग कौन होते हैं?

उनके लिए विशेष क्या होता है?

निम्न लक्षणों वाले लोग दिव्य जीवन होते हैं :-

(क) प्रातर्याणः - वे प्रातः काल से अपने लक्ष्य के लिए समर्पित होते हैं।

(ख) सहस्रृत - वे वीर, अपने कर्तव्यों को सरलता से पूरा करने वाले होते हैं।

(ग) सोमपेयाय - वे गुणों को धारण करने और सुरक्षित करने वाले होते हैं।

(घ) सन्त्य - वे सदैव प्रसन्न और सुविधाजनक रहते हैं।

ऐसे लोगों को परमात्मा की तरफ से यह आश्वासन होता है कि वह उनके गहरे हृदयाकाश में यहाँ इसी जीवन में प्राप्त होगा क्योंकि परमात्मा सबका वास है।

जीवन में सार्थकता

दिव्य लोग दिव्य पैदा होते हैं या कोई भी व्यक्ति दिव्य बन सकता है?

यह चर्चा का प्रश्न है कि क्या दिव्य लोग दिव्य ही पैदा होते हैं या दिव्य जीवन के चार लक्षणों को अपने अन्दर स्थापित करके कोई भी दिव्य बन सकता है। दोनों प्रकार से उत्तर सकारात्मक है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हम कुछ महान सन्तों को बहादुर, आध्यात्मिक योद्धा के रूप में दिव्य जन्म लेते हुए देखते हैं क्योंकि बचपन से ही उनमें दिव्यता की झलक मिलती है।

परन्तु यह भी समान रूप से सत्य है कि वे जन्मजात दिव्य लोग अक्सर अनेकों लोगों के लिए गहरी प्रेरणा का स्रोत बन जाते हैं, जो दिव्यता के लक्षणों का अनुसरण करते हैं। इस प्रकार दिव्यता का विकास भी किया जा सकता है।

अपने जीवन में निम्न लक्षणों को स्थापित करना न तो असम्भव है और न अत्यन्त कठिन :-

(क) प्रातःकाल जल्दी ब्रह्मबेला में उठना और अपने जीवन तथा गतिविधियों पर विचार करना। परमात्मा की भक्ति तथा मानवता का कल्याण निश्चित रूप से साथ-साथ चल सकते हैं।

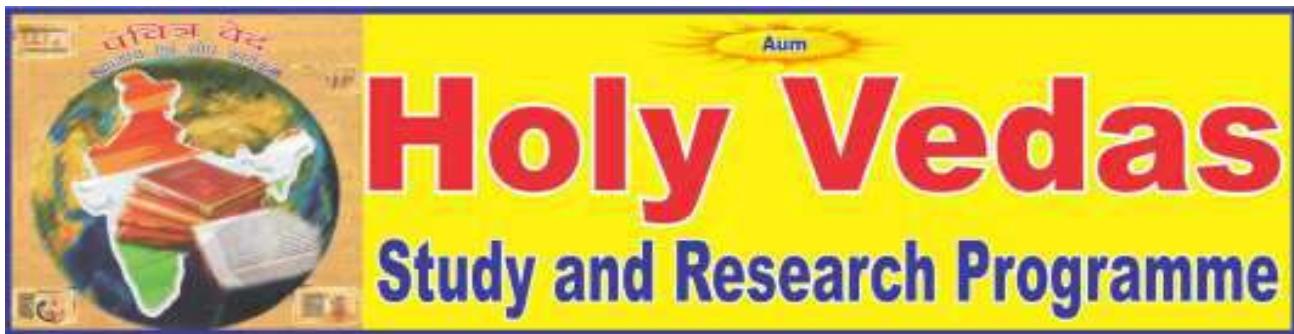
(ख) एक बार जब हम अपने जीवन और गतिविधियों पर प्रातःकाल से ध्यान करते हैं तो हमारे अन्दर प्रत्येक अवस्था में विजय प्राप्त करने की सम्भावना बढ़ जाती है। हम शक्तिशाली और वीर समझे जाते हैं।

(ग) ऐसे समर्पित जीवन के साथ, हमें शुभ गुणों को भी धारण करना चाहिए। ऐसे जीवन का सबके द्वारा सम्मान होता है।

(घ) अन्ततः हम अपने जीवन को प्रसन्न और सुविधाजनक बना पाते हैं और दूसरों को भी प्रत्येक अवस्था में प्रसन्न और सुविधाजनक रहने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query - Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.10

अर्वाज्युं दैव्यं जनुमग्ने यक्ष्य सहूतिभिः ।
अयं सोमः सुदानवस्तं पात् तिरोऽहन्यम् ॥

(अर्वाज्यम्) अन्तर्मुख वाला, स्व-विचार करने वाला (दैव्यम् जनम्) दिव्य लोग (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (यक्ष्य) संगति कीजिए (सहूतिभिः) प्रार्थना में समान (अयम्) यह (सोमः) शुभ गुण (सुदानवः) उत्तम दानी (तम्) वह (गुण) (पात्) संरक्षित (तिरः) अन्दर सम्मिलित (अहन्यम्) जीवन में व्यापक।

व्याख्या :-

क्या सभी दिव्य लोग अपनी प्रार्थनाओं में एक समान होते हैं और आन्तरिक रूप से सम्बन्धित होते हैं?
सभी दिव्य लोग सदैव अन्तर्मुखी तथा अपने जीवन पर चिन्तन करने वाले होते हैं। उनकी प्रार्थनाएं समान होती हैं।
अतः वे एक-दूसरे के साथ आन्तरिक रूप से सम्बन्धित होते हैं।
वे गुणों के उत्तम दानी होते हैं। वे अपने गुणों को देखते हैं और उन्हें संरक्षित करते हैं, जो उनके जीवन में व्यापक होते हैं।

जीवन में सार्थकता

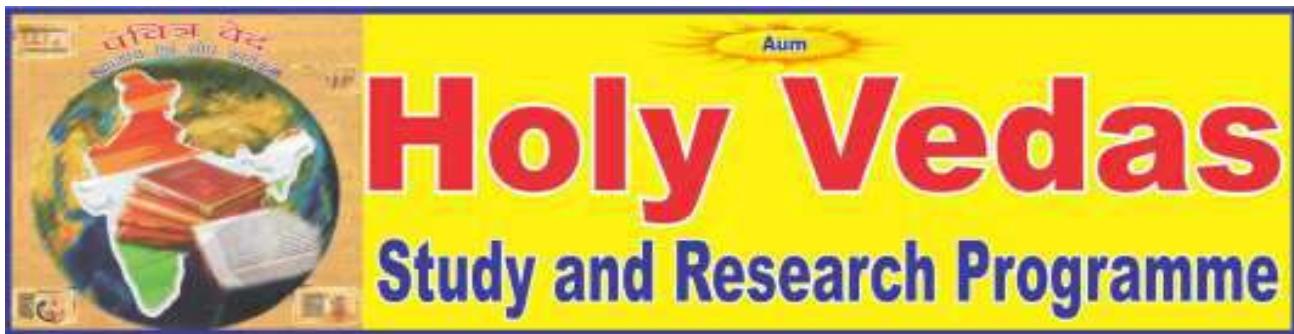
समस्त दिव्य लोगों की प्रार्थनाओं में एक समान क्या होता है?

एक दिव्य जीवन कैसे जिया जाए?

दिव्य लोग प्रार्थनाओं में समान होते हैं क्योंकि वे सांसारिक पदार्थों के लिए कभी प्रार्थना नहीं करते, वे अपने अहंकार को बढ़ाने के लिए कभी प्रार्थना नहीं करते। उनकी न कोई इच्छाएं होती हैं और न कोई अहंकार। इच्छाएं और अहंकार ही मतभेद और विवाद पैदा करने के मूल कारक हैं। इसलिए सभी वास्तविक दिव्य लोग प्रार्थना में एक समान होते हैं - परमार्थ की अनुभूति।

हमारे परिवार तथा समाजिक जीवन में भी एक दिव्य जीवन जीने के लिए जो मतभेद, विवाद और तनाव से रहित हो, हमें त्यागशीलता पर ध्यान देना चाहिए। एक त्यागशील व्यक्ति का सर्वत्र सम्मान होता है और वह एक सच्चा नेता बनता है। वह तो एक कर्ता की तरह भी अपना अहंकार त्याग देता है क्योंकि उसे इस बात की अनुभूति होती है कि परमात्मा ही वास्तविक कर्ता हैं।

अतः त्यागशीलता, सामाजिक प्रकृति तथा अहंकारहित व्यक्तित्व ही आपके जीवन को एक भौतिकवादी घरेलू जीवन से उठा कर एक दिव्य सर्वमान्य जीवन बना सकते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.45.10

अर्वाज्युं दैव्यं जनुमग्ने यक्ष्य सहूतिभिः ।
अयं सोमः सुदानवस्तं पात् तिरोऽहन्यम् ॥

(अर्वाज्यम्) अन्तर्मुख वाला, स्व-विचार करने वाला (दैव्यम् जनम्) दिव्य लोग (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (यक्ष्य) संगति कीजिए (सहूतिभिः) प्रार्थना में समान (अयम्) यह (सोमः) शुभ गुण (सुदानवः) उत्तम दानी (तम्) वह (गुण) (पात्) संरक्षित (तिरः) अन्दर सम्मिलित (अहन्यम्) जीवन में व्यापक।

व्याख्या :-

क्या सभी दिव्य लोग अपनी प्रार्थनाओं में एक समान होते हैं और आन्तरिक रूप से सम्बन्धित होते हैं?
सभी दिव्य लोग सदैव अन्तर्मुखी तथा अपने जीवन पर चिन्तन करने वाले होते हैं। उनकी प्रार्थनाएं समान होती हैं।
अतः वे एक-दूसरे के साथ आन्तरिक रूप से सम्बन्धित होते हैं।
वे गुणों के उत्तम दानी होते हैं। वे अपने गुणों को देखते हैं और उन्हें संरक्षित करते हैं, जो उनके जीवन में व्यापक होते हैं।

जीवन में सार्थकता

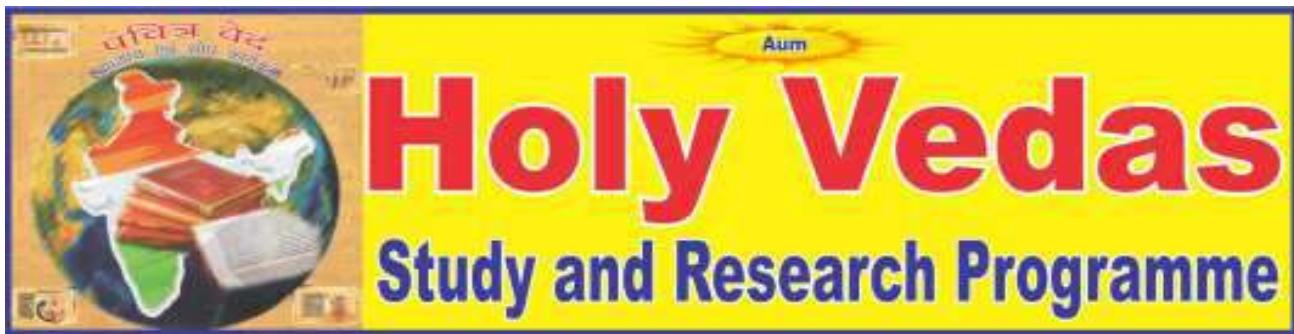
समस्त दिव्य लोगों की प्रार्थनाओं में एक समान क्या होता है?

एक दिव्य जीवन कैसे जिया जाए?

दिव्य लोग प्रार्थनाओं में समान होते हैं क्योंकि वे सांसारिक पदार्थों के लिए कभी प्रार्थना नहीं करते, वे अपने अहंकार को बढ़ाने के लिए कभी प्रार्थना नहीं करते। उनकी न कोई इच्छाएं होती हैं और न कोई अहंकार। इच्छाएं और अहंकार ही मतभेद और विवाद पैदा करने के मूल कारक हैं। इसलिए सभी वास्तविक दिव्य लोग प्रार्थना में एक समान होते हैं - परमार्थ की अनुभूति।

हमारे परिवार तथा समाजिक जीवन में भी एक दिव्य जीवन जीने के लिए जो मतभेद, विवाद और तनाव से रहित हो, हमें त्यागशीलता पर ध्यान देना चाहिए। एक त्यागशील व्यक्ति का सर्वत्र सम्मान होता है और वह एक सच्चा नेता बनता है। वह तो एक कर्ता की तरह भी अपना अहंकार त्याग देता है क्योंकि उसे इस बात की अनुभूति होती है कि परमात्मा ही वास्तविक कर्ता हैं।

अतः त्यागशीलता, सामाजिक प्रकृति तथा अहंकारहित व्यक्तित्व ही आपके जीवन को एक भौतिकवादी घरेलू जीवन से उठा कर एक दिव्य सर्वमान्य जीवन बना सकते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.2

या दुस्त्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रथीणाम् ।
धिया देवा वंसुविदा॑ ॥

(या)जो (उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों को स्थापित करते हुए हमारे प्राण) (दस्त्रा) दुःखों और रोगों का नाश करने वाला (सिन्धु मातरा) हमारे जल स्थलों अर्थात् रक्तवाहिनियों में व्यापक (मनोतरा) मन को इच्छाओं से मुक्त करने वाला (रथीणाम्) गौरवशाली सम्पदा (धिया) ज्ञान पूर्वक कर्मों के द्वारा (देवा) देता है (वंसुविदा) सुन्दर निवास देने वाला ।

व्याख्या :-

ब्रह्मवेला में स्थापित दिव्य प्राणिक ऊर्जा के क्या लक्षण हैं?

प्रतिदिन ब्रह्मवेला में, उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों में स्थापित प्राण निम्न लक्षणों से सुसज्जित हो जाते हैं।

(क) दस्त्रा - दुःखों और रोगों का नाश करने वाला ।

(ख) सिन्धु मातरा - हमारे जल स्थलों अर्थात् रक्तवाहिनियों में व्यापक ।

(ग) मनोतरा - मन को इच्छाओं से मुक्त करने वाला ।

(घ) रथीणाम् धिया देवा - गौरवशाली सम्पदा के साथ ज्ञान पूर्वक कर्मों के दाता ।

(ङ) वंसुविदा - सुन्दर निवास देने वाला ।

जीवन में सार्थकता

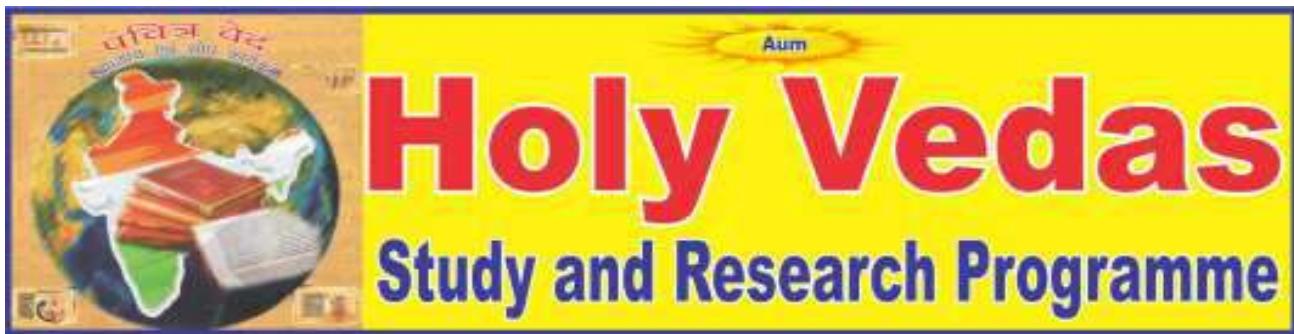
प्रातःकाल जल्दी उठने वाले व्यक्ति की आध्यात्मिक अनुभूति का क्या मार्ग है?

जब प्राण भौतिक शरीर में उपस्थित होते हैं तो उसे जीवन कहा जाता है। परन्तु यही जीवन आत्मा और परमात्मा की एकता की अनुभूति के लिए एक सुन्दर आवास बन जाता है जब उसके प्राण ब्रह्मवेला का महिमा मंडन करते हैं और उसमें स्थापित हो जाते हैं। ऐसे दिव्य प्राण आध्यात्मिक ऊँचाई तक पहुँच जाते हैं।

ऐसी जीवनी शक्ति अर्थात् प्राण समस्त दुःखों और रोगों के नाशक बन जाते हैं। ऐसे दिव्य प्राणों का प्रथम भौतिक लाभ के रूप में हमें उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होता है। इस उत्तम स्वास्थ्य का वैज्ञानिक कारण यह है कि हमारे शरीर की रक्तवाहिनियों में सर्वत्र सूर्य की दिव्य किरणों का प्रभाव व्याप्त हो जाता है। यह दिव्य प्राणिक ऊर्जा शरीर के सभी तन्त्रों और अंगों के उत्तम स्वास्थ्य में परिवर्तित हो जाती है।

मानसिक स्तर पर, प्राणायाम में कुम्भक की कड़ी साधना के दौरान दिव्य प्राण मन को निरर्थक सांसारिक भौतिक इच्छाओं से मुक्त कर देते हैं।

तीसरे स्तर पर, दिव्य प्राणिक ऊर्जा के साथ व्यक्ति को अपने बौद्धिक और पवित्र कर्मों के बल पर अपार गौरवशाली सम्पदा प्राप्त होती है और उस सम्पदा को वह पुनः सबके कल्याण के लिए प्रयोग करता है। इस प्रकार दिव्य प्राणिक ऊर्जा के अनेकों लाभ होते हैं - शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक। इन सभी लाभों के बल पर वह आध्यात्मिक अनुभूति की तरफ प्रगति करता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.2

या दुस्त्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रथीणाम् ।
धिया देवा वंसुविदा॑ ॥

(या)जो (उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों को स्थापित करते हुए हमारे प्राण) (दस्त्रा) दुःखों और रोगों का नाश करने वाला (सिन्धु मातरा) हमारे जल स्थलों अर्थात् रक्तवाहिनियों में व्यापक (मनोतरा) मन को इच्छाओं से मुक्त करने वाला (रथीणाम्) गौरवशाली सम्पदा (धिया) ज्ञान पूर्वक कर्मों के द्वारा (देवा) देता है (वंसुविदा) सुन्दर निवास देने वाला ।

व्याख्या :-

ब्रह्मवेला में स्थापित दिव्य प्राणिक ऊर्जा के क्या लक्षण हैं?

प्रतिदिन ब्रह्मवेला में, उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों में स्थापित प्राण निम्न लक्षणों से सुसज्जित हो जाते हैं।

(क) दस्त्रा - दुःखों और रोगों का नाश करने वाला ।

(ख) सिन्धु मातरा - हमारे जल स्थलों अर्थात् रक्तवाहिनियों में व्यापक ।

(ग) मनोतरा - मन को इच्छाओं से मुक्त करने वाला ।

(घ) रथीणाम् धिया देवा - गौरवशाली सम्पदा के साथ ज्ञान पूर्वक कर्मों के दाता ।

(ङ) वंसुविदा - सुन्दर निवास देने वाला ।

जीवन में सार्थकता

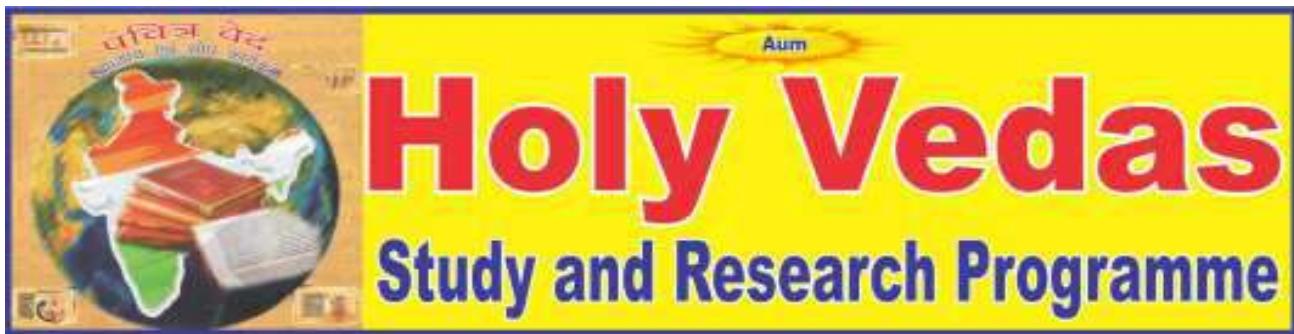
प्रातःकाल जल्दी उठने वाले व्यक्ति की आध्यात्मिक अनुभूति का क्या मार्ग है?

जब प्राण भौतिक शरीर में उपस्थित होते हैं तो उसे जीवन कहा जाता है। परन्तु यही जीवन आत्मा और परमात्मा की एकता की अनुभूति के लिए एक सुन्दर आवास बन जाता है जब उसके प्राण ब्रह्मवेला का महिमा मंडन करते हैं और उसमें स्थापित हो जाते हैं। ऐसे दिव्य प्राण आध्यात्मिक ऊँचाई तक पहुँच जाते हैं।

ऐसी जीवनी शक्ति अर्थात् प्राण समस्त दुःखों और रोगों के नाशक बन जाते हैं। ऐसे दिव्य प्राणों का प्रथम भौतिक लाभ के रूप में हमें उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त होता है। इस उत्तम स्वास्थ्य का वैज्ञानिक कारण यह है कि हमारे शरीर की रक्तवाहिनियों में सर्वत्र सूर्य की दिव्य किरणों का प्रभाव व्याप्त हो जाता है। यह दिव्य प्राणिक ऊर्जा शरीर के सभी तन्त्रों और अंगों के उत्तम स्वास्थ्य में परिवर्तित हो जाती है।

मानसिक स्तर पर, प्राणायाम में कुम्भक की कड़ी साधना के दौरान दिव्य प्राण मन को निरर्थक सांसारिक भौतिक इच्छाओं से मुक्त कर देते हैं।

तीसरे स्तर पर, दिव्य प्राणिक ऊर्जा के साथ व्यक्ति को अपने बौद्धिक और पवित्र कर्मों के बल पर अपार गौरवशाली सम्पदा प्राप्त होती है और उस सम्पदा को वह पुनः सबके कल्याण के लिए प्रयोग करता है। इस प्रकार दिव्य प्राणिक ऊर्जा के अनेकों लाभ होते हैं - शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक। इन सभी लाभों के बल पर वह आध्यात्मिक अनुभूति की तरफ प्रगति करता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.3

वृच्यन्ते वां ककुहासों जूर्णायामधि विष्टपि ।
यद्वां रथो विभिष्यतात् ॥

(वृच्यन्ते) उच्चारण करते हैं (वाम्) आपका (ककुहासः) महान महिमा (जूर्णायाम्) विशेष रूप से पूर्ण प्रशंसित (अष्टि १ विष्टपि) उच्च और गहरे स्थान पर (यत्) जब (वाम्) आपके (रथः) रथ (मानव शरीर, वाहन) (विभिः) इन्द्रियों की लगाम से जुड़े (पतात्) प्रगति करता है।

व्याख्या :-

आध्यात्मिक पथ की ऊँचाईयों को कौन छू सकता है?

इन्द्रियों पर पूरे नियंत्रण को बनाये रखते हुए जब हम जीवन में प्रगति करते हैं तो परमात्मा के लिए महान् महिमा और विशेष पूर्ण प्रशंसाएँ हमारे गहरे हृदय स्थलों से उच्चारित होती हैं। ऐसा जीवन स्व अनुभूति के रूप में ऊँचाईयों को छूता है।

जीवन में सार्थकता

जीवन में इच्छा रहित और अहंकार रहित अवस्था का क्या महत्त्व है?

जब हम अपनी इन्द्रियों पर सफलता पूर्वक नियंत्रण स्थापित कर लेते हैं तो हम मन में इच्छा रहित हो जाते हैं।

इच्छा रहित अवस्था के परिणामस्वरूप हम परमात्मा की महिमा का उच्चारण करते हैं और प्रत्येक कार्य के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं। इससे हम अहंकार रहित हो जाते हैं।

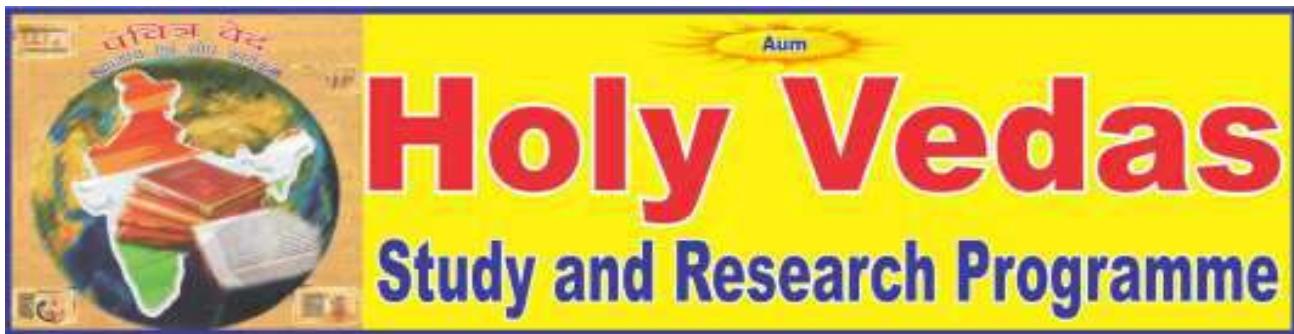
हमारी इच्छा रहित और अहंकार रहित अवस्था अन्ततः हमारे लिए आध्यात्मिक अनुभूति की ऊँचाईयों का मार्ग निश्चित रूप से प्रशस्त करती है।

इच्छा रहित का अर्थ है - मैं भौतिक वस्तुओं के लिए कार्य नहीं करता।

अहंकार रहित का अर्थ है - मैं कार्य ही नहीं करता, बल्कि यह परमात्मा है जो इस शरीर के माध्यम से कार्य कर रहा है।

इस प्रकार हम परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति प्राप्त करते हैं।

सांसारिक और सामाजिक जीवन में भी जब हम अपने स्वार्थी हितों को छोड़ देते हैं और परिवार, संगठन या समाज के सामूहिक मिशन के लिए कार्य करते हैं तो हम सबके सहयोग की प्रशंसा करते हैं और अपने मुखिया, उच्चाधिकारियों और वृद्धजनों का सम्मान करते हैं। ऐसे लक्षण हमें ऊँचाईयों को छूने के योग्य बनाते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.3

वृच्यन्ते वां ककुहासों जूर्णायामधि विष्टपि ।
यद्वां रथो विभिष्यतात् ॥

(वृच्यन्ते) उच्चारण करते हैं (वाम्) आपका (ककुहासः) महान् महिमा (जूर्णायाम्) विशेष रूप से पूर्ण प्रशंसित (अष्टि १ विष्टपि) उच्च और गहरे स्थान पर (यत्) जब (वाम्) आपके (रथः) रथ (मानव शरीर, वाहन) (विभिः) इन्द्रियों की लगाम से जुड़े (पतात्) प्रगति करता है।

व्याख्या :-

आध्यात्मिक पथ की ऊँचाईयों को कौन छू सकता है?

इन्द्रियों पर पूरे नियंत्रण को बनाये रखते हुए जब हम जीवन में प्रगति करते हैं तो परमात्मा के लिए महान् महिमा और विशेष पूर्ण प्रशंसाएँ हमारे गहरे हृदय स्थलों से उच्चारित होती हैं। ऐसा जीवन स्व अनुभूति के रूप में ऊँचाईयों को छूता है।

जीवन में सार्थकता

जीवन में इच्छा रहित और अहंकार रहित अवस्था का क्या महत्त्व है?

जब हम अपनी इन्द्रियों पर सफलता पूर्वक नियंत्रण स्थापित कर लेते हैं तो हम मन में इच्छा रहित हो जाते हैं।

इच्छा रहित अवस्था के परिणामस्वरूप हम परमात्मा की महिमा का उच्चारण करते हैं और प्रत्येक कार्य के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं। इससे हम अहंकार रहित हो जाते हैं।

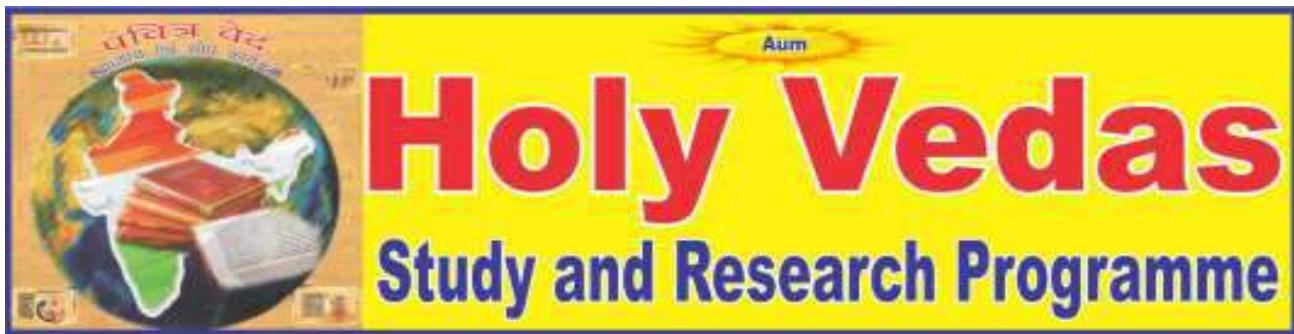
हमारी इच्छा रहित और अहंकार रहित अवस्था अन्ततः हमारे लिए आध्यात्मिक अनुभूति की ऊँचाईयों का मार्ग निश्चित रूप से प्रशस्त करती है।

इच्छा रहित का अर्थ है - मैं भौतिक वस्तुओं के लिए कार्य नहीं करता।

अहंकार रहित का अर्थ है - मैं कार्य ही नहीं करता, बल्कि यह परमात्मा है जो इस शरीर के माध्यम से कार्य कर रहा है।

इस प्रकार हम परमात्मा के साथ एकता की अनुभूति प्राप्त करते हैं।

सांसारिक और सामाजिक जीवन में भी जब हम अपने स्वार्थी हितों को छोड़ देते हैं और परिवार, संगठन या समाज के सामूहिक मिशन के लिए कार्य करते हैं तो हम सबके सहयोग की प्रशंसा करते हैं और अपने मुखिया, उच्चाधिकारियों और वृद्धजनों का सम्मान करते हैं। ऐसे लक्षण हमें ऊँचाईयों को छूने के योग्य बनाते हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.4

हृविषा॑ जारो अ॒पां पि॒पर्ति॑ प॒पुर्िर्निरा॑।
पि॒ता॑ कुट॑स्य च॒षणि॑ः ॥

(हृविषा) आहुतियों के द्वारा (जारः) वाष्पीकृत करके (अपाम्) जलों को (पिपर्ति) संरक्षण एवं पालन करता है (पपुरिः) पूर्ण रूप से (नरा) लोग (पिता) संरक्षण करने वाला पिता (कुटस्य) कुटिल मार्ग का प्रदर्शक (च॒षणि॑ः) सूर्य जिसे दिखाता है।

व्याख्या :-

सूर्य का कुटिल मार्ग क्या है?

संरक्षण करने वाले पिता की तरह, सूर्य भी कल्याण का कुटिल मार्ग दिखाता है। सूर्य पृथ्वी के जल-स्थलों से जल को वाष्पीकृत करता है, जिससे उन्हें कुटिलता सहनी पड़ती है। परन्तु वाष्पीकृत जल को सभी जीवों के पूर्ण संरक्षण और पालन के लिए आहुति की तरह वापिस भेज दिया जाता है।

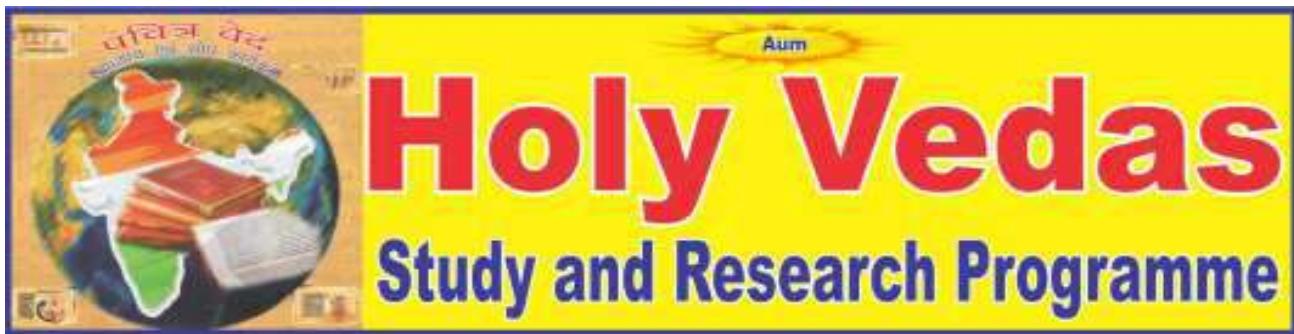
जीवन में सार्थकता

जल चक्र वास्तव में किस प्रकार कल्याण का चक्र है?

यह एक प्रसिद्ध कथन है कि यज्ञ करते हुए हाथ जलते ही हैं। सभी त्याग कार्यों में कुछ कठिनाई अवश्य शामिल होती है। प्रथम दृष्टि में सूर्य की ऊर्जा के द्वारा जल-स्थलों से जल का वाष्पीकृत करना कुटिलता दिखाई देती है, परन्तु वास्तव में यह एक विज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिकता भी है।

वैज्ञानिक रूप से, इसे जल चक्र कहा जाता है।

आध्यात्मिक रूप से, यह त्याग का चक्र है। सूर्य के द्वारा सभी प्राणियों के कल्याण के लिए हमें इस त्याग चक्र की शिक्षा को जीवन के एक सिद्धान्त के रूप में समझना चाहिए। परमात्मा की कृपा से हमें जो कुछ भी मिलता है उसका प्रयोग जल-स्थलों की तरह सबके कल्याण के लिए ही किया जाना चाहिए।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.4

हृविषा॑ जारो अ॒पां पि॒पर्ति॑ प॒पुर्िर्निरा॑।
पि॒ता॑ कुट॑स्य च॒षणि॑ः ॥

(हृविषा) आहुतियों के द्वारा (जारः) वाष्पीकृत करके (अपाम्) जलों को (पिपर्ति) संरक्षण एवं पालन करता है (पपुरिः) पूर्ण रूप से (नरा) लोग (पिता) संरक्षण करने वाला पिता (कुटस्य) कुटिल मार्ग का प्रदर्शक (च॒षणि॑ः) सूर्य जिसे दिखाता है।

व्याख्या :-

सूर्य का कुटिल मार्ग क्या है?

संरक्षण करने वाले पिता की तरह, सूर्य भी कल्याण का कुटिल मार्ग दिखाता है। सूर्य पृथ्वी के जल-स्थलों से जल को वाष्पीकृत करता है, जिससे उन्हें कुटिलता सहनी पड़ती है। परन्तु वाष्पीकृत जल को सभी जीवों के पूर्ण संरक्षण और पालन के लिए आहुति की तरह वापिस भेज दिया जाता है।

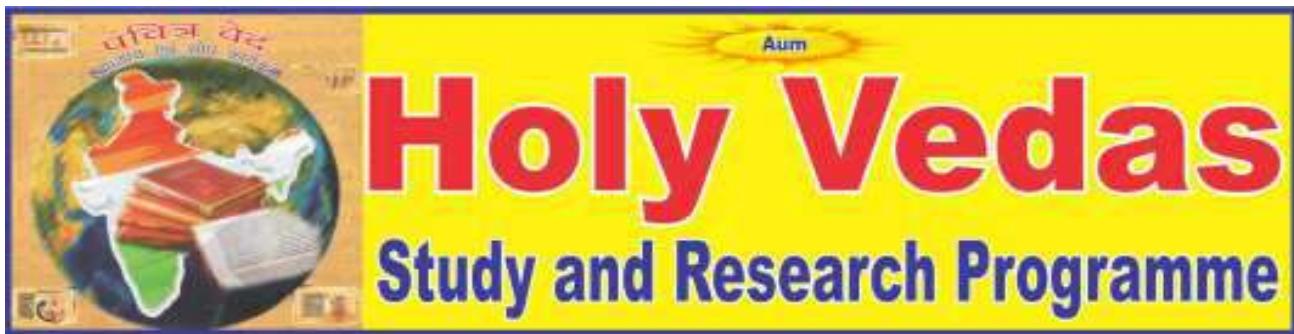
जीवन में सार्थकता

जल चक्र वास्तव में किस प्रकार कल्याण का चक्र है?

यह एक प्रसिद्ध कथन है कि यज्ञ करते हुए हाथ जलते ही हैं। सभी त्याग कार्यों में कुछ कठिनाई अवश्य शामिल होती है। प्रथम दृष्टि में सूर्य की ऊर्जा के द्वारा जल-स्थलों से जल का वाष्पीकृत करना कुटिलता दिखाई देती है, परन्तु वास्तव में यह एक विज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिकता भी है।

वैज्ञानिक रूप से, इसे जल चक्र कहा जाता है।

आध्यात्मिक रूप से, यह त्याग का चक्र है। सूर्य के द्वारा सभी प्राणियों के कल्याण के लिए हमें इस त्याग चक्र की शिक्षा को जीवन के एक सिद्धान्त के रूप में समझना चाहिए। परमात्मा की कृपा से हमें जो कुछ भी मिलता है उसका प्रयोग जल-स्थलों की तरह सबके कल्याण के लिए ही किया जाना चाहिए।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.5

आदारो वा मतीनां नासत्या मतवचसा ।
पातं सोमस्य धृष्णुया ॥

(आदारः) शत्रुओं का नाश करने के लिए (वाम्) आपकी (मतीनाम्) बुद्धियाँ (नासत्या) असत्य नहीं (मतवचसा) महान् बुद्धि के साथ बोलने वाले (पातम्) संरक्षण के लिए (सोमस्य) महान् ज्ञान, गुण और पवित्रता (धृष्णुया) शत्रुओं का नाश करने वाले (जैसे अहंकार और इच्छाएँ) ।

व्याख्या :-

शत्रुओं को मारने का क्या उद्देश्य है?

हमारी बुद्धियों के शत्रुओं का नाश करने में कौन से कारक सहायक होते हैं?

हमारी बुद्धियों के शत्रु आन्तरिक भी हैं और बाहरी भी जैसे - अहंकार और इच्छाएँ। इनके नाश का उद्देश्य है, अपने महान् ज्ञान, गुणों, पवित्रता और भक्ति का संरक्षण करना। इन शत्रुओं का नाश करने में दो कारक बहुत सहायक हैं :-

(क) नासत्या - असत्य नहीं अर्थात् पूरी तरह सत्यवादी बनों।

(ख) मतवचसा - सदैव महान् बुद्धि के साथ बोलो।

जीवन में सार्थकता

इच्छाओं और अहंकार के क्या प्रभाव होते हैं?

महान् ज्ञान के आधार पर सदैव सत्य बोलने के क्या लाभ हैं?

इच्छाएँ और अहंकार हमारे सबसे बड़े शत्रु जाने जाते हैं।

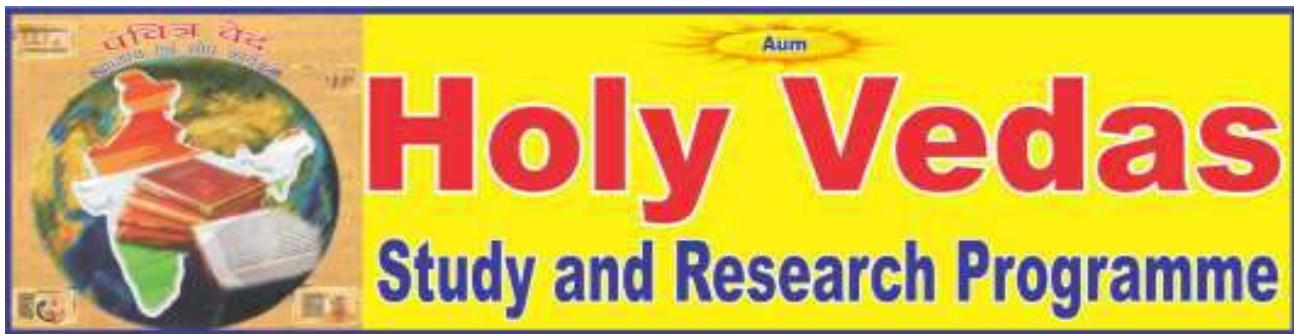
इच्छाएँ हमारे आन्तरिक शत्रु हैं। इच्छाएँ पूरी हों या अधूरी, दोनों ही हमारे सामाजिक और आध्यात्मिक विकास के लिए अच्छी नहीं हैं। पूरी हो चुकी इच्छाएँ हमें कमजोर बना देती हैं - **तृष्णा न जीर्णा, वयं एव जीर्णा**। दूसरी तरफ अधूरी इच्छाएँ हमें हताश और निराश कर देती हैं।

इसी प्रकार अहंकार भी हमारा आन्तरिक शत्रु है, जो बाहर प्रकट होता है। सफल या असफल, अहंकार बाहरी संसार में हमेशा हमारे शत्रुओं की संख्या बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त यह हमारी मानसिक स्वतंत्रता में बाधक होता है।

स्वयं की प्रशंसा करके यदि हम अपने अहंकार की तुष्टि करें तो अन्य लोग ईर्ष्या महसूस करते हैं।

यदि हमारा अहंकार असंतुष्ट रहे तो हमारा मन असंतुष्टि का प्रदर्शन करता है, क्रोध का विकास करता है और हमारे आध्यात्मिक पथ पर एक बाधा बन जाता है।

इसलिए हमें लगातार इच्छाओं और अहंकार के नाश का प्रयास करते रहना चाहिए। इस सम्बन्ध में दो संकल्प हमारे सहायक हो सकते हैं - सदा सत्यवादी बनों और एक संतुलित वक्ता बनों जो महान् ज्ञान के बल पर बोले। यह दो लक्षण आपकी चमक समाज में बढ़ा देंगे और आध्यात्मिक पथ पर सहायता करेंगे।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.5

आद्युरो वा॑ मतीनां नासत्या॒ मतवचसा॑ ।
पातं सोमस्य॑ धृष्णुया॑ ॥

(आदारः) शत्रुओं का नाश करने के लिए (वाम्) आपकी (मतीनाम्) बुद्धियाँ (नासत्या) असत्य नहीं (मतवचसा) महान् बुद्धि के साथ बोलने वाले (पातम्) संरक्षण के लिए (सोमस्य) महान् ज्ञान, गुण और पवित्रता (धृष्णुया) शत्रुओं का नाश करने वाले (जैसे अहंकार और इच्छाएँ) ।

व्याख्या :-

शत्रुओं को मारने का क्या उद्देश्य है?

हमारी बुद्धियों के शत्रुओं का नाश करने में कौन से कारक सहायक होते हैं?

हमारी बुद्धियों के शत्रु आन्तरिक भी हैं और बाहरी भी जैसे - अहंकार और इच्छाएँ। इनके नाश का उद्देश्य है, अपने महान् ज्ञान, गुणों, पवित्रता और भक्ति का संरक्षण करना। इन शत्रुओं का नाश करने में दो कारक बहुत सहायक हैं :-

(क) नासत्या - असत्य नहीं अर्थात् पूरी तरह सत्यवादी बनों।

(ख) मतवचसा - सदैव महान् बुद्धि के साथ बोलो।

जीवन में सार्थकता

इच्छाओं और अहंकार के क्या प्रभाव होते हैं?

महान् ज्ञान के आधार पर सदैव सत्य बोलने के क्या लाभ हैं?

इच्छाएँ और अहंकार हमारे सबसे बड़े शत्रु जाने जाते हैं।

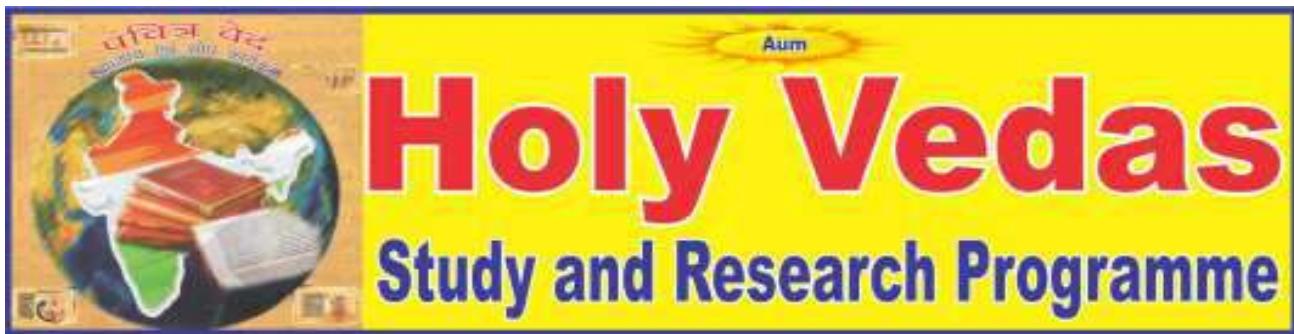
इच्छाएँ हमारे आन्तरिक शत्रु हैं। इच्छाएँ पूरी हों या अधूरी, दोनों ही हमारे सामाजिक और आध्यात्मिक विकास के लिए अच्छी नहीं हैं। पूरी हो चुकी इच्छाएँ हमें कमजोर बना देती हैं - **तृष्णा न जीर्णा, वयं एव जीर्णा**। दूसरी तरफ अधूरी इच्छाएँ हमें हताश और निराश कर देती हैं।

इसी प्रकार अहंकार भी हमारा आन्तरिक शत्रु है, जो बाहर प्रकट होता है। सफल या असफल, अहंकार बाहरी संसार में हमेशा हमारे शत्रुओं की संख्या बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त यह हमारी मानसिक स्वतंत्रता में बाधक होता है।

स्वयं की प्रशंसा करके यदि हम अपने अहंकार की तुष्टि करें तो अन्य लोग ईर्ष्या महसूस करते हैं।

यदि हमारा अहंकार असंतुष्ट रहे तो हमारा मन असंतुष्टि का प्रदर्शन करता है, क्रोध का विकास करता है और हमारे आध्यात्मिक पथ पर एक बाधा बन जाता है।

इसलिए हमें लगातार इच्छाओं और अहंकार के नाश का प्रयास करते रहना चाहिए। इस सम्बन्ध में दो संकल्प हमारे सहायक हो सकते हैं - सदा सत्यवादी बनों और एक संतुलित वक्ता बनों जो महान् ज्ञान के बल पर बोले। यह दो लक्षण आपकी चमक समाज में बढ़ा देंगे और आध्यात्मिक पथ पर सहायता करेंगे।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.6

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः ।
तामुस्मे रासाथामिष्म् ॥

(या) वह जो (नः) हमें (पीपरत) पार लगाने वाला (अश्विना) दोनों प्राण, सूर्य और चन्द्र, पति और पत्नी (ज्योतिष्मती) प्रकाशित करने वाला, बुद्धि को ज्ञानवान बनाने वाला (तमः) अन्धकार, अज्ञानता, रोग, बुराईयाँ (तिरः) दूर रखता है (ताम्) उसको (अस्मे) हमारे लिए (रासाथाम्) उपलब्ध कराता है (इषम्) इच्छाएँ, प्रयास, बुद्धि, भोजन, आनन्द, सुविधाएँ ।

व्याख्या :-

‘इषम्’ के भिन्न-भिन्न आयाम कौन-कौन से हैं?

हमारे ‘इषम्’ किस प्रकार के होने चाहिए?

इस मन्त्र में ‘इषम्’ शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि यह बहुआयामी है। इसके अनेक अर्थ हैं जैसे - इच्छाएँ, प्रयास, बुद्धि, भोजन, आनन्द, सुविधाएँ आदि। इन अलग-अलग अर्थों के आधार पर, यह मन्त्र अलग-अलग प्रेरणाएँ देता है।

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमें ऐसी ‘इषम्’ प्रदान करें जिनके निम्न लक्षण हों :-

(क) पीपरत - जो जीवन पथ को पार करने में हमारी सहायता करता है।

(ख) ज्योतिष्मती - प्रकाशित करने वाला और बुद्धि को ज्ञानवान बनाने वाला

(ग) तमः तिरः - जो हमारे जीवन से अन्धकार, अज्ञानता, रोग, बुराईयों आदि को दूर रखता है

जीवन में सार्थकता

एक सफल जीवन के क्या लक्षण हैं?

(1) यदि ‘इषम्’ को इच्छा के रूप में समझें तो :-

(क) हमारी इच्छाएँ यह सुनिश्चित करने वाली हों कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी इच्छाओं के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारी इच्छाएँ हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारी इच्छाएँ हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सकें।

(2) यदि ‘इषम्’ को प्रयासों के रूप में समझें तो :-

(क) हमारे प्रयास यह सुनिश्चित करने वाले हों कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी प्रयासों के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारे प्रयास हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारे प्रयास हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सकें।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query - Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)

(3) यदि 'इषम्' को भोजन के रूप में समझें तो :-

(क) हमारा भोजन यह सुनिश्चित करने वाला हो कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी भोजन के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारा भोजन हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारा भोजन हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सके।

(4) यदि 'इषम्' को बुद्धि के रूप में समझें तो :-

(क) हमारी बुद्धि यह सुनिश्चित करने वाली हो कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी बुद्धि के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारी बुद्धि हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारी बुद्धि हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सके।

(5) यदि 'इषम्' को सुविधाओं के रूप में समझें तो :-

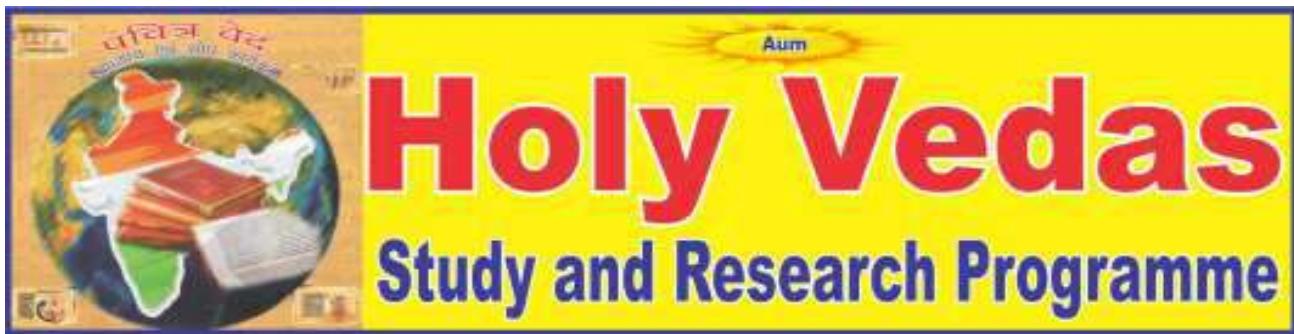
(क) हमारी सुविधाएँ यह सुनिश्चित करने वाली हों कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी सुविधाओं के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारी सुविधाएँ हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारी सुविधाएँ हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सके।

समग्र रूप से, हमारे जीवन का प्रत्येक आयाम हमें संसार सागर से पार लगाने में सहायक होना चाहिए, हमारे अन्दर महान् और दिव्य बुद्धि का प्रकाश करके तथा हर प्रकार की बुराईयों और कमजोरियों को हमसे दूर करके।

इन्हीं तीन परिणामों को एक सफल जीवन कहा जा सकता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.6

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः ।
तामुस्मे रासाथामिष्म् ॥

(या) वह जो (नः) हमें (पीपरत) पार लगाने वाला (अश्विना) दोनों प्राण, सूर्य और चन्द्र, पति और पत्नी (ज्योतिष्मती) प्रकाशित करने वाला, बुद्धि को ज्ञानवान बनाने वाला (तमः) अन्धकार, अज्ञानता, रोग, बुराईयाँ (तिरः) दूर रखता है (ताम्) उसको (अस्मे) हमारे लिए (रासाथाम्) उपलब्ध कराता है (इषम्) इच्छाएँ, प्रयास, बुद्धि, भोजन, आनन्द, सुविधाएँ ।

व्याख्या :-

‘इषम्’ के भिन्न-भिन्न आयाम कौन-कौन से हैं?

हमारे ‘इषम्’ किस प्रकार के होने चाहिए?

इस मन्त्र में ‘इषम्’ शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि यह बहुआयामी है। इसके अनेक अर्थ हैं जैसे - इच्छाएँ, प्रयास, बुद्धि, भोजन, आनन्द, सुविधाएँ आदि। इन अलग-अलग अर्थों के आधार पर, यह मन्त्र अलग-अलग प्रेरणाएँ देता है।

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमें ऐसी ‘इषम्’ प्रदान करें जिनके निम्न लक्षण हों :-

(क) पीपरत - जो जीवन पथ को पार करने में हमारी सहायता करता है।

(ख) ज्योतिष्मती - प्रकाशित करने वाला और बुद्धि को ज्ञानवान बनाने वाला

(ग) तमः तिरः - जो हमारे जीवन से अन्धकार, अज्ञानता, रोग, बुराईयों आदि को दूर रखता है

जीवन में सार्थकता

एक सफल जीवन के क्या लक्षण हैं?

(1) यदि ‘इषम्’ को इच्छा के रूप में समझें तो :-

(क) हमारी इच्छाएँ यह सुनिश्चित करने वाली हों कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी इच्छाओं के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारी इच्छाएँ हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारी इच्छाएँ हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सकें।

(2) यदि ‘इषम्’ को प्रयासों के रूप में समझें तो :-

(क) हमारे प्रयास यह सुनिश्चित करने वाले हों कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी प्रयासों के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारे प्रयास हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारे प्रयास हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सकें।

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query - Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)

(3) यदि 'इषम्' को भोजन के रूप में समझें तो :-

(क) हमारा भोजन यह सुनिश्चित करने वाला हो कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी भोजन के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारा भोजन हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारा भोजन हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सके।

(4) यदि 'इषम्' को बुद्धि के रूप में समझें तो :-

(क) हमारी बुद्धि यह सुनिश्चित करने वाली हो कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी बुद्धि के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारी बुद्धि हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारी बुद्धि हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सके।

(5) यदि 'इषम्' को सुविधाओं के रूप में समझें तो :-

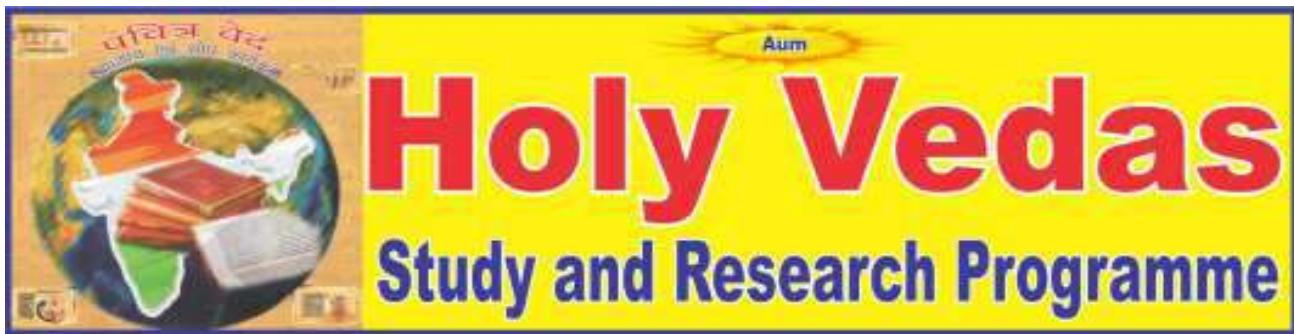
(क) हमारी सुविधाएँ यह सुनिश्चित करने वाली हों कि हम जीवन पथ की बाधाओं को पार कर सकें और कभी भी सुविधाओं के दुष्क्र में न फंसें।

(ख) हमारी सुविधाएँ हमारे अन्दर महान् बुद्धि का प्रकाश उत्पन्न कर सकें।

(ग) हमारी सुविधाएँ हमें अन्धकार, अज्ञानता, बुराईयों और रोगों से दूर रख सके।

समग्र रूप से, हमारे जीवन का प्रत्येक आयाम हमें संसार सागर से पार लगाने में सहायक होना चाहिए, हमारे अन्दर महान् और दिव्य बुद्धि का प्रकाश करके तथा हर प्रकार की बुराईयों और कमजोरियों को हमसे दूर करके।

इन्हीं तीन परिणामों को एक सफल जीवन कहा जा सकता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.7

आ नों नावा मतीनां यातं पुरायु गन्तवे।
युज्जाथामश्विना रथम्॥

(आ - यातम से पूर्व लगाकर) (नः) हमें (नावा) नौकायान (मतीनाम्) बुद्धि (यातम् - आयातम्) अनुभूति में आओ (पाराय) पार करने के लिए (गन्तवे) लक्ष्य (युज्जाथाम्) जोड़ो (अश्विना) दोनों प्राण (रथम्) उत्तम रथ में।

व्याख्या :-

मानव जीवन की उत्पत्ति के दो कदम क्या हैं?

मानव जीवन का क्या उद्देश्य है?

मानव जीवन की उत्पत्ति के दो कदम हैं :-

- (क) परमात्मा ने इस शरीर रथ के साथ दो प्राणों को जोड़ा, और
- (ख) नौकायान की तरह बुद्धि प्रदान की।

मानव जीवन के दो उद्देश्य हैं :-

(क) परमात्मा को अनुभूति में आने दें।

(ख) इस संसार सागर के लक्ष्य को पार करें अर्थात् मुक्ति।

जीवन में सार्थकता

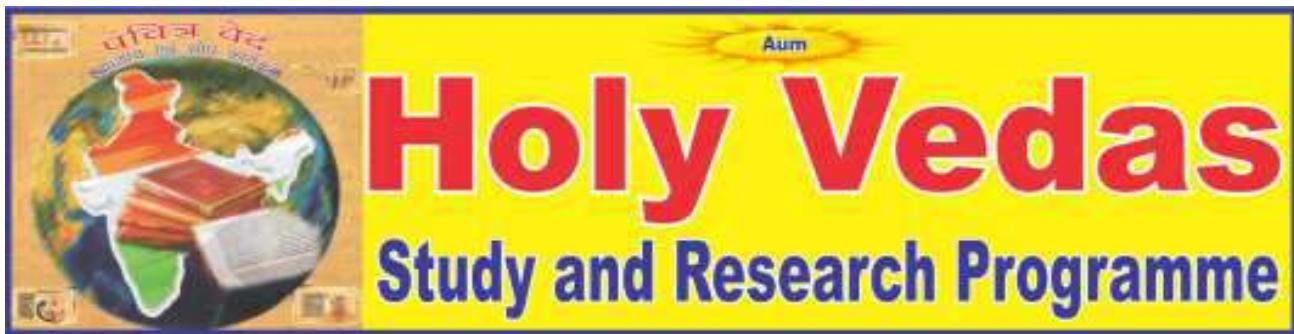
मानव जीवन में बुद्धि की क्या भूमिका है?

सांसारिक जीवन की गतिविधियों के लिए या आध्यात्मिक जीवन के लिए, बुद्धि उस नौकायान की तरह है जिस पर हमें परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करते हुए इस संसार सागर को पार करना है।

मानव शरीर की रचना के दो कदमों में से प्रथम अर्थात् शरीर के साथ प्राणों का संयोग होना अन्य जीवों की तरह एक सामान्य जीवन है, किन्तु मनुष्यों को बुद्धि का मिलना इसे एक विशेष जीवन बना देता है। परमात्मा की इस विशेष भेंट के साथ, जिसे बुद्धि कहा जाता है, हम इस जीवन को सभी क्षेत्रों में पूरी तरह अलंकृत कर सकते हैं।

इस बुद्धि पर एकाग्रता और ध्यान करना तथा इसके निर्णयों पर पूरा नियंत्रण रखना और इसके द्वारा वैदिक विवेक का अनुसरण सुनिश्चित करने से यह बुद्धि चमक जाती है।

इस बुद्धि को इच्छाओं और अहंकार से दूर रखने से परमात्मा की अनुभूति के पथ पर अच्छी सफलता सुनिश्चित हो सकती है जिसे अन्ततः मुक्ति की प्राप्ति कहा जाता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.7

आ नों नावा मतीनां यातं पुरायु गन्तवे।
युज्जाथामश्विना रथम्॥

(आ - यातम से पूर्व लगाकर) (नः) हमें (नावा) नौकायान (मतीनाम्) बुद्धि (यातम् - आयातम्) अनुभूति में आओ (पाराय) पार करने के लिए (गन्तवे) लक्ष्य (युज्जाथाम्) जोड़ो (अश्विना) दोनों प्राण (रथम्) उत्तम रथ में।

व्याख्या :-

मानव जीवन की उत्पत्ति के दो कदम क्या हैं?

मानव जीवन का क्या उद्देश्य है?

मानव जीवन की उत्पत्ति के दो कदम हैं :-

- (क) परमात्मा ने इस शरीर रथ के साथ दो प्राणों को जोड़ा, और
- (ख) नौकायान की तरह बुद्धि प्रदान की।

मानव जीवन के दो उद्देश्य हैं :-

(क) परमात्मा को अनुभूति में आने दें।

(ख) इस संसार सागर के लक्ष्य को पार करें अर्थात् मुक्ति।

जीवन में सार्थकता

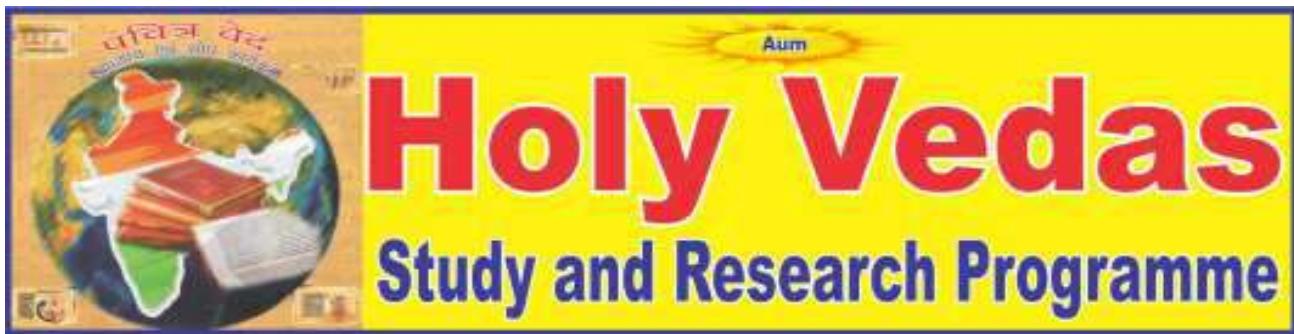
मानव जीवन में बुद्धि की क्या भूमिका है?

सांसारिक जीवन की गतिविधियों के लिए या आध्यात्मिक जीवन के लिए, बुद्धि उस नौकायान की तरह है जिस पर हमें परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करते हुए इस संसार सागर को पार करना है।

मानव शरीर की रचना के दो कदमों में से प्रथम अर्थात् शरीर के साथ प्राणों का संयोग होना अन्य जीवों की तरह एक सामान्य जीवन है, किन्तु मनुष्यों को बुद्धि का मिलना इसे एक विशेष जीवन बना देता है। परमात्मा की इस विशेष भेंट के साथ, जिसे बुद्धि कहा जाता है, हम इस जीवन को सभी क्षेत्रों में पूरी तरह अलंकृत कर सकते हैं।

इस बुद्धि पर एकाग्रता और ध्यान करना तथा इसके निर्णयों पर पूरा नियंत्रण रखना और इसके द्वारा वैदिक विवेक का अनुसरण सुनिश्चित करने से यह बुद्धि चमक जाती है।

इस बुद्धि को इच्छाओं और अहंकार से दूर रखने से परमात्मा की अनुभूति के पथ पर अच्छी सफलता सुनिश्चित हो सकती है जिसे अन्ततः मुक्ति की प्राप्ति कहा जाता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.8

अुरित्रौं वां द्विवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः ।
धिया युयुञ्ज इन्दवः ॥

(अरित्रम्) चप्पू (नौका चलाने के लिए) (वाम्) आपका (दिवः) ज्ञान का, बुद्धि का (पृथु) विस्तृत (तीर्थे) पार करने के लिए (सिन्धूनाम्) समुद्रों को (रथः) सर्वोत्तम रथ (धिया) बुद्धि (युयुञ्जे) संयुक्त (इन्दवः) गुण ।

व्याख्या :-

मानव जीवन यात्रा में बुद्धि की क्या भूमिका है?

बुद्धि की भूमिका का विस्तार करते हुए, इस मन्त्र में कहा गया है कि बुद्धि अर्थात् दिव्य ज्ञान समुद्रों को पार करने के लिए आपका विस्तृत चप्पू है। इस यात्रा के लिए, हमें उत्तम गुणों को इस बुद्धि और मानव शरीर के साथ संयुक्त करना चाहिए।

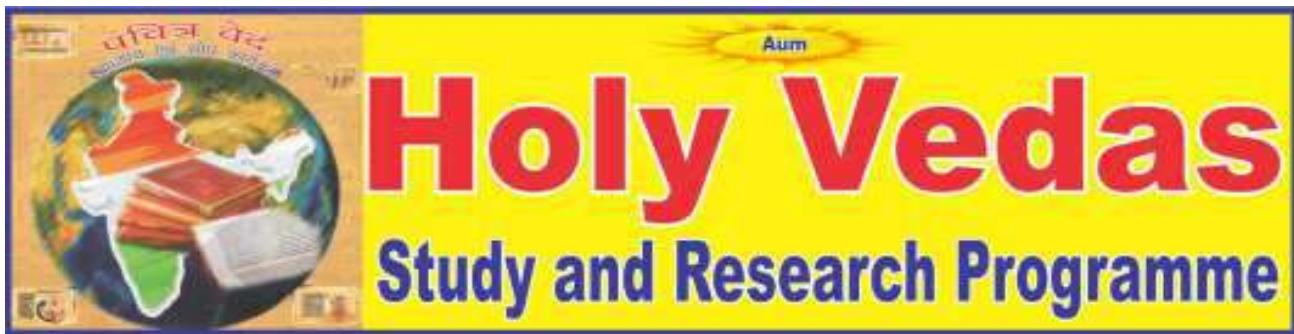
जीवन में सार्थकता

हमें अपनी बुद्धि को सभी गुणों से सुसज्जित क्यों करना चाहिए?

मानव जीवन में, मानव शरीर की नाव को चलाने के लिए बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि बुद्धि एक चप्पू की तरह है। मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल यात्रा के लिए हमें अपनी बुद्धि को दिव्य बनाने के लिए सभी महान् और श्रेष्ठ गुणों के साथ संयुक्त ही नहीं करना चाहिए अपितु उसे सुसज्जित करना चाहिए।

बिना गुणों के, यदि हम सफलता प्राप्त करते हैं, तो यह अस्थाई होगी और अन्ततः संकट पैदा करने वाली भी होगी। यह हमारे अपने जीवन के प्रति एक धोखा होगा। गुणों के बिना जीवन के रूप में कलियुग ऐसे धोखों से भरपूर है।

हमें कीचड़ वाले जल में एक कमल की तरह जीना चाहिए। केवल गुणों से भरपूर जीवन ही संसार सागर को सफलतापूर्वक पार करना सुनिश्चित कर सकता है। केवल शुभ गुण और दिव्य बुद्धि ही आत्म-अनुभूति और परमात्मा की अनुभूति प्रदान कर सकती है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.8

अुरित्रौं वां द्विवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः ।
धिया युयुज्ञ इन्दवः ॥

(अरित्रम्) चप्पू (नौका चलाने के लिए) (वाम्) आपका (दिवः) ज्ञान का, बुद्धि का (पृथु) विस्तृत (तीर्थे) पार करने के लिए (सिन्धूनाम्) समुद्रों को (रथः) सर्वोत्तम रथ (धिया) बुद्धि (युयुज्ञ) संयुक्त (इन्दवः) गुण ।

व्याख्या :-

मानव जीवन यात्रा में बुद्धि की क्या भूमिका है?

बुद्धि की भूमिका का विस्तार करते हुए, इस मन्त्र में कहा गया है कि बुद्धि अर्थात् दिव्य ज्ञान समुद्रों को पार करने के लिए आपका विस्तृत चप्पू है। इस यात्रा के लिए, हमें उत्तम गुणों को इस बुद्धि और मानव शरीर के साथ संयुक्त करना चाहिए।

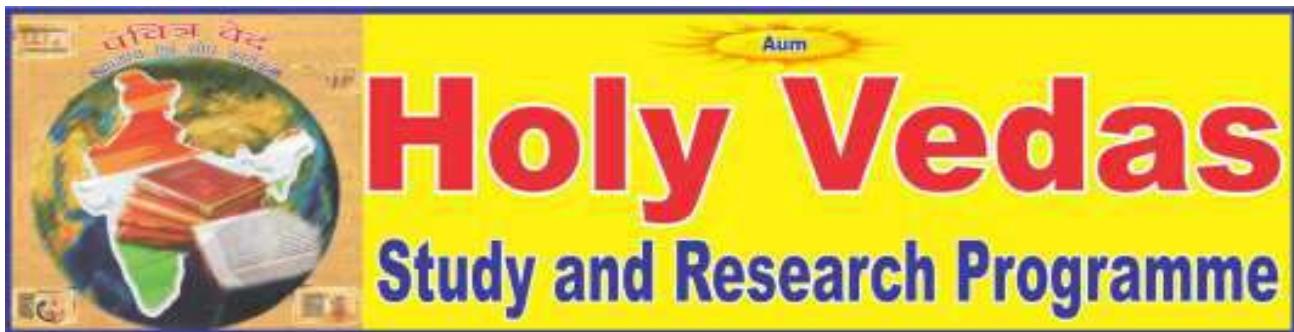
जीवन में सार्थकता

हमें अपनी बुद्धि को सभी गुणों से सुसज्जित क्यों करना चाहिए?

मानव जीवन में, मानव शरीर की नाव को चलाने के लिए बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि बुद्धि एक चप्पू की तरह है। मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल यात्रा के लिए हमें अपनी बुद्धि को दिव्य बनाने के लिए सभी महान् और श्रेष्ठ गुणों के साथ संयुक्त ही नहीं करना चाहिए अपितु उसे सुसज्जित करना चाहिए।

बिना गुणों के, यदि हम सफलता प्राप्त करते हैं, तो यह अस्थाई होगी और अन्ततः संकट पैदा करने वाली भी होगी। यह हमारे अपने जीवन के प्रति एक धोखा होगा। गुणों के बिना जीवन के रूप में कलियुग ऐसे धोखों से भरपूर है।

हमें कीचड़ वाले जल में एक कमल की तरह जीना चाहिए। केवल गुणों से भरपूर जीवन ही संसार सागर को सफलतापूर्वक पार करना सुनिश्चित कर सकता है। केवल शुभ गुण और दिव्य बुद्धि ही आत्म-अनुभूति और परमात्मा की अनुभूति प्रदान कर सकती है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.9

द्विवस्कण्वासु इन्द्रवो वसु सिन्धूनां पुदे ।
स्वं वृत्रिं कुह धित्सथः ॥

(दिव:) प्रकाशवान्, ज्ञान (कण्वासः) एक-एक कदम के साथ ज्ञान एकत्र करने वाले महान् विद्वान् (इन्द्रव:) दिव्य गुणों से बने शक्तिशाली (वसु) सम्पत्ति (सिन्धूनाम्) ज्ञान के समुद्र के साथ (पुदे) उनके चरणों में (स्वम्) अपने (वत्रिम्) धारण करने योग्य (लक्ष्य) (कुह) कहाँ और कब (धित्सथः) धारणा करना चाहते हो, स्थापित करना चाहते हो ।

व्याख्या :-

महान् विद्वानों को 'कण्वासः' क्यों कहा जाता है?

ज्ञान के अथाह समुद्र अर्थात् उन महान् विद्वानों के चरणों में आप स्वयं को कहाँ और कब धारण और स्थापित करना चाहते हो, जिन्होंने एक-एक कदम करके ज्ञान एकत्र किया है और दिव्य गुणों से स्वयं को शक्तिशाली बनाया है?

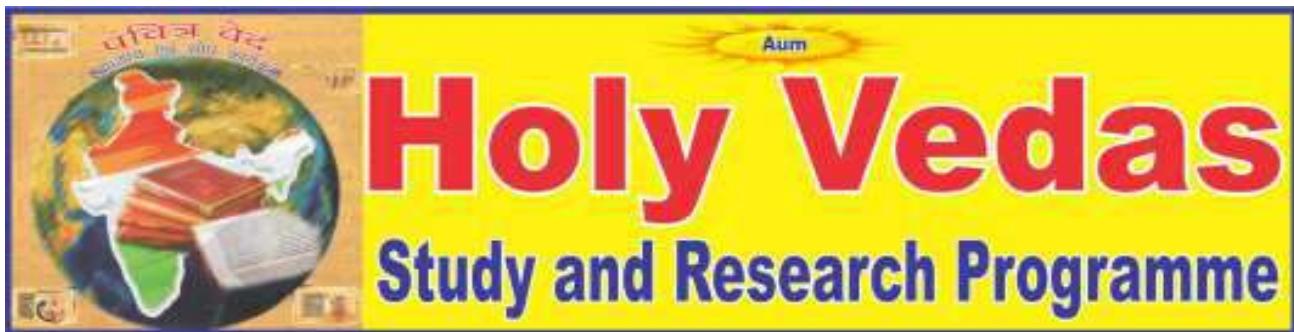
यह आपको निर्धारित करना है कि आप अपने निर्धारित लक्ष्यों के द्वारा ही धारण किये जाओगे या उनसे दिव्य ज्ञान की सम्पत्ति प्राप्त करना चाहते हो ।

जीवन में सार्थकता

प्रत्येक मनुष्य के सामने ज्ञान के कौन से दो अवसर हैं?

प्रत्येक मनुष्य के सामने चयन के दो अवसर होते हैं - प्रथम, संसार में अपना लक्ष्य स्वयं निर्धारित करें, जैसे उच्च पेशेवर जीवन प्राप्त करना, अपार धन और उच्च स्तर अर्जित करना आदि या द्वितीय, दिव्य ज्ञान की सम्पत्ति प्राप्त करना जो मुक्ति की तरफ ले जा सके ।

इन दोनों के लिए आपको एक उचित गुरु का चुनाव करना होगा । प्रथम अवसर के लिए एक पेशेवर अध्यापक को ढूँढ़ना कठिन नहीं है । परन्तु दूसरे अवसर के लिए एक महान् अनुभूति प्राप्त सन्त या विद्वान् गुरु को ढूँढ़ना आज के युग में निःसंदेह अत्यन्त कठिन है । ऐसे सन्त और विद्वान् जिन्होंने लम्बी और लगातार तपस्या से ज्ञान एकत्र किया है और क्रियात्मक रूप से उस पथ का अनुसरण कर रहे हों, ऐसे लोग दुर्लभ हैं । तुरन्त ऐसे सन्तों की खोज शुरू कर देनी चाहिए और उनके चरण कमलों में बैठना चाहिए जैसे विशाल समुद्र के किनारे बैठे हों ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.9

द्विवस्कण्वासु इन्द्रवो वसु सिन्धूनां पुदे ।
स्वं वृत्रिं कुह धित्सथः ॥

(दिव:) प्रकाशवान्, ज्ञान (कण्वासः) एक-एक कदम के साथ ज्ञान एकत्र करने वाले महान् विद्वान् (इन्द्रव:) दिव्य गुणों से बने शक्तिशाली (वसु) सम्पत्ति (सिन्धूनाम्) ज्ञान के समुद्र के साथ (पुदे) उनके चरणों में (स्वम्) अपने (वत्रिम्) धारण करने योग्य (लक्ष्य) (कुह) कहाँ और कब (धित्सथः) धारणा करना चाहते हो, स्थापित करना चाहते हो ।

व्याख्या :-

महान् विद्वानों को 'कण्वासः' क्यों कहा जाता है?

ज्ञान के अथाह समुद्र अर्थात् उन महान् विद्वानों के चरणों में आप स्वयं को कहाँ और कब धारण और स्थापित करना चाहते हो, जिन्होंने एक-एक कदम करके ज्ञान एकत्र किया है और दिव्य गुणों से स्वयं को शक्तिशाली बनाया है?

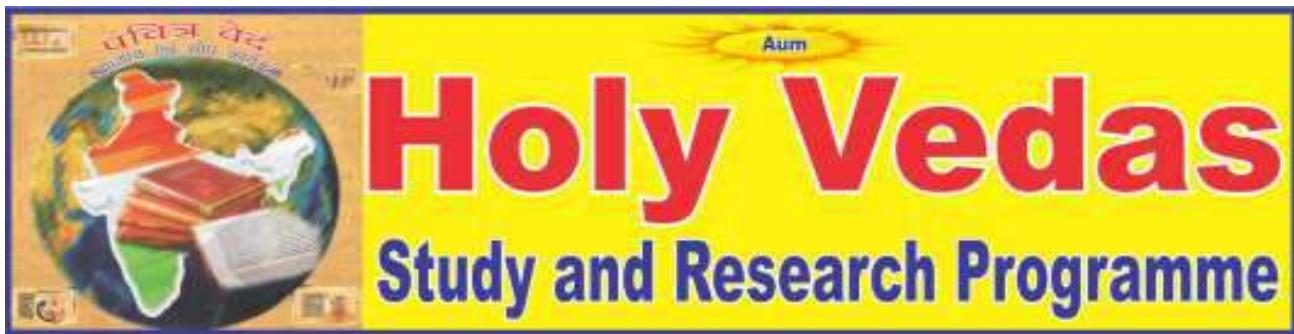
यह आपको निर्धारित करना है कि आप अपने निर्धारित लक्ष्यों के द्वारा ही धारण किये जाओगे या उनसे दिव्य ज्ञान की सम्पत्ति प्राप्त करना चाहते हो ।

जीवन में सार्थकता

प्रत्येक मनुष्य के सामने ज्ञान के कौन से दो अवसर हैं?

प्रत्येक मनुष्य के सामने चयन के दो अवसर होते हैं - प्रथम, संसार में अपना लक्ष्य स्वयं निर्धारित करें, जैसे उच्च पेशेवर जीवन प्राप्त करना, अपार धन और उच्च स्तर अर्जित करना आदि या द्वितीय, दिव्य ज्ञान की सम्पत्ति प्राप्त करना जो मुक्ति की तरफ ले जा सके ।

इन दोनों के लिए आपको एक उचित गुरु का चुनाव करना होगा । प्रथम अवसर के लिए एक पेशेवर अध्यापक को ढूँढ़ना कठिन नहीं है । परन्तु दूसरे अवसर के लिए एक महान् अनुभूति प्राप्त सन्त या विद्वान् गुरु को ढूँढ़ना आज के युग में निःसंदेह अत्यन्त कठिन है । ऐसे सन्त और विद्वान् जिन्होंने लम्बी और लगातार तपस्या से ज्ञान एकत्र किया है और क्रियात्मक रूप से उस पथ का अनुसरण कर रहे हों, ऐसे लोग दुर्लभ हैं । तुरन्त ऐसे सन्तों की खोज शुरू कर देनी चाहिए और उनके चरण कमलों में बैठना चाहिए जैसे विशाल समुद्र के किनारे बैठे हों ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.11

अभूदु पारमेतवे पन्था॑ ऋतस्य॑ साधुया॑ ।
अदर्शि॒ वि॒ स्मृतिर्दिवः॑ ॥

(अभूत् उ) निश्चित रूप से अनुभूति प्राप्त (पारम) पार करने के लिए (एतवे) इस सांसारिक समुद्र को (पन्था) पथ (ऋतस्य) सत्य (साधुया) लक्ष्य तक पहुंचने के उत्तम साधन (अदर्शि) दिखाई देती है (वि स्मृतिः) विस्तृत बढ़ी हुई (दिवः) दिव्यता, प्रकाश ।

व्याख्या :-

संसार सागर को पार करने का उत्तम मार्ग क्या है?

इस मार्ग पर क्या दिखाई देता है?

संसार सागर को पार करने की अनुभूति निश्चित रूप से आती है और इस लक्ष्य तक पहुंचने का उत्तम साधन है सत्यवादिता का मार्ग । इस मार्ग पर विस्तृत और बढ़ी हुई दिव्यता तथा प्रकाश दिखाई देता है ।

जीवन में सार्थकता

सत्यवादिता का क्या महत्त्व है?

जीवन में सत्यवादिता का पालन करना अत्यन्त सरल है परन्तु यह अत्यन्त दुर्लभ लक्षण है । सत्यवादिता का अर्थ है आपने जो देखा, सुना और समझा, केवल उसी को बोलना । इसका अर्थ यह भी है कि परमात्मा और उससे प्रकाशित ज्ञान के सत्य और मूल रूप का अनुसरण करना ।

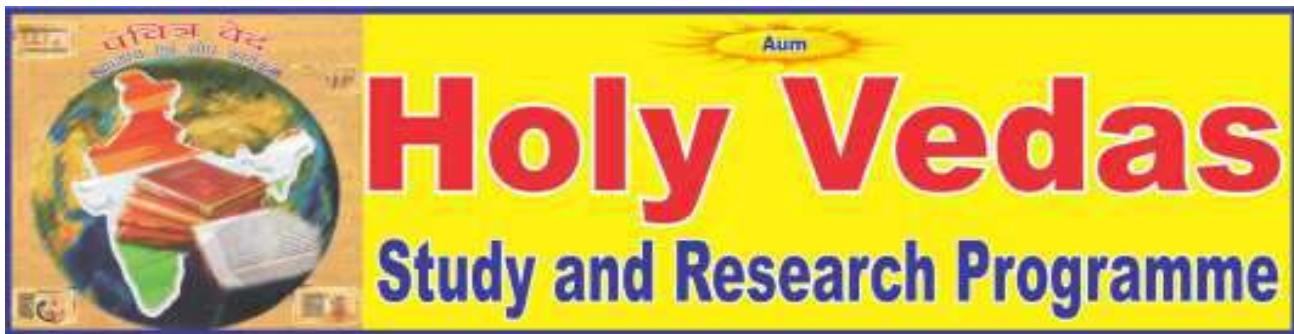
सत्यवादिता का प्रभाव इतना सरल है कि यह हमें अत्यन्त संतुलित अवस्था में रखती है । झूठ बोलने के लिए, एक व्यक्ति को योजना बनानी पड़ती है और अपने दिमाग को उस झूठ के संभालने में लगाये रखना पड़ता है ।

सत्यवादिता से सबकी नजरों में विश्वसनीयता बन जाती है । विश्वसनीयता से आस-पास के वातावरण में एकात्मता दिखाई देती है ।

एकात्मता से प्रगति प्राप्त होती है । ऐसे सत्यवादी व्यक्ति की प्रगति बढ़ी हुई दिव्यता के रूप में दिखाई देती है । यह मूल औपचारिक योग्यताओं में एक सर्वोच्च वृद्धि होती है ।

अतः जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए सत्यवादिता एक महत्त्वपूर्ण लक्षण है ।

सत्यवादिता ---- विश्वसनीयता ---- एकात्मता ---- प्रगति ---- बढ़ी हुई दिव्यता ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.11

अभूदु पारमेतवे पन्था॑ ऋतस्य॑ साधुया॑ ।
अदर्शि॒ वि॒ स्मृतिर्दिवः॒ ॥

(अभूत् उ) निश्चित रूप से अनुभूति प्राप्त (पारम) पार करने के लिए (एतवे) इस सांसारिक समुद्र को (पन्था) पथ (ऋतस्य) सत्य (साधुया) लक्ष्य तक पहुंचने के उत्तम साधन (अदर्शि) दिखाई देती है (वि स्मृतिः) विस्तृत बढ़ी हुई (दिवः) दिव्यता, प्रकाश ।

व्याख्या :-

संसार सागर को पार करने का उत्तम मार्ग क्या है?

इस मार्ग पर क्या दिखाई देता है?

संसार सागर को पार करने की अनुभूति निश्चित रूप से आती है और इस लक्ष्य तक पहुंचने का उत्तम साधन है सत्यवादिता का मार्ग । इस मार्ग पर विस्तृत और बढ़ी हुई दिव्यता तथा प्रकाश दिखाई देता है ।

जीवन में सार्थकता

सत्यवादिता का क्या महत्त्व है?

जीवन में सत्यवादिता का पालन करना अत्यन्त सरल है परन्तु यह अत्यन्त दुर्लभ लक्षण है । सत्यवादिता का अर्थ है आपने जो देखा, सुना और समझा, केवल उसी को बोलना । इसका अर्थ यह भी है कि परमात्मा और उससे प्रकाशित ज्ञान के सत्य और मूल रूप का अनुसरण करना ।

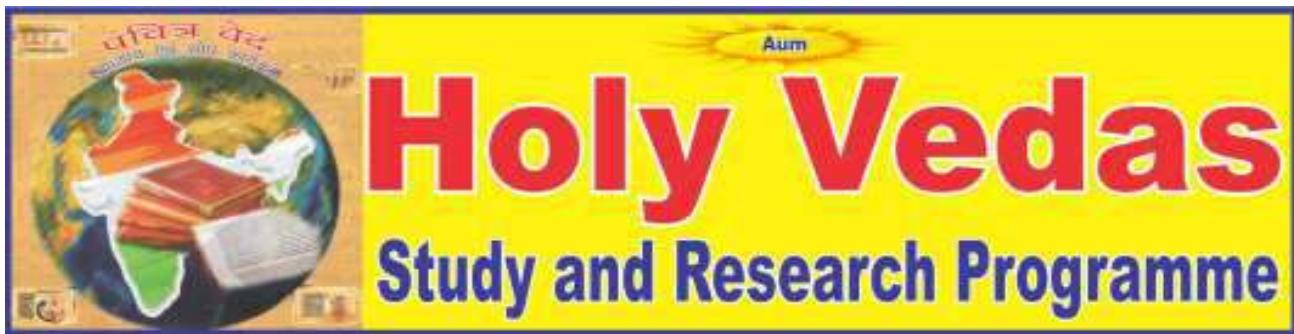
सत्यवादिता का प्रभाव इतना सरल है कि यह हमें अत्यन्त संतुलित अवस्था में रखती है । झूठ बोलने के लिए, एक व्यक्ति को योजना बनानी पड़ती है और अपने दिमाग को उस झूठ के संभालने में लगाये रखना पड़ता है ।

सत्यवादिता से सबकी नजरों में विश्वसनीयता बन जाती है । विश्वसनीयता से आस-पास के वातावरण में एकात्मता दिखाई देती है ।

एकात्मता से प्रगति प्राप्त होती है । ऐसे सत्यवादी व्यक्ति की प्रगति बढ़ी हुई दिव्यता के रूप में दिखाई देती है । यह मूल औपचारिक योग्यताओं में एक सर्वोच्च वृद्धि होती है ।

अतः जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए सत्यवादिता एक महत्त्वपूर्ण लक्षण है ।

सत्यवादिता ---- विश्वसनीयता ---- एकात्मता ---- प्रगति ---- बढ़ी हुई दिव्यता ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.12

तत्तदिदुश्वनोरवों जरिता प्रति॑ भूषति॑ ।
मदे॒ सोमस्य॑ पिप्रतोः॑ ॥

(तत् तत्) केवल वे ही (इत्) निश्चित रूप से (अश्विनोः) जोड़ा (प्राणों का) (अवः) संरक्षित (जरिता) परमात्मा का महिमा गान (प्रति भूषति) सुसज्जित (मदे) आनन्ददायक (सोमस्य) गुणों का (पिप्रतोः) पूर्ण ।

व्याख्या :-

कौन पूरी तरह संरक्षित है?

केवल उन प्राणों का जोड़ा निश्चित रूप से संरक्षित है : -

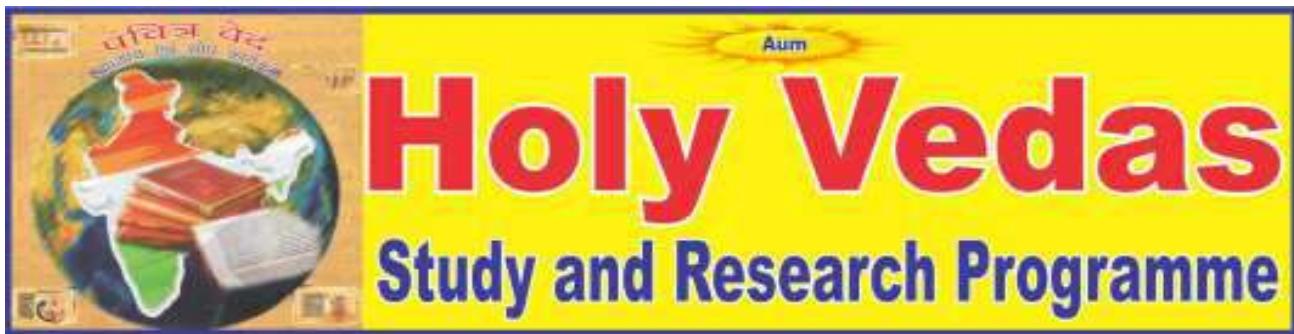
- (क) जो परमात्मा के महिमा गान से सुसज्जित है
- (ख) जो अपने जीवन में पूर्ण गुणों से आनन्दित हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा के महिमा गान का क्या महत्व है?

जो लोग परमात्मा की महिमा का गान करते हैं वे निश्चित रूप से अपने आपको कई प्रकार की तपस्याओं में व्यस्त रखते हैं। ऐसे श्रद्धालुओं के जीवन में प्राण साधना जीवन का एक मार्ग बन जाती है। वे अन्ततः पूर्ण गुणों से आनन्दित होते हैं।

इस प्रकार परमात्मा की महिमा का गुणगान सभी उपलब्धियों का मूल है, क्योंकि यह लक्षण मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का मूल आधार है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.12

तत्तदिदुश्वनोरवों जरिता प्रति॑ भूषति॑ ।
मदे॒ सोमस्य॑ पिप्रतोः॑ ॥

(तत् तत्) केवल वे ही (इत्) निश्चित रूप से (अश्विनोः) जोड़ा (प्राणों का) (अवः) संरक्षित (जरिता) परमात्मा का महिमा गान (प्रति भूषति) सुसज्जित (मदे) आनन्ददायक (सोमस्य) गुणों का (पिप्रतोः) पूर्ण ।

व्याख्या :-

कौन पूरी तरह संरक्षित है?

केवल उन प्राणों का जोड़ा निश्चित रूप से संरक्षित है : -

(क) जो परमात्मा के महिमा गान से सुसज्जित है

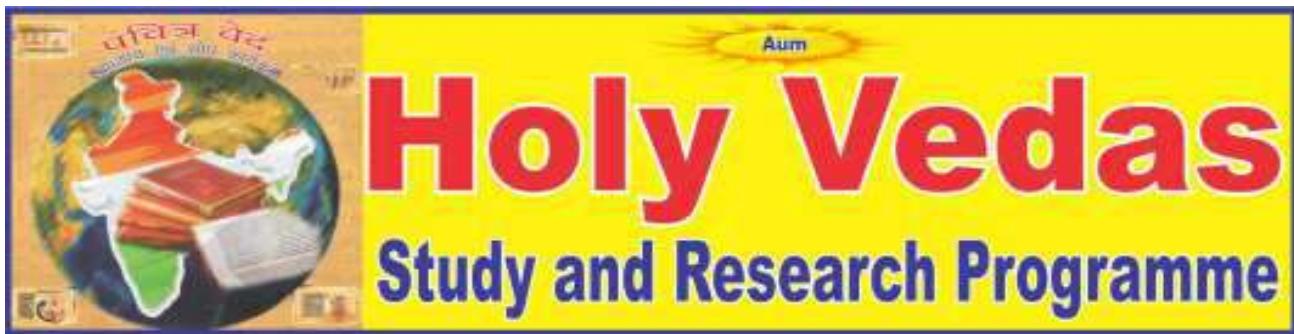
(ख) जो अपने जीवन में पूर्ण गुणों से आनन्दित हैं।

जीवन में सार्थकता

परमात्मा के महिमा गान का क्या महत्व है?

जो लोग परमात्मा की महिमा का गान करते हैं वे निश्चित रूप से अपने आपको कई प्रकार की तपस्याओं में व्यस्त रखते हैं। ऐसे श्रद्धालुओं के जीवन में प्राण साधना जीवन का एक मार्ग बन जाती है। वे अन्ततः पूर्ण गुणों से आनन्दित होते हैं।

इस प्रकार परमात्मा की महिमा का गुणगान सभी उपलब्धियों का मूल है, क्योंकि यह लक्षण मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का मूल आधार है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.13

वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा।
मनुष्वच्छंभु आ गतम् ॥

(वावसाना) सुखों और शांति में स्थापित (विवस्वति) परमात्मा और उसके ज्ञान से प्रेम करना, पूजा करना (सोमस्य) गुणों के लिए (पीत्या) पीना (गिरा) ज्ञान की वाणी (मनुष्वत्) श्रेष्ठ मनुष्य की तरह (शंभु) शांति और कल्याण की उत्पत्ति करने वाला (आ गतम्) अनुभूति में आता है।

व्याख्या :-

एक वास्तविक श्रेष्ठ व्यक्ति के क्या लक्षण हैं?

एक श्रेष्ठ व्यक्ति को क्या अनुभूति होती है?

शांति और कल्याण का उत्पत्तिकर्ता, परमात्मा, उन श्रेष्ठ व्यक्तियों की अनुभूति में आता है :-

(क) जो सुखों और शांति में स्थापित है।

(ख) जो परमात्मा और उसके ज्ञान से प्रेम करते हैं और उसकी पूजा करते हैं।

(ग) जो अपने ज्ञान की वाणियों का सदुपयोग करके शुभ गुणों का पान करते हैं।

जीवन में सार्थकता

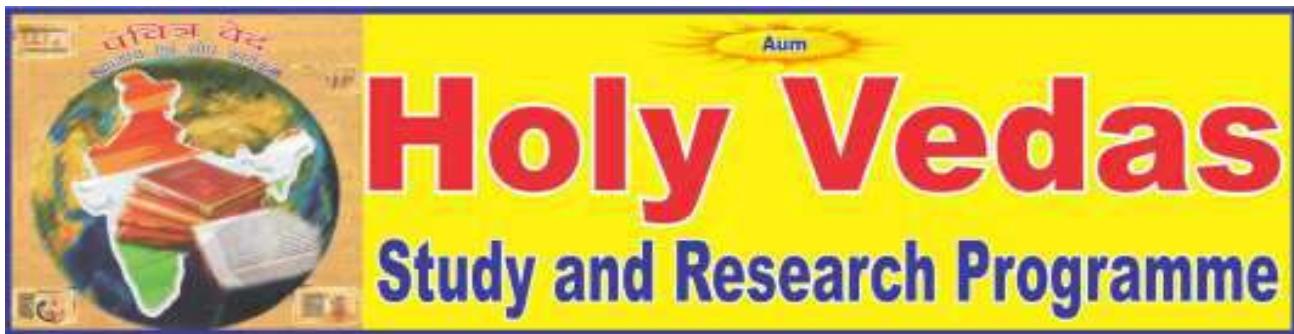
शाश्वत शांति कहाँ होती है?

शांति का क्या परिणाम होता है?

हमें प्रत्येक हालात में शांति में रहना चाहिए, वस्तुओं के टुकड़ों के लिए नहीं। शांति का एक ही स्रोत है - परमात्मा से प्रेम करना, क्योंकि वही हमारा सत्य स्वरूप है। हमें वस्तुओं के टुकड़ों में कभी शाश्वत शांति नहीं मिल सकती। शाश्वत शांति निःसंदेह शांति के उत्पत्ति करने वाले में रहती है जो हमारी ऊर्जा और हमारे जीवन का मूल कारण है अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा।

परमात्मा के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने के बाद हमें प्रत्येक क्षण और प्रत्येक ऊर्जा का सदुपयोग जीवन में शुभ गुणों के पान के लिए ही करना चाहिए। यह तीन लक्षण ही हमें एक श्रेष्ठ मानव बना सकते हैं - शांति, परमात्मा के लिए प्रेम और शुभ गुण।

शांति, परमात्मा के लिए प्रेम उत्पन्न करती है और शुभ गुणों के लिए प्रेरित करती है। इन लक्षणों के बल पर ही परमात्मा अनुभूति में आते हैं जो सबके कल्याण के उत्पत्तिकर्ता हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.13

वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा।
मनुष्वच्छंभु आ गतम् ॥

(वावसाना) सुखों और शांति में स्थापित (विवस्वति) परमात्मा और उसके ज्ञान से प्रेम करना, पूजा करना (सोमस्य) गुणों के लिए (पीत्या) पीना (गिरा) ज्ञान की वाणी (मनुष्वत्) श्रेष्ठ मनुष्य की तरह (शंभु) शांति और कल्याण की उत्पत्ति करने वाला (आ गतम्) अनुभूति में आता है।

व्याख्या :-

एक वास्तविक श्रेष्ठ व्यक्ति के क्या लक्षण हैं?

एक श्रेष्ठ व्यक्ति को क्या अनुभूति होती है?

शांति और कल्याण का उत्पत्तिकर्ता, परमात्मा, उन श्रेष्ठ व्यक्तियों की अनुभूति में आता है :-

(क) जो सुखों और शांति में स्थापित है।

(ख) जो परमात्मा और उसके ज्ञान से प्रेम करते हैं और उसकी पूजा करते हैं।

(ग) जो अपने ज्ञान की वाणियों का सदुपयोग करके शुभ गुणों का पान करते हैं।

जीवन में सार्थकता

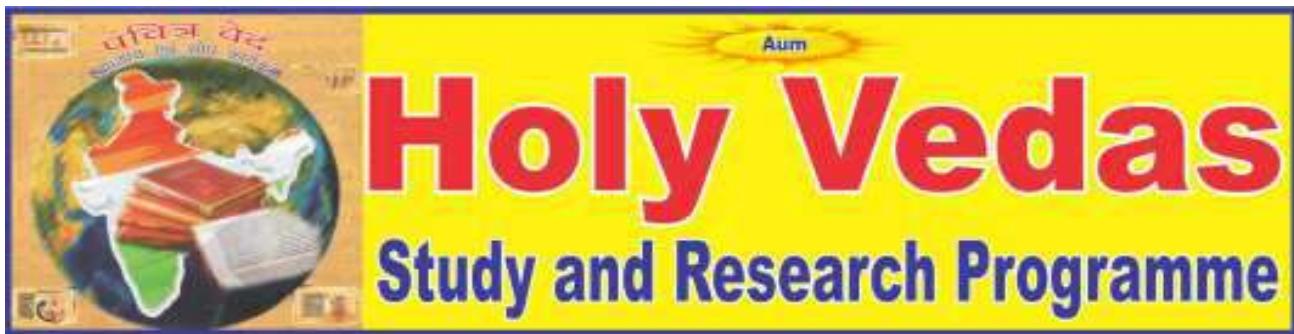
शाश्वत शांति कहाँ होती है?

शांति का क्या परिणाम होता है?

हमें प्रत्येक हालात में शांति में रहना चाहिए, वस्तुओं के टुकड़ों के लिए नहीं। शांति का एक ही स्रोत है - परमात्मा से प्रेम करना, क्योंकि वही हमारा सत्य स्वरूप है। हमें वस्तुओं के टुकड़ों में कभी शाश्वत शांति नहीं मिल सकती। शाश्वत शांति निःसंदेह शांति के उत्पत्ति करने वाले में रहती है जो हमारी ऊर्जा और हमारे जीवन का मूल कारण है अर्थात् सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा।

परमात्मा के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने के बाद हमें प्रत्येक क्षण और प्रत्येक ऊर्जा का सदुपयोग जीवन में शुभ गुणों के पान के लिए ही करना चाहिए। यह तीन लक्षण ही हमें एक श्रेष्ठ मानव बना सकते हैं - शांति, परमात्मा के लिए प्रेम और शुभ गुण।

शांति, परमात्मा के लिए प्रेम उत्पन्न करती है और शुभ गुणों के लिए प्रेरित करती है। इन लक्षणों के बल पर ही परमात्मा अनुभूति में आते हैं जो सबके कल्याण के उत्पत्तिकर्ता हैं।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.14

युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् ।
ऋता वनथो अक्तुभिः ॥

(युवोः) आपके (उषाः) उदय होते सूर्य की प्रथम किरणें (अनु) वनथः से पूर्व लगाकर (श्रियम्) गौरवशाली सम्पदा (परिज्मनोः) चारों तरफ गति करने वाला (उपाचरत्) निकट से प्राप्त (ऋता) सदैव (वनथः) अनुवनथः सुविधाजनक रूप में आनन्द लेना (अक्तुभिः) केवल रात्रि में, ज्ञान की किरणों के साथ ।

व्याख्या :-

उदय होते सूर्य की प्रथम किरणें सर्वमान्य कैसे हैं?

हमें आपके उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों का आनन्द सुविधाजनक रूप में लेना चाहिए जो सदैव और सर्वत्र गति करती हैं। गौरवशाली सम्पदा ज्ञान की किरणों के साथ ऐसे लोगों को निकटता से प्राप्त होती हैं जो सूर्य की प्रथम किरणों का आनन्द लेते हैं।

जीवन में सार्थकता

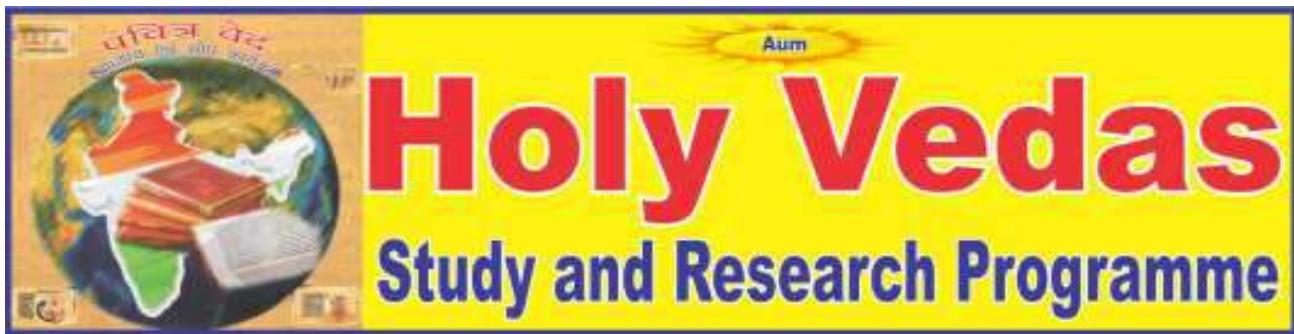
परमात्मा की समस्त देन सर्वमान्य कैसे हैं?

परमात्मा की देन को किस प्रकार प्राप्त और प्रयोग करें?

उदय होते हुए प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें वायुमण्डल में सर्वत्र बारी-बारी से गति करती हैं। प्रतिक्षण सूर्य की यह प्रातःकालीन किरणों समस्त स्थानों पर बारी-बारी से पहुँचती हैं। अतः सूर्य की यह पहली किरणें प्राकृतिक रूप से सबके लिए समान हैं। ये हम सबके बीच कोई भेदभाव नहीं करती। परन्तु कुछ लोग इन्हें उचित प्रकार से प्राप्त करते हैं और कुछ नहीं।

परमात्मा की सभी देन भी सूर्य की किरणों की तरह हैं जो बिना भेदभाव के सभी जीवों पर वर्षा करती हैं। केवल सक्रिय और ऊर्जावान व्यक्ति परमात्मा की बरसती हुई देन को उचित प्रकार से प्राप्त करते हैं और प्रयोग करते हैं, जो दिव्य ज्ञान के साथ गौरवशाली सम्पदा हैं, सबके कल्याण के लिए इनका प्रयोग करते हैं, शांति में रहते हैं और जीवन में दिव्य बन जाते हैं। परमात्मा की सभी देन प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों की तरह सभी लोगों के लिए, सभी स्थानों पर और हर समय बरसती हैं।

इसे महसूस करो, इस पर ध्यान करो, इसे प्राप्त करो, इसकी अनुभूति करो और दिव्य उद्देश्यों के लिए इसका प्रयोग करो।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.14

युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् ।
ऋता वनथो अक्तुभिः ॥

(युवोः) आपके (उषाः) उदय होते सूर्य की प्रथम किरणें (अनु) वनथः से पूर्व लगाकर (श्रियम्) गौरवशाली सम्पदा (परिज्मनोः) चारों तरफ गति करने वाला (उपाचरत्) निकट से प्राप्त (ऋता) सदैव (वनथः) अनुवनथः सुविधाजनक रूप में आनन्द लेना (अक्तुभिः) केवल रात्रि में, ज्ञान की किरणों के साथ ।

व्याख्या :-

उदय होते सूर्य की प्रथम किरणें सर्वमान्य कैसे हैं?

हमें आपके उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों का आनन्द सुविधाजनक रूप में लेना चाहिए जो सदैव और सर्वत्र गति करती हैं। गौरवशाली सम्पदा ज्ञान की किरणों के साथ ऐसे लोगों को निकटता से प्राप्त होती हैं जो सूर्य की प्रथम किरणों का आनन्द लेते हैं।

जीवन में सार्थकता

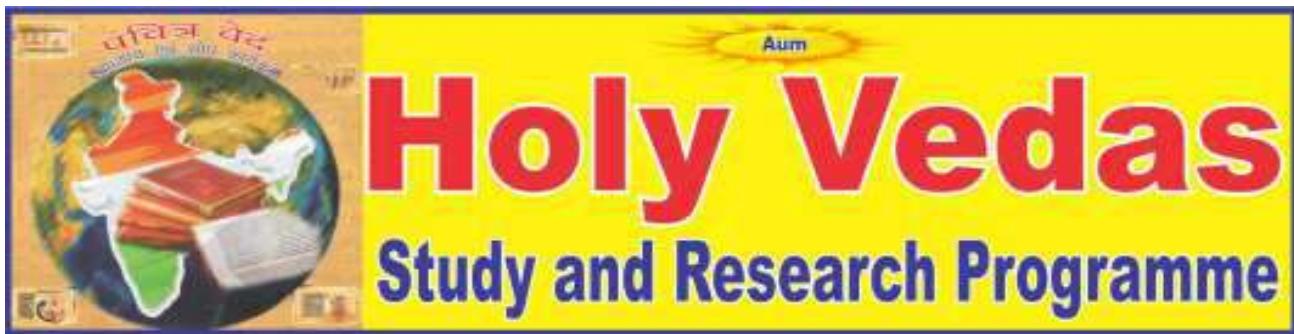
परमात्मा की समस्त देन सर्वमान्य कैसे हैं?

परमात्मा की देन को किस प्रकार प्राप्त और प्रयोग करें?

उदय होते हुए प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें वायुमण्डल में सर्वत्र बारी-बारी से गति करती हैं। प्रतिक्षण सूर्य की यह प्रातःकालीन किरणों समस्त स्थानों पर बारी-बारी से पहुँचती हैं। अतः सूर्य की यह पहली किरणें प्राकृतिक रूप से सबके लिए समान हैं। ये हम सबके बीच कोई भेदभाव नहीं करती। परन्तु कुछ लोग इन्हें उचित प्रकार से प्राप्त करते हैं और कुछ नहीं।

परमात्मा की सभी देन भी सूर्य की किरणों की तरह हैं जो बिना भेदभाव के सभी जीवों पर वर्षा करती हैं। केवल सक्रिय और ऊर्जावान व्यक्ति परमात्मा की बरसती हुई देन को उचित प्रकार से प्राप्त करते हैं और प्रयोग करते हैं, जो दिव्य ज्ञान के साथ गौरवशाली सम्पदा हैं, सबके कल्याण के लिए इनका प्रयोग करते हैं, शांति में रहते हैं और जीवन में दिव्य बन जाते हैं। परमात्मा की सभी देन प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों की तरह सभी लोगों के लिए, सभी स्थानों पर और हर समय बरसती हैं।

इसे महसूस करो, इस पर ध्यान करो, इसे प्राप्त करो, इसकी अनुभूति करो और दिव्य उद्देश्यों के लिए इसका प्रयोग करो।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.15

उभा पिबतमश्विनोभा नुः शर्म यच्छतम् ।
अविद्रियाभिरुतिभिः ॥

(उभा) आप दोनों (पिबतम्) पान करो (प्रथम किरणों का) (अश्विना) जोड़ा (प्राणों का) (उभा) आप दोनों (नः) हमारे लिए (शर्म) सुविधाएं, कल्याण (यच्छतम्) प्रदान करो, उपलब्ध कराओ (अविद्रियाभिः) निन्दा करने के योग्य नहीं, अवाधित (उतिभिः) संरक्षण के लिए ।

व्याख्या :-

हमारे प्राणों को उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों का पान क्यों करना चाहिए?

दोनों प्राणों को उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों का पान प्राणायाम के माध्यम से अवश्य करना चाहिए । इस साधना के बल पर :-

(क) दोनों प्राण हमें हर प्रकार की सुविधा और कल्याण उपलब्ध कराने के योग्य बन जायेंगे ।

(ख) वे कभी निन्दा के योग्य नहीं रहेंगे और परिणामस्वरूप स्वस्थ और बाधारहित जीवन प्राप्त करेंगे ।

(ग) वे हमें संरक्षित कर पायेंगे ।

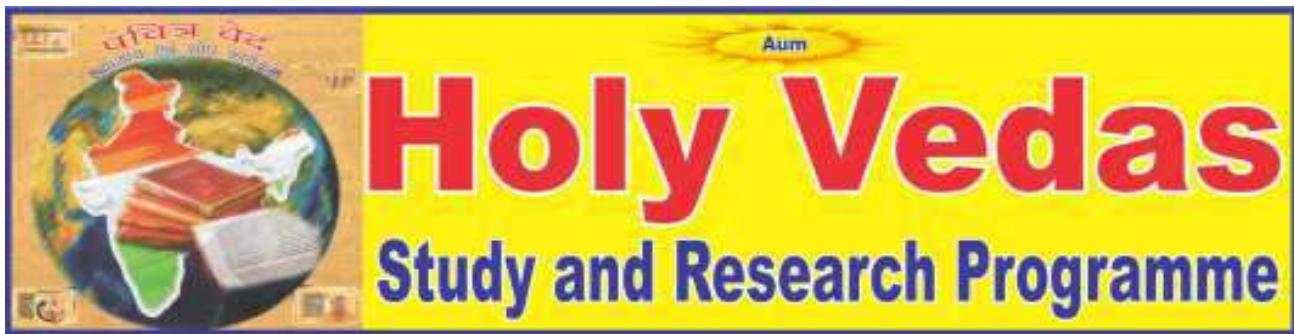
जीवन में सार्थकता

एक स्वस्थ और उत्तम जीवन का क्या रहस्य है?

मन को संतुलित कैसे बनाकर रखें?

प्रत्येक व्यक्ति एक स्वस्थ और श्रेष्ठ जीवन की कामना करता है । सभी कर्मों को बिना बाधा सम्पन्न करने के लिए स्वस्थ जीवन अत्यन्त आवश्यक है । जब एक बार व्यक्ति अपने कर्म संचय को समाप्त करने के योग्य हो जाता है, तभी वह आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होते हुए मुक्ति को प्राप्त करने में सफल हो सकता है । अतः प्रातःकाल जल्दी उठना और प्राणायाम के द्वारा उदय होते हुए सूर्य की पहली किरणों का पान करना अच्छे स्वास्थ्य का मूल आधार है, क्योंकि प्राणायाम मन को संतुलित रखने में सहायता करता है और मन को समत्त्व अवस्था में ले जाता है ।

एक श्रेष्ठ जीवन के लिए हमें शुभ गुणों का पान करना चाहिए । ब्रह्मवेला का समय इस उद्देश्य के लिए भी सबसे अद्यक्ष सुगम है । ब्रह्मवेला में प्राणायाम का अभ्यास करते हुए हमारा आकाश तत्त्व बढ़ता है और मन में सभी श्रेष्ठ गुणों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है । श्रेष्ठ जीवन का अर्थ है संतुलित मन और श्रेष्ठ कार्यों को करने की क्षमता ।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.15

उभा पिबतमश्विनोभा नुः शर्म यच्छतम् ।
अविद्रियाभिरुतिभिः ॥

(उभा) आप दोनों (पिबतम्) पान करो (प्रथम किरणों का) (अश्विना) जोड़ा (प्राणों का) (उभा) आप दोनों (नः) हमारे लिए (शर्म) सुविधाएं, कल्याण (यच्छतम्) प्रदान करो, उपलब्ध कराओ (अविद्रियाभिः) निन्दा करने के योग्य नहीं, अवाधित (उतिभिः) संरक्षण के लिए ।

व्याख्या :-

हमारे प्राणों को उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों का पान क्यों करना चाहिए?

दोनों प्राणों को उदय होते हुए सूर्य की प्रथम किरणों का पान प्राणायाम के माध्यम से अवश्य करना चाहिए । इस साधना के बल पर :-

- (क) दोनों प्राण हमें हर प्रकार की सुविधा और कल्याण उपलब्ध कराने के योग्य बन जायेंगे ।
- (ख) वे कभी निन्दा के योग्य नहीं रहेंगे और परिणामस्वरूप स्वस्थ और बाधारहित जीवन प्राप्त करेंगे ।
- (ग) वे हमें संरक्षित कर पायेंगे ।

जीवन में सार्थकता

एक स्वस्थ और उत्तम जीवन का क्या रहस्य है?

मन को संतुलित कैसे बनाकर रखें?

प्रत्येक व्यक्ति एक स्वस्थ और श्रेष्ठ जीवन की कामना करता है । सभी कर्मों को बिना बाधा सम्पन्न करने के लिए स्वस्थ जीवन अत्यन्त आवश्यक है । जब एक बार व्यक्ति अपने कर्म संचय को समाप्त करने के योग्य हो जाता है, तभी वह आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होते हुए मुक्ति को प्राप्त करने में सफल हो सकता है । अतः प्रातःकाल जल्दी उठना और प्राणायाम के द्वारा उदय होते हुए सूर्य की पहली किरणों का पान करना अच्छे स्वास्थ्य का मूल आधार है, क्योंकि प्राणायाम मन को संतुलित रखने में सहायता करता है और मन को समन्वय अवस्था में ले जाता है ।

एक श्रेष्ठ जीवन के लिए हमें शुभ गुणों का पान करना चाहिए । ब्रह्मवेला का समय इस उद्देश्य के लिए भी सबसे अद्यक्ष सुगम है । ब्रह्मवेला में प्राणायाम का अभ्यास करते हुए हमारा आकाश तत्त्व बढ़ता है और मन में सभी श्रेष्ठ गुणों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है । श्रेष्ठ जीवन का अर्थ है संतुलित मन और श्रेष्ठ कार्यों को करने की क्षमता ।



Rigveda 1.46.1

एशो उषा अपूर्वा व्युच्छति प्रिया दिवः ।

स्तुषे वामशिवना बृहत ॥

Esho usha apurvyaa vyuchchhati priyaa divah.

Stushe vaamashvinaa brihat.

(Esho) This certainly (ushah) first rays of rising Sun (apurvyaa) emerging from time immemorial (vyuchchhati) remove darkness (both inside and outside) (priyaa) attracting (divah) for light

(Stushe) praise, glorify and establish (vaam ashvinaa) both the pranas (brihat) a lot.

Elucidation

What are the features of first rays of morning Sun?

The first rays of rising Sun are continuously emerging from time immemorial. These rays have following special features :-

- (i) Vyuchchhati - They remove darkness (both inside and outside).
- (ii) Priyaa divah - They attract light.
- (iii) Stushe vaam ashvinaa brihat - They praise, glorify and establish both the pranas a lot.

Practical Utility in life

Why are the first rays of morning sun called Brahmvela?

As per science of nature, first rays of rising Sun remove darkness and attract light. As per quantum science, this rising Sun time is very good for health also because the temperature and air are divine for pranayama and yoga practices.

If we get up early and use this time - our pranas, our respiratory system, our nervous system and consequently the whole body and mind work in a balanced manner. A balanced mind ultimately proceeds towards spirituality.

As per spiritual science, the early morning time spent in meditation helps in removing the darkness of our intellect i.e. ignorance, and open the vistas of divine knowledge i.e. knowledge unknown to others, directly from God to your mind i.e. Brahma to soul. That's why, the first rays of morning Sun are called Brahma vela.



Rigveda 1.46.1

एशो उषा अपूर्वा व्युच्छति प्रिया दिवः ।

स्तुषे वामशिवना बृहत ॥

Esho usha apurvyaa vyuchchhati priyaa divah.

Stushe vaamashvinaa brihat.

(Esho) This certainly (ushah) first rays of rising Sun (apurvyaa) emerging from time immemorial (vyuchchhati) remove darkness (both inside and outside) (priyaa) attracting (divah) for light

(Stushe) praise, glorify and establish (vaam ashvinaa) both the pranas (brihat) a lot.

Elucidation

What are the features of first rays of morning Sun?

The first rays of rising Sun are continuously emerging from time immemorial. These rays have following special features :-

- (i) Vyuchchhati - They remove darkness (both inside and outside).
- (ii) Priyaa divah - They attract light.
- (iii) Stushe vaam ashvinaa brihat - They praise, glorify and establish both the pranas a lot.

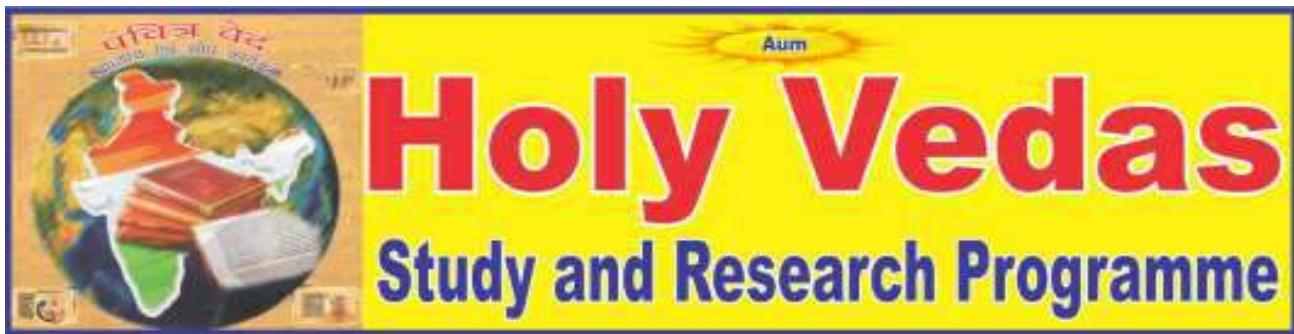
Practical Utility in life

Why are the first rays of morning sun called Brahmvela?

As per science of nature, first rays of rising Sun remove darkness and attract light. As per quantum science, this rising Sun time is very good for health also because the temperature and air are divine for pranayama and yoga practices.

If we get up early and use this time - our pranas, our respiratory system, our nervous system and consequently the whole body and mind work in a balanced manner. A balanced mind ultimately proceeds towards spirituality.

As per spiritual science, the early morning time spent in meditation helps in removing the darkness of our intellect i.e. ignorance, and open the vistas of divine knowledge i.e. knowledge unknown to others, directly from God to your mind i.e. Brahma to soul. That's why, the first rays of morning Sun are called Brahma vela.



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.1

एषो उषा अपूर्व् व्युच्छति प्रिया दिवः ।
स्तुषे वामशिवना बृहत् ॥

(एषो) यह निश्चित रूप से (उषा:) प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें (अपूर्वी) अनिश्चितकाल से उत्पन्न (व्युच्छति) अन्धकार दूर करता है (अन्दर और बाहर) (प्रिया) आकर्षित करने वाली (दिवः) प्रकाश के लिए (स्तुषे) प्रशंसा करना, महिमा कहना और स्थापित करना (वामशिवना) दोनों प्राण (बृहत्) बहुत ।

व्याख्या :-

प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों के क्या लक्षण हैं?

प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें अनिश्चितकाल से लगातार उदित हो रही हैं। इन किरणों के निम्न विशेष लक्षण हैं।

(क) व्युच्छति - वे अन्दर का और बाहर का दोनों अन्धकार दूर करती हैं

(ख) प्रिया दिवः - वे प्रकाश को आकर्षित करती हैं।

(ग) स्तुषे वामशिवना बृहत् - वे दोनों प्राणों की बहुत प्रशंसा, महिमागान और उन्हें स्थापित करती हैं।

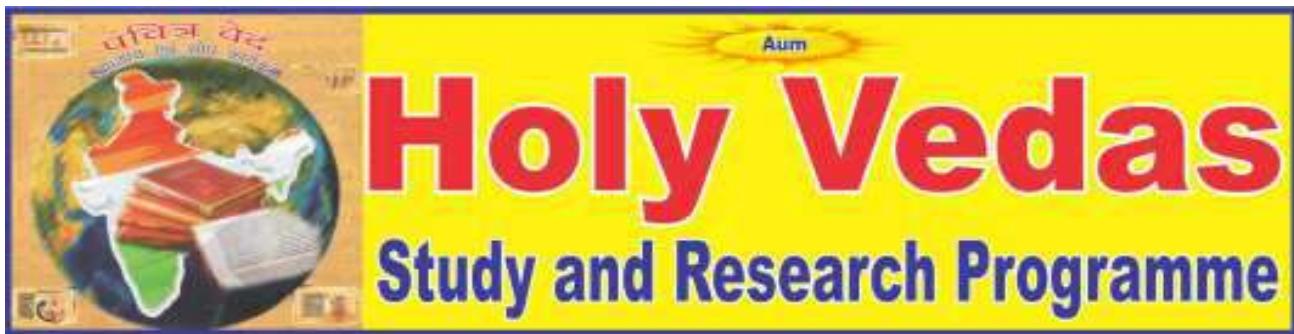
जीवन में सार्थकता

प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों को ब्रह्मवेला क्यों कहते हैं?

प्रकृति के विज्ञान के अनुसार, प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें अन्धकार दूर करती हैं और प्रकाश को आकर्षित करती हैं। क्वांटम विज्ञान के अनुसार, उदय होते हुए सूर्य का समय स्वास्थ्य के लिए भी बहुत अच्छा होता है, क्योंकि इस समय का तापमान और वायु प्राणायाम तथा योगाभ्यास के लिए दिव्य होते हैं।

यदि हम प्रातः जल्दी उठकर इस समय का सुदुपयोग करें तो हमारे प्राण, हमारा श्वसन तन्त्र, हमारा तंत्रिका तन्त्र और परिणामस्वरूप पूरा शरीर तथा मन संतुलित रूप से कार्य करते हैं। एक सन्तुलित मन ही अन्ततः आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करता है।

आध्यात्मिक विज्ञान के अनुसार, प्रातःकालीन समय को यदि ध्यान-साधना में बिताया जाये तो हमारी बुद्धि का अन्धाकार अर्थात् अज्ञानता दूर करने में सहायता मिलती है और दिव्य ज्ञान अर्थात् वह ज्ञान जो अन्य लोगों को प्राप्त नहीं होता, उसके द्वारा भी खुलते हैं। यह कार्य सीधा भगवान से हमारे मस्तिष्क में होता है अर्थात् ब्रह्मा से आत्मा तक। इसीलिए प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों को ब्रह्मवेला कहा जाता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.1

एषो उषा अपूर्व् व्युच्छति प्रिया दिवः ।
स्तुषे वामशिवना बृहत् ॥

(एषो) यह निश्चित रूप से (उषा:) प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें (अपूर्वी) अनिश्चितकाल से उत्पन्न (व्युच्छति) अन्धकार दूर करता है (अन्दर और बाहर) (प्रिया) आकर्षित करने वाली (दिवः) प्रकाश के लिए (स्तुषे) प्रशंसा करना, महिमा कहना और स्थापित करना (वामशिवना) दोनों प्राण (बृहत्) बहुत ।

व्याख्या :-

प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों के क्या लक्षण हैं?

प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें अनिश्चितकाल से लगातार उदित हो रही हैं। इन किरणों के निम्न विशेष लक्षण हैं।

(क) व्युच्छति - वे अन्दर का और बाहर का दोनों अन्धकार दूर करती हैं

(ख) प्रिया दिवः - वे प्रकाश को आकर्षित करती हैं।

(ग) स्तुषे वामशिवना बृहत् - वे दोनों प्राणों की बहुत प्रशंसा, महिमागान और उन्हें स्थापित करती हैं।

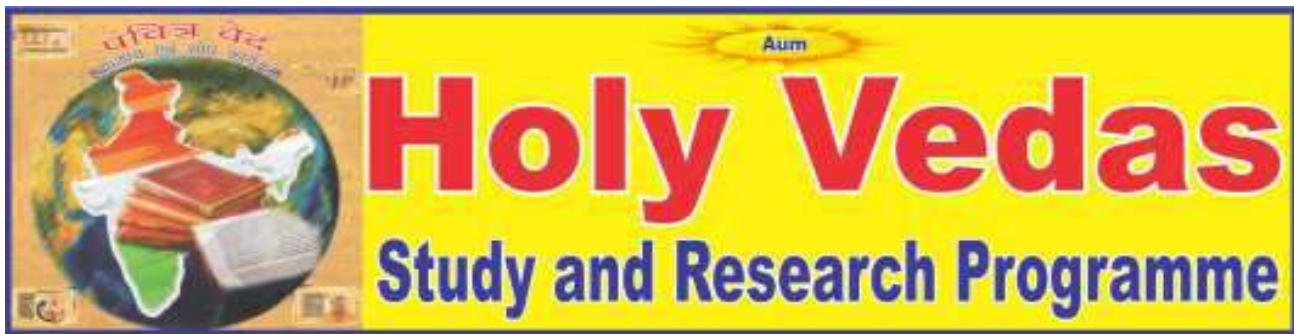
जीवन में सार्थकता

प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों को ब्रह्मवेला क्यों कहते हैं?

प्रकृति के विज्ञान के अनुसार, प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणें अन्धकार दूर करती हैं और प्रकाश को आकर्षित करती हैं। क्वांटम विज्ञान के अनुसार, उदय होते हुए सूर्य का समय स्वास्थ्य के लिए भी बहुत अच्छा होता है, क्योंकि इस समय का तापमान और वायु प्राणायाम तथा योगाभ्यास के लिए दिव्य होते हैं।

यदि हम प्रातः जल्दी उठकर इस समय का सुदुपयोग करें तो हमारे प्राण, हमारा श्वसन तन्त्र, हमारा तंत्रिका तन्त्र और परिणामस्वरूप पूरा शरीर तथा मन संतुलित रूप से कार्य करते हैं। एक सन्तुलित मन ही अन्ततः आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करता है।

आध्यात्मिक विज्ञान के अनुसार, प्रातःकालीन समय को यदि ध्यान-साधना में बिताया जाये तो हमारी बुद्धि का अन्धाकार अर्थात् अज्ञानता दूर करने में सहायता मिलती है और दिव्य ज्ञान अर्थात् वह ज्ञान जो अन्य लोगों को प्राप्त नहीं होता, उसके द्वारा भी खुलते हैं। यह कार्य सीधा भगवान से हमारे मस्तिष्क में होता है अर्थात् ब्रह्मा से आत्मा तक। इसीलिए प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणों को ब्रह्मवेला कहा जाता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.10

अभूतु भा उं अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः।
व्यख्यज्जिह्यासितः ॥

(अभूत् उ) निश्चित रूप से अनुभूति (भा:) प्रकाशवान् ज्ञान (उ) निश्चित रूप से (अंशवे) जो दूसरों के साथ बांटता है (हिरण्यम्) चमकता है, प्रकाशित होता है (प्रति) के लिए, जैसे (सूर्यः) सूर्य, दूसरों की सेवा में सदैव ऊर्जावान और सक्रिय (व्यख्यत्) प्रकाशित करता है (परमात्मा के ज्ञान से) (जिह्या) जिह्वा (असितः) बद्ध नहीं।

व्याख्या :-

प्रकाशवान् ज्ञान की अनुभूति किसको होती है?

जो व्यक्ति निम्न लक्षणों का अनुसरण करता है उसे प्रकाशवान् तथा अन्त्ततः ज्ञान, वेद और परमात्मा की अनुभूति होती है।

- (क) अंशवे - जो दूसरों के साथ बांटता है,
- (ख) हिरण्यम् प्रति सूर्यः - सूर्य की तरह चमकता है, प्रकाशित होता है और दूसरों की सेवा में सदैव ऊर्जावान और सक्रिय रहता है।
- (ग) व्यख्यत् - प्रकाशित करता है (परमात्मा के ज्ञान से),
- (घ) जिह्या असितः - जो अपनी जिह्वा से बद्ध नहीं होता, पसन्द और नापसन्द से बद्ध नहीं होता।

जीवन में सार्थकता

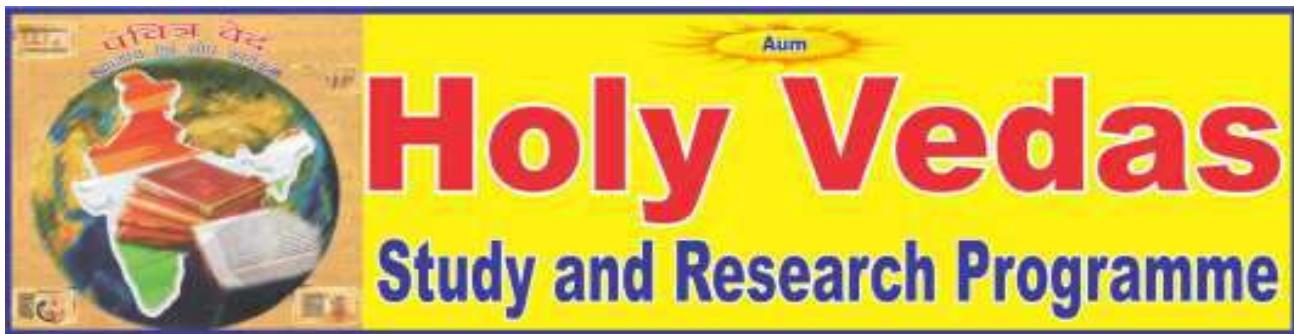
सबके आशीर्वाद से जीवन में कौन उन्नति कर सकता है?

आध्यात्मिक तथा सांसारिक मार्ग पर, प्रत्येक व्यक्ति प्रगति चाहता है जो उस पथ के समुचित ज्ञान तथा बिना भेदभाव के सभी साथियों के साथ एक दिव्य सम्बन्ध के आधार पर ही सम्भव है।

प्रत्येक व्यक्ति को बांटने वाला व्यक्तित्व रखना चाहिए। सबके साथ सामन भी बाटे और मन भी। व्यक्ति को स्वयं की तुलना सूर्य से करनी चाहिए जो सबके कल्याण के लिए सदैव ऊर्जावान और सक्रिय रहता है।

उसे अपने मार्ग से सम्बिधित सर्वोच्च स्तर तक के ज्ञान से स्वयं को प्रकाशित रखना चाहिए।

किसी को अपने स्वाद, इच्छाओं, पसन्द और नापसन्द के पीछे नहीं भागना चाहिए। व्यवहार के ऐसे लक्षणों के साथ ही कोई व्यक्ति सबके आशीर्वाद से जीवन में प्रगति कर सकता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.46.10

अभूदु भा उं अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः।
व्यर्ख्यज्जुह्यासितः ॥

(अभूत् उ) निश्चित रूप से अनुभूति (भा:) प्रकाशवान् ज्ञान (उ) निश्चित रूप से (अंशवे) जो दूसरों के साथ बांटता है (हिरण्यम्) चमकता है, प्रकाशित होता है (प्रति) के लिए, जैसे (सूर्यः) सूर्य, दूसरों की सेवा में सदैव ऊर्जावान और सक्रिय (व्यर्ख्यत्) प्रकाशित करता है (परमात्मा के ज्ञान से) (जिह्या) जिह्वा (असितः) बद्ध नहीं।

व्याख्या :-

प्रकाशवान् ज्ञान की अनुभूति किसको होती है?

जो व्यक्ति निम्न लक्षणों का अनुसरण करता है उसे प्रकाशवान् तथा अन्त्ततः ज्ञान, वेद और परमात्मा की अनुभूति होती है।

- (क) अंशवे - जो दूसरों के साथ बांटता है,
- (ख) हिरण्यम् प्रति सूर्यः - सूर्य की तरह चमकता है, प्रकाशित होता है और दूसरों की सेवा में सदैव ऊर्जावान और सक्रिय रहता है।
- (ग) व्यर्ख्यत् - प्रकाशित करता है (परमात्मा के ज्ञान से),
- (घ) जिह्या असितः - जो अपनी जिह्वा से बद्ध नहीं होता, पसन्द और नापसन्द से बद्ध नहीं होता।

जीवन में सार्थकता

सबके आशीर्वाद से जीवन में कौन उन्नति कर सकता है?

आध्यात्मिक तथा सांसारिक मार्ग पर, प्रत्येक व्यक्ति प्रगति चाहता है जो उस पथ के समुचित ज्ञान तथा बिना भेदभाव के सभी साथियों के साथ एक दिव्य सम्बन्ध के आधार पर ही सम्भव है।

प्रत्येक व्यक्ति को बांटने वाला व्यक्तित्व रखना चाहिए। सबके साथ सामन भी बाटे और मन भी। व्यक्ति को स्वयं की तुलना सूर्य से करनी चाहिए जो सबके कल्याण के लिए सदैव ऊर्जावान और सक्रिय रहता है।

उसे अपने मार्ग से सम्बद्धित सर्वोच्च स्तर तक के ज्ञान से स्वयं को प्रकाशित रखना चाहिए।

किसी को अपने स्वाद, इच्छाओं, पसन्द और नापसन्द के पीछे नहीं भागना चाहिए। व्यवहार के ऐसे लक्षणों के साथ ही कोई व्यक्ति सबके आशीर्वाद से जीवन में प्रगति कर सकता है।



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.1 (कुल मन्त्र 683)

वया इदग्ने अग्नयस्ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते ।
वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव जनाँ उपमिद्यन्थ ॥

(वया:) शाखाएं (इत) जैसे (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (अग्नय:) सभी ऊर्जाएं (ते) आपके (अन्ये) अन्य (त्वे) आपमें (विश्वे) समस्त (अमृता:) न मरने योग्य, अनुभूति प्राप्त, मुक्ति अवस्था में (मादयन्ते) आनन्दमय अनुभव (वैश्वानर) सभी प्राणियों का कल्याण करने वाला और देखभाल करने वाला, परमात्मा (नाभि:) केन्द्र, मूल (असि) हैं (क्षितीनाम) इस पृथ्वी पर सभी प्राणियों का (स्थूणा) स्तम्भ (इव) जैसे (जनान) सभी लोगों का (उपमित्) स्थापित (ययन्थ) नियंत्रण करता है और धारण करता है।

व्याख्या :-

हम परमात्मा से किस प्रकार सम्बन्धित हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! ऊर्जा के सभी रूप आपकी शाखाओं के समान हैं। सभी अमर्त्य अर्थात् न मरने योग्य, अनुभूति प्राप्त आत्माएँ आपके अन्दर ही आनन्द प्राप्त करती हैं। क्योंकि आप सबका कल्याण करते हो और सबकी देखभाल करते हो, इसलिए आप इस पृथ्वी पर सभी प्राणियों की केन्द्रीय अर्थात् मूल सत्ता हो। आप सभी लोगों को स्थापित, नियंत्रित और धारण करने के लिए स्तम्भ के समान हो।

जीवन में सार्थकता :-

हमें स्थाई आनन्द कैसे प्राप्त हो सकता है?

हम एक दूसरे से कैसे सम्बन्धित हैं?

किसी भी व्यक्ति के पास ऐसा कोई कारण नहीं है कि वह परमात्मा से स्वयं को अलग महसूस करे। प्रत्येक जीव और प्रत्येक वस्तु में किसी न किसी रूप में ऊर्जा उपस्थित है। सभी ऊर्जाएं परमात्मा की शाखाओं के समान हैं। यह मूल वास्तविकता सुनिश्चित करती है कि हम सब उस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा से जुड़े हुए हैं।

सभी मानव प्रसन्नता, सुविधाजनक जीवन और आनन्द की तलाश में रहते हैं। हमें स्थाई आनन्द तभी प्राप्त होगा जब हम परमात्मा के साथ एकात्मता के स्तर पर पहुंच जायेंगे और उसकी अनुभूति प्राप्त कर लेंगे, जो सभी प्राणियों की मूल शक्ति है। वह वैश्वानर है। वह हमारे जीवन को धारण करने और उसे नियंत्रित करने के लिए स्तम्भ के समान है। हम केवल उससे ही सम्बन्धित नहीं हैं, बल्कि उसके माध्यम से एक-दूसरे से तथा सभी प्राणियों से जुड़े हुए हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.1 (कुल मन्त्र 683)

वया इदग्ने अग्नयस्ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते ।
वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव जनाँ उपमिद्यन्थ ॥

(वया:) शाखाएं (इत) जैसे (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (अग्नय:) सभी ऊर्जाएं (ते) आपके (अन्ये) अन्य (त्वे) आपमें (विश्वे) समस्त (अमृता:) न मरने योग्य, अनुभूति प्राप्त, मुक्ति अवस्था में (मादयन्ते) आनन्दमय अनुभव (वैश्वानर) सभी प्राणियों का कल्याण करने वाला और देखभाल करने वाला, परमात्मा (नाभि:) केन्द्र, मूल (असि) हैं (क्षितीनाम) इस पृथ्वी पर सभी प्राणियों का (स्थूणा) स्तम्भ (इव) जैसे (जनान) सभी लोगों का (उपमित्) स्थापित (ययन्थ) नियंत्रण करता है और धारण करता है।

व्याख्या :-

हम परमात्मा से किस प्रकार सम्बन्धित हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! ऊर्जा के सभी रूप आपकी शाखाओं के समान हैं। सभी अमर्त्य अर्थात् न मरने योग्य, अनुभूति प्राप्त आत्माएँ आपके अन्दर ही आनन्द प्राप्त करती हैं। क्योंकि आप सबका कल्याण करते हो और सबकी देखभाल करते हो, इसलिए आप इस पृथ्वी पर सभी प्राणियों की केन्द्रीय अर्थात् मूल सत्ता हो। आप सभी लोगों को स्थापित, नियंत्रित और धारण करने के लिए स्तम्भ के समान हो।

जीवन में सार्थकता :-

हमें स्थाई आनन्द कैसे प्राप्त हो सकता है?

हम एक दूसरे से कैसे सम्बन्धित हैं?

किसी भी व्यक्ति के पास ऐसा कोई कारण नहीं है कि वह परमात्मा से स्वयं को अलग महसूस करे। प्रत्येक जीव और प्रत्येक वस्तु में किसी न किसी रूप में ऊर्जा उपस्थित है। सभी ऊर्जाएं परमात्मा की शाखाओं के समान हैं। यह मूल वास्तविकता सुनिश्चित करती है कि हम सब उस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा से जुड़े हुए हैं।

सभी मानव प्रसन्नता, सुविधाजनक जीवन और आनन्द की तलाश में रहते हैं। हमें स्थाई आनन्द तभी प्राप्त होगा जब हम परमात्मा के साथ एकात्मता के स्तर पर पहुंच जायेंगे और उसकी अनुभूति प्राप्त कर लेंगे, जो सभी प्राणियों की मूल शक्ति है। वह वैश्वानर है। वह हमारे जीवन को धारण करने और उसे नियंत्रित करने के लिए स्तम्भ के समान है। हम केवल उससे ही सम्बन्धित नहीं हैं, बल्कि उसके माध्यम से एक-दूसरे से तथा सभी प्राणियों से जुड़े हुए हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.2 (कुल मन्त्र 684)

मूर्धा दिवो नाभिरग्निः पृथिव्या अथाभवदरती रोदस्योः ।
तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय ॥

(मूर्धा) उच्च स्तरीय (दिवः) प्रकाश दिव्यताएं (नाभिः) केन्द्र, मूल (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (पृथिव्या:) पृथगी का (अथ) अतः (अभवत) होता है (अरती) धारणकर्ता (अपनी सर्वव्यापकता से) (रोदस्यः) अन्तरिक्ष और पृथगी का (तम) वह (त्वा) आपको (देवासः) दिव्यताओं, दिव्य ज्ञान और प्रकाश का धारक (अऽजनयन्त) अभिव्यक्त करता है (देवम्) सर्वोच्च प्रकाश (वैश्वानर) सभी प्राणियों का कल्याण करने वाला और देखभाल करने वाला, परमात्मा (ज्योतिः) ज्ञान का प्रकाश (इत्) निश्चित रूप से (आर्याय) श्रेष्ठ पुरुष के लिए ।

व्याख्या :-

इस सृष्टि की केन्द्रीय और प्रधान बन्धन शक्ति कौन है?

कौन परमात्मा को अभिव्यक्त करता है और उसे क्या प्राप्त होता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उच्च स्तरीय प्रकाश और दिव्यताएं ही इस धरती की केन्द्रीय और प्रधान बन्धन शक्ति हैं। अतः अपनी सर्वव्यापकता के कारण वह अन्तरिक्ष और धरती को धारण करने वाला सिद्ध होता है। उस आपको अर्थात् सब प्राणियों का कल्याण करने वाले सर्वोच्च प्रकाश को दिव्यताओं के धारण करने वाले लोग अपने जीवन में अभिव्यक्त करते हैं। ऐसे 'आर्य' अर्थात् उत्तम व्यक्तियों के लिए आप निश्चित रूप से ज्ञान का प्रकाश उपलब्ध कराते हों।

जीवन में सार्थकता :-

'आर्य' कौन है?

एक 'आर्य' होने के परिणामस्वरूप उसका आध्यात्मिक जीवन कैसा होता है?

न्यायोचित बुद्धि वाला, उचित, श्रेष्ठ, आध्यात्मिक, कर्तव्यबद्ध, सबके लिए लाभदायक, अनमोल, पवित्र और उच्चस्तरीय आध्यात्मिक जीवन वाला व्यक्ति ही आर्य कहलाता है।

बौद्ध ग्रन्थ 'आर्य अष्टांगिका मार्ग' एक आर्य के लिए आठ दृष्टिकोणों वाला श्रेष्ठ मार्ग देता है :-

1. सम्यक दृष्टि (उचित दृष्टि),
2. सम्यक सकल्प (उचित प्रण),
3. सम्यक वाक (उचित वाणी),
4. सम्यक कर्म (उचित व्यवहार),
5. सम्यक जीविका (उचित आजीविका का साधन),
6. सम्यक व्यायाम (उचित प्रयास),
7. सम्यक स्मृति (उचित बुद्धि और चेतना),

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



8. सम्यक समाधि (उचित प्रकार से एकात्मता की अनुभूति)।

पॉल विलियम्स के अनुसार – आर्य श्रेष्ठ लोग हैं, सन्त हैं, वे लोग हैं जिन्होंने अपने मार्गों के फल प्राप्त कर लिये हैं। तथागत नामक मध्य मार्ग के अनुसार आर्य दूर दृष्टि और ज्ञान का संवर्द्धन करता है जिससे उसे शांति, उच्च विवेकशीलता और प्रकाश प्राप्त होता है।

अन्य बौद्ध विद्वानों ने भी आर्य शब्द को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया है जो सत्य को प्राप्त कर चुका है, जिसे शून्यता अथवा अपने अस्तित्व की न्यूनता की प्रत्यक्ष अनुभूति हो चुकी है। एक आर्य हर प्रकार के कष्टों को उनके मूल रूप में देखता है। चाहे वे शारीरिक कष्ट हों या मानसिक, स्थूल हों या सूक्ष्म।

बौद्ध लोग मनुष्यों को दो मुख्य श्रेणियों में बांटते हैं :— पुथूजन तथा ‘आर्य’। पुथूजन वे सांसारिक लोग हैं जो बहुआयामी जीवन से सम्बोधित हैं, जिनकी आंखें अभी भी अन्धकार और कलंक के गर्दे से ढंकी हुई हैं। दूसरी तरफ आर्य वे श्रेष्ठ लोग हैं जो आध्यात्मिक रूप से उच्च हैं और जिन्हें जन्म से या किसी सामाजिक मंच से या किसी धार्मिक समुदाय से अपना स्तर प्राप्त नहीं करना पड़ता। बल्कि उनके अपने चरित्र की आन्तरिक श्रेष्ठता उनका स्तर घोषित करती है।

चीन में ‘आर्य’ को शुद्ध और पवित्र कहा गया है।

दक्षिण भारत में यदि किसी व्यक्ति को आदर से सम्बोधित करना हो तो उसे ‘अच्या’ कहकर सम्बोधित किया जाता है। यह शब्द ‘आर्य’ का ही एक रूप है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य को दो श्रेणियों में बांटा है – ‘आर्य’ तथा ‘दस्यु’। ‘आर्य’ श्रेष्ठ पुरुष होते हैं और ‘दस्यु’ अश्रेष्ठ।

केवल भारत को ही आर्यावर्त अर्थात् आर्यों की भूमि कहा जाता था, क्योंकि यहाँ वैदिक श्रेष्ठताओं से परिपूर्ण मूल और प्राचीन मनुष्य थे।

यह मन्त्र (ऋग्वेद 1.59.2) आर्यों को ज्ञान का प्रकाश तथा अनुभूति सुनिश्चित करता है। अतः परमात्मा की अनुभूति के लिए एक सच्चा ‘आर्य’ होना मूल आवश्यक लक्षण है। अतः ‘आर्य’ वह व्यक्ति है जो वास्तव में परमात्मा की दिव्यताओं को अभिव्यक्त करता है। वह सदैव प्रकाश में रहता है और कभी भी अन्धकार को महसूस नहीं करता। उसके लिए इस सृष्टि की केन्द्रीय और प्रधान बन्धन शक्ति परमात्मा है। परमात्मा की अनुभूति के लिए साधक को दिव्य और सच्चा ‘आर्य’ बनना होगा, किसी वर्ग या संस्था के साथ जुड़ने के कारण केवल ‘आर्य’ शब्द का प्रयोग पर्याप्त नहीं है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.2 (कुल मन्त्र 684)

मूर्धा दिवो नाभिरग्निः पृथिव्या अथाभवदरती रोदस्योः ।
तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय ॥

(मूर्धा) उच्च स्तरीय (दिवः) प्रकाश दिव्यताएं (नाभिः) केन्द्र, मूल (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (पृथिव्या:) पृथगी का (अथ) अतः (अभवत) होता है (अरती) धारणकर्ता (अपनी सर्वव्यापकता से) (रोदस्यः) अन्तरिक्ष और पृथगी का (तम) वह (त्वा) आपको (देवासः) दिव्यताओं, दिव्य ज्ञान और प्रकाश का धारक (अऽजनयन्त) अभिव्यक्त करता है (देवम्) सर्वोच्च प्रकाश (वैश्वानर) सभी प्राणियों का कल्याण करने वाला और देखभाल करने वाला, परमात्मा (ज्योतिः) ज्ञान का प्रकाश (इत्) निश्चित रूप से (आर्याय) श्रेष्ठ पुरुष के लिए ।

व्याख्या :-

इस सृष्टि की केन्द्रीय और प्रधान बन्धन शक्ति कौन है?

कौन परमात्मा को अभिव्यक्त करता है और उसे क्या प्राप्त होता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, उच्च स्तरीय प्रकाश और दिव्यताएं ही इस धरती की केन्द्रीय और प्रधान बन्धन शक्ति हैं। अतः अपनी सर्वव्यापकता के कारण वह अन्तरिक्ष और धरती को धारण करने वाला सिद्ध होता है। उस आपको अर्थात् सब प्राणियों का कल्याण करने वाले सर्वोच्च प्रकाश को दिव्यताओं के धारण करने वाले लोग अपने जीवन में अभिव्यक्त करते हैं। ऐसे 'आर्य' अर्थात् उत्तम व्यक्तियों के लिए आप निश्चित रूप से ज्ञान का प्रकाश उपलब्ध कराते हों।

जीवन में सार्थकता :-

'आर्य' कौन है?

एक 'आर्य' होने के परिणामस्वरूप उसका आध्यात्मिक जीवन कैसा होता है?

न्यायोचित बुद्धि वाला, उचित, श्रेष्ठ, आध्यात्मिक, कर्तव्यबद्ध, सबके लिए लाभदायक, अनमोल, पवित्र और उच्चस्तरीय आध्यात्मिक जीवन वाला व्यक्ति ही आर्य कहलाता है।

बौद्ध ग्रन्थ 'आर्य अष्टांगिका मार्ग' एक आर्य के लिए आठ दृष्टिकोणों वाला श्रेष्ठ मार्ग देता है :-

1. सम्यक दृष्टि (उचित दृष्टि),
2. सम्यक सकल्प (उचित प्रण),
3. सम्यक वाक (उचित वाणी),
4. सम्यक कर्म (उचित व्यवहार),
5. सम्यक जीविका (उचित आजीविका का साधन),
6. सम्यक व्यायाम (उचित प्रयास),
7. सम्यक स्मृति (उचित बुद्धि और चेतना),

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



8. सम्यक समाधि (उचित प्रकार से एकात्मता की अनुभूति)।

पॉल विलियम्स के अनुसार – आर्य श्रेष्ठ लोग हैं, सन्त हैं, वे लोग हैं जिन्होंने अपने मार्गों के फल प्राप्त कर लिये हैं। तथागत नामक मध्य मार्ग के अनुसार आर्य दूर दृष्टि और ज्ञान का संवर्द्धन करता है जिससे उसे शांति, उच्च विवेकशीलता और प्रकाश प्राप्त होता है।

अन्य बौद्ध विद्वानों ने भी आर्य शब्द को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया है जो सत्य को प्राप्त कर चुका है, जिसे शून्यता अथवा अपने अस्तित्व की न्यूनता की प्रत्यक्ष अनुभूति हो चुकी है। एक आर्य हर प्रकार के कष्टों को उनके मूल रूप में देखता है। चाहे वे शारीरिक कष्ट हों या मानसिक, स्थूल हों या सूक्ष्म।

बौद्ध लोग मनुष्यों को दो मुख्य श्रेणियों में बांटते हैं :— पुथूजन तथा ‘आर्य’। पुथूजन वे सांसारिक लोग हैं जो बहुआयामी जीवन से सम्बोधित हैं, जिनकी आंखें अभी भी अन्धकार और कलंक के गर्दे से ढंकी हुई हैं। दूसरी तरफ आर्य वे श्रेष्ठ लोग हैं जो आध्यात्मिक रूप से उच्च हैं और जिन्हें जन्म से या किसी सामाजिक मंच से या किसी धार्मिक समुदाय से अपना स्तर प्राप्त नहीं करना पड़ता। बल्कि उनके अपने चरित्र की आन्तरिक श्रेष्ठता उनका स्तर घोषित करती है।

चीन में ‘आर्य’ को शुद्ध और पवित्र कहा गया है।

दक्षिण भारत में यदि किसी व्यक्ति को आदर से सम्बोधित करना हो तो उसे ‘अच्या’ कहकर सम्बोधित किया जाता है। यह शब्द ‘आर्य’ का ही एक रूप है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मनुष्य को दो श्रेणियों में बांटा है – ‘आर्य’ तथा ‘दस्यु’। ‘आर्य’ श्रेष्ठ पुरुष होते हैं और ‘दस्यु’ अश्रेष्ठ।

केवल भारत को ही आर्यावर्त अर्थात् आर्यों की भूमि कहा जाता था, क्योंकि यहाँ वैदिक श्रेष्ठताओं से परिपूर्ण मूल और प्राचीन मनुष्य थे।

यह मन्त्र (ऋग्वेद 1.59.2) आर्यों को ज्ञान का प्रकाश तथा अनुभूति सुनिश्चित करता है। अतः परमात्मा की अनुभूति के लिए एक सच्चा ‘आर्य’ होना मूल आवश्यक लक्षण है। अतः ‘आर्य’ वह व्यक्ति है जो वास्तव में परमात्मा की दिव्यताओं को अभिव्यक्त करता है। वह सदैव प्रकाश में रहता है और कभी भी अन्धकार को महसूस नहीं करता। उसके लिए इस सृष्टि की केन्द्रीय और प्रधान बन्धन शक्ति परमात्मा है। परमात्मा की अनुभूति के लिए साधक को दिव्य और सच्चा ‘आर्य’ बनना होगा, किसी वर्ग या संस्था के साथ जुड़ने के कारण केवल ‘आर्य’ शब्द का प्रयोग पर्याप्त नहीं है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.3 (कुल मन्त्र 685)

आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासो वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसूनि ।
या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु या मानुषेष्वसि तस्य राजा ॥

(आ – रश्मयः तथा दधिरे से पूर्व लगाकर) (सूर्ये) सूर्य में (न) जैसे (रश्मयः – आ रश्मयः) सभी दिशाओं में फैली किरणें (ध्रुवासः) स्थाई रूप से स्थापित (वैश्वानरे) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (दधिरे – आ दधिरे) सभी दिशाओं में स्थापित (अऽग्ना) सर्वोच्च ऊर्जा, सबसे अग्रणी, परमात्मा (वसूनि) समस्त पदार्थ (या) जो (परमात्मा) (पर्वतेषु) पर्वतों में (औषधीषु) औषध्यात्मक जड़ी-बूटियों में (अप्सु) जलों में (या) जो (मानुषेषु) मनुष्यों में (असि) है (तस्य) उसका (राजा) स्वामी, संचालक ।

व्याख्या :-

परमात्मा सभी जीवों और पदार्थों का स्वामी तथा संरक्षक किस प्रकार है?

जिस प्रकार सूर्य की किरणें सभी दिशाओं में स्थापित होती हैं, उसी प्रकार सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, सबसे अग्रणी और सबका कल्याण करने वाला सभी पदार्थों में सभी दिशाओं में स्थापित है – पर्वतों में, औषधि रूप जड़ी-बूटियों में, जलों में और सभी जीवों में। इस प्रकार अपनी सर्वव्यापकता के कारण वह सबका स्वामी और नियंत्रक है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने अस्तित्व के अहंकार और परिस्थितियों में परिवर्तन के प्रभाव से कैसे ऊपर उठें?

परमात्मा की अनुभूति और चेतना रूपी गहरी और सर्वोच्च अवधारणा इस बात में निहित है कि हम सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा की विद्यमानता और सर्वोच्चता सभी पदार्थों और प्राणियों में महसूस करें। यदि हम सर्वत्र चारों तरफ उसकी उपस्थिति और उसके स्वामी और संरक्षक होने के प्रति चेतन होते हैं तो यह चेतना हमें सफलता पूर्वक अपने अस्तित्व के अहंकार तथा प्रतिक्षण परिस्थितियों में होने वाले परिवर्तन के प्रभाव से ऊपर उठा देगी। हम उसकी सर्वोच्चता और बुद्धिमत्ता की चेतना में ही स्थापित हो जायेंगे। हमें उस सर्वोच्च शक्ति के साथ प्रेम हो जायेगा। इस प्रकार कष्टों और कठिनाईयों के प्रति हमारी चेतना समाप्त हो जायेगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.3 (कुल मन्त्र 685)

आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासो वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसूनि ।
या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु या मानुषेष्वसि तस्य राजा ॥

(आ – रश्मयः तथा दधिरे से पूर्व लगाकर) (सूर्ये) सूर्य में (न) जैसे (रश्मयः – आ रश्मयः) सभी दिशाओं में फैली किरणें (ध्रुवासः) स्थाई रूप से स्थापित (वैश्वानरे) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (दधिरे – आ दधिरे) सभी दिशाओं में स्थापित (अऽग्ना) सर्वोच्च ऊर्जा, सबसे अग्रणी, परमात्मा (वसूनि) समस्त पदार्थ (या) जो (परमात्मा) (पर्वतेषु) पर्वतों में (औषधीषु) औषध्यात्मक जड़ी-बूटियों में (अप्सु) जलों में (या) जो (मानुषेषु) मनुष्यों में (असि) है (तस्य) उसका (राजा) स्वामी, संचालक ।

व्याख्या :-

परमात्मा सभी जीवों और पदार्थों का स्वामी तथा संरक्षक किस प्रकार है?

जिस प्रकार सूर्य की किरणें सभी दिशाओं में स्थापित होती हैं, उसी प्रकार सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, सबसे अग्रणी और सबका कल्याण करने वाला सभी पदार्थों में सभी दिशाओं में स्थापित है – पर्वतों में, औषधि रूप जड़ी-बूटियों में, जलों में और सभी जीवों में। इस प्रकार अपनी सर्वव्यापकता के कारण वह सबका स्वामी और नियंत्रक है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने अस्तित्व के अहंकार और परिस्थितियों में परिवर्तन के प्रभाव से कैसे ऊपर उठें?

परमात्मा की अनुभूति और चेतना रूपी गहरी और सर्वोच्च अवधारणा इस बात में निहित है कि हम सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा की विद्यमानता और सर्वोच्चता सभी पदार्थों और प्राणियों में महसूस करें। यदि हम सर्वत्र चारों तरफ उसकी उपस्थिति और उसके स्वामी और संरक्षक होने के प्रति चेतन होते हैं तो यह चेतना हमें सफलता पूर्वक अपने अस्तित्व के अहंकार तथा प्रतिक्षण परिस्थितियों में होने वाले परिवर्तन के प्रभाव से ऊपर उठा देगी। हम उसकी सर्वोच्चता और बुद्धिमत्ता की चेतना में ही स्थापित हो जायेंगे। हमें उस सर्वोच्च शक्ति के साथ प्रेम हो जायेगा। इस प्रकार कष्टों और कठिनाईयों के प्रति हमारी चेतना समाप्त हो जायेगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.4 (कुल मन्त्र 686)

बृहती इव सूनवे रोदसी गिरः होता मनुष्योऽ न दक्षः ।

स्वर्वते सत्यशुष्माय पूर्वीर्वेश्वानराय नृतमाय यह्वीः ॥

(बृहती इव) जैसे कि माता, जैसे कि वृद्धि को प्राप्त) (सूनवे) पुत्र के लिए, निर्माता (पिता के लिए) (रोदसी) अन्तरक्षि तथा भूमि (गिरः) परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान की वाणी के लिए, वेद के लिए (होता) लाने वाला और देने वाला, विद्वान् (मनुष्यः) मननशील मनुष्य (न) जैसे (दक्षः) कार्य करने में दक्ष, कुशल (स्वर्वते) स्वप्रकाशमान्, प्रसन्नता से पूर्ण (सत्यशुष्माय) सत्य की शक्ति के साथ (पूर्वीः) हमें पूर्ण करने वाला (र्वेश्वानराय) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (नृतमाय) मनुष्य को उत्तम नेतृत्व देने वाला (यह्वीः) महान् सार्थक ।

व्याख्या :-

जन्म देने वाली माता, धरती माता तथा महान् विद्वानों में कौन सा लक्षण समान हैं?

परमात्मा के क्या लक्षण हैं?

जिस प्रकार जन्म देने वाली माता अपने पुत्र को उसके कल्याण के लिए धारण करती है; जिस प्रकार व्यापक आकाश और धरती माता सबको उनके कल्याण के लिए धारण करते हैं; उसी प्रकार मननशील मनुष्य एक विशेषज्ञ की तरह और वास्तविक कुशल व्यक्ति की तरह विद्वानों को लाता है और उन्हें विद्वता उपलब्ध करवाता है, वह परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान अर्थात् वेद की महान् और सार्थक वाणियों को सबके कल्याण के लिए धारण करता है।

सभी वाणियाँ परमात्मा द्वारा प्रदत्त हैं जो :-

1. (स्वर्वते) स्वप्रकाशमान्, प्रसन्नता से पूर्ण,
2. (सत्यशुष्माय) सत्य की शक्ति के साथ,
3. (पूर्वी) हमें पूर्ण करने वाला,
4. (र्वेश्वानराय) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा,
5. (नृतमाय) मनुष्य को उत्तम नेतृत्व देने वाला है।

जीवन में सार्थकता :-

हम परमात्मा के लक्षणों की अनुभूति अपने भीतर कैसे कर सकते हैं?

जन्म देने वाली माता, धरती माता और महान् विद्वानों के महान् लक्षण हमें प्रेरित करते हैं कि हमें भी परमात्मा से कुछ न कुछ महान् लक्षण अवश्य धारण करने चाहिए। परमात्मा के अनेकों महान् लक्षण हैं। लगातार उन पर चिन्तन—मनन करने से हम भी उन लक्षणों को धारण कर सकते हैं। परमात्मा सर्वव्यापक है, उसके लक्षण भी सब जगह व्याप्त हैं। अतः हम उनकी अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा स्वप्रकाशित है और प्रसन्नता से भरा पड़ा है। हम भी आत्मिक रूप से परमात्मा का अनुसरण करते हुए उसके सर्वोच्च प्रकाश और प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

परिवारों, संगठनों, समाज और राष्ट्र के सभी प्रमुखों को अपनी अगली पीढ़ियों के उचित मार्गदर्शन के लिए परमात्मा के लक्षणों की अनुभूति प्राप्त करके उन्हें अपनाना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.4 (कुल मन्त्र 686)

बृहती इव सूनवे रोदसी गिरः होता मनुष्योऽ न दक्षः ।

स्वर्वते सत्यशुष्माय पूर्वीर्वेश्वानराय नृतमाय यह्वीः ॥

(बृहती इव) जैसे कि माता, जैसे कि वृद्धि को प्राप्त) (सूनवे) पुत्र के लिए, निर्माता (पिता के लिए) (रोदसी) अन्तरक्षि तथा भूमि (गिरः) परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान की वाणी के लिए, वेद के लिए (होता) लाने वाला और देने वाला, विद्वान् (मनुष्यः) मननशील मनुष्य (न) जैसे (दक्षः) कार्य करने में दक्ष, कुशल (स्वर्वते) स्वप्रकाशमान्, प्रसन्नता से पूर्ण (सत्यशुष्माय) सत्य की शक्ति के साथ (पूर्वीः) हमें पूर्ण करने वाला (र्वेश्वानराय) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (नृतमाय) मनुष्य को उत्तम नेतृत्व देने वाला (यह्वीः) महान् सार्थक ।

व्याख्या :-

जन्म देने वाली माता, धरती माता तथा महान् विद्वानों में कौन सा लक्षण समान हैं?

परमात्मा के क्या लक्षण हैं?

जिस प्रकार जन्म देने वाली माता अपने पुत्र को उसके कल्याण के लिए धारण करती है; जिस प्रकार व्यापक आकाश और धरती माता सबको उनके कल्याण के लिए धारण करते हैं; उसी प्रकार मननशील मनुष्य एक विशेषज्ञ की तरह और वास्तविक कुशल व्यक्ति की तरह विद्वानों को लाता है और उन्हें विद्वता उपलब्ध करवाता है, वह परमात्मा द्वारा दिये गये ज्ञान अर्थात् वेद की महान् और सार्थक वाणियों को सबके कल्याण के लिए धारण करता है।

सभी वाणियाँ परमात्मा द्वारा प्रदत्त हैं जो :-

1. (स्वर्वते) स्वप्रकाशमान्, प्रसन्नता से पूर्ण,
2. (सत्यशुष्माय) सत्य की शक्ति के साथ,
3. (पूर्वी) हमें पूर्ण करने वाला,
4. (र्वेश्वानराय) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा,
5. (नृतमाय) मनुष्य को उत्तम नेतृत्व देने वाला है।

जीवन में सार्थकता :-

हम परमात्मा के लक्षणों की अनुभूति अपने भीतर कैसे कर सकते हैं?

जन्म देने वाली माता, धरती माता और महान् विद्वानों के महान् लक्षण हमें प्रेरित करते हैं कि हमें भी परमात्मा से कुछ न कुछ महान् लक्षण अवश्य धारण करने चाहिए। परमात्मा के अनेकों महान् लक्षण हैं। लगातार उन पर चिन्तन—मनन करने से हम भी उन लक्षणों को धारण कर सकते हैं। परमात्मा सर्वव्यापक है, उसके लक्षण भी सब जगह व्याप्त हैं। अतः हम उनकी अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा स्वप्रकाशित है और प्रसन्नता से भरा पड़ा है। हम भी आत्मिक रूप से परमात्मा का अनुसरण करते हुए उसके सर्वोच्च प्रकाश और प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

परिवारों, संगठनों, समाज और राष्ट्र के सभी प्रमुखों को अपनी अगली पीढ़ियों के उचित मार्गदर्शन के लिए परमात्मा के लक्षणों की अनुभूति प्राप्त करके उन्हें अपनाना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.5 (कुल मन्त्र 687)

दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्र रिरिचे महित्वम्।
राजा कृष्णीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ् ॥

(दिवः चित्त) सभी दिव्यताओं से भी (ते) आपकी (बृहतः) व्यापक, फैली हुई (जातवेदः) सभी को पैदा करने वाला और समस्त उत्पन्न को जानने वाला (वैश्वानर) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (प्ररिचे) व्यापक है (महित्वम्) आपकी महिमा और महानता का प्रभाव (राजा) राजा, नियंत्रक (कृष्णीनाम्) मेहनत करने वाले लोगों का (असि) है (मानुषीणाम्) मननशील मनुष्य (युधा) संघर्ष के द्वारा (देवेभ्यः) दिव्य लोगों के लिए (वरिवः) गौरवशाली सम्पदा (चकर्थ्) आप उपलब्ध कराते हो।

व्याख्या :-

परमात्मा मेहनत करने वाले और मननशील मनुष्यों का नियामन कैसे करता है?

सब पदार्थों के देने वाले और जानने वाले, सबका कल्याण करने वाले! आपकी महिमा और महानता का प्रभाव अन्य दिव्यताओं से अधिक व्यापक है। चाहे वे दिव्यताएँ कितनी ही फैली हुई और व्यापक क्यों न हों। आप राजा हो अर्थात् मेहनत करने वाले और मननशील लोगों के नियामक हो। आप दिव्य लोगों को संघर्ष के माध्यम से गौरवशाली सम्पदा उपलब्ध कराते हो।

जीवन में सार्थकता :-

संघर्ष और सफलता में क्या सम्बन्ध है?

परमात्मा की शक्तियाँ धरती और सूर्य की विशाल फैली हुई रचना से भी असीमित हैं। वह शारीरिक और मानसिक मेहनत करने वाले सभी लोगों का नियामक है। हमारी गतिविधियों का मूल्यांकन उनमें डाले गये संघर्ष की मात्रा से किया जाता है। जितना अधिक संघर्ष होगा उतनी अधिक सफलता और गौरवशाली सम्पदा हमें प्राप्त होगी।

शारीरिक और मानसिक श्रम के बदले हमें अपनी सांसारिक इच्छाओं के लिए सुविधाएँ और प्रसन्नता मिलती है।

अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के लिए किये गये संघर्ष के बदले हमें दिव्य लक्षण और आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त होती है।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें कड़े संघर्ष की आवश्यकता होती है। संघर्ष और सफलता का सीधा सम्बन्ध है।

इसी प्रकार हमें भी सभी मेहनत करने वाले और मननशील लोगों का उचित सत्कार और उचित रूप से पुरस्कृत करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.5 (कुल मन्त्र 687)

दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्र रिरिचे महित्वम्।
राजा कृष्णीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ् ॥

(दिवः चित्त) सभी दिव्यताओं से भी (ते) आपकी (बृहतः) व्यापक, फैली हुई (जातवेदः) सभी को पैदा करने वाला और समस्त उत्पन्न को जानने वाला (वैश्वानर) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (प्ररिचे) व्यापक है (महित्वम्) आपकी महिमा और महानता का प्रभाव (राजा) राजा, नियंत्रक (कृष्णीनाम्) मेहनत करने वाले लोगों का (असि) है (मानुषीणाम्) मननशील मनुष्य (युधा) संघर्ष के द्वारा (देवेभ्यः) दिव्य लोगों के लिए (वरिवः) गौरवशाली सम्पदा (चकर्थ्) आप उपलब्ध कराते हो।

व्याख्या :-

परमात्मा मेहनत करने वाले और मननशील मनुष्यों का नियामन कैसे करता है?

सब पदार्थों के देने वाले और जानने वाले, सबका कल्याण करने वाले! आपकी महिमा और महानता का प्रभाव अन्य दिव्यताओं से अधिक व्यापक है। चाहे वे दिव्यताएँ कितनी ही फैली हुई और व्यापक क्यों न हों। आप राजा हो अर्थात् मेहनत करने वाले और मननशील लोगों के नियामक हो। आप दिव्य लोगों को संघर्ष के माध्यम से गौरवशाली सम्पदा उपलब्ध कराते हो।

जीवन में सार्थकता :-

संघर्ष और सफलता में क्या सम्बन्ध है?

परमात्मा की शक्तियाँ धरती और सूर्य की विशाल फैली हुई रचना से भी असीमित हैं। वह शारीरिक और मानसिक मेहनत करने वाले सभी लोगों का नियामक है। हमारी गतिविधियों का मूल्यांकन उनमें डाले गये संघर्ष की मात्रा से किया जाता है। जितना अधिक संघर्ष होगा उतनी अधिक सफलता और गौरवशाली सम्पदा हमें प्राप्त होगी।

शारीरिक और मानसिक श्रम के बदले हमें अपनी सांसारिक इच्छाओं के लिए सुविधाएँ और प्रसन्नता मिलती है।

अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के लिए किये गये संघर्ष के बदले हमें दिव्य लक्षण और आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त होती है।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें कड़े संघर्ष की आवश्यकता होती है। संघर्ष और सफलता का सीधा सम्बन्ध है।

इसी प्रकार हमें भी सभी मेहनत करने वाले और मननशील लोगों का उचित सत्कार और उचित रूप से पुरस्कृत करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.6 (कुल मन्त्र 688)

प्र नू महित्वं वृषभस्य वोचं यं पूरवो वृत्रहणं सचन्ते ।
वैश्वानरो दस्युमग्निर्जघन्वाँ अधूनोत्काष्ठा अव शम्बरं भेत् ॥

(प्र – वोचम से पूर्व लगाकर) (नू) बहुत शीघ्र, अभी (महित्वम) महिमा तथा महानता (वृषभस्य) सबसे शक्तिशाली, सबसे अधिक प्रकाशित (वोचम् – प्र वोचम) शक्ति से बोलने वाला (यम) जिसे (पूरवः) स्वयं को आत्मा में धारण करने के लिए सक्षम तथा पूर्ण (वृत्रहणम) बादलों और मन की वृत्तियों को मारने वाला (सचन्ते) संगति करने वाला (वैश्वानरः) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (दस्युम) बुरी वृत्तियाँ (अग्निं) सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा (जघन्वानः) पूरी तरह से नष्ट करता है (अधूनोत्काष्ठा) कंपित करके (काष्ठाः) सभी दिशाओं, दूर के अंशों को (अव – भेत से पूर्व लगाकर) (शम्बरम) मन की शांति के आवरण (भेत् – अव भेत) नष्ट करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा की महिमा और महानता के बारे में कौन बोलता है?

ऐसे लोग परमात्मा की संगति क्यों करते हैं?

जो लोग स्वयं को आत्मा में ही पोषित करने में पूर्ण और सक्षम होते हैं, वे उस महाशक्तिशाली और सर्वाधिक प्रकाशित परमात्मा की महिमा और महानता के बारे में मजबूती के साथ बोलते हैं जो मन के बादलों और वृत्तियों का नाश करता है।

ऐसे लोग सदैव सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा की संगति करते हैं जो सबका कल्याण करता है और बुरी प्रवृत्तियों को चारों तरफ से हिलाकर और कंपित करके सबका कल्याण करता है। परमात्मा की संगति को महसूस करने से ही मन के आवरण समाप्त किये जा सकते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

आधुनिक मनुष्य के मन को किस प्रकार की परिस्थितियों ने घेर रखा है?

परमात्मा की संगति की अनुभूति के लिए मन के आवरण का नाश किस प्रकार किया जाये?

आज के युग में अधिकतर मस्तिष्क शांति को खो चुके हैं। क्योंकि उनके मन पर ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, असंतोष, इच्छाओं की पूर्ति न होना और अहंकार को चोट आदि के आवरण विद्यमान हैं। मन पर ऐसे आवरणों की संख्या असीमित हो सकती है, जिसके कारण मन असंतुलित हो जाता है और उसका परिणाम निराशा, अपराध और रोगों के रूप में दिखाई देता है।

मन के ऐसे सभी प्रकार के असंतुलन का इलाज है अनुभूति प्राप्त होने तक परमात्मा की संगति को महसूस करना प्रारम्भ कर दें। ऐसे दिव्य एहसास के साथ अन्ततः मन के सभी आवरण नष्ट हो जायेंगे। केवल एक सच्चा आर्य (जैसा कि ऋग्वेद-1.59.2 में स्पष्ट किया गया है।) परमात्मा की संगति की अनुभूति प्राप्त कर सकता है और मन के आवरणों को नष्ट कर सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.6 (कुल मन्त्र 688)

प्र नू महित्वं वृषभस्य वोचं यं पूरवो वृत्रहणं सचन्ते ।
वैश्वानरो दस्युमग्निर्जघन्वाँ अधूनोत्काष्ठा अव शम्बरं भेत् ॥

(प्र – वोचम से पूर्व लगाकर) (नू) बहुत शीघ्र, अभी (महित्वम) महिमा तथा महानता (वृषभस्य) सबसे शक्तिशाली, सबसे अधिक प्रकाशित (वोचम् – प्र वोचम) शक्ति से बोलने वाला (यम) जिसे (पूरवः) स्वयं को आत्मा में धारण करने के लिए सक्षम तथा पूर्ण (वृत्रहणम) बादलों और मन की वृत्तियों को मारने वाला (सचन्ते) संगति करने वाला (वैश्वानरः) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (दस्युम) बुरी वृत्तियाँ (अग्निं) सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा (जघन्वानः) पूरी तरह से नष्ट करता है (अधूनोत्काष्ठा) कंपित करके (काष्ठाः) सभी दिशाओं, दूर के अंशों को (अव – भेत से पूर्व लगाकर) (शम्बरम) मन की शांति के आवरण (भेत् – अव भेत) नष्ट करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा की महिमा और महानता के बारे में कौन बोलता है?

ऐसे लोग परमात्मा की संगति क्यों करते हैं?

जो लोग स्वयं को आत्मा में ही पोषित करने में पूर्ण और सक्षम होते हैं, वे उस महाशक्तिशाली और सर्वाधिक प्रकाशित परमात्मा की महिमा और महानता के बारे में मजबूती के साथ बोलते हैं जो मन के बादलों और वृत्तियों का नाश करता है।

ऐसे लोग सदैव सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा की संगति करते हैं जो सबका कल्याण करता है और बुरी प्रवृत्तियों को चारों तरफ से हिलाकर और कंपित करके सबका कल्याण करता है। परमात्मा की संगति को महसूस करने से ही मन के आवरण समाप्त किये जा सकते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

आधुनिक मनुष्य के मन को किस प्रकार की परिस्थितियों ने घेर रखा है?

परमात्मा की संगति की अनुभूति के लिए मन के आवरण का नाश किस प्रकार किया जाये?

आज के युग में अधिकतर मस्तिष्क शांति को खो चुके हैं। क्योंकि उनके मन पर ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, असंतोष, इच्छाओं की पूर्ति न होना और अहंकार को चोट आदि के आवरण विद्यमान हैं। मन पर ऐसे आवरणों की संख्या असीमित हो सकती है, जिसके कारण मन असंतुलित हो जाता है और उसका परिणाम निराशा, अपराध और रोगों के रूप में दिखाई देता है।

मन के ऐसे सभी प्रकार के असंतुलन का इलाज है अनुभूति प्राप्त होने तक परमात्मा की संगति को महसूस करना प्रारम्भ कर दें। ऐसे दिव्य एहसास के साथ अन्ततः मन के सभी आवरण नष्ट हो जायेंगे। केवल एक सच्चा आर्य (जैसा कि ऋग्वेद-1.59.2 में स्पष्ट किया गया है।) परमात्मा की संगति की अनुभूति प्राप्त कर सकता है और मन के आवरणों को नष्ट कर सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.7 (कुल मन्त्र 689)

३४
वैश्वानरो महिमा विश्वकृष्टिर्भरद्वाजेषु यजतो विभावा ।
शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे जरते सूनृतावान् ॥

(वैश्वानरः) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (महिमा) अपनी महिमा और महानता के साथ (विश्वकृष्टिः) सबका निर्माता (भरद्वाजेषु) स्वयं को शक्ति और बल से परिपूर्ण करने वाले में (यजतः) संगति के योग्य (विभावा) विशेष रूप से प्रकाशित (शात वनेये) असंख्य पदार्थ (शतिनीभिः) असंख्य गतिविधियाँ (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (पुरुणीथे) जो दूसरों का नेतृत्व करने में सक्षम हैं और पूर्ण हैं (जरते) सम्मानित और महिमा मंडित हैं (सूनृतावान्) जो उत्तम वाणियों अर्थात् वेदों से प्रेरित करता है।

व्याख्या :-

भरद्वाज कौन होता है?

भरद्वाज को परमात्मा से क्या प्राप्त होता है?

परमात्मा जो वैश्वानर है (अर्थात् सब प्राणियों का कल्याण करने वाला) और विश्वकृष्टि (अर्थात् सबका निर्माता) है। एक भरद्वाज (अर्थात् अपने भीतर दिव्य शक्ति और बल से परिपूर्ण) में केवल वही अपनी महिमा और महानता के साथ संगति के योग्य है। सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा उन्हें उत्तम वाणियों अर्थात् वेदों से प्रेरित करता है जो अन्यों को नेतृत्व देने के लिए पूर्ण और सक्षम होते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों के द्वारा सम्मानित और महिमामंडित होते हैं जो असीम पदार्थों के साथ असंख्य गतिविधियाँ दूसरों के कल्याण के लिए सम्पन्न करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

अपने जीवन में हम परमात्मा के कौन से लक्षणों को विकसित कर सकते हैं?

इन लक्षणों से हमें क्या लाभ होगा?

परमात्मा के कुछ लक्षण ऐसे हैं जिन्हें कोई भी अपने जीवन में विकसित कर सकता है :-

1. वैश्वानरः – सबका कल्याण करके हम भी ऐसा बन सकते हैं।
2. विभावा – अपने अहंकार और इच्छाओं को त्यागकर तथा अपनी मूल आध्यात्मिक शक्ति परमात्मा पर ध्यान लगाकर हम भी दिव्य प्रकाश प्राप्त कर सकते हैं।
3. सुनृतावान् – हम अन्य लोगों को उत्तम वाणियों अर्थात् वेद से प्रेरित कर सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.59.7 (कुल मन्त्र 689)

३४
वैश्वानरो महिमा विश्वकृष्टिर्भरद्वाजेषु यजतो विभावा ।
शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे जरते सूनृतावान् ॥

(वैश्वानरः) सब प्राणियों का कल्याण करने वाले परमात्मा (महिमा) अपनी महिमा और महानता के साथ (विश्वकृष्टिः) सबका निर्माता (भरद्वाजेषु) स्वयं को शक्ति और बल से परिपूर्ण करने वाले में (यजतः) संगति के योग्य (विभावा) विशेष रूप से प्रकाशित (शात वनेये) असंख्य पदार्थ (शतिनीभिः) असंख्य गतिविधियाँ (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (पुरुणीथे) जो दूसरों का नेतृत्व करने में सक्षम हैं और पूर्ण हैं (जरते) सम्मानित और महिमा मंडित हैं (सूनृतावान्) जो उत्तम वाणियों अर्थात् वेदों से प्रेरित करता है।

व्याख्या :-

भरद्वाज कौन होता है?

भरद्वाज को परमात्मा से क्या प्राप्त होता है?

परमात्मा जो वैश्वानर है (अर्थात् सब प्राणियों का कल्याण करने वाला) और विश्वकृष्टि (अर्थात् सबका निर्माता) है। एक भरद्वाज (अर्थात् अपने भीतर दिव्य शक्ति और बल से परिपूर्ण) में केवल वही अपनी महिमा और महानता के साथ संगति के योग्य है। सर्वोच्च ऊर्जा परमात्मा उन्हें उत्तम वाणियों अर्थात् वेदों से प्रेरित करता है जो अन्यों को नेतृत्व देने के लिए पूर्ण और सक्षम होते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों के द्वारा सम्मानित और महिमामंडित होते हैं जो असीम पदार्थों के साथ असंख्य गतिविधियाँ दूसरों के कल्याण के लिए सम्पन्न करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

अपने जीवन में हम परमात्मा के कौन से लक्षणों को विकसित कर सकते हैं?

इन लक्षणों से हमें क्या लाभ होगा?

परमात्मा के कुछ लक्षण ऐसे हैं जिन्हें कोई भी अपने जीवन में विकसित कर सकता है :-

1. वैश्वानरः – सबका कल्याण करके हम भी ऐसा बन सकते हैं।
2. विभावा – अपने अहंकार और इच्छाओं को त्यागकर तथा अपनी मूल आध्यात्मिक शक्ति परमात्मा पर ध्यान लगाकर हम भी दिव्य प्रकाश प्राप्त कर सकते हैं।
3. सुनृतावान् – हम अन्य लोगों को उत्तम वाणियों अर्थात् वेद से प्रेरित कर सकते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.60.1 (कुल मन्त्र 690)

वहिनं यशसं विदथस्य केतुं सुप्राव्यं दूतं सद्योअर्थम् ।

द्विजन्मानं रयिमिव प्रशस्तं राति भरद भृगवे मातरिश्वा ॥

(वहिनम्) भार को बहन करने वाला (यशसम्) अपनी महिमा के कारण प्रसिद्ध (विदथस्य केतुम्) हृदय में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करने वाला (सुप्राव्यम्) उत्तम प्रकार से हमें संरक्षित करने वाला (दूतम्) दूत (दिव्यताओं का) (सद्यः अर्थम्) गति के साथ पूर्ण करने वाला (द्विजन्मानम्) प्राणों से तथा दिव्य ज्ञान से उत्पन्न होने वाला, मन और हृदय में उपस्थित होने वाला (रयिम इव प्रशस्तम्) गौरवशाली सम्पदा की तरह (रातिम्) सबके कल्याण के लिए सब कुछ देने वाला (भरत) धारण करता है (परमात्मा) (भृगवे) दिव्य ज्ञान के द्वारा (मातरिश्वा) प्राण ।

व्याख्या :-

परमात्मा के क्या लक्षण हैं?

इस मन्त्र में परमात्मा के निम्न नौ लक्षण सूचीबद्ध हैं :-

1. वहिनम् – वह समूचे ब्रह्माण्ड के भार को बहन करता है ।
2. यशसम् – वह अपनी महिमा के कारण प्रसिद्ध है ।
3. विदथस्य केतुम् – वह हृदय में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करता है ।
4. सुप्राव्यम् – वह उत्तम प्रकार से हमें संरक्षित करता है (अच्छे भोजन और अच्छे व्यवहार के माध्यम से एक उत्तम जीवन जीने की प्रेरणा देकर) ।
5. दूतम् – वह समस्त दिव्यताओं का दूत है ।
6. सद्यः अर्थम् – वह गति के साथ सभी कार्य पूर्ण करता है ।
7. द्विजन्मानम् – वह प्राणों से तथा दिव्य ज्ञान से उत्पन्न होने वाला, मन और हृदय में उपस्थित होने वाला है ।
8. रयिम इव प्रशस्तम् – यह गौरवशाली सम्पदा की तरह है ।
9. रातिम् – वह सबके कल्याण के लिए सब कुछ देने वाला है ।

प्राणों को धारण करके एक व्यक्ति ज्ञान अर्थात् दिव्य ज्ञान प्राप्त करता है और दिव्य ज्ञान के माध्यम से वह परमात्मा को धारण करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की क्या प्रक्रिया है?

एक अच्छे माता-पिता, अच्छे अध्यापक और अच्छे राजा का मुख्य कर्तव्य क्या है?

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की प्रक्रिया अत्यन्त सरल है । निःसंदेह इसके लिए एक आर्य जीवन की मूल योग्यताएं आवश्यक हैं । एक योगी प्राणायाम करते हुए अपने प्राणों को रोक लेता है । प्राणायाम की लम्बी और लगातार साधना के बाद वह परमात्मा के दिव्य ज्ञान को प्राप्त करना प्रारम्भ कर देता है । श्वास रोकने की अवधि में बारी-बारी से परमात्मा के लक्षणों पर ध्यान करो, आपको एक-एक करके सभी दिव्यताओं की अनुभूति प्राप्त होने लगेगी । प्राणायाम अर्थात् श्वास को रोकना और दिव्य ज्ञान में परिपक्वता अर्जित करना, परमात्मा की अनुभूति के दो कदम हैं । प्राणायाम अर्थात् श्वास को रोकना और उस पर नियंत्रण करना संयम का प्रतीक है जिससे मन की वृत्तियाँ अन्धकार तथा इच्छाएँ नियंत्रण में आ जाती हैं । यह मानसिक प्राणायाम है ।

प्रत्येक अच्छे माता-पिता, अच्छे अध्यापक और अच्छे राजा को अपने-अपने अनुयायियों के मध्य प्राणायाम की यह प्रक्रिया प्रेरित करनी चाहिए, शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार से दिव्य ज्ञान में परिपक्वता प्राप्त करने के लिए ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.60.1 (कुल मन्त्र 690)

वहिनं यशसं विदथस्य केतुं सुप्राव्यं दूतं सद्योअर्थम्।

द्विजन्मानं रयिमिव प्रशस्तं राति भरद भृगवे मातरिश्वा॥।

(वहिनम्) भार को बहन करने वाला (यशसम्) अपनी महिमा के कारण प्रसिद्ध (विदथस्य केतुम्) हृदय में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करने वाला (सुप्राव्यम्) उत्तम प्रकार से हमें संरक्षित करने वाला (दूतम्) दूत (दिव्यताओं का) (सद्यः अर्थम्) गति के साथ पूर्ण करने वाला (द्विजन्मानम्) प्राणों से तथा दिव्य ज्ञान से उत्पन्न होने वाला, मन और हृदय में उपस्थित होने वाला (रयिम इव प्रशस्तम्) गौरवशाली सम्पदा की तरह (रातिम्) सबके कल्याण के लिए सब कुछ देने वाला (भरत) धारण करता है (परमात्मा) (भृगवे) दिव्य ज्ञान के द्वारा (मातरिश्वा) प्राण।

व्याख्या :-

परमात्मा के क्या लक्षण हैं?

इस मन्त्र में परमात्मा के निम्न नौ लक्षण सूचीबद्ध हैं :-

1. वहिनम् – वह समूचे ब्रह्माण्ड के भार को बहन करता है।
2. यशसम् – वह अपनी महिमा के कारण प्रसिद्ध है।
3. विदथस्य केतुम् – वह हृदय में ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करता है।
4. सुप्राव्यम् – वह उत्तम प्रकार से हमें संरक्षित करता है (अच्छे भोजन और अच्छे व्यवहार के माध्यम से एक उत्तम जीवन जीने की प्रेरणा देकर।)
5. दूतम् – वह समस्त दिव्यताओं का दूत है।
6. सद्यः अर्थम् – वह गति के साथ सभी कार्य पूर्ण करता है।
7. द्विजन्मानम् – वह प्राणों से तथा दिव्य ज्ञान से उत्पन्न होने वाला, मन और हृदय में उपस्थित होने वाला है।
8. रयिम इव प्रशस्तम् – यह गौरवशाली सम्पदा की तरह है।
9. रातिम् – वह सबके कल्याण के लिए सब कुछ देने वाला है।

प्राणों को धारण करके एक व्यक्ति ज्ञान अर्थात् दिव्य ज्ञान प्राप्त करता है और दिव्य ज्ञान के माध्यम से वह परमात्मा को धारण करता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की क्या प्रक्रिया है?

एक अच्छे माता-पिता, अच्छे अध्यापक और अच्छे राजा का मुख्य कर्तव्य क्या है?

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की प्रक्रिया अत्यन्त सरल है। निःसंदेह इसके लिए एक आर्य जीवन की मूल योग्यताएं आवश्यक हैं। एक योगी प्राणायाम करते हुए अपने प्राणों को रोक लेता है। प्राणायाम की लम्बी और लगातार साधना के बाद वह परमात्मा के दिव्य ज्ञान को प्राप्त करना प्रारम्भ कर देता है। श्वास रोकने की अवधि में बारी-बारी से परमात्मा के लक्षणों पर ध्यान करो, आपको एक-एक करके सभी दिव्यताओं की अनुभूति प्राप्त होने लगेगी। प्राणायाम अर्थात् श्वास को रोकना और दिव्य ज्ञान में परिपक्वता अर्जित करना, परमात्मा की अनुभूति के दो कदम हैं। प्राणायाम अर्थात् श्वास को रोकना और उस पर नियंत्रण करना संयम का प्रतीक है जिससे मन की वृत्तियाँ अन्धकार तथा इच्छाएँ नियंत्रण में आ जाती हैं। यह मानसिक प्राणायाम है।

प्रत्येक अच्छे माता-पिता, अच्छे अध्यापक और अच्छे राजा को अपने-अपने अनुयायियों के मध्य प्राणायाम की यह प्रक्रिया प्रेरित करनी चाहिए, शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार से दिव्य ज्ञान में परिपक्वता प्राप्त करने के लिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.60.2 (कुल मन्त्र 691)

अस्य शासुरुभयाः सचन्ते हविषन्त उशिजो ये च मर्ताः।

दिवशिचत्पूर्वे न्यसादि होताऽपृच्छयो विश्पतिर्विक्षु वेधः ॥

(अस्य) यह (शासु:) शासन करने वाले और नियंत्रक का (समूची सृष्टि के) (उभयास:) दोनों (शासक और प्रजा, आहुति देने वाला और दिव्य ज्ञान में रत) (सचन्ते) सेवा और पूजा करता है (हविषन्त) आहुति देता है, यज्ञ करता है (उशिज:) दिव्य ज्ञान में रत (ये) जो (च) और (मर्ता:) मनुष्य (दिवः चित् पूर्वः) दिव्य ज्ञान के प्रकाश की अनुभूति से भी पूर्व (न्यसादि) हमारे गहरे हृदय में स्थापित है (होता) यज्ञ के लिए सभी पदार्थों को लाने वाला और देने वाला (अपृच्छयः) सब पदार्थों में अनुभूति प्रदान करने के योग्य, उसकी महिमा हर पदार्थ में दिखाई देती है, मननशील मनुष्य परमात्मा के बारे में हर वस्तु पर प्रश्न करते हैं। (विश्पतिः) सबका निर्माता और संरक्षणकर्ता (विक्षु) सभी प्राणियों में (वेधाः) ज्ञान को धारण करता है, सभी कर्मों का फल देता है।

व्याख्या :-

परमात्मा किसके द्वारा पूजा के योग्य है?

समूचे ब्रह्माण्ड का शासक और नियंत्रक, परमात्मा, सभी मनुष्यों के द्वारा सेवा और पूजा के योग्य है, राजा और प्रजा दोनों के द्वारा, यज्ञ में आहुति देने वाले और दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने और बांटने में लगे लोगों के द्वारा।

परमात्मा के दिव्य ज्ञान के प्रकाश की अनुभूति होने से पूर्व भी वह हमारे गहरे हृदय में विराजमान है।

यज्ञ के लिए प्रत्येक वस्तु को लाने वाला और देने वाला भी वही है।

वह प्रत्येक वस्तु में अनुभूति के योग्य है। प्रत्येक वस्तु में उसकी महिमा महसूस की जा सकती है।

मननशील मनुष्य प्रत्येक वस्तु में परमात्मा के बारे में जिज्ञासारूपी प्रश्न करते हैं।

वह सबका निर्माता और संरक्षक है। अतः वह प्रत्येक व्यक्ति को उसके सभी कार्यों के फल प्रदान करते हुए ज्ञान देता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा सबके द्वारा पूजा के योग्य क्यों हैं?

सबके हृदय में कौन विराजमान है?

कौन सबको पदार्थ उपलब्ध कराता है?

जब हम किसी भी पदार्थ के बारे में जिज्ञासा के रूप में प्रत्येक प्रश्न करते हैं तो हमें क्या अनुभूति होती है?

कौन सब में ज्ञान धारण करता है और सभी कर्मों के फल प्रदान करता है?

प्रत्येक मनुष्य में हृदय और मस्तिष्क है। कोई व्यक्ति परमात्मा के दिव्य ज्ञान के प्रकाश की अनुभूति करे परन्तु परमात्मा तो प्रत्येक हृदय में पहले से ही विराजमान है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को उसकी अनुभूति का प्रयास करने के लिए प्रेरित होना ही चाहिए। हमें जो भी पदार्थ मिलते हैं, वे सब परमात्मा के द्वारा उपलब्ध कराये जाते हैं। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो कहे कि उसने परमात्मा की सृष्टि में से कुछ भी प्राप्त नहीं किया। अतः परमात्मा सबके द्वारा अनुभूति के योग्य है। निर्माता, संरक्षक और पोषक होने के नाते वह सब में ज्ञान को धारण करता है और सभी कार्यों के फल प्रदान करता है। इस प्रकार, निश्चित रूप से, यह अनुभूति के स्तर पर पहुँचने तक सबके द्वारा जानने के योग्य है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.60.2 (कुल मन्त्र 691)

अस्य शासुरुभयाः सचन्ते हविषन्त उशिजो ये च मर्ताः।

दिवशिचत्पूर्वे न्यसादि होताऽपृच्छयो विश्पतिर्विक्षु वेदाः ॥

(अस्य) यह (शासु:) शासन करने वाले और नियंत्रक का (समूची सृष्टि के) (उभयास:) दोनों (शासक और प्रजा, आहुति देने वाला और दिव्य ज्ञान में रत) (सचन्ते) सेवा और पूजा करता है (हविषन्त) आहुति देता है, यज्ञ करता है (उशिज:) दिव्य ज्ञान में रत (ये) जो (च) और (मर्ता:) मनुष्य (दिवः चित् पूर्वः) दिव्य ज्ञान के प्रकाश की अनुभूति से भी पूर्व (न्यसादि) हमारे गहरे हृदय में स्थापित है (होता) यज्ञ के लिए सभी पदार्थों को लाने वाला और देने वाला (अपृच्छयः) सब पदार्थों में अनुभूति प्रदान करने के योग्य, उसकी महिमा हर पदार्थ में दिखाई देती है, मननशील मनुष्य परमात्मा के बारे में हर वस्तु पर प्रश्न करते हैं। (विश्पतिः) सबका निर्माता और संरक्षणकर्ता (विक्षु) सभी प्राणियों में (वेधाः) ज्ञान को धारण करता है, सभी कर्मों का फल देता है।

व्याख्या :-

परमात्मा किसके द्वारा पूजा के योग्य है?

समूचे ब्रह्माण्ड का शासक और नियंत्रक, परमात्मा, सभी मनुष्यों के द्वारा सेवा और पूजा के योग्य है, राजा और प्रजा दोनों के द्वारा, यज्ञ में आहुति देने वाले और दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने और बांटने में लगे लोगों के द्वारा।

परमात्मा के दिव्य ज्ञान के प्रकाश की अनुभूति होने से पूर्व भी वह हमारे गहरे हृदय में विराजमान है।

यज्ञ के लिए प्रत्येक वस्तु को लाने वाला और देने वाला भी वही है।

वह प्रत्येक वस्तु में अनुभूति के योग्य है। प्रत्येक वस्तु में उसकी महिमा महसूस की जा सकती है।

मननशील मनुष्य प्रत्येक वस्तु में परमात्मा के बारे में जिज्ञासारूपी प्रश्न करते हैं।

वह सबका निर्माता और संरक्षक है। अतः वह प्रत्येक व्यक्ति को उसके सभी कार्यों के फल प्रदान करते हुए ज्ञान देता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा सबके द्वारा पूजा के योग्य क्यों हैं?

सबके हृदय में कौन विराजमान है?

कौन सबको पदार्थ उपलब्ध कराता है?

जब हम किसी भी पदार्थ के बारे में जिज्ञासा के रूप में प्रत्येक प्रश्न करते हैं तो हमें क्या अनुभूति होती है?

कौन सब में ज्ञान धारण करता है और सभी कर्मों के फल प्रदान करता है?

प्रत्येक मनुष्य में हृदय और मस्तिष्क है। कोई व्यक्ति परमात्मा के दिव्य ज्ञान के प्रकाश की अनुभूति करे परन्तु परमात्मा तो प्रत्येक हृदय में पहले से ही विराजमान है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को उसकी अनुभूति का प्रयास करने के लिए प्रेरित होना ही चाहिए। हमें जो भी पदार्थ मिलते हैं, वे सब परमात्मा के द्वारा उपलब्ध कराये जाते हैं। ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो कहे कि उसने परमात्मा की सृष्टि में से कुछ भी प्राप्त नहीं किया। अतः परमात्मा सबके द्वारा अनुभूति के योग्य है। निर्माता, संरक्षक और पोषक होने के नाते वह सब में ज्ञान को धारण करता है और सभी कार्यों के फल प्रदान करता है। इस प्रकार, निश्चित रूप से, यह अनुभूति के स्तर पर पहुँचने तक सबके द्वारा जानने के योग्य है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.60.3 (कुल मन्त्र 692)

तं नव्यसी हृद आ जायमानमस्मत्सुकीर्तिमधुजिह्वमश्या: ।
यमृत्विजो वृजने मानुषासः प्रयस्वन्त आयवो जीजनन्त ॥

(तम) वह (नव्यसी) एकदम नई प्रशंसा और महिमा (हृदः आ जायमानम:) हृदय में अनुभूत होने वाला (अस्मत् सुकीर्तिः) उसकी महिमा में हमारा गान (मधुजिह्वम) मधुर वाणी वाले के लिए, मधुरता की प्रेरणा देने वाले के लिए (अश्याः) प्राप्त हो (यम्) जो (ऋत्विजः) प्रत्येक ऋतु में यज्ञ कार्यों को करने वाले (वृजने) बुराईयों से मुक्त श्रेष्ठ जीवन में (मानुषासः) अन्य लोगों के कल्याण के लिए लगे हुए मननशील मनुष्य (प्रयस्वन्तः) उत्तम ज्ञान से सुशोभित (आयवः) कार्य में सदैव सक्रिय, सत्यवादी (जीजनन्त) स्वयं को प्रकाशित करने वाला ।

व्याख्या :-

परमात्मा की प्रशंसा में किये गये हमारे उच्चारण कहाँ जाते हैं?

परमात्मा के बारे में हमारे उच्चारणों के माध्यम से की गई नई—नई प्रशंसाएं और महिमागान हमारे हृदय में ही शामिल होते हैं और उस परमात्मा को प्राप्त होते हैं जो मधुर वाणी वाला है और मधुरता को ही प्रेरित करता है। प्रत्येक ऋतु में यज्ञ गतिविधियाँ सम्पन्न करने वाले लोग बुराईयों से मुक्त अपने न्याय परायण जीवन में तथा वे मननशील मनुष्य जो दूसरों के कल्याण में ही लगे रहते हैं, सुन्दर ज्ञान को प्राप्त करते हैं, वे सदैव स्वयं को प्रकाशित करते हुए सत्य आचरण के द्वारा कार्यों में सक्रिय रहते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य ज्ञान का प्रकाश कैसे प्राप्त करें?

अपने अन्दर दिव्य ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करने के लिए हमें सत्य परायण जीवन, प्रत्येक वस्तु के लिए और प्रत्येक क्षण के लिए परमात्मा की प्रशंसा करते हुए दूसरों के कल्याण के लिए जीने की आवश्यकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.60.3 (कुल मन्त्र 692)

तं नव्यसी हृद आ जायमानमस्मत्सुकीर्तिमधुजिह्वमश्याः।
यमृत्विजो वृजने मानुषासः प्रयस्वन्त आयवो जीजनन्त ॥

(तम) वह (नव्यसी) एकदम नई प्रशंसा और महिमा (हृदः आ जायमानमः) हृदय में अनुभूत होने वाला (अस्मत् सुकीर्तिः) उसकी महिमा में हमारा गान (मधुजिह्वम) मधुर वाणी वाले के लिए, मधुरता की प्रेरणा देने वाले के लिए (अश्याः) प्राप्त हो (यम्) जो (ऋत्विजः) प्रत्येक ऋतु में यज्ञ कार्यों को करने वाले (वृजने) बुराईयों से मुक्त श्रेष्ठ जीवन में (मानुषासः) अन्य लोगों के कल्याण के लिए लगे हुए मननशील मनुष्य (प्रयस्वन्तः) उत्तम ज्ञान से सुशोभित (आयवः) कार्य में सदैव सक्रिय, सत्यवादी (जीजनन्त) स्वयं को प्रकाशित करने वाला।

व्याख्या :-

परमात्मा की प्रशंसा में किये गये हमारे उच्चारण कहाँ जाते हैं?

परमात्मा के बारे में हमारे उच्चारणों के माध्यम से की गई नई—नई प्रशंसाएं और महिमागान हमारे हृदय में ही शामिल होते हैं और उस परमात्मा को प्राप्त होते हैं जो मधुर वाणी वाला है और मधुरता को ही प्रेरित करता है। प्रत्येक ऋतु में यज्ञ गतिविधियाँ सम्पन्न करने वाले लोग बुराईयों से मुक्त अपने न्याय परायण जीवन में तथा वे मननशील मनुष्य जो दूसरों के कल्याण में ही लगे रहते हैं, सुन्दर ज्ञान को प्राप्त करते हैं, वे सदैव स्वयं को प्रकाशित करते हुए सत्य आचरण के द्वारा कार्यों में सक्रिय रहते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य ज्ञान का प्रकाश कैसे प्राप्त करें?

अपने अन्दर दिव्य ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करने के लिए हमें सत्य परायण जीवन, प्रत्येक वस्तु के लिए और प्रत्येक क्षण के लिए परमात्मा की प्रशंसा करते हुए दूसरों के कल्याण के लिए जीने की आवश्यकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.60.4 (कुल मन्त्र 693)

उशिक्पावको वसुर्मनुषेषु वरेष्यो होताधायि विक्षु ।
दमूना गृहपतिर्दम औँ अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम् ॥

(उशिक) आत्मा के कल्याण की सच्ची कामना करता है (पावक:) अपने जीवन को पवित्र करता है (वसु) अपने आवास का प्रबन्ध करता है (मानेषु) मननशील मनुष्यों में (वरेष्य:) ग्रहण करने योग्य (होता) सभी पदार्थों को लाने वाला और देने वाला (अधायि) हृदय स्थान में (विक्षु) लोगों का (दमूना:) सबके अन्दर मन रखने वाला (गृहपतिः) इस घर का संरक्षक (दमे) इस घर में (आ) अभवत् से पूर्व लगाकर) (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (अभुवत) आ भुवत) रहता है (रयिपतिः) समस्त सम्पदाओं का स्वामी (रयीणाम्) सम्पदा की चमक बढ़ाता है।

व्याख्या :-

आत्मा के कल्याण की कौन इच्छा करता है?

कौन हमारे मन में निवास करता है?

हमारी सम्पदा का स्वामी कौन है?

परमात्मा सत्य रूप में आत्मा के कल्याण की इच्छा करता है, उसके लिए आवास का प्रबन्ध करता है और उसके जीवन को शुद्ध करता है। लोगों के लिए सब पदार्थों को लाने वाला और देने वाला मननशील मनुष्यों के हृदय आकाश में धारण करने के योग्य है। वह सब शरीरों के मन में है। सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा इस घर में रहता है। वह सारी सम्पदाओं का स्वामी है और सभी सम्पदाओं की चमक बनाता है।

जीवन में सार्थकता :-

कौन परमात्मा को हृदय में धारण करता है?

किसकी सम्पदा परमात्मा की महिमा के साथ चमकती है?

परमात्मा सर्वविद्यमान है, अतः हमारे शरीर में भी विद्यमान है। वह हमारे शरीर और प्रत्येक पदार्थ का दाता है। परन्तु केवल मननशील मनुष्य ही अपने हृदय आकाश में उसे स्वीकार करते हैं। ऐसे महान् आत्माओं के लिए उनका मन ही परमात्मा है जो प्रत्येक कार्य के लिए उन्हें प्रेरित करता है और शक्ति प्रदान करता है। इस चेतना के साथ, ऐसे लोगों की सम्पदा परमात्मा की महिमा के साथ चमकती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.60.4 (कुल मन्त्र 693)

उशिक्पावको वसुर्मनुषेषु वरेष्यो होताधायि विक्षु ।
दमूना गृहपतिर्दम औँ अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम् ॥

(उशिक) आत्मा के कल्याण की सच्ची कामना करता है (पावक:) अपने जीवन को पवित्र करता है (वसु) अपने आवास का प्रबन्ध करता है (मानेषु) मननशील मनुष्यों में (वरेष्य:) ग्रहण करने योग्य (होता) सभी पदार्थों को लाने वाला और देने वाला (अधायि) हृदय स्थान में (विक्षु) लोगों का (दमूना:) सबके अन्दर मन रखने वाला (गृहपतिः) इस घर का संरक्षक (दमे) इस घर में (आ) अभवत् से पूर्व लगाकर) (अग्निः) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (अभुवत) आ भुवत) रहता है (रयिपतिः) समस्त सम्पदाओं का स्वामी (रयीणाम्) सम्पदा की चमक बढ़ाता है।

व्याख्या :-

आत्मा के कल्याण की कौन इच्छा करता है?

कौन हमारे मन में निवास करता है?

हमारी सम्पदा का स्वामी कौन है?

परमात्मा सत्य रूप में आत्मा के कल्याण की इच्छा करता है, उसके लिए आवास का प्रबन्ध करता है और उसके जीवन को शुद्ध करता है। लोगों के लिए सब पदार्थों को लाने वाला और देने वाला मननशील मनुष्यों के हृदय आकाश में धारण करने के योग्य है। वह सब शरीरों के मन में है। सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा इस घर में रहता है। वह सारी सम्पदाओं का स्वामी है और सभी सम्पदाओं की चमक बनाता है।

जीवन में सार्थकता :-

कौन परमात्मा को हृदय में धारण करता है?

किसकी सम्पदा परमात्मा की महिमा के साथ चमकती है?

परमात्मा सर्वविद्यमान है, अतः हमारे शरीर में भी विद्यमान है। वह हमारे शरीर और प्रत्येक पदार्थ का दाता है। परन्तु केवल मननशील मनुष्य ही अपने हृदय आकाश में उसे स्वीकार करते हैं। ऐसे महान् आत्माओं के लिए उनका मन ही परमात्मा है जो प्रत्येक कार्य के लिए उन्हें प्रेरित करता है और शक्ति प्रदान करता है। इस चेतना के साथ, ऐसे लोगों की सम्पदा परमात्मा की महिमा के साथ चमकती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.60.5 (कुल मन्त्र 694)

तं त्वा वयं पतिमग्ने रयीणां प्र शंसामो मतिभिर्गोत्तमासः।
आशुं न वाजम्भरं मर्जयन्तः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥

(तम) उसको (न्वा) आप (वयम) हम (पतिम) स्वामी और संरक्षक (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (रयीणाम्) सभी सम्पदाओं का (प्रशंसामः) प्रशंसा तथा महिमा (मतिभिः) बुद्धि के साथ, विद्वानों के साथ (गोत्तमासः) हमारी इन्द्रियों को पवित्र और तीव्र करके (आशुम्) अश्व (न) जैसे (वाजम्भरम्) हमें शक्ति और गति से पूर्ण करता है (मर्जयन्तः) हमें पवित्र करता है (प्रातः) प्रातःकाल में (मक्षु) अत्यन्त शीघ्र (धियावसुः) दिव्य ज्ञान में जीने वाले लोग, विद्वत् कार्यों से प्राप्त सम्पदा (जगम्यात्) प्राप्त हो।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा की प्रशंसा और महिमा किस प्रकार करनी चाहिए?

परमात्मा की प्रशंसा और महिमागान के क्या परिणाम होते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, सभी सम्पदाओं का स्वामी और संरक्षक, उस आपकी प्रशंसा और महिमा अपनी इन्द्रियों को शुद्ध करके और तीव्र करके अपनी बुद्धियों के साथ और विद्वानों के साथ करते हैं। शुद्धता से आप हमारे अन्दर शक्ति और अश्वों जैसी गति परिपूर्ण करते हो। हम प्रातःकाल शीघ्रता के साथ अपने बौद्धिक कार्यों से तथा दिव्य ज्ञान में जीने वाले लोगों से सम्पदा प्राप्त करें।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की प्रशंसा और महिमा के लिए मूल लक्षण क्या हैं?

गौरवशाली सम्पदा क्या है?

स्वयं को शुद्ध करना और अपनी इन्द्रियों की चमक बढ़ाना, परमात्मा की प्रशंसा और महिमा के लिए मूल लक्षण हैं :— अशुद्ध लोग परमात्मा के साथ सम्पर्क नहीं बना सकते। अशुद्ध लोग तो अच्छे स्वास्थ्य अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का आनन्द भी नहीं ले पाते।

अच्छे स्वास्थ्य के बिना सम्पदा प्राप्त ही नहीं होती या सम्पदा का कोई आनन्द नहीं मिलता। सम्पदा केवल प्रकृति की भौतिक वस्तुएं ही नहीं हैं, इसमें मानसिक और आध्यात्मिक उपलब्धियाँ भी शामिल हैं। सभी सम्पदाएं परमात्मा के ही कारण हैं और केवल इसी चेतन सम्बद्धता के साथ हमारी सम्पत्ति गौरवशाली बनती है जो सबके कल्याण के लिए लाभदायक होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.60.5 (कुल मन्त्र 694)

तं त्वा वयं पतिमग्ने रयीणां प्र शंसामो मतिभिर्गोत्तमासः।
आशुं न वाजम्भरं मर्जयन्तः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥

(तम) उसको (न्वा) आप (वयम) हम (पतिम) स्वामी और संरक्षक (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा (रयीणाम्) सभी सम्पदाओं का (प्रशंसामः) प्रशंसा तथा महिमा (मतिभिः) बुद्धि के साथ, विद्वानों के साथ (गोत्तमासः) हमारी इन्द्रियों को पवित्र और तीव्र करके (आशुम्) अश्व (न) जैसे (वाजम्भरम्) हमें शक्ति और गति से पूर्ण करता है (मर्जयन्तः) हमें पवित्र करता है (प्रातः) प्रातःकाल में (मक्षु) अत्यन्त शीघ्र (धियावसुः) दिव्य ज्ञान में जीने वाले लोग, विद्वत् कार्यों से प्राप्त सम्पदा (जगम्यात्) प्राप्त हो।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा की प्रशंसा और महिमा किस प्रकार करनी चाहिए?

परमात्मा की प्रशंसा और महिमागान के क्या परिणाम होते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, सभी सम्पदाओं का स्वामी और संरक्षक, उस आपकी प्रशंसा और महिमा अपनी इन्द्रियों को शुद्ध करके और तीव्र करके अपनी बुद्धियों के साथ और विद्वानों के साथ करते हैं। शुद्धता से आप हमारे अन्दर शक्ति और अश्वों जैसी गति परिपूर्ण करते हो। हम प्रातःकाल शीघ्रता के साथ अपने बौद्धिक कार्यों से तथा दिव्य ज्ञान में जीने वाले लोगों से सम्पदा प्राप्त करें।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की प्रशंसा और महिमा के लिए मूल लक्षण क्या हैं?

गौरवशाली सम्पदा क्या है?

स्वयं को शुद्ध करना और अपनी इन्द्रियों की चमक बढ़ाना, परमात्मा की प्रशंसा और महिमा के लिए मूल लक्षण हैं :— अशुद्ध लोग परमात्मा के साथ सम्पर्क नहीं बना सकते। अशुद्ध लोग तो अच्छे स्वास्थ्य अर्थात् शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य का आनन्द भी नहीं ले पाते।

अच्छे स्वास्थ्य के बिना सम्पदा प्राप्त ही नहीं होती या सम्पदा का कोई आनन्द नहीं मिलता। सम्पदा केवल प्रकृति की भौतिक वस्तुएं ही नहीं हैं, इसमें मानसिक और आध्यात्मिक उपलब्धियाँ भी शामिल हैं। सभी सम्पदाएं परमात्मा के ही कारण हैं और केवल इसी चेतन सम्बद्धता के साथ हमारी सम्पत्ति गौरवशाली बनती है जो सबके कल्याण के लिए लाभदायक होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.1

एष प्र पूर्वोरव तस्य चम्पिषोऽत्यो न योषामुदयंस्त भुवर्णि: ।
दक्षं महे पाययते हिरण्ययं रथमावृत्या हरियोगमृभ्वसम् ॥

(एषः) वह, दाता तथा इन्द्रियों का नियंत्रक (प्र – उदयंस्त से पूर्व लगाकर) (पूर्वीः) पूर्ण रूप से (अव – उदयंस्त से पूर्व लगाकर) (तस्य) उसके लिए (परमात्मा की अनुभूति के लिए) (चम्पिषः) सभी पदार्थों का आनन्द लेने वाला शरीर (अत्यः) लगातार सक्रिय (न) जैसे कि (योषाम) विद्वतपूर्ण स्त्रियों के साथ (उदयंस्त – प्र अव उदयंस्त) पूर्ण प्रगति करता है (भुवर्णि:) स्वयं को धारण करता है, पालन–पोषण करता है (दक्षम्) दक्षता के साथ (महे) महान् एवं दिव्य (पाययते) प्राप्त करता है, पान करता है (हिरण्ययम्) स्वर्णिम रथ (आवृत्या) पदार्थों की वृत्तियों को हटा देता है (हरियोगम्) परमात्मा से जुड़ता है जो सभी दर्द समाप्त करता है (ऋभ्वसम्) सबको प्रेरित करता है ।

व्याख्या :-

वैदिक विवेक के साथ जीने वाला व्यक्ति समाज के लिए क्या कर सकता है?

वह, इन्द्रियों का नियंत्रक, अपने शरीर को परमात्मा की अनुभूति के लिए धारण करता है और भरण–पोषण करता है, जिस प्रकार परिवार और समाज का मुखिया विदुषी महिलाओं के साथ प्रगति करता है । वह महान् और दिव्य विशेषज्ञताओं को प्राप्त करता है और उनका पान करता है अर्थात् उन्हें जीवन में उतारता है । वह अपने स्वर्णिम रथ अर्थात् सबसे मूल्यवान मानव शरीर से सभी पदार्थों की वृत्तियाँ हटा देता है । वह सभी दुःखों और कष्टों को दूर करके सभी लोगों को परमात्मा के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

जीवन का अन्तिम लक्ष्य क्या है?

जब कोई व्यक्ति (ऋग्वेद 1.55.7 के अनुसार) वैदिक विवेक के साथ अपना जीवनयापन करता है और समाज में एक दाता बन जाता है तथा अपनी इन्द्रियों और मन का नियंत्रक बन जाता है, वह परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर प्रगति करने के लिए सक्षम हो जाता है । अपने परिवार और समाज के मुखिया के रूप में वह अन्य लोगों को भी इस मार्ग के लिए प्रेरित करता है, क्योंकि उसे विशेषज्ञता प्राप्त हो चुकी है और उसका मन आस–पास के पदार्थों की वृत्तियों से मुक्त होकर स्पष्ट हो चुका है । वह शरीर और मन में पवित्र हो जाता है, क्योंकि उसके जीवन में वैदिक विवेक के दो मूलभूत लक्षण स्थापित हो जाते हैं – समाज का एक दाता और इन्द्रियों का नियंत्रक । इस प्रकार वह मानव जीवन के अन्तिम लक्ष्य अर्थात् ‘हरियोगम् ऋभ्वसम्’ का पूर्ण सन्देशवाहक बन जाता है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.1

एष प्र पूर्वोरव तस्य चम्पिषोऽत्यो न योषामुदयंस्त भुवर्णि: ।
दक्षं महे पाययते हिरण्ययं रथमावृत्या हरियोगमृभ्वसम् ॥

(एषः) वह, दाता तथा इन्द्रियों का नियंत्रक (प्र – उदयंस्त से पूर्व लगाकर) (पूर्वीः) पूर्ण रूप से (अव – उदयंस्त से पूर्व लगाकर) (तस्य) उसके लिए (परमात्मा की अनुभूति के लिए) (चम्पिषः) सभी पदार्थों का आनन्द लेने वाला शरीर (अत्यः) लगातार सक्रिय (न) जैसे कि (योषाम) विद्वतपूर्ण स्त्रियों के साथ (उदयंस्त – प्र अव उदयंस्त) पूर्ण प्रगति करता है (भुवर्णि:) स्वयं को धारण करता है, पालन–पोषण करता है (दक्षम्) दक्षता के साथ (महे) महान् एवं दिव्य (पाययते) प्राप्त करता है, पान करता है (हिरण्ययम्) स्वर्णिम् (रथम्) रथ (आवृत्या) पदार्थों की वृत्तियों को हटा देता है (हरियोगम्) परमात्मा से जुड़ता है जो सभी दर्द समाप्त करता है (ऋभ्वसम्) सबको प्रेरित करता है ।

व्याख्या :-

वैदिक विवेक के साथ जीने वाला व्यक्ति समाज के लिए क्या कर सकता है?

वह, इन्द्रियों का नियंत्रक, अपने शरीर को परमात्मा की अनुभूति के लिए धारण करता है और भरण–पोषण करता है, जिस प्रकार परिवार और समाज का मुखिया विदुषी महिलाओं के साथ प्रगति करता है । वह महान् और दिव्य विशेषज्ञताओं को प्राप्त करता है और उनका पान करता है अर्थात् उन्हें जीवन में उतारता है । वह अपने स्वर्णिम रथ अर्थात् सबसे मूल्यवान मानव शरीर से सभी पदार्थों की वृत्तियाँ हटा देता है । वह सभी दुःखों और कष्टों को दूर करके सभी लोगों को परमात्मा के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

जीवन का अन्तिम लक्ष्य क्या है?

जब कोई व्यक्ति (ऋग्वेद 1.55.7 के अनुसार) वैदिक विवेक के साथ अपना जीवनयापन करता है और समाज में एक दाता बन जाता है तथा अपनी इन्द्रियों और मन का नियंत्रक बन जाता है, वह परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर प्रगति करने के लिए सक्षम हो जाता है । अपने परिवार और समाज के मुखिया के रूप में वह अन्य लोगों को भी इस मार्ग के लिए प्रेरित करता है, क्योंकि उसे विशेषज्ञता प्राप्त हो चुकी है और उसका मन आस–पास के पदार्थों की वृत्तियों से मुक्त होकर स्पष्ट हो चुका है । वह शरीर और मन में पवित्र हो जाता है, क्योंकि उसके जीवन में वैदिक विवेक के दो मूलभूत लक्षण स्थापित हो जाते हैं – समाज का एक दाता और इन्द्रियों का नियंत्रक । इस प्रकार वह मानव जीवन के अन्तिम लक्ष्य अर्थात् ‘हरियोगम् ऋभ्वसम्’ का पूर्ण सन्देशवाहक बन जाता है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.2

तं गूर्तयो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्ववः ।
पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरि न वेना अधि रोह तेजसा ॥

(तम्) वे जो (गूर्तयः) स्तुति करते हैं (परमात्मा की) (नेमन इषः) परमात्मा को नमन करने के बाद विनम्र होकर (परीणसः) सक्रियता से व्याप्त होते हैं (समुद्रम्) समुद्र की ओर (न) जैसे कि (संचरणे) संयुक्त होकर (सनिष्ववः) भिन्न-भिन्न भूमियों की सेवा करती हुई नदियाँ (पतिम्) स्वामी, संरक्षक (दक्षस्य) दक्ष का, शक्तिशाली का (विदथस्य) ज्ञान का (नू) प्राप्त हो (सहः) शक्ति का स्रोत (गिरिम्) पर्वतों पर (न) जैसे कि (वेनाः) उत्सुक (अधि रोह) चढ़ता है और स्थापित करता है (तेजसा) पवित्र बल के साथ ।

व्याख्या :-

कौन परमात्मा में विलीन होता है?

जो व्यक्ति परमात्मा के प्रशंसक होते हैं और विनम्रता के साथ अपना नमन उसे प्रस्तुत करते हैं तथा गतिविधियों के साथ व्याप्त हो जाते हैं वे शक्ति और बल के स्रोत के द्वारा ग्रहण किये जाते हैं जैसे – भिन्न-भिन्न भूमियों को सेवित करती हुई नदियाँ समुद्र में जा मिलती हैं और जैसे एक उत्सुक और उत्साही व्यक्ति अपने शुद्ध बल के साथ पर्वत की चोटी तक पहुँच जाता है और वहाँ स्थापित हो जाता है। परमात्मा हर प्रकार की दक्षताओं और प्रत्येक ज्ञान का स्वामी और संरक्षक है।

जीवन में सार्थकता :-

एक सच्चे जिज्ञासु की कितनी गहराई और कितनी ऊँचाई होती है?

एक सच्चा जिज्ञासु एक तरफ परमात्मा की प्रशंसा करता है और दूसरी तरफ अपनी गतिविधियों से व्याप्त हो जाता है। उसकी शुद्धता उसे परमात्मा में इतना गहरा विलीन कर देती है जैसे – नदियाँ समुद्र में जाकर मिलती हैं। वह अपने ज्ञान तथा त्याग कार्यों के साथ जीवनयापन करते हुए इतना ऊँचा हो जाता है कि वह एक उत्साही पर्वतारोही की तरह पर्वत की चोटी पर स्थापित हुआ दिखाई देता है। उसकी गहराई और उसकी ऊँचाई असमानान्तर होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.2

तं गूर्तयो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्ववः ।
पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरि न वेना अधि रोह तेजसा ॥

(तम्) वे जो (गूर्तयः) स्तुति करते हैं (परमात्मा की) (नेमन इषः) परमात्मा को नमन करने के बाद विनम्र होकर (परीणसः) सक्रियता से व्याप्त होते हैं (समुद्रम्) समुद्र की ओर (न) जैसे कि (संचरणे) संयुक्त होकर (सनिष्ववः) भिन्न-भिन्न भूमियों की सेवा करती हुई नदियाँ (पतिम्) स्वामी, संरक्षक (दक्षस्य) दक्ष का, शक्तिशाली का (विदथस्य) ज्ञान का (नू) प्राप्त हो (सहः) शक्ति का स्रोत (गिरिम्) पर्वतों पर (न) जैसे कि (वेनाः) उत्सुक (अधि रोह) चढ़ता है और स्थापित करता है (तेजसा) पवित्र बल के साथ ।

व्याख्या :-

कौन परमात्मा में विलीन होता है?

जो व्यक्ति परमात्मा के प्रशंसक होते हैं और विनम्रता के साथ अपना नमन उसे प्रस्तुत करते हैं तथा गतिविधियों के साथ व्याप्त हो जाते हैं वे शक्ति और बल के स्रोत के द्वारा ग्रहण किये जाते हैं जैसे – भिन्न-भिन्न भूमियों को सेवित करती हुई नदियाँ समुद्र में जा मिलती हैं और जैसे एक उत्सुक और उत्साही व्यक्ति अपने शुद्ध बल के साथ पर्वत की चोटी तक पहुँच जाता है और वहाँ स्थापित हो जाता है। परमात्मा हर प्रकार की दक्षताओं और प्रत्येक ज्ञान का स्वामी और संरक्षक है।

जीवन में सार्थकता :-

एक सच्चे जिज्ञासु की कितनी गहराई और कितनी ऊँचाई होती है?

एक सच्चा जिज्ञासु एक तरफ परमात्मा की प्रशंसा करता है और दूसरी तरफ अपनी गतिविधियों से व्याप्त हो जाता है। उसकी शुद्धता उसे परमात्मा में इतना गहरा विलीन कर देती है जैसे – नदियाँ समुद्र में जाकर मिलती हैं। वह अपने ज्ञान तथा त्याग कार्यों के साथ जीवनयापन करते हुए इतना ऊँचा हो जाता है कि वह एक उत्साही पर्वतारोही की तरह पर्वत की चोटी पर स्थापित हुआ दिखाई देता है। उसकी गहराई और उसकी ऊँचाई असमानान्तर होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.3

स तुर्वणिर्महौं अरेणु पौँस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः ।
येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुधं आभूषु रामयत्रि दामनि ॥

(स:) वह (तुर्वणि:) तेज गति से चलने वाले शत्रुओं को नष्ट करने वाला (महान्) हर प्रकार से महान् (अरेणु) बिना बाधा के (पौँस्ये युद्धों में, संघर्षों में, कठिन समय में (गिरे: भृष्टिः) पर्वत की चोटी (न) जैसे कि (भ्राजते) चमकता है (तुजा) दर्द और कठिनाईयों का नाशक (शवः) बल, शक्ति (येन) जिसके साथ (शुष्णम्) शक्ति का शोषण करने वाला (मायिनम्) नाटकीय (आयसः) लौह शरीर वाला, संरक्षण करने वाला कवच (मदे) आनन्द में (दुधः) दुष्ट शत्रुओं को रोकने वाला (आभूषु) कारागार में (रामयत – नि रामयत) रखता है (नि) रामयत से पूर्व लगाया गया) (दामनि) बन्धन में ।

व्याख्या :-

जब एक इन्द्रियों का नियंत्रक परमात्मा के साथ जुड़कर कार्य करता है तो क्या होता है?
वह, सर्वोच्च शक्तिमान्, शत्रुओं का नाश करने के लिए तेज गति से चलता हुआ, हर प्रकार से महान् है।

परमात्मा की शक्ति और बल के साथ जब एक इन्द्रियों का नियंत्रक युद्धों, संग्रामों और कठिनाईयों के साथ बिना बाधा के लड़ता है तो वह दुःखों और कठिनाईयों का नाशक बन जाता है और पर्वत की चोटी के समान चमकता है। इस दिव्य समर्थन के साथ वह शोषण करने वाली शक्तियों को बांधकर रखने में सक्षम होता है। वह दुष्ट शत्रुओं को बाधित कर देता है, क्योंकि ऐसा इन्द्रियों का नियंत्रक सदैव आनन्द की अवस्था में होता है।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य बल को कौन प्राप्त करता है?

वैदिक विवेक से परिपूर्ण जीवन एक शुद्ध जीवन बन जाता है और परमात्मा की दिव्य शक्तियाँ और बल प्राप्त करता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति को वैदिक विवेकपूर्ण जीवन का अनुसरण करना चाहिए अर्थात् समाज के लिए एक दाता बनें और इन्द्रियों का नियंत्रक बनें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.3

स तुर्वणिर्महौं अरेणु पौँस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः ।
येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुधं आभूषु रामयत्रि दामनि ॥

(स:) वह (तुर्वणि:) तेज गति से चलने वाले शत्रुओं को नष्ट करने वाला (महान्) हर प्रकार से महान् (अरेणु) बिना बाधा के (पौँस्ये युद्धों में, संघर्षों में, कठिन समय में (गिरे: भृष्टिः) पर्वत की चोटी (न) जैसे कि (भ्राजते) चमकता है (तुजा) दर्द और कठिनाईयों का नाशक (शवः) बल, शक्ति (येन) जिसके साथ (शुष्णम्) शक्ति का शोषण करने वाला (मायिनम्) नाटकीय (आयसः) लौह शरीर वाला, संरक्षण करने वाला कवच (मदे) आनन्द में (दुधः) दुष्ट शत्रुओं को रोकने वाला (आभूषु) कारागार में (रामयत – नि रामयत) रखता है (नि) रामयत से पूर्व लगाया गया) (दामनि) बन्धन में ।

व्याख्या :-

जब एक इन्द्रियों का नियंत्रक परमात्मा के साथ जुड़कर कार्य करता है तो क्या होता है?
वह, सर्वोच्च शक्तिमान्, शत्रुओं का नाश करने के लिए तेज गति से चलता हुआ, हर प्रकार से महान् है।

परमात्मा की शक्ति और बल के साथ जब एक इन्द्रियों का नियंत्रक युद्धों, संग्रामों और कठिनाईयों के साथ बिना बाधा के लड़ता है तो वह दुःखों और कठिनाईयों का नाशक बन जाता है और पर्वत की चोटी के समान चमकता है। इस दिव्य समर्थन के साथ वह शोषण करने वाली शक्तियों को बांधकर रखने में सक्षम होता है। वह दुष्ट शत्रुओं को बाधित कर देता है, क्योंकि ऐसा इन्द्रियों का नियंत्रक सदैव आनन्द की अवस्था में होता है।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य बल को कौन प्राप्त करता है?

वैदिक विवेक से परिपूर्ण जीवन एक शुद्ध जीवन बन जाता है और परमात्मा की दिव्य शक्तियाँ और बल प्राप्त करता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति को वैदिक विवेकपूर्ण जीवन का अनुसरण करना चाहिए अर्थात् समाज के लिए एक दाता बनें और इन्द्रियों का नियंत्रक बनें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.4

देवी यदि तविषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः ।
यो धृष्णुना शवसा बाधते तम इयर्ति रेणुं बृहदर्हिष्वणिः ॥

(देवी) दिव्य (यदि) यदि (तविषी) शक्ति (त्वावृधः) आपकी तरफ प्रगति को प्रोत्साहित करने वाला (उत्तरे) संरक्षण के लिए (इन्द्रम्) इन्द्र पुरुष के लिए, इन्द्रियों के नियंत्रक के लिए (सिषक्ति) संयुक्त होता है (उषसम्) सूर्योदय, प्रातःवेला (न) जैसे (सूर्यः) सूर्य प्राप्त होता है (यः) वह (धृष्णुना शवसा) मजबूत शक्ति के साथ (बाधते तमः) अन्धकार, अज्ञानता को रोकता है (इयर्ति) गतिमय करता है (रेणुम्) विनीतकाल (बृहत) महानता के साथ (अर्हरिष्वणिः) पापियों को रुलाता है।

व्याख्या :-

जब एक इन्द्र पुरुष पर दिव्यता प्रारम्भ होती है तो क्या होता है?

यदि भगवान की दिव्य शक्तियाँ इन्द्र पुरुष अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक के साथ जुड़ जाती हैं तो वे उसे तथा अन्य लोगों को परमात्मा की तरफ अग्रसर करती हैं और सबका संरक्षण करती हैं। इन्द्र पुरुष के साथ दिव्य शक्तियाँ ऐसी प्रतीत होती हैं जैसे प्रातःकाल के साथ सूर्य जुड़ता है। दो शक्तियों की यह एकता, सर्वोच्च इन्द्र और इन्द्रियों के नियंत्रक की एकता, इन मजबूत शक्तियों के साथ अन्धकार और अज्ञानता मिटा देती हैं। यह सबको एक महिमाशाली समय की ओर ले चलती है तथा पापियों को रोने के लिए मजबूर कर देती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

दो पवित्र ताकतों के परस्पर जुड़ने का क्या परिणाम होता है?

इस मन्त्र का केन्द्र बिन्दु यह है कि दो पवित्र शक्तियाँ मिलकर अपनी एकता को दिव्यता में बदल देती हैं। यह अनुपातिक सिद्धान्त विवाह के माध्यम से पति और पत्नी के मिलन पर लागू होता है; उन दो व्यापारिक सांझेदारों पर भी लागू होता है जो एक दूसरे के प्रति सच्चाई और ईमानदारी के संकल्प के साथ जुड़कर व्यापारिक उद्देश्य के लिए काम करते हैं; दो या अधिक सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के संगठन पर भी लागू होता है; एक नौकर का अपने मालिक के साथ मिलने पर भी लागू होता है। ऐसी एकता के निम्न परिणाम होते हैं :-

- (क) दो शक्तियों की निकटता पढ़ती है।
- (ख) दोनों में से जो कमजोर होता है उसे संरक्षण मिलता है।
- (ग) अन्धकार, अज्ञानता और बुराईयाँ बाधित होती हैं।
- (घ) दोनों को एक महिमावान् काल की ओर गति मिलती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.4

देवी यदि तविषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः ।
यो धृष्णुना शवसा बाधते तम इयर्ति रेणुं बृहदर्हिष्वणिः ॥

(देवी) दिव्य (यदि) यदि (तविषी) शक्ति (त्वावृधः) आपकी तरफ प्रगति को प्रोत्साहित करने वाला (उत्तर) संरक्षण के लिए (इन्द्रम्) इन्द्र पुरुष के लिए, इन्द्रियों के नियंत्रक के लिए (सिषक्ति) संयुक्त होता है (उषसम्) सूर्योदय, प्रातःवेला (न) जैसे (सूर्यः) सूर्य प्राप्त होता है (यः) वह (धृष्णुना शवसा) मजबूत शक्ति के साथ (बाधते तमः) अन्धकार, अज्ञानता को रोकता है (इयर्ति) गतिमय करता है (रेणुम्) विनीतकाल (बृहत) महानता के साथ (अर्हरिष्वणिः) पापियों को रुलाता है।

व्याख्या :-

जब एक इन्द्र पुरुष पर दिव्यता प्रारम्भ होती है तो क्या होता है?

यदि भगवान की दिव्य शक्तियाँ इन्द्र पुरुष अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक के साथ जुड़ जाती हैं तो वे उसे तथा अन्य लोगों को परमात्मा की तरफ अग्रसर करती हैं और सबका संरक्षण करती हैं। इन्द्र पुरुष के साथ दिव्य शक्तियाँ ऐसी प्रतीत होती हैं जैसे प्रातःकाल के साथ सूर्य जुड़ता है। दो शक्तियों की यह एकता, सर्वोच्च इन्द्र और इन्द्रियों के नियंत्रक की एकता, इन मजबूत शक्तियों के साथ अन्धकार और अज्ञानता मिटा देती हैं। यह सबको एक महिमाशाली समय की ओर ले चलती है तथा पापियों को रोने के लिए मजबूर कर देती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

दो पवित्र ताकतों के परस्पर जुड़ने का क्या परिणाम होता है?

इस मन्त्र का केन्द्र बिन्दु यह है कि दो पवित्र शक्तियाँ मिलकर अपनी एकता को दिव्यता में बदल देती हैं। यह अनुपातिक सिद्धान्त विवाह के माध्यम से पति और पत्नी के मिलन पर लागू होता है; उन दो व्यापारिक सांझेदारों पर भी लागू होता है जो एक दूसरे के प्रति सच्चाई और ईमानदारी के संकल्प के साथ जुड़कर व्यापारिक उद्देश्य के लिए काम करते हैं; दो या अधिक सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के संगठन पर भी लागू होता है; एक नौकर का अपने मालिक के साथ मिलने पर भी लागू होता है। ऐसी एकता के निम्न परिणाम होते हैं :-

- (क) दो शक्तियों की निकटता पढ़ती है।
- (ख) दोनों में से जो कमजोर होता है उसे संरक्षण मिलता है।
- (ग) अन्धकार, अज्ञानता और बुराईयाँ बाधित होती हैं।
- (घ) दोनों को एक महिमावान् काल की ओर गति मिलती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.5

वि यत्तिरो धरुणमच्युतं रजोऽतिष्ठिपो दिव आतासु बर्हणा ।
स्वर्मीळहे यन्मद इन्द्र हर्ष्याहन्वृत्रं निरपामौष्जो अर्णवम् ॥

(वि) विशेष रूप से (यत्) जब (त्तिरः) अन्तर्मुखी, झुकाव वाला (धरुणम) धारण करता है (शक्तियों को) (अच्युतम्) बिना असफलता के, लगातार (रजः) मूल्यवान तरल, मूल शक्ति, सभी ग्रह शरीरों की तरफ (अतिष्ठिपः) स्थापित (दिवः आतासु) सभी दिशाओं में दिव्यता, प्रकाश और ऊर्जा (बर्हणाम् वृद्धि के लिए (स्वर्मीळहे) युद्धों में, कठिन समय में, अन्तरिक्ष में (यत्) जब (मदे) शक्ति के उल्लास में (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक, सूर्य (हर्ष्या) अपार आनन्द के साथ (अहन्) नष्ट करता है (वृत्रम्) मन की वृत्तियाँ, बादल (निर) निश्चित रूप से (अपाम्) ज्ञान, प्रकाश (औष्जो) अनुकूल करता है, मित्र बना लेता है (अर्णवम्) समुद्रों का ।

व्याख्या :-

एक इन्द्र पुरुष किस प्रकार ज्ञान के समुद्र को अपना मित्र बना लेता है?

किस प्रकार सूर्य समुद्र को ठंडा और मित्रवत बनाये रखता है?

आध्यात्मिक व्याख्या :- जब एक इन्द्र पुरुष, इन्द्रियों का नियंत्रक विशेष रूप से अपनी मूल शक्ति, मूल्यवान् तरल पदार्थ को धारण करता है और स्थापित रखता है तो वह लगातार इसका प्रभाव अपने अन्तर्मुखी मन पर महसूस करता है, चारों दिशाओं से दिव्यताओं की वर्षा उसे आगे बढ़ाती हैं। यहाँ तक कि युद्धों और कठिन समय में वह शक्ति से ओत-प्रोत रहता है और अपने मन की वृत्तियों को पूरे आनन्द के साथ मारकर ज्ञान और प्रकाश के समुद्र की कोमलता को अपने जीवन में प्राप्त करता है।

वैज्ञानिक व्याख्या :- जब एक इन्द्र, सूर्य, विशेष रूप से सभी आकाशीय पिण्डों को धारण करता है और अपनी शक्तियाँ उनमें स्थापित करता है तो उसका प्रकाश और उसकी ऊर्जा सभी दिशाओं में फैल जाती हैं। गरम समय में जब वह अपनी शक्ति से ओत-प्रोत होता है तो वह पूरे आनन्द के साथ बादलों का नाश कर देता है और उन्हें समुद्र के पास भेजकर समुद्र को शीतल और सबके लिए मित्रवत बना देता है।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य का विज्ञान किस प्रकार आध्यात्मिकता के विज्ञान से सम्बन्धित है?

सूर्य का विज्ञान सभी जीव तत्त्वों के कल्याण के लिए, समुद्र को शीतल रखने के लिए और समुद्र में तरंगे उत्पन्न करने के लिए बादलों को नष्ट करता है। यह अनुपातिक सिद्धान्त इन्द्र पुरुष के जीवन में भी समान रूप से दिखाई देता है जो अपने व्यक्तिगत बादलों अर्थात् मन की वृत्तियों को नष्ट करता है जिससे सबका कल्याण होता है। वह सभी वृत्तियों को ज्ञान के समुद्र में मिलाकर उनका अन्त कर देता है। इस प्रकार ज्ञान का समुद्र कोमल और उसके लिए मित्रवत बन जाता है। वह अनुभूति के बाद प्राप्त अपने सर्वोच्च ज्ञान को तीव्र करता है और उसे ऊपर उठाता है जिससे उस सर्वोच्च ज्ञान की तरंगे उत्पन्न होकर सबका कल्याण करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.5

वि यत्तिरो धरुणमच्युतं रजोऽतिष्ठिपो दिव आतासु बर्हणा ।
स्वर्मीळहे यन्मद इन्द्र हर्ष्याहन्वृत्रं निरपामौष्जो अर्णवम् ॥

(वि) विशेष रूप से (यत्) जब (त्तिरः) अन्तर्मुखी, झुकाव वाला (धरुणम) धारण करता है (शक्तियों को) (अच्युतम्) बिना असफलता के, लगातार (रजः) मूल्यवान तरल, मूल शक्ति, सभी ग्रह शरीरों की तरफ (अतिष्ठिपः) स्थापित (दिवः आतासु) सभी दिशाओं में दिव्यता, प्रकाश और ऊर्जा (बर्हणाम् वृद्धि के लिए (स्वर्मीळहे) युद्धों में, कठिन समय में, अन्तरिक्ष में (यत्) जब (मदे) शक्ति के उल्लास में (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक, सूर्य (हर्ष्या) अपार आनन्द के साथ (अहन्) नष्ट करता है (वृत्रम्) मन की वृत्तियाँ, बादल (निर) निश्चित रूप से (अपाम्) ज्ञान, प्रकाश (औष्जो) अनुकूल करता है, मित्र बना लेता है (अर्णवम्) समुद्रों का ।

व्याख्या :-

एक इन्द्र पुरुष किस प्रकार ज्ञान के समुद्र को अपना मित्र बना लेता है?

किस प्रकार सूर्य समुद्र को ठंडा और मित्रवत बनाये रखता है?

आध्यात्मिक व्याख्या :- जब एक इन्द्र पुरुष, इन्द्रियों का नियंत्रक विशेष रूप से अपनी मूल शक्ति, मूल्यवान् तरल पदार्थ को धारण करता है और स्थापित रखता है तो वह लगातार इसका प्रभाव अपने अन्तर्मुखी मन पर महसूस करता है, चारों दिशाओं से दिव्यताओं की वर्षा उसे आगे बढ़ाती हैं। यहाँ तक कि युद्धों और कठिन समय में वह शक्ति से ओत-प्रोत रहता है और अपने मन की वृत्तियों को पूरे आनन्द के साथ मारकर ज्ञान और प्रकाश के समुद्र की कोमलता को अपने जीवन में प्राप्त करता है।

वैज्ञानिक व्याख्या :- जब एक इन्द्र, सूर्य, विशेष रूप से सभी आकाशीय पिण्डों को धारण करता है और अपनी शक्तियाँ उनमें स्थापित करता है तो उसका प्रकाश और उसकी ऊर्जा सभी दिशाओं में फैल जाती हैं। गरम समय में जब वह अपनी शक्ति से ओत-प्रोत होता है तो वह पूरे आनन्द के साथ बादलों का नाश कर देता है और उन्हें समुद्र के पास भेजकर समुद्र को शीतल और सबके लिए मित्रवत बना देता है।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य का विज्ञान किस प्रकार आध्यात्मिकता के विज्ञान से सम्बन्धित है?

सूर्य का विज्ञान सभी जीव तत्त्वों के कल्याण के लिए, समुद्र को शीतल रखने के लिए और समुद्र में तरंगे उत्पन्न करने के लिए बादलों को नष्ट करता है। यह अनुपातिक सिद्धान्त इन्द्र पुरुष के जीवन में भी समान रूप से दिखाई देता है जो अपने व्यक्तिगत बादलों अर्थात् मन की वृत्तियों को नष्ट करता है जिससे सबका कल्याण होता है। वह सभी वृत्तियों को ज्ञान के समुद्र में मिलाकर उनका अन्त कर देता है। इस प्रकार ज्ञान का समुद्र कोमल और उसके लिए मित्रवत बन जाता है। वह अनुभूति के बाद प्राप्त अपने सर्वोच्च ज्ञान को तीव्र करता है और उसे ऊपर उठाता है जिससे उस सर्वोच्च ज्ञान की तरंगे उत्पन्न होकर सबका कल्याण करें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.6

त्वं दिवो धरुणं धिष ओजसा पृथिव्या इन्द्र सदनेषु माहिनः ।
त्वं सुतस्य मदे अरिणा अपो वि वृत्रस्य समया पाष्या रुजः ॥

(त्वम्) आप (इन्द्र) (दिवः) दिव्य लक्षण (धरुणाम्) मूलाधार (धिषे) धारण करता है (ओजसा) आपकी शक्ति के साथ (पृथिव्या) शरीर, भूमि (इन्द्र) सूर्य, इन्द्रियों का नियंत्रक (सदनेषु) इन कोशों में (माहिनः) सम्मानित महानता का (त्वम्) आप (सुतस्य) इन उत्पन्न हुओं का (मदे) आनन्द में (अरिणाः) प्रसन्नता प्राप्त करता है (अपः) जल (वि) अरुजः से पूर्व लगाकर) (वृत्रस्य) वृत्तियों की, मेघों की (समया) समय पर, परमात्मा से निकटता के साथ (पाष्या) आवरण (अरुजः – वि अरुजः) नष्ट करता है, समाप्त करता है।

व्याख्या :-

इन्द्रियों के नियंत्रक के द्वारा कौन से लक्षण प्राप्त किये जाते हैं?

इन्द्र, इन्द्रियों के नियंत्रक! आप अपने कोष में सम्मानजनक महानता जैसे दिव्य लक्षण धारण करते हो जो सभी दिव्यताओं का आधार हैं। इन्हीं शक्तियों के साथ आप अपने शरीर को धारण करते हो। ऐसे उत्पन्न लक्षणों के साथ आनन्दपूर्ण अवस्था में आपको जल की प्रसन्नता, इसकी शीतलता और गतिविधि प्राप्त होती है। आप परमात्मा के साथ अपनी निकटता के कारण अपने मन की वृत्तियों के आवरण को भी समय पर नष्ट कर देते हों।

यह अनुपातिक सिद्धान्त सूर्य पर भी लागू होता है जो पृथ्वी को धारण करता है। सूर्य और जल के रासायनिक तत्त्व समान हैं – हाईड्रोजन तथा ऑक्सीजन। दोनों ही ऊर्जा तथा गतिविधि के स्रोत हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक इन्द्र पुरुष कैसे बनें?

जब एक व्यक्ति इन्द्र बनता है तो उसमें दिव्यताएं बढ़नी प्रारम्भ हो जाती हैं।

सूर्य इन्द्र है, सभी दिव्यताओं का स्रोत। सूर्य इस सृष्टि की प्रथम रचना है। शेष सारी सृष्टि उसके बाद ही अस्तित्व में आई और सूर्य के द्वारा ही पालित–पोषित होती है।

अपने जीवन में हम संकल्पशील, दृढ़ मस्तिष्क के साथ अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखकर और निर्धारित इच्छाओं का त्याग करके इन्द्र बन सकते हैं। इच्छाएँ परमात्मा की अनुभूति के लिए इस शरीर को बनाये रखने और इसका भरण–पोषण करने के लिए होनी चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.56.6

त्वं दिवो धरुणं धिष ओजसा पृथिव्या इन्द्र सदनेषु माहिनः ।
त्वं सुतस्य मदे अरिणा अपो वि वृत्रस्य समया पाष्या रुजः ॥

(त्वम्) आप (इन्द्र) (दिवः) दिव्य लक्षण (धरुणाम्) मूलाधार (धिषे) धारण करता है (ओजसा) आपकी शक्ति के साथ (पृथिव्या) शरीर, भूमि (इन्द्र) सूर्य, इन्द्रियों का नियंत्रक (सदनेषु) इन कोशों में (माहिनः) सम्मानित महानता का (त्वम्) आप (सुतस्य) इन उत्पन्न हुओं का (मदे) आनन्द में (अरिणाः) प्रसन्नता प्राप्त करता है (अपः) जल (वि) अरुजः से पूर्व लगाकर) (वृत्रस्य) वृत्तियों की, मेघों की (समया) समय पर, परमात्मा से निकटता के साथ (पाष्या) आवरण (अरुजः – वि अरुजः) नष्ट करता है, समाप्त करता है।

व्याख्या :-

इन्द्रियों के नियंत्रक के द्वारा कौन से लक्षण प्राप्त किये जाते हैं?

इन्द्र, इन्द्रियों के नियंत्रक! आप अपने कोष में सम्मानजनक महानता जैसे दिव्य लक्षण धारण करते हो जो सभी दिव्यताओं का आधार हैं। इन्हीं शक्तियों के साथ आप अपने शरीर को धारण करते हो। ऐसे उत्पन्न लक्षणों के साथ आनन्दपूर्ण अवस्था में आपको जल की प्रसन्नता, इसकी शीतलता और गतिविधि प्राप्त होती है। आप परमात्मा के साथ अपनी निकटता के कारण अपने मन की वृत्तियों के आवरण को भी समय पर नष्ट कर देते हों।

यह अनुपातिक सिद्धान्त सूर्य पर भी लागू होता है जो पृथ्वी को धारण करता है। सूर्य और जल के रासायनिक तत्त्व समान हैं – हाईड्रोजन तथा ऑक्सीजन। दोनों ही ऊर्जा तथा गतिविधि के स्रोत हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक इन्द्र पुरुष कैसे बनें?

जब एक व्यक्ति इन्द्र बनता है तो उसमें दिव्यताएं बढ़नी प्रारम्भ हो जाती हैं।

सूर्य इन्द्र है, सभी दिव्यताओं का स्रोत। सूर्य इस सृष्टि की प्रथम रचना है। शेष सारी सृष्टि उसके बाद ही अस्तित्व में आई और सूर्य के द्वारा ही पालित–पोषित होती है।

अपने जीवन में हम संकल्पशील, दृढ़ मस्तिष्क के साथ अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखकर और निर्धारित इच्छाओं का त्याग करके इन्द्र बन सकते हैं। इच्छाएँ परमात्मा की अनुभूति के लिए इस शरीर को बनाये रखने और इसका भरण–पोषण करने के लिए होनी चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.1

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे ।
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम् ॥

(प्र – मतिम् से पूर्व लगाकर) (मंहिष्ठाय) महान् दानी, दाता (बृहते) शुभगुणों तथा ज्ञान में उच्च (बृहद्रये) सम्पदा में उच्च (सत्यशुष्माय) सत्य की शक्ति के लिए (तवसे) शक्ति में उच्च (मतिम् – प्र मतिम्) अपार सम्मान, स्तुति (भरे) धारण करना (अपाम) जलों का (इव) जैसे कि (प्रवणे) निम्न स्थलों की ओर (यस्य) जिसका (दुर्धरम्) बुराईयों और धूर्तताओं को न सहने वाला (राधः) सम्पदा (विश्वायु) पूर्ण जीवन (शवसे) शक्ति के लिए (अपावृतम्) खुला हुआ ।

व्याख्या :-

हम परमात्मा का सम्मान और स्तुति क्यों करते हैं?

हम उस महान् दाता को अत्यन्त सम्मान और स्तुति के साथ धारण करते हैं जो शुभ गुणों और ज्ञान में उच्च है; सत्य की शक्ति में उच्च है और सभी शक्तियों में उच्च है। उसकी शक्तियाँ बुरे और धूर्त लोगों के लिए असहनीय हैं जैसे जल को निम्न स्थलों की ओर जाने से कोई रोक नहीं सकता। उसकी सम्पदा और शक्तियाँ सबके लिए सारा जीवन खुली रहती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक पूर्ण जीवन अर्थात् स्वरथ और लम्बा जीवन कैसे प्राप्त करें?

हम परमात्मा के खजाने से जो कुछ भी प्राप्त करते हैं उसका प्रयोग परमात्मा के लक्षणों की तरंगों के अनुसार ही होना चाहिए :-

(1) एक महान् दाता बनों, (2) शुभ गुणों और ज्ञान में उच्च बनों, (3) सम्पदा में उच्च बनों, (4) सत्य में उच्च बनों, (5) शक्ति में उच्च बनों, (6) कभी भी बुराईयों और धूर्तताओं को न तो सहन करो और न उनका समर्थन करो।

यदि हम इन लक्षणों को धार्मिक तरीके से धारण करते हैं तो हमें समस्त महान् गतिविधियों के लिए पूर्ण आयु अर्थात् स्वरथ और लम्बा जीवन में मिलेगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.1

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे ।
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम् ॥

(प्र – मतिम् से पूर्व लगाकर) (मंहिष्ठाय) महान् दानी, दाता (बृहते) शुभगुणों तथा ज्ञान में उच्च (बृहद्रये) सम्पदा में उच्च (सत्यशुष्माय) सत्य की शक्ति के लिए (तवसे) शक्ति में उच्च (मतिम् – प्र मतिम्) अपार सम्मान, स्तुति (भरे) धारण करना (अपाम) जलों का (इव) जैसे कि (प्रवणे) निम्न स्थलों की ओर (यस्य) जिसका (दुर्धरम्) बुराईयों और धूर्तताओं को न सहने वाला (राधः) सम्पदा (विश्वायु) पूर्ण जीवन (शवसे) शक्ति के लिए (अपावृतम्) खुला हुआ ।

व्याख्या :-

हम परमात्मा का सम्मान और स्तुति क्यों करते हैं?

हम उस महान् दाता को अत्यन्त सम्मान और स्तुति के साथ धारण करते हैं जो शुभ गुणों और ज्ञान में उच्च है; सत्य की शक्ति में उच्च है और सभी शक्तियों में उच्च है। उसकी शक्तियाँ बुरे और धूर्त लोगों के लिए असहनीय हैं जैसे जल को निम्न स्थलों की ओर जाने से कोई रोक नहीं सकता। उसकी सम्पदा और शक्तियाँ सबके लिए सारा जीवन खुली रहती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक पूर्ण जीवन अर्थात् स्वरथ और लम्बा जीवन कैसे प्राप्त करें?

हम परमात्मा के खजाने से जो कुछ भी प्राप्त करते हैं उसका प्रयोग परमात्मा के लक्षणों की तरंगों के अनुसार ही होना चाहिए :-

(1) एक महान् दाता बनों, (2) शुभ गुणों और ज्ञान में उच्च बनों, (3) सम्पदा में उच्च बनों, (4) सत्य में उच्च बनों, (5) शक्ति में उच्च बनों, (6) कभी भी बुराईयों और धूर्तताओं को न तो सहन करो और न उनका समर्थन करो।

यदि हम इन लक्षणों को धार्मिक तरीके से धारण करते हैं तो हमें समस्त महान् गतिविधियों के लिए पूर्ण आयु अर्थात् स्वरथ और लम्बा जीवन में मिलेगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.2

अथ ते विश्वमनु हासदिष्ट्य आपो निम्नेव सवना हविष्मतः ।
यत्पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः शनथिता हिरण्ययः ॥

(अध) अतः, उसके बाद (ते) आपका (विश्वम) विश्व, सब (अनु) मित्रवत, अनुकूल बनना (ह) निश्चित रूप से (असत) उपभोक्तावाद से ऊपर उठे व्यक्ति के लिए (इष्ट्य) इच्छित लक्ष्य के लिए, परमात्मा की अनुभूति के लिए (आपः) जल (निम्न) निम्न स्थलों के लिए (इव) जैसे कि (सवना) यज्ञ के लिए गौरवशाली सम्पदा (हविष्मतः) उत्तम आहुतिदाता का (यत) जब (पर्वते) पर्वतों पर, बादलों पर (न) नहीं (समशीत) निद्रा (हर्यतः) प्रगतिशील व्यक्ति (इन्द्रस्य) इन्द्र का (वज्रः) वज्र (शनथिता) शत्रुओं पर प्रहार करते हुए और उनका नाश करते हुए (हिरण्ययः) चमकते हुए (शक्ति में तथा दान में) ।

व्याख्या :-

जब कोई व्यक्ति अपनी गौरवशाली सम्पदा का प्रयोग उचित प्रकार से करता है और उपभोक्तावाद से ऊपर उठ जाता है तो क्या होता है?

ऋग्वेद-1.57.1 के अनुसार जब परमात्मा से प्राप्त सम्पदा का उचित प्रयोग करके हमें पूर्ण जीवन मिलता है तो उसके बाद आपका यह संसार निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति के लिए मित्रवत और समर्थनकारी बन जाता है जो उपभोक्तावाद से ऊपर उठ चुका है और ऐसे व्यक्ति को परमात्मा की अनुभूति के इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता मिलती है। यज्ञ कार्यों में आहुतियाँ देने वाले उत्तम दाता की गौरवशाली सम्पदा निम्न स्थलों की ओर जाते हुए जल की तरह होती है जो अनेक उद्देश्यों के लिए लाभदायक होता है। ऐसा प्रगतिशील व्यक्ति अपने मन की वृत्तियों रूपी बादलों पर सोया हुआ नहीं रहता। जिस इन्द्र रूपी व्यक्ति के वज्र उसके शत्रुओं पर प्रहार करते हैं और भावित तथा ज्ञान में चमक उठते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हमारा दिव्य लक्ष्य क्या होना चाहिए?

क्या सर्वोच्च दिव्यता हमारे दिव्य लक्ष्यों में हमारी सहायता करती है?

जो लोग परमात्मा के दिव्य पथ का अनुसरण करते हैं तो सर्वोच्च दिव्यता उनके लिए मित्रवत और समर्थक बन जाती है :-

- (1) जो परमात्मा द्वारा दी गई गौरवशाली सम्पदा का प्रयोग सबके कल्याण के लिए करते हैं तथा
- (2) स्वयं को जीवन की मूल आवश्यकताओं तक सीमित रखते हुए उपभोक्तावाद से ऊपर उठ जाते हैं।

सभी रोगों, अपराधों और विनाश का कारण उपभोक्तावाद ही है। जबकि एक वास्तविक प्रगतिशील व्यक्ति दिव्यता की तरंगों के साथ अपना इच्छित लक्ष्य निर्धारित कर लेता है। उसका लक्ष्य परमात्मा की दिव्यताओं के माध्यम से उच्च दिव्य को प्राप्त करना ही होता है। अतः वह दिव्यताओं की सहायता के बावजूद भी रुकता नहीं। उसके सांसारिक लक्ष्य नहीं होते। वह सृष्टि का केवल मात्र उपभोक्ता नहीं होता किन्तु वह सृष्टिकर्ता का प्रेमी होता है। इसीलिए सभी यज्ञ कार्यों में सृष्टिकर्ता उसकी मदद करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.2

अथ ते विश्वमनु हासदिष्ट्य आपो निम्नेव सवना हविष्मतः ।
यत्पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः शनथिता हिरण्ययः ॥

(अध) अतः, उसके बाद (ते) आपका (विश्वम) विश्व, सब (अनु) मित्रवत, अनुकूल बनना (ह) निश्चित रूप से (असत) उपभोक्तावाद से ऊपर उठे व्यक्ति के लिए (इष्ट्य) इच्छित लक्ष्य के लिए, परमात्मा की अनुभूति के लिए (आपः) जल (निम्न) निम्न स्थलों के लिए (इव) जैसे कि (सवना) यज्ञ के लिए गौरवशाली सम्पदा (हविष्मतः) उत्तम आहुतिदाता का (यत) जब (पर्वते) पर्वतों पर, बादलों पर (न) नहीं (समशीत) निद्रा (हर्यतः) प्रगतिशील व्यक्ति (इन्द्रस्य) इन्द्र का (वज्रः) वज्र (शनथिता) शत्रुओं पर प्रहार करते हुए और उनका नाश करते हुए (हिरण्ययः) चमकते हुए (शक्ति में तथा दान में) ।

व्याख्या :-

जब कोई व्यक्ति अपनी गौरवशाली सम्पदा का प्रयोग उचित प्रकार से करता है और उपभोक्तावाद से ऊपर उठ जाता है तो क्या होता है?

ऋग्वेद-1.57.1 के अनुसार जब परमात्मा से प्राप्त सम्पदा का उचित प्रयोग करके हमें पूर्ण जीवन मिलता है तो उसके बाद आपका यह संसार निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति के लिए मित्रवत और समर्थनकारी बन जाता है जो उपभोक्तावाद से ऊपर उठ चुका है और ऐसे व्यक्ति को परमात्मा की अनुभूति के इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति में सहायता मिलती है। यज्ञ कार्यों में आहुतियाँ देने वाले उत्तम दाता की गौरवशाली सम्पदा निम्न स्थलों की ओर जाते हुए जल की तरह होती है जो अनेक उद्देश्यों के लिए लाभदायक होता है। ऐसा प्रगतिशील व्यक्ति अपने मन की वृत्तियों रूपी बादलों पर सोया हुआ नहीं रहता। जिस इन्द्र रूपी व्यक्ति के वज्र उसके शत्रुओं पर प्रहार करते हैं और भावित तथा ज्ञान में चमक उठते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

हमारा दिव्य लक्ष्य क्या होना चाहिए?

क्या सर्वोच्च दिव्यता हमारे दिव्य लक्ष्यों में हमारी सहायता करती है?

जो लोग परमात्मा के दिव्य पथ का अनुसरण करते हैं तो सर्वोच्च दिव्यता उनके लिए मित्रवत और समर्थक बन जाती है :-

- (1) जो परमात्मा द्वारा दी गई गौरवशाली सम्पदा का प्रयोग सबके कल्याण के लिए करते हैं तथा
- (2) स्वयं को जीवन की मूल आवश्यकताओं तक सीमित रखते हुए उपभोक्तावाद से ऊपर उठ जाते हैं।

सभी रोगों, अपराधों और विनाश का कारण उपभोक्तावाद ही है। जबकि एक वास्तविक प्रगतिशील व्यक्ति दिव्यता की तरंगों के साथ अपना इच्छित लक्ष्य निर्धारित कर लेता है। उसका लक्ष्य परमात्मा की दिव्यताओं के माध्यम से उच्च दिव्य को प्राप्त करना ही होता है। अतः वह दिव्यताओं की सहायता के बावजूद भी रुकता नहीं। उसके सांसारिक लक्ष्य नहीं होते। वह सृष्टि का केवल मात्र उपभोक्ता नहीं होता किन्तु वह सृष्टिकर्ता का प्रेमी होता है। इसीलिए सभी यज्ञ कार्यों में सृष्टिकर्ता उसकी मदद करते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.3

अस्मै भीमाय नमसा समधर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे ।
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे ॥

(अस्मै) यह (भीमाय) शत्रुओं के लिए भयंकर (नमसा) नमन के साथ (सम् आभर से पूर्व लगाकर) (अध्वरे) अहिंसक, त्रुटिरहित यज्ञ (उषः) प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणेण (न) जैसे (शुभ्रे) चमकती हैं, लाभकारी हैं (आभर – समआभर) अच्छे प्रकार से धारण और पोशण करता है (पनीयसे) प्रशंसा के लिए, स्तुति के लिए (यस्य) जिसकी (धाम) चमक, महिमा (श्रवसे) सुनने योग्य, हमारे बल के लिए (नाम) नाम का उच्चारण (इन्द्रियम्) सभी इन्द्रियों को बल देने वाला (ज्योतिः) ज्ञान का प्रकाश (अकारि) उसके समान है (हरितः न) अश्वों की तरह, दिशाएं (अपने लक्ष्य पर पहुंचना) (अयसे) अपने लक्ष्य पर पहुंचने के लिए ।

व्याख्या :-

दिव्य लक्ष्य निर्धारित करने के क्या लाभ हैं?

जिस प्रकार प्रातःकालीन वेला लाभदायक और चमकदार होती है, हमें अपने शत्रुओं की डरावनी ताकत को परमात्मा के प्रति नमन के साथ स्वीकार करना चाहिए । हम इस भावित को अहिंसक और त्रुटिहीन यज्ञ कार्यों के लिए धारण और पोशित कर सकते हैं तथा इसका प्रयोग परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति के लिए कर सकते हैं । जिसकी चमक और महिमा सुनने लायक है और हमारे बल के लिए है, जिसके नाम का उच्चारण हमारे सारे भारीर को तरंगित कर देता है और हमारी सारी इन्द्रियों को ताकत देता है, जिसके ज्ञान का प्रकाश हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने के योग्य बना देता है, जिस प्रकार अश्व तथा भिन्न-भिन्न दिशाएं अपने-अपने लक्ष्यों तक पहुंच जाती हैं ।

जीवन में सार्थकता :-

हमें दिव्य संगति से क्या लाभ होता है?

सदैव परमात्मा की संगति के लिए कामना करनी चाहिए, जो मानव जीवन के लिए सर्वोत्तम लाभकारी है । इसके अतिरिक्त हमें अपने परिवार व समाज में दिव्य लोगों की संगति की कामना करनी चाहिए । हमें लोगों को प्रेरित करना चाहिए कि वे उच्च चेतना के साथ एक दिव्य जीवन जियें ।

1. दिव्यता की कामना और प्रेरणा करने की यह प्रक्रिया मानवता के लिए वास्तविक दिव्य पथ है । जिससे कलियुग के प्रभाव से बचा जा सकता है जो उपभोक्तावाद पर केन्द्रित है ।
2. यह दिव्य पथ बुराईयों और धूतताओं को रोने के लिए मजबूर कर देता है ।
3. यह दिव्य पथ अहिंसक और त्रुटिहीन यज्ञों को सुनिश्चित करता है ।
4. यह पथ हमें रोगों और अपराधों से मुक्त रखता है ।
5. यह पथ तरंगों के माध्यम से हमारे शरीर को बलशाली बनाता है । केवल यही पथ हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचा सकता है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.3

अस्मै भीमाय नमसा समधर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे ।
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे ॥

(अस्मै) यह (भीमाय) शत्रुओं के लिए भयंकर (नमसा) नमन के साथ (सम् आभर से पूर्व लगाकर) (अध्वरे) अहिंसक, त्रुटिरहित यज्ञ (उषः) प्रातःकालीन सूर्य की प्रथम किरणेण (न) जैसे (शुभ्रे) चमकती हैं, लाभकारी हैं (आभर – समआभर) अच्छे प्रकार से धारण और पोशण करता है (पनीयसे) प्रशंसा के लिए, स्तुति के लिए (यस्य) जिसकी (धाम) चमक, महिमा (श्रवसे) सुनने योग्य, हमारे बल के लिए (नाम) नाम का उच्चारण (इन्द्रियम्) सभी इन्द्रियों को बल देने वाला (ज्योतिः) ज्ञान का प्रकाश (अकारि) उसके समान है (हरितः न) अश्वों की तरह, दिशाएं (अपने लक्ष्य पर पहुंचना) (अयसे) अपने लक्ष्य पर पहुंचने के लिए ।

व्याख्या :-

दिव्य लक्ष्य निर्धारित करने के क्या लाभ हैं?

जिस प्रकार प्रातःकालीन वेला लाभदायक और चमकदार होती है, हमें अपने शत्रुओं की डरावनी ताकत को परमात्मा के प्रति नमन के साथ स्वीकार करना चाहिए । हम इस भावित को अहिंसक और त्रुटिहीन यज्ञ कार्यों के लिए धारण और पोशित कर सकते हैं तथा इसका प्रयोग परमात्मा की प्रशंसा और स्तुति के लिए कर सकते हैं । जिसकी चमक और महिमा सुनने लायक है और हमारे बल के लिए है, जिसके नाम का उच्चारण हमारे सारे भारीर को तरंगित कर देता है और हमारी सारी इन्द्रियों को ताकत देता है, जिसके ज्ञान का प्रकाश हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने के योग्य बना देता है, जिस प्रकार अश्व तथा भिन्न-भिन्न दिशाएं अपने-अपने लक्ष्यों तक पहुंच जाती हैं ।

जीवन में सार्थकता :-

हमें दिव्य संगति से क्या लाभ होता है?

सदैव परमात्मा की संगति के लिए कामना करनी चाहिए, जो मानव जीवन के लिए सर्वोत्तम लाभकारी है । इसके अतिरिक्त हमें अपने परिवार व समाज में दिव्य लोगों की संगति की कामना करनी चाहिए । हमें लोगों को प्रेरित करना चाहिए कि वे उच्च चेतना के साथ एक दिव्य जीवन जियें ।

1. दिव्यता की कामना और प्रेरणा करने की यह प्रक्रिया मानवता के लिए वास्तविक दिव्य पथ है । जिससे कलियुग के प्रभाव से बचा जा सकता है जो उपभोक्तावाद पर केन्द्रित है ।
2. यह दिव्य पथ बुराईयों और धूतताओं को रोने के लिए मजबूर कर देता है ।
3. यह दिव्य पथ अहिंसक और त्रुटिहीन यज्ञों को सुनिश्चित करता है ।
4. यह पथ हमें रोगों और अपराधों से मुक्त रखता है ।
5. यह पथ तरंगों के माध्यम से हमारे शरीर को बलशाली बनाता है । केवल यही पथ हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचा सकता है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.4

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो ।
नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः ॥

(इमे) ये (ते) आपके (इन्द्र) परमात्मा (ते) आपके वयम्) हम (पुरुष्टुत) पूर्ण करता है और धारण करता है (ये) जो (त्वारभ्य) आपकी शक्ति की शरण (चरामसि) गतिविधियाँ पूर्ण करते हुए (प्रभूवसो) परमात्मा के वास में, प्रसन्नता से भरपूर (न हि) नहीं है (त्वत् अन्यः) आपके अतिरिक्त कोई (गिर्वणः) यथार्थ में वैदिक वाणियों से प्रशंसित और स्तुति किया गया (गिरः) प्रशंसा में हमारी वाणी (सघत्) प्राप्त करता है (क्षोणीः इव) धरती माता की तरह (प्रति – हर्य से पूर्व लगाकर) (नः) हमारी (हर्य – प्रति हर्य) स्वीकार करता है (तत् वचः) उन वाणियों को।

व्याख्या :-

हमारा परमात्मा के साथ क्या सम्बन्ध है?

परमात्मा हमारे जीवन का मूलाधार किस प्रकार है?

है परमात्मा! हम आपके लोग हैं, जिन्हें आप पूर्ण करते हो और पोषित करते हो; जो आपकी शक्ति की शरण की कामना करते हैं; जो आपके द्वारा उपलब्ध कराये गये आवासों में सभी गतिविधियाँ सम्पन्न करते हैं क्योंकि उन्हें आपकी संगति में पूर्ण प्रसन्नता मिलती है। आपके अतिरिक्त ऐसा कोई नहीं है जिसकी क्रियात्मक रूप से वैदिक वाणियों के साथ प्रशंसा और स्तुति की जा सके। कृपया हमारी प्रार्थना को ग्रहण करके स्वीकार करो।

जीवन में सार्थकता :-

धरती माता की तुलना परमात्मा से क्यों की जाती है?

परमात्मा के साथ हमारा सम्बन्ध अद्वितीय और असमानान्तर है। हमारा प्रत्येक श्वास और परिणामतः हमारा पूरा जीवन केवल उसी पर निर्भर करता है। परमात्मा के अतिरिक्त ऐसी कोई सत्ता या व्यक्तित्व नहीं है जो हमारी पूर्ण प्रशंसाओं का हकदार हो। वह केवल उन्हीं प्रशंसाओं को स्वीकार करता है जो वैदिक विवेक के अभ्यास के साथ जुड़ी होती हैं।

हमारी प्रशंसाओं और प्रार्थनाओं को स्वीकार करने के सम्बन्ध में परमात्मा की तुलना धरती माता से होती है, क्योंकि हमारे जन्म, पालन–पोशण और हमारी सभी गतिविधियों के लिए धरती माता ही परमात्मा की प्रत्यक्ष दिव्य शक्ति है। अन्ततः हमारे शारीर भी केवल धरती माता में ही संयुक्त हो जाते हैं। अतः धरती माता हमारे लिए परमात्मा की सभी शक्तियों का जीवन्त उदाहरण हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.4

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो ।
नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः ॥

(इमे) ये (ते) आपके (इन्द्र) परमात्मा (ते) आपके वयम्) हम (पुरुष्टुत) पूर्ण करता है और धारण करता है (ये) जो (त्वारभ्य) आपकी शक्ति की शरण (चरामसि) गतिविधियाँ पूर्ण करते हुए (प्रभूवसो) परमात्मा के वास में, प्रसन्नता से भरपूर (न हि) नहीं है (त्वत् अन्यः) आपके अतिरिक्त कोई (गिर्वणः) यथार्थ में वैदिक वाणियों से प्रशंसित और स्तुति किया गया (गिरः) प्रशंसा में हमारी वाणी (सघत्) प्राप्त करता है (क्षोणीः इव) धरती माता की तरह (प्रति – हर्य से पूर्व लगाकर) (नः) हमारी (हर्य – प्रति हर्य) स्वीकार करता है (तत् वचः) उन वाणियों को।

व्याख्या :-

हमारा परमात्मा के साथ क्या सम्बन्ध है?

परमात्मा हमारे जीवन का मूलाधार किस प्रकार है?

है परमात्मा! हम आपके लोग हैं, जिन्हें आप पूर्ण करते हो और पोषित करते हो; जो आपकी शक्ति की शरण की कामना करते हैं; जो आपके द्वारा उपलब्ध कराये गये आवासों में सभी गतिविधियाँ सम्पन्न करते हैं क्योंकि उन्हें आपकी संगति में पूर्ण प्रसन्नता मिलती है। आपके अतिरिक्त ऐसा कोई नहीं है जिसकी क्रियात्मक रूप से वैदिक वाणियों के साथ प्रशंसा और स्तुति की जा सके। कृपया हमारी प्रार्थना को ग्रहण करके स्वीकार करो।

जीवन में सार्थकता :-

धरती माता की तुलना परमात्मा से क्यों की जाती है?

परमात्मा के साथ हमारा सम्बन्ध अद्वितीय और असमानान्तर है। हमारा प्रत्येक श्वास और परिणामतः हमारा पूरा जीवन केवल उसी पर निर्भर करता है। परमात्मा के अतिरिक्त ऐसी कोई सत्ता या व्यक्तित्व नहीं है जो हमारी पूर्ण प्रशंसाओं का हकदार हो। वह केवल उन्हीं प्रशंसाओं को स्वीकार करता है जो वैदिक विवेक के अभ्यास के साथ जुड़ी होती हैं।

हमारी प्रशंसाओं और प्रार्थनाओं को स्वीकार करने के सम्बन्ध में परमात्मा की तुलना धरती माता से होती है, क्योंकि हमारे जन्म, पालन–पोशण और हमारी सभी गतिविधियों के लिए धरती माता ही परमात्मा की प्रत्यक्ष दिव्य शक्ति है। अन्ततः हमारे शारीर भी केवल धरती माता में ही संयुक्त हो जाते हैं। अतः धरती माता हमारे लिए परमात्मा की सभी शक्तियों का जीवन्त उदाहरण हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.5

भूरि त इन्द्र वीर्यै तव स्मर्यस्य स्तोतुर्मधवन्काममा पूण।
अनु ते द्यौबृहती वीर्य मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे ॥

(भूरि) बहुत अधिक (ते) आपकी (इन्द्र) सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा (वीर्यम्) बल और शक्ति (तव) आपकी (स्मर्सि) अधीन (अस्य) मैं जो हूँ (स्तोतु) आपके लिए प्रशंसाओं से पूर्व (मधवन्) सम्पदा और शक्ति से परिपूर्ण, परमात्मा (कामम्) इच्छाएँ (आपृण) पूर्ण (अनु – मम से पूर्व लगाकर) (ते) आपकी (द्यौः बृहती) बृहद आकाश तथा अन्तरिक्ष (वीर्यम्) भावित और बल (अनु मम) अनुसरण करना और प्रतिनिधित्व करना (इयम्) यह (च) और (ते) आपकी (पृथिवी) धरती (नेम) नतमस्तक (ओजसे) शक्ति के लिए।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सर्वोच्च शक्ति है?

इन्द्र, सर्वोच्च भावित, परमात्मा! मैं आपकी असीम और अत्यधिक शक्तियों और बलों पर निर्भर हूँ। आप सम्पदाशाली तथा शक्तिशाली हैं। मैं आपके प्रति प्रशंसाओं से पूर्ण हूँ। कृपया मेरी इच्छाओं को पूर्ण करो। विशाल आकाश तथा अन्तरिक्ष आपकी शक्तियों और बलों का अनुसरण करते हैं और उनका प्रतिनिधित्व करते हैं तथा धरती माता भी आपकी शक्तियों के कारण आपके समक्ष नतमस्तक होती है।

जीवन में सार्थकता :-

क्या परमात्मा हमारे सभी सपनों और इच्छाओं को पूर्ण करते हैं?

परमात्मा के पास असीम तथा अत्यधिक शक्तियाँ और बल हैं। सभी जीव तथा निर्जीव पदार्थ उसी पर निर्भर हैं। यहाँ तक कि विशाल आकाश, अन्तरिक्ष और यह विशाल भूमि भी उसी का अनुसरण और प्रतिनिधित्व करती है। इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सर्वोच्च मुखिया होने के कारण परमात्मा निश्चित रूप से सबकी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। परन्तु समस्याएँ तब शुरू होती हैं जब मनुष्य अपने अस्तित्व की मूल आवश्यकताओं की सीमाओं को लांघकर इच्छाओं में अति करने लगता है। वह अपनी असीमित इच्छाओं को पूरा करने के लिए भी योग्य बना दिया जाता है, परन्तु यह उसके स्वयं के लिए कष्टकारी और हानिकारक होता है। जैसे राजा मिडास को यह वरदान मिला कि वह जिस चीज को स्पर्श करेगा वह वस्तु सोने की बन जायेगी, इस प्रकार अन्ततः उसे भूखा मरना पड़ा। असीमित इच्छाओं के पथ पर, मनुष्य यह भूल जाता है कि इच्छाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं, वह स्वयं ही पहले समाप्त हो जाता है। अतः हमें अपनी इच्छाओं पर स्वयं नियंत्रण रखना चाहिए और उन्हें केवल आवश्यकताओं तक सीमित रखना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.5

भूरि त इन्द्र वीर्यै तव स्मर्यस्य स्तोतुर्मघवन्काममा पूण।
अनु ते द्यौबृहती वीर्य मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे ॥

(भूरि) बहुत अधिक (ते) आपकी (इन्द्र) सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा (वीर्यम्) बल और शक्ति (तव) आपकी (स्मर्सि) अधीन (अस्य) मैं जो हूँ (स्तोतु) आपके लिए प्रशंसाओं से पूर्व (मघवन्) सम्पदा और शक्ति से परिपूर्ण, परमात्मा (कामम्) इच्छाएँ (आपृण) पूर्ण (अनु – मम से पूर्व लगाकर) (ते) आपकी (द्यौः बृहती) बृहद आकाश तथा अन्तरिक्ष (वीर्यम्) भावित और बल (अनु मम) अनुसरण करना और प्रतिनिधित्व करना (इयम्) यह (च) और (ते) आपकी (पृथिवी) धरती (नेम) नतमस्तक (ओजसे) शक्ति के लिए।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सर्वोच्च शक्ति है?

इन्द्र, सर्वोच्च भावित, परमात्मा! मैं आपकी असीम और अत्यधिक शक्तियों और बलों पर निर्भर हूँ। आप सम्पदाशाली तथा शक्तिशाली हैं। मैं आपके प्रति प्रशंसाओं से पूर्ण हूँ। कृपया मेरी इच्छाओं को पूर्ण करो। विशाल आकाश तथा अन्तरिक्ष आपकी शक्तियों और बलों का अनुसरण करते हैं और उनका प्रतिनिधित्व करते हैं तथा धरती माता भी आपकी शक्तियों के कारण आपके समक्ष नतमस्तक होती है।

जीवन में सार्थकता :-

क्या परमात्मा हमारे सभी सपनों और इच्छाओं को पूर्ण करते हैं?

परमात्मा के पास असीम तथा अत्यधिक शक्तियाँ और बल हैं। सभी जीव तथा निर्जीव पदार्थ उसी पर निर्भर हैं। यहाँ तक कि विशाल आकाश, अन्तरिक्ष और यह विशाल भूमि भी उसी का अनुसरण और प्रतिनिधित्व करती है। इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सर्वोच्च मुखिया होने के कारण परमात्मा निश्चित रूप से सबकी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। परन्तु समस्याएँ तब शुरू होती हैं जब मनुष्य अपने अस्तित्व की मूल आवश्यकताओं की सीमाओं को लांघकर इच्छाओं में अति करने लगता है। वह अपनी असीमित इच्छाओं को पूरा करने के लिए भी योग्य बना दिया जाता है, परन्तु यह उसके स्वयं के लिए कष्टकारी और हानिकारक होता है। जैसे राजा मिडास को यह वरदान मिला कि वह जिस चीज को स्पर्श करेगा वह वस्तु सोने की बन जायेगी, इस प्रकार अन्ततः उसे भूखा मरना पड़ा। असीमित इच्छाओं के पथ पर, मनुष्य यह भूल जाता है कि इच्छाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं, वह स्वयं ही पहले समाप्त हो जाता है। अतः हमें अपनी इच्छाओं पर स्वयं नियंत्रण रखना चाहिए और उन्हें केवल आवश्यकताओं तक सीमित रखना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.6

त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन्पर्वशश्चकर्तिथ ।
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः ॥

(त्वम्) आप (तम) आपका (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (पर्वतम्) बादल, मन की वृत्तियाँ (महाम्) महान् (उरुम्) व्यापक (वज्रेण) वज्रों के साथ (वज्रिन्) वज्रों का धारण करने वाला (पर्वशश्) अंग—अंग करके (चकर्तिथ्) नश्ट करने के लिए टुकड़ों में काट डालता है (अवासृजः) निर्माण करता है (निवृताः) मुक्त करता है (सर्तवा) बहने के लिए (अपः) जल, ज्ञान (सत्रा) सत्य का रूप (विश्वम्) सर्वत्र व्यापक (दधिषे) धारण करता है (केवलम्) आनन्दपूर्ण (सहः) बल ।

व्याख्या :-

हमें अपने मन की वृत्तियों का नाश क्यों करना चाहिए?

आप, सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा! अपने इन्द्र पुरुषों, इन्द्रियों के नियंत्रणकर्ताओं और वज्रधारकों को प्रेरित करो तथा उन्हें निर्देष दो कि वे अपने मन की विशाल और व्यापक वृत्तियों को एक—एक अंश करके टुकड़ों में काट दें। इस प्रकार अपने एक मुक्त मन का निर्माण करें जो दिव्य ज्ञान का अनुसरण करें क्योंकि यही सर्वोच्च सत्य का रूप है। जिसके अनुसार सर्वव्यापक परमात्मा आनन्ददायक है और सर्वोच्च बल को धारण करता है।

वैज्ञानिक अर्थ :- परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा, सूर्य को शक्ति प्रदान करता है जो ऊर्जा का सर्वोच्च वज्रधारण करता है जिससे विशाल और व्यापक बादलों को टुकड़ों—टुकड़ों में काटकर उसके बाद उन्हें सर्वव्यापक ऊर्जा और बलों के रूप में बनाकर बहा देता है।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य बादलों का नाश क्यों करता है?

गृहस्थ की पर्वतनुमा समस्याओं का नाश कैसे करें?

आकाश में बादलों का नाश आवश्यक होता है जिससे जल को भूमि पर फैलाकर ऊर्जा तथा बल के मुक्त प्रवाह को सुनिश्चित किया जाये जिससे धरती पर समस्त जीवों का पालन—पोषण सम्भव हो सके। सूर्य इस कार्य को करता है।

सृष्टि के सर्वोच्च सत्य तक पहुँचने के लिए और उसकी अनुभूति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन की वृत्तियों का नाश करना चाहिए। एक योगी, एक इन्द्र पुरुष, अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करके ही इस कार्य को करता है और यह अनुभूति प्राप्त कर लेता है कि सर्वव्यापक परमात्मा ही पूर्ण आनन्ददायक है।

सामान्य गृहस्थियों के लिए दर्दी, दुःखों और कठिनाईयों के पहाड़ होते हैं। उन्हें इन्द्र मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी जानी चाहिए अर्थात् इन्द्रियों पर नियंत्रण करना और अपनी आवश्यकताओं से अधिक इच्छाओं को सीमित करना, अपने नाम और रूप के अहंकार को एक तरफ फेंक देना, क्योंकि अहंकार का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं होता, परन्तु यही समस्याओं के पहाड़ खड़ा कर देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.57.6

त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन्पर्वशश्चकर्तिथ ।
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः ॥

(त्वम्) आप (तम) आपका (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (पर्वतम्) बादल, मन की वृत्तियाँ (महाम्) महान् (उरुम्) व्यापक (वज्रेण) वज्रों के साथ (वज्रिन्) वज्रों का धारण करने वाला (पर्वशश्) अंग—अंग करके (चकर्तिथ्) नश्ट करने के लिए टुकड़ों में काट डालता है (अवासृजः) निर्माण करता है (निवृताः) मुक्त करता है (सर्तवा) बहने के लिए (अपः) जल, ज्ञान (सत्रा) सत्य का रूप (विश्वम्) सर्वत्र व्यापक (दधिषे) धारण करता है (केवलम्) आनन्दपूर्ण (सहः) बल ।

व्याख्या :-

हमें अपने मन की वृत्तियों का नाश क्यों करना चाहिए?

आप, सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा! अपने इन्द्र पुरुषों, इन्द्रियों के नियंत्रणकर्ताओं और वज्रधारकों को प्रेरित करो तथा उन्हें निर्देष दो कि वे अपने मन की विशाल और व्यापक वृत्तियों को एक—एक अंश करके टुकड़ों में काट दें। इस प्रकार अपने एक मुक्त मन का निर्माण करें जो दिव्य ज्ञान का अनुसरण करें क्योंकि यही सर्वोच्च सत्य का रूप है। जिसके अनुसार सर्वव्यापक परमात्मा आनन्ददायक है और सर्वोच्च बल को धारण करता है।

वैज्ञानिक अर्थ :- परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा, सूर्य को शक्ति प्रदान करता है जो ऊर्जा का सर्वोच्च वज्रधारण करता है जिससे विशाल और व्यापक बादलों को टुकड़ों—टुकड़ों में काटकर उसके बाद उन्हें सर्वव्यापक ऊर्जा और बलों के रूप में बनाकर बहा देता है।

जीवन में सार्थकता :-

सूर्य बादलों का नाश क्यों करता है?

गृहस्थ की पर्वतनुमा समस्याओं का नाश कैसे करें?

आकाश में बादलों का नाश आवश्यक होता है जिससे जल को भूमि पर फैलाकर ऊर्जा तथा बल के मुक्त प्रवाह को सुनिश्चित किया जाये जिससे धरती पर समस्त जीवों का पालन—पोषण सम्भव हो सके। सूर्य इस कार्य को करता है।

सृष्टि के सर्वोच्च सत्य तक पहुँचने के लिए और उसकी अनुभूति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन की वृत्तियों का नाश करना चाहिए। एक योगी, एक इन्द्र पुरुष, अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करके ही इस कार्य को करता है और यह अनुभूति प्राप्त कर लेता है कि सर्वव्यापक परमात्मा ही पूर्ण आनन्ददायक है।

सामान्य गृहस्थियों के लिए दर्दी, दुःखों और कठिनाईयों के पहाड़ होते हैं। उन्हें इन्द्र मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी जानी चाहिए अर्थात् इन्द्रियों पर नियंत्रण करना और अपनी आवश्यकताओं से अधिक इच्छाओं को सीमित करना, अपने नाम और रूप के अहंकार को एक तरफ फेंक देना, क्योंकि अहंकार का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं होता, परन्तु यही समस्याओं के पहाड़ खड़ा कर देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.1

मानोअस्मिन्मघवन्पृत्स्वंहसिनहितेऽन्तः शवसः परीणशे ।
अक्रन्दयोनद्योऽ रोरुवद्वनाकथा न क्षोणीर्भियसासमारत ॥

(मा) नहीं (न:) हमें (अस्मिन्) यह (मघवन्) समस्त सम्पदाओं का दाता (पृत्सु) युद्धों में, विवादों में (अहसि) पापों में (नहिं) नहीं (ते) आपके (अन्तः) अन्त, सीमित (शवसः) बलों के (परीणशे) प्राप्त किया जा सकता है, लांघा जा सकता है (अक्रन्दयः) उलझे हुए, फंसे हुए, रोते हुए (नद्यः) नदियों को (रोरुवत्) गर्जना (वना) वन (कथा न) क्यों नहीं (क्षोणीः) धरती और उसके बच्चे (भियसा) भय से (समारत) प्राप्त, संगति ।

व्याख्या :-

किसने नदियों और वनों को गर्जने के योग्य बनाया?

क्या कोई व्यक्ति युद्धों, विवादों या पापों में फंसना चाहता है?

हे परमात्मा, समस्त सम्पदा के दाता! कृपया हमें युद्धों, विवादों और पापों में न तो उलझाना, न फंसाना और न ही रोने के लिए छोड़ना। जैसा आपने नदियों और वनों को गर्जन करने के लिए बनाया है क्योंकि वे टेढ़ी—मेढ़ी अवस्था में होते हैं। कोई भी व्यक्ति आपकी शक्तियों की सीमाओं को न तो छू सकता है और न ही उन्हें लांघ सकता है। अतः, डर से ही, यह भूमि और उसके बच्चे आपको प्राप्त या आपकी संगति क्यों नहीं कर सकते ।

जीवन में सार्थकता :-

हमें परमात्मा की संगति क्यों करनी चाहिए?

कोई भी व्यक्ति युद्धों, विवादों और पापों में अपना जीवन बिताना नहीं चाहता। सभी नदियाँ टेढ़े—मेढ़े प्रकार से चलते हुए गर्जना करती हैं। सभी वन बिना योजना के विकसित होने के कारण अकेलेपन में गर्जना करते हैं। हम परमात्मा की विस्तृत, असीमित और दिव्य शक्तियों को देख नहीं सकते जिसने सभी नदियों और वनों को बनाया है। विवादों और पापों का जीवन नदियों और वनों की तरह है। प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे जीवन से डरना चाहिए और इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सर्वोच्च दिव्य शक्ति की संगति करनी चाहिए जिससे युद्धों, विवादों और पापों वाले जीवन से बचा जा सके ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.1

मानोअस्मिन्मघवन्पृत्स्वंहसिनहितेऽन्तः शवसः परीणशे ।
अक्रन्दयोनद्योऽ रोरुवद्वनाकथा न क्षोणीर्भियसासमारत ॥

(मा) नहीं (न:) हमें (अस्मिन्) यह (मघवन्) समस्त सम्पदाओं का दाता (पृत्सु) युद्धों में, विवादों में (अहसि) पापों में (नहिं) नहीं (ते) आपके (अन्तः) अन्त, सीमित (शवसः) बलों के (परीणशे) प्राप्त किया जा सकता है, लांघा जा सकता है (अक्रन्दयः) उलझे हुए, फंसे हुए, रोते हुए (नद्यः) नदियों को (रोरुवत्) गर्जना (वना) वन (कथा न) क्यों नहीं (क्षोणीः) धरती और उसके बच्चे (भियसा) भय से (समारत) प्राप्त, संगति ।

व्याख्या :-

किसने नदियों और वनों को गर्जने के योग्य बनाया?

क्या कोई व्यक्ति युद्धों, विवादों या पापों में फंसना चाहता है?

हे परमात्मा, समस्त सम्पदा के दाता! कृपया हमें युद्धों, विवादों और पापों में न तो उलझाना, न फंसाना और न ही रोने के लिए छोड़ना। जैसा आपने नदियों और वनों को गर्जन करने के लिए बनाया है क्योंकि वे टेढ़ी—मेढ़ी अवस्था में होते हैं। कोई भी व्यक्ति आपकी शक्तियों की सीमाओं को न तो छू सकता है और न ही उन्हें लांघ सकता है। अतः, डर से ही, यह भूमि और उसके बच्चे आपको प्राप्त या आपकी संगति क्यों नहीं कर सकते ।

जीवन में सार्थकता :-

हमें परमात्मा की संगति क्यों करनी चाहिए?

कोई भी व्यक्ति युद्धों, विवादों और पापों में अपना जीवन बिताना नहीं चाहता। सभी नदियाँ टेढ़े—मेढ़े प्रकार से चलते हुए गर्जना करती हैं। सभी वन बिना योजना के विकसित होने के कारण अकेलेपन में गर्जना करते हैं। हम परमात्मा की विस्तृत, असीमित और दिव्य शक्तियों को देख नहीं सकते जिसने सभी नदियों और वनों को बनाया है। विवादों और पापों का जीवन नदियों और वनों की तरह है। प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे जीवन से डरना चाहिए और इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सर्वोच्च दिव्य शक्ति की संगति करनी चाहिए जिससे युद्धों, विवादों और पापों वाले जीवन से बचा जा सके ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.2

अर्चा शक्राय शाकिने शचीवते शृण्वन्तमिन्द्रं महयन्नभिष्टुहि ।
यो धृष्णुना शवसारोदसीउभे वृषा वृषत्वा वृषभो न्यूंजते ॥

(अर्चा) श्रद्धा प्रस्तुत करना (शक्राय) सबसे अधिक बलशाली को (शाकिने) सबको शक्ति देने वाले (शचीवते) सर्वाधिक ज्ञानवान्, सभी ज्ञानों का आधार (शृण्वन्तम्) सबको सुनता है (इन्द्रम्) परमात्मा (महयन्) श्रद्धा प्रस्तुत करते हुए (अभिष्टुहि) उसकी प्रशंसा और महिमा (यः) जो (धृष्णुना) कुचलते हुए (शवसा) शक्ति (रोदसी) पृथ्वी तथा अन्तरिक्ष, शरीर और मन (उभे) दोनों (वृषा) वर्षा करने के लिए शक्तिशाली (वृषत्वा) वर्षा करने की शक्ति के साथ (वृषभः) वर्षा करते हुए (अपने आशीर्वादों की) (न्यूंजते) निरन्तर प्रबन्ध करता है, सुसज्जित करता है।

व्याख्या :-

कौन हमारे ऊपर ज्ञान और शक्तियों की वर्षा करता है?

हम सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा को अपना नमन प्रस्तुत करते हैं जो सबको शक्तिशाली बनाने के लिए सर्वाधिक शक्तिशाली है, सबसे अधिक ज्ञानवान् तथा सभी ज्ञानों का आधार है, जो सबको सुनता है; वर्षा करने के लिए शक्ति सम्पन्न होने के नाते वह अपनी वर्षा की शक्ति के साथ हम पर अपने आशीर्वादों की वर्षा से लगातार हमारा प्रबन्ध और हमें सुसज्जित करता है। वह ऐसी वर्षा भूमि तथा अन्तरिक्ष दोनों पर करता है अर्थात् हमारे शरीर और हमारे मन पर। अतः हमें अपना नमन प्रस्तुत करने के साथ-साथ उसकी प्रशंसा और महिमा कहनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का क्या आधार है?

हमें शारीरिक और मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक सभी शक्तियाँ सर्वोच्च शक्तिशाली और सर्वोच्च ज्ञानवान् परमात्मा द्वारा उपहार में दी गई हैं। उसके द्वारा दी गई शारीरिक शक्तियों के माध्यम से हम रोगमुक्त रहते हैं तथा उसके द्वारा दिये गये ज्ञान के माध्यम से हम कठिनाईयों और तनावों से मुक्त जीवन जीते हैं। हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का मुख्य आधार उस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा के साथ हमारे जुड़ाव का स्तर है। अतः यह आध्यात्मिक मार्ग ही हमारे जीवन के पूर्ण स्वास्थ्य का मुख्य आधार है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.2

अर्चा शक्राय शाकिने शचीवते शृण्वन्तमिन्द्रं महयन्नभिष्टुहि ।
यो धृष्णुना शवसारोदसीउभे वृषा वृषत्वा वृषभो न्यूंजते ॥

(अर्चा) श्रद्धा प्रस्तुत करना (शक्राय) सबसे अधिक बलशाली को (शाकिने) सबको शक्ति देने वाले (शचीवते) सर्वाधिक ज्ञानवान्, सभी ज्ञानों का आधार (शृण्वन्तम्) सबको सुनता है (इन्द्रम्) परमात्मा (महयन्) श्रद्धा प्रस्तुत करते हुए (अभिष्टुहि) उसकी प्रशंसा और महिमा (यः) जो (धृष्णुना) कुचलते हुए (शवसा) शक्ति (रोदसी) पृथ्वी तथा अन्तरिक्ष, शरीर और मन (उभे) दोनों (वृषा) वर्षा करने के लिए शक्तिशाली (वृषत्वा) वर्षा करने की शक्ति के साथ (वृषभः) वर्षा करते हुए (अपने आशीर्वादों की) (न्यूंजते) निरन्तर प्रबन्ध करता है, सुसज्जित करता है।

व्याख्या :-

कौन हमारे ऊपर ज्ञान और शक्तियों की वर्षा करता है?

हम सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा को अपना नमन प्रस्तुत करते हैं जो सबको शक्तिशाली बनाने के लिए सर्वाधिक शक्तिशाली है, सबसे अधिक ज्ञानवान् तथा सभी ज्ञानों का आधार है, जो सबको सुनता है; वर्षा करने के लिए शक्ति सम्पन्न होने के नाते वह अपनी वर्षा की शक्ति के साथ हम पर अपने आशीर्वादों की वर्षा से लगातार हमारा प्रबन्ध और हमें सुसज्जित करता है। वह ऐसी वर्षा भूमि तथा अन्तरिक्ष दोनों पर करता है अर्थात् हमारे शरीर और हमारे मन पर। अतः हमें अपना नमन प्रस्तुत करने के साथ-साथ उसकी प्रशंसा और महिमा कहनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का क्या आधार है?

हमें शारीरिक और मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक सभी शक्तियाँ सर्वोच्च शक्तिशाली और सर्वोच्च ज्ञानवान् परमात्मा द्वारा उपहार में दी गई हैं। उसके द्वारा दी गई शारीरिक शक्तियों के माध्यम से हम रोगमुक्त रहते हैं तथा उसके द्वारा दिये गये ज्ञान के माध्यम से हम कठिनाईयों और तनावों से मुक्त जीवन जीते हैं। हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का मुख्य आधार उस सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा के साथ हमारे जुड़ाव का स्तर है। अतः यह आध्यात्मिक मार्ग ही हमारे जीवन के पूर्ण स्वास्थ्य का मुख्य आधार है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.3

अर्चादिवेबृहते शूष्यं॑ वचः स्वक्षत्रं यस्य धृषतो धृषन्मनः ।
बृहछ्वाअसुरोबर्हणाकृतः पुरोहरिभ्यां वृषभोरथोहि षः ॥

(अर्चा) अर्चना, पूजा (दिवे) प्रकाशवान् के लिए (बृहते) सबसे बड़ा (शूष्यम्) शक्ति, बल (वचः) वाणियाँ (महिमा की) (स्वक्षत्रम्) अपना अर्थात् आत्मा का बल (यस्य) जिस (धृषतः) नाश करने वालों का (शत्रुओं का) (धृषतः) नाशकर्ता (मनः) मन (बृहतः) सबसे बड़े का (बल) (श्रवा:) सुनने वाला (असुरः) प्रकाशित करने वाला (बर्हणा) वृद्धि करने के लिए (कृतः) निर्माता (पुरः) आगे करने वाला (हरिम्याम्) इन्द्रियों की शक्ति के साथ (वृषभः) वर्षा करता है (रथः) रथ, वाहन (हि) निश्चय से (षः) वह ।

व्याख्या :-

सबसे बड़ा सुनने वाला, परमात्मा, किस प्रकार हमें प्रकाशित करता है और हमारा रथ वाहक बनता है?

सबसे बड़े श्रोता और सर्वाधिक प्रकाशवान् से प्रार्थना करो। सर्वोच्च शक्ति की महिमा में व्यक्त की गई वाणियाँ आपकी शक्ति और बल को बढ़ा देंगी। वह व्यक्ति जिसके मन में उसकी आत्मा का पूर्ण बल विद्यमान है वह अपनी नियंत्रक शक्तियों से अपने शत्रुओं को नष्ट कर सकता है। केवल तभी सबसे बड़ा श्रोता, परमात्मा, ऐसे नियंत्रक को प्रकाश उपलब्ध कराता है और उसे सभी कार्यों में आगे बढ़ाता है। परमात्मा ऐसे व्यक्ति को इन्द्रियों की शक्तियाँ देकर तथा उस पर आनन्द की वर्षा करके स्वयं उसका रथ वाहक बन जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने से बड़ों की शक्तियों को कैसे प्राप्त करें?

यदि हम अपनी सभी अहंकारी प्रवृत्तियों और इच्छाओं को एक तरफ करके सर्वोच्च शक्तिशाली से प्रेम करें तो वह निश्चय से हमारा संरक्षण करते हुए और हर प्रकार से हमें आगे बढ़ाते हुए हमारे जीवन का सम्मान करते हैं। हमारे सांसारिक जीवन के सम्बन्धों में भी यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है। आप अपने वृद्धजनों से प्रेम करो और उनका सम्मान करो तो निश्चित रूप से वे अपनी शक्तियों और बलों में आपको हिस्सा देकर आशीर्वाद देंगे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.3

अर्चादिवेबृहते शूष्यं॑ वचः स्वक्षत्रं यस्य धृषतो धृषन्मनः ।
बृहछ्वाअसुरोबर्हणाकृतः पुरोहरिभ्यां वृषभोरथोहि षः ॥

(अर्चा) अर्चना, पूजा (दिवे) प्रकाशवान् के लिए (बृहते) सबसे बड़ा (शूष्यम्) शक्ति, बल (वचः) वाणियाँ (महिमा की) (स्वक्षत्रम्) अपना अर्थात् आत्मा का बल (यस्य) जिस (धृषतः) नाश करने वालों का (शत्रुओं का) (धृषतः) नाशकर्ता (मनः) मन (बृहतः) सबसे बड़े का (बल) (श्रवा:) सुनने वाला (असुरः) प्रकाशित करने वाला (बर्हणा) वृद्धि करने के लिए (कृतः) निर्माता (पुरः) आगे करने वाला (हरिम्याम्) इन्द्रियों की शक्ति के साथ (वृषभः) वर्षा करता है (रथः) रथ, वाहन (हि) निश्चय से (षः) वह।

व्याख्या :-

सबसे बड़ा सुनने वाला, परमात्मा, किस प्रकार हमें प्रकाशित करता है और हमारा रथ वाहक बनता है?

सबसे बड़े श्रोता और सर्वाधिक प्रकाशवान् से प्रार्थना करो। सर्वोच्च शक्ति की महिमा में व्यक्त की गई वाणियाँ आपकी शक्ति और बल को बढ़ा देंगी। वह व्यक्ति जिसके मन में उसकी आत्मा का पूर्ण बल विद्यमान है वह अपनी नियंत्रक शक्तियों से अपने शत्रुओं को नष्ट कर सकता है। केवल तभी सबसे बड़ा श्रोता, परमात्मा, ऐसे नियंत्रक को प्रकाश उपलब्ध कराता है और उसे सभी कार्यों में आगे बढ़ाता है। परमात्मा ऐसे व्यक्ति को इन्द्रियों की शक्तियाँ देकर तथा उस पर आनन्द की वर्षा करके स्वयं उसका रथ वाहक बन जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने से बड़ों की शक्तियों को कैसे प्राप्त करें?

यदि हम अपनी सभी अहंकारी प्रवृत्तियों और इच्छाओं को एक तरफ करके सर्वोच्च शक्तिशाली से प्रेम करें तो वह निश्चय से हमारा संरक्षण करते हुए और हर प्रकार से हमें आगे बढ़ाते हुए हमारे जीवन का सम्मान करते हैं। हमारे सांसारिक जीवन के सम्बन्धों में भी यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है। आप अपने वृद्धजनों से प्रेम करो और उनका सम्मान करो तो निश्चित रूप से वे अपनी शक्तियों और बलों में आपको हिस्सा देकर आशीर्वाद देंगे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.4

त्वंदिवोबृहतः सानुकोपयोऽ व त्मना धृष्टा शम्बरंभिनत् ।
यन्मायिनोव्रन्दिनोमन्दिना धृष्टच्छितांगभस्तिमशनिंपृतन्यसि ॥

(त्वम्) आप (दिवः) प्रकाश के साथ, दिव्यताओं के साथ (बृहतः) बढ़ाते हुए (सानु) बादलों के उच्च स्तर पर (कोपयः) कम्पित करता है (अव) भिनत् से पूर्व लगाकर) (त्मना) धूर्त मन (धृष्टा) नष्ट करने की शक्ति के साथ (शम्बरम्) शांति को आवृत्त करने वाले (बुरे विचारों के साथ) (भिनत् – अव भिनत्) काटता है और अन्त करता है (यत्) जब (मायिनः) मायावी आवरण के साथ (बुरे विचारों के) (व्रन्दिनः) कुटिल मनों का समूह (मन्दिनाः) आनन्द लेते हुए (बुरे मन) (धृष्टत) नष्ट करने की शक्ति (शिताम्) तीव्र (गभस्तिम्) ज्ञान की शक्ति के साथ (अशनिम्) गतिविधियों की शक्ति के साथ (पृतन्यसि) विजय के लिए प्रेरित करता है।

व्याख्या :-

बुराईयों के बादलों के सर्वोच्च भाग को कौन और कैसे कंपित करता है?
अपने सर्वोच्च प्रकाश और अपनी दिव्यताओं के साथ आप बढ़ते हुए बादलों को हिला डालते हो। नष्ट करने की अपनी शक्ति के साथ, आप उन कुटिल मनों को काटकर समाप्त कर देते हो जो अपने बुरे विचारों से शांति को ढंक लेते हैं। जब बुरे विचारों का समूह अपने बुरे विचारों के मायावी आवरण के साथ मजे में जीता है तो आप अपनी प्रबल नाशक शक्ति का प्रयोग करके उन्हें ज्ञान और गतिविधियों की शक्तियों से प्रेरित करते हो।

जीवन में सार्थकता :-

बुरे विचारों को नष्ट करने के लिए हम कैसे प्रेरित हो सकते हैं?
बुरी प्रकृति की वृत्तियाँ सदैव बढ़ती रहती हैं जब तक सर्वोच्च दिव्य शक्ति की सहायता से उन्हें अपने जीवन से समाप्त करने का संकल्प न लिया जाये। इसका अभिप्राय यह है कि इस दिशा में सर्वोच्च दिव्यता के प्रति केवल पूर्ण समर्पण ही सहायक हो सकता है। बुरे विचारों की वृत्तियाँ वास्तव में मन की शांति को ढंक लेती हैं। यह वृत्तियाँ बढ़ती जाती हैं और एक बड़े बादल की तरह समूह गठित कर लेती हैं और उसी तथाकथित आनन्द में जीती हैं। परन्तु सर्वोच्च प्रकाश ऐसे लोगों को जीवन के हर कदम पर दो दिशाओं से प्रेरित करता है :-

- (क) ज्ञान की शक्ति तथा
- (ख) गतिविधियों की शक्ति।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.4

त्वंदिवोबृहतः सानुकोपयोऽ व त्मना धृष्टा शम्बरंभिनत् ।
यन्मायिनोव्रन्दिनोमन्दिना धृष्टच्छितांगभस्तिमशनिंपृतन्यसि ॥

(त्वम्) आप (दिवः) प्रकाश के साथ, दिव्यताओं के साथ (बृहतः) बढ़ाते हुए (सानु) बादलों के उच्च स्तर पर (कोपयः) कम्पित करता है (अव) भिनत् से पूर्व लगाकर) (त्मना) धूर्त मन (धृष्टा) नष्ट करने की शक्ति के साथ (शम्बरम्) शांति को आवृत्त करने वाले (बुरे विचारों के साथ) (भिनत् – अव भिनत्) काटता है और अन्त करता है (यत्) जब (मायिनः) मायावी आवरण के साथ (बुरे विचारों के) (व्रन्दिनः) कुटिल मनों का समूह (मन्दिनाः) आनन्द लेते हुए (बुरे मन) (धृष्टत) नष्ट करने की शक्ति (शिताम्) तीव्र (गभस्तिम्) ज्ञान की शक्ति के साथ (अशनिम्) गतिविधियों की शक्ति के साथ (पृतन्यसि) विजय के लिए प्रेरित करता है।

व्याख्या :-

बुराईयों के बादलों के सर्वोच्च भाग को कौन और कैसे कंपित करता है?
अपने सर्वोच्च प्रकाश और अपनी दिव्यताओं के साथ आप बढ़ते हुए बादलों को हिला डालते हो। नष्ट करने की अपनी शक्ति के साथ, आप उन कुटिल मनों को काटकर समाप्त कर देते हो जो अपने बुरे विचारों से शांति को ढंक लेते हैं। जब बुरे विचारों का समूह अपने बुरे विचारों के मायावी आवरण के साथ मजे में जीता है तो आप अपनी प्रबल नाशक शक्ति का प्रयोग करके उन्हें ज्ञान और गतिविधियों की शक्तियों से प्रेरित करते हो।

जीवन में सार्थकता :-

बुरे विचारों को नष्ट करने के लिए हम कैसे प्रेरित हो सकते हैं?
बुरी प्रकृति की वृत्तियाँ सदैव बढ़ती रहती हैं जब तक सर्वोच्च दिव्य शक्ति की सहायता से उन्हें अपने जीवन से समाप्त करने का संकल्प न लिया जाये। इसका अभिप्राय यह है कि इस दिशा में सर्वोच्च दिव्यता के प्रति केवल पूर्ण समर्पण ही सहायक हो सकता है। बुरे विचारों की वृत्तियाँ वास्तव में मन की शांति को ढंक लेती हैं। यह वृत्तियाँ बढ़ती जाती हैं और एक बड़े बादल की तरह समूह गठित कर लेती हैं और उसी तथाकथित आनन्द में जीती हैं। परन्तु सर्वोच्च प्रकाश ऐसे लोगों को जीवन के हर कदम पर दो दिशाओं से प्रेरित करता है :-

- (क) ज्ञान की शक्ति तथा
- (ख) गतिविधियों की शक्ति।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.5

नि यद् वृणक्षि श्वसनस्यमूर्धनि शुष्णास्य चिद् ग्रन्दिनोरोरुवद्वना ।
प्राचीनेनमनसाबहृणावता यदद्याचित्कृणवः कर्स्त्वापरि ॥

(नि – वृणक्षि से पूर्व लगाकर) (यत्) जब (वृणक्षि – नि वृणक्षि) निरन्तर हमला करता है, पृथक करता है (श्वसनस्य) श्वास का (मूर्धनि) मन (शुष्णास्य) नाश करने वाले के, शोषण करने वाले के (चित्) भी, जैसे (ग्रन्दिनः) बुरे विचारों का समूह (रोरुवत्) गर्जना (वना) वन (प्राचीनेन) प्राचीन, निरन्तर (मनसा) मन के साथ, विज्ञान के साथ (बहृणावता) बहुआयामी बुद्धि के साथ (यत्) जब (अद्य चित्) आज भी (कृणवः) करता है (कः) कौन है (त्वा) आपका (परि) दूर, ऊपर।

व्याख्या :-

क्या कोई व्यक्ति परमात्मा से दूर रह सकता है?

सभी जीवों के ऊपर एक संरक्षण छाते की तरह कौन है?

जब आप (परमात्मा) बुरे विचारों पर लगातार हमला करते हो और उनकी श्वास रोकते हो जो मन का नाश करते हैं और बुरे विचारों के बो समूह जो जंगल में गर्जना करते हैं। बहुआयामी बुद्धियों के साथ, आप आज भी ऐसा ही करते हो। जैसे आप मन के साथ, विज्ञान के साथ लगातार प्राचीन समय से करते आ रहे हो, आपसे दूर कौन रह सकता है।

इसका स्वाभाविक उत्तर है कोई भी व्यक्ति परमात्मा से दूर नहीं है।

जब आप (परमात्मा) बुरे विचारों पर लगातार हमला करते हो और उनकी श्वास रोकते हो जो मन का नाश करते हैं और बुरे विचारों के बो समूह जो जंगल में गर्जना करते हैं। बहुआयामी बुद्धियों के साथ, आप आज भी ऐसा ही करते हो। जैसे आप मन के साथ, विज्ञान के साथ लगातार प्राचीन समय से करते आ रहे हो, आपसे ऊपर कौन हो सकता है।

इसका स्वाभाविक उत्तर है कि सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, इन्द्रियों के सभी नियंत्रकों से भी ऊपर है, एक संरक्षणकर्ता छाते की तरह।

जीवन में सार्थकता :-

कलियुग के शेर कौन हैं?

कलियुग के शेरों का शिकारी कौन है?

बुरे विचार मानव का नाश कर देते हैं। परमात्मा ही केवल एक सर्वोच्च शक्ति है जो बुरे विचारों का नाश कर सकता है। क्रियात्मक रूप से आज के समाज में बुरे विचार ऐसे गर्जना करते हैं जैसे शेर वनों में गर्जते हैं। केवल एक बहादुर शिकारी ही वनों के इन शेरों को मार सकता है, उसी प्रकार परमात्मा और उसके बहादुर भक्त जो इन्द्रियों पर नियंत्रण करते हैं, कलियुग के इन शेरों के बुरे विचारों का नाश कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति बुरे विचारों से मुक्त जीवन जीना चाहता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति इस जागृति के साथ सर्वोच्च दिव्यता के साथ जीवन जीने के लिए बाध्य है, क्योंकि वह सर्वोच्च दिव्यता ही सबका एकमात्र संरक्षण छाता है और कोई भी उसके बिना नहीं रह सकता।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.5

नि यद् वृणक्षि श्वसनस्यमूर्धनि शुष्णास्य चिद् ग्रन्दिनोरोरुवद्वना ।
प्राचीनेनमनसाबहृणावता यदद्याचित्कृणवः कर्स्त्वापरि ॥

(नि – वृणक्षि से पूर्व लगाकर) (यत्) जब (वृणक्षि – नि वृणक्षि) निरन्तर हमला करता है, पृथक करता है (श्वसनस्य) श्वास का (मूर्धनि) मन (शुष्णास्य) नाश करने वाले के, शोषण करने वाले के (चित्) भी, जैसे (ग्रन्दिनः) बुरे विचारों का समूह (रोरुवत्) गर्जना (वना) वन (प्राचीनेन) प्राचीन, निरन्तर (मनसा) मन के साथ, विज्ञान के साथ (बहृणावता) बहुआयामी बुद्धि के साथ (यत्) जब (अद्य चित्) आज भी (कृणवः) करता है (कः) कौन है (त्वा) आपका (परि) दूर, ऊपर।

व्याख्या :-

क्या कोई व्यक्ति परमात्मा से दूर रह सकता है?

सभी जीवों के ऊपर एक संरक्षण छाते की तरह कौन है?

जब आप (परमात्मा) बुरे विचारों पर लगातार हमला करते हो और उनकी श्वास रोकते हो जो मन का नाश करते हैं और बुरे विचारों के बो समूह जो जंगल में गर्जना करते हैं। बहुआयामी बुद्धियों के साथ, आप आज भी ऐसा ही करते हो। जैसे आप मन के साथ, विज्ञान के साथ लगातार प्राचीन समय से करते आ रहे हो, आपसे दूर कौन रह सकता है।

इसका स्वाभाविक उत्तर है कोई भी व्यक्ति परमात्मा से दूर नहीं है।

जब आप (परमात्मा) बुरे विचारों पर लगातार हमला करते हो और उनकी श्वास रोकते हो जो मन का नाश करते हैं और बुरे विचारों के बो समूह जो जंगल में गर्जना करते हैं। बहुआयामी बुद्धियों के साथ, आप आज भी ऐसा ही करते हो। जैसे आप मन के साथ, विज्ञान के साथ लगातार प्राचीन समय से करते आ रहे हो, आपसे ऊपर कौन हो सकता है।

इसका स्वाभाविक उत्तर है कि सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, इन्द्रियों के सभी नियंत्रकों से भी ऊपर है, एक संरक्षणकर्ता छाते की तरह।

जीवन में सार्थकता :-

कलियुग के शेर कौन हैं?

कलियुग के शेरों का शिकारी कौन है?

बुरे विचार मानव का नाश कर देते हैं। परमात्मा ही केवल एक सर्वोच्च शक्ति है जो बुरे विचारों का नाश कर सकता है। क्रियात्मक रूप से आज के समाज में बुरे विचार ऐसे गर्जना करते हैं जैसे शेर वनों में गर्जते हैं। केवल एक बहादुर शिकारी ही वनों के इन शेरों को मार सकता है, उसी प्रकार परमात्मा और उसके बहादुर भक्त जो इन्द्रियों पर नियंत्रण करते हैं, कलियुग के इन शेरों के बुरे विचारों का नाश कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति बुरे विचारों से मुक्त जीवन जीना चाहता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति इस जागृति के साथ सर्वोच्च दिव्यता के साथ जीवन जीने के लिए बाध्य है, क्योंकि वह सर्वोच्च दिव्यता ही सबका एकमात्र संरक्षण छाता है और कोई भी उसके बिना नहीं रह सकता।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.6

त्वमाविथनर्यतुर्वशं यदुंतवंतुर्वीति॒ वय्यं शतक्रतो॑ ।
त्वंरथमेतशंकृत्ये॒ धनेत्वंपुरोनवतिंदभ्योनव ॥

(त्वम्) आप (आविथ) संरक्षण करते हो (नर्यम्) मानवों का (तुर्वशम्) उत्तम, गति के साथ (यदुम्) प्रयास में लगे हुए (त्वम्) आप (तुर्वीतिम्) बुराईयों और कुटिलताओं का नाश करते हुए (वय्यम्) ज्ञान और गतिविधियों में उत्तम (शतक्रतो) असीमित ज्ञान और असंख्य कार्यों वाले (त्वम्) आप (रथम्) रथ, शरीर (एतशम्) अश्व, कर्नेंद्रियाँ (कृत्ये धने) सम्पदा अर्जित करने के लिए (त्वम्) आपके (पुरः) शहर (नवतिम्) नब्बे (दभ्यः) नाश करते हो (नव) नौ।

व्याख्या :-

परमात्मा किसको संरक्षित करता है?

आप (परमात्मा) असीमित ज्ञान और असंख्य कार्यों को करने वाले, निम्न लोगों की रक्षा करते हैं।

(क) नर्यम् – मानवों का

(ख) तुर्वशम् – उत्तम, गति के साथ कार्य करने वालों का

(ग) यदुम् – प्रयास में लगे हुए लोगों का

(घ) तुर्वीतिम् – बुराईयों और कुटिलताओं का नाश करने वालों का

(ड) वय्यम् – ज्ञान और गतिविधियों में उत्तम लोगों का

(च) रथम् एतशम् कृत्ये धने – सम्पदा कमाने के लिए शरीर के अंगों का प्रयोग करने वालों का।

दूसरी तरफ आप बुराईयों और कुटिलताओं के 99 शहरों और किलों को नष्ट कर देते हो।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा सभी कार्यों और विचारों का फल किस प्रकार देते हैं?

'शतक्रतो' शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है?

परमात्मा के पास असीमित शक्तियाँ और पूर्ण ज्ञान है। वह हमारे सभी कार्यों और विचारों को जानता है। वह हमारे सभी कार्यों और विचारों का फल देने के लिए सक्षम है। हमारे अच्छे कार्यों और विचारों का परिणाम अच्छा होता है, जबकि बुरे का परिणाम बुरा होता है।

यह मन्त्र कर्मफल सिद्धान्त का समर्थन करता है। यह परमात्मा की वज्रशाली शक्ति है जो असंख्य कार्यों का कर्ता है। अतः अपने असीमित ज्ञान के बल पर वह प्रत्येक व्यक्ति के प्रत्येक कार्य को जानता है और यहाँ तक कि मन में एक छोटी सी तरंग की तरह उठने वाले विचार को भी जानता है, वह सभी कार्यों का समुचित फल देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.6

त्वमाविथनर्यतुर्वशं यदुंतवंतुर्वीति॒ वय्यं शतक्रतो॑ ।
त्वंरथमेतशंकृत्ये॒ धनेत्वंपुरोनवतिंदभ्योनव ॥

(त्वम्) आप (आविथ) संरक्षण करते हो (नर्यम्) मानवों का (तुर्वशम्) उत्तम, गति के साथ (यदुम्) प्रयास में लगे हुए (त्वम्) आप (तुर्वीतिम्) बुराईयों और कुटिलताओं का नाश करते हुए (वय्यम्) ज्ञान और गतिविधियों में उत्तम (शतक्रतो) असीमित ज्ञान और असंख्य कार्यों वाले (त्वम्) आप (रथम्) रथ, शरीर (एतशम्) अश्व, कर्नेंद्रियाँ (कृत्ये धने) सम्पदा अर्जित करने के लिए (त्वम्) आपके (पुरः) शहर (नवतिम्) नब्बे (दभ्यः) नाश करते हो (नव) नौ।

व्याख्या :-

परमात्मा किसको संरक्षित करता है?

आप (परमात्मा) असीमित ज्ञान और असंख्य कार्यों को करने वाले, निम्न लोगों की रक्षा करते हैं।

(क) नर्यम् – मानवों का

(ख) तुर्वशम् – उत्तम, गति के साथ कार्य करने वालों का

(ग) यदुम् – प्रयास में लगे हुए लोगों का

(घ) तुर्वीतिम् – बुराईयों और कुटिलताओं का नाश करने वालों का

(ड) वय्यम् – ज्ञान और गतिविधियों में उत्तम लोगों का

(च) रथम् एतशम् कृत्ये धने – सम्पदा कमाने के लिए शरीर के अंगों का प्रयोग करने वालों का।

दूसरी तरफ आप बुराईयों और कुटिलताओं के 99 शहरों और किलों को नष्ट कर देते हो।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा सभी कार्यों और विचारों का फल किस प्रकार देते हैं?

'शतक्रतो' शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है?

परमात्मा के पास असीमित शक्तियाँ और पूर्ण ज्ञान है। वह हमारे सभी कार्यों और विचारों को जानता है। वह हमारे सभी कार्यों और विचारों का फल देने के लिए सक्षम है। हमारे अच्छे कार्यों और विचारों का परिणाम अच्छा होता है, जबकि बुरे का परिणाम बुरा होता है।

यह मन्त्र कर्मफल सिद्धान्त का समर्थन करता है। यह परमात्मा की वज्रशाली शक्ति है जो असंख्य कार्यों का कर्ता है। अतः अपने असीमित ज्ञान के बल पर वह प्रत्येक व्यक्ति के प्रत्येक कार्य को जानता है और यहाँ तक कि मन में एक छोटी सी तरंग की तरह उठने वाले विचार को भी जानता है, वह सभी कार्यों का समुचित फल देता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.7

स घाराजासत्पतिः शूशुव्ज्जनोरातहव्यः प्रति यः शासमिन्चति ।
उकथावा योअभिगृणातिराधसादानुरस्माउपरापिन्वतेदिवः ॥

(स) वह (घा) निश्चय से (राजा) जीवन का नियंत्रक, न्यायकारी बुद्धि से प्रकाशवान् (सत्पतिः) सत्य का संरक्षक (शूशुवत) स्वयं को बढ़ाने में सक्षम (जनः) मनुष्य (रातहव्यः) आहुतियों का दाता (प्रति) शासम से पूर्व लगाकर) (यः) जो (शासम) प्रति शासम परमात्मा का शासन तथा आदेश (इन्वति) व्याप्त, अनुपालन (उकथा) दिव्य निर्देश (वा) और (यः) जो (अभिगृणाति) सबके लिए उपदेश देता है (राधसा) प्राप्त करने के उद्देश्य के साथ (दानुः) दाता (सभी फलों का) (अस्मा) उसको (इन्द्रियों के नियंत्रक को) (उपरा) ऊपर, दिव्य (पिन्वते) पूर्ण करता है (दिवः) दिव्य ज्ञान ।

व्याख्या :-

एक दिव्य राजा के क्या लक्षण हैं?

वह निश्चित रूप से राजा है, जीवन का नियामक है, न्यायकारी बुद्धि से प्रकाशित है, जो है :-

(क) सत्पतिः – सत्य का संरक्षक

(ख) शूशुवत् जनः – स्वयं को बढ़ाने में सक्षम व्यक्ति

(ग) रातहव्यः – आहुतियों का दाता

(घ) प्रति शासम् इन्वति – व्यापक रूप से परमात्मा के शासन तथा आदेशों का पालन करने वाला,

(ङ) उकथा अभिगृणाति राधसा – लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से सबको दिव्य निर्देशों का उपदेश देता है।

सभी फलों का दाता अर्थात् परमात्मा ऐसे लोगों को उच्च दिव्य ज्ञान देता है – दानुः अस्मा उपरा पिन्वते दिवः ।

जीवन में सार्थकता :-

आधुनिक युग में कोई मुखिया एक दिव्य मुखिया कैसे बन सकता है?

एक सच्चा राजा वह नहीं है जो जबरदस्ती लोगों के ऊपर राजा की तरह थोपा गया है या जो निर्वाचन प्रक्रिया की कमजोरी का प्रबन्ध करके स्वयं को राजा निर्वाचित करवा लेता है। एक सच्चे राजा में राजा के महत्वपूर्ण लक्षण होने आवश्यक है जो इस मन्त्र में व्यक्त किये गये हैं। जैसे – सच्चाई, लोगों को बढ़ाने की क्षमता, एक अच्छा दानी, परमात्मा के शासन और आदेशों में व्याप्त, दिव्य निर्देशों का उपदेश करने वाला ।

परमात्मा केवल ऐसे ही राजा को उच्च दिव्य ज्ञान से पूर्ण करता है। परिवार, संगठन या राष्ट्र के मुखिया को भी यह सभी लक्षण धारण करने चाहिए जिससे वह स्वयं को एक दिव्य मुखिया स्थापित कर सके ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.7

स घाराजासत्पतिः शूशुव्ज्जनोरातहव्यः प्रति यः शासमिन्चति ।
उकथावा योअभिगृणातिराधसादानुरस्माउपरापिन्वतेदिवः ॥

(स) वह (घा) निश्चय से (राजा) जीवन का नियंत्रक, न्यायकारी बुद्धि से प्रकाशवान् (सत्पतिः) सत्य का संरक्षक (शूशुवत) स्वयं को बढ़ाने में सक्षम (जनः) मनुष्य (रातहव्यः) आहुतियों का दाता (प्रति) शासम से पूर्व लगाकर) (यः) जो (शासम) प्रति शासम परमात्मा का शासन तथा आदेश (इन्वति) व्याप्त, अनुपालन (उकथा) दिव्य निर्देश (वा) और (यः) जो (अभिगृणाति) सबके लिए उपदेश देता है (राधसा) प्राप्त करने के उद्देश्य के साथ (दानुः) दाता (सभी फलों का) (अस्मा) उसको (इन्द्रियों के नियंत्रक को) (उपरा) ऊपर, दिव्य (पिन्वते) पूर्ण करता है (दिवः) दिव्य ज्ञान ।

व्याख्या :-

एक दिव्य राजा के क्या लक्षण हैं?

वह निश्चित रूप से राजा है, जीवन का नियामक है, न्यायकारी बुद्धि से प्रकाशित है, जो है :-

(क) सत्पतिः – सत्य का संरक्षक

(ख) शूशुवत् जनः – स्वयं को बढ़ाने में सक्षम व्यक्ति

(ग) रातहव्यः – आहुतियों का दाता

(घ) प्रति शासम् इन्वति – व्यापक रूप से परमात्मा के शासन तथा आदेशों का पालन करने वाला,

(ङ) उकथा अभिगृणाति राधसा – लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से सबको दिव्य निर्देशों का उपदेश देता है।

सभी फलों का दाता अर्थात् परमात्मा ऐसे लोगों को उच्च दिव्य ज्ञान देता है – दानुः अस्मा उपरा पिन्वते दिवः ।

जीवन में सार्थकता :-

आधुनिक युग में कोई मुखिया एक दिव्य मुखिया कैसे बन सकता है?

एक सच्चा राजा वह नहीं है जो जबरदस्ती लोगों के ऊपर राजा की तरह थोपा गया है या जो निर्वाचन प्रक्रिया की कमजोरी का प्रबन्ध करके स्वयं को राजा निर्वाचित करवा लेता है। एक सच्चे राजा में राजा के महत्वपूर्ण लक्षण होने आवश्यक है जो इस मन्त्र में व्यक्त किये गये हैं। जैसे – सच्चाई, लोगों को बढ़ाने की क्षमता, एक अच्छा दानी, परमात्मा के शासन और आदेशों में व्याप्त, दिव्य निर्देशों का उपदेश करने वाला ।

परमात्मा केवल ऐसे ही राजा को उच्च दिव्य ज्ञान से पूर्ण करता है। परिवार, संगठन या राष्ट्र के मुखिया को भी यह सभी लक्षण धारण करने चाहिए जिससे वह स्वयं को एक दिव्य मुखिया स्थापित कर सके ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.8

असमं क्षत्रमसमामनीषाप्रसोमपाअपसासन्तुनेमे ।
ये त इन्द्रददुषो वर्धयन्तिमहि क्षत्रं स्थविरंवृष्यंच ॥

(असमम्) असमानान्तर (क्षत्रम्) शक्ति, बल (असमा) असमानान्तर (मनीषा) बुद्धि (प्र – सन्तु से पूर्व लगाकर) (सेमण) शुभ गुणों का संरक्षक (अपसा) गतिविधियों के साथ (कल्याण की) (सन्तु – प्र सन्तु) अत्यधिक बड़े हुए (नेमे) ये (ये) वे (ते) आपके लिए (इन्द्र) परमात्मा (ददुषो) समर्पित (वर्धयन्ति) बढ़ाते हैं (महि क्षत्रम्) महान् शक्ति, बल (स्थविरम्) पक्के स्थापित (वृष्यम्) कल्याण की वर्षा (च) और

व्याख्या :-

किसको असमानान्तर शक्तियाँ और बुद्धि प्राप्त होती हैं?

इन्द्र, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! जो आपके प्रति पूर्ण समर्पित हैं उनके पास असमानान्तर शक्तियाँ, बल और बुद्धि होती हैं। शुभ गुणों के ऐसे संरक्षक ऊँचे उठे हुए होते हैं, अपने कल्याण कार्यों से बढ़ते हैं। वे अपनी महान् शक्तियों और बलों में भी बढ़ा दिये जाते हैं और वे लोगों पर कल्याण की वर्षा करने के लिए भी महान् रूप में स्थापित हो जाते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

पूर्ण समर्पण का क्या महत्त्व है?

परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण अपनी शक्तियाँ और बल बढ़ाने का एक मजबूत आधार है। पूर्ण समर्पण का अर्थ है परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पित। यह हमें अहंकाररहित और इच्छारहित बनाने में सहयोग करता है। एक बार जब हम अहंकाररहित हो जाते हैं तो हमारा समर्पण पवित्र हो जाता है और हम उस सर्वोच्च परमात्मा के और अधिक निकट हो जाते हैं।

इसी प्रकार जब हम अपने प्रयासों को अपने माता–पिता के चरण कमलों में समर्पित कर देते हैं तो हमें उनसे और अधिक प्रेम मिलता है। गुरु के प्रति समर्पण से हमें प्रेम से भरपूर अत्यधिक ज्ञान मिलता है। संगठन के उच्चाधिकारियों के प्रति समर्पण से हमें और अधिक शक्तियाँ और विश्वास प्राप्त होता है। राष्ट्र के प्रति समर्पण से हमें महान् देशभक्त और महान् नेता होने का स्तर प्राप्त होता है। अतः समानान्तर परिणाम प्राप्त करने के लिए अपने कार्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो जाओ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.8

असमं क्षत्रमसमामनीषाप्रसोमपाअपसासन्तुनेमे ।
ये त इन्द्रददुषो वर्धयन्तिमहि क्षत्रं स्थविरंवृष्यंच ॥

(असमम्) असमानान्तर (क्षत्रम्) शक्ति, बल (असमा) असमानान्तर (मनीषा) बुद्धि (प्र – सन्तु से पूर्व लगाकर) (सेमण) शुभ गुणों का संरक्षक (अपसा) गतिविधियों के साथ (कल्याण की) (सन्तु – प्र सन्तु) अत्यधिक बड़े हुए (नेमे) ये (ये) वे (ते) आपके लिए (इन्द्र) परमात्मा (ददुषो) समर्पित (वर्धयन्ति) बढ़ाते हैं (महि क्षत्रम्) महान् शक्ति, बल (स्थविरम्) पक्के स्थापित (वृष्यम्) कल्याण की वर्षा (च) और

व्याख्या :-

किसको असमानान्तर शक्तियाँ और बुद्धि प्राप्त होती हैं?

इन्द्र, सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा! जो आपके प्रति पूर्ण समर्पित हैं उनके पास असमानान्तर शक्तियाँ, बल और बुद्धि होती हैं। शुभ गुणों के ऐसे संरक्षक ऊँचे उठे हुए होते हैं, अपने कल्याण कार्यों से बढ़ते हैं। वे अपनी महान् शक्तियों और बलों में भी बढ़ा दिये जाते हैं और वे लोगों पर कल्याण की वर्षा करने के लिए भी महान् रूप में स्थापित हो जाते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

पूर्ण समर्पण का क्या महत्त्व है?

परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण अपनी शक्तियाँ और बल बढ़ाने का एक मजबूत आधार है। पूर्ण समर्पण का अर्थ है परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पित। यह हमें अहंकाररहित और इच्छारहित बनाने में सहयोग करता है। एक बार जब हम अहंकाररहित हो जाते हैं तो हमारा समर्पण पवित्र हो जाता है और हम उस सर्वोच्च परमात्मा के और अधिक निकट हो जाते हैं।

इसी प्रकार जब हम अपने प्रयासों को अपने माता–पिता के चरण कमलों में समर्पित कर देते हैं तो हमें उनसे और अधिक प्रेम मिलता है। गुरु के प्रति समर्पण से हमें प्रेम से भरपूर अत्यधिक ज्ञान मिलता है। संगठन के उच्चाधिकारियों के प्रति समर्पण से हमें और अधिक शक्तियाँ और विश्वास प्राप्त होता है। राष्ट्र के प्रति समर्पण से हमें महान् देशभक्त और महान् नेता होने का स्तर प्राप्त होता है। अतः समानान्तर परिणाम प्राप्त करने के लिए अपने कार्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो जाओ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.9

तुभ्येदेतेबहुलाअद्रिदुग्धाश्चमूषदश्चमसाइन्द्रपानाः।
व्यश्नुहितर्पयाकाममेषामथामनोवसुदेयाय कृष्ण ॥

(तुभ्य) आपके लिए (इत) निश्चय से (एते) ये (बहुला) अधिक मात्रा में (अद्वि दुग्धा) वृक्ष अर्थात् शरीर के लिए पूर्ण शुभ गुण, प्रकृति से प्राप्त दिव्य ज्ञान (चमूषदः) शरीर में बैठने के योग्य (चमसाः) शरीर में पान के योग्य (इन्द्र पानाः) इन्द्र पुरुष के द्वारा संरक्षण प्राप्त करने के लिए, सर्वोच्च इन्द्र की अनुभूति प्राप्त करने के लिए (व्यश्नुहि) शरीर में विशेष रूप से व्याप्त करता है (तर्पया) संतुष्टि करता है (कामम्) इच्छाएं (एषाम्) इनकी (अथा) अतः (मनः) मन को (वसुदेयाय) धन का दाता (कृष्ण) करता है।

व्याख्या :-

शुभ गुण किसके लिए बने होते हैं?

शुभ गुण कहाँ रहते हैं?

ये शुभ गुण हमारी क्या सहायता करते हैं?

हमारी मुख्य इच्छा क्या होनी चाहिए?

पूर्ण शुभ गुण इस वृक्ष के लिए बने हैं अर्थात् शरीर के लिए। शुभ गुण दिव्य ज्ञान की तरह हैं जो प्रकृति से प्राप्त होते हैं। यह निश्चित रूप से बहुत बड़ी संख्या में आपके लिए ही हैं। ये आपके शरीर में रहने के लिए निर्धारित हैं जिससे आपका शरीर इनका उपयोग कर सके।

इन शुभ गुणों की रक्षा केवल एक इन्द्र पुरुष ही कर सकता है और ये शुभ गुण सर्वोच्च इन्द्र को प्राप्त करने और उसकी अनुभूति में आपकी सहायता करते हैं। एक इन्द्र पुरुष को समृच्छा जीवन अपने शरीर में इन शुभ गुणों को व्याप्त करना चाहिए जिससे वह इन शुभ गुणों की अपनी इच्छा को पूर्ण कर सके। अतः एक इन्द्र पुरुष ही अपना मन एक दाता की तरह बना लेता है।

जीवन में सार्थकता :-

एक आध्यात्मिक और श्रेष्ठ सामाजिक जीवन के लिए शुभ गुणों वाला जीवन किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है?

शुभ गुणों का अर्थ है “अस्तित्व में पारंगत”। शुभ गुणों वाला जीवन ही परमात्मा की अनुभूति के आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण आधार है। इसके साथ ही यह एक श्रेष्ठ सामाजिक जीवन और जीवन के सभी क्षेत्रों में स्थायित्व के साथ चहुंमुखी प्रगति के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। केवल मानव जीवन ही शुभ गुणों वाले जीवन के लिए ही बना है। केवल शुभ गुणों वाला जीवन ही मानव पारंगतता की इच्छा कर सकता है और एक सम्मान की खोज कर सकता है तथा अपने अन्दर मूल सर्वोच्च शक्ति परमात्मा की खोज कर सकता है। शुभ गुणों के बिना एक व्यक्ति पाश्विक बुराईयों के साथ जीता रहता है। जैसे — अपनी पसन्द के पीछे भागना और नापसन्द पर हमला करना, शत्रुतापूर्ण सम्बन्धों को विकसित करना। शुभ गुणों के साथ मिश्रित शिक्षा एक पूर्ण मानव जीवन बनाती है जो दिव्य उद्देश्यों के प्रति संवेदनशील होता है। केवल ऐसा जीवन ही यज्ञ का जीवन जी सकता है अर्थात् सबका कल्याण करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.9

तुभ्येदेतेबहुलाअद्रिदुग्धाश्चमूषदश्चमसाइन्द्रपानाः।
व्यश्नुहितर्पयाकाममेषामथामनोवसुदेयाय कृष्ण ॥

(तुभ्य) आपके लिए (इत) निश्चय से (एते) ये (बहुला) अधिक मात्रा में (अद्वि दुग्धा) वृक्ष अर्थात् शरीर के लिए पूर्ण शुभ गुण, प्रकृति से प्राप्त दिव्य ज्ञान (चमूषदः) शरीर में बैठने के योग्य (चमसा:) शरीर में पान के योग्य (इन्द्र पानाः) इन्द्र पुरुष के द्वारा संरक्षण प्राप्त करने के लिए, सर्वोच्च इन्द्र की अनुभूति प्राप्त करने के लिए (व्यश्नुहि) शरीर में विशेष रूप से व्याप्त करता है (तर्पया) संतुष्टि करता है (कामम्) इच्छाएं (एषाम्) इनकी (अथा) अतः (मनः) मन को (वसुदेयाय) धन का दाता (कृष्ण) करता है।

व्याख्या :-

शुभ गुण किसके लिए बने होते हैं?

शुभ गुण कहाँ रहते हैं?

ये शुभ गुण हमारी क्या सहायता करते हैं?

हमारी मुख्य इच्छा क्या होनी चाहिए?

पूर्ण शुभ गुण इस वृक्ष के लिए बने हैं अर्थात् शरीर के लिए। शुभ गुण दिव्य ज्ञान की तरह हैं जो प्रकृति से प्राप्त होते हैं। यह निश्चित रूप से बहुत बड़ी संख्या में आपके लिए ही हैं। ये आपके शरीर में रहने के लिए निर्धारित हैं जिससे आपका शरीर इनका उपयोग कर सके।

इन शुभ गुणों की रक्षा केवल एक इन्द्र पुरुष ही कर सकता है और ये शुभ गुण सर्वोच्च इन्द्र को प्राप्त करने और उसकी अनुभूति में आपकी सहायता करते हैं। एक इन्द्र पुरुष को समृच्छा जीवन अपने शरीर में इन शुभ गुणों को व्याप्त करना चाहिए जिससे वह इन शुभ गुणों की अपनी इच्छा को पूर्ण कर सके। अतः एक इन्द्र पुरुष ही अपना मन एक दाता की तरह बना लेता है।

जीवन में सार्थकता :-

एक आध्यात्मिक और श्रेष्ठ सामाजिक जीवन के लिए शुभ गुणों वाला जीवन किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है?

शुभ गुणों का अर्थ है “अस्तित्व में पारंगत”। शुभ गुणों वाला जीवन ही परमात्मा की अनुभूति के आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण आधार है। इसके साथ ही यह एक श्रेष्ठ सामाजिक जीवन और जीवन के सभी क्षेत्रों में स्थायित्व के साथ चहुंमुखी प्रगति के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। केवल मानव जीवन ही शुभ गुणों वाले जीवन के लिए ही बना है। केवल शुभ गुणों वाला जीवन ही मानव पारंगतता की इच्छा कर सकता है और एक सम्मान की खोज कर सकता है तथा अपने अन्दर मूल सर्वोच्च शक्ति परमात्मा की खोज कर सकता है। शुभ गुणों के बिना एक व्यक्ति पाश्विक बुराईयों के साथ जीता रहता है। जैसे — अपनी पसन्द के पीछे भागना और नापसन्द पर हमला करना, शत्रुतापूर्ण सम्बन्धों को विकसित करना। शुभ गुणों के साथ मिश्रित शिक्षा एक पूर्ण मानव जीवन बनाती है जो दिव्य उद्देश्यों के प्रति संवेदनशील होता है। केवल ऐसा जीवन ही यज्ञ का जीवन जी सकता है अर्थात् सबका कल्याण करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.10

अपामतिष्ठद्वरुणहवरंतमोऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषुपर्वतः ।
अभीमिन्द्रोनद्योवविणाहिताविश्वाअनुष्ठाः प्रवणेषुजिघ्नते ॥

(अपाम) जल के, लोगों के (अतिष्ठत्) स्थापित, रुकता है (धरुण हवरम्) बुराईयों को धारण करने वाला (तमः) अन्धकार (अन्तः) अन्दर (वृत्रस्य) मेघ, मन की वृत्तियाँ (जठरेषु) पेट में (पर्वतः) पक्षियों की तरह आकाश में उड़ते हुए, बिना लक्ष्य के उड़ते हुए (अभि) की तरफ, सामने (ईम) अब निश्चय से (इन्द्र) सर्वोच्च शक्ति, इन्द्रियों का नियंत्रक, सूर्य (नद्य) नदियाँ, जल की तरह बहते हुए (विणा) देखते हैं, अनुभूति प्राप्त करते हैं (हिताः) प्रतिक्षण गति करते हुए (विश्वाः) सब (अनुष्ठाः) स्थापित का अनुसरण करते हुए (प्रवणेषु) विनम्रता के साथ (जिघ्नते) प्रगति करते हैं ।

व्याख्या :-

कौन बादलों को नदियों की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है?

हमारे मन की वृत्तियों का नाश करके कौन हमें दिव्यता की ओर जाने के योग्य बनाता है?

वैज्ञानिक अर्थ :— जल ऊपर जाकर बादलों के पेट में स्थापित होकर रुक जाता है और अन्धकार जैसी बुराई को धारण करते हुए आकाश में उड़ता है। परन्तु जब निश्चित रूप से वे सूर्य के सामने आते हैं तो वे नदियों की तरफ मुख करने के लिए मजबूर हो जाते हैं जो हर क्षण चलती रहती है और सदैव अपनी स्थापित प्रकृति का अनुसरण करती हैं और विनम्रता के साथ आगे बढ़ती हैं।

आध्यात्मिक अर्थ :— लोग मन की वृत्तियों के पेट में स्थापित रहते हैं, बादलों की तरह बिना लक्ष्य के उड़ते रहते हैं और पक्षियों की तरह बुराईयों को धारण करके, विशेष रूप से अज्ञानता रूपी सबसे बड़ी बुराई को धारण करके। अब निश्चित रूप से जब ये बुराईयाँ इन्द्रियों के नियंत्रक के सामने तथा सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के सामने आती हैं तब वे महसूस करते हैं कि प्रत्येक क्षण अपनी स्थापित प्रकृति वाले अस्तित्व का अनुशरण करते हुए वे दिव्यता की ओर बढ़ रहे हैं और विनम्रता के साथ प्रगति करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

मन की वृत्तियों का क्या स्तर है?

मन की वृत्तियाँ अस्तित्वहीन हैं, परन्तु निश्चित रूप से हमें फंसाये रखती हैं। इनका कोई लक्ष्य नहीं है, परन्तु वे हमारी अज्ञानता का कारण हैं। इन वृत्तियों को नष्ट करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बनाना चाहिए, केवल तभी वह सर्वोच्च इन्द्र की अनुभूति प्राप्त कर सकेगा। ऐसा जीवन मानवीय अस्तित्व के प्राकृतिक व्यवहार का अनुसरण करता है अर्थात् विनम्रता पूर्वक सबका कल्याण जैसे — नदियाँ सदैव और प्रतिक्षण करती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.10

अपामतिष्ठद्वरुणहवरंतमोऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषुपर्वतः ।
अभीमिन्द्रोनद्योवविणाहिताविश्वाअनुष्ठाः प्रवणेषुजिघ्नते ॥

(अपाम) जल के, लोगों के (अतिष्ठत्) स्थापित, रुकता है (धरुण हवरम्) बुराईयों को धारण करने वाला (तमः) अन्धकार (अन्तः) अन्दर (वृत्रस्य) मेघ, मन की वृत्तियाँ (जठरेषु) पेट में (पर्वतः) पक्षियों की तरह आकाश में उड़ते हुए, बिना लक्ष्य के उड़ते हुए (अभि) की तरफ, सामने (ईम) अब निश्चय से (इन्द्र) सर्वोच्च शक्ति, इन्द्रियों का नियंत्रक, सूर्य (नद्य) नदियाँ, जल की तरह बहते हुए (विणा) देखते हैं, अनुभूति प्राप्त करते हैं (हिताः) प्रतिक्षण गति करते हुए (विश्वाः) सब (अनुष्ठाः) स्थापित का अनुसरण करते हुए (प्रवणेषु) विनम्रता के साथ (जिघन्ते) प्रगति करते हैं ।

व्याख्या :-

कौन बादलों को नदियों की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है?

हमारे मन की वृत्तियों का नाश करके कौन हमें दिव्यता की ओर जाने के योग्य बनाता है?

वैज्ञानिक अर्थ :— जल ऊपर जाकर बादलों के पेट में स्थापित होकर रुक जाता है और अन्धकार जैसी बुराई को धारण करते हुए आकाश में उड़ता है । परन्तु जब निश्चित रूप से वे सूर्य के सामने आते हैं तो वे नदियों की तरफ मुख करने के लिए मजबूर हो जाते हैं जो हर क्षण चलती रहती है और सदैव अपनी स्थापित प्रकृति का अनुसरण करती हैं और विनम्रता के साथ आगे बढ़ती हैं ।

आध्यात्मिक अर्थ :— लोग मन की वृत्तियों के पेट में स्थापित रहते हैं, बादलों की तरह बिना लक्ष्य के उड़ते रहते हैं और पक्षियों की तरह बुराईयों को धारण करके, विशेष रूप से अज्ञानता रूपी सबसे बड़ी बुराई को धारण करके । अब निश्चित रूप से जब ये बुराईयाँ इन्द्रियों के नियंत्रक के सामने तथा सर्वोच्च शक्ति परमात्मा के सामने आती हैं तब वे महसूस करते हैं कि प्रत्येक क्षण अपनी स्थापित प्रकृति वाले अस्तित्व का अनुशरण करते हुए वे दिव्यता की ओर बढ़ रहे हैं और विनम्रता के साथ प्रगति करते हैं ।

जीवन में सार्थकता :-

मन की वृत्तियों का क्या स्तर है?

मन की वृत्तियाँ अस्तित्वहीन हैं, परन्तु निश्चित रूप से हमें फंसाये रखती हैं । इनका कोई लक्ष्य नहीं है, परन्तु वे हमारी अज्ञानता का कारण हैं । इन वृत्तियों को नष्ट करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बनाना चाहिए, केवल तभी वह सर्वोच्च इन्द्र की अनुभूति प्राप्त कर सकेगा । ऐसा जीवन मानवीय अस्तित्व के प्राकृतिक व्यवहार का अनुसरण करता है अर्थात् विनम्रता पूर्वक सबका कल्याण जैसे — नदियाँ सदैव और प्रतिक्षण करती हैं ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.11

स शेवृधमधि धा द्युम्नमस्मेमहि क्षत्रं जनाषळ्नद्रतव्यम् ।
रक्षा च नोमधोनः पाहिसूरीन्नाये च नः स्वपत्याइषे धा ॥

(स:) वह (शेवृधम) प्रसन्नता देता और बढ़ाता है (अधि धा:) अधिकता में धारण करता है (द्युम्नम्) गौरवशाली सम्पदा (अस्मे) हमारे लिए (महि) महान् (क्षत्रम्) बल और शक्तियाँ, राज्य (जनाषाट) लोगों को सहन करता है (इन्द्र) सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा (तव्यम्) शक्तिशाली (रक्षा) रक्षित करता है (च) और (न:) हमारा (मधोनः) त्याग करते हुए, यज्ञ करते हुए (पाहि) संरक्षण करें (सूरीन्) महान् विद्वान् (राये) सम्पदा के लिए (च) और (न:) हमारे लिए (स्वपत्यै) उत्तम सन्तान के लिए (इषे) आपकी इच्छा के लिए, संगति के लिए (धा:) धारण करो ।

व्याख्या :-

परमात्मा हमारे लिए क्या धारण करता है और क्यों?

परमात्मा किसको संरक्षित करता है?

परमात्मा किसको सहन करता है?

वह सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हमें प्रसन्नता देने के लिए और हमें आगे बढ़ाने के लिए गौरवशाली सम्पदा धारण करता है । वह सभी महान् शक्तियाँ और बल धारण करता है । वह लोगों को सहन करता है । वह उन लोगों को संरक्षित करता है जो त्याग पूर्वक यज्ञ करते हैं । वह सभी महान् विद्वानों को संरक्षित करता है । वह हमारे लिए तथा हमारी सन्तानों के लिए सम्पदा को धारण करता है और संरक्षित करता है । वह हमें भी धारण करता है जिससे हम उसकी इच्छा और संगति कर सकें । अन्यथा वह सबको सहन करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

सरकारें किसको संरक्षित करती हैं?

सरकारें किसको सहन करती हैं?

प्रत्येक राष्ट्र को एक कल्याणकारी राज्य होना चाहिए । सरकारें सभी सम्पदाएं और सम्पत्तियाँ नागरिकों की प्रसन्नता के लिए ही धारण करती हैं । एक अच्छी सरकार महान् विद्वानों और उन नागरिकों को बढ़ाती है जो त्याग कार्य अर्थात् सबके कल्याण के कल्याण के लिए यज्ञ करते हैं । एक अच्छी सरकार भावी पीढ़ियों की प्रसन्नता भी सुनिश्चित करती है । इनके अतिरिक्त सरकार अन्य लोगों को सहन करती है जो न तो विद्वान् हैं और न यज्ञ कार्य करते हैं । प्रत्येक सत्ता, चाहे वे हमारे उच्चाधिकारी हों या हमारे माता—पिता, श्रेष्ठता को धारण करते हैं और अन्यों को सहन करते हैं ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेदमन्त्र 1.54.11

स शेवृधमधि धा द्युम्नमस्मेमहि क्षत्रं जनाषळ्नद्रतव्यम् ।
रक्षा च नोमधोनः पाहिसूरीन्नाये च नः स्वपत्याइषे धा ॥

(स:) वह (शेवृधम) प्रसन्नता देता और बढ़ाता है (अधि धा:) अधिकता में धारण करता है (द्युम्नम्) गौरवशाली सम्पदा (अस्मे) हमारे लिए (महि) महान् (क्षत्रम्) बल और शक्तियाँ, राज्य (जनाषाट) लोगों को सहन करता है (इन्द्र) सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा (तव्यम्) शक्तिशाली (रक्षा) रक्षित करता है (च) और (न:) हमारा (मधोनः) त्याग करते हुए, यज्ञ करते हुए (पाहि) संरक्षण करें (सूरीन्) महान् विद्वान् (राये) सम्पदा के लिए (च) और (न:) हमारे लिए (स्वपत्यै) उत्तम सन्तान के लिए (इषे) आपकी इच्छा के लिए, संगति के लिए (धा:) धारण करो ।

व्याख्या :-

परमात्मा हमारे लिए क्या धारण करता है और क्यों?

परमात्मा किसको संरक्षित करता है?

परमात्मा किसको सहन करता है?

वह सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, हमें प्रसन्नता देने के लिए और हमें आगे बढ़ाने के लिए गौरवशाली सम्पदा धारण करता है । वह सभी महान् शक्तियाँ और बल धारण करता है । वह लोगों को सहन करता है । वह उन लोगों को संरक्षित करता है जो त्याग पूर्वक यज्ञ करते हैं । वह सभी महान् विद्वानों को संरक्षित करता है । वह हमारे लिए तथा हमारी सन्तानों के लिए सम्पदा को धारण करता है और संरक्षित करता है । वह हमें भी धारण करता है जिससे हम उसकी इच्छा और संगति कर सकें । अन्यथा वह सबको सहन करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

सरकारें किसको संरक्षित करती हैं?

सरकारें किसको सहन करती हैं?

प्रत्येक राष्ट्र को एक कल्याणकारी राज्य होना चाहिए । सरकारें सभी सम्पदाएं और सम्पत्तियाँ नागरिकों की प्रसन्नता के लिए ही धारण करती हैं । एक अच्छी सरकार महान् विद्वानों और उन नागरिकों को बढ़ाती है जो त्याग कार्य अर्थात् सबके कल्याण के कल्याण के लिए यज्ञ करते हैं । एक अच्छी सरकार भावी पीढ़ियों की प्रसन्नता भी सुनिश्चित करती है । इनके अतिरिक्त सरकार अन्य लोगों को सहन करती है जो न तो विद्वान् हैं और न यज्ञ कार्य करते हैं । प्रत्येक सत्ता, चाहे वे हमारे उच्चाधिकारी हों या हमारे माता—पिता, श्रेष्ठता को धारण करते हैं और अन्यों को सहन करते हैं ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद 1.51.1

अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्दं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् ।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषा भुजे महिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥ 1 ॥

(अभि – मदत से पूर्व लगाकर) (त्यम) वह (मेषम) वर्षा करने वाला (पुरुहूतम) प्रशंसनीय, सबके द्वारा पुकारा गया (ऋग्मियम) वेद मंत्रों के द्वारा (इन्द्रम) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (गीर्भि) ज्ञान की वाणियों से (मदत – अभि मदत) प्रतिक्षण उन्हें हर्षित रखता है (अर्णवम) सम्पदा का समुद्र (वस्वः) निवास के लिए (यस्य) जिसकी (द्यावः) सूर्य की किरणें (न) जैसे (विचरन्ति) सर्वत्र फैली हुई (मानुषा) मनुष्यों के लिए (भुजे) भोग के लिए (महिष्ठम) सर्वोच्च दाता (अभि – अर्चत से पूर्व लगाकर) (विप्रम) विशेष रूप से पूरण करने वाले (अर्चत – अभि अर्चत) प्रतिक्षण पूजन करें।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा की प्रशंसा और उनका आहवान किस प्रकार करना चाहिए?

हमें परमात्मा की पूजा कितने समय करनी चाहिए?

वर्षा करने वाला, सबके निवास के लिए सम्पदाओं का समुद्र उपलब्ध करवाकर, प्रत्येक प्राणी को प्रतिक्षण प्रसन्न रखता है। उसकी प्रशंसा और उसका आहवान सभी लोग वेद मन्त्रों तथा ज्ञान की वाणियों से करते हैं। उसकी देन सूर्य की किरणों की तरह समस्त मनुष्यों के भोग के लिए सर्वत्र फैली हुई है। वह सर्वोच्च दाता है और विशेष रूप से सबको पूर्ण करता है। अतः उसकी पूजा प्रतिक्षण करनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

कौन सर्वोच्च दाता है?

परमात्मा सर्वोच्च दाता है। वह प्रतिक्षण देता है और वह सबको देता है। परन्तु हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हम समान रूप से उसका धन्यवाद नहीं करते। हमारे श्वास-प्रश्वास से प्रारम्भ होकर हर प्रकार की सम्पदाएँ उसके द्वारा प्रतिक्षण दी जा रही हैं। अतः हमें उसकी पूजा धन्यवाद की तरह प्रतिक्षण करनी चाहिए।

इसी प्रकार हमारे माता-पिता तथा महान् अध्यापक भी हमारे शरीर और मन के क्रमशः दाता हैं। हमें उनकी भी पूजा करनी चाहिए। जो सब कुछ उन्होंने हमारे लिए किया है।



ऋग्वेद 1.51.1

अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्दं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् ।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषा भुजे महिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥ 1 ॥

(अभि – मदत से पूर्व लगाकर) (त्यम) वह (मेषम) वर्षा करने वाला (पुरुहूतम) प्रशंसनीय, सबके द्वारा पुकारा गया (ऋग्मियम) वेद मंत्रों के द्वारा (इन्द्रम) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (गीर्भि) ज्ञान की वाणियों से (मदत – अभि मदत) प्रतिक्षण उन्हें हर्षित रखता है (अर्णवम) सम्पदा का समुद्र (वस्वः) निवास के लिए (यस्य) जिसकी (द्यावः) सूर्य की किरणें (न) जैसे (विचरन्ति) सर्वत्र फैली हुई (मानुषा) मनुष्यों के लिए (भुजे) भोग के लिए (महिष्ठम) सर्वोच्च दाता (अभि – अर्चत से पूर्व लगाकर) (विप्रम) विशेष रूप से पूरण करने वाले (अर्चत – अभि अर्चत) प्रतिक्षण पूजन करें।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा की प्रशंसा और उनका आहवान किस प्रकार करना चाहिए?

हमें परमात्मा की पूजा कितने समय करनी चाहिए?

वर्षा करने वाला, सबके निवास के लिए सम्पदाओं का समुद्र उपलब्ध करवाकर, प्रत्येक प्राणी को प्रतिक्षण प्रसन्न रखता है। उसकी प्रशंसा और उसका आहवान सभी लोग वेद मन्त्रों तथा ज्ञान की वाणियों से करते हैं। उसकी देन सूर्य की किरणों की तरह समस्त मनुष्यों के भोग के लिए सर्वत्र फैली हुई है। वह सर्वोच्च दाता है और विशेष रूप से सबको पूर्ण करता है। अतः उसकी पूजा प्रतिक्षण करनी चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

कौन सर्वोच्च दाता है?

परमात्मा सर्वोच्च दाता है। वह प्रतिक्षण देता है और वह सबको देता है। परन्तु हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि हम समान रूप से उसका धन्यवाद नहीं करते। हमारे श्वास-प्रश्वास से प्रारम्भ होकर हर प्रकार की सम्पदाएँ उसके द्वारा प्रतिक्षण दी जा रही हैं। अतः हमें उसकी पूजा धन्यवाद की तरह प्रतिक्षण करनी चाहिए।

इसी प्रकार हमारे माता-पिता तथा महान् अध्यापक भी हमारे शरीर और मन के क्रमशः दाता हैं। हमें उनकी भी पूजा करनी चाहिए। जो सब कुछ उन्होंने हमारे लिए किया है।



ऋग्वेद 1.51.2

अभीमवन्वन्त्स्वभिष्टिमूतयोऽन्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् ।
इन्द्रं दक्षास ऋभवो मदच्युतं शतक्रतुं जवनी सूनृतारुहत् ॥२॥

(अभी ईम अवन्वन) प्रतिक्षण निश्चित रूप से प्रगति सुनिश्चित करता है (स्वभिष्टिम) स्व-अनुभूति की सर्वोत्तम कामना (उतयः) संरक्षित करने वाले (अन्तरिक्षप्राम्) अन्तरिक्ष में सबका पूरण करने वाले, शांति में (अपनी दुर्बलताओं को दूर करके) (तविषीभिः) सभी शक्तियों के साथ (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) (आवृतम्) आच्छादित (इन्द्रम्) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (दक्षास) बल की वृद्धि करने में सक्षम (ऋभवः) प्रकाशित मन (मदच्युतम्) अहंकार रहित (शतक्रतुम्) सैकड़ों (असंख्य) कर्मों के करने वाले (जवनी) उत्तम कार्यों के प्रेरक (सूनृता) सत्यवादी वाणी (आरुहत) स्थापित ।

व्याख्या :-

इन्द्र हमारी सहायता कैसे करते हैं?

इन्द्र की सहायता प्राप्त करने के लिए हमें किस प्रकार के लक्षण सुनिश्चित करने चाहिए?

इन्द्र अर्थात् परमात्मा, सूर्य, महान् राजा तथा इन्द्रियों के नियंत्रक निम्न उपलब्धियों में हमारी सहायता करते हैं :-

- (1) अभी ईम अवन्वन — प्रतिक्षण निश्चित रूप से प्रगति सुनिश्चित करता है ।
- (2) स्वभिष्टिम — स्व-अनुभूति की सर्वोत्तम कामना ।
- (3) अन्तरिक्षप्राम् — अन्तरिक्ष में सबका पूरण करने वाले, शांति में (अपनी दुर्बलताओं को दूर करके) ।
- (4) तविषीभिः आवृतम् — सभी शक्तियों (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) के साथ हमें आच्छादित करता है ।

यह सभी उपलब्धियाँ तभी सम्भव हैं जब हम स्वयं अपने जीवन में निम्न लक्षणों को सुनिश्चित करें :-

- (1) दक्षास — बल की वृद्धि करने में सक्षम ।
- (2) ऋभवः — प्रकाशित मन ।
- (3) मदच्युतम् — अहंकार रहित जीवन ।
- (4) शतक्रतुम् — सैकड़ों (असंख्य) कर्मों के करने के लिए तत्पर ।
- (5) जवनी — हम स्वयं को उत्तम कार्यों को गति के साथ करने के लिए प्रेरित करें ।
- (6) सूनृता आरुहत् — हम अपने भीतर सत्यवादी वाणी को स्थापित करें ।



जीवन में सार्थकता :-

एक महान् और दिव्य जीवन के क्या कारक होते हैं?

इन्द्र, परमात्मा तथा सूर्य प्रथम तथा द्वितीय स्तर की शक्तियाँ हैं। महान् राजा, महान् राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता तथा इन्द्रियों के नियंत्रक इन्द्र पुरुष तीसरे स्तर की शक्तियाँ हैं। ये सभी हमें एक महान् और दिव्य जीवन बनाने के लिए तभी अनुदान प्रदान करते हैं जब हम अपनी तरफ से निम्न कारक सुनिश्चित करें :—

- (1) अपने—अपने कार्य क्षेत्रों में दक्षता प्राप्त करने की इच्छा।
- (2) सम्बन्धित ज्ञान की पूर्ण जानकारी से स्वयं को प्रकाशित करना।
- (3) अपने आपको अहंकारवादी उलझनों से मुक्त रखना।
- (4) जिन कार्यों में हमारी आवश्यकता हो उन कार्यों को करने के लिए तत्पर रहना।
- (5) बिना समय गंवाये उत्तम कार्यों को करना।
- (6) एक दिव्य सत्यवाणी धारण करना।



ऋग्वेद 1.51.2

अभीमवन्वन्त्स्वभिष्टिमूतयोऽन्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् ।
इन्द्रं दक्षास ऋभवो मदच्युतं शतक्रतुं जवनी सूनृतारुहत् ॥२॥

(अभी ईम अवन्वन) प्रतिक्षण निश्चित रूप से प्रगति सुनिश्चित करता है (स्वभिष्टिम) स्व-अनुभूति की सर्वोत्तम कामना (उतयः) संरक्षित करने वाले (अन्तरिक्षप्राम्) अन्तरिक्ष में सबका पूरण करने वाले, शांति में (अपनी दुर्बलताओं को दूर करके) (तविषीभिः) सभी शक्तियों के साथ (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) (आवृतम्) आच्छादित (इन्द्रम्) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (दक्षास) बल की वृद्धि करने में सक्षम (ऋभवः) प्रकाशित मन (मदच्युतम्) अहंकार रहित (शतक्रतुम्) सैकड़ों (असंख्य) कर्मों के करने वाले (जवनी) उत्तम कार्यों के प्रेरक (सूनृता) सत्यवादी वाणी (आरुहत) स्थापित ।

व्याख्या :-

इन्द्र हमारी सहायता कैसे करते हैं?

इन्द्र की सहायता प्राप्त करने के लिए हमें किस प्रकार के लक्षण सुनिश्चित करने चाहिए?

इन्द्र अर्थात् परमात्मा, सूर्य, महान् राजा तथा इन्द्रियों के नियंत्रक निम्न उपलब्धियों में हमारी सहायता करते हैं :-

- (1) अभी ईम अवन्वन — प्रतिक्षण निश्चित रूप से प्रगति सुनिश्चित करता है ।
- (2) स्वभिष्टिम — स्व-अनुभूति की सर्वोत्तम कामना ।
- (3) अन्तरिक्षप्राम् — अन्तरिक्ष में सबका पूरण करने वाले, शांति में (अपनी दुर्बलताओं को दूर करके) ।
- (4) तविषीभिः आवृतम् — सभी शक्तियों (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) के साथ हमें आच्छादित करता है ।

यह सभी उपलब्धियाँ तभी सम्भव हैं जब हम स्वयं अपने जीवन में निम्न लक्षणों को सुनिश्चित करें :-

- (1) दक्षास — बल की वृद्धि करने में सक्षम ।
- (2) ऋभवः — प्रकाशित मन ।
- (3) मदच्युतम् — अहंकार रहित जीवन ।
- (4) शतक्रतुम् — सैकड़ों (असंख्य) कर्मों के करने के लिए तत्पर ।
- (5) जवनी — हम स्वयं को उत्तम कार्यों को गति के साथ करने के लिए प्रेरित करें ।
- (6) सूनृता आरुहत् — हम अपने भीतर सत्यवादी वाणी को स्थापित करें ।



जीवन में सार्थकता :-

एक महान् और दिव्य जीवन के क्या कारक होते हैं?

इन्द्र, परमात्मा तथा सूर्य प्रथम तथा द्वितीय स्तर की शक्तियाँ हैं। महान् राजा, महान् राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता तथा इन्द्रियों के नियंत्रक इन्द्र पुरुष तीसरे स्तर की शक्तियाँ हैं। ये सभी हमें एक महान् और दिव्य जीवन बनाने के लिए तभी अनुदान प्रदान करते हैं जब हम अपनी तरफ से निम्न कारक सुनिश्चित करें :—

- (1) अपने—अपने कार्य क्षेत्रों में दक्षता प्राप्त करने की इच्छा।
- (2) सम्बन्धित ज्ञान की पूर्ण जानकारी से स्वयं को प्रकाशित करना।
- (3) अपने आपको अहंकारवादी उलझनों से मुक्त रखना।
- (4) जिन कार्यों में हमारी आवश्यकता हो उन कार्यों को करने के लिए तत्पर रहना।
- (5) बिना समय गंवाये उत्तम कार्यों को करना।
- (6) एक दिव्य सत्यवाणी धारण करना।



ऋग्वेद 1.51.3

त्वं गोत्रामङ्गिरोभयोऽ वृणोरपोतात्राये शतदुरेषु गातुवित् ।
ससेन चिद्विमदायावहो वस्वाजावन्द्रिं वावसानस्य नर्तयन् ॥ ३ ॥

(त्वम्) आप (गोत्रम्) महान् और दिव्य ज्ञान (अङ्गिरोभयः) अंगिरा आदि ऋषि (अवृणोः – अप अवृणोः) योग्य बनाते हैं (अप – अवृणो से पूर्व लगाया गया) (उत) और (अत्रये) तीन दुःखों से ऊपर उठा हुआ (आध्यात्मिक, मानसिक एवं शारीरिक) (शतदुरेषु) सैकड़ों द्वारों वाले शरीर में निवास करते हुए (गातुवित्) मार्ग दिखाने वाले (ससेन) बलों सहित मुख्य धीर (चित्त) निश्चित रूप से (विमदाय) काम, क्रोध, लोभ और मोह आदि चारों से शून्य (आवह) उपलब्ध कराते हैं (वसु) आवास के तत्त्व (आजौ) शत्रुओं के बल (अन्द्रिम) पर्वत रूपी अज्ञानता (वावसानस्य) उत्तम निवास के लिए (नर्तयन) नृत्य करवा देते हैं।

व्याख्या :-

अंगिरा आदि ऋषियों को वेद प्राप्त करने के योग्य किसने बनाया?
हमें स्व-अनुभूति के मार्ग पर चलने के योग्य कौन बनाता है?

आपने अंगिरा आदि ऋषियों को महान् और दिव्य वैदिक ज्ञान प्राप्त करने के योग्य बनाया और उन्हें तीन प्रकार के दुःखों – शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दुःखों से ऊपर उठाया। इस प्रकार बुराईयों के प्रवेश के लिए सैकड़ों द्वारों वाले इस शरीर में रहते हुए भी आपने उन्हें स्व अनुभूति का मार्ग दिखाया। आपकी कृपा के कारण ही वे आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करने में सक्षम हो सके। इन्द्रियों की सेना तथा पूर्ण शरीर के साथ ऐसा मुखिया (आत्मा) निश्चित रूप से चारों बुराईयों से मुक्त हो जाता है – इन्द्रियों की वासना अर्थात् काम, गुस्सा अर्थात् क्रोध, लालच अर्थात् लोभ तथा जुड़ाव अर्थात् मोह। ऐसा मुखिया वास्तव में स्वयं को जीवन के लिए आवश्यक दिव्य तत्त्वों के लिए उपलब्ध करा देता है। जो उसके जीवन को उत्तम जीवन बना सके। वह पर्वतों के समान अज्ञानता को दिव्यता की धुन पर नृत्य करवाने के योग्य बन जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें सभी दुःखों से कौन मुक्त कर सकता है?

जब तक कोई व्यक्ति तीन प्रकार के दुःखों में स्थित रहता है, वह स्वाभाविक रूप से स्वयं को सर्वप्रथम उन दुःखों से मुक्त करने का प्रयास करेगा। तब तक उसे तीनों प्रकार के दुःखों को रोकने के लिए ज्ञान प्राप्त करने में लगे रहना चाहिए।



तीन प्रकार के दुःखों से मुक्त होने के ज्ञान तथा प्रयासों से भी अधिक उसे शुद्ध समर्पण अर्थात् भवित से परमात्मा का छोटा सा आशीर्वाद प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए जो उसे तीनों दुःखों से मुक्त कर सकता है। तभी वह समय आयेगा जब वह स्व अनुभूति के आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर हो सकेगा।

स्व अनुभूति के इस मार्ग पर हमारे जीवन में निम्न लक्षण उपस्थित हो जाते हैं :—

- (1) चार बुराईयों — इन्द्रियों की वासना, क्रोध, लोभ तथा मोह से मुक्ति।
- (2) हमें दिव्य वास प्राप्त होता है अर्थात् सरल परन्तु प्रसन्न जीवन।
- (3) इन्द्रियों का बल प्राप्त होता है, क्योंकि हम उन पर प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित रखते हैं।
- (4) दिव्य ज्ञान की धुन पर पर्वत रूपी अज्ञानता नृत्य करती हुई देती है।



ऋग्वेद 1.51.3

त्वं गोत्रामङ्गिरोभयोऽ वृणोरपोतात्राये शतदुरेषु गातुवित् ।
ससेन चिद्विमदायावहो वस्वाजावन्द्रिं वावसानस्य नर्तयन् ॥ ३ ॥

(त्वम्) आप (गोत्रम्) महान् और दिव्य ज्ञान (अङ्गिरोभयः) अंगिरा आदि ऋषि (अवृणोः – अप अवृणोः) योग्य बनाते हैं (अप – अवृणो से पूर्व लगाया गया) (उत) और (अत्रये) तीन दुःखों से ऊपर उठा हुआ (आध्यात्मिक, मानसिक एवं शारीरिक) (शतदुरेषु) सैकड़ों द्वारों वाले शरीर में निवास करते हुए (गातुवित्) मार्ग दिखाने वाले (ससेन) बलों सहित मुख्य धीर (चित्त) निश्चित रूप से (विमदाय) काम, क्रोध, लोभ और मोह आदि चारों से शून्य (आवह) उपलब्ध कराते हैं (वसु) आवास के तत्त्व (आजौ) शत्रुओं के बल (अन्द्रिम) पर्वत रूपी अज्ञानता (वावसानस्य) उत्तम निवास के लिए (नर्तयन) नृत्य करवा देते हैं।

व्याख्या :-

अंगिरा आदि ऋषियों को वेद प्राप्त करने के योग्य किसने बनाया?
हमें स्व-अनुभूति के मार्ग पर चलने के योग्य कौन बनाता है?

आपने अंगिरा आदि ऋषियों को महान् और दिव्य वैदिक ज्ञान प्राप्त करने के योग्य बनाया और उन्हें तीन प्रकार के दुःखों – शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दुःखों से ऊपर उठाया। इस प्रकार बुराईयों के प्रवेश के लिए सैकड़ों द्वारों वाले इस शरीर में रहते हुए भी आपने उन्हें स्व अनुभूति का मार्ग दिखाया। आपकी कृपा के कारण ही वे आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करने में सक्षम हो सके। इन्द्रियों की सेना तथा पूर्ण शरीर के साथ ऐसा मुखिया (आत्मा) निश्चित रूप से चारों बुराईयों से मुक्त हो जाता है – इन्द्रियों की वासना अर्थात् काम, गुस्सा अर्थात् क्रोध, लालच अर्थात् लोभ तथा जुड़ाव अर्थात् मोह। ऐसा मुखिया वास्तव में स्वयं को जीवन के लिए आवश्यक दिव्य तत्त्वों के लिए उपलब्ध करा देता है। जो उसके जीवन को उत्तम जीवन बना सके। वह पर्वतों के समान अज्ञानता को दिव्यता की धुन पर नृत्य करवाने के योग्य बन जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें सभी दुःखों से कौन मुक्त कर सकता है?

जब तक कोई व्यक्ति तीन प्रकार के दुःखों में स्थित रहता है, वह स्वाभाविक रूप से स्वयं को सर्वप्रथम उन दुःखों से मुक्त करने का प्रयास करेगा। तब तक उसे तीनों प्रकार के दुःखों को रोकने के लिए ज्ञान प्राप्त करने में लगे रहना चाहिए।



तीन प्रकार के दुःखों से मुक्त होने के ज्ञान तथा प्रयासों से भी अधिक उसे शुद्ध समर्पण अर्थात् भवित से परमात्मा का छोटा सा आशीर्वाद प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए जो उसे तीनों दुःखों से मुक्त कर सकता है। तभी वह समय आयेगा जब वह स्व अनुभूति के आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर हो सकेगा।

स्व अनुभूति के इस मार्ग पर हमारे जीवन में निम्न लक्षण उपस्थित हो जाते हैं :—

- (1) चार बुराईयों — इन्द्रियों की वासना, क्रोध, लोभ तथा मोह से मुक्ति।
- (2) हमें दिव्य वास प्राप्त होता है अर्थात् सरल परन्तु प्रसन्न जीवन।
- (3) इन्द्रियों का बल प्राप्त होता है, क्योंकि हम उन पर प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित रखते हैं।
- (4) दिव्य ज्ञान की धुन पर पर्वत रूपी अज्ञानता नृत्य करती हुई देती है।



ऋग्वेद 1.51.4

त्वमपामपिधानावृणोरपाऽधारयः पर्वते दानुमद्वसु ।
वृत्रं यदिन्द्रं शावसावधीरहिमादित्सूर्यं दिव्यारोहयो दृशे ॥ 4 ॥

(त्वम्) आप (अपाम्) जलों का, प्रजाओं का (अपिधाना) आवरण (इच्छाओं और अज्ञानता के) (अपावृणोः) आवरण हटाना (अधारयः) धारण करना (पर्वते) पर्वत रूपी (बादल) (दानुमत) दान के भाव से सुसज्जित (वसु) सम्पदा, जल (वृत्रम्) मेघ (यत्) किसके लिए (इन्द्र) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (शवसा) बल के साथ (अवधीः) नाश करता है (अहिम) सब प्रकार से नाशक (अहंकार और इच्छाओं का) (आत् इत) केवल तभी (सूर्यम्) सूर्य, ज्ञान का प्रकाश (दिवि) मन के आकाश में (आरोहयः) स्थापित (दृशे) देखने के लिए, अनुभूति प्राप्त करने के लिए (परमात्मा अर्थात् स्थाई प्रकृति का प्रकाश) ।

व्याख्या :-

हमारे मन के आवरणों को कौन अनाव्रत करता है?

मन के आवरणों को अनाव्रत करने के बाद क्या परिणाम होता है?

आप, इन्द्र (परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक) जल के आवरणों और अपनी प्रजाओं के आवरणों को अनाव्रत करते हों।

आप जल वाले पर्वतीय मेघों को धारण करते हो अर्थात् आप ऐसी सम्पदा को धारण करते हो जो सबके कल्याण के लिए दान की भावनाओं से सुसज्जित हो।

इन्द्र, सूर्य, अपने बल के साथ मेघों को नष्ट कर देता है। क्योंकि वह हर प्रकार से नष्ट करने वाला ही होता है।

उसके बाद, सूर्य, सत्य ज्ञान का प्रकाश, परमात्मा के स्थाई प्रकाश की अनुभूति के लिए मन के अन्तरिक्ष में स्थापित होता है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें ध्यान के दौरान क्या प्रार्थना करनी चाहिए और किस पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए?

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बनना चाहिए। एक बार इन्द्रियों पर प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित हो जाने पर अहंकार तथा इच्छाओं के आवरण नष्ट हो जाते हैं जिससे सबके कल्याण के लिए दान दी जाने योग्य गौरवशाली सम्पदा का मार्ग प्रशस्त होता है। अहंकार और इच्छाओं के यह आवरण ही हर प्रकार से हमारे हत्यारे सिद्ध होते हैं। अतः इन आवरणों को नष्ट करके हमें अपनी इन्द्रियों पर प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित करना चाहिए।

अपने जीवन में वास्तविक इन्द्र बनकर ही हमें दिव्य प्रकाश के सूर्य अर्थात् परमात्मा की अपने मन के अन्तरिक्ष में स्थापना के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। लम्बी और लगातार ध्यान—साधनाओं के बाद यह प्रार्थना मन के आवरणों को अनाव्रत कर पायेगी।



ऋग्वेद 1.51.4

त्वमपामपिधानावृणोरपाऽधारयः पर्वते दानुमद्वसु ।
वृत्रं यदिन्द्रं शावसावधीरहिमादित्सूर्यं दिव्यारोहयो दृशे ॥ 4 ॥

(त्वम्) आप (अपाम्) जलों का, प्रजाओं का (अपिधाना) आवरण (इच्छाओं और अज्ञानता के) (अपावृणोः) आवरण हटाना (अधारयः) धारण करना (पर्वते) पर्वत रूपी (बादल) (दानुमत) दान के भाव से सुसज्जित (वसु) सम्पदा, जल (वृत्रम्) मेघ (यत्) किसके लिए (इन्द्र) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (शवसा) बल के साथ (अवधीः) नाश करता है (अहिम) सब प्रकार से नाशक (अहंकार और इच्छाओं का) (आत् इत) केवल तभी (सूर्यम्) सूर्य, ज्ञान का प्रकाश (दिवि) मन के आकाश में (आरोहयः) स्थापित (दृशे) देखने के लिए, अनुभूति प्राप्त करने के लिए (परमात्मा अर्थात् स्थाई प्रकृति का प्रकाश) ।

व्याख्या :-

हमारे मन के आवरणों को कौन अनाव्रत करता है?

मन के आवरणों को अनाव्रत करने के बाद क्या परिणाम होता है?

आप, इन्द्र (परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक) जल के आवरणों और अपनी प्रजाओं के आवरणों को अनाव्रत करते हों।

आप जल वाले पर्वतीय मेघों को धारण करते हो अर्थात् आप ऐसी सम्पदा को धारण करते हो जो सबके कल्याण के लिए दान की भावनाओं से सुसज्जित हो।

इन्द्र, सूर्य, अपने बल के साथ मेघों को नष्ट कर देता है। क्योंकि वह हर प्रकार से नष्ट करने वाला ही होता है।

उसके बाद, सूर्य, सत्य ज्ञान का प्रकाश, परमात्मा के स्थाई प्रकाश की अनुभूति के लिए मन के अन्तरिक्ष में स्थापित होता है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें ध्यान के दौरान क्या प्रार्थना करनी चाहिए और किस पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए?

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक बनना चाहिए। एक बार इन्द्रियों पर प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित हो जाने पर अहंकार तथा इच्छाओं के आवरण नष्ट हो जाते हैं जिससे सबके कल्याण के लिए दान दी जाने योग्य गौरवशाली सम्पदा का मार्ग प्रशस्त होता है। अहंकार और इच्छाओं के यह आवरण ही हर प्रकार से हमारे हत्यारे सिद्ध होते हैं। अतः इन आवरणों को नष्ट करके हमें अपनी इन्द्रियों पर प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित करना चाहिए।

अपने जीवन में वास्तविक इन्द्र बनकर ही हमें दिव्य प्रकाश के सूर्य अर्थात् परमात्मा की अपने मन के अन्तरिक्ष में स्थापना के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। लम्बी और लगातार ध्यान—साधनाओं के बाद यह प्रार्थना मन के आवरणों को अनाव्रत कर पायेगी।



ऋग्वेद 1.51.5

त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधभिर्ये अथि शुप्तावजुहवत् ।
त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहत्येष्वा विथ ॥ 5 ॥

(त्वम्) आप (मायाभिः) अपनी भौतिक सृष्टि के साथ, मायावी छल से (अप – अधमः से पूर्व लगाकर) (मायिनः) भौतिक सृष्टि तथा छल में फंसे हुए (अधमः – अप अधमः) दूर रखो (स्वधाभिः) अन्न आदि के साथ (ए) वे जो (अथि शुप्तौ) अन्य लोगों के सोने के बाद (अजुहवत्) चोरी करते हैं, अपने मुख में डालते हैं (त्वम्) आप (पिप्रोः) अपने स्वयं को पूर्ण करते हुए (नृमणः) मनुष्यों में अपना मन रखने वाले (परमात्मा) (प्रारुजः) नाश करते हैं (पुरः) समूहों का, नगरों का (प्र – वाविथ से पूर्व लगाकर) (ऋजिश्वानम्) प्रकृति के मार्ग पर चलने वाले, सत्यवादी (दस्यु हत्येषु) दुष्टों की नाश करने के बाद (वाविथ – प्र वाविथ) विशेष रूप से संरक्षित करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार भौतिकतावादी और कुटिल लोगों को अपने से दूर रखता है?

स्वार्थी लोगों का अन्त कैसा होता है?

परमात्मा के द्वारा कौन संरक्षित होते हैं?

आप, इन्द्र, अपनी भौतिक सृष्टि के साथ तथा अपनी कुटिलताओं के साथ उन सब लोगों को दूर रखते हो जो भौतिक सृष्टि तथा कुटिलताओं में जकड़े हुए हैं, जो चोरी करते हैं और जब अन्य लोग सोये होते हैं तो उनका अन्न अपने मुंह में डाल लेते हैं।

आप, इन्द्र, उन लोगों के गढ़ और शहरों को नष्ट कर देते हों जो केवल अपना स्वार्थ पूरा करने में लगे रहते हैं, जो केवल अपनी इच्छाएँ पूरी करते रहते हैं, क्योंकि आपने हर मनुष्य में अपना मन डाल रखा है। इसका अभिप्राय है कि आप सबके मन को जानते हो अर्थात् स्वार्थी लोगों को और उन निःस्वार्थी लोगों को भी जो सदैव आपको ही अपने मन में रखते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की कुटिलताएँ क्या हैं?

एक स्वार्थी व्यक्ति तथा स्व की अनुभूति में लगे व्यक्ति में क्या अन्तर है?

परमात्मा आध्यात्मिक रूप से ही आध्यात्मिक लोगों के मन में उनके निकट बैठकर उन्हें संरक्षित करते हैं।

परमात्मा स्वार्थी और भौतिकवादी लोगों को भौतिकवादी लक्ष्यों तथा इच्छाओं में फंसाये रखकर उनका नाश करते हैं। क्योंकि परमात्मा उनके मन में ही रहते हैं और उन्हें जानते हैं।

आध्यात्मिक लोग दिनों दिन परमात्मा के साथ अपनी निकटता बढ़ाते जाते हैं और चेतनता के साथ स्वयं को भौतिकवादी लक्ष्यों, अहंकार तथा इच्छाओं से दूर रखते हैं।



परमात्मा भौतिकवादी लोगों के मन में भी रहते हैं और उनकी इच्छाओं और अहंकार के बारे में जानते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों को अपनी अनुभूति से दूर रखते हैं और अहंकार तथा इच्छाओं की भौतिक उपलब्धियों से ही उनका नाश कर देते हैं। ऐसे लोग कभी भी परमात्मा की अनुभूति अर्थात् सर्वोच्च चेतना के स्तर पर कभी नहीं आ पाते और इस प्रकार भौतिकता में ही नष्ट हो जाते हैं। वे कुटिल चालें चलते हैं और परमात्मा की कुटिल चालों से ही नष्ट हो जाते हैं।

आध्यात्मिक लोग प्रकृति के साथ जीवन जीते हैं और सदैव सत्य के साथ रहते हैं। जबकि, भौतिकवादी लोग अप्राकृतिक, अहंकारी और इच्छाओं की पूर्ति वाला जीवन जीते हैं। भौतिकवादी लक्ष्य, अहंकार तथा इच्छाओं में उलझे रहने से हर प्रकार के रोग तथा अपराध पैदा होते हैं और इन्हीं भौतिक पदार्थों के नाश का कारण बनते हैं।

जबकि रोगों, इच्छाओं और अहंकार से मुक्ति ही आध्यात्मिक लोगों के महान् दिव्य स्वार्थ का कारण बनती है। वे प्रसन्न तथा शान्त जीवन जीते हैं।



ऋग्वेद 1.51.5

त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधभिर्ये अथि शुप्तावजुहवत् ।
त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहत्येष्वा विथ ॥ 5 ॥

(त्वम्) आप (मायाभिः) अपनी भौतिक सृष्टि के साथ, मायावी छल से (अप – अधमः से पूर्व लगाकर) (मायिनः) भौतिक सृष्टि तथा छल में फंसे हुए (अधमः – अप अधमः) दूर रखो (स्वधाभिः) अन्न आदि के साथ (ए) वे जो (अथि शुप्तौ) अन्य लोगों के सोने के बाद (अजुहवत्) चोरी करते हैं, अपने मुख में डालते हैं (त्वम्) आप (पिप्रोः) अपने स्वयं को पूर्ण करते हुए (नृमणः) मनुष्यों में अपना मन रखने वाले (परमात्मा) (प्रारुजः) नाश करते हैं (पुरः) समूहों का, नगरों का (प्र – वाविथ से पूर्व लगाकर) (ऋजिश्वानम्) प्रकृति के मार्ग पर चलने वाले, सत्यवादी (दस्यु हत्येषु) दुष्टों की नाश करने के बाद (वाविथ – प्र वाविथ) विशेष रूप से संरक्षित करते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार भौतिकतावादी और कुटिल लोगों को अपने से दूर रखता है?

स्वार्थी लोगों का अन्त कैसा होता है?

परमात्मा के द्वारा कौन संरक्षित होते हैं?

आप, इन्द्र, अपनी भौतिक सृष्टि के साथ तथा अपनी कुटिलताओं के साथ उन सब लोगों को दूर रखते हो जो भौतिक सृष्टि तथा कुटिलताओं में जकड़े हुए हैं, जो चोरी करते हैं और जब अन्य लोग सोये होते हैं तो उनका अन्न अपने मुंह में डाल लेते हैं।

आप, इन्द्र, उन लोगों के गढ़ और शहरों को नष्ट कर देते हों जो केवल अपना स्वार्थ पूरा करने में लगे रहते हैं, जो केवल अपनी इच्छाएँ पूरी करते रहते हैं, क्योंकि आपने हर मनुष्य में अपना मन डाल रखा है। इसका अभिप्राय है कि आप सबके मन को जानते हो अर्थात् स्वार्थी लोगों को और उन निःस्वार्थी लोगों को भी जो सदैव आपको ही अपने मन में रखते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की कुटिलताएँ क्या हैं?

एक स्वार्थी व्यक्ति तथा स्व की अनुभूति में लगे व्यक्ति में क्या अन्तर है?

परमात्मा आध्यात्मिक रूप से ही आध्यात्मिक लोगों के मन में उनके निकट बैठकर उन्हें संरक्षित करते हैं।

परमात्मा स्वार्थी और भौतिकवादी लोगों को भौतिकवादी लक्ष्यों तथा इच्छाओं में फंसाये रखकर उनका नाश करते हैं। क्योंकि परमात्मा उनके मन में ही रहते हैं और उन्हें जानते हैं।

आध्यात्मिक लोग दिनों दिन परमात्मा के साथ अपनी निकटता बढ़ाते जाते हैं और चेतनता के साथ स्वयं को भौतिकवादी लक्ष्यों, अहंकार तथा इच्छाओं से दूर रखते हैं।



परमात्मा भौतिकवादी लोगों के मन में भी रहते हैं और उनकी इच्छाओं और अहंकार के बारे में जानते हैं। परमात्मा ऐसे लोगों को अपनी अनुभूति से दूर रखते हैं और अहंकार तथा इच्छाओं की भौतिक उपलब्धियों से ही उनका नाश कर देते हैं। ऐसे लोग कभी भी परमात्मा की अनुभूति अर्थात् सर्वोच्च चेतना के स्तर पर कभी नहीं आ पाते और इस प्रकार भौतिकता में ही नष्ट हो जाते हैं। वे कुटिल चालें चलते हैं और परमात्मा की कुटिल चालों से ही नष्ट हो जाते हैं।

आध्यात्मिक लोग प्रकृति के साथ जीवन जीते हैं और सदैव सत्य के साथ रहते हैं। जबकि, भौतिकवादी लोग अप्राकृतिक, अहंकारी और इच्छाओं की पूर्ति वाला जीवन जीते हैं। भौतिकवादी लक्ष्य, अहंकार तथा इच्छाओं में उलझे रहने से हर प्रकार के रोग तथा अपराध पैदा होते हैं और इन्हीं भौतिक पदार्थों के नाश का कारण बनते हैं।

जबकि रोगों, इच्छाओं और अहंकार से मुक्ति ही आध्यात्मिक लोगों के महान् दिव्य स्वार्थ का कारण बनती है। वे प्रसन्न तथा शान्त जीवन जीते हैं।



ऋग्वेद 1.51.6

त्वं कुत्सं शुष्णहत्येष्वाविथारन्धोऽतिथिगवाय शम्बरम् ।
महान्तं चिदर्द्भुदं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहत्याय जज्ञिषे ॥ ६ ॥

(त्वम्) आप (कुत्सम्) वासनाओं, लालच तथा चित्त वृत्तियों का नाश करने वाले ऋषि को (शुष्ण हत्येषु) शोषक (विचारों और लोगों) को मारने के बाद (आविथ) संरक्षित (अरन्धयः) नष्ट करते हैं (अतिथिगवाय) अतिथियों (लोगों तथा नये विचारों) के स्वागत के लिए (शम्बरम्) पर्वत रूपी विशाल शक्ति (महान्तम्) महान् तथा विशाल लक्षण (ज्ञान और सम्पदा के) (चित्) और भी (अर्बुदम्) बढ़ा हुआ अहंकार (नि क्रमीः) नष्ट करते हो (पदा) पैरों में (सनात) सदैव (एव) केवल (दस्यु हत्याय) बुराईयों की हत्या के लिए (जज्ञिषे) उत्पन्न, बनाये गये।

व्याख्या :-

ऋषि कौन हैं?

ऋषियों को कौन संरक्षित करता है?

नये विचारों और नये लोगों का स्वागत कैसे करें?

आप, इन्द्र, उन ऋषियों को संरक्षित करते हो जिन्होंने अपनी इच्छाओं, लोभ और मन की वृत्तियों को नष्ट कर दिया है। आप शोषण करने वाले विचारों और लोगों का नाश करते हो। आप सम्पदा तथा ज्ञान के अहंकारी लक्षणों का भी नाश करते हो जैसे – उन्हें पाँव के नीचे कुचल दिया गया हो। नये अतिथियों अर्थात् नये विचारों और लोगों का स्वागत करने के लिए आप यह सब करते हो। सभी बुराईयों को नष्ट करने के लिए आप ही विद्यमान हो।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्र के लक्षण कौन धारण करता है?

महान् शक्तियों का जन्म शुभ गुणों के संरक्षण तथा बुराईयों के नाश के लिए ही होता है। परमात्मा महान् और सर्वोच्च है। सूर्य सैद्धान्तिक रूप से परमात्मा की महानता और सर्वोच्चता का अनुसरण करता है।

महान् राजा भी वही होता है जो अच्छाईयों के संरक्षण और बुराईयों के नाश जैसे दिव्य नियम का अनुसरण करता है। इसी प्रकार इस सिद्धान्त का अनुसरण करने वाला व्यक्ति भी इन्द्र ही कहलाता है।



ऋग्वेद 1.51.6

त्वं कुत्सं शुष्णहत्येष्वाविथारन्धोऽतिथिगवाय शम्बरम् ।
महान्तं चिदर्द्भुदं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहत्याय जज्ञिषे ॥ ६ ॥

(त्वम्) आप (कुत्सम्) वासनाओं, लालच तथा चित्त वृत्तियों का नाश करने वाले ऋषि को (शुष्ण हत्येषु) शोषक (विचारों और लोगों) को मारने के बाद (आविथ) संरक्षित (अरन्धयः) नष्ट करते हैं (अतिथिगवाय) अतिथियों (लोगों तथा नये विचारों) के स्वागत के लिए (शम्बरम्) पर्वत रूपी विशाल शक्ति (महान्तम्) महान् तथा विशाल लक्षण (ज्ञान और सम्पदा के) (चित्) और भी (अर्बुदम्) बढ़ा हुआ अहंकार (नि क्रमीः) नष्ट करते हो (पदा) पैरों में (सनात) सदैव (एव) केवल (दस्यु हत्याय) बुराईयों की हत्या के लिए (जज्ञिषे) उत्पन्न, बनाये गये।

व्याख्या :-

ऋषि कौन हैं?

ऋषियों को कौन संरक्षित करता है?

नये विचारों और नये लोगों का स्वागत कैसे करें?

आप, इन्द्र, उन ऋषियों को संरक्षित करते हो जिन्होंने अपनी इच्छाओं, लोभ और मन की वृत्तियों को नष्ट कर दिया है। आप शोषण करने वाले विचारों और लोगों का नाश करते हो। आप सम्पदा तथा ज्ञान के अहंकारी लक्षणों का भी नाश करते हो जैसे – उन्हें पाँव के नीचे कुचल दिया गया हो। नये अतिथियों अर्थात् नये विचारों और लोगों का स्वागत करने के लिए आप यह सब करते हो। सभी बुराईयों को नष्ट करने के लिए आप ही विद्यमान हो।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्र के लक्षण कौन धारण करता है?

महान् शक्तियों का जन्म शुभ गुणों के संरक्षण तथा बुराईयों के नाश के लिए ही होता है। परमात्मा महान् और सर्वोच्च है। सूर्य सैद्धान्तिक रूप से परमात्मा की महानता और सर्वोच्चता का अनुसरण करता है।

महान् राजा भी वही होता है जो अच्छाईयों के संरक्षण और बुराईयों के नाश जैसे दिव्य नियम का अनुसरण करता है। इसी प्रकार इस सिद्धान्त का अनुसरण करने वाला व्यक्ति भी इन्द्र ही कहलाता है।



ऋग्वेद 1.51.7

त्वे विश्वा तविषी सध्यग्निता तव राधः सोमपीथाय हर्षते ।
तव वज्रशिंचकिते बाह्वोर्हितो वृश्चा शत्रोरव विश्वानि वृष्ण्या ॥ 7 ॥

(त्वे) आप में (विश्वा) सब (तविषी) शक्तियां और बल (सध्यक) सबके लिए, संयुक्त रूप से प्रयोग करने हेतु (हिता) स्थापित (तव) आपकी (राधः) सम्पदा, परमात्मा की पूजा करने वाला व्यक्ति (सोमपीथाय) शुभ गुणों का प्रयोग और संरक्षण करने के लिए (हर्षते) प्रसन्नता देने वाले (तव) आपके (वज्रः) वज्र (चिकिते) जाने जाते हैं (बाह्वो) भुजाओं में (हितः) स्थापित है (वृश्च) नष्ट करो (शत्रोः) शत्रुओं के (अव) दूर, संरक्षण (विश्वानि) सब (वृष्ण्या) शक्तियाँ और बल ।

व्याख्या :-

हमारे लिए महान् शक्तियाँ और सम्पदाएं कौन सी हैं?

इन्द्र पुरुष में जो भी शक्तियाँ या सम्पदाएं स्थापित होती हैं वे संयुक्त उपयोग के लिए होती हैं। आपकी सम्पदा शुभ गुणों के संरक्षण और उपभोग के लिए है, इसीलिए यह प्रसन्नता देने वाली है। जो लोग आपकी पूजा करते हैं, वे सबकी प्रसन्नता के लिए शुभ गुणों के उत्पत्तिकर्ता हैं। बांहों में स्थापित आपके वज्र अर्थात् शक्तियाँ शत्रुओं के नाश तथा उनकी शक्ति को दूर फेंकने के लिए जानी जाती हैं। बहादुर व्यक्तियों की शक्तियों का संरक्षण भी इन्हीं का कार्य है।

जीवन में सार्थकता :-

महान् शक्तियों और सम्पदाओं को कैसे प्राप्त करें?

महान् शक्तियों और सम्पदाओं का प्रयोग कैसे करें?

सभी सम्पदाओं और शक्तियों के निम्न उद्देश्य हैं :-

- (1) सध्यक – सबके लिए, संयुक्त रूप से प्रयोग करने हेतु ।
- (2) सोमपीथाय – शुभ गुणों का प्रयोग और संरक्षण करने के लिए ।
- (3) वृश्च शत्रोः; अव विश्वानि – शत्रुओं को नष्ट करने के लिए तथा बहादुर व्यक्तियों की शक्तियों का संरक्षण करने के लिए ।
- (4) राधः – सभी सम्पदा तथा शक्तियाँ परमात्मा की पूजा से प्राप्त होती हैं।

अतः प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा की सच्ची पूजा ही करनी चाहिए। जिससे वह उसकी शक्तियाँ, बल तथा सम्पदाएँ प्राप्त कर सके। उसके बाद उन उपलब्धियों का प्रयोग इस मन्त्र की दिव्यताओं के साथ ही करना चाहिए। जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्रणी लोगों विशेष रूप से राजनेताओं, धन-सम्पन्न लोगों, ज्ञानवान् विद्वानों को इसी सिद्धान्त का अनुसरण करना चाहिए। सच्ची पूजा ही महान् और दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करवाती हैं, जिनका प्रयोग यज्ञ कार्यों में किया जाना चाहिए।



ऋग्वेद 1.51.7

त्वे विश्वा तविषी सध्यग्निता तव राधः सोमपीथाय हर्षते ।
तव वज्ञशिचकिते बाह्वोर्हितो वृश्चा शत्रोरव विश्वानि वृष्ण्या ॥ 7 ॥

(त्वे) आप में (विश्वा) सब (तविषी) शक्तियां और बल (सध्यक) सबके लिए, संयुक्त रूप से प्रयोग करने हेतु (हिता) स्थापित (तव) आपकी (राधः) सम्पदा, परमात्मा की पूजा करने वाला व्यक्ति (सोमपीथाय) शुभ गुणों का प्रयोग और संरक्षण करने के लिए (हर्षते) प्रसन्नता देने वाले (तव) आपके (वज्ञः) वज्ञ (चिकिते) जाने जाते हैं (बाह्वो) भुजाओं में (हितः) स्थापित है (वृश्च) नष्ट करो (शत्रोः) शत्रुओं के (अव) दूर, संरक्षण (विश्वानि) सब (वृष्ण्या) शक्तियाँ और बल ।

व्याख्या :-

हमारे लिए महान् शक्तियाँ और सम्पदाएं कौन सी हैं?

इन्द्र पुरुष में जो भी शक्तियाँ या सम्पदाएं स्थापित होती हैं वे संयुक्त उपयोग के लिए होती हैं। आपकी सम्पदा शुभ गुणों के संरक्षण और उपभोग के लिए है, इसीलिए यह प्रसन्नता देने वाली है। जो लोग आपकी पूजा करते हैं, वे सबकी प्रसन्नता के लिए शुभ गुणों के उत्पत्तिकर्ता हैं। बांहों में स्थापित आपके वज्ञ अर्थात् शक्तियाँ शत्रुओं के नाश तथा उनकी शक्ति को दूर फेंकने के लिए जानी जाती हैं। बहादुर व्यक्तियों की शक्तियों का संरक्षण भी इन्हीं का कार्य है।

जीवन में सार्थकता :-

महान् शक्तियों और सम्पदाओं को कैसे प्राप्त करें?

महान् शक्तियों और सम्पदाओं का प्रयोग कैसे करें?

सभी सम्पदाओं और शक्तियों के निम्न उद्देश्य हैं :-

- (1) सध्यक – सबके लिए, संयुक्त रूप से प्रयोग करने हेतु ।
- (2) सोमपीथाय – शुभ गुणों का प्रयोग और संरक्षण करने के लिए ।
- (3) वृश्च शत्रोः; अव विश्वानि – शत्रुओं को नष्ट करने के लिए तथा बहादुर व्यक्तियों की शक्तियों का संरक्षण करने के लिए ।
- (4) राधः – सभी सम्पदा तथा शक्तियाँ परमात्मा की पूजा से प्राप्त होती हैं।

अतः प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा की सच्ची पूजा ही करनी चाहिए। जिससे वह उसकी शक्तियाँ, बल तथा सम्पदाएँ प्राप्त कर सके। उसके बाद उन उपलब्धियों का प्रयोग इस मन्त्र की दिव्यताओं के साथ ही करना चाहिए। जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्रणी लोगों विशेष रूप से राजनेताओं, धन–सम्पन्न लोगों, ज्ञानवान् विद्वानों को इसी सिद्धान्त का अनुसरण करना चाहिए। सच्ची पूजा ही महान् और दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करवाती हैं, जिनका प्रयोग यज्ञ कार्यों में किया जाना चाहिए।



ऋग्वेद 1.51.8

वि जानीह्यार्यन्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् ।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ॥ ८ ॥

(विजानीहि) जानों (आर्यान्) श्रेष्ठ (लोग तथा विचार) (ये) जो (च) और (दस्यवः) धूर्त (बर्हिष्मते) शुभ गुणों और पूर्ण ज्ञान के लिए (रन्धय) नष्ट करो (शासत) शासन करो, प्रेरणा करो (अव्रतान्) संकल्पों से शून्य (शाकी) शक्तियाँ और बल (भव) स्थापित (यजमानस्य) यज्ञ कार्यों को करने वालों के लिए (चोदिता) प्रेरणादायक (विश्वा इत्) वे सब (यज्ञ कार्य) (ते) आपकी संगति में (सधमादेषु) संयुक्त रूप से (चाकन) इच्छा करते हैं।

व्याख्या :-

धूर्त लोगों के साथ कैसे व्यवहार करें?

श्रेष्ठ व्यक्तियों और विचारों को जानना चाहिए। इसी प्रकार धूर्त व्यक्तियों और विचारों को भी जानना चाहिए। शुभ गुणों और पूर्ण ज्ञान के लिए ऐसे लोगों का नाश कर दो जो व्रतरहित हैं। इनके ऊपर शासन करो और उन्हें प्रेरित करो। शक्तियों और बलों की स्थापना करो तथा उन्हें यज्ञ करने के लिए प्रेरित करो। यह कार्य वही कर सकते हैं जो ऐसी इच्छा करते हैं और आपकी संगति में रहते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

श्रेष्ठता का ध्यान कहाँ पर एकाग्र होना चाहिए?

यह मन्त्र भी इन्द्र के चारों पक्षों पर समान रूप से लागू होता है अर्थात् परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक।

एक इन्द्र व्यक्ति से यह अपेक्षा होती है कि वह इसकी जानकारी रखे कि उसके निकट कौन श्रेष्ठ है और कौन धूर्त है। इन्द्र श्रेष्ठता को शक्तिशाली बनाता है और धूर्त व्यक्ति को सुधरने की प्रेरणा देता है या विनाश का सामना करने के लिए ललकारता है।

इसके बाद श्रेष्ठ व्यक्ति की प्रेरणा और शक्ति केवल यज्ञ कार्यों को करके परमात्मा की संगति की अनुभूति प्राप्त करने में ही लगती है।



ऋग्वेद 1.51.8

वि जानीह्यार्यन्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् ।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ॥ ८ ॥

(विजानीहि) जानों (आर्यान्) श्रेष्ठ (लोग तथा विचार) (ये) जो (च) और (दस्यवः) धूर्त (बर्हिष्मते) शुभ गुणों और पूर्ण ज्ञान के लिए (रन्धय) नष्ट करो (शासत) शासन करो, प्रेरणा करो (अव्रतान्) संकल्पों से शून्य (शाकी) शक्तियाँ और बल (भव) स्थापित (यजमानस्य) यज्ञ कार्यों को करने वालों के लिए (चोदिता) प्रेरणादायक (विश्वा इत्) वे सब (यज्ञ कार्य) (ते) आपकी संगति में (सधमादेषु) संयुक्त रूप से (चाकन) इच्छा करते हैं।

व्याख्या :-

धूर्त लोगों के साथ कैसे व्यवहार करें?

श्रेष्ठ व्यक्तियों और विचारों को जानना चाहिए। इसी प्रकार धूर्त व्यक्तियों और विचारों को भी जानना चाहिए। शुभ गुणों और पूर्ण ज्ञान के लिए ऐसे लोगों का नाश कर दो जो व्रतरहित हैं। इनके ऊपर शासन करो और उन्हें प्रेरित करो। शक्तियों और बलों की स्थापना करो तथा उन्हें यज्ञ करने के लिए प्रेरित करो। यह कार्य वही कर सकते हैं जो ऐसी इच्छा करते हैं और आपकी संगति में रहते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

श्रेष्ठता का ध्यान कहाँ पर एकाग्र होना चाहिए?

यह मन्त्र भी इन्द्र के चारों पक्षों पर समान रूप से लागू होता है अर्थात् परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक।

एक इन्द्र व्यक्ति से यह अपेक्षा होती है कि वह इसकी जानकारी रखे कि उसके निकट कौन श्रेष्ठ है और कौन धूर्त है। इन्द्र श्रेष्ठता को शक्तिशाली बनाता है और धूर्त व्यक्ति को सुधरने की प्रेरणा देता है या विनाश का सामना करने के लिए ललकारता है।

इसके बाद श्रेष्ठ व्यक्ति की प्रेरणा और शक्ति केवल यज्ञ कार्यों को करके परमात्मा की संगति की अनुभूति प्राप्त करने में ही लगती है।



ऋग्वेद 1.51.9

अनुव्रताय रन्धयन्नप्रतानाभूमिरिन्द्रः शनथयन्नाभुवः ।
वृद्धस्य चिद्वर्धतो द्यामिनक्षतः स्तवानो वप्नो वि जघान सन्दिहः ॥ ९ ॥

(अनुव्रताय) संकल्पवान लोगों के लिए (रन्धयन) नष्ट करते हुए (अपव्रतान) संकल्पों से रहित (आभूमि) बहादुर योद्धाओं के साथ, परमात्मा के साथ जुड़े हुए तथा उत्तम कार्यों में लगे हुए लोगों के साथ (इन्द्रः) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (शनथयन) नष्ट करता है (अनाभुवः) परमात्मा के साथ नहीं जुड़े हुए, असामाजिक, धूर्त (वृद्धस्य चित) ज्ञान और कार्यों में श्रेष्ठ (वर्धतः) बढ़ते हुए (द्याम) सूर्य के समान ज्ञान में प्रकाशित (इनक्षतः) मार्ग पर अग्रसर (स्तवानः) प्रशंसाएं (वप्नः) अनैतिक लोग (विजघान) नष्ट (सन्दिहः) निश्चितता के साथ (क्या श्रेष्ठ है और क्या अश्रेष्ठ) ।

व्याख्या :-

इन्द्र की क्या शक्तियाँ होती हैं?

इन्द्र एक बहुआयामी शब्द है जो परमात्मा से लेकर महान् मनुष्यों पर भी सार्थक होता है। इन्द्र से अभिप्राय सूर्य भी है, जो प्रकृति की मूल शक्ति है। इन्द्र संकल्पवान लोगों के उत्थान के लिए संकल्पहीन लोगों का नाश करता है। परमात्मा तथा महान् राजा उन सब लोगों का नाश करते हैं जो संकल्पहीन हैं, क्योंकि इन्द्र का कार्य केवल संकल्पवान लोगों की रक्षा करना है।

इन्द्र शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तरों पर बहादुरी की रक्षा करता है। इसलिए इन्द्र असामाजिक तत्त्वों के साथ-साथ उन सभी का नाश करता है जो भगवान के साथ नहीं जुड़ते।

इन्द्र ज्ञान और कर्म दोनों में श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्रोत्साहित करता है।

इन्द्र उन लोगों की प्रशंसा करता है जो प्रकाशित होने के पथ पर हैं। इन्द्र इस प्रश्न पर निश्चित मत होता है कि क्या श्रेष्ठ है और क्या दुष्ट है। उस निश्चितता के साथ इन्द्र सभी अनैतिक लोगों का नाश करता है।

जीवन में सार्थकता :-

श्रेष्ठ होने के क्या लाभ हैं?

दुष्ट होने की क्या हानियाँ हैं?

इस मन्त्र का मुख्य विषय श्रेष्ठ व्यक्तियों की रक्षा है। केवल एक पूर्ण श्रेष्ठ पुरुष ही अपनी दृष्टि में तथा परमात्मा और महान् राजा सहित पूरे समाज की दृष्टि में चमकदार और प्रशंसनीय जीवन बिताता है। ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक प्रगति को प्राप्त करता है। क्योंकि परमात्मा भी उसे पसन्द करते हैं।

दूसरी तरफ अश्रेष्ठ और धूर्त व्यक्ति प्रतिक्षण चारों तरफ से विनाश का सामना करते हैं। सर्वप्रथम, वे अपनी दृष्टि में मरते हैं। द्वितीय वे महान् राजा से दण्ड प्राप्त करने के योग्य होते हैं। वे परमात्मा के

पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

द्वारा भी कभी पसन्द नहीं किये जाते। इसलिए आध्यात्मिक अनुभूति के मार्ग पर कभी प्रगति नहीं कर पाते। ऐसे धूर्त, दुष्ट और अश्रेष्ठ लोग बार-बार भिन्न-भिन्न जीवन प्राप्त करते हैं जिससे वे असंख्य दुखों और मृत्यु के रूप में अपने कर्मों के फल भोग सकें। वे जन्म और मृत्यु के चक्र में फंसे रहते हैं। जबकि श्रेष्ठ लोग अन्तत मुक्ति प्राप्त कर पाते हैं।

परमात्मा का अनुसरण करो – वह मुक्ति सुनिश्चित करेगा।

महान् राजा का अनुसरण करो – वह एक संरक्षित जीवन सुनिश्चित करेगा।

स्वयं इन्द्र बनो जिससे आप सब कुछ प्राप्त कर सको।



ऋग्वेद 1.51.9

अनुव्रताय रन्धयन्नप्रतानाभूमिरिन्द्रः शनथयन्नाभुवः ।
वृद्धस्य चिद्वर्धतो द्यामिनक्षतः स्तवानो वप्नो वि जघान सन्दिहः ॥ ९ ॥

(अनुव्रताय) संकल्पवान लोगों के लिए (रन्धयन) नष्ट करते हुए (अपव्रतान) संकल्पों से रहित (आभूमि) बहादुर योद्धाओं के साथ, परमात्मा के साथ जुड़े हुए तथा उत्तम कार्यों में लगे हुए लोगों के साथ (इन्द्रः) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (शनथयन) नष्ट करता है (अनाभुवः) परमात्मा के साथ नहीं जुड़े हुए, असामाजिक, धूर्त (वृद्धस्य चित) ज्ञान और कार्यों में श्रेष्ठ (वर्धतः) बढ़ते हुए (द्याम) सूर्य के समान ज्ञान में प्रकाशित (इनक्षतः) मार्ग पर अग्रसर (स्तवानः) प्रशंसाएं (वप्नः) अनैतिक लोग (विजघान) नष्ट (सन्दिहः) निश्चितता के साथ (क्या श्रेष्ठ है और क्या अश्रेष्ठ) ।

व्याख्या :-

इन्द्र की क्या शक्तियाँ होती हैं?

इन्द्र एक बहुआयामी शब्द है जो परमात्मा से लेकर महान् मनुष्यों पर भी सार्थक होता है। इन्द्र से अभिप्राय सूर्य भी है, जो प्रकृति की मूल शक्ति है। इन्द्र संकल्पवान लोगों के उत्थान के लिए संकल्पहीन लोगों का नाश करता है। परमात्मा तथा महान् राजा उन सब लोगों का नाश करते हैं जो संकल्पहीन हैं, क्योंकि इन्द्र का कार्य केवल संकल्पवान लोगों की रक्षा करना है।

इन्द्र शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तरों पर बहादुरी की रक्षा करता है। इसलिए इन्द्र असामाजिक तत्त्वों के साथ-साथ उन सभी का नाश करता है जो भगवान के साथ नहीं जुड़ते।

इन्द्र ज्ञान और कर्म दोनों में श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्रोत्साहित करता है।

इन्द्र उन लोगों की प्रशंसा करता है जो प्रकाशित होने के पथ पर हैं। इन्द्र इस प्रश्न पर निश्चित मत होता है कि क्या श्रेष्ठ है और क्या दुष्ट है। उस निश्चितता के साथ इन्द्र सभी अनैतिक लोगों का नाश करता है।

जीवन में सार्थकता :-

श्रेष्ठ होने के क्या लाभ हैं?

दुष्ट होने की क्या हानियाँ हैं?

इस मन्त्र का मुख्य विषय श्रेष्ठ व्यक्तियों की रक्षा है। केवल एक पूर्ण श्रेष्ठ पुरुष ही अपनी दृष्टि में तथा परमात्मा और महान् राजा सहित पूरे समाज की दृष्टि में चमकदार और प्रशंसनीय जीवन बिताता है। ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक प्रगति को प्राप्त करता है। क्योंकि परमात्मा भी उसे पसन्द करते हैं।

दूसरी तरफ अश्रेष्ठ और धूर्त व्यक्ति प्रतिक्षण चारों तरफ से विनाश का सामना करते हैं। सर्वप्रथम, वे अपनी दृष्टि में मरते हैं। द्वितीय वे महान् राजा से दण्ड प्राप्त करने के योग्य होते हैं। वे परमात्मा के



द्वारा भी कभी पसन्द नहीं किये जाते। इसलिए आध्यात्मिक अनुभूति के मार्ग पर कभी प्रगति नहीं कर पाते। ऐसे धूर्त, दुष्ट और अश्रेष्ठ लोग बार-बार भिन्न-भिन्न जीवन प्राप्त करते हैं जिससे वे असंख्य दुखों और मृत्यु के रूप में अपने कर्मों के फल भोग सकें। वे जन्म और मृत्यु के चक्र में फंसे रहते हैं। जबकि श्रेष्ठ लोग अन्तत मुक्ति प्राप्त कर पाते हैं।

परमात्मा का अनुसरण करो – वह मुक्ति सुनिश्चित करेगा।

महान् राजा का अनुसरण करो – वह एक संरक्षित जीवन सुनिश्चित करेगा।

स्वयं इन्द्र बनो जिससे आप सब कुछ प्राप्त कर सको।



ऋग्वेद 1.51.10

तक्षद्यत्त उशना सहसा सहो वि रोदसी मज्जना बाधते शवः ।
आ त्वा वातस्य नृमणो मनोयुज आ पूर्यमाणमवहन्नभि श्रवः ॥ 10 ॥

(तक्षद्यत्त) तेज करने वाला (एत) यदि (उशना) सबके द्वारा कामना योग्य (ईश्वर) (सहसा) अपनी शक्तियों के साथ (सहः) आपकी शक्तियाँ (वि – बाधते से पूर्व लगाकर) (रोदसी) भूमि और अन्तरिक्ष को (मज्जना) शुद्ध करने वाली शक्तियों के साथ (बाधते – वि बाधते) हलचल मचाना (शवः) आपकी शक्तियाँ (आ – वहन से पूर्व लगाकर) (त्वा) आपका (वातस्य) वायु के समान शक्तियों के लिए, आत्मा की शक्ति के लिए (नृमणः) सबको अपना मन देने वाला (मनोयुजः) मन अर्थात् सभी इन्द्रियों के साथ जुड़कर (आपूर्यमाणम्) पूर्ण करते हुए (वहन – आ वहन) उपलब्ध कराते हैं (अभि) की ओर (श्रवः) सुनने योग्य (ज्ञान तथा प्रसिद्धि में) ।

व्याख्या :-

संकल्पों की रक्षा का क्या परिणाम होता है?

यदि उशना, सबके द्वारा कामना किये जाने वाला परमात्मा अपनी शक्तियों से आपकी शक्तियों को तेज करता है तो आपकी शक्तियाँ धरती और अन्तरिक्ष को भी आपके शुद्ध कार्यों से डरा सकती हैं। नृमण का अर्थ है जो अपना मन सबको देता है अर्थात् सबके उत्थान के लिए बराबर कार्य करता है। आप अपनी आत्मा की शक्ति से ही ऐसा कर सकते हो जैसा मन की शक्तियों से करते हैं। आप अपनी सभी इन्द्रियों के साथ मन की शक्तियों को संयुक्त करके ऐसा कर सकते हो। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण हो सकता है और आपको ऐसा ज्ञान और प्रसिद्धि उपलब्ध करायेगा जो सुनने के योग्य होती है। इन्द्र के द्वारा अपने संकल्पों की रक्षा का ही यह परिणाम होता है।

जीवन में सार्थकता :-

सर्वोच्च अधिकारियों की शक्तियाँ और आशीर्वाद कैसे प्राप्त करें?

सर्वोच्च दिव्यता की शक्तियाँ और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए योग्यता का पहला कदम है कि आपको एक इन्द्र होना चाहिए। एक इन्द्र के रूप में स्थापित होने के बाद ही आप अपने संकल्पों की रक्षा कर सकते हो। तभी जीवन के किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च अधिकारी एक इन्द्र को ही आशीर्वाद और शक्ति प्रदान करते हैं। माता-पिता भी ऐसे ही बच्चे पर विश्वास करते हैं और आशीर्वाद देते हैं जो एक संकल्पवान् इन्द्र होता है।



ऋग्वेद 1.51.10

तक्षद्यत्त उशना सहसा सहो वि रोदसी मज्जना बाधते शवः ।
आ त्वा वातस्य नृमणो मनोयुज आ पूर्यमाणमवहन्नभि श्रवः ॥ 10 ॥

(तक्षद्यत्त) तेज करने वाला (एत) यदि (उशना) सबके द्वारा कामना योग्य (ईश्वर) (सहसा) अपनी शक्तियों के साथ (सहः) आपकी शक्तियाँ (वि – बाधते से पूर्व लगाकर) (रोदसी) भूमि और अन्तरिक्ष को (मज्जना) शुद्ध करने वाली शक्तियों के साथ (बाधते – वि बाधते) हलचल मचाना (शवः) आपकी शक्तियाँ (आ – वहन से पूर्व लगाकर) (त्वा) आपका (वातस्य) वायु के समान शक्तियों के लिए, आत्मा की शक्ति के लिए (नृमणः) सबको अपना मन देने वाला (मनोयुजः) मन अर्थात् सभी इन्द्रियों के साथ जुड़कर (आपूर्यमाणम्) पूर्ण करते हुए (वहन – आ वहन) उपलब्ध कराते हैं (अभि) की ओर (श्रवः) सुनने योग्य (ज्ञान तथा प्रसिद्धि में) ।

व्याख्या :-

संकल्पों की रक्षा का क्या परिणाम होता है?

यदि उशना, सबके द्वारा कामना किये जाने वाला परमात्मा अपनी शक्तियों से आपकी शक्तियों को तेज करता है तो आपकी शक्तियाँ धरती और अन्तरिक्ष को भी आपके शुद्ध कार्यों से डरा सकती हैं। नृमण का अर्थ है जो अपना मन सबको देता है अर्थात् सबके उत्थान के लिए बराबर कार्य करता है। आप अपनी आत्मा की शक्ति से ही ऐसा कर सकते हो जैसा मन की शक्तियों से करते हैं। आप अपनी सभी इन्द्रियों के साथ मन की शक्तियों को संयुक्त करके ऐसा कर सकते हो। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण हो सकता है और आपको ऐसा ज्ञान और प्रसिद्धि उपलब्ध करायेगा जो सुनने के योग्य होती है। इन्द्र के द्वारा अपने संकल्पों की रक्षा का ही यह परिणाम होता है।

जीवन में सार्थकता :-

सर्वोच्च अधिकारियों की शक्तियाँ और आशीर्वाद कैसे प्राप्त करें?

सर्वोच्च दिव्यता की शक्तियाँ और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए योग्यता का पहला कदम है कि आपको एक इन्द्र होना चाहिए। एक इन्द्र के रूप में स्थापित होने के बाद ही आप अपने संकल्पों की रक्षा कर सकते हो। तभी जीवन के किसी भी क्षेत्र में सर्वोच्च अधिकारी एक इन्द्र को ही आशीर्वाद और शक्ति प्रदान करते हैं। माता-पिता भी ऐसे ही बच्चे पर विश्वास करते हैं और आशीर्वाद देते हैं जो एक संकल्पवान् इन्द्र होता है।



ऋग्वेद 1.51.11

मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रो वडकू वडकुतराधि तिष्ठति ।
उग्रो यथिं निरपः स्त्रोतसासृजद्वि शुष्णस्य दृहिता ऐरयत्पुरः ॥ 11 ॥

(मन्दिष्टः) आनन्द का अनुभव करने वाला (यत) जब (उशने) सबके द्वारा कामना योग्य (काव्ये) अपनी सर्वोच्च कविता में (सचान्) अपने साथ (इन्द्रः) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (वडकू) कुटिल (वडकुतरा) कुटिल के ऊपर (अधि तिष्ठति) नियंत्रण करता है (उग्रः) उग्र, सूर्य (यथिम्) मार्ग, मेघ (निः) निश्चित रूप से (अपः) कार्य, जल (स्त्रोतसा) मूल स्रोत के साथ (असृजत) उत्पन्न करता है, जोड़ता है (वि – एरयत से पूर्व लगाकर) (शुष्णस्य) अहंकार और क्रोध का, शुष्कता का (दृहिता) सुदृढ़ (एरयत) वि एरयत विशेष रूप से कंपित करता है (पुरः) नगर, किले ।

व्याख्या :-

दिव्य कविता के आनन्द की अनुभूति किसको होती है?
दिव्य सम्पर्क का क्या परिणाम होता है?

ऋग्वेद 1.51.9 तथा 1.51.10 के अनुसार, अपने संकल्पों की रक्षा करते हुए जब कोई व्यक्ति स्वयं को इन्द्र के रूप में स्थापित कर लेता है तो वह उस सर्वोच्च और सबके द्वारा कामना किये जाने योग्य दिव्य कविता के आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है ।

- (क) वह धूर्तों से भी धूर्त लोगों पर नियंत्रण कर लेता है ।
- (ख) अपने मार्ग पर कार्य करते हुए वह निश्चित रूप से उग्र होता है ।
- (ग) वह स्वयं को और अपने कार्यों को मूल स्रोत के साथ संयुक्त करता है ।
- (घ) वह अहंकार और क्रोध की मजबूत पकड़ के ऊपर आरुङ्घ होता है ।

जीवन में सार्थकता :-

अपने सर्वोच्च अधिकारी के साथ लगातार सम्पर्क बनाये रखने के क्या परिणाम होते हैं?

जो भी व्यक्ति अपने सर्वोच्च अधिकारी के आशीर्वाद और आनन्दमयी संगति का अधिकारी बनता है, उसमें निम्न लक्षण आने स्वाभाविक होते हैं –

- (क) वह धूर्त मनों पर नियंत्रण करने के लिए योग्य और अधिकृत होता है ।
- (ख) वह अपने कार्य बिना चुनौती के दृढ़ संकल्पों के साथ पूरे करता है ।
- (ग) वह अपने कार्यों को सदैव सर्वोच्च अधिकारियों के सम्पर्क में रखता है ।
- (घ) वह सफलतापूर्वक अपने अहंकार और क्रोध पर नियंत्रण स्थापित करता है ।



ऋग्वेद 1.51.11

मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रो वडकू वडकुतराधि तिष्ठति ।
उग्रो यथिं निरपः स्त्रोतसासृजद्वि शुष्णस्य दृहिता ऐरयत्पुरः ॥ 11 ॥

(मन्दिष्टः) आनन्द का अनुभव करने वाला (यत) जब (उशने) सबके द्वारा कामना योग्य (काव्ये) अपनी सर्वोच्च कविता में (सचान्) अपने साथ (इन्द्रः) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (वडकू) कुटिल (वडकुतरा) कुटिल के ऊपर (अधि तिष्ठति) नियंत्रण करता है (उग्रः) उग्र, सूर्य (यथिम्) मार्ग, मेघ (निः) निश्चित रूप से (अपः) कार्य, जल (स्त्रोतसा) मूल स्रोत के साथ (असृजत) उत्पन्न करता है, जोड़ता है (वि – एरयत से पूर्व लगाकर) (शुष्णस्य) अहंकार और क्रोध का, शुष्कता का (दृहिता) सुदृढ़ (एरयत) वि एरयत रूप से कंपित करता है (पुरः) नगर, किले ।

व्याख्या :-

दिव्य कविता के आनन्द की अनुभूति किसको होती है?
दिव्य सम्पर्क का क्या परिणाम होता है?

ऋग्वेद 1.51.9 तथा 1.51.10 के अनुसार, अपने संकल्पों की रक्षा करते हुए जब कोई व्यक्ति स्वयं को इन्द्र के रूप में स्थापित कर लेता है तो वह उस सर्वोच्च और सबके द्वारा कामना किये जाने योग्य दिव्य कविता के आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है ।

- (क) वह धूर्तों से भी धूर्त लोगों पर नियंत्रण कर लेता है ।
- (ख) अपने मार्ग पर कार्य करते हुए वह निश्चित रूप से उग्र होता है ।
- (ग) वह स्वयं को और अपने कार्यों को मूल स्रोत के साथ संयुक्त करता है ।
- (घ) वह अहंकार और क्रोध की मजबूत पकड़ के ऊपर आरुढ़ होता है ।

जीवन में सार्थकता :-

अपने सर्वोच्च अधिकारी के साथ लगातार सम्पर्क बनाये रखने के क्या परिणाम होते हैं?

जो भी व्यक्ति अपने सर्वोच्च अधिकारी के आशीर्वाद और आनन्दमयी संगति का अधिकारी बनता है, उसमें निम्न लक्षण आने स्वाभाविक होते हैं –

- (क) वह धूर्त मनों पर नियंत्रण करने के लिए योग्य और अधिकृत होता है ।
- (ख) वह अपने कार्य बिना चुनौती के दृढ़ संकल्पों के साथ पूरे करता है ।
- (ग) वह अपने कार्यों को सदैव सर्वोच्च अधिकारियों के सम्पर्क में रखता है ।
- (घ) वह सफलतापूर्वक अपने अहंकार और क्रोध पर नियंत्रण स्थापित करता है ।



ऋग्वेद 1.51.12

आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु मन्दसे ।
इन्द्र यथा सुतासोमेषु चाकनोऽनर्वाणं श्लोकमा रोहसे दिवि ॥ 12 ॥

(आ – तिष्ठसि से पूर्व लगाकर) (स्म) निश्चित रूप से (रथम्) शरीर रूपी रथ को (वृषपाणेषु) प्रकृति के शुभ गुणों का पान करने के लिए (तिष्ठसि – आ तिष्ठसि) आप शासन करो (शार्यातस्य) बहादुर लोगों के जीवन में (प्रभृता) धारण होते हो (येषु) उसके साथ (मन्दसे) हर्ष का अनुभव करते हो (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (यथा) जैसे कि (सुतसोमेषु) उत्पन्न हुए इन शुभ गुणों के लिए (चाकनः) कामना करते हैं (अनर्वाणम्) नष्ट न होने योग्य (श्लोकमा) यश (आरोहसे) प्राप्त करता है (दिवि) प्रकाश ।

व्याख्या :-

परमात्मा तथा आत्मा किस लक्ष्य से मानव शरीर पर शासन करते हैं?

निश्चित रूप से आप इस शरीर रथ पर शासन करते हो जिससे आप दिव्य शुभ गुणों का पान कर सको। जब यह दिव्य शुभ गुण एक बहादुर व्यक्ति के जीवन में धारण होते हैं और स्थापित हो जाते हैं तो आप प्रसन्न होते हो।

जैसे एक इन्द्रियों का नियंत्रक इन शुभ गुणों की कामना करता है जो नाश रहित हों तो आपकी प्रशंसा होती है और ज्ञान का प्रकाश बढ़ता है।

जीवन में सार्थकता :-

शुभ गुण और वैदिक विवेक क्या उपलब्ध करवाते हैं?

परमात्मा तथा आत्मा दोनों की मुख्य कामना यही होती है कि वे दिव्य प्राकृतिक शुभ गुणों की स्थापना और उनका शासन इस शरीर रथ पर देखना चाहते हैं। प्रत्येक मनुष्य निश्चित रूप से शुभ गुणों और वैदिक मूल्यों पर प्रसन्न होता है, क्योंकि इससे उसे महान् प्रसिद्धि तथा सत्य ज्ञान का प्रकाश मिलता है। यही मानव जीवन का सारगर्भित लक्ष्य और परमात्मा के प्रकाश की अनुभूति प्राप्त करने की मूल योग्यता है कि दिव्य शुभ गुण और वैदिक मूल्य हमारे जीवन पर शासन करें।



ऋग्वेद 1.51.12

आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु मन्दसे ।
इन्द्र यथा सुतासोमेषु चाकनोऽनर्वाणं श्लोकमा रोहसे दिवि ॥ 12 ॥

(आ – तिष्ठसि से पूर्व लगाकर) (स्म) निश्चित रूप से (रथम्) शरीर रूपी रथ को (वृषपाणेषु) प्रकृति के शुभ गुणों का पान करने के लिए (तिष्ठसि – आ तिष्ठसि) आप शासन करो (शार्यातस्य) बहादुर लोगों के जीवन में (प्रभृता) धारण होते हो (येषु) उसके साथ (मन्दसे) हर्ष का अनुभव करते हो (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (यथा) जैसे कि (सुतसोमेषु) उत्पन्न हुए इन शुभ गुणों के लिए (चाकनः) कामना करते हैं (अनर्वाणम्) नष्ट न होने योग्य (श्लोकमा) यश (आरोहसे) प्राप्त करता है (दिवि) प्रकाश ।

व्याख्या :-

परमात्मा तथा आत्मा किस लक्ष्य से मानव शरीर पर शासन करते हैं?

निश्चित रूप से आप इस शरीर रथ पर शासन करते हो जिससे आप दिव्य शुभ गुणों का पान कर सको। जब यह दिव्य शुभ गुण एक बहादुर व्यक्ति के जीवन में धारण होते हैं और स्थापित हो जाते हैं तो आप प्रसन्न होते हो।

जैसे एक इन्द्रियों का नियंत्रक इन शुभ गुणों की कामना करता है जो नाश रहित हों तो आपकी प्रशंसा होती है और ज्ञान का प्रकाश बढ़ता है।

जीवन में सार्थकता :-

शुभ गुण और वैदिक विवेक क्या उपलब्ध करवाते हैं?

परमात्मा तथा आत्मा दोनों की मुख्य कामना यही होती है कि वे दिव्य प्राकृतिक शुभ गुणों की स्थापना और उनका शासन इस शरीर रथ पर देखना चाहते हैं। प्रत्येक मनुष्य निश्चित रूप से शुभ गुणों और वैदिक मूल्यों पर प्रसन्न होता है, क्योंकि इससे उसे महान् प्रसिद्धि तथा सत्य ज्ञान का प्रकाश मिलता है। यही मानव जीवन का सारगर्भित लक्ष्य और परमात्मा के प्रकाश की अनुभूति प्राप्त करने की मूल योग्यता है कि दिव्य शुभ गुण और वैदिक मूल्य हमारे जीवन पर शासन करें।



ऋग्वेद 1.51.13

अददा अर्भा महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते ।
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेता ते सवनेषु प्रवाच्या ॥ 13 ॥

(अददा) दिया (अर्भाम्) छोटा ज्ञान (छोटा बनने के लिए ज्ञान) (महान् वचस्यवे) उनके लिए जो ज्ञान की महान् कामना करते हैं (कक्षीवते) विशेषज्ञता के लिए (वृचयाम्) विशेषज्ञ ज्ञान (इन्द्र) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (सुन्वते) उपदेशक के लिए (मेना) समर्पित ज्ञान (अभवः) होवो (वृषणश्वस्य) शक्तिशाली के लिए (सुक्रतो) उत्तम कार्य करते हुए (विश्व इत) ये सब (ते) आपके (सवनेषु) जीवन की सभी अवस्थाओं में (प्रवाच्या) अच्छे प्रकार से प्रवचन किये गये ।

व्याख्या :-

ज्ञान के भिन्न-भिन्न स्तरों को प्राप्त करने के लिए जीवन की तीन अवस्थाएँ कौन सी हैं?

जीवन की तीन अवस्थाएँ तथा उनके अनुसार ज्ञान के तीन स्तर इस मन्त्र में इस प्रकार अभिव्यक्त किये गये हैं ।

(क) ब्रह्मचारी जीवन में ज्ञान की महान् इच्छा होती है । इस अवस्था में छोटा ज्ञान दिया जाता है अर्थात् छोटे होने का ज्ञान, वृद्ध लोगों के लिए विनम्र तथा सम्मान सहित व्यवहार का ज्ञान ।

(ख) गृहस्थ जीवन में प्रत्येक व्यक्ति विशेषज्ञ ज्ञान प्राप्त करता है ।

(ग) वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम में व्यक्ति को धार्मिक ज्ञान की आवश्यकता होती है । जिससे वह दिव्य शक्तियाँ प्राप्त कर सके ।

अतः जीवन की सभी अवस्थाओं में लोगों को उत्तम कार्यों के लिए उत्तम ज्ञान दिया जाता है ।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा किस प्रकार हमारे ज्ञान का स्तर निर्धारित करते हैं?

परमात्मा सबको अपनी-अपनी परिपक्वता के स्तर पर ज्ञान देते हैं । हर स्तर पर हम ज्ञान में प्रगति प्राप्त करते हैं – छोटा ज्ञान, विशेषज्ञता वाला ज्ञान और धार्मिक ज्ञान ।

(क) छोटे ज्ञान से हम छोटे और विनम्र रहकर सीखते हैं ।

(ख) विशेषज्ञ ज्ञान से हम समाज की जिम्मेदारी को धारण करते हैं ।

(ग) धार्मिक ज्ञान से हम अपने जीवन को परमात्मा के प्रति समर्पित करते हैं ।



ऋग्वेद 1.51.13

अददा अर्भा महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते ।
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेता ते सवनेषु प्रवाच्या ॥ 13 ॥

(अददा) दिया (अर्भाम्) छोटा ज्ञान (छोटा बनने के लिए ज्ञान) (महान् वचस्यवे) उनके लिए जो ज्ञान की महान् कामना करते हैं (कक्षीवते) विशेषज्ञता के लिए (वृचयाम्) विशेषज्ञ ज्ञान (इन्द्र) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (सुन्वते) उपदेशक के लिए (मेना) समर्पित ज्ञान (अभवः) होवो (वृषणश्वस्य) शक्तिशाली के लिए (सुक्रतो) उत्तम कार्य करते हुए (विश्व इत) ये सब (ते) आपके (सवनेषु) जीवन की सभी अवस्थाओं में (प्रवाच्या) अच्छे प्रकार से प्रवचन किये गये ।

व्याख्या :-

ज्ञान के भिन्न-भिन्न स्तरों को प्राप्त करने के लिए जीवन की तीन अवस्थाएँ कौन सी हैं?

जीवन की तीन अवस्थाएँ तथा उनके अनुसार ज्ञान के तीन स्तर इस मन्त्र में इस प्रकार अभिव्यक्त किये गये हैं ।

(क) ब्रह्मचारी जीवन में ज्ञान की महान् इच्छा होती है । इस अवस्था में छोटा ज्ञान दिया जाता है अर्थात् छोटे होने का ज्ञान, वृद्ध लोगों के लिए विनम्र तथा सम्मान सहित व्यवहार का ज्ञान ।

(ख) गृहस्थ जीवन में प्रत्येक व्यक्ति विशेषज्ञ ज्ञान प्राप्त करता है ।

(ग) वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम में व्यक्ति को धार्मिक ज्ञान की आवश्यकता होती है । जिससे वह दिव्य शक्तियाँ प्राप्त कर सके ।

अतः जीवन की सभी अवस्थाओं में लोगों को उत्तम कार्यों के लिए उत्तम ज्ञान दिया जाता है ।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा किस प्रकार हमारे ज्ञान का स्तर निर्धारित करते हैं?

परमात्मा सबको अपनी-अपनी परिपक्वता के स्तर पर ज्ञान देते हैं । हर स्तर पर हम ज्ञान में प्रगति प्राप्त करते हैं – छोटा ज्ञान, विशेषज्ञता वाला ज्ञान और धार्मिक ज्ञान ।

(क) छोटे ज्ञान से हम छोटे और विनम्र रहकर सीखते हैं ।

(ख) विशेषज्ञ ज्ञान से हम समाज की जिम्मेदारी को धारण करते हैं ।

(ग) धार्मिक ज्ञान से हम अपने जीवन को परमात्मा के प्रति समर्पित करते हैं ।



ऋग्वेद 1.51.14

इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके पज्जेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः ।
अश्वयुर्गव्यू रथयुर्वसूयुरिन्द्र इद्रायः क्षयति प्रयन्ता ॥ 14 ॥

(इन्द्रः) बुराईयों और शत्रुओं का नाशक (अश्रायि) स्वीकार किया गया (सुध्यः) उत्तम ध्यान के लिए (निरेके) बुराईयों और रोगों को रोकने के लिए, बिना किसी संघि के (पज्जेषु) श्रद्धालुओं के जीवन में (स्तोमः) परमात्मा का गुणगान करने वाले (दुर्यः) द्वारों में (न) जैसे (यूपः) स्तम्भ (अश्वयुः) अश्वों (कर्मेन्द्रियों) का नियंत्रक (गव्युः) गौवों (ज्ञानेन्द्रियों) का नियंत्रक (रथयुः) रथों (शरीर) का नियंत्रक और देने वाला (वस्युः) निवास का देने वाला (इन्द्रः) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (इत) वह (रायः) सभी सम्पदाओं का (क्षयति) देने वाला और स्वामी (प्रयन्ता) हमारी योग्यता के अनुसार ।

व्याख्या :-

सभी बुराईयों और शत्रुओं का नाशक कौन है?
परमात्मा सम्पदा का वितरण कैसे करते हैं?

इन्द्र, बुराईयों और शत्रुओं का नाशक, हमारे द्वारा स्वीकार किया जाता है। जिससे बिना किसी संदेह के वह हमारी बुराईयों और रोगों का नाश कर सके और हम ध्यान—साधना कर सकें। जो लोग परमात्मा के श्रद्धालु हैं और पूजा करते हैं वे उनकी स्तुति का गान करते हैं। ऐसे लोग द्वारों के स्तम्भ के समान हैं। इन्द्र अर्थात् परमात्मा अश्वों (कर्मेन्द्रियों) का नियंत्रक है, गौवों (ज्ञानेन्द्रियों) का नियंत्रक है, इस रथ (शरीर) का नियंत्रक है, सभी को आवास देने वाला है और सभी सम्पदाओं का दाता और मालिक है। वह यह सब हमारे कर्म कोष अर्थात् हमारी योग्यता के अनुसार ही प्रदान करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

क्या हमें किसी भी वस्तु के लिए भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए?
क्या भगवान की पूजा और भगवान से प्रेम करना आवश्यक है?

परमात्मा की पूजा और परमात्मा से प्रेम की तुलना द्वारों के स्तम्भों से की गई है। यदि द्वारों के कोई स्तम्भ न हों तो वास्तव में घर के अन्दर कोई द्वार ही नहीं होगा। ऐसा घर सुरक्षित नहीं होगा। जिस प्रकार स्तम्भ किसी द्वार का मुख्य आधार होते हैं, जो अवांछनीय तत्त्वों के प्रयोग को रोकता है। उसी प्रकार परमात्मा की पूजा तथा परमात्मा से प्रेम बुराईयों और शत्रुओं को हमसे दूर रखता है। परमात्मा हमारे पूर्व कर्मों के फल के रूप में हमें सब कुछ देते हैं। इसलिए हमें परमात्मा से न तो कुछ प्रार्थना करनी चाहिए और न ही कुछ मांगना चाहिए और न ही हमें परमात्मा की भक्ति तथा परमात्मा से प्रेम के मार्ग का त्याग करना चाहिए और न ही उसे भूलना चाहिए।



ऋग्वेद 1.51.14

इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके पज्जेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः ।
अश्वयुर्गव्यू रथयुर्वसूयुरिन्द्र इद्रायः क्षयति प्रयन्ता ॥ 14 ॥

(इन्द्रः) बुराईयों और शत्रुओं का नाशक (अश्रायि) स्वीकार किया गया (सुध्यः) उत्तम ध्यान के लिए (निरेके) बुराईयों और रोगों को रोकने के लिए, बिना किसी संघि के (पज्जेषु) श्रद्धालुओं के जीवन में (स्तोमः) परमात्मा का गुणगान करने वाले (दुर्यः) द्वारों में (न) जैसे (यूपः) स्तम्भ (अश्वयुः) अश्वों (कर्मेन्द्रियों) का नियंत्रक (गव्युः) गौवों (ज्ञानेन्द्रियों) का नियंत्रक (रथयुः) रथों (शरीर) का नियंत्रक और देने वाला (वस्युः) निवास का देने वाला (इन्द्रः) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (इत) वह (रायः) सभी सम्पदाओं का (क्षयति) देने वाला और स्वामी (प्रयन्ता) हमारी योग्यता के अनुसार ।

व्याख्या :-

सभी बुराईयों और शत्रुओं का नाशक कौन है?
परमात्मा सम्पदा का वितरण कैसे करते हैं?

इन्द्र, बुराईयों और शत्रुओं का नाशक, हमारे द्वारा स्वीकार किया जाता है। जिससे बिना किसी संदेह के वह हमारी बुराईयों और रोगों का नाश कर सके और हम ध्यान—साधना कर सकें। जो लोग परमात्मा के श्रद्धालु हैं और पूजा करते हैं वे उनकी स्तुति का गान करते हैं। ऐसे लोग द्वारों के स्तम्भ के समान हैं। इन्द्र अर्थात् परमात्मा अश्वों (कर्मेन्द्रियों) का नियंत्रक है, गौवों (ज्ञानेन्द्रियों) का नियंत्रक है, इस रथ (शरीर) का नियंत्रक है, सभी को आवास देने वाला है और सभी सम्पदाओं का दाता और मालिक है। वह यह सब हमारे कर्म कोष अर्थात् हमारी योग्यता के अनुसार ही प्रदान करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

क्या हमें किसी भी वस्तु के लिए भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए?
क्या भगवान की पूजा और भगवान से प्रेम करना आवश्यक है?

परमात्मा की पूजा और परमात्मा से प्रेम की तुलना द्वारों के स्तम्भों से की गई है। यदि द्वारों के कोई स्तम्भ न हों तो वास्तव में घर के अन्दर कोई द्वार ही नहीं होगा। ऐसा घर सुरक्षित नहीं होगा। जिस प्रकार स्तम्भ किसी द्वार का मुख्य आधार होते हैं, जो अवांछनीय तत्त्वों के प्रयोग को रोकता है। उसी प्रकार परमात्मा की पूजा तथा परमात्मा से प्रेम बुराईयों और शत्रुओं को हमसे दूर रखता है। परमात्मा हमारे पूर्व कर्मों के फल के रूप में हमें सब कुछ देते हैं। इसलिए हमें परमात्मा से न तो कुछ प्रार्थना करनी चाहिए और न ही कुछ मांगना चाहिए और न ही हमें परमात्मा की भक्ति तथा परमात्मा से प्रेम के मार्ग का त्याग करना चाहिए और न ही उसे भूलना चाहिए।



ऋग्वेद 1.51.15

इदं नमो वृषभाय स्वराजे सत्यशुभ्याय तवसेऽवाचि ।
अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीरा: स्मत्सूरिभिस्तव शर्मन्तस्याम ॥ 15 ॥

(इदम्) यह (नमः) नमन (वृषभाय) सुखों की वर्षा करने वाले के लिए (स्वराजे) स्व—प्रकाशमान (सत्यशुभ्याय) शाश्वत् शक्ति वाला (तवसे) सभी प्रकार से अत्यन्त शक्तिशाली (अवाचि) कहा जाता है (अस्मिन्) हम (इन्द्र) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (वृजने) इस (जीवन के) युद्ध में (सर्ववीरा:) सम्पूर्ण शक्तिशाली (स्मत) उत्तम (सूरिभिः) विद्वानों की संगति में (तव) आपकी (शर्मन्त) शरण में, संगति में (स्याम) होवो, जिवो ।

व्याख्या :-

हमें अपना नमन किसको सम्बोधित करना चाहिए?
परमात्मा की शरण में किस प्रकार से जीना चाहिए?
नमन उसको किया जाता है जो निम्न लक्षणों वाला हो :—
(1) वृषभाय — सुखों की वर्षा करने वाले के लिए,
(2) स्वराजे — स्व—प्रकाशमान,
(3) सत्यशुभ्याय — शाश्वत् शक्ति वाला,
(4) तवसे — सभी प्रकार से अत्यन्त शक्तिशाली ।

जीवन की इस पद्धति के साथ हम आपकी शरण में रहना चाहते हैं, महान् इन्द्र की संगति में निम्न प्रकार से रहना चाहते हैं :—
(1) सर्ववीरा: — सम्पूर्ण शक्तिशाली,
(2) स्मत सूरिभिः — उत्तम विद्वानों की संगति में ।

जीवन में सार्थकता : —

“संरक्षण प्राप्त करने के लिए स्तुति गान करना चाहिए ।” — क्या यह सर्वमान्य सिद्धान्त है?

परमात्मा का स्तुति गान करना चाहिए जिससे उसकी विशेष, असीम और आन्तरिक शक्तियाँ हमरा संरक्षण कर सकें । परमात्मा का संरक्षण हम परमात्मा के उत्तम विद्वानों तथा निःस्वार्थ महान् श्रद्धालुओं की संगति में ही प्राप्त कर सकते हैं ।

संरक्षण के लिए स्तुति गान परमात्मा का एक दिव्य आश्वासन है । यह सिद्धान्त स्वार्थी या अविद्वान् लोगों पर नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि यदि उनके अपने हित खतरे में हों तो ऐसे लोग कभी भी अपने सहयोगियों और हित चिन्तकों का नाश करने में भी संकोच नहीं करते ।



ऋग्वेद 1.51.15

इदं नमो वृषभाय स्वराजे सत्यशुभ्याय तवसेऽवाचि ।
अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीरा: स्मत्सूरिभिस्तव शर्मन्तस्याम ॥ 15 ॥

(इदम्) यह (नमः) नमन (वृषभाय) सुखों की वर्षा करने वाले के लिए (स्वराजे) स्व—प्रकाशमान (सत्यशुभ्याय) शाश्वत् शक्ति वाला (तवसे) सभी प्रकार से अत्यन्त शक्तिशाली (अवाचि) कहा जाता है (अस्मिन्) हम (इन्द्र) परमात्मा, सूर्य, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (वृजने) इस (जीवन के) युद्ध में (सर्ववीरा:) सम्पूर्ण शक्तिशाली (स्मत) उत्तम (सूरिभिः) विद्वानों की संगति में (तव) आपकी (शर्मन्त) शरण में, संगति में (स्याम) होवो, जिवो ।

व्याख्या :-

हमें अपना नमन किसको सम्बोधित करना चाहिए?
परमात्मा की शरण में किस प्रकार से जीना चाहिए?
नमन उसको किया जाता है जो निम्न लक्षणों वाला हो :—
(1) वृषभाय — सुखों की वर्षा करने वाले के लिए,
(2) स्वराजे — स्व—प्रकाशमान,
(3) सत्यशुभ्याय — शाश्वत् शक्ति वाला,
(4) तवसे — सभी प्रकार से अत्यन्त शक्तिशाली ।

जीवन की इस पद्धति के साथ हम आपकी शरण में रहना चाहते हैं, महान् इन्द्र की संगति में निम्न प्रकार से रहना चाहते हैं :—
(1) सर्ववीरा: — सम्पूर्ण शक्तिशाली,
(2) स्मत सूरिभिः — उत्तम विद्वानों की संगति में ।

जीवन में सार्थकता : —

“संरक्षण प्राप्त करने के लिए स्तुति गान करना चाहिए ।” — क्या यह सर्वमान्य सिद्धान्त है?

परमात्मा का स्तुति गान करना चाहिए जिससे उसकी विशेष, असीम और आन्तरिक शक्तियाँ हमरा संरक्षण कर सकें । परमात्मा का संरक्षण हम परमात्मा के उत्तम विद्वानों तथा निःस्वार्थ महान् श्रद्धालुओं की संगति में ही प्राप्त कर सकते हैं ।

संरक्षण के लिए स्तुति गान परमात्मा का एक दिव्य आश्वासन है । यह सिद्धान्त स्वार्थी या अविद्वान् लोगों पर नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि यदि उनके अपने हित खतरे में हों तो ऐसे लोग कभी भी अपने सहयोगियों और हित चिन्तकों का नाश करने में भी संकोच नहीं करते ।



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.1

त्यंसुमेषंमहयास्वर्विदं शतं यस्य सुभ्वः साक्षीरते ।
अत्यं न वाजंहवनस्यदंरथमेन्द्रंवृत्यामवसेसुवृक्तिभिः ॥

(त्यम्) यह (सुमेषम्) उत्तम गतिविधियों और सुखों की वर्षा करने वाले (महया) महिमागान, पूजा (स्वर्विदम्) आत्मा के प्रकाश को देने वाला (शतम्) सैकड़ों (असंख्य) (यस्य) जिसमें (सुभ्वः) उत्तम स्तर वाला (साक्षम्) इकट्ठे (ईरते) आगे बढ़ना, प्रगति करना (अत्यम्) यह रथ (शरीर) (न) जैसे (वाजम्) शक्ति का पुंज (हवनस्यदम्) सर्वोच्च दिव्य की पुकार पर सक्रिय होने वाला (रथम्) इस रथ को (इन्द्रम्) सर्वोच्च शक्ति परमात्मा को (वृत्याम्) आवृत करता है (अवसे) संरक्षण के लिए (सुवृक्तिभिः) पाप और दुःख।

व्याख्या :-

उत्तम गतिविधियों की वर्षा करने वाला कौन है?

आत्मा के लिए प्रकाश देने वाला कौन है?

उत्तम गतिविधियों तथा प्रसन्नता की वर्षा करने वाले की महिमागान, पूजा तथा उसका आहवान करें जो आत्मा का प्रकाश प्रदान करता है, जिसमें उत्तम स्तर वाले सैकड़ों लोग अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं और उन्नति करते हैं।

यह शरीर रथ शक्ति के एक पुंज की तरह है और सर्वोच्च दिव्य शक्ति परमात्मा के अनुसार ही इसे सक्रिय रखा जाना चाहिए। यह शरीर रथ सर्वोच्च सत्ता अर्थात् परमात्मा के आस-पास ही रहे जिससे इसका संरक्षण होता रहे और तापों तथा कष्टों का नाश होता रहे। इसका अभिप्राय है कि हमें चेतन जीवन के साथ-साथ दिव्य शक्ति की संगति में रहना चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

पापों और दुःखों के नाश तथा अपने संरक्षण के लिए इस शरीर रथ का उपयोग कैसे करें?

हमें यह अनुभूति रखनी चाहिए कि हमारे सभी कार्यों और उनके फलों की वर्षा करने वाला हमारे व्यक्तिगत जीवन के प्रकाश का मूल स्रोत है। यह शक्ति का ऐसा पुंज है जो हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों की पूर्ति करता है। हमें अपने अन्दर ही उस स्रोत की पूजा और महिमा गानी चाहिए जिससे हमारा सर्वत्र संरक्षण हो सके और हम पापों तथा दुःखों से मुक्त रहें।

अतः यह हमारा प्राथमिक कार्य होना चाहिए कि हम उस सर्वोच्च शक्ति पुंज की अपने अन्दर ही पूजा करें। जो लोग उच्च चेतना में जीते हैं वे इसी पथ का अनुसरण करते हैं। इससे हमें आध्यात्मिक सफलता के साथ-साथ पापमुक्त और दुःखमुक्त जीवन प्राप्त होगा। शक्ति के उस स्रोत को ही अपनी सभी गतिविधियों का केन्द्र बनाना चाहिए। हमारे जीवन में यह अनुभूति शाश्वत रहनी चाहिए कि ‘मैं कर्ता नहीं हूँ, परमात्मा ही सभी कार्यों का कर्ता तथा प्रेरक है।’



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.1

त्यंसुमेषंमहयास्वर्विदं शतं यस्य सुभ्वः साक्षीरते ।
अत्यं न वाजंहवनस्यदंरथमेन्द्रंवृत्यामवसेसुवृक्तिभिः ॥

(त्यम्) यह (सुमेषम्) उत्तम गतिविधियों और सुखों की वर्षा करने वाले (महया) महिमागान, पूजा (स्वर्विदम्) आत्मा के प्रकाश को देने वाला (शतम्) सैकड़ों (असंख्य) (यस्य) जिसमें (सुभ्वः) उत्तम स्तर वाला (साक्षम्) इकट्ठे (ईरते) आगे बढ़ना, प्रगति करना (अत्यम्) यह रथ (शरीर) (न) जैसे (वाजम्) शक्ति का पुंज (हवनस्यदम्) सर्वोच्च दिव्य की पुकार पर सक्रिय होने वाला (रथम्) इस रथ को (इन्द्रम्) सर्वोच्च शक्ति परमात्मा को (वृत्याम्) आवृत करता है (अवसे) संरक्षण के लिए (सुवृक्तिभिः) पाप और दुःख।

व्याख्या :-

उत्तम गतिविधियों की वर्षा करने वाला कौन है?

आत्मा के लिए प्रकाश देने वाला कौन है?

उत्तम गतिविधियों तथा प्रसन्नता की वर्षा करने वाले की महिमागान, पूजा तथा उसका आहवान करें जो आत्मा का प्रकाश प्रदान करता है, जिसमें उत्तम स्तर वाले सैकड़ों लोग अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं और उन्नति करते हैं।

यह शरीर रथ शक्ति के एक पुंज की तरह है और सर्वोच्च दिव्य शक्ति परमात्मा के अनुसार ही इसे सक्रिय रखा जाना चाहिए। यह शरीर रथ सर्वोच्च सत्ता अर्थात् परमात्मा के आस-पास ही रहे जिससे इसका संरक्षण होता रहे और तापों तथा कष्टों का नाश होता रहे। इसका अभिप्राय है कि हमें चेतन जीवन के साथ-साथ दिव्य शक्ति की संगति में रहना चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

पापों और दुःखों के नाश तथा अपने संरक्षण के लिए इस शरीर रथ का उपयोग कैसे करें?

हमें यह अनुभूति रखनी चाहिए कि हमारे सभी कार्यों और उनके फलों की वर्षा करने वाला हमारे व्यक्तिगत जीवन के प्रकाश का मूल स्रोत है। यह शक्ति का ऐसा पुंज है जो हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों की पूर्ति करता है। हमें अपने अन्दर ही उस स्रोत की पूजा और महिमा गानी चाहिए जिससे हमारा सर्वत्र संरक्षण हो सके और हम पापों तथा दुःखों से मुक्त रहें।

अतः यह हमारा प्राथमिक कार्य होना चाहिए कि हम उस सर्वोच्च शक्ति पुंज की अपने अन्दर ही पूजा करें। जो लोग उच्च चेतना में जीते हैं वे इसी पथ का अनुसरण करते हैं। इससे हमें आध्यात्मिक सफलता के साथ-साथ पापमुक्त और दुःखमुक्त जीवन प्राप्त होगा। शक्ति के उस स्रोत को ही अपनी सभी गतिविधियों का केन्द्र बनाना चाहिए। हमारे जीवन में यह अनुभूति शाश्वत रहनी चाहिए कि ‘मैं कर्ता नहीं हूँ, परमात्मा ही सभी कार्यों का कर्ता तथा प्रेरक है।’



ऋग्वेद 1.52.2

स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्रमूतिस्तविषीषुवावृद्धे ।
इन्द्रो यद् वृत्रमवधीनदीवृतमुज्ज्ञाणसिजुर्हृषाणोअन्धसा ॥

(स:) वह (पर्वतः) पर्वत (न) जैसे (धरुणेषु) ब्रतो में (अच्युतः) स्थिर (सहस्रम्) हजारों प्रकार से (ऊति) संरक्षण करता है (तविषीषु) बल (वावृद्धे) बढ़ाता है (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (यत्) जो (वृत्रम्) मन की वृत्तियाँ (अवधीत) नष्ट करता है (नदीवृतम्) नदियों में बहते हुए, तरल करना (उज्जन्) नियंत्रण में रखना (अर्णासि) वीर्य रस (जुर्हृषाणः) आनन्दित अनुभव करता है (अन्धसा) भोजन आदि पदार्थों के साथ ।

व्याख्या :-

अपने संकल्पों में स्थिरता तथा बल कैसे प्राप्त करें?

इन्द्र पुरुष का जीवन कैसा होता है?

एक बार जब शरीर रथ, सभी कालों में तथा सभी कार्यों में, सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा के आस-पास रहता है तो वह अपने संकल्पों में पर्वतों की तरह स्थिर होकर अपनी शक्ति को बढ़ाता जाता है जिससे हजारों प्रकार से वह स्वयं को संरक्षित कर सके। ऐसा इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक जो अपने चित्त के आवर्णों का नाश कर लेता है तो वह उन आवर्णों को नदी में बहने के लिए मजबूर कर देता है और अपने मूल्यवान तरल पदार्थ को नियंत्रण में रखता है। ऐसा व्यक्ति उन सभी साधनों के साथ प्रसन्न रहता है जो उसके पास उपलब्ध हैं।

जीवन में सार्थकता :-

अपने चेतन स्तर को ऊपर कैसे उठायें?

जीवन का यह मूल ध्येय है कि अपने जीवन की सभी गतिविधियों के केन्द्र में सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा को ही रखा जाये। हमें अपनी चेतना का विकास करते हुए यह अनुभूति रखनी चाहिए कि सर्वोच्च शक्ति हमेशा बाहर से हमें घेर कर रहती है और हमारे द्वारा वह अन्दर धिरी रहती है। क्योंकि वह सभी गतिविधियों में सर्वोच्च प्रेरक है। अतः वह निश्चित रूप से सभी कार्यों में हमारी स्थिरता और शक्ति सुनिश्चित करेगा। यही वह विकसित चेतना है जो हमारी चेतना के स्तर को भी सर्वोच्च ऊर्जा के स्तर तक ले जाती है। हमें तो सदैव एक ही विचार पर ध्यान केन्द्रित करना है कि – ‘मैं कर्ता नहीं हूँ परमात्मा ही सभी कार्यों का कर्ता तथा प्रेरक है।’



ऋग्वेद 1.52.2

स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्रमूतिस्तविषीषुवावृद्धे ।
इन्द्रो यद् वृत्रमवधीनदीवृतमुज्ज्ञाणसिजुर्हृषाणोअन्धसा ॥

(स:) वह (पर्वतः) पर्वत (न) जैसे (धरुणेषु) ब्रतो में (अच्युतः) स्थिर (सहस्रम्) हजारों प्रकार से (ऊति) संरक्षण करता है (तविषीषु) बल (वावृद्धे) बढ़ाता है (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (यत्) जो (वृत्रम्) मन की वृत्तियाँ (अवधीत) नष्ट करता है (नदीवृतम्) नदियों में बहते हुए, तरल करना (उज्जन्) नियंत्रण में रखना (अर्णासि) वीर्य रस (जुर्हृषाणः) आनन्दित अनुभव करता है (अन्धसा) भोजन आदि पदार्थों के साथ ।

व्याख्या :-

अपने संकल्पों में स्थिरता तथा बल कैसे प्राप्त करें?

इन्द्र पुरुष का जीवन कैसा होता है?

एक बार जब शरीर रथ, सभी कालों में तथा सभी कार्यों में, सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा के आस-पास रहता है तो वह अपने संकल्पों में पर्वतों की तरह स्थिर होकर अपनी शक्ति को बढ़ाता जाता है जिससे हजारों प्रकार से वह स्वयं को संरक्षित कर सके। ऐसा इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक जो अपने चित्त के आवर्णों का नाश कर लेता है तो वह उन आवर्णों को नदी में बहने के लिए मजबूर कर देता है और अपने मूल्यवान तरल पदार्थ को नियंत्रण में रखता है। ऐसा व्यक्ति उन सभी साधनों के साथ प्रसन्न रहता है जो उसके पास उपलब्ध हैं।

जीवन में सार्थकता :-

अपने चेतन स्तर को ऊपर कैसे उठायें?

जीवन का यह मूल ध्येय है कि अपने जीवन की सभी गतिविधियों के केन्द्र में सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा को ही रखा जाये। हमें अपनी चेतना का विकास करते हुए यह अनुभूति रखनी चाहिए कि सर्वोच्च शक्ति हमेशा बाहर से हमें घेर कर रहती है और हमारे द्वारा वह अन्दर धिरी रहती है। क्योंकि वह सभी गतिविधियों में सर्वोच्च प्रेरक है। अतः वह निश्चित रूप से सभी कार्यों में हमारी स्थिरता और शक्ति सुनिश्चित करेगा। यही वह विकसित चेतना है जो हमारी चेतना के स्तर को भी सर्वोच्च ऊर्जा के स्तर तक ले जाती है। हमें तो सदैव एक ही विचार पर ध्यान केन्द्रित करना है कि – ‘मैं कर्ता नहीं हूँ परमात्मा ही सभी कार्यों का कर्ता तथा प्रेरक है।’



ऋग्वेद 1.52.3

स हि द्वरो द्वरिषुवव्र ऊधनिचन्द्रबुयध्नोमदवृद्धोमनीषिभिः ।

इन्द्रंतमहवेस्वपस्यया धियामंहिष्ठरातिं स हिप्रिरन्धसः ॥

(स:) वह (हि) निश्चित रूप से (द्वरः) अपनी छाया में ढकता है (द्वरिषु) सभी कठिनाईयों और अन्धकार में (व्र) व्याप्त (ऊधनि) हमारे हृदय में (चन्द्रबुयध्नो) सभी आनन्द का स्रोत (मदवृद्धो) आनन्द बढ़ाता है (मनीषिभिः) उनमें जो मन, हृदय और विचार में पूर्ण हैं (इन्द्रम्) इन्द्र को (तम्) वह (अहवे) पुकारते हैं, बुलाते हैं (स्वपस्यया) उत्तम कार्य करके (धिया) मन और बृद्धि के साथ (मंहिष्ठरातिम्) उत्तम दान के द्वारा (स:) वह (हि) केवल (पप्रि अन्धसः) समस्त भोजन आदि ।

व्याख्या :-

इन्द्र पुरुष सर्वोच्च इन्द्र को क्यों पुकारता है?

इन्द्र पुरुष के लिए सर्वोच्च इन्द्र क्या करता है?

(क) वह निश्चित रूप से सभी कठिनाईयों और अन्धकार के समय में अपनी छाया के नीचे हमारा आवरण (संरक्षण) करता है ।

(ख) वह हमारे हृदय में व्यापक है ।

(ग) सभी प्रकार के आनन्द का वह स्रोत है । जो लोग अपने मन, हृदय और सोच विचार में पूर्ण होते हैं, उनमें वह आनन्द की बृद्धि करता है । मैं अपने मन और चित्त के द्वारा चेतना पूर्वक तथा उत्तम दान और कल्याण के लिए किये गये उत्तम कार्यों के द्वारा इन्द्र का आह्वान करता हूँ । वही हमें सभी प्रकार के भोजन और पदार्थों से पूर्ण करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

मनीषी अर्थात् उच्च चेतना में रहने वाला व्यक्ति कौन है?

वास्तविक दानी और कर्ता कौन है?

यह मन्त्र इस विचार पर केन्द्रित है कि उच्च चेतना में जीने वाले व्यक्ति के लिए परमात्मा क्या आश्वासन देता है ।

(क) परमात्मा कठिनाईयों और अन्धकार के सभी कालों में अपना संरक्षण आवरण प्रदान करता है ।

(ख) परमात्मा ऐसे व्यक्ति के हृदय में व्याप्त होता है जो उच्च चेतना के स्तर पर जीते हैं ।

(ग) परमात्मा सभी प्रकार के आनन्द का स्रोत है और मनीषी अर्थात् मननशील लोगों के मन, हृदय तथा उच्च चेतना के सोच-विचार में रहने वाले लोगों में इस आनन्द को बढ़ाता रहता है । एक मनीषी बनने के लिए जीवन के दो पहलुओं पर ध्यान रखना चाहिए ।

(1) 'स्वपस्यया धिया' बनो अर्थात् मन तथा चित्त के साथ सभी कार्य करो । इसका अभिप्राय है कि हमें अपने कार्यों के प्रति चेतन रहना चाहिए ।

(2) इस चेतना के साथ उत्तम दान करने चाहिए कि केवल परमात्मा ही हमें सभी भोजन और पदार्थों में पूर्ण करता है ।

अतः सभी दानों तथा कार्यों में हमारे अन्दर यह चेतना रहनी चाहिए कि वास्तविक दान देने वाला तथा कार्य करने वाला परमात्मा ही है ।



ऋग्वेद 1.52.3

स हि द्वरो द्वरिषुवव्र ऊधनिचन्द्रबुयध्नोमदवृद्धोमनीषिभिः ।

इन्द्रंतमहवेस्वपस्यया धियामंहिष्ठरातिं स हिप्रिरन्धसः ॥

(स:) वह (हि) निश्चित रूप से (द्वरः) अपनी छाया में ढकता है (द्वरिषु) सभी कठिनाईयों और अन्धकार में (व्र) व्याप्त (ऊधनि) हमारे हृदय में (चन्द्रबुयध्नो) सभी आनन्द का स्रोत (मदवृद्धो) आनन्द बढ़ाता है (मनीषिभिः) उनमें जो मन, हृदय और विचार में पूर्ण हैं (इन्द्रम्) इन्द्र को (तम्) वह (अहवे) पुकारते हैं, बुलाते हैं (स्वपस्यया) उत्तम कार्य करके (धिया) मन और बृद्धि के साथ (मंहिष्ठरातिम्) उत्तम दान के द्वारा (स:) वह (हि) केवल (पप्रि अन्धसः) समस्त भोजन आदि ।

व्याख्या :-

इन्द्र पुरुष सर्वोच्च इन्द्र को क्यों पुकारता है?

इन्द्र पुरुष के लिए सर्वोच्च इन्द्र क्या करता है?

(क) वह निश्चित रूप से सभी कठिनाईयों और अन्धकार के समय में अपनी छाया के नीचे हमारा आवरण (संरक्षण) करता है ।

(ख) वह हमारे हृदय में व्यापक है ।

(ग) सभी प्रकार के आनन्द का वह स्रोत है । जो लोग अपने मन, हृदय और सोच विचार में पूर्ण होते हैं, उनमें वह आनन्द की बृद्धि करता है । मैं अपने मन और चित्त के द्वारा चेतना पूर्वक तथा उत्तम दान और कल्याण के लिए किये गये उत्तम कार्यों के द्वारा इन्द्र का आह्वान करता हूँ । वही हमें सभी प्रकार के भोजन और पदार्थों से पूर्ण करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

मनीषी अर्थात् उच्च चेतना में रहने वाला व्यक्ति कौन है?

वास्तविक दानी और कर्ता कौन है?

यह मन्त्र इस विचार पर केन्द्रित है कि उच्च चेतना में जीने वाले व्यक्ति के लिए परमात्मा क्या आश्वासन देता है ।

(क) परमात्मा कठिनाईयों और अन्धकार के सभी कालों में अपना संरक्षण आवरण प्रदान करता है ।

(ख) परमात्मा ऐसे व्यक्ति के हृदय में व्याप्त होता है जो उच्च चेतना के स्तर पर जीते हैं ।

(ग) परमात्मा सभी प्रकार के आनन्द का स्रोत है और मनीषी अर्थात् मननशील लोगों के मन, हृदय तथा उच्च चेतना के सोच-विचार में रहने वाले लोगों में इस आनन्द को बढ़ाता रहता है । एक मनीषी बनने के लिए जीवन के दो पहलुओं पर ध्यान रखना चाहिए ।

(1) 'स्वपस्यया धिया' बनो अर्थात् मन तथा चित्त के साथ सभी कार्य करो । इसका अभिप्राय है कि हमें अपने कार्यों के प्रति चेतन रहना चाहिए ।

(2) इस चेतना के साथ उत्तम दान करने चाहिए कि केवल परमात्मा ही हमें सभी भोजन और पदार्थों में पूर्ण करता है ।

अतः सभी दानों तथा कार्यों में हमारे अन्दर यह चेतना रहनी चाहिए कि वास्तविक दान देने वाला तथा कार्य करने वाला परमात्मा ही है ।

पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.4

आ यंपृणन्तिदिविसद्मबर्हिषः समुद्रं न सुभ्वः स्वा अभिष्टयः ।

तं वृत्रहत्येऽनुतस्थुरुतयः शुष्माइन्द्रमवाताऽहुतप्सवः ॥

(आ – पृणन्ति से पूर्व लगाकर) (यम्) जिसको (पृणन्ति – आ पृणन्ति) स्वयं पूर्ण करता है, प्रसन्न करता है, शामिल होता है (दिवि) प्रकाशवान् होने पर (सद्मबर्हिषः) उत्तम स्थान, उत्तम स्तर में बैठकर (समुद्रम्) समुद्र को (न) जैसे (सुभ्वः) वे लोग जिनका उत्तम स्तर होता है (स्वाः) अपने आप (अभिष्टयः) इच्छित लक्ष्य (तम्) उसको (वृत्रहत्ये) मन की वृत्तियों का नाशक (अनु तस्थु) लक्ष्य की तरह निर्धारित (उत्तयः) संरक्षित करने वाला (शुष्मा) शत्रुओं को नष्ट करने की शक्ति के साथ (इन्द्रम्) सर्वोच्च इन्द्र (अवाताः) नियंत्रित वायु में स्थिर (अहुतप्सवः) बिना किसी कुटिलता के ।

व्याख्या :-

प्रकाशवान् होने पर क्या होता है?

आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति के बाद कौन से दिव्य लक्षण प्राप्त होते हैं?

जब वह आध्यात्मिकता के उत्तम स्तर पर बैठे हुए और प्रकाशवान् होने वाले एक भक्त को पूर्ण करता है, प्रसन्न करता है और उसके साथ शामिल रहता है तो वह व्यक्ति अपने इच्छित लक्ष्य के समुद्र में स्वयं को समाहित हुआ समझ लेता है ।

वह इन्द्र पुरुष अपनी चित्त वृत्तियों का नाश करने के बाद अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है और दिव्य लक्षण धारण करता है, जैसे :-

(क) हर प्रकार से स्वयं को सुरक्षित रखना ।

(ख) शत्रु वृत्तियों को नष्ट करने की शक्ति रखना ।

(ग) कुम्भक वायु में स्थित ।

(घ) कार्यों और मन में किसी कुटिलता के बिना ।

जीवन में सार्थकता :-

जब हमें उत्तम अवस्था या शक्ति प्राप्त होती है तो हमें क्या करना चाहिए?

भौतिकवादी जीवन में भी जब किसी को नया स्तर और नई शक्तियाँ प्राप्त होती हैं तो उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सर्वोच्च अधिकारी से संयुक्त होकर ही वह उत्तम अवस्था में है। किसी भी अवस्था में उसे अपनी व्यक्तिगत वृत्तियों और प्रभावों को अपने ऊपर शासन नहीं करने देना चाहिए। प्राप्त शक्तियों और अवस्था के साथ उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि –

(1) वह हर प्रकार से स्वयं को संरक्षित रखता है ।

(2) उसके पास आन्तरिक और बाहरी समस्त शत्रु ताकतों को नष्ट करने की शक्ति है ।

(3) उसे अपने सभी कार्य कुम्भक अवस्था में करने चाहिए, अर्थात् अपने कार्य पर पूरा ध्यान लगाना चाहिए ।

(4) उसे अपने अन्दर कुटिल विचारों को प्रवेश नहीं करने देना चाहिए ।

इन्हीं लक्षणों के साथ वह प्राप्त किये गये उत्तम स्तर को बनाकर रख सकता है और उच्च अधिकारियों के साथ एक बनकर रह सकता है ।

पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.4

आ यंपृणन्तिदिविसद्मबर्हिषः समुद्रं न सुभ्वः स्वा अभिष्टयः ।

तं वृत्रहत्येऽनुतस्थुरुतयः शुष्माइन्द्रमवाताऽहुतप्सवः ॥

(आ – पृणन्ति से पूर्व लगाकर) (यम्) जिसको (पृणन्ति – आ पृणन्ति) स्वयं पूर्ण करता है, प्रसन्न करता है, शामिल होता है (दिवि) प्रकाशवान् होने पर (सद्मबर्हिषः) उत्तम स्थान, उत्तम स्तर में बैठकर (समुद्रम्) समुद्र को (न) जैसे (सुभ्वः) वे लोग जिनका उत्तम स्तर होता है (स्वाः) अपने आप (अभिष्टयः) इच्छित लक्ष्य (तम्) उसको (वृत्रहत्ये) मन की वृत्तियों का नाशक (अनु तस्थु) लक्ष्य की तरह निर्धारित (उत्तयः) संरक्षित करने वाला (शुष्मा) शत्रुओं को नष्ट करने की शक्ति के साथ (इन्द्रम्) सर्वोच्च इन्द्र (अवाताः) नियंत्रित वायु में स्थिर (अहुतप्सवः) बिना किसी कुटिलता के ।

व्याख्या :-

प्रकाशवान् होने पर क्या होता है?

आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति के बाद कौन से दिव्य लक्षण प्राप्त होते हैं?

जब वह आध्यात्मिकता के उत्तम स्तर पर बैठे हुए और प्रकाशवान् होने वाले एक भक्त को पूर्ण करता है, प्रसन्न करता है और उसके साथ शामिल रहता है तो वह व्यक्ति अपने इच्छित लक्ष्य के समुद्र में स्वयं को समाहित हुआ समझ लेता है ।

वह इन्द्र पुरुष अपनी चित्त वृत्तियों का नाश करने के बाद अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है और दिव्य लक्षण धारण करता है, जैसे :-

(क) हर प्रकार से स्वयं को सुरक्षित रखना ।

(ख) शत्रु वृत्तियों को नष्ट करने की शक्ति रखना ।

(ग) कुम्भक वायु में स्थित ।

(घ) कार्यों और मन में किसी कुटिलता के बिना ।

जीवन में सार्थकता :-

जब हमें उत्तम अवस्था या शक्ति प्राप्त होती है तो हमें क्या करना चाहिए?

भौतिकवादी जीवन में भी जब किसी को नया स्तर और नई शक्तियाँ प्राप्त होती हैं तो उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सर्वोच्च अधिकारी से संयुक्त होकर ही वह उत्तम अवस्था में है। किसी भी अवस्था में उसे अपनी व्यक्तिगत वृत्तियों और प्रभावों को अपने ऊपर शासन नहीं करने देना चाहिए। प्राप्त शक्तियों और अवस्था के साथ उसे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि –

(1) वह हर प्रकार से स्वयं को संरक्षित रखता है ।

(2) उसके पास आन्तरिक और बाहरी समस्त शत्रु ताकतों को नष्ट करने की शक्ति है ।

(3) उसे अपने सभी कार्य कुम्भक अवस्था में करने चाहिए, अर्थात् अपने कार्य पर पूरा ध्यान लगाना चाहिए ।

(4) उसे अपने अन्दर कुटिल विचारों को प्रवेश नहीं करने देना चाहिए ।

इन्हीं लक्षणों के साथ वह प्राप्त किये गये उत्तम स्तर को बनाकर रख सकता है और उच्च अधिकारियों के साथ एक बनकर रह सकता है ।

पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.5

अभिस्वृष्टिमदेऽस्य युध्यतोरधीरिवप्रवणेसस्त्रुरुतयः ।

इन्द्रो यद्वज्जी धृष्माणोऽन्धसाभिनद् वलस्य परिधीरिव त्रितः ॥

(अभि) की ओर (स्ववृष्टिम) इच्छित वर्षा, स्व की अनुभूति (मदे) उस प्रसन्नता में (अस्य) यह (अनुभूति प्राप्त करने वाला) (युध्यतः) युद्ध करते हुए (बुराईयों, इच्छाओं और अहंकार के विरुद्ध) (रधी) गति के साथ बहते हुए (इव) जैसे कि (प्रवणे) निम्न भूमि की ओर (सस्त्रुः) प्राप्त होते हैं (उत्तयः) सभी संरक्षण (इन्द्रः) इन्द्र पुरुष (यतः) जब (वज्जी) वज्र के साथ सक्रिय और सुसज्जित (धृष्माणः) शत्रुओं का नाश करते हुए (अन्धसा) शुभ गुणों का रक्षण करने के साथ (भिनत) वध करता है, नाश करता है (वलस्य) वृत्तियों का (परिधीन) बाहरी सीमाओं का (इव) जैसे (त्रितः) सभी तीनों ।

व्याख्या :-

जब एक साधक परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर अग्रसर होता है तो क्या होता है?

बाहरी मन के आवर्णों को नष्ट कैसे करें?

जब एक साधक अपनी इच्छित वर्षा अर्थात् आत्म अनुभूति की तरफ अग्रसर होता है तो उस प्रसन्नता में वह अहंकार, इच्छाओं और बुराईयों के साथ संघर्ष करते हुए आगे बढ़ता जाता है। वह परमात्मा का संरक्षण इस प्रकार प्राप्त करता है जैसे निचली भूमियों पर आती हुई नदी अपनी गति के बावजूद भी संरक्षित रहती है।

जब एक इन्द्र पुरुष अपने हथियारों (आध्यात्मिक दिव्य लक्षणों) के साथ सक्रिय होता है और अपने सदगुणों का संरक्षण करते हुए अपने शत्रुओं का नाश करता है तो वह मन के बाहरी आवर्णों जैसे – काम, क्रोध, लोभ तथा मोह का भी नाश कर देता है और अपनी योग्यता त्रितः अर्थात् ज्ञान, कर्म और उपासना में सिद्ध कर देता है।

जीवन जीवन में सार्थकता :-

इच्छित लक्ष्य प्राप्त करने की यात्रा में सबसे महत्त्वपूर्ण पहलु क्या होता है?

इच्छित लक्ष्य प्राप्त करने की यात्रा में जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य अपने मार्ग से सभी बाधाओं को दूर करके दिव्य प्रसन्नता प्राप्त करना होता है। इसी प्रसन्नता और एक बिन्दु रूपी प्रगति के साथ कोई व्यक्ति अपने उच्चाधिकारियों का संरक्षण प्राप्त कर सकता है। यह अपने इच्छित स्तर को प्राप्त करने के लिए एक उच्च स्तर का आत्मविश्वास है।

मन के बाहरी आवरण चार प्रकार के होते हैं :— काम, क्रोध, लोभ और मोह। जो व्यक्ति अपने इच्छित स्तर की तरफ प्रगतिशील होता है वह सरलता पूर्वक इन आवर्णों को नष्ट करके आन्तरिक उच्च चेतना के साथ कार्य करता है। इस प्रकार वह ज्ञान, कर्म और उपासना में ही दक्षता प्राप्त कर लेता है।

पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.5

अभिस्वृष्टिमदेऽस्य युध्यतोरधीरिवप्रवणेसस्त्रुरुतयः ।

इन्द्रो यद्वज्जी धृष्माणोऽन्धसाभिनद् वलस्य परिधीरिव त्रितः ॥

(अभि) की ओर (स्ववृष्टिम) इच्छित वर्षा, स्व की अनुभूति (मदे) उस प्रसन्नता में (अस्य) यह (अनुभूति प्राप्त करने वाला) (युध्यतः) युद्ध करते हुए (बुराईयों, इच्छाओं और अहंकार के विरुद्ध) (रधी) गति के साथ बहते हुए (इव) जैसे कि (प्रवणे) निम्न भूमि की ओर (सस्त्रुः) प्राप्त होते हैं (उत्तयः) सभी संरक्षण (इन्द्रः) इन्द्र पुरुष (यतः) जब (वज्जी) वज्र के साथ सक्रिय और सुसज्जित (धृष्माणः) शत्रुओं का नाश करते हुए (अन्धसा) शुभ गुणों का रक्षण करने के साथ (भिनत) वध करता है, नाश करता है (वलस्य) वृत्तियों का (परिधीन) बाहरी सीमाओं का (इव) जैसे (त्रितः) सभी तीनों ।

व्याख्या :-

जब एक साधक परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर अग्रसर होता है तो क्या होता है?

बाहरी मन के आवर्णों को नष्ट कैसे करें?

जब एक साधक अपनी इच्छित वर्षा अर्थात् आत्म अनुभूति की तरफ अग्रसर होता है तो उस प्रसन्नता में वह अहंकार, इच्छाओं और बुराईयों के साथ संघर्ष करते हुए आगे बढ़ता जाता है। वह परमात्मा का संरक्षण इस प्रकार प्राप्त करता है जैसे निचली भूमियों पर आती हुई नदी अपनी गति के बावजूद भी संरक्षित रहती है।

जब एक इन्द्र पुरुष अपने हथियारों (आध्यात्मिक दिव्य लक्षणों) के साथ सक्रिय होता है और अपने सदगुणों का संरक्षण करते हुए अपने शत्रुओं का नाश करता है तो वह मन के बाहरी आवर्णों जैसे – काम, क्रोध, लोभ तथा मोह का भी नाश कर देता है और अपनी योग्यता त्रितः अर्थात् ज्ञान, कर्म और उपासना में सिद्ध कर देता है।

जीवन जीवन में सार्थकता :-

इच्छित लक्ष्य प्राप्त करने की यात्रा में सबसे महत्त्वपूर्ण पहलु क्या होता है?

इच्छित लक्ष्य प्राप्त करने की यात्रा में जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य अपने मार्ग से सभी बाधाओं को दूर करके दिव्य प्रसन्नता प्राप्त करना होता है। इसी प्रसन्नता और एक बिन्दु रूपी प्रगति के साथ कोई व्यक्ति अपने उच्चाधिकारियों का संरक्षण प्राप्त कर सकता है। यह अपने इच्छित स्तर को प्राप्त करने के लिए एक उच्च स्तर का आत्मविश्वास है।

मन के बाहरी आवरण चार प्रकार के होते हैं :— काम, क्रोध, लोभ और मोह। जो व्यक्ति अपने इच्छित स्तर की तरफ प्रगतिशील होता है वह सरलता पूर्वक इन आवर्णों को नष्ट करके आन्तरिक उच्च चेतना के साथ कार्य करता है। इस प्रकार वह ज्ञान, कर्म और उपासना में ही दक्षता प्राप्त कर लेता है।

पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.6

परीं घृणाचरतितित्विषे शवोऽ पोवृत्वीरजसोबुध्नमाशयत् ।

वृत्रस्य यत्प्रवणोदुर्गृभिश्वनोनिजघन्थहन्वोरिन्द्रतन्यतुम् ॥

(परी – चरति से पूर्व लगाकर) (घृणा) ज्ञान का प्रकाश (चरति – परी चरति) सभी दिशाओं में व्याप्त (तित्विषे) चमक के लिए (शवः) बल का (अपः) सभी प्रजाओं को, लोगों को (वृत्वी) ज्ञान को आवृत करता है (रजसः) गहरे आकाश में (बुध्नम्) शरीर का (आशयत) स्थापित (वृत्रस्य) बादलों का, मन की वृत्तियों का (यत) जो (प्रवणे) शक्तिशाली प्रभाव (दुर्गृभिश्वनः) दुराग्रह से प्राप्त (निजघन्थ) प्रहार करता है (हन्वः) मुख के हिस्सों पर (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (तन्यतुम्) दिव्य प्रभु पर ध्यान करके ।

व्याख्या :-

एक इन्द्र को अपने मन की वृत्तियां नष्ट करने की आवश्यकता क्यों होती है?

वृत्तियाँ नष्ट होने के बाद क्या होता है?

जब एक इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक, दिव्य शक्ति पर अपना ध्यान एकाग्र करने के साथ मन की वृत्तियों अर्थात् बादलों के मुख पर एक प्रबल प्रहार करता है तो इस प्रकार उन वृत्तियों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। यह वृत्तियाँ (अहंकार, इच्छाएँ और तरह-तरह के विचार) ज्ञान को ढंक लेते हैं और गहरे हृदय में स्थापित हो जाते हैं। परन्तु एक बार जब इन वृत्तियों को नष्ट कर दिया जाये तो ज्ञान का प्रकाश चारों तरफ व्याप्त हो जाता है जिससे ऐसे इन्द्र की चमक और उसका बल दिखाई देने लगता है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने लक्ष्य पर एक बिन्दु की तरह ध्यान केन्द्रित कैसे करें?

योग दर्शन (1.6) के अनुसार मन की वृत्तियों की उत्पत्ति के पांच मुख्य कारण हैं :— प्रमाण, विप्रय, विकल्प, निद्रा और स्मृति अर्थात् सही ज्ञान, गलत ज्ञान, काल्पनिक ज्ञान, कोई ज्ञान नहीं और पूर्वकाल का ज्ञान।

इन वृत्तियों को नष्ट करने के कई उपाय हैं। प्रथम तथा प्रमुख उपाय है — अभ्यास तथा वैराग्य। जीवन को अहंकारहित रूप से जीना अभ्यास होता है और इच्छाओं से मुक्ति वैराग्य होता है। यह तभी सम्भव है जब एक व्यक्ति तन्यतुम् बनकर जीये। अर्थात् दिव्यता पर ध्यान एकाग्र करे।

योग दर्शन (1.23) ईश्वर प्रणिधानात्वा की व्याख्या करता है अर्थात् परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण, श्रद्धा और पूजा तब तक चलती रहे जब तक परमात्मा के साथ एकात्मता का अनुभव न होने लगे। अतः हमें अपने लक्ष्य पर एक बिन्दु की तरह ध्यान देना चाहिए और लक्ष्य की तरफ बढ़ते हुए किसी प्रकार से ध्यान इधर-उधर न जायें। यह सिद्धान्त आध्यात्मिक मार्ग के साथ-साथ सांसारिक भौतिक मार्ग पर भी लागू होता है।

पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.6

परीं घृणाचरतितित्विषे शवोऽ पोवृत्वीरजसोबुध्नमाशयत् ।

वृत्रस्य यत्प्रवणोदुर्गृभिश्वनोनिजघन्थहन्वोरिन्द्रतन्यतुम् ॥

(परी – चरति से पूर्व लगाकर) (घृणा) ज्ञान का प्रकाश (चरति – परी चरति) सभी दिशाओं में व्याप्त (तित्विषे) चमक के लिए (शवः) बल का (अपः) सभी प्रजाओं को, लोगों को (वृत्वी) ज्ञान को आवृत करता है (रजसः) गहरे आकाश में (बुध्नम्) शरीर का (आशयत) स्थापित (वृत्रस्य) बादलों का, मन की वृत्तियों का (यत) जो (प्रवणे) शक्तिशाली प्रभाव (दुर्गृभिश्वनः) दुराग्रह से प्राप्त (निजघन्थ) प्रहार करता है (हन्वः) मुख के हिस्सों पर (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (तन्यतुम्) दिव्य प्रभु पर ध्यान करके ।

व्याख्या :-

एक इन्द्र को अपने मन की वृत्तियां नष्ट करने की आवश्यकता क्यों होती है?

वृत्तियाँ नष्ट होने के बाद क्या होता है?

जब एक इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों का नियंत्रक, दिव्य शक्ति पर अपना ध्यान एकाग्र करने के साथ मन की वृत्तियों अर्थात् बादलों के मुख पर एक प्रबल प्रहार करता है तो इस प्रकार उन वृत्तियों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। यह वृत्तियाँ (अहंकार, इच्छाएँ और तरह-तरह के विचार) ज्ञान को ढंक लेते हैं और गहरे हृदय में स्थापित हो जाते हैं। परन्तु एक बार जब इन वृत्तियों को नष्ट कर दिया जाये तो ज्ञान का प्रकाश चारों तरफ व्याप्त हो जाता है जिससे ऐसे इन्द्र की चमक और उसका बल दिखाई देने लगता है।

जीवन में सार्थकता :-

अपने लक्ष्य पर एक बिन्दु की तरह ध्यान केन्द्रित कैसे करें?

योग दर्शन (1.6) के अनुसार मन की वृत्तियों की उत्पत्ति के पांच मुख्य कारण हैं :— प्रमाण, विप्रय, विकल्प, निद्रा और स्मृति अर्थात् सही ज्ञान, गलत ज्ञान, काल्पनिक ज्ञान, कोई ज्ञान नहीं और पूर्वकाल का ज्ञान।

इन वृत्तियों को नष्ट करने के कई उपाय हैं। प्रथम तथा प्रमुख उपाय है — अभ्यास तथा वैराग्य। जीवन को अहंकारहित रूप से जीना अभ्यास होता है और इच्छाओं से मुक्ति वैराग्य होता है। यह तभी सम्भव है जब एक व्यक्ति तन्यतुम् बनकर जीये। अर्थात् दिव्यता पर ध्यान एकाग्र करे।

योग दर्शन (1.23) ईश्वर प्रणिधानात्वा की व्याख्या करता है अर्थात् परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पण, श्रद्धा और पूजा तब तक चलती रहे जब तक परमात्मा के साथ एकात्मता का अनुभव न होने लगे। अतः हमें अपने लक्ष्य पर एक बिन्दु की तरह ध्यान देना चाहिए और लक्ष्य की तरफ बढ़ते हुए किसी प्रकार से ध्यान इधर-उधर न जायें। यह सिद्धान्त आध्यात्मिक मार्ग के साथ-साथ सांसारिक भौतिक मार्ग पर भी लागू होता है।

पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.7

हृदं न हित्वान्यृष्ट्यूर्मयोब्रह्माणीन्द्रतव यानि वर्धना ।
त्वष्टाचिते युज्यंवावृधे शवस्ततक्ष वज्रमभिभूत्योजसम् ॥

(हृदम) समुद्र को, हृदय को (न) जैसे कि (हि) निश्चित रूप से (त्वा) आपको (परमात्मा को) (न्यृष्टन्ति) विनम्रता पूर्वक प्राप्त होते हैं (ऊर्मयः) झरना, तरंगे (ब्रह्माणि) प्रभु की महिमा (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (तव) आपको (यानि) जो (वर्धना) प्रगति के कारण (त्वष्टा) आपका (परमात्मा का) (चित्त) निश्चित रूप से (ते) आपके (युज्यम्) सक्षम, जुड़े हुए (वावृधे) बढ़ाते हैं (शवः) बल (ततक्ष) बनाते हैं (वज्रम्) वज्र (अभिभूत्योजसम्) पराजित करने में सक्षम ।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा का महिमागान क्यों करना चाहिए?

जिस प्रकार समुद्र और नदियों में से निकलने वाली तरंगे पूरी विनम्रता के साथ उठती हैं, जिस प्रकार हृदय में उठने वाली तरंगे आपकी प्रगति का कारण बनती हैं, उसी प्रकार परमात्मा के प्रति महिमागान भी विनम्रता के साथ ही स्वीकार होगा और आपकी प्रगति का कारण बनेगा ।

हे इन्द्र! आपके बल की योग्यता और परमात्मा के साथ आपकी सम्बद्धता अवश्य ही आपके बल को बढ़ायेगी और शत्रुओं को पराजित करने तथा बाधाओं को दूर करने के लिए एक शक्तिशाली वज्र बनेगी ।

जीवन में सार्थकता :-

हमें अपने वृद्धजनों का महिमागान क्यों करना चाहिए?

परमात्मा के महिमागान के लिए प्रत्येक हृदय को तरंगित होना चाहिए और उस मूल सार्वभौम शक्ति के साथ ऐसे जुड़ना चाहिए जैसे तरंगे समुद्र में मिलने के लिए ही उठती हैं ।

परमात्मा की महिमा का गान जितना अधिक किया जाता है उतना ही अधिक वह मूल शक्ति के साथ जुड़ता जाता है जिसके परिणामस्वरूप उसे जीवन में हर प्रकार की प्रगति प्राप्त होती है । इस प्रकार के जुड़ाव और प्रगति के साथ-साथ जीवन की बाधाओं को पराजित करने के लिए उसके वज्र भी शक्तिशाली होते जाते हैं ।

हमें अपने सभी वृद्धजनों तथा उच्चाधिकारियों का भी महिमागान करना चाहिए । यह महिमागान उनके साथ हमारे सम्बन्धों को मजबूत करेगा और हमारी प्रगति को सुनिश्चित करेगा ।

पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.7

हृदं न हित्वान्यृष्ट्यूर्मयोब्रह्माणीन्द्रतव यानि वर्धना ।
त्वष्टाचिते युज्यन्वावृधे शवस्ततक्ष वज्रमभिभूत्योजसम् ॥

(हृदम) समुद्र को, हृदय को (न) जैसे कि (हि) निश्चित रूप से (त्वा) आपको (परमात्मा को) (न्यृष्टन्ति) विनम्रता पूर्वक प्राप्त होते हैं (ऊर्मयः) झरना, तरंगे (ब्रह्माणि) प्रभु की महिमा (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (तव) आपको (यानि) जो (वर्धना) प्रगति के कारण (त्वष्टा) आपका (परमात्मा का) (चित्त) निश्चित रूप से (ते) आपके (युज्यम्) सक्षम, जुड़े हुए (वावृधे) बढ़ाते हैं (शवः) बल (ततक्ष) बनाते हैं (वज्रम्) वज्र (अभिभूत्योजसम्) पराजित करने में सक्षम ।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा का महिमागान क्यों करना चाहिए?

जिस प्रकार समुद्र और नदियों में से निकलने वाली तरंगे पूरी विनम्रता के साथ उठती हैं, जिस प्रकार हृदय में उठने वाली तरंगे आपकी प्रगति का कारण बनती हैं, उसी प्रकार परमात्मा के प्रति महिमागान भी विनम्रता के साथ ही स्वीकार होगा और आपकी प्रगति का कारण बनेगा ।

हे इन्द्र! आपके बल की योग्यता और परमात्मा के साथ आपकी सम्बद्धता अवश्य ही आपके बल को बढ़ायेगी और शत्रुओं को पराजित करने तथा बाधाओं को दूर करने के लिए एक शक्तिशाली वज्र बनेगी ।

जीवन में सार्थकता :-

हमें अपने वृद्धजनों का महिमागान क्यों करना चाहिए?

परमात्मा के महिमागान के लिए प्रत्येक हृदय को तरंगित होना चाहिए और उस मूल सार्वभौम शक्ति के साथ ऐसे जुड़ना चाहिए जैसे तरंगे समुद्र में मिलने के लिए ही उठती हैं ।

परमात्मा की महिमा का गान जितना अधिक किया जाता है उतना ही अधिक वह मूल शक्ति के साथ जुड़ता जाता है जिसके परिणामस्वरूप उसे जीवन में हर प्रकार की प्रगति प्राप्त होती है । इस प्रकार के जुड़ाव और प्रगति के साथ-साथ जीवन की बाधाओं को पराजित करने के लिए उसके वज्र भी शक्तिशाली होते जाते हैं ।

हमें अपने सभी वृद्धजनों तथा उच्चाधिकारियों का भी महिमागान करना चाहिए । यह महिमागान उनके साथ हमारे सम्बन्धों को मजबूत करेगा और हमारी प्रगति को सुनिश्चित करेगा ।



ऋग्वेद 1.52.8

जघन्वाँ उ हरिभि: संभृतक्रतविन्द्र वृत्रं मनुषेगातुयन्पः ।
अयच्छथाबाहवोर्वज्ञमायसमधारयोदिव्यासूर्य दृशे ॥

(जघन्वान्) मारता है, नष्ट करता है (उ) निश्चित रूप से (हरिभि:) किरणों से, कर्मन्द्रियों की शक्ति से (संभृतक्रतो) कर्म करने और ज्ञान प्राप्त करने के व्रतों का धारक (इन्द्र) सूर्य, इन्द्रियों का नियंत्रक (वृत्रम्) मेघ, मन की वृत्तियाँ (मनुषे) परमात्मा पर मनन के लिए (गातुयन्) पथ का इच्छुक (अपः) कार्य, जल (अयच्छथा:) प्राप्त करता है (बाहवोः) गतिविधियों में लगी बांहों में (र्वज्ञम्) वज्ञ (आयसम्) लोहे के बने हुए (धारयः) धारण करता है (दिवि) मन में, अन्तरिक्ष में (सूर्यम्) सूर्य को (दृशे) प्रकाश देखने के लिए, प्रकाशवान होने के लिए ।

व्याख्या :-

प्रकाशवान् होने का मार्ग क्या है?

सूर्य निश्चित रूप से अपनी किरणों के द्वारा बादलों को नष्ट कर देता है, क्योंकि सूर्य का संकल्प है कि समूचे विश्व तक उसने अपनी ऊर्जा और प्रकाश पहुंचाना है और वह अपने पथ पर अग्रसर होने के लिए दृढ़ है। इस प्रकार उसकी किरणों के पास एक लौह क्षमता पैदा हो जाती है जिससे वे अपना प्रकाश सारे विश्व तक पहुंचा पाती हैं ।

एक इन्द्रियों का नियंत्रक अपनी कर्मन्द्रियों की शक्ति से अपने मन की वृत्तियों का नाश कर देता है, क्योंकि वह कर्म करने और ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा के साथ अपने मार्ग पर चलने के लिए दृढ़ संकल्पित है। अतः उसकी बांहों में भी लौह क्षमता आ जाती है जिससे वह अपना प्रकाश सबके कल्याण के लिए विस्तृत कर पाता है ।

जीवन में सार्थकता :-

व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का मार्ग क्या है?

मन की वृत्तियों को मारकर सबके कल्याण के लिए प्रकाशवान् होना – इस सिद्धान्त को कैसे समझा जाये?

व्यक्तित्व विकास के स्तर को प्राप्त करने के लिए केवल चार कदम हैं :-

(क) मन की वृत्तियों का नाश करो ।

(ख) दूसरों के कल्याण का दायित्व पूरा करो ।

(ग) कर्मन्द्रियों के लिए लौह शक्ति पैदा करो ।

(घ) प्रकाशवान् की अवस्था अर्थात् एक पूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त करो ।

हमारे जीवन की सभी गतिविधियों तथा मूल शक्ति का प्रकाश प्राप्त करने में प्रथम बाधा मन की वृत्तियाँ ही हैं। अतः सर्वप्रथम इन वृत्तियों का नाश करना चाहिए। तभी हम दूसरों के कल्याण के लिए कोई भी कार्य कर पायेंगे। अन्त में हमें लौह रूपी शक्तियाँ तथा प्रकाश प्राप्त होगा जिससे हम पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में विकसित हो पायेंगे ।



ऋग्वेद 1.52.8

जघन्वाँ उ हरिभि: संभृतक्रतविन्द्र वृत्रं मनुषेगातुयन्पः ।
अयच्छथाबाहवोर्वज्ञमायसमधारयोदिव्यासूर्य दृशे ॥

(जघन्वान्) मारता है, नष्ट करता है (उ) निश्चित रूप से (हरिभि:) किरणों से, कर्मन्द्रियों की शक्ति से (संभृतक्रतो) कर्म करने और ज्ञान प्राप्त करने के व्रतों का धारक (इन्द्र) सूर्य, इन्द्रियों का नियंत्रक (वृत्रम्) मेघ, मन की वृत्तियाँ (मनुषे) परमात्मा पर मनन के लिए (गातुयन्) पथ का इच्छुक (अपः) कार्य, जल (अयच्छथा:) प्राप्त करता है (बाहवोः) गतिविधियों में लगी बांहों में (र्वज्ञम्) वज्ञ (आयसम्) लोहे के बने हुए (धारयः) धारण करता है (दिवि) मन में, अन्तरिक्ष में (सूर्यम्) सूर्य को (दृशे) प्रकाश देखने के लिए, प्रकाशवान होने के लिए ।

व्याख्या :-

प्रकाशवान् होने का मार्ग क्या है?

सूर्य निश्चित रूप से अपनी किरणों के द्वारा बादलों को नष्ट कर देता है, क्योंकि सूर्य का संकल्प है कि समूचे विश्व तक उसने अपनी ऊर्जा और प्रकाश पहुंचाना है और वह अपने पथ पर अग्रसर होने के लिए दृढ़ है। इस प्रकार उसकी किरणों के पास एक लौह क्षमता पैदा हो जाती है जिससे वे अपना प्रकाश सारे विश्व तक पहुंचा पाती हैं ।

एक इन्द्रियों का नियंत्रक अपनी कर्मन्द्रियों की शक्ति से अपने मन की वृत्तियों का नाश कर देता है, क्योंकि वह कर्म करने और ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा के साथ अपने मार्ग पर चलने के लिए दृढ़ संकल्पित है। अतः उसकी बांहों में भी लौह क्षमता आ जाती है जिससे वह अपना प्रकाश सबके कल्याण के लिए विस्तृत कर पाता है ।

जीवन में सार्थकता :-

व्यक्तित्व के पूर्ण विकास का मार्ग क्या है?

मन की वृत्तियों को मारकर सबके कल्याण के लिए प्रकाशवान् होना – इस सिद्धान्त को कैसे समझा जाये?

व्यक्तित्व विकास के स्तर को प्राप्त करने के लिए केवल चार कदम हैं :-

(क) मन की वृत्तियों का नाश करो ।

(ख) दूसरों के कल्याण का दायित्व पूरा करो ।

(ग) कर्मन्द्रियों के लिए लौह शक्ति पैदा करो ।

(घ) प्रकाशवान् की अवस्था अर्थात् एक पूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त करो ।

हमारे जीवन की सभी गतिविधियों तथा मूल शक्ति का प्रकाश प्राप्त करने में प्रथम बाधा मन की वृत्तियाँ ही हैं। अतः सर्वप्रथम इन वृत्तियों का नाश करना चाहिए। तभी हम दूसरों के कल्याण के लिए कोई भी कार्य कर पायेंगे। अन्त में हमें लौह रूपी शक्तियाँ तथा प्रकाश प्राप्त होगा जिससे हम पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में विकसित हो पायेंगे ।

पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद 1.52.9

बृहत्स्वश्चन्द्रममवद्यदुकथ्यैमकृष्टभियसारोहणंदिवः ।

यन्मानुषप्रधनाइन्द्रमूतयः स्वनृषाचोमरुतोऽमदन्ननु ॥

(बृहत) बड़ा (स्वश्चन्द्रम) आत्म प्रकाश के साथ (अमवत) उत्तम ज्ञान, उत्तम मन (यत्) जब (उक्थम) प्रशंसनीय (परमात्मा) (अकृष्ट) स्थापित (हृदय में) (भियसा) भय से (रोहणम) प्रगति के लिए (दिवः) दिव्य स्तर की ओर (प्रकाशवान, मुक्ति) (यत्) जब (मानुष प्रधनः) मनुष्य के कल्याण के लिए (इन्द्रम) इन्द्रियों का नियंत्रक (उत्तयाः) संरक्षण करता है (स्वः) स्वयं (नृषाचः) प्रगतिशील व्यक्ति (मरुतः) वायु (प्राण) (अमदन) हर्षित करता है (ननु) निश्चित रूप से ।

व्याख्या :-

प्राण हमारे अन्दर आनन्द कब पैदा करते हैं?

जब इन्द्रियों का नियंत्रक प्रशंसनीय परमात्मा का स्व-प्रकाश उत्तम ज्ञान और उत्तम बल के साथ या तो भय के कारण या मुक्ति के दिव्य स्तर तक प्रगति करने की अभिलाषा के कारण अपने हृदय में स्थापित कर लेता है, जब वह अन्य लोगों के कल्याण के लिए अपने प्रगतिशील जीवन में आत्मा को संरक्षित कर लेता है, उसके बाद उसके प्राण (वायु) निश्चित रूप से उसके अन्दर आनन्द का कारण बनते हैं ।

जीवन में सार्थकता :-

हृदय में परमात्मा को स्थापित करने के दो प्रधान कारण कौन से हैं?

जीवन में प्रगति का क्रम क्या है?

हमें परमात्मा को सत्य रूप में और सम्मान पूर्वक स्थापित करना चाहिए, इसके दो मुख्य कारण हैं – प्रथम, हम स्वयं को दुःखों के डर से बचा सकें और द्वितीय, हम मुक्ति के दिव्य स्तर तक प्रगति कर सकें ।

परमात्मा को अपने हृदय में स्थापित करने के बाद व्यक्ति स्वयं को संरक्षित कर सकता है और दूसरों के कल्याण के लिए लाभकारी हो सकता है। तभी प्राण उसके लिए आनन्दकारी होंगे।

इस प्रकार जीवन में प्रगति का क्रम दो कदमों में दिखाई देता है – प्रथम, मन की वृत्तियों को खत्म करके एक विचार पर ध्यान देना चाहिए कि अपने अन्दर ही परमात्मा की अनुभूति की तरफ प्रगतिशील रहें। द्वितीय, स्वयं अर्थात् आत्मा को संरक्षित करें जिससे दूसरों का कल्याण हो सके ।

ऐसा प्रगतिशील जीवन ही प्राणों के आनन्द की अनुभूति प्राप्त कर सकता है। उसी व्यक्ति के प्राण आनन्ददायक होते हैं जिसका जीवन अन्य लोगों के लिए लाभकारी होता है।

प्रगति का यह क्रम भौतिकवादी जीवन में भी समान रूप से लागू होता है। प्रथम, मन की वृत्तियों और बिखराव का नाश करे जिससे वह एक बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित कर सके। द्वितीय, अपनी मूल शक्ति का विकास करो जिससे अपनी आत्मा की रक्षा हो सके और दूसरों का कल्याण हो सके। जीवन में इन दो कदमों को सुनिश्चित करने के बाद ही कोई यह महसूस कर सकता है कि प्राण उसके लिए कितने आनन्ददायक बन चुके हैं।

ऋग्वेद 1.52.9

बृहत्स्वश्चन्द्रममवद्यदुव्यथा॑ मकृष्टभियसारोहणं दिवः ।

यन्मानुषप्रधनाइन्द्रमूतयः स्वनृषाचोमरुतोऽमदन्ननु ॥

(बृहत) बड़ा (स्वश्चन्द्रम) आत्म प्रकाश के साथ (अमवत) उत्तम ज्ञान, उत्तम मन (यत्) जब (उव्यथम्) प्रशंसनीय (परमात्मा) (अकृष्टत) स्थापित (हृदय में) (भियसा) भय से (रोहणम्) प्रगति के लिए (दिवः) दिव्य स्तर की ओर (प्रकाशवान, मुक्ति) (यत्) जब (मानुष प्रधनः) मनुष्य के कल्याण के लिए (इन्द्रम्) इन्द्रियों का नियंत्रक (उत्तयाः) संरक्षण करता है (स्वः) स्वयं (नृषाचः) प्रगतिशील व्यक्ति (मरुतः) वायु (प्राण) (अमदन) हर्षित करता है (ननु) निश्चित रूप से ।

व्याख्या :-

प्राण हमारे अन्दर आनन्द कब पैदा करते हैं?

जब इन्द्रियों का नियंत्रक प्रशंसनीय परमात्मा का स्व-प्रकाश उत्तम ज्ञान और उत्तम बल के साथ या तो भय के कारण या मुक्ति के दिव्य स्तर तक प्रगति करने की अभिलाषा के कारण अपने हृदय में स्थापित कर लेता है, जब वह अन्य लोगों के कल्याण के लिए अपने प्रगतिशील जीवन में आत्मा को संरक्षित कर लेता है, उसके बाद उसके प्राण (वायु) निश्चित रूप से उसके अन्दर आनन्द का कारण बनते हैं ।

जीवन में सार्थकता :-

हृदय में परमात्मा को स्थापित करने के दो प्रधान कारण कौन से हैं?

जीवन में प्रगति का क्रम क्या है?

हमें परमात्मा को सत्य रूप में और सम्मान पूर्वक स्थापित करना चाहिए, इसके दो मुख्य कारण हैं – प्रथम, हम स्वयं को दुःखों के डर से बचा सकें और द्वितीय, हम मुक्ति के दिव्य स्तर तक प्रगति कर सकें ।

परमात्मा को अपने हृदय में स्थापित करने के बाद व्यक्ति स्वयं को संरक्षित कर सकता है और दूसरों के कल्याण के लिए लाभकारी हो सकता है। तभी प्राण उसके लिए आनन्दकारी होंगे।

इस प्रकार जीवन में प्रगति का क्रम दो कदमों में दिखाई देता है – प्रथम, मन की वृत्तियों को खत्म करके एक विचार पर ध्यान देना चाहिए कि अपने अन्दर ही परमात्मा की अनुभूति की तरफ प्रगतिशील रहें। द्वितीय, स्वयं अर्थात् आत्मा को संरक्षित करें जिससे दूसरों का कल्याण हो सके ।

ऐसा प्रगतिशील जीवन ही प्राणों के आनन्द की अनुभूति प्राप्त कर सकता है। उसी व्यक्ति के प्राण आनन्ददायक होते हैं जिसका जीवन अन्य लोगों के लिए लाभकारी होता है।

प्रगति का यह क्रम भौतिकवादी जीवन में भी समान रूप से लागू होता है। प्रथम, मन की वृत्तियों और बिखराव का नाश करे जिससे वह एक बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित कर सके। द्वितीय, अपनी मूल शक्ति का विकास करो जिससे अपनी आत्मा की रक्षा हो सके और दूसरों का कल्याण हो सके। जीवन में इन दो कदमों को सुनिश्चित करने के बाद ही कोई यह महसूस कर सकता है कि प्राण उसके लिए कितने आनन्ददायक बन चुके हैं।



ऋग्वेद 1.52.10

द्यौश्चिदस्यामवाँ अहे: स्वनादयोयवीद्यियसावज्ज्ञन्द्रते।
वृत्रस्य यद्वद्वधानस्य रोदसीमदेसुतस्य शवसाभिनच्छिरः ॥ 10 ॥

(द्यौ:) प्रकाश, ज्ञान (चित) भी, निश्चित रूप से (अस्य) इसका (अमवान्) बल के साथ (अहे:) इनके (वृत्तियाँ, इच्छाएँ) (स्वनात) गर्जना करती हुई ध्वनि (अयोयवीत) पृथक होता है (भियसा) भय से (वज्र) वज्र (बल) (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (ते) आप (वृत्रस्य) वृत्तियों का, इच्छाओं का (यत) वह (बदधानस्य) बाधा उत्पन्न करने वाले, दर्द देने वाले (रोदसी) शरीर और मन के लिए, पृथ्वी और आकाश के लिए (मदे) प्रसन्नता में (सुतस्य) ज्ञान, गुण, प्रकाश (शवसा) बल के साथ (अभिनत) काटकर (शिरः) सिर।

व्याख्या :-

मन की वृत्तियों तथा इच्छाओं के क्या खतरे हैं?

मन की वृत्तियों का नाश कौन कर सकता है?

मन की वृत्तियों तथा इच्छाओं की गर्जना पूर्ण ध्वनि की शक्ति के साथ हमारा आन्तरिक प्रकाश और ज्ञान भी डर से दूर भाग जाता है। परन्तु इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक का वज्र (बल) ज्ञान के आनन्द, शुभ गुणों और प्रकाश के साथ पूरे बल सहित उन वृत्तियों और भूमि के साथ आकाश की भी इच्छा करने वाले विचारों को काटकर दूर फेंकता है जो बाधा उत्पन्न करने वाली तथा शरीर और मन के लिए कष्टकारी होती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

लक्ष्य की तरफ तेज गति से कैसे बढ़ें?

हमारे मन की वृत्तियाँ और इच्छाएं निश्चित रूप से शरीर और मन के लिए कष्टकारी और जीवन पथ पर महान् बाधक होती हैं। यह वृत्तियाँ हमारे भूतकाल से सम्बन्धित होती हैं, जबकि इच्छाएं भविष्य से सम्बन्धित होती हैं। दोनों ही हमें वर्तमान से पृथक कर देती हैं, वे हमारे अन्तिम लक्ष्य से भी हमें पृथक कर देती हैं। इन वृत्तियों और इच्छाओं का नाश करने के लिए एक ही वज्र है जो केवल इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक के पास होता है।

जीवन के लक्ष्य की तरफ प्रगति करते हुए हमें स्वयं को शक्तिशाली बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे हम अपनी इन्द्रियों को नियंत्रित कर सकें और अपने लक्ष्य से पृथक न हों। लक्ष्य की तरफ बढ़ने का यही एक मात्र तीव्र मार्ग है।



ऋग्वेद 1.52.10

द्यौश्चिदस्यामवाँ अहे: स्वनादयोयवीद्यियसावज्ज्ञन्द्रते।
वृत्रस्य यद्वद्वधानस्य रोदसीमदेसुतस्य शवसाभिनच्छिरः ॥ 10 ॥

(द्यौ:) प्रकाश, ज्ञान (चित) भी, निश्चित रूप से (अस्य) इसका (अमवान्) बल के साथ (अहे:) इनके (वृत्तियाँ, इच्छाएँ) (स्वनात) गर्जना करती हुई ध्वनि (अयोयवीत) पृथक होता है (भियसा) भय से (वज्र) वज्र (बल) (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (ते) आप (वृत्रस्य) वृत्तियों का, इच्छाओं का (यत) वह (बदधानस्य) बाधा उत्पन्न करने वाले, दर्द देने वाले (रोदसी) शरीर और मन के लिए, पृथ्वी और आकाश के लिए (मदे) प्रसन्नता में (सुतस्य) ज्ञान, गुण, प्रकाश (शवसा) बल के साथ (अभिनत) काटकर (शिरः) सिर।

व्याख्या :-

मन की वृत्तियों तथा इच्छाओं के क्या खतरे हैं?

मन की वृत्तियों का नाश कौन कर सकता है?

मन की वृत्तियों तथा इच्छाओं की गर्जना पूर्ण ध्वनि की शक्ति के साथ हमारा आन्तरिक प्रकाश और ज्ञान भी डर से दूर भाग जाता है। परन्तु इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक का वज्र (बल) ज्ञान के आनन्द, शुभ गुणों और प्रकाश के साथ पूरे बल सहित उन वृत्तियों और भूमि के साथ आकाश की भी इच्छा करने वाले विचारों को काटकर दूर फेंकता है जो बाधा उत्पन्न करने वाली तथा शरीर और मन के लिए कष्टकारी होती हैं।

जीवन में सार्थकता :-

लक्ष्य की तरफ तेज गति से कैसे बढ़ें?

हमारे मन की वृत्तियाँ और इच्छाएं निश्चित रूप से शरीर और मन के लिए कष्टकारी और जीवन पथ पर महान् बाधक होती हैं। यह वृत्तियाँ हमारे भूतकाल से सम्बन्धित होती हैं, जबकि इच्छाएं भविष्य से सम्बन्धित होती हैं। दोनों ही हमें वर्तमान से पृथक कर देती हैं, वे हमारे अन्तिम लक्ष्य से भी हमें पृथक कर देती हैं। इन वृत्तियों और इच्छाओं का नाश करने के लिए एक ही वज्र है जो केवल इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक के पास होता है।

जीवन के लक्ष्य की तरफ प्रगति करते हुए हमें स्वयं को शक्तिशाली बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे हम अपनी इन्द्रियों को नियंत्रित कर सकें और अपने लक्ष्य से पृथक न हों। लक्ष्य की तरफ बढ़ने का यही एक मात्र तीव्र मार्ग है।



ऋग्वेद 1.52.11

यदिन्वन्द्रपृथिवीदशभुजिरहानिविश्वाततनन्तकृष्टयः ।
अत्राह तेमघवन्निश्रुतंसहो द्यामनु शवसाबर्हणाभुवत् ॥ 11 ॥

(यत् इत् नु) जब निश्चित रूप से (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (पृथिवी) पृथिवी, शरीर (दशभुजः) दस बाहों के साथ, दस इन्द्रियों के साथ (अहानि) दिन (विश्वा) सब (ततनन्त) विस्तार (आपकी शक्तियों का) (कृष्टयः) कार्यरत (मनुष्य) (अत्र) यहाँ (इह) निश्चित रूप से (ते) आपके (मधवन) गौरवशाली सम्पदा के साथ, यज्ञ करने वाले (विश्रुतम्) विशेष प्रसिद्धि, सुनने योग्य (सहः) शक्ति (द्याम) ज्ञान, प्रकाश (अनु) के अनुसार (शवसा) गति के साथ (बर्हणा) समस्त सुखों को देने वाला (भुवत्) होओ ।

व्याख्या :-

हमें बल और धन कैसे प्राप्त हो सकता है?

जब निश्चित रूप से आप दस दिशाओं वाली इस भूमि का आनन्द लेते हो और आपका शरीर दस इन्द्रियों का आनन्द लेता है तो इसके साथ सभी कार्यशील मनुष्यों को अपनी शक्तियों का संवर्द्धन करना चाहिए, यहाँ इसी जीवन में। इस प्रकार आपकी गौरवशाली सम्पदा और बल को सुनने लायक विशेष प्रसिद्धि मिलेगी। आपके ज्ञान और आन्तरिक प्रकाश के अनुरूप ही आपके कार्य होने चाहिए। आपको अपने कार्य गति के साथ सम्पन्न करने चाहिए, क्योंकि यही कार्य हर प्रकार की सुविधा प्रदान करते हैं।

जीवन जीवन में सार्थकता :-

इन्द्रियों पर नियंत्रण के क्या परिणाम होते हैं?

दस दिशाओं वाली इस भूमि पर हर व्यक्ति अपनी इन्द्रियों के साथ ही भौतिक जीवन का आनन्द लेता है। हमें अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखना चाहिए तभी हमारा ज्ञान और गौरवशाली प्रसिद्धि सुनने लायक बनेगी। हमारे कार्य गति के साथ ही हमारे ज्ञान का अनुसरण करे, केवल तभी हमें यज्ञ करने के लिए और सुखों का आनन्द लेने के लिए गौरवशाली सम्पदा प्राप्त होगी।

इन्द्रियों पर नियंत्रण का चक्र

इन्द्रियों पर नियंत्रण —— प्रदान करता है —— ज्ञान का बल —— महान कार्य —— गौरवशाली सम्पदा —— विशेष प्रसिद्धि —— यज्ञ —— सुख सुविधाएँ ।



ऋग्वेद 1.52.11

यदिन्वन्द्रपृथिवीदशभुजिरहानिविश्वाततनन्तकृष्टयः ।
अत्राह तेमघवन्निश्रुतंसहो द्यामनु शवसाबर्हणाभुवत् ॥ 11 ॥

(यत् इत् नु) जब निश्चित रूप से (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (पृथिवी) पृथिवी, शरीर (दशभुजः) दस बाहों के साथ, दस इन्द्रियों के साथ (अहानि) दिन (विश्वा) सब (ततनन्त) विस्तार (आपकी शक्तियों का) (कृष्टयः) कार्यरत (मनुष्य) (अत्र) यहाँ (इह) निश्चित रूप से (ते) आपके (मधवन) गौरवशाली सम्पदा के साथ, यज्ञ करने वाले (विश्रुतम्) विशेष प्रसिद्धि, सुनने योग्य (सहः) शक्ति (द्याम) ज्ञान, प्रकाश (अनु) के अनुसार (शवसा) गति के साथ (बर्हणा) समस्त सुखों को देने वाला (भुवत्) होओ।

व्याख्या :-

हमें बल और धन कैसे प्राप्त हो सकता है?

जब निश्चित रूप से आप दस दिशाओं वाली इस भूमि का आनन्द लेते हो और आपका शरीर दस इन्द्रियों का आनन्द लेता है तो इसके साथ सभी कार्यशील मनुष्यों को अपनी शक्तियों का संवर्द्धन करना चाहिए, यहाँ इसी जीवन में। इस प्रकार आपकी गौरवशाली सम्पदा और बल को सुनने लायक विशेष प्रसिद्धि मिलेगी। आपके ज्ञान और आन्तरिक प्रकाश के अनुरूप ही आपके कार्य होने चाहिए। आपको अपने कार्य गति के साथ सम्पन्न करने चाहिए, क्योंकि यही कार्य हर प्रकार की सुविधा प्रदान करते हैं।

जीवन जीवन में सार्थकता :-

इन्द्रियों पर नियंत्रण के क्या परिणाम होते हैं?

दस दिशाओं वाली इस भूमि पर हर व्यक्ति अपनी इन्द्रियों के साथ ही भौतिक जीवन का आनन्द लेता है। हमें अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखना चाहिए तभी हमारा ज्ञान और गौरवशाली प्रसिद्धि सुनने लायक बनेगी। हमारे कार्य गति के साथ ही हमारे ज्ञान का अनुसरण करे, केवल तभी हमें यज्ञ करने के लिए और सुखों का आनन्द लेने के लिए गौरवशाली सम्पदा प्राप्त होगी।

इन्द्रियों पर नियंत्रण का चक्र

इन्द्रियों पर नियंत्रण —— प्रदान करता है —— ज्ञान का बल —— महान कार्य —— गौरवशाली सम्पदा —— विशेष प्रसिद्धि —— यज्ञ —— सुख सुविधाएँ।



ऋग्वेद 1.52.12

त्वमस्य पारेरजसोव्योमनः स्वभूत्योजाअवसे धृषन्मनः ।
चकृष्मूमिंप्रतिमानमोजसोऽ पः स्वः परिभूरेष्यादिवम् ॥ 12 ॥

(त्वम्) आप (अस्य) यह (पारे) पार करके (रजसो) रज गुणों वाला (गतिविधियाँ) (व्योमनः) आकाश (स्वभूति) स्व की अनुभूति (ओजाः) ओज (अवसे) संरक्षित करते हुए (धृषन्मनः) इन्द्रियों और भावनाओं पर पूर्ण नियंत्रण रखने वाला मन (चकृष्मू) करता है (भूमिम्) जीवन का वास अर्थात् शरीर (प्रतिमानम्) प्रतिनिधित्व करते हुए (ओजसः) बल और ओज (अपः) जल तथा आकाश (स्वः) प्रकाशमान (परिभूः) समस्त दिशाओं से (आ एषि) दिव्यता प्राप्त करते हुए (दिवम्) मन में।

व्याख्या :-

इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के आध्यात्मिक परिणाम क्या होते हैं?

'धृषन्मनः' तुम एक मात्र ऐसे हो जिसने सफलता पूर्वक मन को नियंत्रित कर लिया है और अधिकांश वृत्तियों को नष्ट कर दिया है, रजस लक्षणों वाले आकाश को भी पार कर चुके हो, जो गतिविधियों से पूर्ण होता है। ऐसे धृषन्मनः अपने तेज को संरक्षित करते हुए, आत्मा की अनुभूति की ओर बढ़ते हैं। वह अपने शरीर को बल और तेज का प्रतिनिधित्व करने के योग्य बना लेते हैं। सभी दिशाओं से मन में दिव्यताओं को प्राप्त करते हुए उसके जल और आकाश प्रकाश पैदा करने योग्य होते हैं।

अतः इन्द्रियों के नियंत्रक को महान् आध्यात्मिक परिणाम प्राप्त होते हैं :-

(क) वह गतिविधियों के स्तर अर्थात् रजस से ऊपर उच्च चेतना में जीवन जीता है।

(ख) अपने तेज अर्थात् शरीर और मन के पूर्ण बल को संरक्षित करते हुए वह आत्म अनुभूति की ओर बढ़ता है।

(ग) वह लगातार सब दिशाओं से दिव्यताओं को प्राप्त करता है।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के भौतिक परिणाम क्या होते हैं?

भौतिक जीवन में भी इन्द्रियों पर नियंत्रण समान महत्व का होता है जिससे (क) अपने मुख्य कार्यों पर ध्यान लगाया जा सके, (ख) इन्द्रियों की शक्तियों को व्यर्थ जाने से बचाया जा सके, (ग) स्वयं को रोगों और उनसे प्राप्त कष्टों से सुरक्षित रखा जा सके।



ऋग्वेद 1.52.12

त्वमस्य पारेरजसोव्योमनः स्वभूत्योजाअवसे धृषन्मनः ।
चकृष्मूमिंप्रतिमानमोजसोऽ पः स्वः परिभूरेष्यादिवम् ॥ 12 ॥

(त्वम्) आप (अस्य) यह (पारे) पार करके (रजसो) रज गुणों वाला (गतिविधियाँ) (व्योमनः) आकाश (स्वभूति) स्व की अनुभूति (ओजाः) ओज (अवसे) संरक्षित करते हुए (धृषन्मनः) इन्द्रियों और भावनाओं पर पूर्ण नियंत्रण रखने वाला मन (चकृष्मू) करता है (भूमिम्) जीवन का वास अर्थात् शरीर (प्रतिमानम्) प्रतिनिधित्व करते हुए (ओजसः) बल और ओज (अपः) जल तथा आकाश (स्वः) प्रकाशमान (परिभूः) समस्त दिशाओं से (आ एषि) दिव्यता प्राप्त करते हुए (दिवम्) मन में।

व्याख्या :-

इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के आध्यात्मिक परिणाम क्या होते हैं?

'धृषन्मनः' तुम एक मात्र ऐसे हो जिसने सफलता पूर्वक मन को नियंत्रित कर लिया है और अधिकांश वृत्तियों को नष्ट कर दिया है, रजस लक्षणों वाले आकाश को भी पार कर चुके हो, जो गतिविधियों से पूर्ण होता है। ऐसे धृषन्मनः अपने तेज को संरक्षित करते हुए, आत्मा की अनुभूति की ओर बढ़ते हैं। वह अपने शरीर को बल और तेज का प्रतिनिधित्व करने के योग्य बना लेते हैं। सभी दिशाओं से मन में दिव्यताओं को प्राप्त करते हुए उसके जल और आकाश प्रकाश पैदा करने योग्य होते हैं।

अतः इन्द्रियों के नियंत्रक को महान् आध्यात्मिक परिणाम प्राप्त होते हैं :-

(क) वह गतिविधियों के स्तर अर्थात् रजस से ऊपर उच्च चेतना में जीवन जीता है।

(ख) अपने तेज अर्थात् शरीर और मन के पूर्ण बल को संरक्षित करते हुए वह आत्म अनुभूति की ओर बढ़ता है।

(ग) वह लगातार सब दिशाओं से दिव्यताओं को प्राप्त करता है।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्रियों पर नियंत्रण करने के भौतिक परिणाम क्या होते हैं?

भौतिक जीवन में भी इन्द्रियों पर नियंत्रण समान महत्व का होता है जिससे (क) अपने मुख्य कार्यों पर ध्यान लगाया जा सके, (ख) इन्द्रियों की शक्तियों को व्यर्थ जाने से बचाया जा सके, (ग) स्वयं को रोगों और उनसे प्राप्त कष्टों से सुरक्षित रखा जा सके।



ऋग्वेद 1.52.13

त्वंभुवः प्रतिमानंपृथिव्या ऋष्वीरस्य बृहतः पतिर्भूः ।
विश्वमाप्राअन्तरिक्षं महित्वासत्यमद्वा नकिरन्यस्त्वावान् ॥ 13 ॥

(त्वम्) आप (भुवः) आकाश का (प्रतिमानम्) उत्पत्ति करता (पृथिव्या) पृथ्वी का (ऋष्व वीरस्य) बहादुर मनुष्य का, महान् गुणों वाला, समर्स्त सृष्टि का (बृहतः) बड़ा, शक्तिशाली (पतिः) संरक्षक (भूः) हैं (विश्वम्) समर्स्त (आप्रा) पूर्ण (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष (महित्वा) आपकी व्यापक शक्तियों के साथ (सत्यम्) सत्य (अद्वा) यह है (नकिः) कोई भी नहीं (अन्य) अन्य (त्वावान्) आपके जैसा ।

व्याख्या :-

जो व्यक्ति परमात्मा की अनुभूति कर लेता है उसके क्या दृष्टिकोण होते हैं?
एक बार जब व्यक्ति अपनी इन्द्रियों पर सफलता पूर्वक नियंत्रण पा लेता है और मन की वृत्तियों का नाश कर देता है तो वह इस मन्त्र में परमात्मा को सम्बोधित करते हुए कहता है कि उसने परमात्मा के विषय में क्या अनुभूति प्राप्त की है।
(क) आप भूमि और आकाश के निर्माता हो।
(ख) आप महान् गुणों को धारण करने वाले शक्तिशाली बहादुर पुरुषों सहित सम्पूर्ण शक्तिशाली सृष्टि के संरक्षक हो।
(ग) आप अपनी व्याप्त होने वाली शक्ति से अन्तरिक्ष को भी पूर्ण करते हो।
(घ) यह सत्य है कि आपके जैसा और कोई नहीं है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें सर्वोच्च अधिकारियों के साथ जुड़ने इच्छा क्यों करनी चाहिए?
शक्तियों में परमात्मा के समानान्तर कोई अन्य व्यक्ति या सत्ता नहीं है। क्योंकि केवल वही सृष्टि के प्रत्येक हिस्से का निर्माता और संरक्षक है। वह सम्पूर्ण सृष्टि और अन्तरिक्ष में ही व्याप्त है।
प्रत्येक व्यक्ति परिवार में, समाज में, राष्ट्र में और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च सत्ताओं के साथ जुड़ना चाहता है, क्योंकि सर्वोच्च सत्ताओं के साथ जुड़कर वह अपार लाभ प्राप्त करता है। एक सच्चा निर्माता, परमात्मा, सारी सृष्टि की सर्वोच्च सत्ता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान—साधना प्रक्रियाओं के माध्यम से उसी के साथ जुड़ने का प्रयास करना चाहिए जिससे दिव्य शक्तियाँ प्राप्त की जा सकें और सर्वोच्च दिव्य शक्ति की अनुभूति प्राप्त की जा सके।



ऋग्वेद 1.52.13

त्वंभुवः प्रतिमानंपृथिव्या ऋष्वीरस्य बृहतः पतिर्भूः ।
विश्वमाप्राअन्तरिक्षं महित्वासत्यमद्वा नकिरन्यस्त्वावान् ॥ 13 ॥

(त्वम्) आप (भुवः) आकाश का (प्रतिमानम्) उत्पत्ति करता (पृथिव्या) पृथ्वी का (ऋष्व वीरस्य) बहादुर मनुष्य का, महान् गुणों वाला, समर्स्त सृष्टि का (बृहतः) बड़ा, शक्तिशाली (पतिः) संरक्षक (भूः) हैं (विश्वम्) समर्स्त (आप्रा) पूर्ण (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष (महित्वा) आपकी व्यापक शक्तियों के साथ (सत्यम्) सत्य (अद्वा) यह है (नकिः) कोई भी नहीं (अन्य) अन्य (त्वावान्) आपके जैसा ।

व्याख्या :-

जो व्यक्ति परमात्मा की अनुभूति कर लेता है उसके क्या दृष्टिकोण होते हैं?
एक बार जब व्यक्ति अपनी इन्द्रियों पर सफलता पूर्वक नियंत्रण पा लेता है और मन की वृत्तियों का नाश कर देता है तो वह इस मन्त्र में परमात्मा को सम्बोधित करते हुए कहता है कि उसने परमात्मा के विषय में क्या अनुभूति प्राप्त की है।
(क) आप भूमि और आकाश के निर्माता हो।
(ख) आप महान् गुणों को धारण करने वाले शक्तिशाली बहादुर पुरुषों सहित सम्पूर्ण शक्तिशाली सृष्टि के संरक्षक हो।
(ग) आप अपनी व्याप्त होने वाली शक्ति से अन्तरिक्ष को भी पूर्ण करते हो।
(घ) यह सत्य है कि आपके जैसा और कोई नहीं है।

जीवन में सार्थकता :-

हमें सर्वोच्च अधिकारियों के साथ जुड़ने इच्छा क्यों करनी चाहिए?
शक्तियों में परमात्मा के समानान्तर कोई अन्य व्यक्ति या सत्ता नहीं है। क्योंकि केवल वही सृष्टि के प्रत्येक हिस्से का निर्माता और संरक्षक है। वह सम्पूर्ण सृष्टि और अन्तरिक्ष में ही व्याप्त है।
प्रत्येक व्यक्ति परिवार में, समाज में, राष्ट्र में और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च सत्ताओं के साथ जुड़ना चाहता है, क्योंकि सर्वोच्च सत्ताओं के साथ जुड़कर वह अपार लाभ प्राप्त करता है। एक सच्चा निर्माता, परमात्मा, सारी सृष्टि की सर्वोच्च सत्ता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान—साधना प्रक्रियाओं के माध्यम से उसी के साथ जुड़ने का प्रयास करना चाहिए जिससे दिव्य शक्तियाँ प्राप्त की जा सकें और सर्वोच्च दिव्य शक्ति की अनुभूति प्राप्त की जा सके।



ऋग्वेद 1.52.14

न यस्य द्यावापृथिवीअनुव्यचो न सिन्धवोरजसोअन्तमानशुः ।
नोतस्ववृष्टिमदेअस्य युध्यत एकोअन्यच्चकृषेविश्वमानुषक् ॥ 14 ॥

(न) नहीं (अस्य) जिसके (द्यावा पृथिवी) अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी (अनुव्यचः) सर्वत्र, सर्वव्यापक का अनुसरण (न) नहीं (सिन्धवः) बहते हुए जल (रजसः) सक्रिय संसार (अन्तमानशुः) प्राप्त करता है, अन्त को पकड़ता है (न) नहीं (उतः) और (स्व वृष्टिम्) उसकी अपनी वर्षा (मदे) आनन्द के लिए (अस्य) जिसका (युध्यतः) युद्ध करते हुए, संघर्ष करते हुए (एकः) अकेला (अन्यतः) उसके अतिरिक्त (चकृषे) करता है (विश्वम्) सम्पूर्ण विश्व (आनुषक) अपनी सर्वव्यापकता से सम्बद्ध करता है, निर्भर बना लेता है।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सर्वव्यापक है?

एक अनुभूति प्राप्त व्यक्ति के परमात्मा के बारे में आंकलन को जारी रखते हुए यह मन्त्र परमात्मा की सर्वव्यापकता का विश्लेषण इस प्रकार करता है :-

(क) अन्तरिक्ष और पृथ्वी उसकी सर्वव्यापकता का अनुसरण नहीं कर सकते।

(ख) बहते हुए जल और सक्रिय संसार उसे प्राप्त नहीं कर सकता और उसके अन्त को भी प्राप्त नहीं कर सकता।

(ग) उसके द्वारा वस्तुओं की वर्षा के लिए संघर्ष या युद्ध करते हुए भी कोई उसे पकड़ नहीं सकता।

(घ) वह अपनी सर्वव्यापकता में सबको समाहित कर लेता है और प्रत्येक वस्तु तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपने ऊपर निर्भर कर लेता है।

जीवन में सार्थकता :-

प्रत्येक व्यक्ति उस पर निर्भर क्यों होता है?

परमात्मा के केवल एक लक्षण अर्थात् सर्वत्र व्यापकता के द्वारा प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक व्यक्ति उस पर निर्भर है। वह हमारे शरीर और मन में भी व्याप्त है। अतः इन उपकरणों के माध्यम से हम जो कुछ भी करते हैं, हम उस पर निर्भर ही बने रहते हैं और हमारे जीवन की शक्ति, हमारे प्राण भी उसके द्वारा व्याप्त है। अतः आध्यात्मिक स्तर पर भी हम उस पर निर्भर हैं।

हमें उसकी सर्वव्यापकता रूपी मूल सच्चाई के प्रति संदेव चेतन रहना चाहिए।



ऋग्वेद 1.52.14

न यस्य द्यावापृथिवीअनुव्यचो न सिन्धवोरजसोअन्तमानशुः ।
नोतस्ववृष्टिमदेअस्य युध्यत एकोअन्यच्चकृषेविश्वमानुषक् ॥ 14 ॥

(न) नहीं (अस्य) जिसके (द्यावा पृथिवी) अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी (अनुव्यचः) सर्वत्र, सर्वव्यापक का अनुसरण (न) नहीं (सिन्धवः) बहते हुए जल (रजसः) सक्रिय संसार (अन्तमानशुः) प्राप्त करता है, अन्त को पकड़ता है (न) नहीं (उतः) और (स्व वृष्टिम्) उसकी अपनी वर्षा (मदे) आनन्द के लिए (अस्य) जिसका (युध्यतः) युद्ध करते हुए, संघर्ष करते हुए (एकः) अकेला (अन्यतः) उसके अतिरिक्त (चकृषे) करता है (विश्वम्) सम्पूर्ण विश्व (आनुषक) अपनी सर्वव्यापकता से सम्बद्ध करता है, निर्भर बना लेता है।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सर्वव्यापक है?

एक अनुभूति प्राप्त व्यक्ति के परमात्मा के बारे में आंकलन को जारी रखते हुए यह मन्त्र परमात्मा की सर्वव्यापकता का विश्लेषण इस प्रकार करता है :-

(क) अन्तरिक्ष और पृथ्वी उसकी सर्वव्यापकता का अनुसरण नहीं कर सकते।

(ख) बहते हुए जल और सक्रिय संसार उसे प्राप्त नहीं कर सकता और उसके अन्त को भी प्राप्त नहीं कर सकता।

(ग) उसके द्वारा वस्तुओं की वर्षा के लिए संघर्ष या युद्ध करते हुए भी कोई उसे पकड़ नहीं सकता।

(घ) वह अपनी सर्वव्यापकता में सबको समाहित कर लेता है और प्रत्येक वस्तु तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपने ऊपर निर्भर कर लेता है।

जीवन में सार्थकता :-

प्रत्येक व्यक्ति उस पर निर्भर क्यों होता है?

परमात्मा के केवल एक लक्षण अर्थात् सर्वत्र व्यापकता के द्वारा प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक व्यक्ति उस पर निर्भर है। वह हमारे शरीर और मन में भी व्याप्त है। अतः इन उपकरणों के माध्यम से हम जो कुछ भी करते हैं, हम उस पर निर्भर ही बने रहते हैं और हमारे जीवन की शक्ति, हमारे प्राण भी उसके द्वारा व्याप्त है। अतः आध्यात्मिक स्तर पर भी हम उस पर निर्भर हैं।

हमें उसकी सर्वव्यापकता रूपी मूल सच्चाई के प्रति संदेव चेतन रहना चाहिए।



ऋग्वेद 1.52.15

आर्चन्त्र मरुतः सस्मिन्नाजौविश्वेदेवासोअमदन्ननुत्वा ।
वृत्रस्य यद्गृष्टिमता वधेननित्वमिन्द्रप्रत्यानंजघन्थ ॥ 15 ॥

(आर्चन् – नि आर्चन) सदैव एवं नियमित आपकी पूजा करता है और आपका आहवान करता है (अत्र) यहाँ, इस जीवन में (मरुतः) दिव्य श्रद्धालु, कम बोलने वाले (सस्मिन्) सम्पूर्ण (आजौ) संग्राम, कठिनाईयाँ (विश्वे) सब (देवासः) दिव्य लोग (अमदन्) प्रसन्नता (अनु) अनुसरण करते हुए (त्वा) आपको (वृत्रस्य) मन की वृत्तियाँ, मन पर प्रभाव (यत) वह (भृष्टिमता) धूर्त मन को मारकर (वधेन) वज्र के साथ (नि – आर्चन् से पूर्व लगाया गया) (त्वम्) आप (इन्द्र) परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (प्रति आनम्) मुख का लक्ष्य करके (जघन्थ) प्रहार ।

व्याख्या :-

दिव्य लोग परमात्मा की पूजा और उनका आहवान क्यों करते हैं?

दिव्य लोग जो कम बोलते हैं वे सदैव और नियमित रूप से सभी संग्रामों में और कठिनाईयों में, यहाँ इसी जीवन में परमात्मा की पूजा और उनका आहवान करते हैं। सभी दिव्य लोग आपका अनुसरण करते हुए प्रसन्नता महसूस करते हैं। इन्द्र, परमात्मा सभी वृत्तियों के मुख पर लक्ष्य करते हुए प्रहार करता है, बेशक वह इन्द्रियों के नियंत्रक इन्द्र पुरुष के माध्यम से ही ऐसा करता है। इससे लगता है कि जैसे धूर्त मन को किसी हथियार से मार दिया गया हो ।

जीवन में सार्थकता :-

हमारी वृत्तियों का नाश कौन करता है?

योग दर्शन का यह मुख्य ध्येय है कि मन की वृत्तियों को नियंत्रित किया जाये अर्थात् 'योगः चित्त वृत्ति निरोधः'। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का यह 52वाँ सूक्त ही योग दर्शन का मूल ध्येय है। यह वर्तमान मन्त्र दिव्य लोगों को स्पष्ट आश्वासन देता है कि सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा, अपने पक्के श्रद्धालुओं को भी अपनी इन्द्रियों का नियंत्रक बनाकर इन्द्र बना देता है और इस प्रकार वृत्तियों के मुख पर प्रहार करता है। अतः सभी दिव्य लोगों को मन में धारणा बना लेनी चाहिए कि सर्वोच्च इन्द्र का आहवान करना ही एक मात्र मार्ग है जिससे हम स्वयं को इन्द्र बना सकें और इस प्रकार अपनी वृत्तियों का नाश करते हुए परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर प्रगति कर सकें।



ऋग्वेद 1.52.15

आर्चन्त्र मरुतः सस्मिन्नाजौविश्वेदेवासोअमदन्ननुत्वा ।
वृत्रस्य यद्गृष्टिमता वधेननित्वमिन्द्रप्रत्यानंजघन्थ ॥ 15 ॥

(आर्चन् – नि आर्चन) सदैव एवं नियमित आपकी पूजा करता है और आपका आहवान करता है (अत्र) यहाँ, इस जीवन में (मरुतः) दिव्य श्रद्धालु, कम बोलने वाले (सस्मिन्) सम्पूर्ण (आजौ) संग्राम, कठिनाईयाँ (विश्वे) सब (देवासः) दिव्य लोग (अमदन्) प्रसन्नता (अनु) अनुसरण करते हुए (त्वा) आपको (वृत्रस्य) मन की वृत्तियाँ, मन पर प्रभाव (यत) वह (भृष्टिमता) धूर्त मन को मारकर (वधेन) वज्र के साथ (नि – आर्चन् से पूर्व लगाया गया) (त्वम्) आप (इन्द्र) परमात्मा, इन्द्रियों का नियंत्रक (प्रति आनम्) मुख का लक्ष्य करके (जघन्थ) प्रहार ।

व्याख्या :-

दिव्य लोग परमात्मा की पूजा और उनका आहवान क्यों करते हैं?

दिव्य लोग जो कम बोलते हैं वे सदैव और नियमित रूप से सभी संग्रामों में और कठिनाईयों में, यहाँ इसी जीवन में परमात्मा की पूजा और उनका आहवान करते हैं। सभी दिव्य लोग आपका अनुसरण करते हुए प्रसन्नता महसूस करते हैं। इन्द्र, परमात्मा सभी वृत्तियों के मुख पर लक्ष्य करते हुए प्रहार करता है, बेशक वह इन्द्रियों के नियंत्रक इन्द्र पुरुष के माध्यम से ही ऐसा करता है। इससे लगता है कि जैसे धूर्त मन को किसी हथियार से मार दिया गया हो ।

जीवन में सार्थकता :-

हमारी वृत्तियों का नाश कौन करता है?

योग दर्शन का यह मुख्य ध्येय है कि मन की वृत्तियों को नियंत्रित किया जाये अर्थात् 'योगः चित्त वृत्ति निरोधः'। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का यह 52वाँ सूक्त ही योग दर्शन का मूल ध्येय है। यह वर्तमान मन्त्र दिव्य लोगों को स्पष्ट आश्वासन देता है कि सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा, अपने पक्के श्रद्धालुओं को भी अपनी इन्द्रियों का नियंत्रक बनाकर इन्द्र बना देता है और इस प्रकार वृत्तियों के मुख पर प्रहार करता है। अतः सभी दिव्य लोगों को मन में धारणा बना लेनी चाहिए कि सर्वोच्च इन्द्र का आहवान करना ही एक मात्र मार्ग है जिससे हम स्वयं को इन्द्र बना सकें और इस प्रकार अपनी वृत्तियों का नाश करते हुए परमात्मा की अनुभूति के मार्ग पर प्रगति कर सकें।



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.1

दिवशिंचदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मह्ना पृथिवी चन प्रति ।

भीमस्तुविष्मांचर्षणिभ्य आतपः शिर्षीते वज्रं तेजसे न वंसगः ॥

(दिव:) प्रकाशमान द्यूलोक (चित) भी (अस्य) जिसका (परमात्मा का) (वरिमा) सर्वोच्चता (वि पप्रथ) विशेष विस्तार वाला (इन्द्रम) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा का (न) नहीं (मह्ना) महानता (पृथिवी) यह भूमि (चन) तुलना की गई (प्रति) प्रतिनिधित्व (भीम:) अपनी प्रबल शक्ति के कारण (तुविष्मान) सर्वोच्च ज्ञान (चर्षणिभ्य) कड़ी मेहनत करने वाले लोगों के लिए (आतप:) प्रदीप्त त्याग (शिर्षीते) तीक्ष्ण करता है, तरंगित करता है (वज्रम) वज्र किरणें (तेजसे) महान् कार्यों के लिए, प्रकाश के लिए (न) जैसे (वंसग:) गर्जता हुआ हमला ।

व्याख्या :-

अन्तरिक्ष में और महानता में कौन सबसे सर्वोच्च है?

कड़ी मेहनत वाले लोगों के लिए वह क्या है?

जिसकी सर्वोच्चता समस्त प्रकाशमान् अन्तरिक्ष से भी परे विशेष रूप से विस्तृत है, यहाँ तक कि उस सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा की महानता के दृष्टिकोण से समूची धरती भी उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए तुलना के योग्य नहीं है। अपनी अपार शक्ति और सर्वोच्च ज्ञान के कारण वह कड़ी मेहनत करने वाले लोगों के लिए ज्वलन्त त्याग है। वह गर्जते हुए हमलों जैसे – महान् कार्यों के लिए वज्रों को तेज बना देता है, वह गर्जते हुए हमलों के समान प्रकाश पैदा करने के लिए किरणें उत्पन्न करता है।

जीवन में सार्थकता :-

गर्जते हुए हमले के लिए कौन बल देता है?

अन्य लोगों में सर्वोच्च ज्ञान कौन देता है?

हमें अपना अधिकार किसे हस्तांतरित करना चाहिए?

परमात्मा सबसे बड़े से भी बड़ा है, सबसे महान् से भी महान् है। उसकी सभी शक्तियों को इस प्रकार श्रेणीबद्ध किया जा सकता है :–

(क) भौतिक शक्तियाँ तथा

(ख) ज्ञान का प्रकाश ।

यह उन कड़ी मेहनत करने वाले लोगों को उपहार दी जाती हैं जो परमात्मा से जुड़े रहते हैं, अन्य सभी लोग अर्थात् स्वार्थी लोग केवल चोरों की तरह परमात्मा की शक्तियों का आनन्द लेते हैं।

जो लोग यज्ञ अर्थात् दूसरों के कल्याण जैसे – महान् कार्य करते हैं, परमात्मा उनके बल बढ़ाते रहते हैं। परमात्मा उन लोगों के मन में विशेष दिव्य प्रभाव प्रदान करते हैं, जो उनके प्रति समर्पित हैं और अन्यों को प्रकाशित करते हैं।

इस मन्त्र से अन्य लोगों को अपने अधिकार सौंपने से सम्बन्धित एक अनुपातिक सिद्धान्त निकलता है कि सभी वरिष्ठ अधिकारियों को अपने अधिकार उन लोगों में रक्षान्तरित करने चाहिए जो यज्ञ अर्थात् अन्य लोगों का पूर्ण कल्याण करते हों।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.1

दिवशिंचदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मह्ना पृथिवी चन प्रति ।

भीमस्तुविष्मांचर्षणिभ्य आतपः शिर्षीते वज्रं तेजसे न वंसगः ॥

(दिव:) प्रकाशमान द्यूलोक (चित) भी (अस्य) जिसका (परमात्मा का) (वरिमा) सर्वोच्चता (वि पप्रथ) विशेष विस्तार वाला (इन्द्रम) सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा का (न) नहीं (मह्ना) महानता (पृथिवी) यह भूमि (चन) तुलना की गई (प्रति) प्रतिनिधित्व (भीम:) अपनी प्रबल शक्ति के कारण (तुविष्मान) सर्वोच्च ज्ञान (चर्षणिभ्य) कड़ी मेहनत करने वाले लोगों के लिए (आतप:) प्रदीप्त त्याग (शिर्षीते) तीक्ष्ण करता है, तरंगित करता है (वज्रम) वज्र किरणें (तेजसे) महान् कार्यों के लिए, प्रकाश के लिए (न) जैसे (वंसग:) गर्जता हुआ हमला ।

व्याख्या :-

अन्तरिक्ष में और महानता में कौन सबसे सर्वोच्च है?

कड़ी मेहनत वाले लोगों के लिए वह क्या है?

जिसकी सर्वोच्चता समस्त प्रकाशमान् अन्तरिक्ष से भी परे विशेष रूप से विस्तृत है, यहाँ तक कि उस सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा की महानता के दृष्टिकोण से समूची धरती भी उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए तुलना के योग्य नहीं है। अपनी अपार शक्ति और सर्वोच्च ज्ञान के कारण वह कड़ी मेहनत करने वाले लोगों के लिए ज्वलन्त त्याग है। वह गर्जते हुए हमलों जैसे – महान् कार्यों के लिए वज्रों को तेज बना देता है, वह गर्जते हुए हमलों के समान प्रकाश पैदा करने के लिए किरणें उत्पन्न करता है।

जीवन में सार्थकता :-

गर्जते हुए हमले के लिए कौन बल देता है?

अन्य लोगों में सर्वोच्च ज्ञान कौन देता है?

हमें अपना अधिकार किसे हस्तांतरित करना चाहिए?

परमात्मा सबसे बड़े से भी बड़ा है, सबसे महान् से भी महान् है। उसकी सभी शक्तियों को इस प्रकार श्रेणीबद्ध किया जा सकता है :–

(क) भौतिक शक्तियाँ तथा

(ख) ज्ञान का प्रकाश ।

यह उन कड़ी मेहनत करने वाले लोगों को उपहार दी जाती हैं जो परमात्मा से जुड़े रहते हैं, अन्य सभी लोग अर्थात् स्वार्थी लोग केवल चोरों की तरह परमात्मा की शक्तियों का आनन्द लेते हैं।

जो लोग यज्ञ अर्थात् दूसरों के कल्याण जैसे – महान् कार्य करते हैं, परमात्मा उनके बल बढ़ाते रहते हैं। परमात्मा उन लोगों के मन में विशेष दिव्य प्रभाव प्रदान करते हैं, जो उनके प्रति समर्पित हैं और अन्यों को प्रकाशित करते हैं।

इस मन्त्र से अन्य लोगों को अपने अधिकार सौंपने से सम्बन्धित एक अनुपातिक सिद्धान्त निकलता है कि सभी वरिष्ठ अधिकारियों को अपने अधिकार उन लोगों में रक्षान्तरित करने चाहिए जो यज्ञ अर्थात् अन्य लोगों का पूर्ण कल्याण करते हों।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.2

सो अर्णवो न नद्यः समुद्रियः प्रति गृभ्णाति विश्रिता वरीमभिः ।
इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते सनात्स युध्म ओजसा पनस्यते ॥

(स:) वह (परमात्मा) (अर्णवः) समुद्र (न) जैसे कि (नद्यः) नदियाँ (समुद्रियः) समुद्र की तरफ जाते हुए (प्रति गृभ्णाति) ग्रहण करता है (विश्रिताः) भिन्न-भिन्न स्थानों पर आश्रय करने वाली (वरीमभिः) विस्तृत (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (सोमस्य) शुभ गुणों वाला ज्ञान (पीतये) पीने के द्वारा (वृषायते) शक्तिशाली व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है (सनातः) शाश्वत अर्थात् सनातन (स:) वह (युध्मः) युद्ध करते हुए, संघर्ष करते हुए (ओजसा) अपनी चमक, शक्तियों और कार्यों के साथ (पनस्यते) परमात्मा की अनुभूति का इच्छुक, लोगों पर शासन करने का इच्छुक ।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की इच्छा कौन कर सकता है?

लोगों पर शासन करने की इच्छा कौन कर सकता है?

जिस प्रकार समुद्र उन नदियों को स्वीकार करता है जो समुद्र की तरफ जाते हुए भिन्न-भिन्न स्थानों पर फैली होती हैं और आराम करती हैं; जिस प्रकार एक इन्द्रियों का नियंत्रक, शुभगुणों वाले ज्ञान का पान करने के बाद, एक शक्तिशाली व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है; जिस प्रकार वह (परमात्मा), एक सनातन शक्ति होने के नाते, अपनी यशस्वी शक्तियों, ज्ञान तथा कार्यों से एक व्यक्ति को युद्ध करने और संघर्ष करने में लगाये रखता है तथा परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की इच्छा करता है। सांसारिक जीवन में इस मन्त्र को लागू करने पर एक व्यक्ति अपनी यशस्वी शक्तियों, ज्ञान और कार्यों से लोगों पर शासन करने की इच्छा कर सकता है।

जीवन में सार्थकता :-

यशस्वी शक्तियाँ, ज्ञान और कार्यों को कैसे प्राप्त करें?

प्रत्येक व्यक्ति को यशस्वी शक्तियाँ, ज्ञान और कार्यों को प्राप्त करने के लिए कड़े प्रयास करने चाहिए। ऐसे कर्मकोष के साथ ही कोई आध्यात्मिक पथ पर परमात्मा की अनुभूति की इच्छा कर सकता है। जबकि सांसारिक जीवन में ऐसा व्यक्ति लोगों पर शासन करने की इच्छा कर सकता है।

यशस्वी शक्तियाँ उस अवस्था में हमारे पास आती हैं जब हम स्वयं को परमात्मा की सनातन शक्ति में स्थापित कर लेते हैं, सदा कठिन परिस्थितियों, लालच, अहंकार और इच्छाओं के विरुद्ध सदैव युद्ध तथा संघर्ष करते रहते हैं और इन्द्रियों के सच्चे नियंत्रक बन जाते हैं। सभी बुराईयों को जीत लो और सभी शुभगुणों की रक्षा करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.2

सो अर्णवो न नद्यः समुद्रियः प्रति गृभ्णाति विश्रिता वरीमभिः ।
इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते सनात्स युध्म ओजसा पनस्यते ॥

(स:) वह (परमात्मा) (अर्णवः) समुद्र (न) जैसे कि (नद्यः) नदियाँ (समुद्रियः) समुद्र की तरफ जाते हुए (प्रति गृभ्णाति) ग्रहण करता है (विश्रिताः) भिन्न-भिन्न स्थानों पर आश्रय करने वाली (वरीमभिः) विस्तृत (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (सोमस्य) शुभ गुणों वाला ज्ञान (पीतये) पीने के द्वारा (वृषायते) शक्तिशाली व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है (सनातः) शाश्वत अर्थात् सनातन (स:) वह (युध्मः) युद्ध करते हुए, संघर्ष करते हुए (ओजसा) अपनी चमक, शक्तियों और कार्यों के साथ (पनस्यते) परमात्मा की अनुभूति का इच्छुक, लोगों पर शासन करने का इच्छुक ।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की इच्छा कौन कर सकता है?

लोगों पर शासन करने की इच्छा कौन कर सकता है?

जिस प्रकार समुद्र उन नदियों को स्वीकार करता है जो समुद्र की तरफ जाते हुए भिन्न-भिन्न स्थानों पर फैली होती हैं और आराम करती हैं; जिस प्रकार एक इन्द्रियों का नियंत्रक, शुभगुणों वाले ज्ञान का पान करने के बाद, एक शक्तिशाली व्यक्ति की तरह व्यवहार करता है; जिस प्रकार वह (परमात्मा), एक सनातन शक्ति होने के नाते, अपनी यशस्वी शक्तियों, ज्ञान तथा कार्यों से एक व्यक्ति को युद्ध करने और संघर्ष करने में लगाये रखता है तथा परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने की इच्छा करता है। सांसारिक जीवन में इस मन्त्र को लागू करने पर एक व्यक्ति अपनी यशस्वी शक्तियों, ज्ञान और कार्यों से लोगों पर शासन करने की इच्छा कर सकता है।

जीवन में सार्थकता :-

यशस्वी शक्तियाँ, ज्ञान और कार्यों को कैसे प्राप्त करें?

प्रत्येक व्यक्ति को यशस्वी शक्तियाँ, ज्ञान और कार्यों को प्राप्त करने के लिए कड़े प्रयास करने चाहिए। ऐसे कर्मकोष के साथ ही कोई आध्यात्मिक पथ पर परमात्मा की अनुभूति की इच्छा कर सकता है। जबकि सांसारिक जीवन में ऐसा व्यक्ति लोगों पर शासन करने की इच्छा कर सकता है।

यशस्वी शक्तियाँ उस अवस्था में हमारे पास आती हैं जब हम स्वयं को परमात्मा की सनातन शक्ति में स्थापित कर लेते हैं, सदा कठिन परिस्थितियों, लालच, अहंकार और इच्छाओं के विरुद्ध सदैव युद्ध तथा संघर्ष करते रहते हैं और इन्द्रियों के सच्चे नियंत्रक बन जाते हैं। सभी बुराईयों को जीत लो और सभी शुभगुणों की रक्षा करो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.3

त्वं तमिन्द्रं पर्वतं न भोजसे महो नृमणस्य धर्मणामिरज्यसि ।
प्र वीर्येण देवताति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः ॥

(त्वम्) आप (तम) उस (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (पर्वतम्) मेघ (वृत्तियों के, अहंकार के, अज्ञानता के) (न) नहीं (भोजसे) संरक्षण, भोगना (महः नृमणस्य) महान् सम्पदा का (धर्मणाम्) धर्म के लिए (धारण करने योग्य सिद्धान्त एवं कार्य) (इरज्यसि) दिव्य हो जाता है, शासन का आनन्द लेता है (प्र वीर्येण) भारी बल के कारण (देवता) दिव्य जीवन (अति चेकिते) सर्वत्र जाना जाता है (विश्वस्मै) सबके लिए (उग्रः) मजबूत, प्रकाशित करने वाला (कर्मणे) सभी कर्मों के लिए (पुरोहितः) सबका कल्याण सुनिश्चित करने वाला ।

व्याख्या :-

इन्द्रियों के नियंत्रक के क्या कर्तव्य होते हैं?

इन्द्रियों के नियंत्रक, आपको बादलों का संरक्षण या उनका भोग नहीं करना (वृत्तियों, अहंकार और इच्छाओं के बादल)। आप दिव्य बन जाओ और अपनी महान् सम्पदा का प्रयोग धर्म के लिए करके अपने शासन का आनन्द लो, धर्म के सिद्धान्तों को धारण करो और धर्म के कार्यों को करो। अपने शरीर, मन और आत्मा की विशाल शक्ति के कारण अपने दिव्य जीवन के लिए आप सर्वत्र जाने जाओगे। अपने सभी बलशाली और प्रकाशित कार्यों के माध्यम से सबका कल्याण सुनिश्चित करो।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्रियों के नियंत्रक को क्या लाभ होता है?

सूर्य बादलों को खाता नहीं है, बल्कि सबके संरक्षण और कल्याण के लिए उनको नीचे वर्षा देता है। इसी प्रकार इन्द्रियों का नियंत्रक अपने अहकार और इच्छाओं की वृत्तियों का न तो संरक्षण करता है और न ही उनका भोग करता है, अपितु बलशाली का प्रकाश और दिव्यता प्राप्त करने के लिए उन्हें नीचे गिरा देता है। ऐसी दिव्यता को वह धर्म की रक्षा तथा सबके कल्याण के लिए प्रयोग करता है। इस प्रकार इन्द्रियों का नियंत्रक अपनी दिव्यता के लिए प्रसिद्ध हो जाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.3

त्वं तमिन्द्रं पर्वतं न भोजसे महो नृमणस्य धर्मणामिरज्यसि ।
प्र वीर्येण देवताति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः ॥

(त्वम्) आप (तम) उस (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (पर्वतम्) मेघ (वृत्तियों के, अहंकार के, अज्ञानता के) (न) नहीं (भोजसे) संरक्षण, भोगना (महः नृमणस्य) महान् सम्पदा का (धर्मणाम्) धर्म के लिए (धारण करने योग्य सिद्धान्त एवं कार्य) (इरज्यसि) दिव्य हो जाता है, शासन का आनन्द लेता है (प्र वीर्येण) भारी बल के कारण (देवता) दिव्य जीवन (अति चेकिते) सर्वत्र जाना जाता है (विश्वस्मै) सबके लिए (उग्रः) मजबूत, प्रकाशित करने वाला (कर्मणे) सभी कर्मों के लिए (पुरोहितः) सबका कल्याण सुनिश्चित करने वाला ।

व्याख्या :-

इन्द्रियों के नियंत्रक के क्या कर्तव्य होते हैं?

इन्द्रियों के नियंत्रक, आपको बादलों का संरक्षण या उनका भोग नहीं करना (वृत्तियों, अहंकार और इच्छाओं के बादल)। आप दिव्य बन जाओ और अपनी महान् सम्पदा का प्रयोग धर्म के लिए करके अपने शासन का आनन्द लो, धर्म के सिद्धान्तों को धारण करो और धर्म के कार्यों को करो। अपने शरीर, मन और आत्मा की विशाल शक्ति के कारण अपने दिव्य जीवन के लिए आप सर्वत्र जाने जाओगे। अपने सभी बलशाली और प्रकाशित कार्यों के माध्यम से सबका कल्याण सुनिश्चित करो।

जीवन में सार्थकता :-

इन्द्रियों के नियंत्रक को क्या लाभ होता है?

सूर्य बादलों को खाता नहीं है, बल्कि सबके संरक्षण और कल्याण के लिए उनको नीचे वर्षा देता है। इसी प्रकार इन्द्रियों का नियंत्रक अपने अहकार और इच्छाओं की वृत्तियों का न तो संरक्षण करता है और न ही उनका भोग करता है, अपितु बलशाली का प्रकाश और दिव्यता प्राप्त करने के लिए उन्हें नीचे गिरा देता है। ऐसी दिव्यता को वह धर्म की रक्षा तथा सबके कल्याण के लिए प्रयोग करता है। इस प्रकार इन्द्रियों का नियंत्रक अपनी दिव्यता के लिए प्रसिद्ध हो जाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.4

स इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रूवाण इन्द्रियम् ।

वृषा छन्दुर्भवति हर्यतो वृषा क्षेमेण धेनां मघवा यदिन्चति ॥ ।

(स इति) केवल वह (वने) एकान्त स्थान पर, एकाग्र मन के साथ (नमस्युभिः) विनम्र प्रशंसा करने वालों से (वचस्यते) प्रशंसित, स्तुति किया जाता है (चारु) सुन्दर (जनेषु) लोगों के लिए (प्रब्रूवाण) प्रगट किया गया (इन्द्रियम्) उसका ज्ञान और शक्ति (वृषा) वर्षा करने वाला (छन्दुः) आनन्दित एवं मुक्त (भवति) वह है (हर्यतः) उत्तम कार्य करने वालों के लिए (वृषा) वर्षा (क्षेमेण) शक्ति तथा संरक्षण के लिए (धेनाम्) उत्तम वाणियाँ (ज्ञान एवं प्रेरणा के लिए) (मघवा) यशस्वी सम्पदा (यत् इन्चति) जब व्याप्त करता है, जब प्राप्त करता है।

व्याख्या :-

विनम्र प्रशंसकों के द्वारा ही परमात्मा की प्रशंसा क्यों होती है?

उसकी प्रशंसा और महिमा केवल विनम्र प्रशंसक ही एकान्त स्थान में और एकाग्र मन के साथ करते हैं, क्योंकि वह अपना सुन्दर ज्ञान और दिव्य शक्तियाँ ऐसे लोगों के लिए व्यक्त करता है। वह उत्तम कार्य करने वालों के लिए आनन्ददाता है और अपार वर्षा करने वाला है। जब वह सबके बल और संरक्षण के लिए अपनी उत्तम वाणियों और यशस्वी सम्पदाओं की वर्षा करता है तो वह सब जगह व्याप्त हो जाता है और सब तरफ से प्रशंसाएँ और महिमा मंडन प्राप्त करता है।

जीवन में सार्थकता :-

लोगों के गहरे हृदय से हम सम्मान कैसे प्राप्त करें?

सभी सन्त वनों अर्थात् तपस्या के लिए भक्तिपूर्ण एकान्तवास को क्यों चुनते हैं?

अपने मन में वनों जैसी अवस्था कैसे पैदा करें?

यह मन्त्र सभी मानवों के लिए एक दिव्य पथ का निर्धारण करता है जिससे वे सबके कल्याण के लिए उत्तम कार्यों को कर सकें और सबके संरक्षण के लिए उत्तम ज्ञान, दिव्य वाणियाँ और यशस्वी सम्पदा प्राप्त कर सकें। इस प्रकार ऐसा व्यक्ति भी सबके हृदय में व्याप्त हो जाता है और सबके द्वारा एकाग्र मन से प्रशंसित और महिमा मंडित होता है, यह औपचारिक नहीं होता। वह लोगों गहरे हृदय से सम्मान प्राप्त करता है।

हमें परमात्मा की तरह सम्मानित और प्रशंसित होने के लिए परमात्मा के पथ का ही अनुसरण करना चाहिए। परमात्मा जैसे बनने के लिए परमात्मा का अनुसरण करो। दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए दिव्य मार्ग का अनुसरण करो।

इस मन्त्र का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है – ‘वने’ अर्थात् जंगल, एकान्त, अलग जीवन, मन और हृदय की गहराई में एकाग्रता। दिव्यता को लोगों के द्वारा महिमा मंडित होने की आवश्कता नहीं होती। सच्ची दिव्यता को सच्चा और मूल समर्पण चाहिए। सभी महान् सन्त और ऋषि जंगलों अथवा एकान्त स्थानों पर जाते थे जिससे उन्हें मन और हृदय की एकाग्रता प्राप्त हो और दिव्यता प्राप्त करने के लिए वे परमात्मा का महिमागान कर सकें। ‘वने’ के दो पहलू हैं – शारीरिक और मानसिक अर्थात् मन में वन जैसे अकेलेपन का निर्माण करना।

इस मन्त्र के निष्कर्ष के रूप में हमें यह प्रेरणा प्राप्त होती है कि हम उत्तम कार्य करें और अपने सारे मानसिक विभागों को सर्वोच्च दिव्यता की महिमा में लगा दें। यह कार्य तभी हो सकता है जब हमारा मन एक सूत्रीय लक्ष्य पर हो कि हमें सर्वोच्च दिव्यता के साथ एकता की अनुभूति करनी है। श्रद्धाभाव से किया गया एकान्तवास मन का संतुलन बनाने में सहायक होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.4

स इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रूवाण इन्द्रियम् ।

वृषा छन्दुर्भवति हर्यतो वृषा क्षेमेण धेनां मघवा यदिन्चति ॥ ।

(स इति) केवल वह (वने) एकान्त स्थान पर, एकाग्र मन के साथ (नमस्युभिः) विनम्र प्रशंसा करने वालों से (वचस्यते) प्रशंसित, स्तुति किया जाता है (चारु) सुन्दर (जनेषु) लोगों के लिए (प्रब्रूवाण) प्रगट किया गया (इन्द्रियम्) उसका ज्ञान और शक्ति (वृषा) वर्षा करने वाला (छन्दुः) आनन्दित एवं मुक्त (भवति) वह है (हर्यतः) उत्तम कार्य करने वालों के लिए (वृषा) वर्षा (क्षेमेण) शक्ति तथा संरक्षण के लिए (धेनाम्) उत्तम वाणियाँ (ज्ञान एवं प्रेरणा के लिए) (मघवा) यशस्वी सम्पदा (यत् इन्चति) जब व्याप्त करता है, जब प्राप्त करता है।

व्याख्या :-

विनम्र प्रशंसकों के द्वारा ही परमात्मा की प्रशंसा क्यों होती है?

उसकी प्रशंसा और महिमा केवल विनम्र प्रशंसक ही एकान्त स्थान में और एकाग्र मन के साथ करते हैं, क्योंकि वह अपना सुन्दर ज्ञान और दिव्य शक्तियाँ ऐसे लोगों के लिए व्यक्त करता है। वह उत्तम कार्य करने वालों के लिए आनन्ददाता है और अपार वर्षा करने वाला है। जब वह सबके बल और संरक्षण के लिए अपनी उत्तम वाणियाँ और यशस्वी सम्पदाओं की वर्षा करता है तो वह सब जगह व्याप्त हो जाता है और सब तरफ से प्रशंसाएँ और महिमा मंडन प्राप्त करता है।

जीवन में सार्थकता :-

लोगों के गहरे हृदय से हम सम्मान कैसे प्राप्त करें?

सभी सन्त वनों अर्थात् तपस्या के लिए भक्तिपूर्ण एकान्तवास को क्यों चुनते हैं?

अपने मन में वनों जैसी अवस्था कैसे पैदा करें?

यह मन्त्र सभी मानवों के लिए एक दिव्य पथ का निर्धारण करता है जिससे वे सबके कल्याण के लिए उत्तम कार्यों को कर सकें और सबके संरक्षण के लिए उत्तम ज्ञान, दिव्य वाणियाँ और यशस्वी सम्पदा प्राप्त कर सकें। इस प्रकार ऐसा व्यक्ति भी सबके हृदय में व्याप्त हो जाता है और सबके द्वारा एकाग्र मन से प्रशंसित और महिमा मंडित होता है, यह औपचारिक नहीं होता। वह लोगों गहरे हृदय से सम्मान प्राप्त करता है।

हमें परमात्मा की तरह सम्मानित और प्रशंसित होने के लिए परमात्मा के पथ का ही अनुसरण करना चाहिए। परमात्मा जैसे बनने के लिए परमात्मा का अनुसरण करो। दिव्य शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए दिव्य मार्ग का अनुसरण करो।

इस मन्त्र का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है – ‘वने’ अर्थात् जंगल, एकान्त, अलग जीवन, मन और हृदय की गहराई में एकाग्रता। दिव्यता को लोगों के द्वारा महिमा मंडित होने की आवश्कता नहीं होती। सच्ची दिव्यता को सच्चा और मूल समर्पण चाहिए। सभी महान् सन्त और ऋषि जंगलों अथवा एकान्त स्थानों पर जाते थे जिससे उन्हें मन और हृदय की एकाग्रता प्राप्त हो और दिव्यता प्राप्त करने के लिए वे परमात्मा का महिमागान कर सकें। ‘वने’ के दो पहलू हैं – शारीरिक और मानसिक अर्थात् मन में वन जैसे अकेलेपन का निर्माण करना।

इस मन्त्र के निष्कर्ष के रूप में हमें यह प्रेरणा प्राप्त होती है कि हम उत्तम कार्य करें और अपने सारे मानसिक विभागों को सर्वोच्च दिव्यता की महिमा में लगा दें। यह कार्य तभी हो सकता है जब हमारा मन एक सूत्रीय लक्ष्य पर हो कि हमें सर्वोच्च दिव्यता के साथ एकता की अनुभूति करनी है। श्रद्धाभाव से किया गया एकान्तवास मन का संतुलन बनाने में सहायक होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.5

स इन्महानि समिथानि मज्जना कृणोति युध्म ओजसा जनेभ्यः ।
अथा चन श्रद्धति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघन्ते वधम् ॥

(स:) वह (इति) निश्चित रूप से (महानि) बड़े में (समिथानि) युद्ध, संघर्ष एवं कठिनाईयों में (मज्जना) शक्तिशाली बनाने के लिए, शुद्ध करने के लिए (कृणोति) करता है (युध्म) महान् योद्धा बनता है (ओजसा) बल (जनेभ्यः) लोगों के लिए (अथा चन) इस विजय के बाद, लोग (श्रद्धति) सम्मान प्रस्तुत करता है, पूर्ण विश्वास व्यक्त करता है (त्विषीमत) वैभव, महिमा (इन्द्राय) सभी शत्रुओं का सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (वज्रम्) सर्वोच्च वज्र (निघनिघन्ते) गर्जते हुए हमले के साथ (वधम्) मारने के लिए, नष्ट करने के लिए ।

व्याख्या :-

संघर्षों में और कठिन परिस्थितियों में कौन हमें विजयी बनाता है?

युद्धों और कठिन परिस्थितियों का क्या उद्देश्य होता है?

वह निश्चित रूप से हमें बड़े युद्ध, संघर्ष और कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए योग्य बनाता है जिससे हम बल प्राप्त कर सकें और स्वयं को शुद्ध कर सकें। वह स्वयं लोगों के लिए महान् योद्धा तथा बल बन जाता है। विजय के बाद लोग उसे सम्मान देते हैं तथा उसके वैभव और उसकी महिमा में विश्वास व्यक्त करते हैं जो शत्रुओं का सर्वोच्च नियंत्रक होता है। शत्रुओं, बुरे विचारों और कुटिलताओं का नाश करने वाले अपने गर्जते हुए हमलों के साथ वह सर्वोच्च वज्र बन जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

सभी कठिनाईयों का नाश करने के लिए कौन सा वज्र है?

हम परमात्मा की प्रशंसा क्यों करते हैं?

हम पवित्र कैसे हो सकते हैं?

प्रत्येक कठिन अवस्था के बाद हमें एक नया बल प्राप्त होता है जो निःसंदेह हमारे अन्दर ही छिपा होता है। हमें तो केवल यह अनुभूति होती है कि हमारे अन्दर कोई दिव्य छिपी हुई शक्ति है। इस प्रकार लोग उस दिव्य शक्ति और उसके स्रोत, सर्वोच्च दिव्य परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर पाते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। इस प्रक्रिया में हम अन्ततः अपने ही अन्दर उस दिव्यता की अनुभूति करके शुद्ध हो जाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.5

स इन्महानि समिथानि मज्जना कृणोति युध्म ओजसा जनेभ्यः ।
अथा चन श्रद्धति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघन्ते वधम् ॥

(स:) वह (इति) निश्चित रूप से (महानि) बड़े में (समिथानि) युद्ध, संघर्ष एवं कठिनाईयों में (मज्जना) शक्तिशाली बनाने के लिए, शुद्ध करने के लिए (कृणोति) करता है (युध्म) महान् योद्धा बनता है (ओजसा) बल (जनेभ्यः) लोगों के लिए (अथा चन) इस विजय के बाद, लोग (श्रद्धति) सम्मान प्रस्तुत करता है, पूर्ण विश्वास व्यक्त करता है (त्विषीमत) वैभव, महिमा (इन्द्राय) सभी शत्रुओं का सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (वज्रम्) सर्वोच्च वज्र (निघनिघन्ते) गर्जते हुए हमले के साथ (वधम्) मारने के लिए, नष्ट करने के लिए ।

व्याख्या :-

संघर्षों में और कठिन परिस्थितियों में कौन हमें विजयी बनाता है?

युद्धों और कठिन परिस्थितियों का क्या उद्देश्य होता है?

वह निश्चित रूप से हमें बड़े युद्ध, संघर्ष और कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए योग्य बनाता है जिससे हम बल प्राप्त कर सकें और स्वयं को शुद्ध कर सकें। वह स्वयं लोगों के लिए महान् योद्धा तथा बल बन जाता है। विजय के बाद लोग उसे सम्मान देते हैं तथा उसके वैभव और उसकी महिमा में विश्वास व्यक्त करते हैं जो शत्रुओं का सर्वोच्च नियंत्रक होता है। शत्रुओं, बुरे विचारों और कुटिलताओं का नाश करने वाले अपने गर्जते हुए हमलों के साथ वह सर्वोच्च वज्र बन जाता है।

जीवन में सार्थकता :-

सभी कठिनाईयों का नाश करने के लिए कौन सा वज्र है?

हम परमात्मा की प्रशंसा क्यों करते हैं?

हम पवित्र कैसे हो सकते हैं?

प्रत्येक कठिन अवस्था के बाद हमें एक नया बल प्राप्त होता है जो निःसंदेह हमारे अन्दर ही छिपा होता है। हमें तो केवल यह अनुभूति होती है कि हमारे अन्दर कोई दिव्य छिपी हुई शक्ति है। इस प्रकार लोग उस दिव्य शक्ति और उसके स्रोत, सर्वोच्च दिव्य परमात्मा की अनुभूति प्राप्त कर पाते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। इस प्रक्रिया में हम अन्ततः अपने ही अन्दर उस दिव्यता की अनुभूति करके शुद्ध हो जाते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.6

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओजसा विनाशयन् ।
ज्योतीषि कृण्वन्नवृकाणि यज्यवेऽव सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत् ॥

(स:) वह (हि) केवल (श्रवस्युः) हमें सुनने के योग्य बनाने के लिए तत्पर (सदनानि कृत्रिमा) बुराईयों और धूर्ती का आवास (क्षमया) शक्ति के साथ (वृधानः) पृथ्वी की तरह विस्तृत (ओजसा) बहादुरी के साथ (विनाशयन्) नष्ट करते हुए (ज्योतीषि) ज्ञान की किरणें (कृण्वन्न) पैदा करता है (अवृकाणि) आवरण से रहित (यज्यवे) अच्छे कार्य करने के लिए (अव – सुक्रतुः से पूर्व लगाकर) (सुक्रतुः – अव सुक्रतुः) उत्तम कार्यों को करने वाला परमात्मा (सर्तवा) गति के लिए तैयार करता है (अपः) जल, व्यापक गतिविधियाँ (सृजत्) उत्पन्न करता है।

व्याख्या :-

हमें सुनने के योग्य कौन बना सकता है?

अपनी शक्तियों और साहस के साथ वह हमारे अन्दर बसी बुराईयों और कुटिल प्रवृत्तियों का नाश करके हमें सुनने के योग्य बनाने के लिए तत्पर है। वह धरती की तरह विस्तृत है। उत्तम कार्यों को करने वाला होने के नाते, परमात्मा ज्ञान की किरणें पैदा करता है जो रहस्यों से मुक्त होती हैं और अच्छे कार्यों को करने के लिए होती हैं तथा जल को बहने के योग्य बनाता है और अपार गतिविधियों को पैदा करता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के विस्तृत ज्ञान और गतिविधियों को अनुसरण करने का क्या उद्देश्य है?

ज्ञान, कर्म और उपासना का दिव्य पथ क्या है?

परमात्मा के पास अपार ज्ञान और असीम गतिविधियाँ हैं। उसने अपने कोष हमारे लिए खोल रखे हैं। वह हमें बुरे विचारों का नाश करने के लिए तथा हमें अपने समान उत्तम गतिविधियों में लगाने के लिए प्रेरित करता है और हमारी सहायता भी करता है। वह सुनने के योग्य है। इसलिए वह हमें भी सुनने के योग्य बनाने के लिए तत्पर रहता है।

अतः परमात्मा का अनुसरण करना और परमात्मा से ज्ञान प्राप्त करना, सबके कल्याण के लिए परमात्मा के समान कार्य करना और परमात्मा के समान सुविख्यात होना ही दिव्य मार्ग है। इसका अभिप्राय है कि परमात्मा ही ज्ञान और कर्म दोनों का दाता है। यदि हम परमात्मा के इन दोनों उपहारों को पूर्ण संकल्प के साथ स्वीकार करें तो यही अपने आपमें सर्वोच्च भक्ति अर्थात् उपासना बन जायेगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.6

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओजसा विनाशयन् ।
ज्योतीषि कृण्वन्नवृकाणि यज्यवेऽव सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत् ॥

(स:) वह (हि) केवल (श्रवस्युः) हमें सुनने के योग्य बनाने के लिए तत्पर (सदनानि कृत्रिमा) बुराईयों और धूर्ती का आवास (क्षमया) शक्ति के साथ (वृधानः) पृथ्वी की तरह विस्तृत (ओजसा) बहादुरी के साथ (विनाशयन्) नष्ट करते हुए (ज्योतीषि) ज्ञान की किरणें (कृण्वन्न) पैदा करता है (अवृकाणि) आवरण से रहित (यज्यवे) अच्छे कार्य करने के लिए (अव – सुक्रतुः से पूर्व लगाकर) (सुक्रतुः – अव सुक्रतुः) उत्तम कार्यों को करने वाला परमात्मा (सर्तवा) गति के लिए तैयार करता है (अपः) जल, व्यापक गतिविधियाँ (सृजत्) उत्पन्न करता है।

व्याख्या :-

हमें सुनने के योग्य कौन बना सकता है?

अपनी शक्तियों और साहस के साथ वह हमारे अन्दर बसी बुराईयों और कुटिल प्रवृत्तियों का नाश करके हमें सुनने के योग्य बनाने के लिए तत्पर है। वह धरती की तरह विस्तृत है। उत्तम कार्यों को करने वाला होने के नाते, परमात्मा ज्ञान की किरणें पैदा करता है जो रहस्यों से मुक्त होती हैं और अच्छे कार्यों को करने के लिए होती हैं तथा जल को बहने के योग्य बनाता है और अपार गतिविधियों को पैदा करता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के विस्तृत ज्ञान और गतिविधियों को अनुसरण करने का क्या उद्देश्य है?

ज्ञान, कर्म और उपासना का दिव्य पथ क्या है?

परमात्मा के पास अपार ज्ञान और असीम गतिविधियाँ हैं। उसने अपने कोष हमारे लिए खोल रखे हैं। वह हमें बुरे विचारों का नाश करने के लिए तथा हमें अपने समान उत्तम गतिविधियों में लगाने के लिए प्रेरित करता है और हमारी सहायता भी करता है। वह सुनने के योग्य है। इसलिए वह हमें भी सुनने के योग्य बनाने के लिए तत्पर रहता है।

अतः परमात्मा का अनुसरण करना और परमात्मा से ज्ञान प्राप्त करना, सबके कल्याण के लिए परमात्मा के समान कार्य करना और परमात्मा के समान सुविख्यात होना ही दिव्य मार्ग है। इसका अभिप्राय है कि परमात्मा ही ज्ञान और कर्म दोनों का दाता है। यदि हम परमात्मा के इन दोनों उपहारों को पूर्ण संकल्प के साथ स्वीकार करें तो यही अपने आपमें सर्वोच्च भक्ति अर्थात् उपासना बन जायेगी।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.7

दानाय मनः सोमपावन्नस्तु तेऽर्वाचा हरी वन्दनश्रुदा कृथि ।।
यमिष्ठासः सारथयो य इन्द्र ते न त्वा केता आ दभुवन्ति भूर्णयः ।।

(दानाय) दान देने के लिए, कल्याण के लिए (मनः) मन (सोम पावन) शुभ गुणों, महान् दिव्य ज्ञान का पान करने वाला (अस्तु) हो (ते) आपका (अर्वाचा) अन्तर्मुखी (हरी) सब इन्द्रियाँ (वन्दनश्रुत) परमात्मा की महिमागान सुनने वाला (आकृथि) पूरी तरह करने वाला (यमिष्ठासः) पूर्ण नियंत्रण (सारथयः) सारथी, बुद्धि (य) जो (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (ते) आप (न) नहीं (त्वा) आपके लिए (केता:) ज्ञान (आदभुवन्ति) हिंसक, सब तरफ से विपत्ति पैदा करने वाला (भूर्णयः) पालन-पोषण से सम्बन्धित ।

व्याख्या :-

वैदिक विवेक से परिपूर्ण जीवन के आधारभूत लक्षण क्या होते हैं?

ऐसा व्यक्ति जो शुभ गुणों तथा महान् दिव्य ज्ञान का पान करने में इच्छुक है, वह अपना मन दान करने और कल्याण करने में लगाये रखे ।

ऐसा व्यक्ति जो परमात्मा की महिमा सुनने का इच्छुक है, वह अपनी इन्द्रियों को पूरी तरह से अन्तर्मुखी रखे, इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक, एक अच्छे सारथी की तरह तुम्हारी बुद्धि तुम्हारी इन्द्रियों को पूरी तरह नियंत्रण में रखे ।

तुम्हारे भरण-पोषण से सम्बन्धित तुम्हारा ज्ञान तुम्हारे लिए हिंसक या बाधा उत्पन्न करने वाला न हो ।

जीवन में सार्थकता :-

कलियुगी जीवन का विनाशकारी उपभोक्तावाद क्या है?

वर्तमान कलियुग का व्यक्ति जो भी ज्ञान या विकास कर रहा है वह अन्ततः उसके स्वयं के लिए हिंसक और कठिनाईयाँ उत्पन्न करने वाला बन जाता है, यदि उसके जीवन में वैदिक विवेक का अभाव हो ।

(क) यदि व्यक्ति दूसरों के कल्याण के लिए अपनी सम्पदा दान करने का अभ्यस्त नहीं है ।

(ख) यदि उसकी इन्द्रियाँ और मन अन्तर्मुखी नहीं हैं ।

(ग) यदि उसकी बुद्धि अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण करने के लिए अभ्यस्त नहीं है ।

इन अवस्थाओं में व्यक्ति स्वयं के लिए ही विनाशक बन जाता है । देखने में वर्तमान युग का आदमी प्रगतिशील है परन्तु वास्तव में वह एक शांतिपूर्ण और श्रेष्ठ जीवन के लिए आवश्यक मूल लक्षणों का नाश करता जा रहा है । यह न तो प्रगति है और न ही विकास है । यह कलियुगी जीवन का विनाशकारी उपभोक्तावाद है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.7

दानाय मनः सोमपावन्नस्तु तेऽर्वाचा हरी वन्दनश्रुदा कृथि ।।
यमिष्ठासः सारथयो य इन्द्र ते न त्वा केता आ दभुवन्ति भूर्णयः ।।

(दानाय) दान देने के लिए, कल्याण के लिए (मनः) मन (सोम पावन) शुभ गुणों, महान् दिव्य ज्ञान का पान करने वाला (अस्तु) हो (ते) आपका (अर्वाचा) अन्तर्मुखी (हरी) सब इन्द्रियाँ (वन्दनश्रुत) परमात्मा की महिमागान सुनने वाला (आकृथि) पूरी तरह करने वाला (यमिष्ठासः) पूर्ण नियंत्रण (सारथयः) सारथी, बुद्धि (य) जो (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (ते) आप (न) नहीं (त्वा) आपके लिए (केता:) ज्ञान (आदभुवन्ति) हिंसक, सब तरफ से विपत्ति पैदा करने वाला (भूर्णयः) पालन-पोषण से सम्बन्धित ।

व्याख्या :-

वैदिक विवेक से परिपूर्ण जीवन के आधारभूत लक्षण क्या होते हैं?

ऐसा व्यक्ति जो शुभ गुणों तथा महान् दिव्य ज्ञान का पान करने में इच्छुक है, वह अपना मन दान करने और कल्याण करने में लगाये रखे ।

ऐसा व्यक्ति जो परमात्मा की महिमा सुनने का इच्छुक है, वह अपनी इन्द्रियों को पूरी तरह से अन्तर्मुखी रखे, इन्द्र अर्थात् इन्द्रियों के नियंत्रक, एक अच्छे सारथी की तरह तुम्हारी बुद्धि तुम्हारी इन्द्रियों को पूरी तरह नियंत्रण में रखे ।

तुम्हारे भरण-पोषण से सम्बन्धित तुम्हारा ज्ञान तुम्हारे लिए हिंसक या बाधा उत्पन्न करने वाला न हो ।

जीवन में सार्थकता :-

कलियुगी जीवन का विनाशकारी उपभोक्तावाद क्या है?

वर्तमान कलियुग का व्यक्ति जो भी ज्ञान या विकास कर रहा है वह अन्ततः उसके स्वयं के लिए हिंसक और कठिनाईयाँ उत्पन्न करने वाला बन जाता है, यदि उसके जीवन में वैदिक विवेक का अभाव हो ।

(क) यदि व्यक्ति दूसरों के कल्याण के लिए अपनी सम्पदा दान करने का अभ्यस्त नहीं है ।

(ख) यदि उसकी इन्द्रियाँ और मन अन्तर्मुखी नहीं हैं ।

(ग) यदि उसकी बुद्धि अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण करने के लिए अभ्यस्त नहीं है ।

इन अवस्थाओं में व्यक्ति स्वयं के लिए ही विनाशक बन जाता है । देखने में वर्तमान युग का आदमी प्रगतिशील है परन्तु वास्तव में वह एक शांतिपूर्ण और श्रेष्ठ जीवन के लिए आवश्यक मूल लक्षणों का नाश करता जा रहा है । यह न तो प्रगति है और न ही विकास है । यह कलियुगी जीवन का विनाशकारी उपभोक्तावाद है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.8

अप्रक्षितं वसु बिभर्षि हस्तयोरषाळहं सहस्तन्वि श्रुतो दधे ।
आवृतासोऽ वतासो न कतृभिस्तनूषु ते क्रतव इन्द्र भूरयः ॥

(अप्रक्षितम्) क्षय रहित, नाश न होने योग्य (वसु) सम्पदा (बिभर्षि) धारण करता है (हस्तयोः) हाथों में (अषाळहम्) हिंसित न होने योग्य, पराजित न होने योग्य (सहः) बल (तन्वि) शरीर में (श्रुतः) सुनने योग्य (दधे) धारण करता है (आवृतासः) प्रसन्नता से पूर्ण (अवतासः) संरक्षण से पूर्ण (न) जैसे (कतृभिः) कर्तव्यबद्ध तथा गतिशील (तनूषु) शरीरों में (ते) आपके (क्रतवः) ज्ञान तथा गतिविधियाँ (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (भूरयः) कीमती, मूल्यवान् ।

व्याख्या :-

वैदिक विवेक धारण करने वाला व्यक्ति किस प्रकार के जीवन का आनन्द लेता है? पिछला मन्त्र (ऋग्वदे 1.55.7) हमें प्रेरित करता है कि हम समस्त ज्ञान वैदिक विवेक के साथ ही धारण करें, एक दाता बनकर और इन्द्रियों के नियंत्रक बनकर। यह मन्त्र ऐसे व्यक्ति के जीवन की दृष्टि प्रस्तुत करता है जो वैदिक विवेक के साथ जीता है :—
(क) वह अपने हाथ में अनाशवान् सम्पदा धारण करता है।
(ख) वह अपने शरीर में अहिंसनीय और अपराजित बल को धारण करता है जो सुनने के योग्य है।
(ग) कर्तव्यबद्ध और सक्रिय व्यक्ति होने के नाते वह पूरी तरह संरक्षित व्यक्ति हर प्रकार से प्रसन्न होता है।
(घ) एक इन्द्र पुरुष बड़ा कीमती और अनमोल ज्ञान तथा गतिविधियाँ धारण करता है।

जीवन में सार्थकता :-

कलियुग में अपनी सम्पदा और ज्ञान का प्रयोग कैसे करें?

जब सम्पदा का प्रयोग दूसरों के कल्याण के लिए किया जाता है तो वह कभी नष्ट नहीं होती, बल्कि बढ़ती रहती है। अपने ज्ञान का प्रयोग करते हुए हमें इन्द्रियों और मन को अन्तर्मुखी बनाये रखना चाहिए अर्थात् दिव्यता पर एकाग्र और पूरी तरह नियंत्रण में। हमें अपनी इन्द्रियों का वेलगाम प्रयोग नहीं करना चाहिए। ऐसा ज्ञान निश्चित रूप से अहिंसनीय और अपराजेय होगा। इस प्रकार गौरवशाली भौतिक सम्पदा तथा ज्ञान हमें अपराधों और बीमारियों के इस अन्धकारमय युग अर्थात् कलियुग में भी पूरी तरह संरक्षित व्यक्ति बना सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.55.8

अप्रक्षितं वसु बिभर्षि हस्तयोरषाळहं सहस्तन्वि श्रुतो दधे ।
आवृतासोऽ वतासो न कतृभिस्तनूषु ते क्रतव इन्द्र भूरयः ॥

(अप्रक्षितम्) क्षय रहित, नाश न होने योग्य (वसु) सम्पदा (बिभर्षि) धारण करता है (हस्तयोः) हाथों में (अषाळहम्) हिंसित न होने योग्य, पराजित न होने योग्य (सहः) बल (तन्वि) शरीर में (श्रुतः) सुनने योग्य (दधे) धारण करता है (आवृतासः) प्रसन्नता से पूर्ण (अवतासः) संरक्षण से पूर्ण (न) जैसे (कतृभिः) कर्तव्यबद्ध तथा गतिशील (तनूषु) शरीरों में (ते) आपके (क्रतवः) ज्ञान तथा गतिविधियाँ (इन्द्र) इन्द्रियों का नियंत्रक (भूरयः) कीमती, मूल्यवान् ।

व्याख्या :-

वैदिक विवेक धारण करने वाला व्यक्ति किस प्रकार के जीवन का आनन्द लेता है? पिछला मन्त्र (ऋग्वदे 1.55.7) हमें प्रेरित करता है कि हम समस्त ज्ञान वैदिक विवेक के साथ ही धारण करें, एक दाता बनकर और इन्द्रियों के नियंत्रक बनकर। यह मन्त्र ऐसे व्यक्ति के जीवन की दृष्टि प्रस्तुत करता है जो वैदिक विवेक के साथ जीता है :—
(क) वह अपने हाथ में अनाशवान् सम्पदा धारण करता है।
(ख) वह अपने शरीर में अहिंसनीय और अपराजित बल को धारण करता है जो सुनने के योग्य है।
(ग) कर्तव्यबद्ध और सक्रिय व्यक्ति होने के नाते वह पूरी तरह संरक्षित व्यक्ति हर प्रकार से प्रसन्न होता है।
(घ) एक इन्द्र पुरुष बड़ा कीमती और अनमोल ज्ञान तथा गतिविधियाँ धारण करता है।

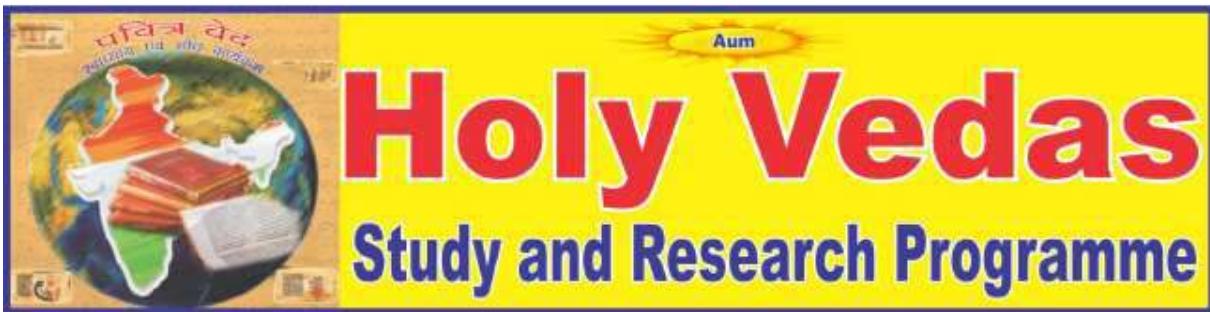
जीवन में सार्थकता :-

कलियुग में अपनी सम्पदा और ज्ञान का प्रयोग कैसे करें?

जब सम्पदा का प्रयोग दूसरों के कल्याण के लिए किया जाता है तो वह कभी नष्ट नहीं होती, बल्कि बढ़ती रहती है। अपने ज्ञान का प्रयोग करते हुए हमें इन्द्रियों और मन को अन्तर्मुखी बनाये रखना चाहिए अर्थात् दिव्यता पर एकाग्र और पूरी तरह नियंत्रण में। हमें अपनी इन्द्रियों का वेलगाम प्रयोग नहीं करना चाहिए। ऐसा ज्ञान निश्चित रूप से अहिंसनीय और अपराजेय होगा। इस प्रकार गौरवशाली भौतिक सम्पदा तथा ज्ञान हमें अपराधों और बीमारियों के इस अन्धकारमय युग अर्थात् कलियुग में भी पूरी तरह संरक्षित व्यक्ति बना सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.53.1

Nyū3 ṣu vācam pra mahe bharāmahe gira indrāya sadane vivasvataḥ.

Nū ciddhi ratnam sasatām ivāvidan na duḥṣṭutir dravino dešu śasyate.

(Ni – To be prefixed with bharāmahe) (ṣu vācam) best voices (of prayers and worship) (pra – to be prefixed with bharāmahe) (mahe) the great (bharāmahe - Ni pra bharāmahe) certainly makes available with humbleness (girah) voices of glorification (indrāya) for Indra, for God (sadane) in the house of (vivasvataḥ) intellectual performing yajna (Nū cit hi) certainly very soon (ratnam) wealth (sasatām iv) from sleeping state, from laziness and lethargy (āvidat) take back (na) not (duḥṣṭutirh) praises of wicked (dravino dešu) among or in relation to munificent (śasyate) valued.

Elucidation :

What type of atmosphere is created at the place of Yajna?

In the house of intellectuals performing yajna, the best voices of prayers, worship and glorifications for Indra, God, are certainly made available with humbleness. Wealth is certainly taken back very soon from the sleeping, lazy and lethargic people. The praises for the wicked are not valued in the presence of munificent people.

Practical utility in life :

What type of person is the one doing real yajna?

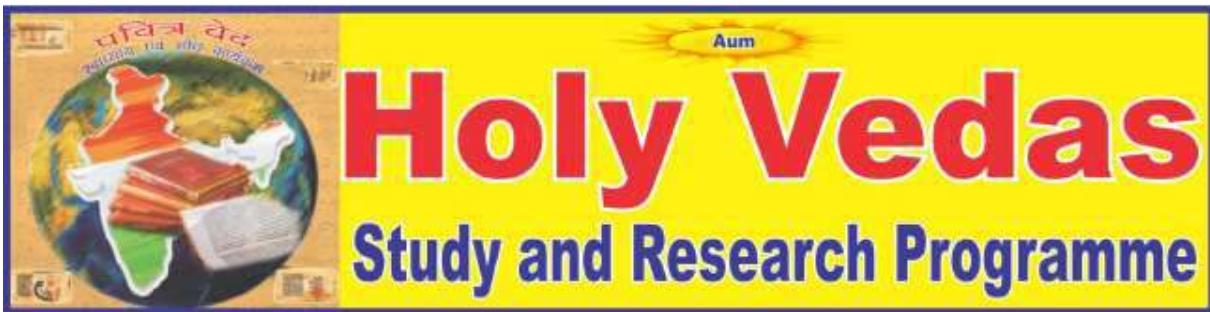
Those who perform real yajna i.e. contribute for the welfare of others are certainly gifted with God worship. They perform yajna because they feel that other needy people have a social right over their wealth; because they are humble towards needy; because they realise that God is the actual Giver the wealth.

Therefore, such vivasvataḥ people are also gifted with humble voices for God-worship and glorification.

This is a core reality that people performing real yajna are actual God-seekers because real yajna makes them egoless and desireless.

Whereas, the wealth is taken back by divinity from those sleeping towards social responsibilities.

Munificent people are praised everywhere but the praises of wicked are not valued in the presence of such munificent people.



RV 1.53.2

Duro aśvasya dura indra gorasi duro yavasya vasuna inaspatih.

Śikṣānarah pradivo akāmakarśanah sakhā sakhibhyas tamidam gr̄ṇīmasi.
(Durah) Giver, gates of comforts (aśvasya) of horses etc., of senses of action (durah) Giver, gates of comforts (indra) God, controller of senses (goḥ) of cows etc., of senses of knowledge (asi) are (durh) Giver, gates of comforts (yavasya) of barley etc. (vasunah) of means of abode (inah) owner (patih) protector (Śikṣānarah) to provide education (pradivah) enlightened to implement education (akāma karśanah) crush the lazy, lethargic (sakhā sakhibhyah) friend for the friends (tama) for you (idam) this (prayer, submission) (gr̄ṇīmasi) we offer in glorification.

Elucidation :

What does God give us?

We offer our words in glorification of Indra, God, because of His following features :-

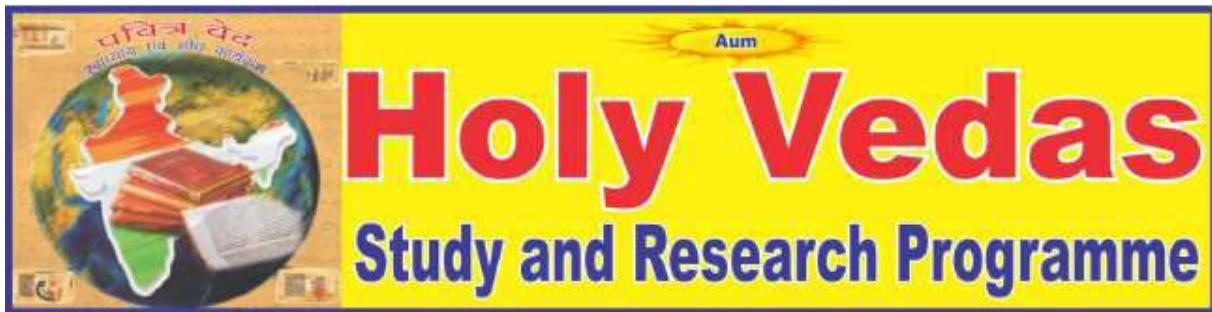
- (A) He is the Giver of horses etc. all means of transport and our senses of action.
- (B) He is the Giver of cows etc. beneficial animals and our senses of action.
- (C) He is the Giver of barley etc. all millets.
- (D) He is the Owner and Protector of all means of abode.
- (E) He gives all knowledge and enlightenment to us to implement His knowledge.
- (F) He crushes the lazy and lethargic people.
- (G) He is the friend of the friends.

Practical utility in life :

Who is competent to offer words of glorification to the Supreme Indra?

Who is crushed by the Supreme Indra?

The Supreme Energy, Indra i.e. God, has given this creation for the use of all living beings without any discrimination. Only those human beings who become Indra, controller of senses in deed, are able to offer their words and speeches in glorification of that Supreme Indra. Only an Indra person is conscious about the importance and proper use of this creation and this life. Except an Indra, all others are just enjoying this creation unconsciously without an attachment to the Supreme Indra. Thus, all such beings are animalistic living beings, unable to offer any words in glorification in deed. At the worst level, the lazy and lethargic people are simply crushed by the Supreme Indra.



RV 1.53.3

Śacīva indra purukṛd dyumattama tavedidam abhitaścekite vasu .
Atah samgrbhyaābhībhūta ā bhara mā tvāyato jarituh kāmam ūnayīh.

(Śacīva) Supreme intellect of all intellectuals, source of all powers, strength and energy (indra) Supreme Controller, God (purukṛta) sustain and complete everyone (dyumattama) Supreme light of all knowledge (tavet) only Yours is (idam) this (abhitah) in all directions (cekite) it is well known (vasu) all wealth and all abodes (Atah) out of this (samgrbhyaāh) receive and use (abhbībhūte) destroyer of all evils and enemies (ābharaḥ) fulfill us (mā) not (tvāyath) desirous of accepting You (jarituh) of those glorifying You (kāmam) desires (ūnayīh) incomplete and unfulfilled.

Elucidation :

Who is the Supreme Indra, God?

Whose desires are not left incomplete?

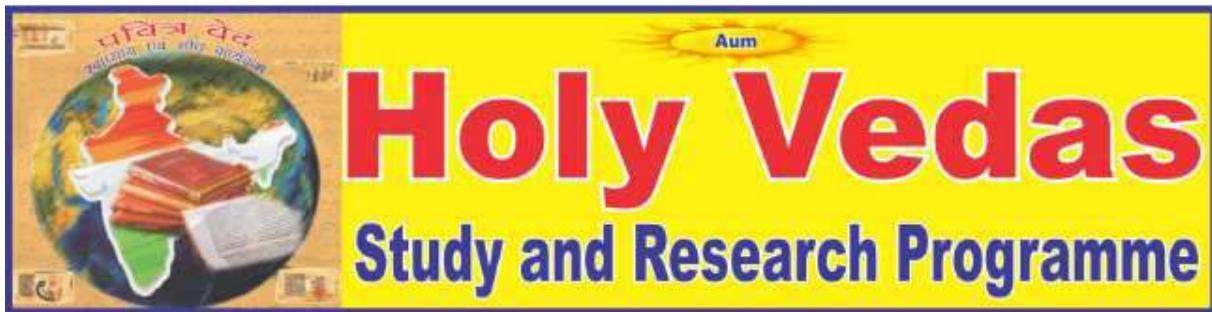
The Supreme Indra, God, is

- (i) Śacīva – Supreme intellect of all intellectuals, source of all powers, strength and energy,
- (ii) purukṛta – sustain and complete everyone, and
- (iii) dyumattama – Supreme light of all knowledge.

It is well known that all wealth and all abodes everywhere around in all directions belong to Him only.

I receive and use some part out of this wealth of the Supreme Indra. Please fulfil my life. You are the destroyer of all evils and enemies.

You don't leave incomplete the desires of those who desire for You and those who glorify You.



Practical utility in life :

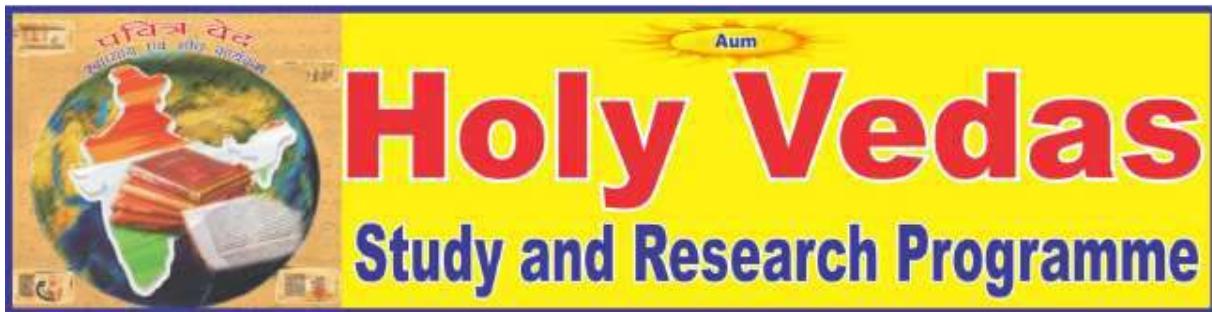
What happens when we adopt supreme spiritual desire?

What is the importance of pure and divine relationship with higher authorities?

The Supreme desire should be just a realisation of the Universal companionship with the Supreme Energy, God. Once we proceed to seek the fulfilment of this Supreme Spiritual desire, we become unconcerned with lower worldly desires and in case we desire something else, those desires certainly get completed by God. Without the Supreme spiritual desire, everyone lives a lower life of worldly level, just chasing material things without real attachment to the Supreme Giver.

While working in a group or a society, if we desire for the company of supreme authorities or a leader, our lower level achievements either become immaterial for us or become easy to achieve. Always try to establish a pure and divine relationship with high authorities.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



RV 1.53.4

Ebhirdyubhiḥ sumanā ebhirindubhirnirun-dhāno amatim gobhiraśvinā .
Indreṇa dasyum darayanta indubhityadveṣasah samiṣā rabhemahi.

(Ebhiḥ) With these (dyubhiḥ) enlightening knowledge (sumanāḥ) be a great, pure and divine mind (ebhiḥ) with these (indubhiḥ) with great virtues (nirundhānah) stop, prohibit (amatim) ignorance etc. (gobhiḥ) cows etc. senses of knowledge (aśvinā) pair of pranas (Indreṇa) by controlling senses (dasyum) to wicked mentality (darayanta) destroying (indubhiḥ yuta dveṣasah) be without animosity (sam – to be prefixed with rabhemahi) (iṣā) with the divine inspirations (rabhemahi - sam rabhemahi) begin every work.

Elucidation :

How to destroy ignorance?

How to be a divine life?

Be a great, pure and divine mind with enlightened knowledge and great virtues to destroy ignorance with animals like cows or senses of knowledge and pair of pranas, keep the senses under control to destroy the wicked mentality in our own life as well as in others. With great virtues, be a divine personality without any animosity in any form. Begin every work with divine instructions.

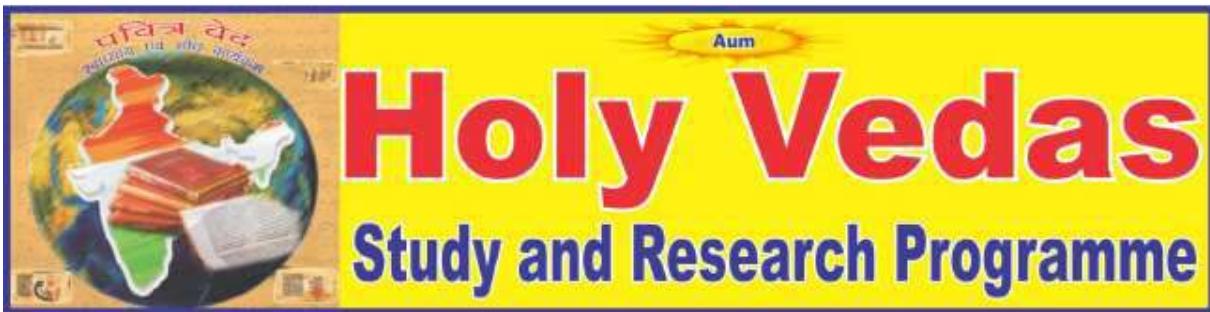
Practical utility in life :

How is a divine life free from animosity?

Features of a divine life can be listed as :-

- (i) Enlightened knowledge,
- (ii) Great virtues
- (iii) Good health by consuming healthy food,
- (iv) Controlling pair of pranas,
- (v) Controlling senses,
- (vi) Beginning every work with divine inspirations.

Such a great, pure and divine life would ultimately be free from animosity. Neither he will have any animosity towards others nor anyone would have animosity towards him.



RV 1.53.5

Samindra rāyā samiṣā rabhemahi sam vājebhiḥ puruścandrarabhidyubhiḥ .

Sam devyā pramatyā vīraśuṣmayā go agrayāśvāvatyā rabhemahi.

(sam – to be prefixed with rabhemahi) (Indra) Supreme Controller, God (rāyā) with splendid wealth (sam – to be prefixed with rabhemahi) (iṣā) with the divine inspirations (rabhemahi - sam rabhemahi) begin every work (sam vājebhiḥ) with all powers (puruścandraih) sustaining and completing (abhi dyubhiḥ) with this enlightened knowledge (sam – to be prefixed with rabhemahi) (devyā) with divine features (pramatyā) sharp intellect (vīra śuṣmayā) bravery to shaken the enemies (go agrayā) importance of senses of knowledge (aśvā vatyā) strong senses of action (rabhemahi - sam rabhemahi) begin every work.

Elucidation :

What powers are required to begin any work?

O Indra, the Supreme Power, God! We may begin every work with following powers at our disposal :-

- (i) With splendid wealth,
- (ii) With divine inspirations,
- (iii) With all powers to sustain and complete ourself,
- (iv) With enlightened knowledge,
- (v) With divine features,
- (vi) With sharp intellect,
- (vii) With bravery to shaken the enemies,
- (viii) By giving due importance to senses of knowledge,
- (ix) With strong senses of action.

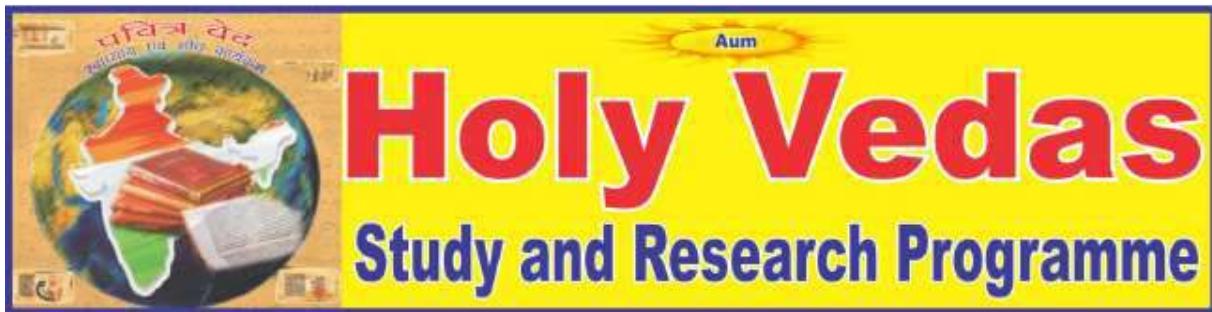
Practical utility in life :

What is required to make our life spiritual?

We should pray to the Supreme Power to bestow upon us all powers and all materials including divinities necessary for a shinning life.

It's possible not simply by chasing material comforts but only when our life is full of devotion to the Supreme Power, God, to gain divinities. In the absence of complete devotion to God and divine features, all material and social powers would take us to the path of materialism. Whereas this devotion and divinities would make our life spiritual.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



RV 1.53.6

Te tvā madā amadan tāni vṛṣṇyā te somāśo vṛtrahatyēṣu satpate.
Yat kārave daśa vṛtrānyaprati barhiṣmate ni sahasrāṇi barhayaḥ.

(Te) Those (tvā) Your (madāḥ) joyful (amadan) be happiness giving (tāni) those (vṛṣṇyā) raining (happiness on all) (te) those (somāśah) virtues, good deeds (vṛtra hatyeṣu) in the destruction of coverings, modifications (of mind) (satpate) the protector of truth (God) (Yat) to which (You) (kārave) doing acts (daśa) tens of (vṛtrāṇi) coverings, modifications (aprati) disliked (barhiṣmate) for enlightened mind (ni – to be prefixed with barhayaḥ) (sahasrāṇi) thousands of (barhayaḥ - ni barhayaḥ) fully destroy.

Elucidation :

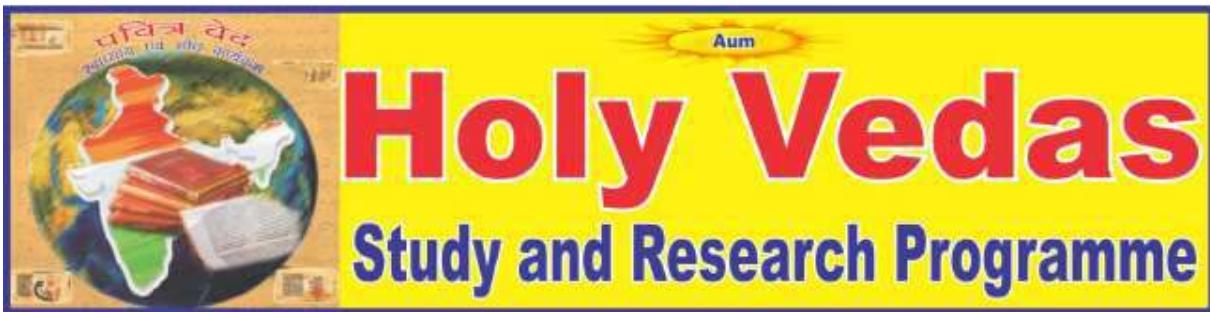
Who can destroy the modifications of mind?

O Satpate, the Protector of truth! those of your joyful people be happiness giving to all and to You also. Their rains, their good deeds and virtues be used in the determination of coverings, modifications (of mind) to which Your blissfulness destroys tens of thousands of the most disliked coverings, modifications for the bliss of enlightened mind.

Practical utility in life :

How to please God?

God is the Protector of truth. It means God loves truth. Only through truth, we can please God and be the rainer of good deeds, virtues and consequently happiness for all. Once on the path of complete truth, an enlightened mind would like to get rid of the modifications of mind. Such a life successfully gains the bliss of God to destroy all such disliked modifications.



RV 1.53.7

Yudhā yudham upa ghedeśi dhṛṣṇuyā purā puram samidam hamṣyojasā .
Namyā yadindra sakhyā parāvati nibarhayo namucim nāma māyinam.

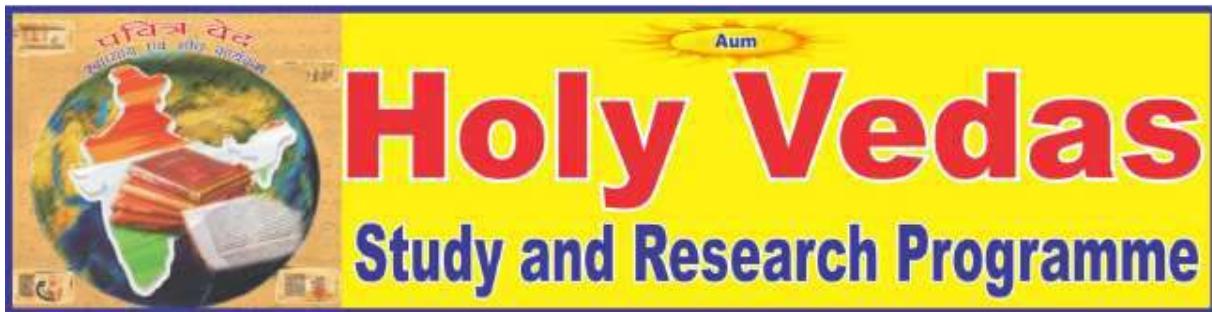
(Yudhā Yudham) One after another struggle (upa – to be prefixed with eşi) (gha ita) with certainty (eşi - upa eşi) receive very near (dhṛṣṇuyā) determined, empowered to crush enemies (purā puram) one after another city, fort (sam – to be prefixed with hamṣi) (idam) these (hamṣi - sam hamṣi) completely destroy (ojasā) with glorious strength (Namyā) with humbleness (Yat) when (Indra) controller of senses (Sakhyā) with the help of that friend (parāvati) far off (nibarhayah) certainly destroys (namucim) pursuing to the last (nāma) ego of name (māyinam) mysterious, pretentious.

Elucidation :

Who gets close friendship with God and how?
Who can destroy the ego of name, form and thoughts?
One after another struggle, certainly an Indra purusha, controller of senses, receives friendship of God very close to Him and he destroys one after another city, forts of troubles with the determination and power to crush enemies. He completely destroys those troubles with his glorious strength.
With all humbleness, he enjoys the friendship with God and certainly destroys the ego of name, form and thoughts also, throws it far off, which otherwise is so mysterious and pretentious that it pursues us till the last.

Practical utility in life :

What is the path to destroy the basic ego of name, form and thoughts?
To be an Indra, the controller of senses, is the primary eligibility to move on the spiritual path. Only an Indra is competent to enjoy friendship with God. Indra means one who has successfully controlled his senses including mind such that his outer ego and desires have come to an end. Thereafter, the basic ego of name, form and thoughts, is also thrown away by the divine friendship with God. Without divine help, this basic ego pursues every one till the last.



RV 1.53.8

Tvam karañjamuta parṇayam vadhīstejiṣṭhayātithigvasya vartanī .

Tvam śatā vaṅgrdasyābhinat purā 'nānudah pariṣūtā ṣjiśvanā.

(Tvam) You (God, friend of God) (Karañjama) troubling nobles (uta) and (parṇayam) stealing things of others (vadhīh) destroy (tejiṣṭhayā) with speed and strength (atithigvasya) of guest (of divinity of God and of friend of God) (vartanī) protect (Tvam) You (śatā) hundreds of (vaṅgrdasya) poisoning others (abhinat) destroys (purah) cities, forts (a'nānudah) not liable to be pushed away by enemies (pariṣūtā) surrounded on all sides (ṛjiśvanā) by one moving on the path of truth, honesty.

Elucidation :

What happens to those who dishonour the divine nobles?

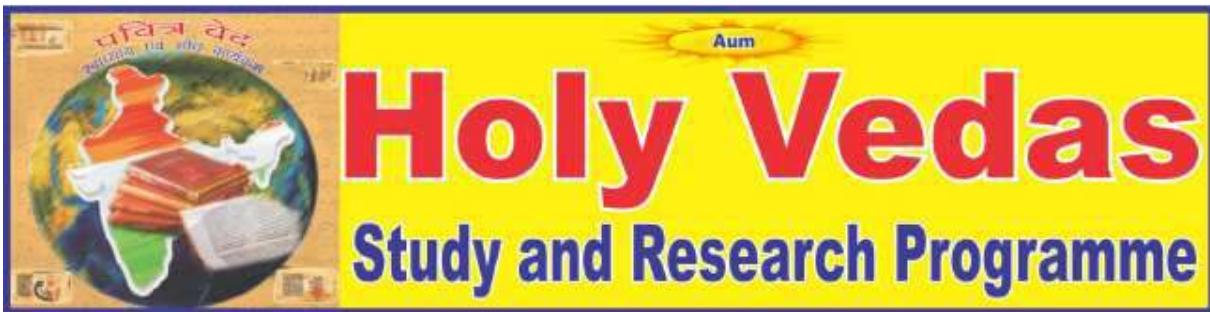
You (God, friend of God) destroy those who trouble or dishonour the divine nobles and steal materials of others. You protect the guests (divinities of God and friends of God) with speed and strength.

You (God, friend of God) are not liable to pushed away by enemies. It means You are indefeasible. You destroy hundreds of forts, cities of those poisoning others, by surrounding them on all through those moving on the path of truth and honesty.

Practical utility in life :

What is the strength of divine, noble and pure souls?

A person who loves and proceeds for divinity with speed and strength only becomes competent to destroy the tendencies of troubling others and stealing materials. One who welcomes Divinity of God in his life only becomes competent to destroy evils. One who chases the Creator, doesn't chase the creation. A lover of purity becomes so powerful that he himself is not liable to be pushed away by enemies. Rather such a person, moving on the path of truth and honesty, surrounds those poisoning or misguiding others, to destroy such evil forces.



RV 1.53.9

Tvam etāñjanarājño dvirdaśā bandhunā suśravasopajagmuṣah.

Şaṣṭim sahasrā navatim nava śruto ni cakreṇa rathyā duśpadāvṛṇak.

(Tvam) You (Etāñ) these (janarājño) rulers over the republics (dvih daśā) twenty (abandhunā) unbound, friend of none (suśravasā) best listener of Divinity, best listened (for knowledge and realisation) (upajagmuṣah) very near (Shaṣṭim) sixty (sahasrā) thousands (navatim) ninety (nava) nine (śrutaā) listener (God) (ni) certainly (cakreṇa) wheels, movement (rathyā) of chariot of body (duśpadā) difficult path (avṛṇak) keep far away.

Elucidation :

Who is the Supreme listener?

Who are the twenty rulers over the republic?

Whom does the Supreme listener save from the twenty rulers?

You, the Supreme Listener, certainly keep far away, the twenty rulers over the republic, from the difficult path of movement of body, of the wheels of chariot, of those great souls who are unbound, friend of none, who are the best listeners of divinity and who are best listened by others for their knowledge and realisation and are very near You. These rulers are sixties of thousand. But the great souls remain far away from these rulers for ninety nine and odd years.

These twenty rulers are – ten senses, five pranas, mind intellect, ego, heart and consciousness. The Supreme Listener is God.

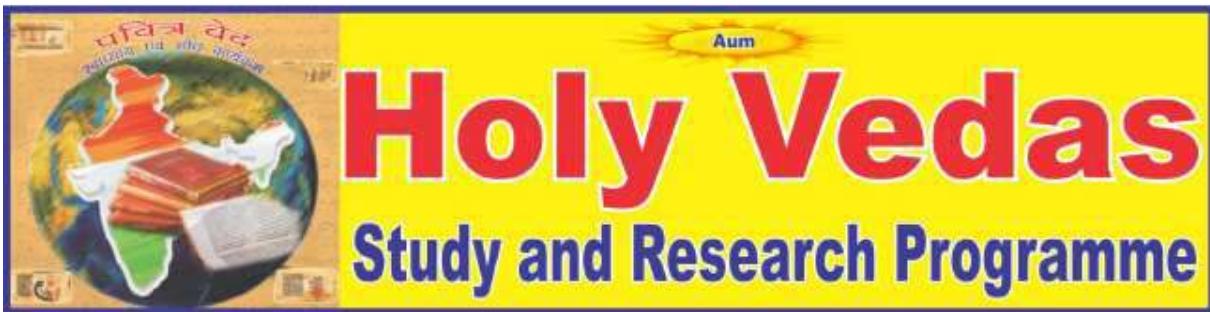
Practical utility in life :

Who gets very close to the divinity?

How has the twenty rulers created a total misrule?

- (i) One who is not bounded to anything in this creation, having no desire for his ownself,
- (ii) Who is the best listener of divinities i.e. best listened by others for his great and divine knowledge and realisation becomes very close to the divinity.

Once a person becomes close to the divinity, is certainly listened by the Supreme Listener and is kept away from the rulers over the republics. Surprisingly, all except divine people, are ruled by the twenty rulers. The rule of these twenty rulers has practically proved to be a misrule leading to all troubles and tribulations of life. Therefore, to get rid of this misrule, we must live a life unbounded to anything in this creation, including our senses.



RV 1.53.10

Tvam āvitha suśravasam tavotibhistava trāmabhir indra tūrvayāṇam .
Tvamasmai kutsam atithigvam āyum mahe rājñe yūne arandhanāyah.

(Tvam) You (āvitha) protect (suśravasam) best listener (of divinity), best listened (for his knowledge and realisation) (tava utibhiā) with Your modes of protection (tava trāmabhiā) with Your modes of sustenance (indra) God (tūrvayāṇam) attacking all vices and evils (Tvam) You (asmai) this (kutsam) destroyer of evils and vices (atithigvam) honouring guests (āyum) active person (mahe) great (rājñe) king, ruler to regulate (yūne) youthful (arandhanāyah) mighty thunderbolt power, complete personality.

Elucidation :

Whom does God protect?

O Indra, God! You protect those having following features with Your modes of protection and sustenance :-

- (i) suśravasam - best listener (of divinity), best listened (for his knowledge and realisation)
- (ii) tūrvayāṇam – attacking all vices and evils

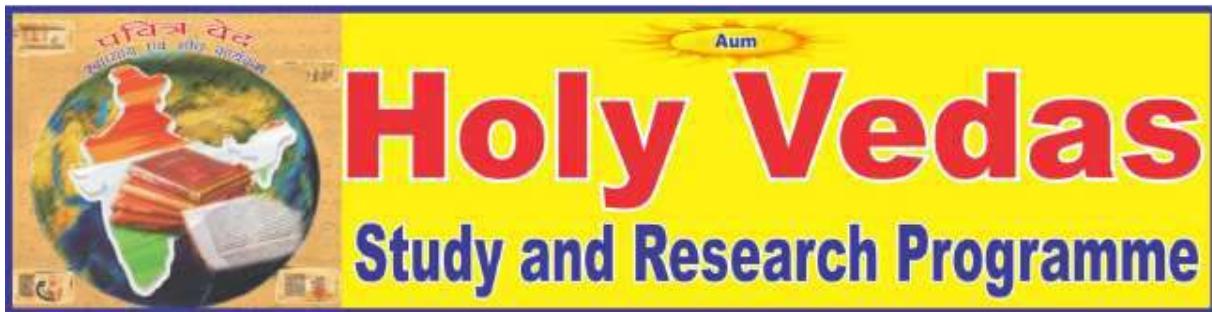
You give mighty thunderbolt power, complete personality to the great king, destroyer of evils and vices, who is active, in his youthful age, in honouring guests.

Practical utility in life :

When does live of love and devotion fructifies?

If the lives of most of the greatmen like Adi Guru Shankaracharya, Maharishi Dayanand Saraswati, Maharishi Ramana, Shri Aurobindo etc. is deciphered agewise, a ratio can be seen that all these souls gained mighty thunderbolt powers of being a complete personality in their youthful age. It means the path of love and devotion to God and His realisation fructifies after dedicated efforts in the past lives. Ultimately, the realisation comes to the surface in quite young age.

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)**



RV 1.53.11

Ya udrcīndra devagopāḥ sakħāyaste śivatamā asāma.
Tvāṁ stośāma tvayā suvīrā drāghīya āyuḥ prataram dadhānāḥ.

(Ye) That we (udrci) having best richas i.e. vedic mantras, knowledge and vibrations (indra) God (devagopāḥ) having divine protections, protecting divinities (sakħāya) friends (te) of you (śivatamā) with features of welfare (asāma) be (Tvāṁ) Your (stośāma) praising, glorifying (tvayā) with Your (company and protection) (suvīrā) best brave (drāghīya) long (āyuḥ) life (prataram) best (healthy and spiritual) (dadhānāḥ) hold.

Elucidation :

Who gets a life of complete welfare?

Who becomes the best brave person?

O Indra, the Supreme Energy, God! That we, who have fallen in love with and devotion to God, having best richas i.e. Vedic mantras, Vedic Wisdom, knowledge and divine vibrations; having divine protections for us and protecting divinities; having attained Your friendship, be complete with welfare and doing welfare of others. Living a life in Your praises and glorifications, may we become best brave persons in Your company and protection. We may hold long and best life i.e. healthy and spiritual life.

Practical utility in life :

What are the features of the best spiritual life?

Features of the best spiritual life are as follows :-

- (i) udrci – having best richas i.e. vedic mantras, knowledge and vibrations,
- (ii) devagopāḥ - having divine protections, protecting divinities,
- (iii) sakħāya te – friends of you,
- (iv) śivatamā – with features of welfare,
- (v) Tvāṁ stośāma - praising, glorifying You,
- (vi) tvayā suvīrā – best brave with Your (company and protection),
- (vii) drāghīya āyuḥ prataram dadhānāḥ - hold long best (healthy and spiritual) life.



Rigveda 1.34.2

त्रयः पुवयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः।
त्रयः स्कृम्भासः स्कभितासः आरभे त्रिनक्तं याथस्त्रिवश्विना दिवा॥

Trayah pavayo madhuvaahane rathe somasya venaamanu vishva idviduh.
Trayah skambhaasah skabhitaasa aarabhe trirnaktam yaathastraivashvinaa divaa.

(Trayah) Three (pavayah) purifying, wheels (senses, mind and intellect) (madhu vaahane) sweetening, comfortable (rath) for this chariot (somasya) of vitality (venaam) glories (anu) in proportion (vishve) all (ita) certainly (viduh) know (Trayah) three (skambhaasah) pillars to bind (skabhitaasah) established (aarabhe) to begin the journey (trih) three times (naktam) in night (yaathah) progress (trih) three times (ashvinaa) both of you (divaa) in day.

Elucidation

What are the three wheels of our body chariot?

The three wheels in the body chariot (senses, mind and intellect) are sweetening and to make this life journey comfortable. These three wheels are knowledgeable in proportion to the glories of their vitality, virtues etc. More glorious their vitality, more knowledge of senses, mind and intellect would be seen. These three wheels are like pillars to bind and establish the beginning of our life journey. Only these three pillars can ensure the progress of our body, mind and spirit three times i.e. again and again in day and also in night.

Practical Utility in life

How to ensure progress in life and to make the journey comfortable?

Senses, mind and intellect must be strong enough to ensure a progressive life journey.

The three wheels of our body chariot are as important to make our life journey comfortable as the three wheels of aeroplane, the most comfortable vehicle. These three wheels in everyone's life should be full of vitality and virtues. If these pillars are strong, our life journey would certainly progress nicely towards its destination of God-realisation, otherwise this chriot would remain roaming in lower birth and suffer all miseries. With strong pillars, we can realise our progress again and again day and night, every moment.



Rigveda 1.34.3

सुमाने अहन्त्रिरवद्यगोहना त्रिर्यु युज्ञं मधुना मिमिक्षतम् ।
त्रिवर्जन्त्वरीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसंश्च पिन्वतम् ॥

Samaane ahan triravyagohanaa triradya yajnam madhunaa mimikshatam.

Triravaajavateeisho ashvinaa yuvam dosha asmabhyamushasashcha pinvatam.

(Samaane) Equanimously, greatly comfortable, prosperous(ahan) day (trih) Three time, again and again, at three levels (avadya gohanaa) save from all vices, evils (trih) Three time, again and again (adya) today (yajnam) sacrificing life (madhunaa) with all sweetness (mimikshatam) irrigate, completely satisfy (Trih) Three time, again and again (vaajavateeh) comforts and happiness giving (ishah) desired (ashvinaa) pair (yuvam) of both (doshah) in night, in ignorance, moon (asmabhyam) for us (ushasah) in day, in knowledge (cha) and (pinvatam) accept.

Elucidation

What are the steps for a happy, comfortable and sweet life?

Prayer - Three times a day means again and again (a) let our day be spent equanimously with great comforts and in a prosperous manner, (b) saving us from all evils and vices at all the three levels - physical, mental and spiritual, (c) let our sacrificing life be completely satisfying and be irrigated with all sweetness today, (d) let our life be spent with comforts and happiness as desired, (e) let my knowledge or ignorance be accepted by You day and night like moon and Sun.

Practical Utility in life

What is the role and importance of equanimity?

Equanity of body and mind should be universal for many reasons :-

(A) If there's an equanimity, a balance between our body and mind, praanas and apaanas, our life will become progressive and prosperous.

(B) If we save our senses of knowledge and actions from evils and vices, we will be able to live a comfortable life free from diseases.

(C) If we spend our life with sacrifices, our life would be irrigated with sweetness.

(D) If we submit all our abilities - knowledge or ignorance, everything to God, our life would be equaninous and satisfactory. This equanimity in life should continue day and night, everytime.

Euanimity is the first requirement to ensure control over senses, to induce us on the path of sacrifices and to submit all efforts, knowledge or ignorance to God.



Rigveda 1.34.4

त्रिर्वर्तिर्यातुं त्रिरनुग्रते जने त्रिः सुप्राव्ये त्रेधेवं शिक्षतम् ।
त्रिनान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः पृक्षोऽस्मे अुक्षरेव पिन्वतम् ॥

Trirvartiryaatam triranuvrate jane trih supraavye tredheve shikshatam.
Trirnaandyam vahatamashvinaa yuvam trih praksho asme akshareva pinvatam.

(Trih) Three time, again and again (varthi) the great path (yaatam) follow (trih) Three time, again and again (anuvrate jane) vowful people (trih) Three time, again and again (supraavye) competent to protect in the best way (tredha ive) in three ways (physically, mentally, spiritually) (shikshatam) educate, strengthen (Trih) Three time (again and again) (naandyam) prosperity for happiness
(vahatam) make us available (ashvinaa) pair (yuvam) of both of you (trih) Three time, again and again (priksah) knowledge and materials (asme) for us (akshara iva) like waters (pinvatam) make it receivable by us.

Elucidation

How to follow great noble path?

We can follow the great noble path again and again in following ways :-

- (A) Follow the vowful people again and again,
- (B) Be competent to protect in the best way again and again,
- (C) Educate and strengthen in three ways - physically, mentally and spiritually.
- (D) Pray and make efforts for for prosperity and happiness,
- (E) Achieve knowledge and all materials again and again like waters flowing for the welfare of all.

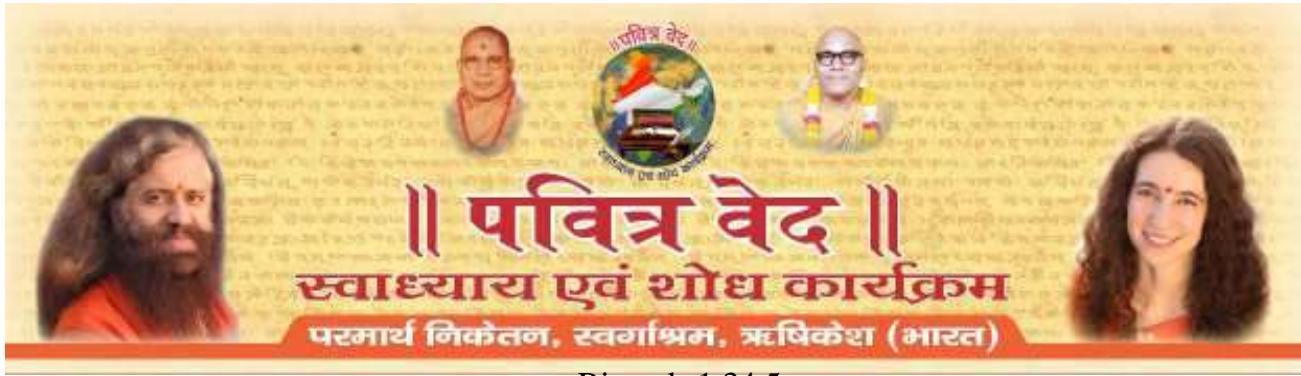
Practical Utility in life

How to make the great noble path universal?

Let the great noble path be universal in life till salvation.

If you take a vow to follow the great noble again and again and follow the five steps religiously, you will certainly be progressive and happy in life. Your resolve and your acts following that resolve shall entitle you to get human birth again and again till salvation and in every birth to follow this great path. Five features of this great path need to be incorporated practically in our life :-

- (A) *Anuvrate* - Follow vowfull people,
- (B) *Supraavya* - Be competent to protect yourself and others,
- (C) *Shikshatam* - Complete education of three levels
- (D) *Naandhyam* - Prosperity for happiness
- (E) *Priksah akshara iva* - Hold knowledge and materials like waters.



Rigveda 1.34.5

त्रिनो रुयिं वहतमश्विना युवं त्रिर्देवताता त्रिरुतावतुं धियः ।
त्रिः सौभग्यत्वं त्रिरुतं श्रवासि नस्त्रिष्ठं वां सुरे दुहिता रुहद्रथंम् ॥

Trirno rayim vahatamashvinaa yuvam trirdevataataa trirutaavatam dhiyah.

Trih saubhagatvam trituta shravaamsi nastrishthham vaam sure duhitaa ruhadratham.

(Trih) Three time, again and again (nah) for us (rayim) splendid wealth (vahatam) make available (ashvinaa) both (prana-apana, like earth and sky) (yuvam) of you (trih) Three time, again and again (devataataa) increase divinities (trih) Three time, again and again (uta) and (avatam) protect (dhiyah) intellects (Trih) Three time, again and again (saubhagatvam) best comforts and luck (trih) Three time, again and again (uta) and (shravaamsi) worth hearing (nah) our (trishthham) three established (body, mind and soul) (senses, mind and intellect) (vaam) your (sureh) Sun's (duhitaa) daughter (glorious light) (aruhat) riding, established (ratham) chariot (body).

Elucidation

What should be our prayers for progress and prosperity?

What is the purpose of prosperity?

There are five prayers for progress and prosperity. These prayers are made to ashvinaa i.e. two praanas, earth and sky, God and nature :-

- (A) Make available to us splendid wealth again and again (*rayim*).
- (B) Increase divinities in us again and again (*devataataa*)
- (C) Protect intellectuals again and again (*avatam dhiyah*)
- (D) Provide best comforts and luck again and again (*soubhagatvam*)
- (E) Provide speeches worth hearing i.e. Vedas again and again (*Shravaansi*)

The purpose of these prayers is - our three established dimensions i.e. body, mind and soul; senses, mind and intellect may ride on this body chariot with glories like your Sun's glories, feature of self-shinning.

Practical Utility in life

How to make our life self-shinning like Sun's glories?

Purpose of our wealth, divinities, protection, luck and great knowledge must be to possess a feature of *surey duhita* i.e. Sun's glory. We must be self-shinning and competent to help others in seeing. Any feature confined to our individual life is of no use, neither to us nor to others. All our possessions should be like flowing water, as mentioned in verse 4 of this sukta.



Rigveda 1.34.6

त्रिनैः अश्विना द्विव्यानि भेषुजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमुद्दयः ।

ओमानं शंयोर्ममकाय सूनवै त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती ॥

Trirno ashvinaa divyaani bheshajaa trih paarthivaani triru dattamadbhyah.

Omaanam shamyormamakaaya sunave tridhatu sharma vahatam shubhaspati.

(Trih) Three time, again and again (nah) for us (ashvinaa) both (divyaani) form divinity (bheshajah) medicine, food (trih) Three time, again and again (paarthivaani) from earth (trih) Three time, again and again (u) and (dattam) give (adabhyah) from waters, atmosphere, space etc. (Omaanam) for protecting behaviour, peace and bliss (shamyoh) for happiness, comfortable life (mamakaaya) for my (sunave) inspiration with Vedic wisdom (tridhatu) three humors of vitality (vat, pita, kapha) (sattva, raja and tamas) (sharma) balanced, co-ordinated (vahatam) makes available (shubhaspati) welfare activities.

Elucidation

What are the three types of foods and medicines?

What are the results of these foods and medicines?

God and Mother Nature both are prayed to provide us three types of food and medicines :-

(A) From divinity - in the form of spiritual enlightenment to realise God through meditation on our inner power,

(B) From earth - in the form of various herbs and foods etc.

(C) From waters, atmosphere and space - air, aquatic medicines etc.

As a result of all these foods and medicines, we get :-

(i) Power for protecting behaviour, peace and bliss,

(ii) Happiness and comfortable life,

(iii) My own inspirations of Vedic wisdom,

(iv) Balanced state of three humors of vitality without agitation,

(v) All activities for the welfare of all.

Practical Utility in life

How to ensure complete health?

For complete health every food and medicine should be in purest form.

Focus should be on the intake of all the three types of food as medicine in their purest form without dilution. This concept of purity is more required in divine practice. Realisation is least related to rituals. Divine medicine is the supreme factor in health.

The result of all these three types of foods and medicines are also complete development of a person as well as of the whole society.



Rigveda 1.34.7

त्रिनो अश्विना यजुता द्विवेदिवै परि त्रिधातुं पृथिवीमश्यतम् ।

तिस्रो नासत्या रथ्या परावतं आत्मेव वातुः स्वसराणि गच्छतम् ॥

Trirno ashvinaa yajataa divedive pari tridhatu prithiveemashaayatam.

Tisro naasatyaa rathyaa paraavata aatmeva vaatah svasaraani gacchatam.

(Trih) Three time, again and again (nah) us (ashvinaa) both (God and soul; praanas and apaanas) (yajataa) join (dive dive) every day (pari) pervade (tridhatu) three elements (vaat, pita, kapha) (sattva, raja, tama) (prithiveem) in this mortal body, earth (ashaayatam) live (Tisrah) all the three levels (body, mind & soul) (channels of air - ida, pingla & saraswati) (naasatyaa) not allowing untruth (rathyaa) body chariot (paraavata) towards far off (aatma iva) like soul (vaatah) always moving (svasaraani) progressing towards destination of soul, for various acts destined for soul (gacchatam) go.

Elucidation

Who helps us in reaching the destination of soul?

Ashvina means both praanas and apaana; God and soul. Let this pair join again and again every day and pervade everywhere among the three elements i.e. vaat, pita, kapha; sattva, raja, tama in this mortal body and live in it.

They don't allow untruth at all the three levels of live i.e. body, mind & soul; three channels of air - ida, pingla & saraswati. They always take the body far off towards the destination of soul and for various acts destined for soul.

Practical Utility in life

What is the effect of companionship of God and soul?

Co-living of God and soul is the universal feature of our life. For our body and mind, the effect of various elements i.e. vaat, pita, kapha; sattva, raja, tama, may be different but God and soul live above every situation of life. They are certainly above these elements. The inner and universal power of our life doesn't allow any untruth or impurity at all. These are the subjects of our ignorant body and mind. If we focus on the core inner power of Ashwina (God and soul) with the help of another Ashwina (praanas and apaanas), they will certainly take us to the ultimate destination of soul and till then to various intermittent pre-destined destinations.



Rigveda 1.34.8

त्रिरश्विना सिन्धुभिः सुप्तमातृभिस्त्रये आहृवास्त्रेद्या हृविष्टृतम् ।
तिस्रः पृथिवीरुपरि प्रवा दिवो नाकं रक्षेथे द्युभिरुक्तुभिर्हितम् ॥

Trirashvinaa sindhubhih saptamaatribhistraya aahaavaastredha havishkritam.

Tisrah prithiveerupari pravaa divo naakam rakshethe dyubhiraktubhirhitam.

(Trih) Three time, again and again, three stages of life - childhood, young and old age (ashvinaa) both (God and soul; praanas and apaanas) (sindhubhih) waters (seminal fluids) (sapta maatribhih) seven motherly elements (trayah) three (aahaavaah) basis of waters (tredha) three types (havishkritam) sacrificing acts, oblations (Tisrah) three (prithivih) bodies (gross, subtle and causal) (upari) above, high (pravaa) raise (divah) divine (naakam) play (rakshethe) protect (dyubhih) day, enlightenment (aktubhih) with light of rays (hitam) established.

Elucidation

How to protect ourself from painful play of life?

Universally, again and again, following aspects of our life are fully dependent upon Ashwinaas, the strength of unity between God and soul i.e. our divine living and also on the strength of our praanas and apaanas i.e. our breath :-

- (A) Our complete life i.e. our childhood, young and old age,
- (B) Our seminal fluid i.e. the final produce of our food and
- (C) Seven motherly elements produced from food i.e. juices, blood, flesh, muscles, bones, bone marrow and seminal fluid (rasa, rakta, mans, meidha, asthi, mazza and veerya)

The collective strength of seminal fluid in our body is the basis of powers of our : (i) senses, (ii) mind and (ii) intellect.

Then a great strength would be reflected in three types of our sacrificing acts :

- (a) At senses level, we perform all noble acts only,
- (b) At mental level, we become egoless and desireless,
- (c) At intellect level, we move and progress towards self-realisation.

Such a journey of life raises us above three bodies of (i) gross, (ii) subtle and (iii) causal bodies forever.

Only such a level of life would be competent to protect us from the painful play of life and make it painless and establish it on the path of enlightenment with light of rays.

Practical Utility in life

What are the five steps of a great spiritual life?

(A) Our whole life is dependent upon our praanas as well as upon our focus on the unity of God and soul.

(B) Our seminal fluid, the basic strength of our body, is the foundation of our senses, mind and intellect. These three work in a noble way only if seminal fluid is preserved.

(C) Such a seminal fluid reflects its strength in three types of sacrificing acts as mentioned.

(D) Such a life is raised above gross, subtle and causal body levels.

(E) Only such a life is protected from the play of life which is painful at every step.

Graphic presentation (RV 1.34.8)

Ashwinaa i.e. God and soul, praana and apaana

:

:

Seminal fluid strength

:

:

Noble working of senses (noble work), mind (egoless and desireless) and intellect (move towards God-realisation)

:

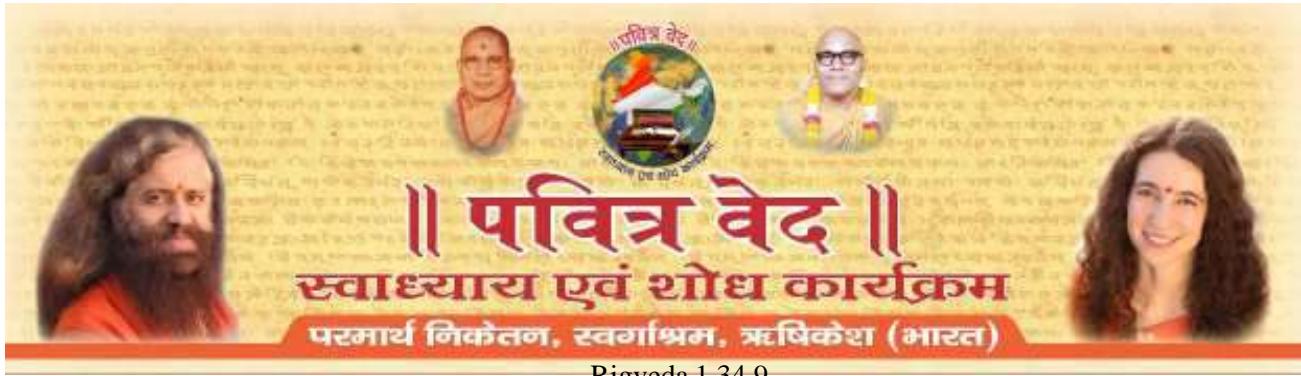
:

Rise above gross, subtle and causal body

:

:

Protection from painful play (Salvation)



Rigveda 1.34.9

क्वृं त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्वृं त्रयो बन्धुरो ये सनीलाः ।

कुदा योगो वाजिनो रासभस्य येन युज्ञं नासत्योपयाथः ॥

Kva trii chakra trivrito rathasya kva trayo bandhuro ye saniilaah.

Kadaa yogo vaajino raasabhasya yena yajnam naasatyopayaathah.

(Kva) Where are (trii) three (chakra) wheels (trivritah) three circles (rathasya) of this chariot, body (kva) where are (trayah) three (bandhurah) bonds (ye) who, where (saniilaah) live together (Kadaa) when (yogah) enjoin (vaajinah) powerful (raasabhasya) giver of supreme joyful knowledge (yena) with whom (yajnam) sacrificing acts (naasatyaa) never untruth (permanent truth, God) (upayaathah) received closely.

Elucidation

What are the three circles of this chariot?

What are the three wheels of this chariot?

What are the three bonds and where do they live?

When would I realise a unity with the Giver of Supreme joyful knowledge and who receives all sacrificing acts very closely?

Let the answers of these questions be that which is never untruth i.e. permanent truth, God.

The spiritual answers to all these questions are as follows :-

(A) The three circles are the three paths or the three efforts of human life - dharma (ethics), artha (economic power), kama (sensual, worldly desires). Every life moves on these three circles.

(B) The three wheels are our senses, mind and intellect on the basis of which our body chariot moves on the above three circles.

(C) The three bonds are vaata, pita and kapha on physical level; satva, raja and tamas on mental level. We must keep these physical bonds in a balanced state to avoid diseases. We must rise above the three mental bonds to facilitate our intellect to move towards God-realisation.

(D) Once we rise above satva, raja and tamas, only then we can expect a unity with the Giver who is a universal truth and receive all sacrifices very closely. Without sacrifices, we can not rise above sattva, raja and tamas.

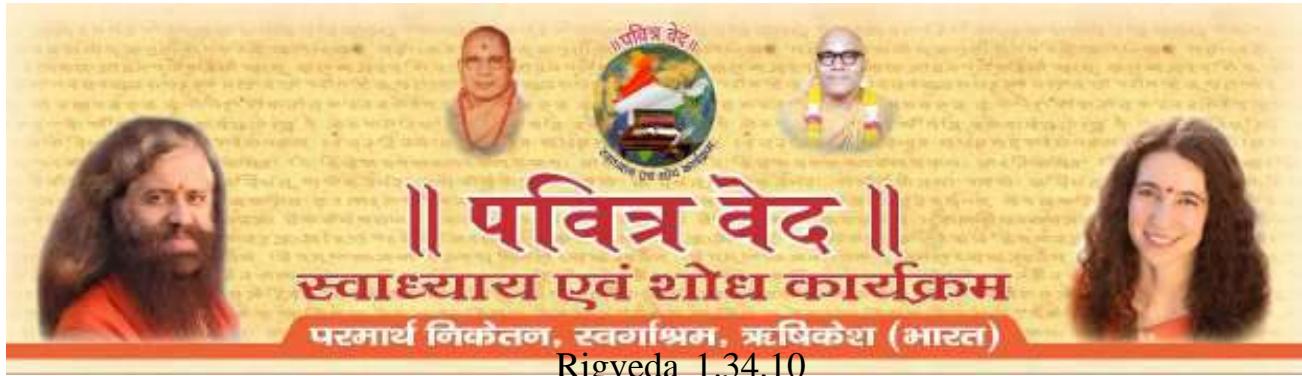
Practical Utility in life

How to live a life free from disputes and conflicts?

The human life is multiferous in activities and influences. Every human being is engaged in dharma, artha and kama. Rarely someone gets a freedom from these three circles and move on towards moksha (salvation).

The aids we use while moving on these circles are the three wheels of our senses, mind and intellect. A life is considered noble, if these wheels are strongly polished. Otherwise the life itself become a hell, clad with diseases and evil acts. The three bonds always disturb the life.

Therefore, the core idea emerge from this verse is that we should keep the physical bonds in a balanced state to keep the body healthy. Then to rise above the mental bonds to rise above the evils, disputes and conflicts. Once a person trains himself to rise above the mental bonds of thinking good or bad about every situation on the basis of our own understanding of sattva, raja and tamas, we can live a life free from disputes and conflicts. We should restrain ourself from commenting good or bad about a given situation on the basis of our own understanding. The given situation may have some other factors unknown to us.



आ नासत्या गच्छतं हृयते हुर्विमध्वः पिबतं मधुपेभिरुसभिः ।

युवोर्हि पूर्वं सविताषसो रथमृताय चित्रं घृतवन्तुमिष्यति ॥

Aa naasatyaa gachchhatam hooyate havirmadhvah pibatam madhupebhiraasabhih.

Yovorhi purvam savitoshaso rathamritaaya chitram ghritavantamishyati.

(Aa) come (naasatyaa) never untruth, permanent truth, God (gachchhatam) go to (hooyate) offered (havih) oblations, in sacrifices (madhvah) sweet liquid (pibatam) drink (madhu pebhih) consume sweet (aasabhih) with mouth (Yovah) you both (hi) certainly (purvam) before (savitaa) creator, light giver (ushasah) first rays of Sun (ratham) chariot (body) (ritaaya) for true happiness (chitram) astonishing qualities (ghrita vantam) pure and enlightening (ishyati) inspires, promotes.

Elucidation

Who is the giver and receiver of oblations offered in sacrifices?

Oblations offered in sacrifices come from and go to that Permanent Truth, God and fetch sweet liquid that we drink with our mouth that is meant only for drinking pure and nourishing juices of food because only pure food can inspire us for sacrifices.

Both the praanas and apaanas certainly carry on their activities to attain true happiness for us even before the first rays of Sun appear. God inspires and make them competent to help us gain pure and enlightening Supreme qualities.

Practical Utility in life

How is the mechanism of oblations in sacrifice comparable to praanas and apaanas?

God is the only source of all oblations and after sacrifices also these oblations go to God. Thus, it is the most appropriate path to maintain a connectivity with that Permanent Truth, God. In return we get all sweet and nourishing juices.

Just as *praanas* and *apaanas* remain active through out our life even before the appearance of the first ray of Sun, we too should pray for such inspiration to remain at the fore whenever needed for sacrifices anywhere and anytime. Just as *praana* and *apaana* come from and go to God, the Omnipresent, our sacrifices also come from and go to God.



Rigveda 1.34.11

आ नासत्या त्रिभिरेकादृशेरिह द्वेभिर्यातं मधुपेयमश्विना ।
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतुं सेधतुं द्वेषो भवतुं सचाभुवा ॥

Aa naasatyaa tribhirekaadashairiha devebhiryaatam madhupeyamashvinaa.

Praayustarishtam nee rapaamsi mrikshatam sedhatam dvesho bhavatam sachaabhuva.

(Aa - To be prefixed with yaatam) (naasatyaa) never untruth, permanent truth, God (tribhih ekaadashaih) three times eleven i.e. thirty three (iha) here, in this body (devebhiih) divine power (yaatam - aa yaatam) come (madhu peyam) sweet liquid (divine medicine, seminal fluid) (ashvinaa) both (Pra - to be prefixed with taarishtam) (aayuh) age (pra taarishtam) to be extended (nih - to be prefixed with mrikshatam and sedhatam) (rapaamsi) evils and faults (rikshatam) nih rikshatam) - be eliminated completely (sedhatam) nih sedhatam) - prevent (dveshah) inimical thoughts (bhavatam) be (sachaabhuva) true and permanent.

Elucidation

How to get sweet liquid i.e. divine medicine?

Both the praanas and apaanas; God and soul should come to ensure the divinity of 33 powers to get sweet liquid i.e. divine medicine, soma, seminal fluid. All three levels of body, mind and soul must ensure purity of ten senses and one mind. Thus, the 33 powers are - purity of eleven senses at body level, purity of eleven senses at mental level, purity of eleven senses at spiritual level.

The resultant sweet liquid would certainly ensure :-

- (A) Extended age,
- (B) Complete elimination of evils and faults,
- (C) Prevention of inimical thoughts,
- (D) True and permanent company of God.

Practical Utility in life

What are the results of sweet liquid i.e. divine medicine?

What is *preya marg* i.e. loving path and *shreya marg* i.e. the noble path?

Pure working of eleven senses at all levels of our life can lay down beautiful path for spiritual progress. Purity of eleven senses at all levels of life must be used for great and divine activities. Such divine senses fetch sweet soma. Our senses should not be indulged in wasteful or harmful activities, because just satisfying senses with luxuries etc. only weaken them. Whereas, use of senses for noble acts would fetch sweet liquid. Select a clear path out of the two - (i) *preya marg* i.e. loving path or (ii) *shreya marg* i.e. the noble path.

Moving on the *shreya* path only you can put all the eleven senses for the upliftment of your body, mind and soul to ultimately focus on God.



Rigveda 1.34.12

आ नों अश्विना त्रिवृता रथेनाऽवाज्यं रुयिं वहतं सुवीरम् ।
शृण्वन्ता वामवासे जोहवीमि वृद्धे च नो भवतुं वाजसातौ ॥

Aa no ashvinaa trivritaa rathenaa arvaancham rayim vahatam suveeram.

Shrinvantaa vaamavase johaviimi vridhe cha no bhavatam vaajasaatau.

(Aa) To be prefixed with vahatam) (nah) for us (ashvinaa) both (trivritaa) for three circles (three human efforts - dharma, artha and kama i.e. nobility, economy and desires) (rathena) chariot (human body) (arvaancham) top to bottom (fully) (rayim) splendid wealth (aavahatam) provide us (suveeram) with bravery, nobility (Shrinvantaa) capable of hearing my prayers (vaam) you (avase) for complet protection (johaviimi) call you again and again (vridhe) for progress and success (cha) and (nah) our (bhavatam) be (vaajasaatau) in wars.

Elucidation

Whom to pray for help in fulfilling the three responsibilities, the three efforts of human life?

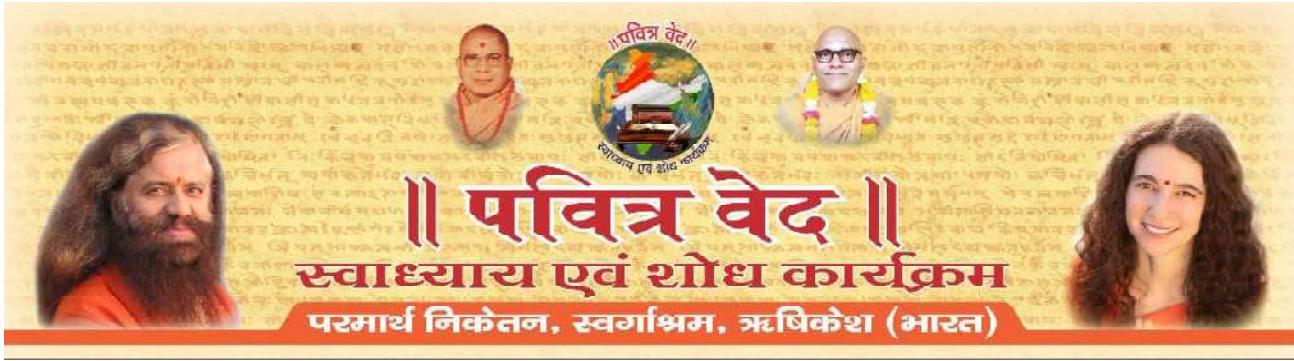
We pray to God and soul, praana and apaana, the pair called Ashwinaa to provide us all splendid wealth with bravery and nobility from top to bottom for fulfilling our three responsibilities of being a human i.e. dharma, artha and kama.

You both the Ashwinaas are only capable of hearing our prayers for our complete protection, progress and success and to be with us in all wars. Therefore, we call You again and again.

Practical Utility in life

How to achieve the fourth and last level of human existence i.e. salvation?

As human being, everyone of us has three basic responsibilities - dharma, artha and kama, which we must perfom with all bravery and nobility. Only God and soul, our praana and apaana, can help us in life. Thus, we should always focus on our inner powers while meditating, praying and seeking help. We should not waste our time, means and energy on useless rituals in the name of religion. To be religious is to be deeply spiritual inside and noble, humanistic outside. This principle can make us fulfill our three responsibilities and we will certainly achieve the fourth and the last level of human existence i.e. salvation.



Rigveda 1.21.5

ता मुहान्ता सदुस्पती इन्द्राग्नी रक्षा उब्जतम् ।
अप्रजाः सन्त्वत्रिणः ।

Taa mahaantaa sadaspatee indraagnee raksha ubjatam.
Aprajaah santvatrinah.

(Taa) Those (mahaantaa) great (sadaspatee) protector of society (indraagnee) energy, heat and light (rakshah) devil behaviour (ubjatam) are destroyed (Aprajaah) progeny less (santu) be (atrinah) enemies, evil tendencies.

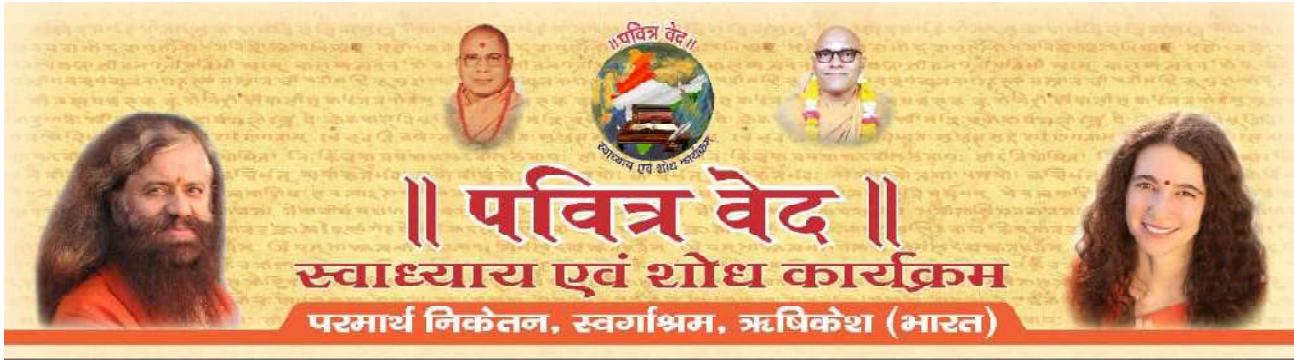
Elucidation

Continued from verse 4

We call energy and heat for many reasons :-

- (v) They are the greatest powers.
- (vi) They are the protectors of whole society.
- (vii) They destroy devils.
- (viii) They make enemies and evils progeny less.

to be continued in next verse 6



Rigveda 1.21.6

तेन् सृत्येन् जागृतमधि प्रचेतुने पुदे।
इन्द्राणी शर्म यच्छतम् ।

Tena satyena jaagritamadhi prachetune pade.
Indraagnee sharma yachhatam.

(Tena) They (satyena) imperishable (jaagritam adhi) famous for their awakened features (prachetune) joyful, great consciousness (pade) behaviour (Indraagnee) energy, heat and light (sharma) best comforts (yachhatam) provide.

Elucidation

Continued from verse 5

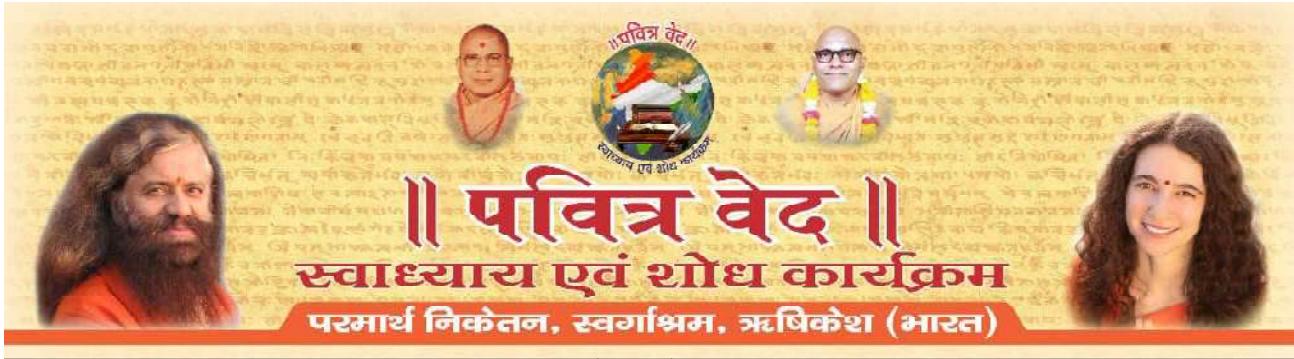
We call energy and heat for many reasons :-

- (ix) They are imperishable.
- (x) They are famous for their awakened features.
- (xi) They produce joyful and great conscious behaviour.
- (xii) They provide best comforts.

Practical Utility in life

How to protect energy and heat in our life?

This sukta spotlights the importance of energy and heat (heat includes light, warmth etc.). We must protect these powers for optimum utilisation. The best way to protect these powers is to stop their wastage. We should develop our conscious and wisdom by singing songs in praise of these powers and the Supreme Giver who provides these powers to us. That way we automatically become conscious and enlightened to protect them from wastage and to invest these powers to achieve real purpose of life i.e. God realisation for which we need to rise from demonic life to human life and then to divine life.



Rigveda 1.21.1

इहेन्द्राग्नी उप॑ ह्ये तयोरित्स्तोममु॒श्मसि ।
ता॒ सोमं॑ सोम्पात्मा॒ ।

Ihendraagnee upa hvaye tayloritstomamushmasi.

Taa somam sompaatamaa.

(Iha) Here (in this life, universe) (idraagnee) Indra means energy, agni means fire, heat, warmth, light (upa hvaye) worship, call near (tayo) from them (it) and (stomam) praises, glories (ushmasi) I desire (Taa) they (somam) protectors of virtues (sompaaatamaa) sustainers, holders of virtues.

Elucidation

Why do we need energy and light?

This present sukta 21 spotlights Indra and Agni i.e. energy and fire (heat, warmth and light). These two powers are the features of one element. Energy, with its light or warmth, is the fundamental element of universe and all its activities including lives of all creatures and non-living substances.

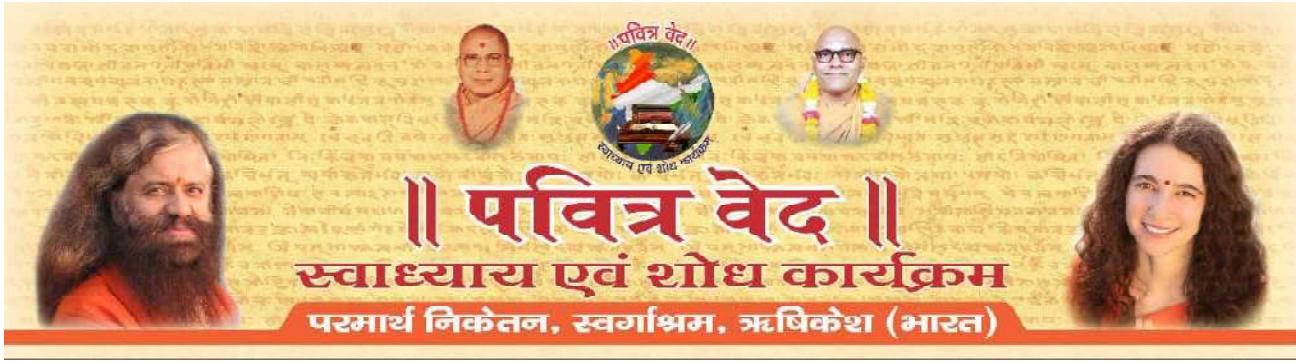
In human life, energy is physical strength and light represents mental strength. I worship and call both indra and agni i.e. energy and light, near me in this life. Using these two powers properly, I desire praises and glories from them. In spiritual life, material or scientific pursuits, everyone should use these powers appropriately to earn praises and glories. These vital powers should not be wasted.

These powers, if used appropriately, become the real protectors of our knowledge, virtues and all objects. Thus, indra and agni i.e. energy and light become sustainers of all our belongings.

Practical Utility in life

How are energy and light our real protectors?

All living beings and non-living elements have energy and fire. If we understand their importance and fix up our targets with them, we will never involve our self in any act that wastes these powers. In any walk of life, we can get praises and other valuable returns only if we ensure the proper use of our energies and knowledge. That is why we must worship them, call them and ensure their growth because they are the actual protectors and sustainers of everything in our life.



Rigveda 1.21.2

ता युज्ञेषु प्रशंसतेन्द्राग्नी शुभता नरः ।
ता गायत्रेषु गायत ।

Taa yajneshu pra shamsatendraagnee shumbhataa narah.
Taa gaayatreshu gaayata.

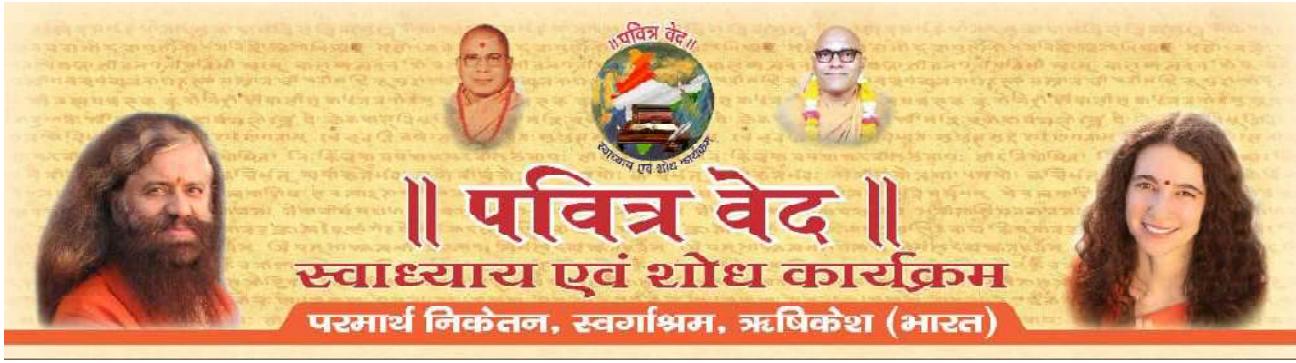
(Taa) To those (indra and agni) (yajneshu) in sacrifices for welfare (pra shamsata) highlight or use their good qualities (indraagnee) energy and light (shumbhataa) decorate (narah) men (who use indra and agni appropriately) (Taa) to those (gaayatreshu) protectors of pranas (gayah means prana, tra means protect) (gaayata) sing.

Elucidation

Why shall we sing in glory of light and energy?

Highlight or use all good qualities of energy and heat i.e. indra and agni, in various sacrifices and welfare activities. They will certainly decorate your life. Then, sing in glory of these energies and heat being the protectors of pranas.

Your energy and light is the actual protector of your pranas and consequently your life. Therefore, we must put them to use only for sacrifices and welfare activities to decorate our life with glories and praises from all sides. That is why we must also sing in glory and praises of our energy and light.



Rigveda 1.21.3

ता मि॒त्रस्य प्रशस्तय इन्द्राग्नी ता हवा॑महे ।
सो॒मुपा सो॒मपीतये ।

Taa mitrasya prashastaya indraagni taa havaamahe.
Sompaa somapeetaye.

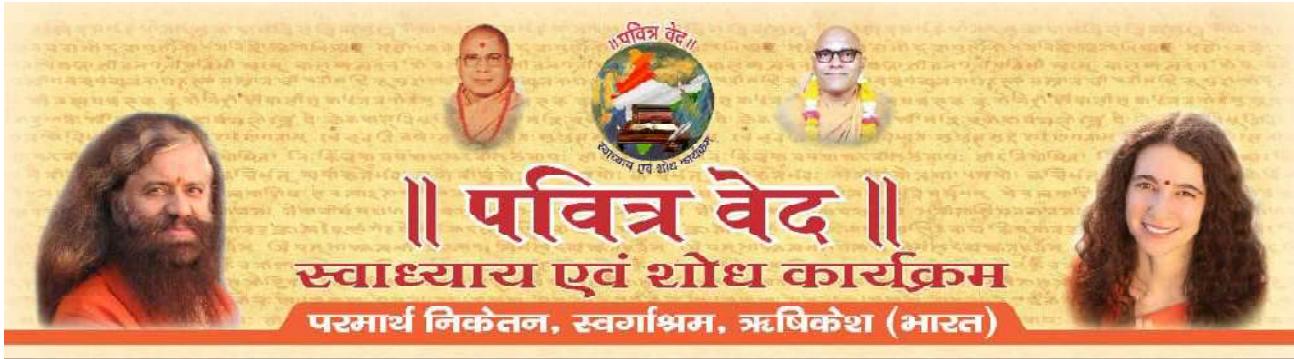
(Taa) Those (mitrasya) for friends (protector of all) (prashastaya) praises (indraagni) energy and heat (light, warmth etc.) (taa) those (havaamahe) I call (Sompaa) protector of virtues and objects etc. (somapeetaye) sustainer of virtues and objects etc.

Elucidation

Why do we need energy and light?

We call and accept that energy and light for the sake of praising our friend i.e. God. Only by protecting these basic powers of life, we can progress on the path of God realisation. These powers are the gifts of God and thus they are the protectors and sustainers of everything given to us by God.

God gives us many things in life, protects and sustains everything through our energy and light only. That is why we need energy and light for material comforts as well as for spiritual progress also.



Rigveda 1.21.4

उग्रा सन्ता हवामहु उपेदं सवनं सुतम् ।
इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ।

Ugraa santaa havaamaha upedam savanam sutam.
Indraagnee eha gacchataam.

(Ugraa) Powerful (santaa) present and progressing (havaamahe) we call, invite (up idam) near here (savanam) for sacrifices (sutam) for virtues (Indraagnee) energy and heat (ihā) in this life (aagacchataam) be receiveable.

Elucidation

What are the features of energy and heat?

We call energy and heat for many reasons :-

(i) They are powerful.

(ii) They are present and progressing.

(iii) They are used in sacrifices.

(iv) They are used for gaining virtues, knowledge etc.

to be continued in next verse 5



Rigveda 1.16.1

Aa tvaa vahantu harayo vrishanam somapitaye.

Indra tvaa surachakshasah.

Aa (to be prefixed with vahantu) (tvaa) You (God) vahantu (aa vahantu) invite, call (harayah) remover of pains, extracting saps (vrishanam) rainer of happiness (somapitaye) holder, protector of knowledge, virtues etc. (Indram) God, the Supreme Controller; Jiva, the controller of senses (tvaa) You (surachakshasah) visible in Sun, visible in divine, virtuous knowledge and behaviour.

Elucidation

Where is God visible? How can we realise God?

We call the Supreme Power God, who is :- (i) Remover of pains, (ii) Rainer of happiness, (iii) Protector of knowledge and virtues etc., (iv) Visible in Sun and divine virtues, knowledge etc.

Another interpretation of this verse is that the devotees who have the following features are entitled to call God in their realisation :- (i) Remover of pains of others, (ii) Rainer of happiness for all, (iii) Protector of knowledge and virtues etc., (iv) Visible through their divine virtues, knowledge etc. forever.

As per third interpretation, this verse is applicable to Sun who also has all these features, therefore God is visible through Sun also :- (i) Sun extracts saps from earth, (ii) Sun is the rainer of water for the happiness for all, (iii) Sun is the protector of somas i.e. juices of herbs and vegetation etc., (iv) Sun is visible through its divine powers like heat, light and magnetic force of holding all celestial bodies.

Practical Utility in life

How to seek the company of people high in knowledge and stature?

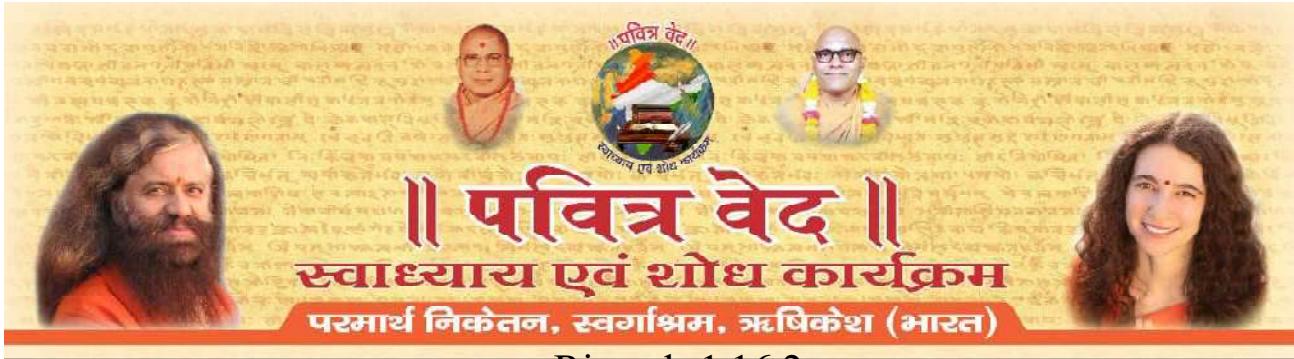
When you wish for the company and blessings of any higher authority or elderly respectable, it is obvious that you visualise something beneficial in him. You will be able to have his company and blessings only if you hold and follow his features practically. To establish strong ties or relationship with anyone, you need to follow his likings or path. And, on the Supreme side, if you wish to realise God, just follow his great and divine features.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



॥ पवित्र वेद ॥

स्वाध्याय एवं सोध कार्यक्रम

परमार्थ निकेतन, स्वर्गभम्, उद्दिष्टेश (भारत)

Rigveda 1.16.2

Imaa dhaanaa ghritisnuvo hari ihopa vakshatah.

Indram sukhatame rathe.

(Imaa) These (dhaanaa) holder (ghritisnuvo) spreading knowledge and purity all around (hari) rays, sense organs, remover of pains, extracting saps (iha) here (upa) near (vakshatah) receiver (Indram) Supreme Controller God, Sun, controller of senses (sukhatame) very comfortable (rathe) chariot, body

Elucidation

How can a man be equated with Sun?

Scientific interpretation - Sun extracts all saps, holds them and spreads them in pure form all over and make available vehicles near us to make our movement comfortable. Sun empowers our body also to move.

Spiritual interpretation - A person having empowered his jeevatma, becomes a controller of his sense organs, holds them to spread purity all around and becomes the remover of pains by destroying impurities. Thus, jeevatma becomes hari and makes it easy to realise God near him, within his body chariot.

Practical Utility in life

How can we train ourself to act like Sun?

Like Sun, we can certainly train ourself to be :

(i) *hari* i.e. extracting or removing impurities from our life as well as from the lives of others,

(ii) *ghritisnuvo* i.e. spreading knowledge and purity all around.

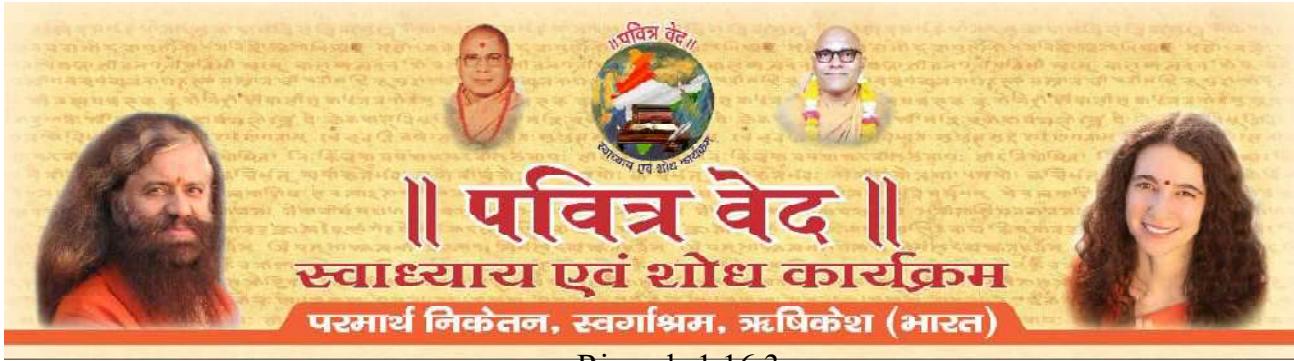
This way we will be able to enjoy a very comfortable journey of life with this body chariot i.e. *sukhtame rathe*, and to realise divinity very near us.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.16.3

Indram praatarhavaamaha indram prayatyadhware.

Indram somasya pitaye.

(Indram) Supreme Controller God, Sun, controller of senses (praataah) daily morning (havaamahe) invite, pray, call (indram) Supreme Controller God, Sun, controller of senses (prayati) Giver of best knowledge, giver of light and heat (adhware) for faultless pure sacrifices (Indram) Supreme Controller God, Sun, controller of senses (somasya) saps of all herbs and vegetation, knowledge and virtues (pitaye) extracts, draws to protect

Elucidation

Why shall we invoke God, Sun and our inner powers daily?

Scientific interpretation - We invite and welcome Sun everyday morning because it provides light and heat for all our activities like sacrifices and yajnas among others. It extracts all saps to return us many fold. This verse is equally applicable to energy and air also.

Spiritual interpretation - We call God everyday morning to come in our realisation as He is the Giver of best knowledge for all our pure activities like sacrifices and welfare etc. He is the protector of all somas i.e. knowledge, virtues and nobilities.

Daily we invoke our soul, the controller of senses, also to realise God i.e. the holder of great and supreme knowledge, performer of pure sacrifices, protector of all virtues etc.

Therefore, God must be invoked everyday for two main reasons :-

- (i) To increase purities, intellect and sacrifices,
- (ii) To decrease impurities, ignorance and desires.

Practical Utility in life

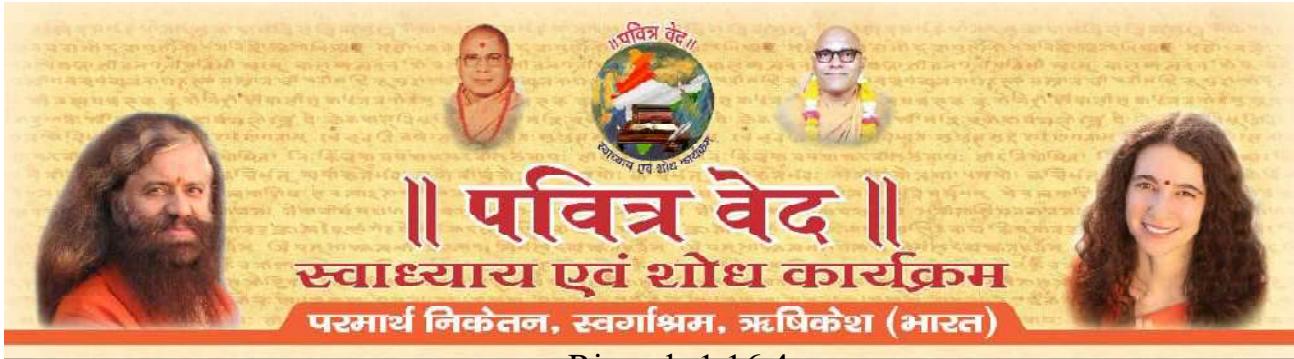
How to ensure regular progress in life?

We must invoke Supreme Power in our life constantly. After the arousal of the Supreme Power in us, we will be able to progress in our respective fields. Supreme Power includes knowledge, virtues, nobilities and our best abilities etc. Progressive people ensure the progress of all these qualities.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

- (1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
- (3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.16.4

Upa nah sutamaa gahi haribhirindra keshibhih.
Sute hi tvaa havaamahe.

(Upa) Near (nah) us (sutama) things produced (agahi) received (haribhih) with power of drawing (indra) Supreme Controller God, Sun, controller of senses (keshibhih) hair, rays, multidimensional powers (sute) with best behaviour (hi) certainly (tvaa) You (havaamahe) receive

Elucidation

How to realise God and be liked by Him?

It's an instruction to man to communicate with God praying that He be realised near us with everything produced by Him.

The Sun, the air, the universal energy and even our individual soul have many powers to extract all saps and to remove pains. With the help of all such powers when he performs best behaviour, certainly he would realise God.

This verse can also be considered as an assurance for God to each human soul that being *indra*, the controller of senses, he should invoke all *somas* i.e. great knowledge, nobilities and virtues near him always, draw all such somas with the help of his multidimensional powers. God would certainly welcome such people with best conduct and performance.

Practical Utility in life

How to be liked by all?

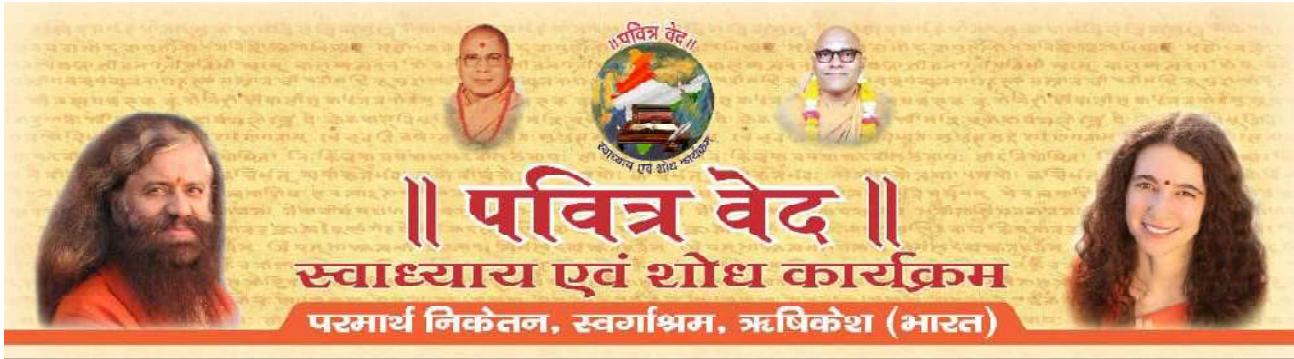
If you wish to be liked by all and particularly your higher authorities and elders etc., you are required :-

- (a) to produce and increase great knowledge, nobilities and virtues in you,
- (b) to remove pains by reducing impurities, ignorance etc. with the help of your multidimensional divine powers given by God to everyone.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

- (1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
- (3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.16.5

Semam nah stomamaa gahyupedam savanam sutam.

Gauro na trishitah piba.

(Sah) He (imam) these (nah) our (stomam) praises for God, praiseworthy acts beneficial for all (aagahi idam) these are received, accepted, liked by Him (savanam) good acts (sutam) produced things beneficial for others (Gaurah) deer (na) just as (trishitah) thirsty (piba) drinks

Elucidation

We aspire to realise God. Does God also aspire for us?

This verse can be interpreted as a simile to explain a vedic instruction. A deer rushes to drink when he is thirsty. If our thirst is for God-realisation, we must undertake the following three instructions of this verse :-

(i) *stomam* : Our praises for God or our praiseworthy acts beneficial for all are actually praised by God also.

(ii) *savanam* : All good acts are liked by God.

(iii) *sutam* : We should produce things that are beneficial for all.

When we follow these three instructions in practice, God comes near us in our realisation. We should run for such a life as if a thirsty deer rushes for water to drink. In turn, God will also run to be realised by us.

Sun, like a thirsty deer, also runs with its rays towards us when we perform yajna i.e. acts beneficial for others, followed by praises for God.

Practical Utility in life

What shall we do to seek blessings of our elders and superiors?

Practically, in any walk of life, we must ensure these three principles in practice :-

(i) *Stomam* : Always praise your elders, superiors with full honour. Never criticize, dishonour or disobey them.

(ii) *Savanam* : Your acts must be noble for the benefit of all in the family or any establishment so as to make your elders feel proud of you.

(iii) *Sutam* : You must produce such things that are beneficial for all.

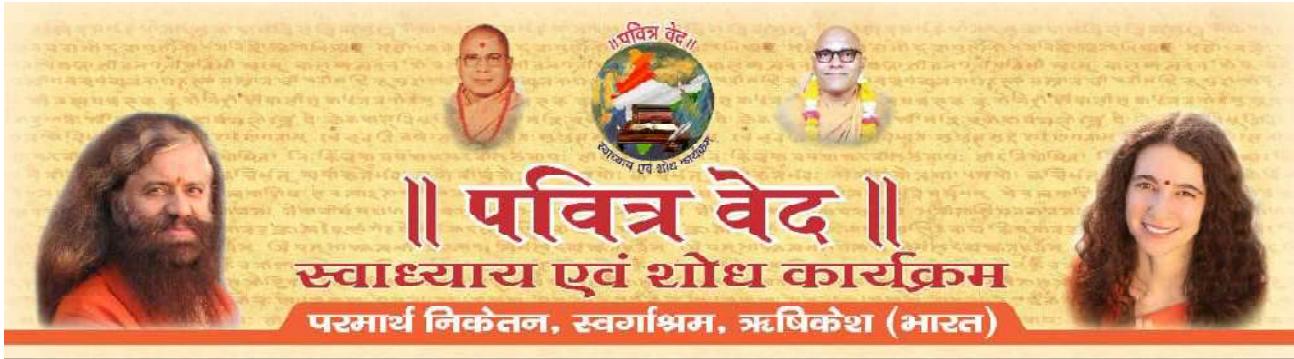
If we follow these instructions with full zeal like a deer rushing towards water, the blessings of our elders and superiors would also rush towards us as a thirsty deer rushes for water.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.16.6

Ime somaasa indavah suaaso adhi barhishi.

Taan indra sahase piba.

(Ime) These (somaasah) great knowledge, nobilities and virtues (indavah) empowering (sutaasah) produced by God (adhi) increase (barhishi) in space, heart and mind (Taan) those (indra) God (the Supreme Controller), Sun, air, Jiva (the controller of senses) (sahase) the strength, courage (piba) drink, consume

Elucidation

Where and why are the knowledge and material objects created?

How does the effect of knowledge and objects get increased?

The great knowledge, nobilities, virtues and all objects etc. (*somaasa*) are created by God (*sutaasah*). These creations get increased in space. They are meant for our strength and courage.

Scientifically, Indra is taken as Sun and air who draw juices from earthly objects, take the extracts in space, multiply it there and return to the earth with increased strength. People consume all such articles and knowledge etc. produced by natural energies for strength and courage.

Spiritually, all objects, knowledge, nobilities and virtues etc. are created by God. If we take them to our deep mind and heart, by concentrating and meditating, these features get increased. Thus, the controller of senses drink them for strength.

Practical Utility in life

Why shall we focus our heart and mind while doing any act?

Whatever materials we use or the thoughts we hold, the effect thereof should be taken to the mind and heart, it well increase and give us more strength and courage. For example, when we consume food, we must focus our mind on every moment of chewing and think over its effect on the body and mind with a calm and peaceful mind, the effect of such a food will certainly increase.

Similarly, when we serve anyone in any manner, we should do our duty with deep heart touch and focused mind. The effect of our performance would increase and we would get more strength for future acts.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.16.7

Ayam te stomo agriyo hridisprigastu shantamah.

Athaa somam sutam piba.

(Ayam) This (te) Your (stomah) praises for God, praise worthy acts (agriyah) progressive, promoting (hridisprik astu) be heart touching, deeply satisfying (shantamah) peace giving (Athaa) therefore (somam) objects, knowledge, nobilities and virtues etc. (sutam) produced by God (piba) drink, consume.

Elucidation

How to make our life activities divine?

What is the result of divine life?

Whenever any material object or knowledge is used by us, there must be conscious feeling that everything is God given. Such a consciousness about every object or knowledge would make it *soma sutam* i.e. produced by God. It will give a divine touch to all our life moments and activities.

With such a consciousness only, our praises for God or our praiseworthy acts (*stomah*) would result in :-

- (i) Progress and promotions in life, (ii) Heart touching and deeply satisfying, (iii) Peace giving

Practical Utility in life

How to achieve progress, satisfaction and peace in life?

To achieve progress, satisfaction and peace in life, we must have a deep consciousness for the core reality that all materials and knowledge are God given and we are just using all these things as divine gifts of God. This way we will be trained to live in an egoless manner and to concentrate on our acts with more focus and a sense of welfare for all. Our behaviour and performance would improve to ensure good results.

Even in our family, we must not forget that every material thing like properties, money and all other means are given by our parents and forefathers. This continuous consciousness would make us full of respect and regard for our elders. We will be egoless and would be able to concentrate more on the welfare of the whole family instead of being self-centered.

Similarly, while working in any establishment, we must be conscious of the fact that the establishment is owned or principally managed by our superiors for our benefit. We should work in an egoless manner and with full devotion towards the establishment and with regards for our superiors.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

- (1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and
(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)**



Rigveda 1.16.8

Vishvamitsavanam sutamindro madaaya gachhati.

Vritrahaa somapitaye.

(Vishvam) All time, every situation (ita) certainly (savanam) great sacrificing acts (sutam) produced results (indrah) God (the Supreme controller), Jiva (the controller of senses) (madaaya) joy, bliss (gachhati) receives (Vritrahaa) destroyer of circles, of ignorance, of clouds (soma) divinities (pitaye) protector

Elucidation

What are the results of a sacrificing life?

When a person truly becomes *indra*, the controller of senses and performs great sacrificing acts always, he certainly enters into a great blissful state. Then, he is able to destroy the circle of ignorance and becomes protector of his divinities. Thus, a sacrificing life ensures three results :-

- (i) great inner bliss,
- (ii) destruction of circles of ignorance,
- (iii) protector of his divinities.

Practical Utility in life

What makes some people great?

We see all great men having a strong background of sacrifices. Only sacrifices made them great.

A person who is loving, caring and sacrificing for all members of the family is considered as great.

An employee who is honest, dedicated and ready to contribute all his efforts for the upliftment of the establishment is considered as great.

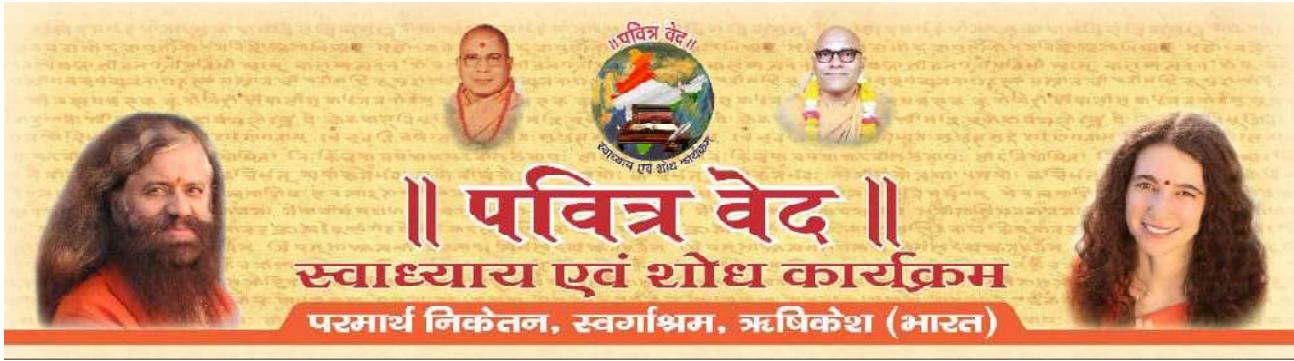
Those social and religious leaders are considered as great who take unto themselves the pains and troubles of the people.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.16.9

Semam nah kaamamaa prina gobhirashvaih shatakrato.

Stavaama tvaa svaadhyah.

(Sah) God (imam) this (nah) our (kaamam) desire (aaprina) fulfill completely (gobhih) senses of knowledge (ashvaih) senses of action (shatakrato) doer of innumerable acts (God) (stavaam) praises, glorification and worship (tvaa) You (svaadhyah) meditate with concentration

Elucidation

What should be our prime desire?

God is the doer of innumerable acts. Only He can fulfill completely our desires by inspiring our senses of knowledge and action. Our prayer should be focussed - "Let us worship You, while meditating with concentration (*stavaam tvaa svaadhyah*)"

Practical Utility in life

What is *karma* principle in practice?

Since God is the doer of innumerable acts, whatever is being seen everywhere around is actually done by God. We are just looking like a doer of our activities, but actually God is the real doer.

While performing all our routine activities, we must find time daily to worship Him with concentrated meditation. This is possible only if we detach our ego from all acts performed by us and from their results too.

This is the core *karma* principle - Do everything without being attached to the sense of doership. Attach your inner power to God only through meditation.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.1

Indra somam piba rtunaa tvaa vishantvindavah.

Matsaraasastadokasah.

(Indra) Sun, controller of senses, jiva (somam) juices of all vegetation, knowledge, virtues, nobilities (piba) drink (rtunaa) properly, seasons (tvaa) in you (aavishantu) enter (indavah) strength giving, somas (Matsaraasah) blissful, joyful (tadokasah) abodes of divinities

Elucidation

How does Sun gives us strength?

How do great virtues strengthen us?

What is the prime condition for a divine life?

Scientific meaning - Sun drinks (extracts) juices of all vegetation in various seasons which become strength giving and enter in all living and non-living beings. These strength giving elements are blissful for all and considered as the abode of divinity.

Spiritually, we are instructed to be indra, the controller of senses and drink somas i.e. knowledge, virtues and nobilities. When these somas enter in our body, they become strength giving and blissful for our spiritual progress because these somas are considered as abodes of divinities. Supreme Power, God, resides in somas. One can drink somas only if he is an Indra first i.e. the controller of senses. Being an Indra is the primary condition of a divine life.

Practical Utility in life

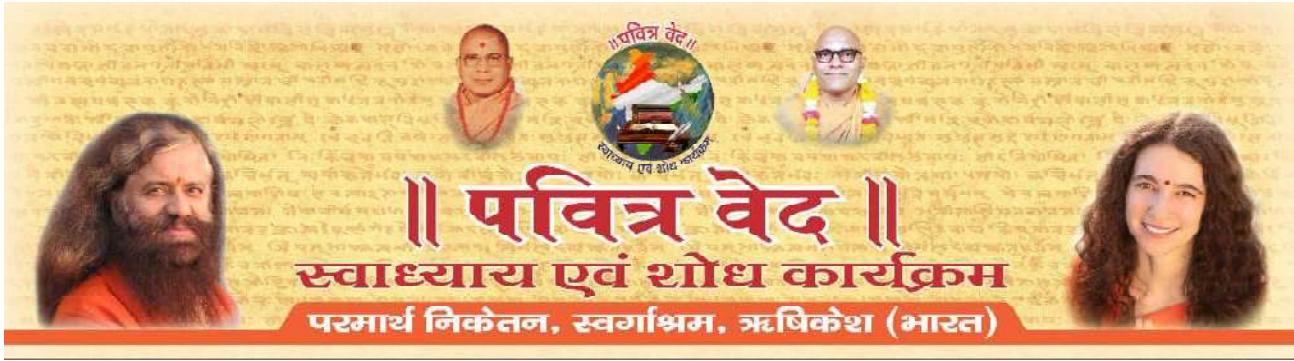
We should imbibe all great features in our life properly and at proper age. Parents and teachers should take care of it and they can be the best guides to implement this mantra. Once time passes away then mind becomes mature in its own beliefs and habits and it is very difficult to transcend habits and character traits formed in childhood. Only great features are our fundamental strength and blissful because divinity manifests in divine qualities.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.2

Marutah pibata rtunaa potraad yajnam punitana.
Yuyam hi sthaa sudaanavah.

(Marutah) Air, breath (pibata) drinks (rtunaa) properly, season (potraat) purifying (yajnam) sacrifices (punitana) purify (yuyam) you (hi) certainly (sthaa) are (sudaanavah) destroyer of evils, provider of everything nicely.

Elucidation

What's the importance of air for us?

How does our breath purify us?

Scientifically - Just as Sun drinks (extracts) juices of all vegetation (as mentioned in verse-1), air also drinks such juices. Somas is considered silent in this verse. Air is purifying, therefore, it purifies and spreads our sacrifices. Air is certainly the destroyer of all evils i.e. bad smell etc. and thus, helps in providing everything nicely.

Spiritually - Our breath i.e. praana and apaana, the air we inhale and exhale proper, purifies our body thoroughly as it has purifying properties. Our praanas purify, protect and spread our sacrifices also. In this way, our praanas i.e. air, certainly destroy all evil thoughts from our mind.

Practical Utility in life

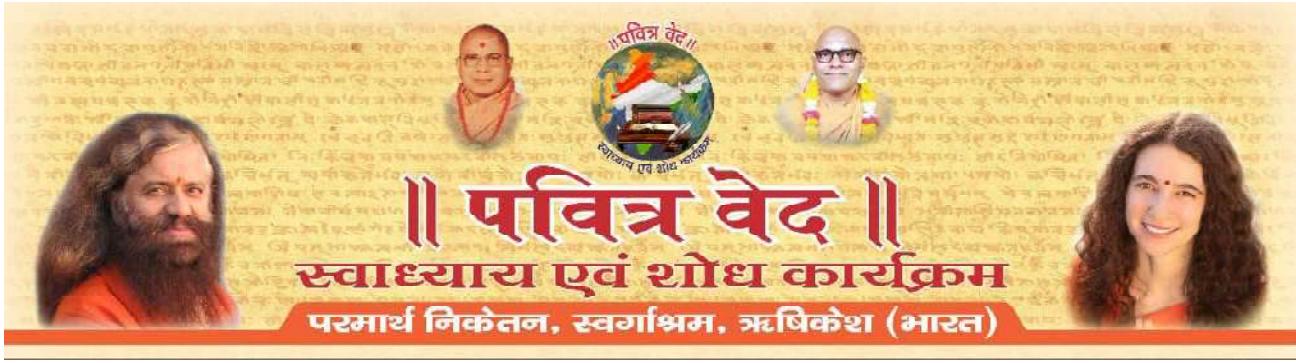
At macro level, God protects and purifies us through atmospheric air. At individual level our inhaled and exhaled praanas protect, purify and spread our sacrifices, promote good deeds and destroy evil thoughts. We must focus on these divine powers universally available to all of us as Supreme Divine God. Great divine souls spread their divinities even through their breath. Their presence or even just a meditative thought about such great divine souls provide us the fruits of their sacrifices.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.3

Abhi yajnam grnihi no gnaavo neshtah piba ritunaa.

Tvam hi ratnadhaa asi.

(Abhi) Targetted, from all sides (yajnam) sacrifices (grnihi) accepted, held (nah) our (gnaavah) competent to provide all objects (neshtah) electricity, the subtle form of fire, great intellectual having fire of knowledge (piba) drinks (ritunaa) as per season, properly (Tvam) You (hi) certainly (ratnadhaa) holder of the best objects (asi) are

Elucidation

What is the basic science of electricity?

How does electricity make us comfortable?

Scientific meaning - Focus of this verse is on *neshtah* i.e. electricity, the subtle form of fire that pervades and upholds all the particles and disintegrate them. Fire emerges from subtle electricity and dissolves in it again at the end. Purification and nourishment are the properties of electric power. This electric power of the universe holds and accepts all sacrifices in the current form. It is competent to provide all objects to us. This electric power of the universe drinks (extracts) all somas (juices of vegetation, power of all objects etc.) and therefore is certainly the holder of best objects.

Spiritual meaning - *Neshtah* can refer to mean the great intellectual also. Such intellectuals honour, accept and hold the sacrifices and are competent to provide us all useful knowledge of their field, expertise. They drink somas i.e. knowledge, virtues and nobilities regularly and properly. Therefore, they hold the best knowledge for us, equivalent to high riches. Such great intellectuals are equated with spiritual electric power, competent to activate spirituality in us.

Practical Utility in life

Why are great intellectuals equated with electric current?

Materially electric power is the core of all our comforts, accepts our sacrifices and provide us best objects.

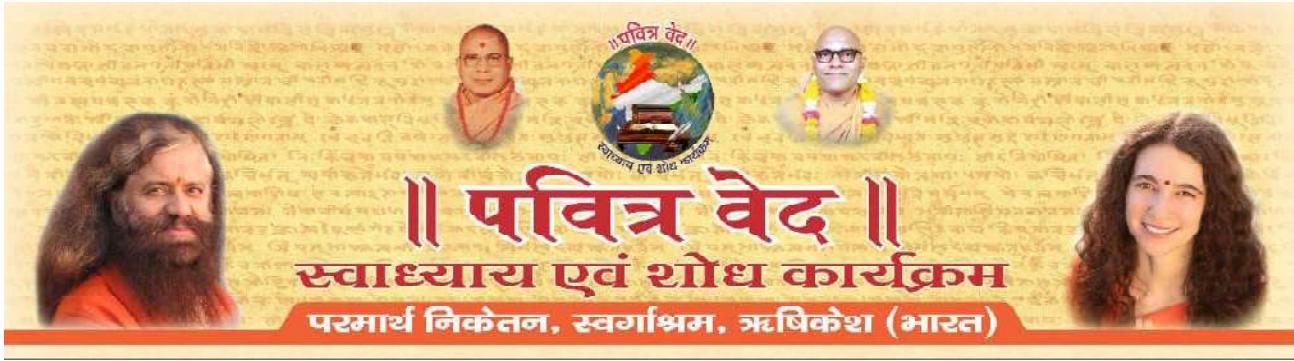
Spiritually great intelligence is the core electric current of all mental activities. Such intellectuals drink somas i.e. knowledge, nobilities etc. therefore, are reliable and good guides in making our path comfortably progressing. Just a look at (darshanam), touch or even a thought of such intellectuals can generate their current feeling in us also.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.4

Agne devaan ihaa vaha saadayaa yonishu trishu.
Pari bhusha piba ritunaa.

(Agne) Fire i.e. burning fire or fire of knowledge or fire of love for God (devaan) divinities (iha) here in this life (aavaha) makes available (saadayaa) establish (yonishu) in places (trishu) three (pari bhusha) decorate from all sides (piba) drink (ritunaa) as per season, properly

Elucidation

What is fire and how does it decorate our lives?

The burning fire drinks somas, accepts oblations to make available all divine objects in three places - above, below and middle, to decorate our lives from all sides.

Spiritually - The fire of great knowledge or love for God drinks (extracts) somas i.e. nobilities and virtues, to make divine our 3 places - senses, mind and intellect, to decorate our life with spiritual progress. Senses of knowledge and action perform gyan yajna and karma yajna respectively and mind performs bhakti yajna. Intellect helps in God realisation.

Practical Utility in life

What are the functions performed by our inner fire?

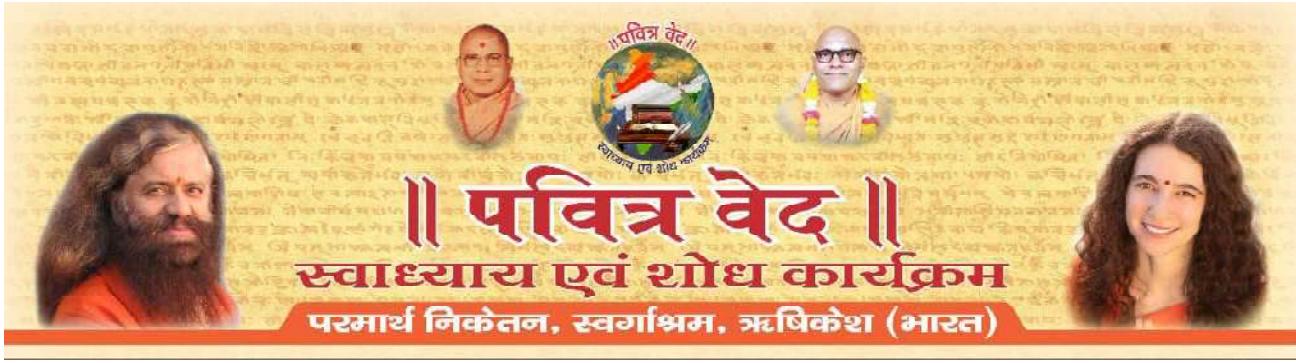
The best use of agni is to offer oblations and sacrifices which decorate our lives. In our inner i.e. spiritual agni, we should perform gyan yajna, karma yajna and bhakti yajna to decorate our inner spirit with the fruits of these three yajnas.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.5

Braahmanaadindra raadhasah pibaa somamrtumranu.
Taveddhi sakhyamastritam.

(Braahmanaat) For the biggest, Brahma related (indra) air, controller of senses (raadhasah) wealth (piba) drink (somam) divine nectar (rtun anu) as per season, properly (Tva) Your (ita) is (hi) certainly (sakhyam) friend, Brahma (astritam) unending, inseparable

Elucidation

What is the biggest wealth?

Materially, *indra* in this verse refers to air as the biggest wealth that takes the sap of substances as per season. Air is our inseparable friend.

Spiritually, *indra* refers to jiva who is the controller of senses for whom *Brahma* is the biggest wealth. We, as *indra*, should drink somas properly. Somas refer to great knowledge, nobilities and virtues etc. that are peace giving for all. That wealth of Brahma only is our inseparable friend otherwise all friends are separable sooner or later, in one situation or the other.

Practical Utility in life

How can our relations become inseparable?

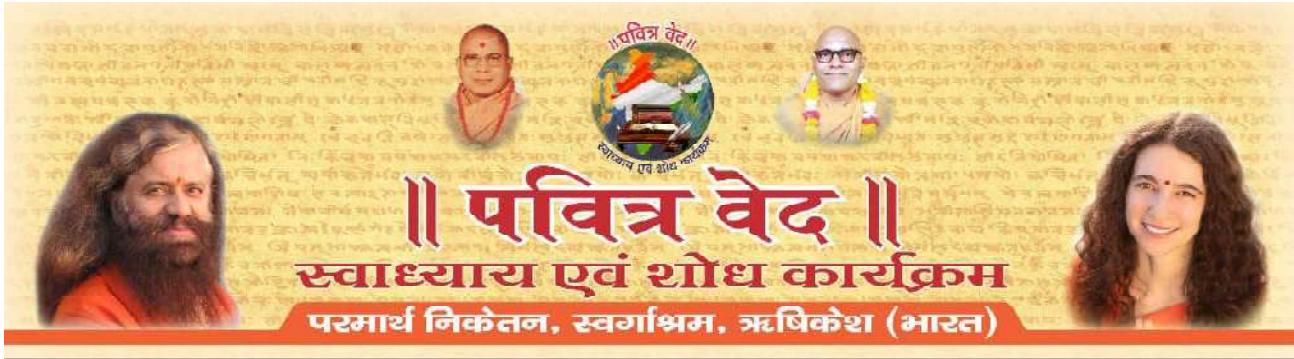
The biggest wealth in our life is companionship with Brahma and that friendship would be inseparable in our realisation if we drink somas regularly and properly. With this mind set and duly experiencing the friendship with that biggest wealth, now apply this principle to all worldly relations at home and outside. We can make all relationships inseparable if we maintain nobilities, virtues, honesty and integrity in every relation. Unethical, ignoble or selfish relationship doesn't last long and can't be claimed as our wealth but felt like a burden.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.6

Yuvam daksham dhritavrata mitraavaruna dulabham.

Ritunaa yajnamaashaathe.

(Yuvam) You both (daksham) strengthening (dhritavrataa) vow of purity (mitraa varunaa) sun & air, praana & apaana, love & welfare, pair like ashvina (dulabham) non-violent (Ritunaa) as per season, properly (yajnam) sacrifices (aashaathe) pervade

Elucidation

What factors give us strength for welfare acts?

Scientifically, sun and air are the two companions who have power to give strength to all with their vow of purity and are non-violent. They perform various acts of welfare for all of us as per requirement.

Spiritually, our praana and apaana, the features of love and welfare in us jointly bear the vow of purity and give strength to our life as well as perform various acts of welfare for others which are totally non-violent.

Practical Utility in life

What is the prime principle of purity and co-ordination?

Mitraa and varunaa, in our practical life, can be the pair of any two - body and mind, left and right mind, two brothers, sisters, husband and wife or any relations. We must make best use of the powers of both together with a vow of purity, selflessness, sacrifices for the welfare of others. Only then we can generate a great strength in our life to perform various noble acts of sacrifices.

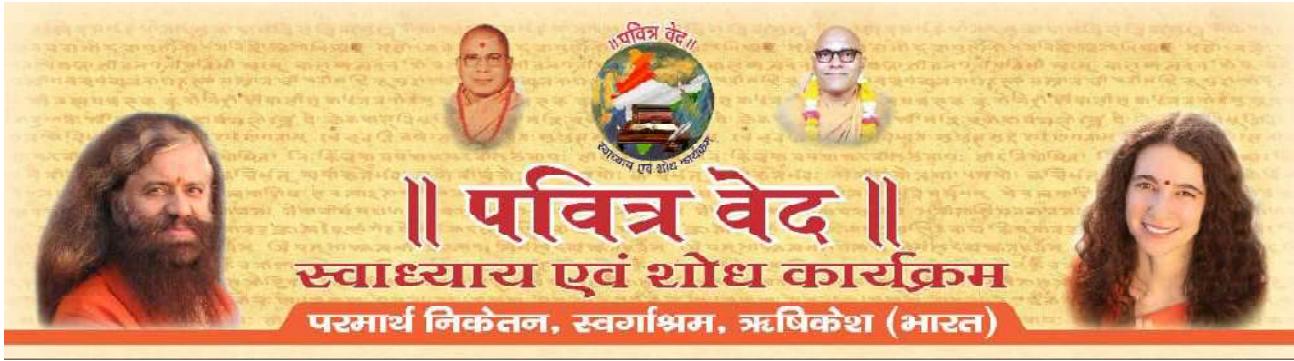
A prime principle of material physics applies in human empowerment also that purity and co-ordination between the two poles is the prime condition for generating current, strength and using it for sacrifices and welfare.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.7

Dravinodaa dravinaso graavahastaaso adhvare.

Yajneshu devamilate.

(Dravinodaah) For Giver of strength and wealth, For Giver of fruits of our acts (dravinasah) desiring strength and wealth, desiring activities (graavahastaasah) having worship in his hands by way of sacrifices (adhvare) non-violent (Yajneshu) by sacrifices (devam) God, the Supreme Divine Power (ilate) worship

Elucidation

What is "worshipping God on one's hands"?

Those who perform sacrifices in the name of God, desire strength and wealth from God for God, such people worship God on their hands.

A person who has made his life as an embodiment of sacrifices, if such a person desires strength and wealth, it would be for sacrifices only. God is worshipped with sacrifices. Therefore, the desire of such a person, for strength and wealth, is for God only.

God is the Giver of rewards of our actions. Therefore, our acts must be so pure and sacrificing that are easily receivable by God. We should perform all acts only as worship of God. That way, we would be worshipping God on our hands gloriously and proudly claim fruits thereof in the form of love for God.

Practical Utility in life

What is "service on one's hands"?

One who always works for the welfare of others and always ready for sacrifices, it implies that all his belongings are devoted for such welfare only. Such a person considers no sacrifice as great. God grants all strength and wealth to such a great person keeping in mind that it will be used for welfare of others.

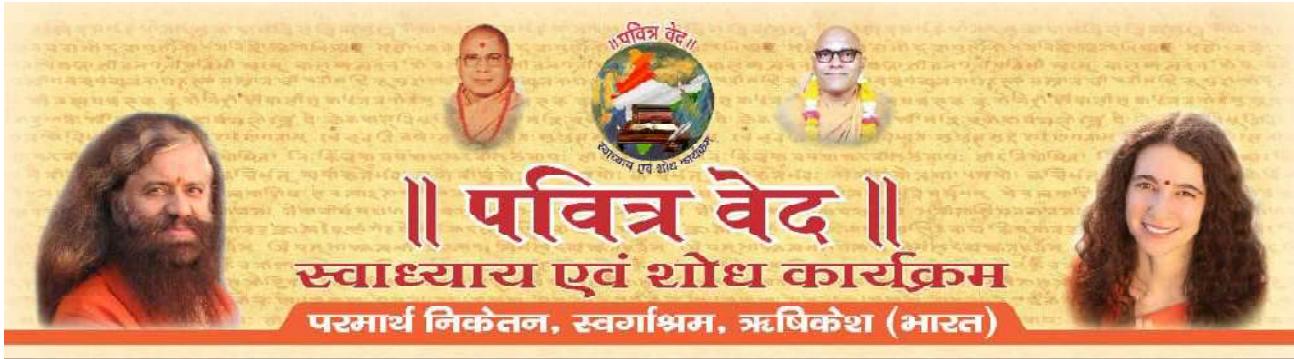
Similarly, if you devote yourself for the protection and progress of an establishment, the superior authorities would rely upon you and would happily grant further means and powers with the confidence that every power would be used for the welfare of the establishment. Such service would be considered as service on one's hands.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.8

Dravinodaa dadaatu no vasuni yaani shirnvire.
Deveshu taa vanamahe.

(Dravinodaah) Giver of strength and wealth, Giver of rewards of actions (dadaatu) give (nah) us (vasuni) that power and wealth (yaani) which is (shirnvire) heard (deveshu) for divine purposes (taa) thos, power and wealth (vanaamahe) we accept and use

Elucidation

When are our acts and their rewards heard by all?

This verse is a prayer to the Giver of strength and wealth to give only such power and wealth which is liable to be heard. There is a promise also that we will accept and use that power and wealth for divine purposes only.

It means when power and wealth is used for divine purposes, for sacrifices and for welfare only then it is heard by all. Such use of power and wealth results in a great and respectable fame of its holder and user.

If our acts are pure and sacrificing, they are certainly heard by all and the fruits of such pious acts are also heard by all.

Practical Utility in life

How to use power and wealth?

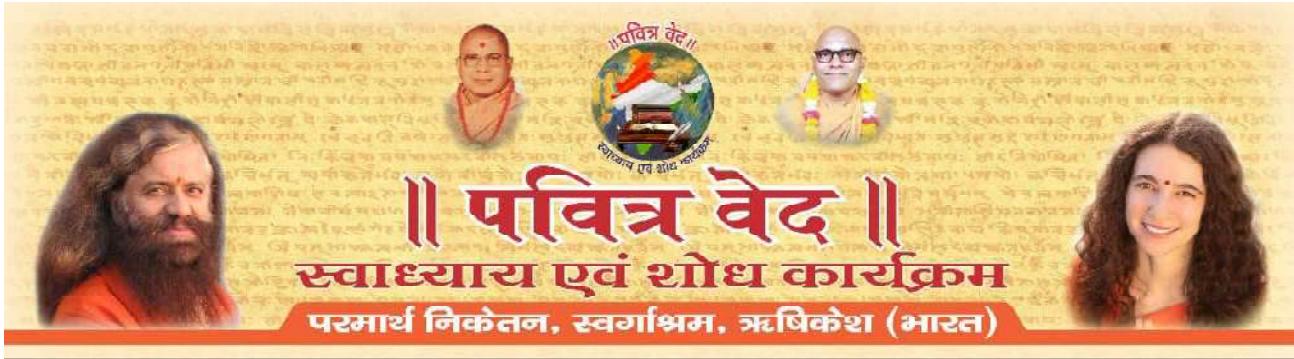
This verse is a great instruction to all wealthy, social and political people to ensure that their power and wealth are used for divine purposes i.e. sacrifices, welfare etc. Such divine acts fetch a great fame because divine acts are liable to be heard, they are speaking divine acts.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.9

Dravinodaah pipishati juhota pra ca tishthata.
Neshtraadritubhirishyata.

(Dravinodaah) Giver of power and wealth, Giver of rewards of actions (pipishati) drinks (juhota) use for sacrifices (pra to be prefixed with tishthata) (cha) and (tishthata - pra tishthata) get good status, uplifted (Neshtraat) for progressive future (ritubhih) properly, as per requirement (ishyata) desire for

Elucidation

How to gain an upliftment on spiritual path?

If we use our power and wealth for sacrifices, on one hand we get good status in the society and upliftment on spiritual path, and on the other, such sacrifices are drunk (received) by the Giver of that power and wealth i.e. God. For progress in life, everyone must desire for such a power, wealth and use it for sacrifices as required. Sacrifices are liked by God and result in an upliftment on spiritual journey.

If our acts are totally pure and are drunk (received) by God then the result of such acts would certainly be salvation i.e. our establishment in the lap of God and freedom for births and deaths.

Practical Utility in life

How to rise in the eyes of elders and superiors etc.?

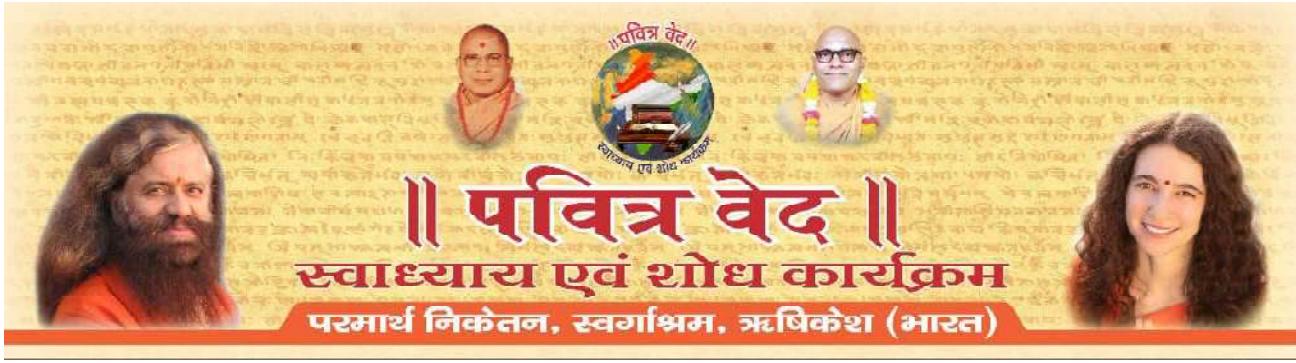
Our noble acts of sacrifices for the welfare of others are liked by our elders and seniors etc. We gain a rise in their eyes and they drink (receive) our acts means they like and feel proud over our acts. In any walk of life, we must perform noble acts as and when required without showing laziness or lapse of time.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.10

Yattvaa turiyamritubhirdravinodo yajaamahe.

Adha smaa no dadirbhava.

(Yat) That (tvaa) to You (turiyam) God, after gross, subtle and causal bodies, God is the 4th state who is the cause of all causal bodies (ritubhih) properly, as per season (dravinodah) Giver of power and wealth, Giver of rewards of our actions (yajaamahe) worship (adha) now (smaa) You (nah) to us (dadih) giver (bhava) be

Elucidation

Where can we realise and worship God?

We can worship and realise God who is the 4th state in our body :-

- (a) Gross body i.e. sthool sharir, the physical body.
- (b) Subtle body i.e. sookshama sharir, the mental body
- (c) Causal body i.e. jivaatma
- (d) Cause of causal body i.e. the core and innermost power, the absolute and ultimate cause of this life, God.

Our worship of this 4th state should continue properly in all seasons because He is the Giver of all powers and wealth as well as rewards of our actions. We pray Him to continue giving His grants including realisation.

Practical Utility in life

Is God one and common Supreme Power for all?

Yes, God is certainly one common Supreme Power within us and out of our body for all. The nearest place we can find or realise God is within our body, the 4th state i.e. turiam, the cause of our causal body. We should worship Him within. There shall be no confusion about His power to grant us anything including salvation.

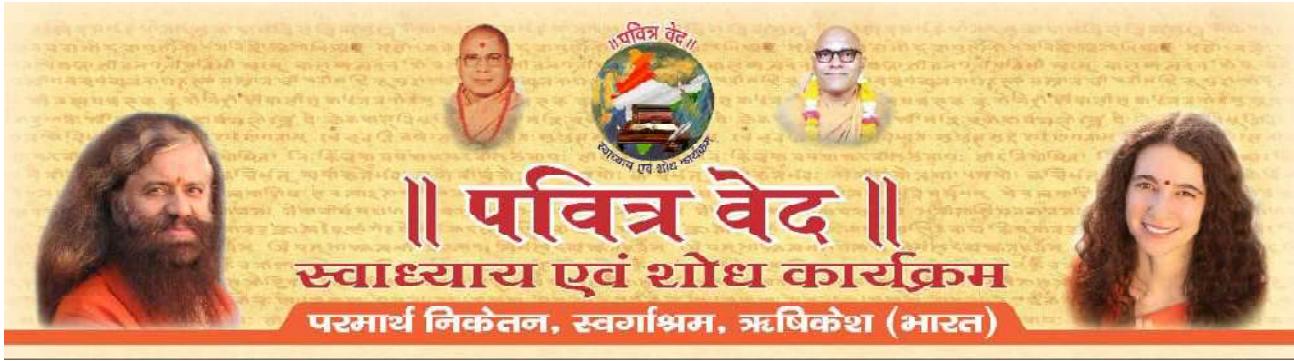
Once, we believe that the God is the 4th state of our life i.e. beyond body, mind and soul or gross, subtle and causal body, then in order to realise Him, we must also rise above the three levels and reach the level of turiya, where there is nothing good or bad, nothing lost or gained, no ego or desires.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.11

Ashvinaa pibatam madhu didhyagni shuchivrataa.

Ritunaa yajnavaahasaa.

(Ashvinaa) The pair of two, body and mind, praana and apaana, God and soul (pibatam) drink (madhu) the sweet rewards of actions (didhyagni) for enlightenment (shuchivrataa) for purification (Ritunaa) as per season, properly (yajnavaahasaa) holder of sacrifices.

Elucidation

How can we manage the circle of sacrifices, purification, enlightenment and realisation?

Ashvinaa, the pair of two, drinks the sweet rewards of actions properly on time because this pair is the holder of all sacrifices. The result of such sacrifices is for enlightenment and purification.

Once realising that the God is the Giver of rewards of our actions, one must keep a watch on each and every moment of his life to perform all pure, pious and sacrificing acts. Only then our body and mind would be able to drink the sweet results of their acts. Only then our body and mind would be able to drink the sweet results of their acts for further enlightenment and purification. Our life would become a circle of sacrifices, purification and enlightenment i.e. realisation. Thus, the core principle is God, the Giver of rewards of our actions. Believe it to make your life pure.

Practical Utility in life

Why are people punished for their wrongs and rewarded for their noble acts in the society?

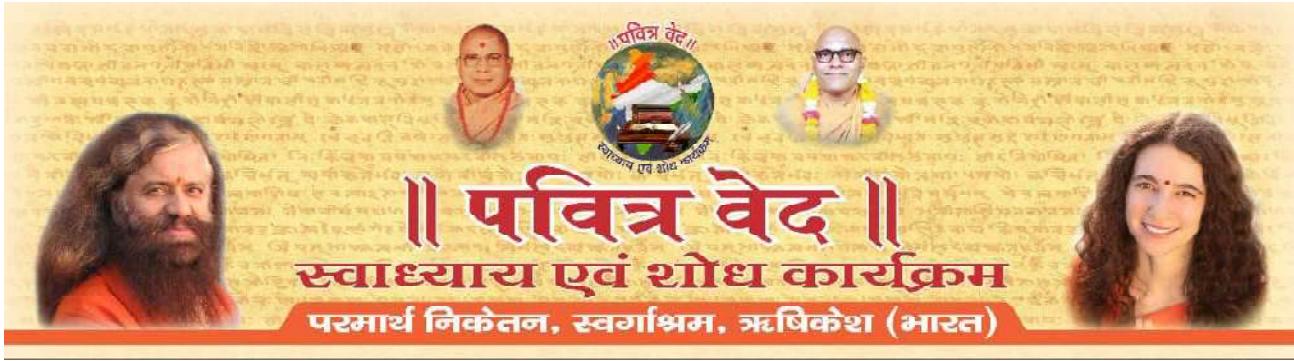
Generally in our families and the society at large, our parents, elders, superiors and governments are the givers of rewards of our actions. One is chastised and punished for his wrongs, praised and rewarded for his good and noble acts. Purpose of this practice is purification and enlightenment, so that everyone is restrained from doing bad and encouraged for doing good. Rules and laws at all levels are framed to ensure the purification and enlightenment.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.15.12

Gaarhapatyena santya ritunaa yajnanirasi.
Devaan devayate yaja.

(Gaarhapatyena) For the duties and behaviour in household life (santya) God, the Giver of all materials (ritunaa) as per season or time, properly (yajnanih) competent for sacrifices (asi) make us (devaan) divine qualities and features (devayate) for divinity seekers (yaja) enjoin

Elucidation

What does a noble householder pray to God?

A noble householder prays to God, who is the Giver of all materials, to make him competent for sacrifices. A noble householder is a divinity seeker also at spiritual level. Therefore, such a divinity seeker is enjoined with divine features automatically.

Practical Utility in life

How to achieve divinity?

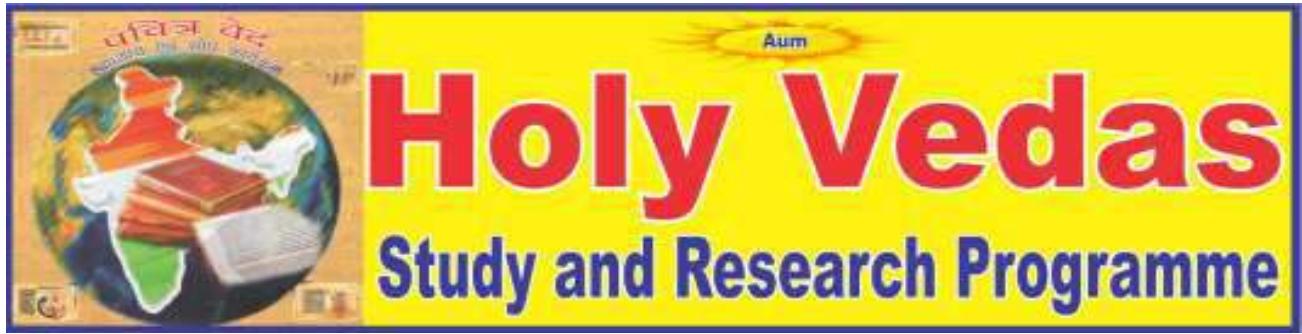
You wish divinity, you will get divine features. A continuous conscious thought of divinity will certainly make one divine. Conscious thought for divinity can be strengthened through regular and long meditation.

Vedas are the first, original and universal knowledge to the mankind.

Imbibing Vedic Wisdom is the foremost duty of every human-being.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS @ PARMARTH and

(3) Share Vedic Wisdom to the Maximum (Team Holy Vedas @ Parmarth - 8899466042)



Rigveda 1.44.1

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य ।

आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥

Agne vivasvadushashchitram raadho amartya.

Aa daashushe jaatavedo vahaa tvamadyaa devaan usharbudhah.

(Agne) The Supreme Energy, God (vivasvat) like self-illuminating (ushasah) brahma time (early morning) (chitram) astonishing consciousness (raadhah) wealth (amartya) non-dying (Aa - to be prefixed with vaha) (daashushe) sacrificing, donor (jaatavedah) knowledge of all that is born, created (vahaa - aa vaha) let us receive (tvam) You (adya) today (devaan) to divine people (usharbudhah) rising in the early morning brahma time.

Elucidation

What is the nature of Supreme Consciousness?

The Supreme Energy, God! You have the knowledge of all that is born or created. Please provide the astonishing consciousness, like self-illuminating knowledge, which is non-dying wealth, to those who rise early morning in the brahma time and are sacrificing. Let it be received by all such divine people today itself.

Practical Utility in life

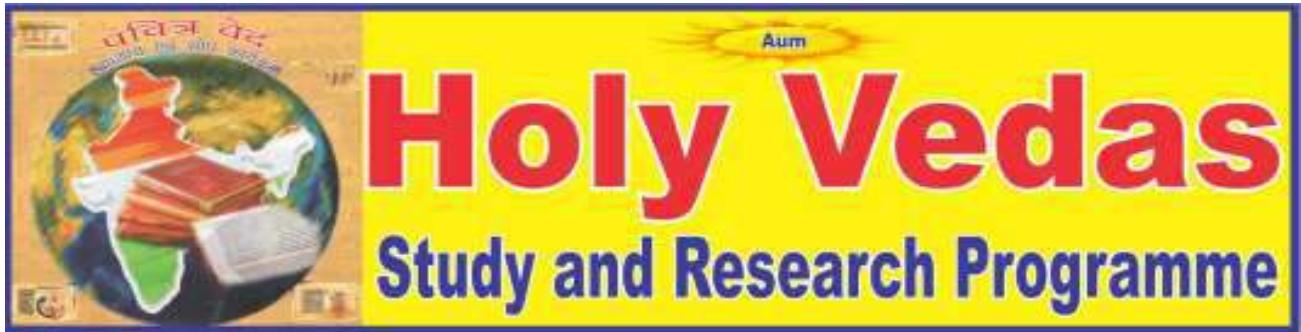
What are the benefits of rising in brahma time?

The consciousness provided by God is the great non-dying wealth like self-illuminating knowledge.

Only God has the Supreme knowledge of all that is born or created in this universe because every particle and every life is the manifestation of God.

God provides that divine consciousness to those :-

- (i) Who get up early in the morning at brahmavela.
- (ii) Who sacrifice every thing and live a desireless life.



Rigveda 1.44.2

जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनोऽग्ने रुथीरध्वराणाम् ।
सुजूरश्चिभ्यामुषसा सुवीर्यमुस्मे धौहि श्रवो बृहत् ॥

Jushto hi duto asi havyavaahanoagne ratheeradhvaraanaam.
Sajurashvi bhyaamushasaa suveeryamasme dhehi shravo brihat.

(Jushtah) Happy and loving (hi) certainly (dutah) messenger, destroyer of wicked enemy (asi) be (havya vaahanah) impeller of all substances and vehicles (agne) the Supreme Energy, God (ratheeh) charioteer (adhvaraanaam) non-violent sacrifices (Sajuh) with (ashvi bhyam) air and energy (ushasaa) morning, sun-rise (suveeryam) best energy (asme) for us, in us (dhehi) establish, give (shravah) worth hearing (brihat) big.

Elucidation

Who is competent to be messenger of God?

What does a divine messenger get from God?

Certainly a happy and loving person is competent to be Your messenger, the destroyer of wicked enemies. You, the Supreme Energy, God, is the impeller of all substances and vehicles being the charioteer of all non-violent sacrifices.

You join us with air and energy every morning at sun-rise. Please establish the best energy in us for big sacrifices worth hearing.

Practical Utility in life

What are the features required of a good messenger, a representative?

A messenger is a representative of some higher authority. We all are the messengers of our family, its traditions, our society and its customs, our respective establishments and some time our nation and its culture. It's our bounden duty to protect those higher authorities whom we represent. If we prove ourself to be a true representative, the higher authority would certainly provide us all necessary substances, vehicles and powers.

To be a good messenger and representative, we must ensure that :-

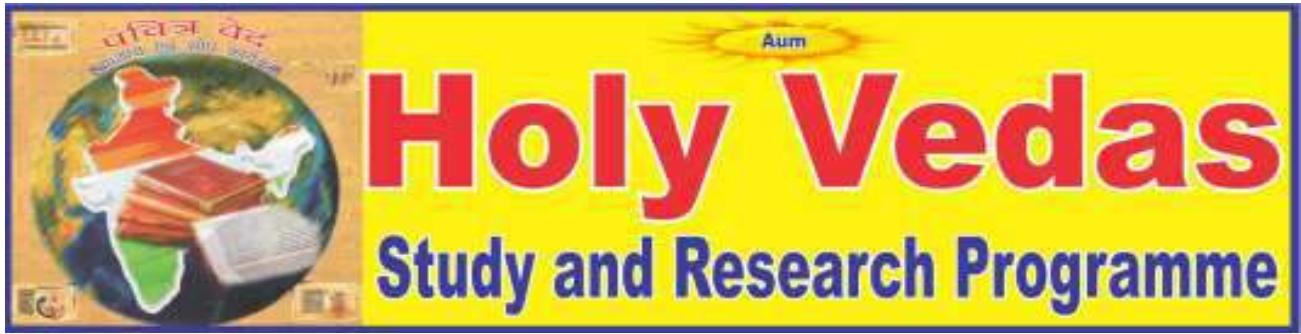
- (i) We are happy and loving.
- (ii) We are destroyer of enemies.

(iii) We start thinking and performing our duties with every sun-rise.

(1) Download TELEGRAM (2) Join HOLYVEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(iv) We are prepared for all big sacrifices worth hearing.

Contact for any query - Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171



Rigveda 1.44.3

अद्या दूतं वृणीमहे वसुमग्निं पुरुप्रियम् ।
धूमकेतुं भारीजीकं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम् ॥

Adyaa dutam vriniimahe vasumagnim purupriyam.

Dhumaketum bhaarijeekam vyushtishu yajnaanaam adhvarashriyam.

(Adya) Today (dutam) to that messenger (vrinneemahe) accept (vasum) house of (agnim) all fires (purupriyam) loving for all in the society (Dhuma ketum) whose glory is in the air like a flag (bhaari jeekam) light of desires (vyushtishu) among all desires (yajnaanaam) among all yajnas (adhvara shriyam) glory of non-violent yajnas i.e. sacrifices.

Elucidation

What are the features of a divine messenger?

Today, we accept that messenger, the representative, who is :-

- (A) *Vasum agnim* - the house of all fires.
- (B) *Purupriyam* - loving for all in the society.
- (C) *Dhuma ketum* - whose glory is in the air like a flag.
- (D) *Bhaari jeekam vyushtishu* - who is light of desires among all desires.
- (E) *Yajnaanaam adhvara shriyam* - who is the glory of non-violent yajnas i.e. sacrifices, among all yajnas.

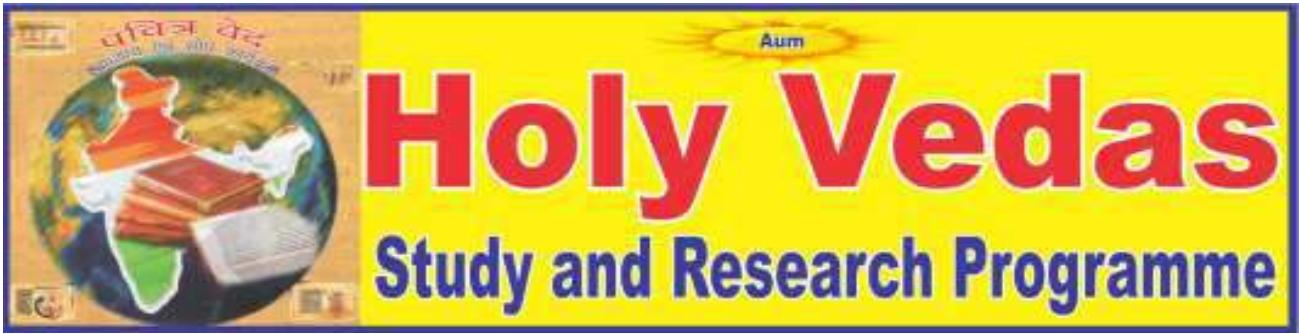
Practical Utility in life

Whom shall we elect as our representative?

In governing the nation, we need to elect our representatives. People who wish to lead the society and the nation must ensure that they possess and develop in them following special features :-

- (1)They must be energetic with vast knowledge concerning various aspects of the society. The people should derive inspirations to attain knowledge and energies from them.
- (2)They must be loving and caring for all alike without any discrimination. In return, they get deep love and respect from the people.
- (3)Their acts of welfare, love and sacrifices should be so great as to look like a Supreme Flag of their Nation.

(1) Download TELEGRAM (2) Join HOLYVEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhwani Yogacharya 9968357171)



Rigveda 1.44.4

श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं स्वाहुतं जुष्टं जनाय दाशुषे ।
देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसमुग्निमीले व्युष्टिषु ॥

Sreshtham yavishthamatithim svahutam jushtam janaaya daashushe.

Devaan achchha yaatave jaatavedasamagnimeele vyushtishu.

(Sreshtham) The best (yavishtham) most powerful (atithim) worthy of being served (svahutam) Provider of everything (jushtam) loving for (janaaya) for those men (daashushe) who sacrifice their everything (Devaan) for divine people (achchha) desire (yaatave) to receive (jaata vedasam) having knowledge of everything (agnim) God, Supreme Energy (eele) worship (vyushtishu) in special desires, in the beginning of the day.

Elucidation

Why do we worship God?

We worship God, the Supreme Energy, in our special desire, in the beginning of every day because He is *jaat vedasam*, having Supreme knowledge of everything.

We desire to receive divinity and divine people also who sacrifice everything for others.

God is also very loving for such people. God and such people are :-

- (i) *Sreshtham* - The best,
- (ii) *yavishtham* - most powerful,
- (iii) *atithim* - worthy of being served, and
- (iv) *svahutam* - Provider of everything.

In all, God loves a sacrificing person.

Practical Utility in life

Why shall we respect and glorify divine people?

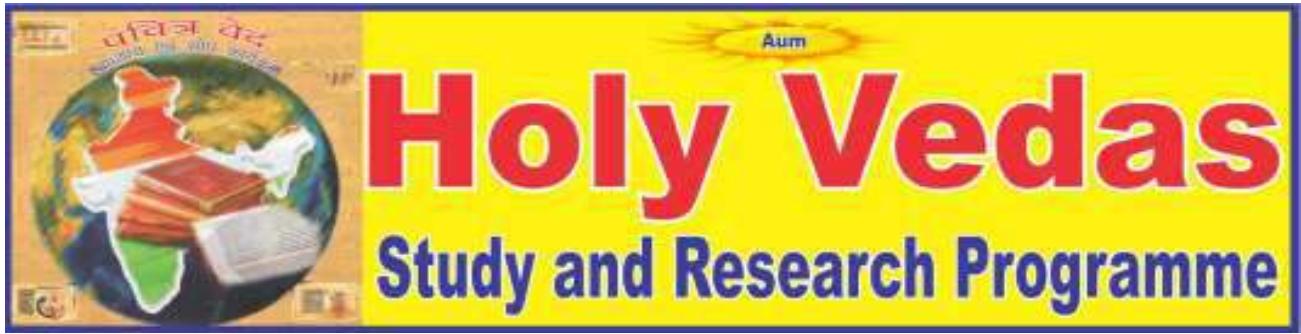
A divine riddle - We worship God for many reasons but God loves divine people just for one main reason, what is that?

We worship God for many reasons. But God loves divine people for one main reason i.e. their sacrificing life for others. Such divine people are always prepared to sacrifice everything without ego.

God and all divine people have four main similarities :-

- (i) *Sreshtham* - both are the best,
- (ii) *yavishtham* - both are most powerful,
- (iii) *atithim* - both are worthy of being served, and
- (iv) *svahutam* - both are the provider of everything.

That is why, we all worship and glorify God and such divine people as our special desire everyday to receive divine qualities and to protect ourselves from lustful desires.



Rigveda 1.44.5

स्तुविष्यामि त्वामुहं विश्वस्यामृतं भोजनं ।

अग्ने त्रातारम्‌मृतं मियेध्यं यजिष्ठं हव्यवाहनं ॥

Stavishyaami tvaamaham vishvasyaamrita bhojana.

Agne traataaram amritam miyedhya yajishtham havyavaahan.

(Stavishyaami) will glorify and worship (tvaam) You (aham) I (vishvasya) of all (amrita) non-dying, non-perishable (bhojana) food for sustenance (Agne) God, the Supreme Energy (traataaram) protector (amritam) making us non-dying by restraining us from running behind worldly desires (miyedhya) worthy of companionship (yajishtham) for performing yajnas i.e. sacrifices (havyavaahan) bringer of all objects for sacrifices.

Elucidation

Why do we worship and glorify God?

I will worship and glorify You, the Supreme Energy, God, for three reasons :-

(A) *Vishvasya amrita bhojana* - You are the Provider of non-dying, non-perishable food for sustenance of all.

(B) *Traataaram amritam* - You are our protector and make us non-dying by restraining us from running behind worldly desires.

(C) *Miyedhya yajishtham havyavaahan* - You are worthy of companionship for performing yajnas i.e. sacrifices, since, You are the only Provider of all objects for all such yajnas.

Practical Utility in life

What are the features of a person who performs yajna i.e. sacrifices?

How to ensure the three features of yajna?

The three most important reasons everyone should perform yajna are :-

(i) Because God is the Provider of food to all for sustenance,

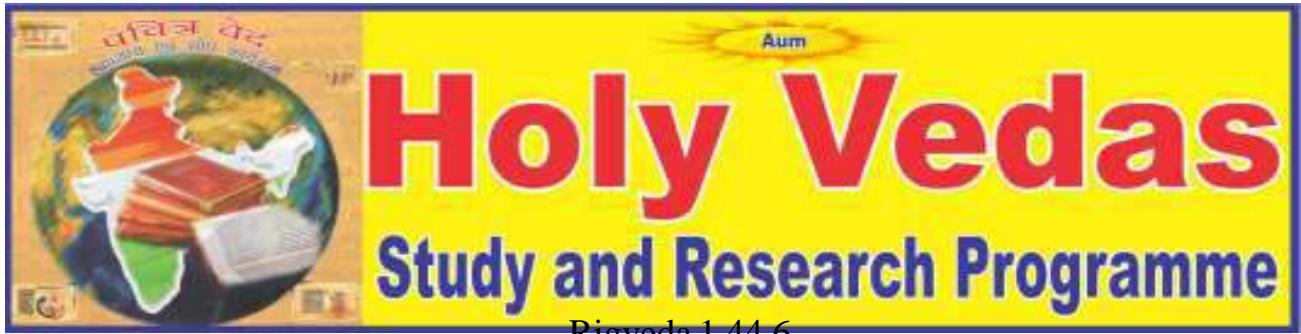
(ii) Because He is the Protector of all,

(iii) Because He is worthy of companionship for yajnas, as He provides us everything for yajnas.

These three reasons should be the target of our life also. God worship enables us to bear the features of God (in Jiva).

If we focus on this nature of God worship, we too will bear the following features :-

VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Contact for any query Vimal Wadhwani Yogacharya 9968357171



Rigveda 1.44.6

सुशंसो बोधि गृणते यविष्ठय मधुजिह्वः स्वाहुतः ।
प्रस्कृष्ट्वस्य प्रतिरन्नायुर्जीवसे नमस्या दैव्यं जनम् ॥

Sushamso bodhi grinnate yavishthaya madhujihvah svaahutah.

Praskanvasya pratirannayurjeevase namasyaa daivyam janam.

(Sushamsah) Best glorified (bodhi) enlightenment (grinnate) for those glorifying You and the truth (yavishthaya) most powerful to defeat evils (madhujihvah) honey tongued (svaahutah) best oblations (for yajnas) (Praskanvasya) great intellectual (pratiran) power to overcome pains and sufferings (ayuh) age (jeevase) for life (namasyaa) let me offer my salutations (daivyam) to the divine (janam) lives.

Elucidation

What are the benefits of glorifying God?

The Supreme Energy, God, is the best glorified and most powerful to defeat enemies. He ensures the following special features in those who glorify Him and follow Him in truth :-

- (A) *Bodhi* - enlightenment,
- (B) *Madhujihvah* - honey tongued,
- (C) *Svaahutah* - best oblations (for yajnas),
- (D) *Praskanvasya pratiran ayuh jeevase* - In such great intellectuals, He gives power to overcome pains and sufferings i.e. healthy age for life.

Let's offer our salutations to God and such divine lives - *namasyaa daivyam janam*.

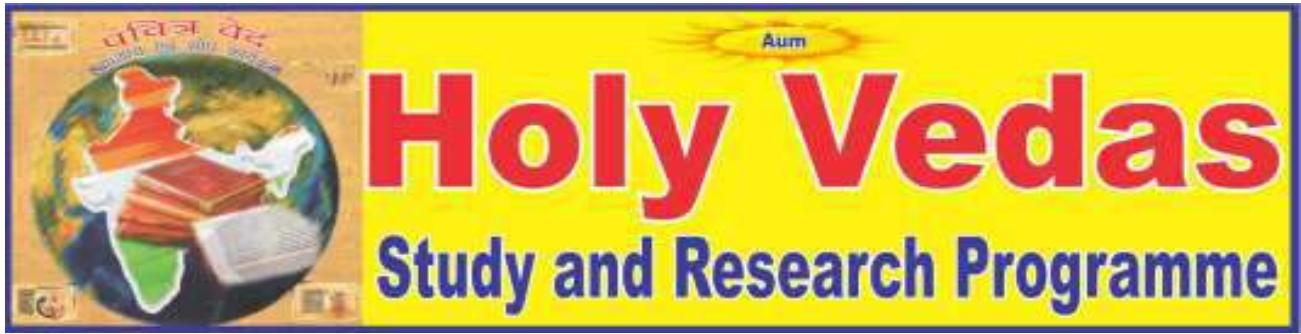
Practical Utility in life

What are the benefits of respecting and following seniors?

In our household or social life, everyone must establish a deep serious connectivity with elders, seniors and superiors. They should be respected, glorified and followed obediently to acquire following benefits :-

- (1) Enlightenment with their knowledge. Glorified seniors shower all their knowledge on the devoted and disciplined juniors.
- (2) Divine connectivity with elders makes us sweet tongued.
- (3) We get ready for all sacrifices because we know that our seniors will reward us appropriately.
- (4) Glorified seniors empower such juniors to bear all pains and sufferings because they become farsighted like seniors.

All such people who glorify, respect and follow seniors are always respected and gain progress in every establishment.



Rigveda 1.44.7

होतारं विश्ववेदसुं सं हि त्वा विशा इन्धते।
स आ वहं पुरुहत् प्रचेतुसोऽग्ने देवां इह द्रवत् ॥

Hotaaram vishvavedasam sam hi tvaa visha indhate.

sa aa vaha puruhuta prachetasoagne devaan iha dravat.

(Hotaaram - Giver of materials for sacrifice (vishva vedasam - having knowledge of all (sam - to be prefixed with indhate) (hi) certainly (tvaa) You (vishah) all subjects (indhate- sam indhate) established and enlighten us in hearts (sah) He (God) (aa vaha) be received (puruhuta) called by many (prachetah) having enlightened consciousness (agne) Supreme Energy, God (devaan) divine (iha) here, in this life (dravat) soon.

Elucidation

Who can realise God?

The Giver of all materials for sacrifices and having knowledge of all, You are certainly established and enlighten in the hearts of all subjects. He is called by many and is received i.e. realised soon by those divine people having enlightened consciousness.

Practical Utility in life

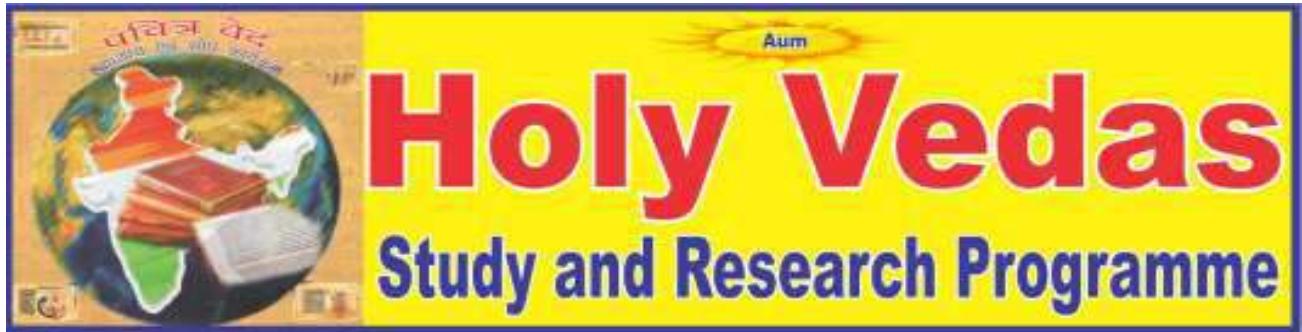
What are we searching in our life?

God is established in all but is realised only by those divine people who have enlightened consciousness.

Enlightened consciousness is above our mindfulness for worldly materials. It's about non-material power of this universe. It's about God and that is why it is divine. One who focusses his mind on God, the Supreme Energy, certainly gains enlightened consciousness and realises Him.

That is why spirituality seekers are always in search of such divine people so that they may also gain a guidance to gain higher consciousness and proceed on a path to connect God. Vision, touch or speech of such divine people is always inspiring.

Similarly, in worldly life too, we should maintain a devotional connectivity with elders and superiors to ensure our upliftment in the best way. If we are able to have the company of such great souls, kind and supporting hearts in the form of our elders and superiors, our progress is certain.



Rigveda 1.44.8

सुवितारमुषसमश्विना भगमग्निं व्युष्टिषु क्षणः ।

कण्वासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर ॥

Savitaram ushasam ashvinaa bhagamagnim vyushtishu kshapah.

Kanvaasastvaa sutasomaasa indhate havyavaaham svadhvara.

(Savitaram) To Sun (ushasam) to light (ashvinaa) both (air and water) (bhagam) to comforts (agnim) to energy (vyushtishu) in desires, in day (kshapah) in night (Kanvaasah) great intellectuals (tvaa) Your (suta somaasah) producing best features, intellect in himself (indhate) lit in them, luminate in them (havya vaaham) Giver of objects for sacrifices (svadhvara) offering themselves for sacrifices.

Elucidation

What does God provide us?

What is our spiritual duty?

What is the principal spiritual purpose of life?

God! You are the Giver of all objects for sacrifices and You give success in all faultless sacrifices. People following that Supreme Giver, offer themselves for sacrifices.

Your great intellectuals, Your lovers, luminate themselves with best features, intellect and keep in their desires both the divine powers of Sun i.e. it's light and energy, for their comforts day and night.

This verse inspires us to keep in mind that the principal and spiritual purpose of life is to perform sacrifices.

Practical Utility in life

What do our parents do for us?

What are our duties in worldly life?

What is the principal purpose of worldly life?

Just like God, our parents, superiors and guides etc. perform two important duties in our life :-

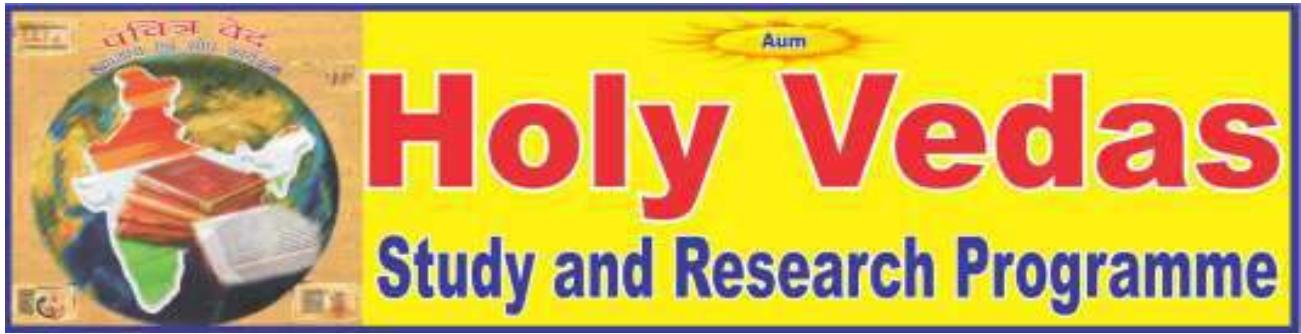
- (A) They give us all material things for our comforts.
- (B) They bless us spiritually for success at every step.

With this background, it is our duty :-

- (A) To illuminate our heart and mind with all best traits and intellect.
- (B) To maintain energy and light of spirit in us every moment for our peaceful and balanced life. This should be considered as the principal purpose of worldly life. With these features and intellect, we can earn a good name for ourself as well as for our seniors and parents.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query - Vimal Wadhwani Yogacharya 9968357171)



Rigveda 1.44.9

पतिर्ह्याध्वराणामग्ने दूतो विशामसि ।
उषबुध्य आ वह सोमपीतये देवाँ अद्य स्वर्दृशः ॥
Patirhyadhvaraanaamagne duto vishaamasi.
Usharbudha aa vaha somapeetaye devaan adya svardrishah.

(Patih) Sustainer, Protector (adhvaraanaam) of non-violent sacrifices (agne) Supreme Energy, God (dutah) messenger (vishaam) of all living beings (asi) is (Usharbudhah) morning riser (aa vaha) be received (soma peetaye) consuming, holding divine features/traits (devaan) to divine people (adya) today (svah drishah) self-seeker, self-realisation.

Elucidation

How to achieve success on spiritual path?

The Supreme Energy, God, is the sustainer, protector of all non-violent sacrifices i.e. pure in deed. He is the messenger for all living beings.

Morning risers receive that Brahma by consuming and holding divine features. For such divine people He becomes the ultimate target of self-seeking or self-realisation, equivalent to God-realisation immediately.

Practical Utility in life

How to achieve success in worldly life?

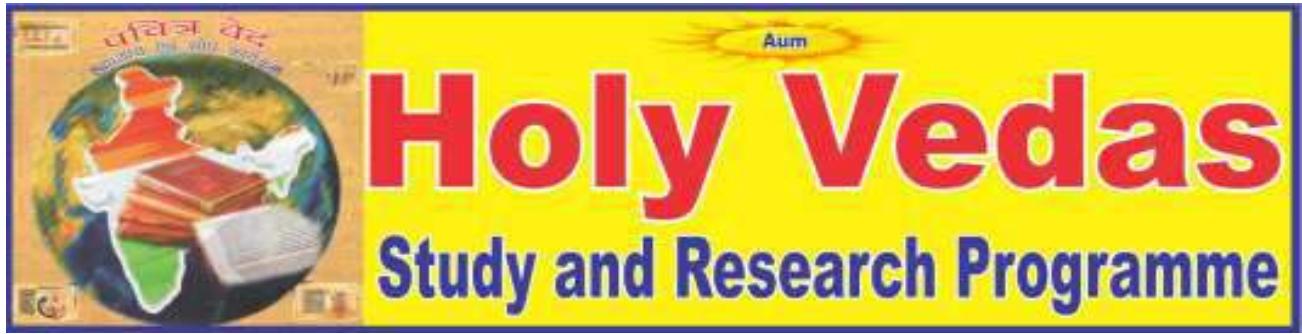
God is to be realised and received as our self, within our own self. The clear path to attain that level is to acquire divinity in life. Divinity is received by morning risers through meditative practices and by performing pure sacrificing acts.

- (i) Sacrifices (pure in body i.e. egoless state)
- (ii) Meditative life (pure in mind i.e. desireless state)

Sacrifices and Meditative life leads to Divinity.

Divinity leads to self-realisation i.e. God-realisation.

The ratio derived from this path of God-realisation is applicable in worldly achievements also. Sacrifice all your efforts for the principal target before you and concentrate fully after giving an input of deep knowledge required. Deep knowledge and tireless efforts can fetch success in any field.



Rigveda 1.44.10

अग्ने पूर्वा अनुषसों विभावसो दीदेथं विश्वदर्शतः ।
असि ग्रामेष्वविता पुरोहितोऽसि यज्ञेषु मानुषः ॥

Agne purvaa anushaso vibhaavaso diidetha vishvadarshatah.
Asi graameshvavitaa puruhito asi yajneshu manushah.

(Agne) The Supreme Energy, God (purvaah) in the past (anu) follow (ushasah) in the present and future (vibhaavaso) Rainer of special light (deedetha) know well (vishva darshatah) sees the whole universe (Asi) is (graameshu) all habitats (avitaa) protector (puruhitah) doing welfare of the whole universe (asi) is (yajneshu) in sacrifices (maanushah) of men.

Elucidation

How does God ensure welfare of all?

The Supreme Energy, God, is the Rainer of special light since past and in the present also.

We must know that He is competent to know the whole world.

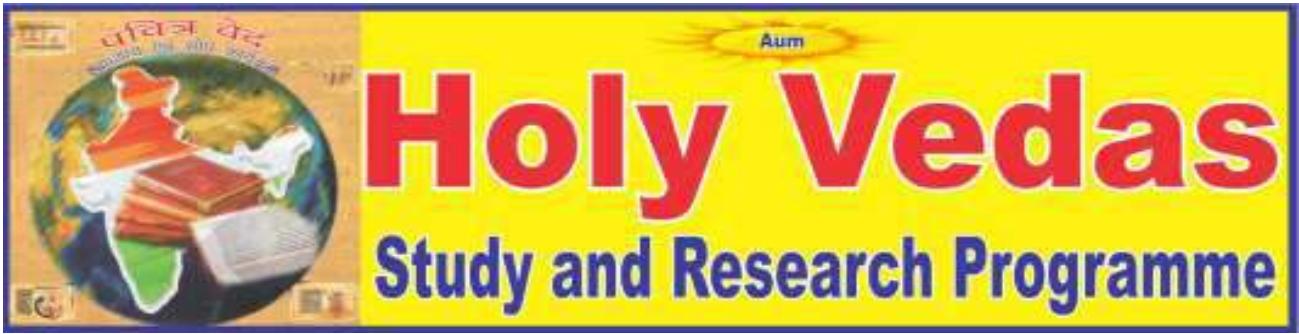
He is the Protector of all habitats.

He does welfare of the universe through sacrifices i.e. yajnas, of great men.

Practical Utility in life

How should a leader ensure welfare of all?

Following the supreme rule of God, every head of family, establishment and that of the nation should perform sacrifices to set an example for all followers to follow the deeds of sacrifices. This rule of sacrifices only can ensure welfare of all. Politics of modern age is plundering wealth, whereas the Vedic wisdom inspires all politicians to follow the path of sacrifices for the welfare of all. Only thus rule can establish the rulers also in the hearts and minds of the people.



Rigveda 1.44.11

नि त्वा युजस्य साधनमग्ने होतारमृत्विजम् ।
मनुष्वद्देव धीमहि प्रचेतसं जीरं दृतममर्त्यम् ॥

Ni tvaa yajnasya saadhanamagne hotaaramritvijam.

Manushvad deva dheemahi prachetasam jiiram dutamamartyam.

(Ni - to be prefixed with dheemahi) (tvaa) Your (yajnasya) for sacrifices (saadhanam) means to materialise sacrifices (agne) Supreme Energy, God (hotaaram) Provider of all materials (for yajna) (ritvijam) liable to be worshipped (in yajna) (Manushya vat) like real human beings (iva) like (dheemahi - ni dheemahi) continuously hold (prachetasam) having enlightened knowledge (jeeram) weakening our evils, having speed (dutam) messenger of all knowledge (amartyam) non-dying.

Elucidation

How does God help in yajnas?

The Supreme Energy, God! like a real human being, we continuously hold You as means to materialise Your yajnas i.e. sacrifices.

- (1) You are hotaaram - Provider of all materials for sacrifices.
- (2) You are ritvijam - liable to be worshipped in yajna all sacrifices.
- (3) You are prachetasam - the only power having enlightened supreme knowledge.
- (4) You are jeeram - the power to weaken our evils.
- (5) You are dutam - the messenger of all knowledge.
- (6) You are amartyam - the only one non-dying force.

All these attributes of God are imbibed by sacrificing persons and in return they are helped by God in sacrifices.

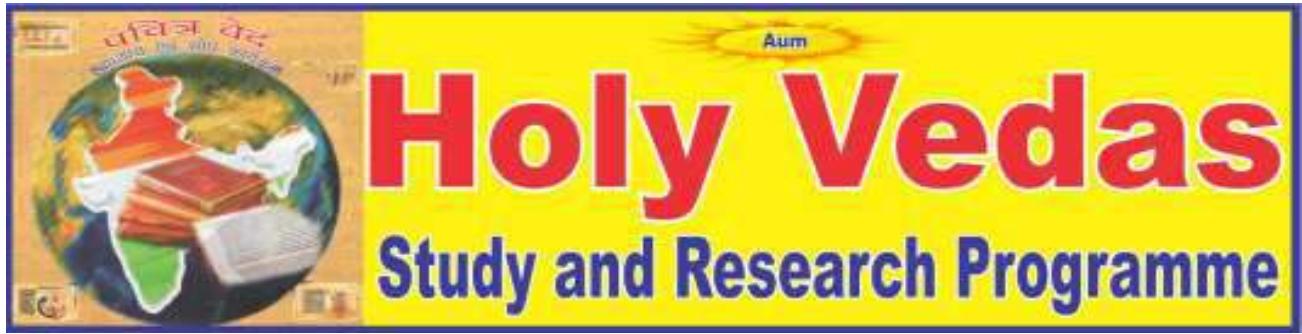
Practical Utility in life

Who is a real human being?

Who gains great respect and love from the society?

God is sustaining this universe only through sacrifices and the people performing sacrifices are real human beings. Therefore, only such persons enjoy a closeness and realise a unity with God.

Similarly, a person performing sacrifices in family and society gains a great respect and love from the society.



Rigveda 1.44.12

यद्वेवाना॑ मित्रमहः पुरोहितो ऽन्तरो यासि दुत्यम् ।
सिन्धोरिवु॒ प्रस्वनितास ऊर्मयो॒ ऋग्रेभाजन्ते अुर्चयः ॥

Yad devaanaam mitramahah purohito antaro yaasi dutyam.
Sindhori va prasvanitaasa urmaya agnerbhrajante archayah.

(Yat) when, Those (devaanaam) of divine intellectuals (mitramahah) Supreme friend (purohitah) doing welfare of all (antarah) established in internal space (heart) (yaasi) is received (dutyam) as a messenger, behaviour of a messenger (Sindhori va) like sea (prasvanitaasa) making sound (urmayah) waves (agneh) lives of divine people (bhrajante) shine (archayah) rays of knowledge.

Elucidation

In whose heart God is established?

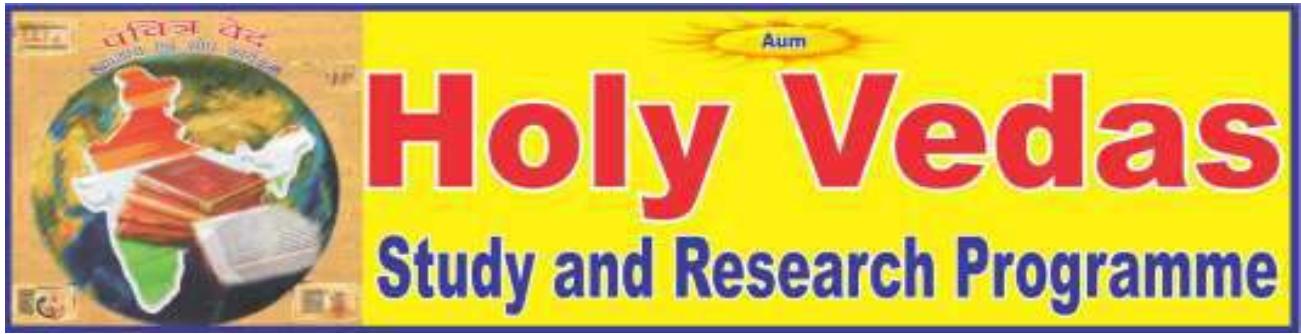
How do divine people look like?

When the Supreme Friend of divine intellectuals, who perform sacrifices for the welfare of others, is established in their hearts, He is received and appears in such people as a divine messenger. Life of such divine people shines in the form of rays of knowledge like waves of sea appear making sound.

Practical Utility in life

Who gains inspirational fame and glory?

People who sacrifice their interests are considered as divine people because God is established in their hearts. Their sacrifices become the talk of the society and speak by itself and is received by the society as a great and divine inspiration with deep heart touching applause. They shine in divine way because in them shines the rays of divinity. Therefore, only total and pure sacrifices result in divine knowledge and become the cause of inspirational fame and glory.



Rigveda 1.44.13

श्रुधि श्रुत्कर्णं वह्निभिर्द्वैरग्ने सुयावभिः ।
आ सीदन्तु ब्रह्मिषि मित्रो अर्युमा प्रातुर्यावाणो अध्वरम ॥

Shrudhi shrutkarna vahnibhirdevairagne sayaavabhih.

Aa seedantu barhishi mitro aryamaa praataryavaano adhvaram.

(Shrudhi) Listen (shrutkarna) competent to listen (vahnibhih) competent to provide salvation, truthful state (devaih) divine (agne) Supreme Energy, God (sayaavabhih) together (equally one with another) (Aa seedantu) to be received, established (barhishi) in heart space (mitrah) dear and beneficial (aryamaa) judicious mind (praataryavaanah) active everyday (adhvaram) faultless, non-violent sacrifices.

Elucidation

Who is competent to listen our prayers?

Whom does He listen?

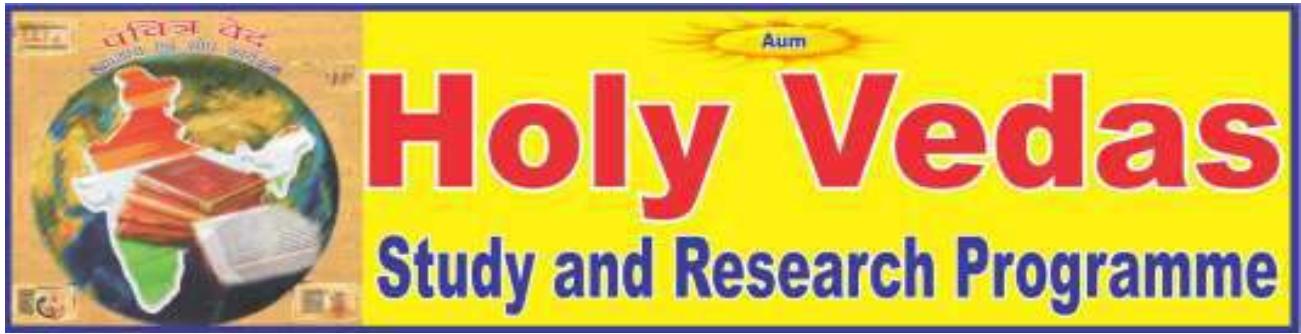
Only the Divine Supreme Energy, God, can listen our prayers because only He is competent to listen; competent to provide salvation i.e. truthful state; competent to be received and to be established in our heart space because He is one with all; he is dear and beneficial to all; He is judicious mind and the Supreme donor.

He listens only those who are active everyday since morning in their faultless, non-violent sacrifices.

Practical Utility in life

Who gains high status with deep hearted respect from all?

Our life should be engaged all throughout in pure faultless and non-violent sacrifices. Such a life would be egoless and desireless state of mind. The whole society including our parents and superiors, certainly like such egoless and beneficial persons and extend all help to such persons. Society is bound to accept egoless and beneficial contributions. With such a background, we can gain very high status in the society and deep hearted respect from all around.



Rigveda 1.44.14

शृण्वन्तु स्तोमं मुरुतः सुदानवोऽग्निजिहा ऋतावृधः ।
पिबतु सोमं वरुणो धृतव्रतोऽ शिवभ्यामुषसा सुजूः ॥

Shranvantu stomam marutah sudaanavah agnijivha ritaavridhah.

Pibatu somam varuno dhritavrato ashvibhyamushasa sajuh. RV Eng 1.44.RV Eng 1.44.

(Shranvantu) Listen (stomam) glories, light of knowledge (marutah) active in body and mind (sudaanavah) best donors (agni jivhaah) tongue of divine knowledge (ritaavridhah) promoting truth and best deeds (Pibatu) drink (somam) virtues (varunah) friend of all (dhrita vratah) holding best vows (ashvibhyam) with both the ashvinaas i.e. pranas (ushasa sajuh) with morning Sun rays.

Elucidation

Who is eligible to listen the glories of God?

What is the result of listening glories of God?

One, who listens the glories of God or His light of knowledge, attains following features :-

(A) *Marutah* - He becomes active in body and mind.

(B) *Sudaanavah* - He becomes the best donor.

(C) *Agni jivhaah* - He gains the tongue of divine knowledge.

(D) *Ritaavridhah* - He promotes truth and best deeds.

To make ourself competent to listen the glories of God, we must possess following eligibility features :-

(1) *Pibatu somam* - We must drink and imbibe virtues in life.

(2) *Varunah* - We must behave like a friend of all.

(3) *Dhrita vratah ashvibhyam ushasa sajuh* - We must hold best vows with both the ashvinaas i.e. pranas with morning Sun rays.

Practical Utility in life

What are the divine features?

How to achieve divine features?

One, who holds three features in life, as a precondition, gains four features naturally as a result. Three basic features are :-

(i) Imbibe virtues,

(ii) Be the friend of all,

(iii) Always hold best vows.

Four divine results are :-

(i) He is always active in body and mind and never attracts diseases.

(ii) He becomes the best donor in society. He distribute not simply material things but great knowledge and blessings also.

(iii) He holds the tongue of divine knowledge. He speaks truth and his advices get due regard in the society.

(iv) He promotes truth, virtues and best sacrifices in the society.



Rigveda 1.45.2

शृष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः ।

तान् रोहिदश्व गिर्वणुस्त्रयस्त्रिंशतुमा वह ॥ २ ॥

Srushtivaano hi daashushe devaa agne vichetasah.

Taan rohidashva girvanastrayastrimshatamaa vaha.

(Srushtivaanah) Knowing the reality of the universe (hi) certainly (daashushe) best donor and sacrificing person (devaaah) divine people (agne) the Supreme Energy, God (vichetasah) special consciousness (Taan) those (rohidashva) always progressing and pervading everywhere, helping in strengthening our sense organs (girvanah) praised by special speeches (trayas trimshatam) thirty three divine qualities (aavaha) let it be received by us.

Elucidation

What does one receive after knowing the reality of the universe?

What does one become after attaining divinity?

Srushtivaanah hi daashushe - One knowing the reality of the universe is certainly the best donor and sacrificing person.

Devaah agne vichetasah - the Supreme Energy, God makes the divine people shine with special consciousness.

God is always progressing and pervading everywhere, helping all in strengthening sense organs. Therefore, He is praised by special speeches. He only enables all the *Srushtivaanah* (knowing the reality of the universe) and *Devaah* (divine people) to receive thirty three divine qualities.

Practical Utility in life

What is the reality of the universe?

What is special consciousness?

The reality of this universe is the Supreme Energy, God, that manifested Himself in innumerable forms and designs called creation inclusive of all living beings and non-living things. Instead of directing our minds to focus on realising a unity with the Creator, normally human minds are engaged in enjoying the creation. Once a person deeply understands this reality of the universe, he would certainly attach himself with the Creator to enjoy the blissful state and would detach himself from this creation. Thus, he would become the best donor and sacrificing person.



Rigveda 1.45.3

प्रियमेधवदत्रिवज्जातवैदो विरुपवत् ।
अङ्गिरस्वन्महिव्रतु प्रस्कन्वस्य श्रुधी हवम् ॥

Priyamedhavad atrivaj jaatavedo virupavat.

Angirasvanmahivrata praskanvasya shrudhi havam.

(Priyamedhavat) Loving and desiring divine light of God (atrvat) undisturbed by the three types of pains and bondages (sex, anger and greed) (jaatavedah) all knowledgeable, God (virupavat) having many skills, glorious face (Angirasvat) having balanced state of health (body, mind and soul) (mahivrata) having great vows (praskanvasya) of such a great intellectual (shrudhi) listens (havam) call, prayer.

Elucidation

Whose prayers God listens?

The all knowledgeable, God, listens the calls and prayers of all such great intellectuals who has following features :-

- (A) *Priyamedhavat* - Loving and desiring divine light of God,
- (B) *Atrivat* - undisturbed by the three types of pains and bondages (sex, anger and greed),
- (C) *Virupavat* - having many skills, glorious face,
- (D) *Angirasvat* - having balanced state of health (body, mind and soul),
- (E) *Mahivrata* - having great vows.

Practical Utility in life

Whose calls and prayers all people listen?

In worldly materialistic life also we must have following features to establish ourself as one whose calls and prayers are listened by seniors and juniors all :-

- (1) We must always be hungry for knowledge, ready to receive and gather knowledge from all sources.
- (2) We must live a life free from all troubles and tribulations. We should never be negative and complainant in any smallest uncomfortable situation.
- (3) We should be multi-talented, competent to handle maximum situations.
- (4) We must have a balanced state of complete health.
- (5) We must adopt and hold great vows in our life concerning general welfare of others.



Rigveda 1.45.4

महिकेरव ऊतये प्रियमेधा अहूषत ।

राजन्त्मध्युराणामुग्नि शुक्रेण शोचिषां ॥

Mahikerava utaye priyamedhaa ahushata.

Raajantam adhvvaraanaam agnim shukrena shochishaa.

(Mahikeravah) beautifully doing best work (utaye) for protection (priyamedhaa) loving the best and divine intellect (ahushata) call, pray (Raajantam) shinning, glorious (adhvaraanaam) non-violent sacrifices (agnim) Supreme Energy, God (shukrena) pious, enlightened (shochishaa) pure, honest.

Elucidation

Who ensures the presence of God in his acts?

Those who perform the best work beautifully and love the best and divine intellect, call and pray to the Supreme Energy, God, to protect their shinning and glorious non-violent sacrifices because they are pious, enlightened, honest in deed. Only such people have a spiritual right to seek the presence of God in their pure and divine sacrifices.

Practical Utility in life

What features shall we ensure in our acts to seek the blessings of God?

The Supreme Energy, God, honours the right of those performing pure and divine sacrifices. Just as Lord Rama was present in the divine yajna of rishis and saints at their call for protection; just as Lord Krishna was with Pandavas in their fight to save divine justice, similarly the Supreme Energy, God, blesses us in all our real pious and divine vows and efforts. We must ensure the following features in our activities to seek the blessings of God :-

- (1) Doing the best work with excellence,
- (2) Love for the best intellect,
- (3) Always perform duties with the sense of sacrifice,
- (4) Try to achieve the level of full enlightenment,
- (5) Maintain purity and honesty in conduct.



Rigveda 1.45.5

घृताहवन सन्त्येमा उ षु श्रुद्धी गिरः ।

याभिः कण्वस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा ॥

Ghritaahavana santyemaa u shu shrudhi girah.

Yaabhih kanvasya sunavo havante vase tvaa.

(Ghritaahava) Utilizing the best means for sacrifices (santya) for happiness and comforts (imaah) these (u) certainly (su) in the best way (shrudhi) listen (girah) speeches, prayers (Yaabhih) those speeches (kanvasya) of great intellectuals (sunavah) sons, disciples (havante) call, pray (avase) for protection (tvaa) You.

Elucidation

Whose speeches are listened by God?

Those who utilize the best means in sacrifices for the happiness and comforts of others, their speeches are certainly listened by God in the best way.

Speeches of sons and disciples of such great intellectuals are also listened by God as and when they call God for protection.

Practical Utility in life

What is the effect of divinity of the guru on the life of real followers?

If one performs real sacrifices, he gains a say in the divinity. Even their progenies i.e. sons, daughters or disciples also gain a say in the divinity, if they really follow the guru. Real followers constitute the family of the great and divine souls.



Rigveda 1.45.6

त्वां चित्रश्वस्तम् हवन्ते विक्षु जन्तवः ।
शोचिष्केशं पुरुप्रियाऽग्ने हव्याया वोक्लहवै ॥

Tvaam chirashravastama havante vikshu jantavah.

Shochishkesham purupriyaa agne havyaaya volhave.

(Tvaam) To You (chitra shravastama) Divine powerful manifestation worth listening, God (havante) accept, call (vikshu) pervading everywhere (jantavah) those born here (Shochishkesham) having divine pure rays of light of knowledge (puru priya) Loving for all (agnev) the Supreme Energy, God (havyaaya) for performing sacrifices (vodave) for gaining knowledge.

Elucidation

What are the features of God whom we call and accept?

What are the principal purposes of life?

All those born here call and accept You, the Supreme Energy, God, who has following features :-

- (A) *Chitra shravastama* - Divine powerful manifestation worth listening,
- (B) *Vikshu* - pervading everywhere,
- (C) *Shochishkesham* - having divine pure rays of light of knowledge,
- (D) *Puru priya* - Loving for all.

Therefore, we call You for the following two principal purposes :

- (i) for performing sacrifices,
- (ii) for gaining knowledge.

Practical Utility in life

What are the factors on which our association with others depends?

There are two principal purposes of life for realisation of close companionship with God.

Even in any walk of life, our association with others fellow beings depends upon two questions :-

- (i) How much sacrificing are we for others?
- (ii) How much deep knowledge and concern we have for the welfare of others?



Rigveda 1.45.7

नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तम् ।

श्रुत्कर्णं सुप्रथस्तम् विप्रा अग्ने दिविष्टिषु ॥

Ni tvaa hotaaram ritvijam dadhire vasuvittamam.

Shrutkarnam saprathastamam vipraa agne divishtishu.

(Ni) Certainly (tvaa) You (hotaaram) Provider of everything in this universe, God (ritvijam) liable to accompany all times, God (dadhire) holds (vasuvittamam) Provider of abode to all, God (Shrutkarnam) Listener of all prayers, God (saprathastamam) extremely spread all around, God (vipraah) great intellectuals (agne) the Supreme Energy, God (divi ishtishu) for divine purposes (of gaining Supreme Light of God).

Elucidation

What are the divine purposes, for which we hold God?

What are the divine attributes of God?

The great intellectuals hold You, the Supreme Energy, God, for the divine purpose (of gaining Supreme Light of God) because they know that You have the following attributes :-

- (A) *Hotaaram* - Provider of everything in this universe, God,
- (B) *Ritvijam* - liable to accompany all times, God,
- (C) *Vasuvittamam* - Provider of abode to all, God,
- (D) *Shrutkarnam* - Listener of all prayers, God,
- (E) *Saprathastamam* - Extremely spread all around, God.

All great intellectuals know that one who holds God, in turn God also holds him for all purposes.

Practical Utility in life

Why shall we respect and obey our elders?

Principles of spirituality apply to human and social relations also. You hold a respect for your elders and all givers and obey them. In turn, they will also extend their blessings and favours upon you. We must realise a truth that all elders and superiors are giver for us in one way or the other. After this realisation, certainly we will hold a great respect for such people in our life and in turn continue to receive their blessings and favours.



Rigveda 1.45.8

आ त्वा विप्रा॑ अचुच्यवुः सुतसोमा अभि॒ प्रयः॑ ।
बृहद्बा॒ विभ्रतो॑ हविरग्ने॑ मर्ताय॑ दाशुषे॑ ॥

Aa tvaa vipraa achuchyavuh sutasoma abhi prayah.

Brihad bhaa bibhrato haviragne martaaya daashushe.

(Aa tvaa) You (vipraa) great intellectuals (achuchyavuh) receive (sutasmā) for producing virtues (abhi) all times, all sides (prayah) food etc. (Brihad bhaah) vast knowledge (bibhratah) hold (havih) for offering in sacrifices, as oblations (agne) Supreme Energy, God (martaaya) dying men (daashushe) complete donor.

Elucidation

Why do great intellectuals realise God?

Why do we hold food and vast knowledge?

All great intellectuals receive You, the Supreme Energy, God, from all sides at all times for producing virtues and inspirations.

All those dying men, who are complete donors, hold food and vast knowledge for offering in sacrifices for others as oblations to the Supreme Energy, God.

Practical Utility in life

What are the two paths to be followed by human beings?

What is the difference and similarity between a spiritualist and a materialist?

The whole creation is the manifestation of God, the Supreme Divine Energy. There are two paths to be followed by the people - spiritual path to seek God and/or the materialistic path to pray for material comforts etc. Spiritualists focus on the Creator, whereas, the materialists focus on the creation i.e. materials.

Spiritualists seek the company of God. After realising unity with God, they produce many virtues and inspirations for the guidance of others. God loves such people.

Materialists seek materials for comforts like food, clothing, housing etc. and vast knowledge to use those materials. On this path they are expected to be complete donor realising that ultimately they will die leaving behind everything. They should offer their materials and knowledge as oblations in sacrifices for the welfare of others. God loves such people also.

Thus, both the types of people are loved by God. Spiritualists are in direct communion with God, whereas materialists indirectly proceed to realise unity with God after completing their duties i.e. karmas of sacrifices.



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

Rigveda 1.45.9

प्रातर्याव्नः सहस्रृतं सोमपेयाय सन्त्य ।
इहाद्य दैव्यं जनं बुर्हिरा सादया वसो ॥

Praataryaavnah sahaskrita somapeyaaya santya.
Ihaadya daivyam janam barhiraa saadaya vaso.

(Praataryaavnah) dedicated to the mission since morning (sahaskrita) brave, able to do his duties easily (somaapeyaaya) for imbibing and protecting virtues (santya) for happiness and comforts (Iha) here (adya) right now (daivyam janam) divine people (barhiih) in deep heart space (aa saadaya) be received (vaso) the abode of all.

Elucidation

Who are the divine people?

What is special for them?

People having following features are divine births :-

- (A) Praataryaavnah - They are dedicated to the mission since morning.
- (B) Sahaskrita - They are brave, able to do their duties easily.
- (C) Somapeyaaya - They imbibe and protect virtues.
- (D) Santya - They are always happy and comfortable.

Such people are assured that God, the abode of all, is specially received by them in deep heart space, here, in this life.

Practical Utility in life

Whether divine people are born divine or anyone can become divine?

It's a debatable question as to whether divine people are born divine or anyone can become divine by establishing in them the four features of divine life. The answer is positive both ways.

No doubt we see some great saints, brave spiritual warriors as born divine because divinity is seen in them from their childhood.

But it is equally true that such born divine people often become a source of deep inspiration for many others who follow the features of divinity. Thus, divinity can be inculcated also.

It's neither impossible nor very difficult to establish following features in our life to make it divine :-

- (1) By getting up early in the morning at Brahma vela and start focusing on our life and activities. God worship and welfare of mankind can certainly go together.
- (2) Once we focus on our life and activities since morning, chances of our winning over every situation become strong and we are considered brave.
- (3) With such a dedicated life, we must imbibe virtues. Such a life is respected by all.
- (4) Ultimately, we are able to make our life happy and comfortable and also to inspire others also how to be happy and comfortable in every situation.



Rigveda 1.45.10

अुर्वाज्चुं दैव्यं जनुमग्ने यक्ष्वा सहूतिभिः ।

अयं सोमः सुदानवृस्तं पात् तिरोअह्न्यम् ॥

Arvaancham daivyam janamagne yakshva sahutibhih.

Ayam somah sudaanavastam paata tiroahnyam.

(Arvaancham) Introspective, introvert (daivyam janam) divine people (agne) agne (yakshva) enjoin, connected (sahutibhih) similar in prayer (Ayam) this (somah) virtue (sudaanavah) best donors (tam) that (virtue) (paata) protected (tirah) absorb (ahanyam) pervade in life.

Elucidation

Whether all divine people are similar in prayers and are internally connected?

All divine people always introspect and are introvert. They have similar prayers. Therefore, they are internally connected to each other.

They are the best donors of this virtue. They observe and protect this virtue which is pervaded in their life.

Practical Utility in life

What is common in the prayers of all divine people?

How to live a divine life?

Divine people are similar in prayers because they don't pray for worldly materials, they don't pray for magnifying their ego. They neither have desires nor ego. Desires and ego are the basic factors to create differences and disputes. That is why all real divine people are one in prayer i.e. realisation of God.

In our family and social life also, we should focus on sacrifices to live a divine life free from differences, disputes and tensions. A sacrificing person is respected everywhere and becomes a real leader. He even sheds his ego as a doer, as he realises God as the actual doer.

Therefore, sacrifices, social nature and egoless personality are the three steps to uplift your life from a materialist household living to a divine universal living.



Rigveda 1.46.2

या दुस्मा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम् ।
धिया देवा वसुविदा॑ ॥

Yaa dasraa sindhumaataraa manotaraa rayinaam.
Dhiyaa devaa vasuvida.

(Yaa) Who (our pranas establishing first rays of rising Sun) (dasraa) destroyer of pains, diseases (sindhu maataraa) pervade in us with water bodies i.e. blood vessels (manotaraa) free the mind from desires (rayinnaam) splendid wealth (Dhiyaa) with intellectual deeds (devaa) gives (vasuvida) provider of nice abode.

Elucidation

What are the features of a divine pranic energy established in Brahmavela?

Pranas established, everyday with Brahmavela, the first rays of rising Sun, become decorated with following features :-

- (i) Dasraa - destroyer of pains, diseases.
- (ii) Sindhu maataraa - pervade in us with water bodies i.e. blood vessels.
- (iii) Manotaraa - free the mind from desires.
- (iv) Rayinaam dhiyaa devaa - giver of splendid wealth with intellectual deeds.
- (v) Vasuvida - provider of nice abode.

Practical Utility in life

What is the course of spiritual realisation of an early morning riser?

When pranas are present in a material body, it is called life. But that living body becomes a nice abode to realise the unity of soul and God only when his pranas glorify Brahmvela and are established in it. This is spiritual height of divine pranas.

Such a life force i.e. pranas become destroyer of all pains and diseases. First material benefit of such divine pranas is sound health. Scientific reason of this sound health is prevalence of the effect of divine rays of Sun all throughout the blood vessels in our body. Divine pranic energy results in the sound health of all body systems and organs.

At mental level, the divine pranas, because of the sternous practices of retention phases in pranayama, result in freedom of mind from unnecessary wordly material desires.

At third level, with that divine pranic energy the person gets enormous splendid wealth based on intellectual and pure deeds and further uses such wealth for the welfare of all. Thus, divine pranic energy results in multiple benefits - physical, mental, material and spiritual. On the basis of these benefits, he progresses towards spiritual realisation.



Rigveda 1.46.3

वृचन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि॑ विष्टपि॑।
यद्वां रथो विभिष्टात्॒॥

Vachyante vaam kakuhaaso jurnaayaamadhi vishtapi.

Yad vam ratho vibhishpataat.

(Vachyante) Speak (vaam) your (kakuhaasah) great glories (jurnaayaam) specially and entirely praised (adhi vishtapi) in high and deep space (Yat) when (vam) your (rathah) chariot (human body, vehicle) (vibhih) duly enjoined with the reins of senses (pataat) progresses.

Elucidation

Who can touch the height on spiritual path?

While maintaining complete control over our senses, when we progress in life, great glories and specially entire praises of God are spoken by us from our deep heart space. Such a life touches the heights in the form of self-realisation.

Practical Utility in life

What's the importance of desire-less and ego-less state in life?

When we successfully exercise control over our senses, we become desire-less in mind.

As a result of desire-less state, we speak glories of God and praise Him only for every act. This makes us ego-less also.

Ultimately our desire-less and ego-less state certainly pave way to spiritual realisation heights.

Desire-less means - I don't work for materials.

Ego-less means - I don't work but it's only God who works through this body.

Thus, we realise a unity with God.

In wordly social live also when we give up our selfish interests and work for collective missions of the family, organisation or society, we praise for the contribution of all and respect the head, our seniors and elders. Such features make us progress to touch the heights.



Rigveda 1.46.4

हविषा॑ जारो अपां पिप॑र्ति॒ पुरुर्नरा॑ ।
पिता॒ कुट॑स्य चर्षुणः॒ ॥

Havishaa jaaro apaam piparti papurirnaraa.
Pitaa kutasya charshanih.

(Havishaa) With oblations (jaarah) by evaporating (apaam) waters (piparti) protects and sustain (papurih) completely (naraa) people (Pitaa) protecting father (kutasya) illuminator of tortuous path (charshanih) Sun that shows.

Elucidation

What's the torturous path of Sun?

As a protecting father, Sun shows the torturous path of welfare. Sun evaporates water from water bodies of the earth, thereby make them suffer this torture. But the evaporated water is returned back as oblations for the complete protection and sustenance of all living beings.

Practical Utility in life

How is water cycle actually a cycle of sacrifice?

It's a popular belief that hands are burnt while performing yajna. All sacrifices involve some trouble. The use of solar heat to evaporate water from water bodies is torturous apparently, but actually it's both a science and a spirituality.

Scientifically, it's called water cycle.

Spiritually, it's cycle of sacrifices.

This cycle of sacrifices taught to us by Sun for the welfare of all beings should be taken as a principle of life. Whatever we receive by the grace of God must be used for the welfare of all, like water bodies.



Rigveda 1.46.5

आदारो वा॑ मतीनां नासत्या॒ मतवचसा॑ ।
पातं॑ सोमस्य॑ धृष्णुया॑ ॥

Aadaaro vaam mateenaam naasatyaa matavachasaa.
Paatam somasya dhrishnuyaa.

(Adaarah) To destroy enemies (vaam) Your (mateenaam) intellects (naasatyaa) no untruth (matavachasaa) speaking with great intellect (Paatam) for protection (somasya) great knowledge, virtues and purity (dhrishnuyaa) destroying enemies (like ego and desires).

Elucidation

What's the purpose of destroying our enemies?

What factors help in destroying the enemies of our intellect?

The purpose of destroying enemies of our intellect, both internal and external, desires and ego, is to protect our great knowledge, virtues, purity and devotion. Two factors are very helpful in destroying these enemies :-

- (i) Naasatyaa - no untruth. Be completely truthful.
- (ii) Matavachasaa - Always speak with great intellect.

Practical Utility in life

What are the effects of desires and ego?

What are the benefits of always speaking truth based on great intellect?

Desires and ego are known to be our biggest enemies.

Desires are our inner enemies. Fulfilled or unfulfilled, both are not good for our progress, social as well as spiritual. Fulfilled desires make us weak - Trishna na jeerna, vayam eva jeerna. On the other hand, unfulfilled desires make us frustrated.

Similarly, Ego is also our inner enemy projected outside. Successful or unsuccessful, ego always creates our enemies in the outside world also besides becoming a hurdle in our mental freedom.

If our ego is satisfied, by way of our self aggrandizement, others feel jealous of it.

If our ego is unsatisfied, our mind shows dis-satisfaction, develops anger and becomes a hurdle on our spiritual path.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Therefore, we must constantly try to destroy desires and ego.
(Contact for any query - Vinay Wadhawan Iyengacharya 9908357171)



Rigveda 1.46.6

या नुः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः ।
तामुस्मे रासाथामिषम् ॥

Yaa nah peeparadashvinaa jyotishmatee tamastirah.

Taamasme raasaathaamisham.

(Yaa) That (nah) us (peeparat) makes cross over (ashvinaa) both the pranas, Sun & moon, husband & wife (jyotishmatee) illuminating, enlightening intellect (tamah) darkness, ignorance, diseases, evils (tirah) keeps away (Taam) that (asme) for us (raasaathaam) make available (ishama) desires, efforts, intellect, food, bliss, comforts.

Elucidation

What are the different connotations of 'ishma'?

What kind of 'ishma' shall we have?

The word 'ishma' is very important in this verse because it has multiple connotations like desires, efforts, intellect, food, bliss and comforts etc. Based on these respective meanings, this verse conveys different inspirations.

We pray to God to provide us such an 'ishma' that has following features :-

- (i) Peeparat - that makes us cross over the path of life.
- (ii) Jyotishmatee - intellect that is illuminating, enlightening.
- (iii) Tamah tirah - that keeps away darkness, ignorance, diseases, evils etc. from our life.

Practical Utility in life

What are the features of a successful life?

A. If 'ishma' is taken as desires :-

- (i) Our desires should ensure that we cross-over the hurdles of life and never get trapped into the vicious circle of desires.
- (ii) Our desires should illuminate in us great intellect.
- (iii) Our desires should keep us away from darkness, ignorance, evils and diseases etc.

B. If 'ishma' is taken as efforts :-

- (i) Our efforts should ensure that we cross-over the hurdles of life and never get trapped into the vicious circle of efforts.
- (ii) Our efforts should illuminate in us great intellect.
- (iii) Our efforts should keep us away from darkness, ignorance, evils and diseases etc.

C. If 'ishma' is taken as food :-

(i) Our food should ensure that we cross-over the hurdles of life and never get trapped into the vicious circle of food.

(ii) Our food should illuminate in us great intellect.

(iii) Our food should keep us away from darkness, ignorance, evils and diseases etc.

D. If 'ishma' is taken as intellect :-

(i) Our intellect should ensure that we cross-over the hurdles of life and never get trapped into the vicious circle of intellect.

(ii) Our intellect should illuminate in us great intellect.

(iii) Our intellect should keep us away from darkness, ignorance, evils and diseases etc.

E. If 'ishma' is taken as comforts :-

(i) Our comforts should ensure that we cross-over the hurdles of life and never get trapped into the vicious circle of comforts.

(ii) Our comforts should illuminate in us great intellect.

(iii) Our comforts should keep us away from darkness, ignorance, evils and diseases etc.

In totality, every dimension of our life should always be helpful in crossing over the wordly ocean, by illuminating great and divine intellect in us and by keeping all evils and weaknesses away from us.

Only these three results can be termed as a successful life.



Rigveda 1.46.7

आ नौ नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे ।
युजाथामश्विना रथम् ॥

Aa no naavaa mateenaam yaatam paaraaya gantave.
Yunjaathaamashvinaa ratham.

(Aa - To be prefixed with yaatam) (nah) our (naavaa) sailing vessel (mateenaam) intellect (yaatam - aa yaatam) come in realisation (paaraaya) to cross over (gantave) the destination (Yunjaathaam) enjoin (ashvinaa) both the pranas (ratham) in the best chariot.

Elucidation

What are the two steps of creation of human life?

What are the purposes of human life?

The two steps of creation of human beings are :-

- (i) God enjoined both the pranas with this body chariot, and
- (ii) given the intellect as a sailing vessel.

The two-fold purposes of this human life are :-

- (i) To let the God come in realisation.
- (ii) To cross over the destination of this worldly sea i.e. salvation.

Practical Utility in life

What is the role of intellect in human life?

For worldly life activities or for a spiritual life, intellect is like a board, a sailing vessel, on which we have to cross over the worldly sea by ensuring God-realisation.

Out of this two-steps creation of human body, the first i.e. enjoining of pranas with body makes a simple life like other creatures, but the grant of intellect to human beings makes it a special life. With this special gift of God, called intellect, we can completely decorate this life in all walks of life.

Concentrating and Meditating to watch this intellect and to keep a control over its decisions and to ensure Vedic Wisdom to be followed by it can sharpen this intellect.

Keeping this intellect away from desires and ego are the ways to ensure a good progress on the path to God-realisation and ultimately achieving salvation.



Rigveda 1.46.8

अरित्रौ वां दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः ।
धिया युयुज्ञ इन्दवः ॥

Aritram vaam divasprithu teerthe sindhunaam rathah.
Dhiyaa yuyujra indavah.

(Aritram) Oar (for boat sailing) (vaam) of you (divah) of knowledge, intellect (prithu) broad (teerthe) to cross over (sindhunaam) to seas (rathah) the best chariot (Dhiyaa) intellect (yuyujre) enjoin (indavah) virtues.

Elucidation

What is the role of intellect in the journey of human life?

Further elaborating the role of intellect, it is stated in this verse that the intellect i.e. divine knowledge is your broad oar to cross over the seas. For this journey, we must enjoin virtues to this intellect and human body.

Practical Utility in life

Why shall we decorate our intellect with all virtues?

In human life, intellect has a very important role in sailing the boat of human body because the intellect is like an oar. For the successful journey in any walk of human life, we must enjoin, rather decorate, our intellect with all great and noble virtues to make it divine.

Without virtues, if we get success, it would be temporary and rather disturbing ultimately. It would be a fraud upon our own life. Kaliyuga is rampant with such frauds i.e. lives without virtues.

We must live like a lotus flower in muddy water. Only a life full of virtues can ensure successful crossing over the worldly sea. Only virtues and divine intellect can lead to self-realisation and God-realisation.



Rigveda 1.46.9

दिवस्कण्वासु इन्दवो वसु सिन्धूनां पुदे ।

स्वं वृत्रिं कुहं धित्सथः ॥

Divaskanvaasa indavo vasu sindhunaam pade.

Svam vavrim kuha dhitsathah.

(Divah) Enlightened, knowledge (kanvaasah) great intellectuals collecting knowledge step by step (indavah) strengthened with divine virtues (vasu) wealth (sindhunaam) with sea of knowledge (pade) in their feet (Svam) own (vavrim) liable to be adopted, held (destination) (kuha) where and when (dhitsathah) wish to hold, establish.

Elucidation

Why are the great intellectuals called 'kanvasah'?

Where and when do you wish to hold and establish yourself in the feet of vast sea of knowledge who are great intellectuals collecting step by step knowledge, strengthened with divine virtues?

You have to decide whether you wish to make yourself liable to be adopted, held by your own fixed destinations or to achieve the wealth of divine knowledge from them.

Practical Utility in life

What are the two options of knowledge before every human being?

Every human being has two options - first, to establish his own destination in the world, like acquiring a high professional life, earning lots of money and high status etc. or second, to achieve the wealth of divine knowledge leading to salvation.

For both, you need to select an appropriate teacher. It is not difficult to find a professional teacher for the first option. But finding a great realised saint or intellectual master for the second option if of course very difficult in the present age. Such saints and intellectuals who have collected knowledge with long and continuous penances and are practically following the path are rare. Immediately start searching such saints and sit in their lotus feet as if sitting on the banks of vast sea.



Rigveda 1.46.10

अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः ।
व्याख्यज्जिह्वयसितः ॥

Abhudu bha u anshave hiranyam prati suryah.

Vyakhyajjihvayasitah.

(Abhoo tu) realisation certainly (bhaah) illuminated knowledge (u) certainly (anshave) one who shares with others (hiranyam) shines, illuminates (prati) for, like (suryah) Sun, always energetic, active in service of others (Vyakhyat) enlightens (with knowledge of God) (jihvayaa) tongue (asitah) not bound to.

Elucidation

Who gets realisation of illuminated knowledge?

One who follows the following traits/features, get realisation of illuminated and ultimate knowledge, vedas and God :-

- (i) Anshave - one who shares with others,
- (ii) Hiranyam prati suryah - shines, illuminates like Sun, always energetic, active in service of others,
- (iii) Vyakhyat - enlightens (with knowledge of God),
- (iv) Jihvayaa asitah - who is not bound to his tongue, likes and dislikes.

Practical Utility in life

Who can rise in life with the blessings of all?

In spiritual as well as materialistic pursuits, everyone wishes progress which is possible only if he has an accurate knowledge of his path and a divine connectivity towards all colleagues without any discrimination.

Everyone should be a sharing personality. Sharing materials as well as minds with all. One should compare himself with Sun, always energetic and active for the welfare of all.

He himself should be enlightened with the relevant knowledge of his path till the top.

One should not run behind his own tastes, desires, likes and dislikes etc.

With such traits of behaviour only one can rise in life with the blessings of all.



Rigveda 1.46.11

अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया ।
अदर्शि वि सृतिर्दिवः ॥

Abhudu paarametave panthaa ritasya saadhuyaa.
Adarshi vi srutirdivah.

(Abhoo tu) realisation certainly (paaram) to cross over (etave) this worldly sea (panthaa) path (ritasya) truthful (saadhuyaa) best means to reach destination (Adarshi) is visible, seen (vi srutih) broad, magnified (divah) divinity, enlightenment.

Elucidation

What's the best path to cross over the worldly sea?

What's visible on this path?

Certainly realisation to cross-over the worldly sea comes and the best means to reach that destination is the path of truthfulness. On this path broad and magnified divinity and enlightenment is visible.

Practical Utility in life

What's the importance of truthfulness?

Truthfulness is very easy to practice in life but it is a very rare trait. Truthfulness means speaking what you have seen, heard and understood. It also means following truthful and core of enlightened knowledge and God.

Truthfulness is so simple in effect that it keeps us in a very balanced state. For untruth, one has to plan and always keep the mind engaged in maintaining it.

Truthfulness earns reliability in the eyes of all. Reliability results in integrity with the surroundings.

Integrity earns progress. The progress of such a truthful person is seen as magnified divinity. It's the supreme addition to the basic formal qualifications.

Therefore, truthfulness is very important feature to achieve success in any walk of life. Truthfulness ----- Reliability ----- Integrity ----- Progress ----- Magnified Divinity.



Rigveda 1.46.12

तत्तदिदश्विनोरवौ जहिता प्रति भूषति ।

मदु सोमस्यु पिप्रतोः ॥

Tattadidashvinoravo jarittaa prati bhushati.

Made somasya pipratoḥ.

(Tat tat) Only those (ita) certainly (ashvinoh) pair (of pranas) (avah) protected (jarittaa) singing glories of God (prati bhushati) decorated (Made) blissful (somasya) of virtues (pipratoḥ) complete.

Elucidation

Who are fully protected?

Only those pair of pranas are certainly protected :-

- (i) Who are decorated with the singing of glories of God.
- (ii) Who are blissful with complete virtues in their life.

Practical Utility in life

What's the importance of singing glories of God?

Those who sing the glories of God certainly keep themselves engaged in various penances. Pranic control becomes a way of life for such devotees. They are ultimately blissful with complete virtues.

Thus, singing glories of God is the root of all achievements because this feature is the basis of mental and physical health.



Rigveda 1.46.13

वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा ।
मनुष्वच्छभू आ गतम् ॥

Vaavasaanaa vivasvati somasya peetya giraa.
Manushvachchambhu aa gatam.

(Vaavasaanaa) Establish in comforts and peace (vivasvati) loving, worshipping God and His knowledge (somasya) for virtues (peetya) drinking (giraa) voice, speeches of knowledge (Manushvat) like noble human being (shambhu) producer of peace and welfare (aa gatam) comes in realisation.

Elucidation

What are the features of a real noble person?

What does a noble person realise?

Producer of peace and welfare, God, comes in realisation of those noble persons :-

(i) Who are established in comforts and peace.

(ii) Who are loving and worshipping God and His knowledge.

(iii) Who use their voice, speeches of knowledge for drinking virtues.

Practical Utility in life

Where does the eternal peace lies?

What is the result of peace?

We must live in peace in all circumstances and not for pieces of materials. There is only one source of peace - loving God because it's our true self. We can never get eternal peace in pieces of materials. But certainly eternal peace lies in the producer of that peace who is the root cause of our energy and life i.e. the Supreme Energy, God.

After establishing strong ties with God, we should use every moment and every energy for drinking virtues in life.

These three features only can make us a noble human being -peace, love for God and virtues.

Peace produces love for God and pursuit for virtues. On the strength of these features only God, the Producer of welfare for all, comes in realisation.



Rigveda 1.46.14

युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत् ।
ऋता वनथो अकृत्पिः ॥

Yuvorusha anu shriyam parijmanorupaacharat.
Ritaa vanatho aktubhih.

(Yuvoh) Your (ushah) first rays of rising Sun (anu - to be prefixed with vanathah) (shriyam) splendid wealth (parijmanoh) roams all around (upaacharat) received closely (Ritaa) always (vanathaa - anu vanathah) comfortably enjoy (aktubhih) in nights also, with rays of knowledge.

Elucidation

How are the first rays of rising Sun universal?

We should comfortably enjoy Your first rays of rising Sun that roam always and everywhere. Splendid wealth is received by closely by such people with rays of knowledge, who enjoys the first rays of Sun.

Practical Utility in life

How are all grants of God universal?

How to receive and use these grants of God?

First rays of early morning rising Sun roam in the atmosphere everywhere by turn. Every moment these early morning rays of Sun are reaching all places one by one. Therefore, the first rays of Sun are universal in nature. They don't discriminate among all of us but some receive them properly and others don't.

Grants of God are also like rays of Sun, raining upon all living beings without any discrimination. Only active and energetic people properly receive and use these raining grants of God - the splendid wealth with divine knowledge, use it for the welfare of all, live in peace and become divine in life. All grants of God are like first rays of morning Sun raining every time and all place for all people.

Feel it, meditate on it, receive it, realise it, use it for divine purposes.



Rigveda 1.46.15

उभा पिबतमश्विनोभा नः शर्म यच्छतम् ।

अविद्रियाभिरुतिभिः ॥

Ubhaa pibatamashvinobhaa nah sharma yachchhatam.

Avidriyaabhirutibhih.

(Ubhaa) You both (pibatam) drink (the first rays) (ashvinaa) pair (of pranas) (ubhaa) you both (nah) for us (sharma) comforts, welfare (yachchhatam) give, provide (Avidriyaabhih) not liable to be condemned, uninterrupted (utibhih) for protection.

Elucidation

Why shall our pranas consume first rays of rising Sun?

Both the pranas should drink the first rays of rising Sun (through Pranayama). On the strength of this practice :-

- (i) Both the pranas would be able to provide all comforts and welfare to us.
- (ii) They will not be liable to condemnation and consequently gain healthy and uninterrupted life.
- (iii) They will be able to protect us.

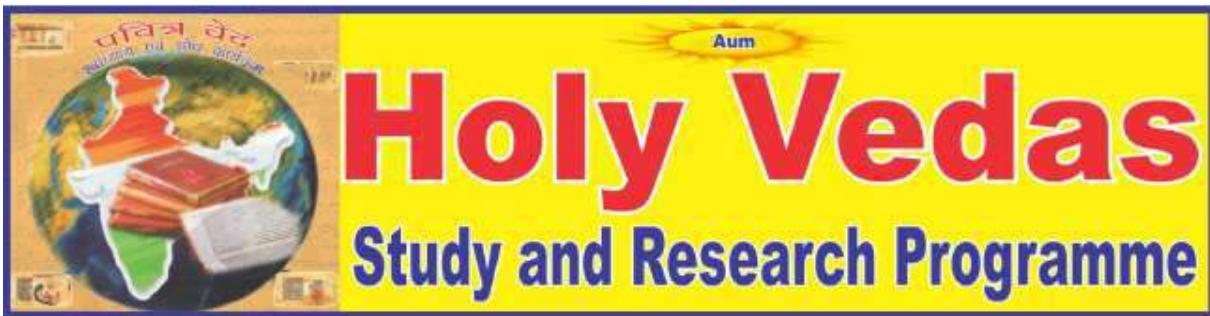
Practical Utility in life

What's the secret of a healthy and noble life?

How to maintain a balanced mind?

Every one wishes a healthy and noble life. Healthy life is necessary for performing all karmas without interruption. One who is able to finish up his karma bank, only can proceed on the spiritual path and succeed for salvation. Therefore, early rising and consuming first rays of rising Sun through pranayama is the foundation of good health because pranayama help in balancing the mind and ultimately result in equanimity of mind.

For a noble life we are required to drink virtues. Brahmavala time is the best suited for this purpose also. While practising pranayama in Brahmvela, our ether element increases and paves ways for all noble traits to be established in mind. Noble life means balanced mind and capacity to perform noble deeds.



Rigveda 1.60.1 (Total verses 690)

Vahnīm yaśasāṁ vidathasya ketum̄ suprāvyaṁ dūtaṁ sadyoartham.

Dvijanmānaṁ rayim iva praśastāṁ rātim bharad bhṛgave mātariśvā.

(Vahnīm) Bearing the burden (yaśasāṁ) famous due to his glory (vidathasya ketum̄) creating light of knowledge in the heart (suprāvyaṁ) protecting us in the best manner (dūtaṁ) messenger (of divinities) (sadyah artham) performing with speed (Dvijanmānaṁ) appearing from prana and divine knowledge, appearing in mind and heart (rayim iva praśastāṁ) like splendid wealth (rātim) giver of anything for the welfare of all (bharat) holds (God) (bhṛgave) through divine knowledge (mātariśvā) pranas.

Elucidation :

What are the features of God?

This verse lists the following nine features of God :-

- (i) Vahnīm - He bears the burden of the whole universe.
- (ii) Yaśasāṁ - He is famous due to his glory.
- (iii) Vidathasya ketum̄ - He creates light of knowledge in the heart.
- (iv) Suprāvyaṁ - He protects us in the best manner (by inspiring us to lead the best life through good food, good conduct).
- (v) Dūtaṁ - He is messenger (of divinities).
- (vi) Sadyah artham – He performs all acts with appropriate speed.
- (vii) Dvijanmānaṁ - He appears from prana and divine knowledge, appearing in mind and heart.
- (viii) Rayim iva praśastāṁ - He is like splendid wealth.
- (ix) Rātim – He is giver of anything for the welfare of all.

By holding pranas, one gains gyana i.e. divine knowledge and through gyana one holds God.

Practical utility in life :

What is the process of God-realisation?

What is the prime duty of a good parent, a good teacher and a good king?

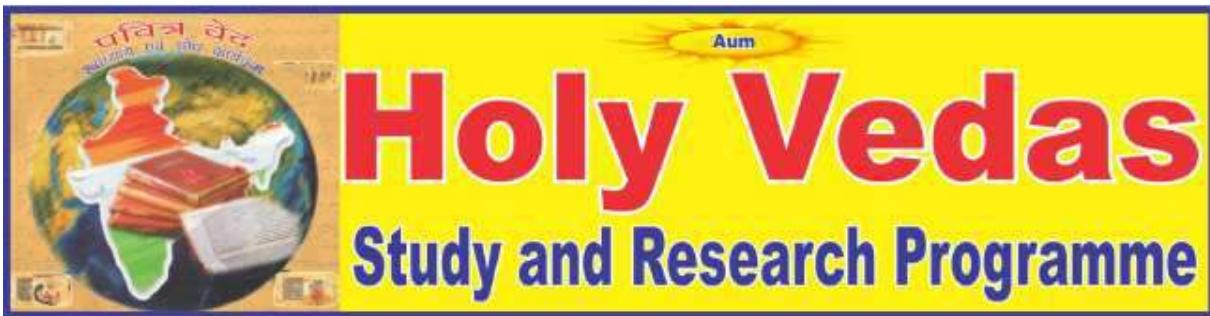
There's a simple process of God-realisation, of course subject to the fundamental eligibilities of an Arya life. A yogi holds his breath while performing pranayama. After continuous and long practices of pranayama, he starts gaining divine knowledge from God. During retention period, think of features of God, one by one, you will realise all aspects of divinities one by one.

Pranayama i.e. holding of breath and gaining maturity in divine knowledge are the only two steps to realise God.

Pranayama symbolises samyam i.e. retention, restraint or control over breath resulting into a control over modulations of mind, ego and desires. It's mental pranayama. Every good parent, good teacher and a good king should inspire their subjects to follow the process of pranayama, physically and mentally, to gain maturity in divine knowledge.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.60.2 (Total verses 691)

Asya śāsur ubhayāsaḥ sacante haviṣmanta uśijo ye ca martāḥ .

Divaś cit pūrvo nyasādi hotāprcchyo viśpatir vikṣu vedhāḥ.

(Asya) This (śāsuḥ) of Ruler and Regulator (of whole creation)

(ubhayāsaḥ) both (rulers and the subjects, offering oblations and engaged in divine work) (sacante) serve and worship (haviṣmanta) offering oblations, performing yajna (uśijah) engaged in divine knowledge (ye) who (ca) and (martāḥ) human beings (Divaś cit pūrvah) even before realising light of divine knowledge (nyasādi) is established in our deep heart (hotā) bringer and giver of everything for yajna (āprcchyah) is realisable in everything, His glory is felt in everything, contemplative men pose questions on everything regarding God (viśpatih) the creator and protector of all (vikṣu) in all beings (vedhāḥ) hold knowledge, awards fruits of all acts.

Elucidation :

By whom is God liable to be worshipped?

The Ruler and Regulator of the whole universe i.e. God, is liable to be served and worshipped by all human beings, the rulers and the subjects together, those offering oblations in the yajna and those engaged in acquiring and imparting divine knowledge.

God is established in our deep heart even before realising His light of divine knowledge. He is the bringer and giver of everything for yajna.

He is realisable in everything. His glory is felt in everything.

The contemplative men pose questions about God on everything.

He is the Creator and Protector of all. Therefore, He gives knowledge and awards fruits of all acts to everyone.

Practical utility in life :

Why is God liable to be worshipped by all?

Who is established in every heart?

Who provides materials to all?

What do we realise, when we pose every question about any material?

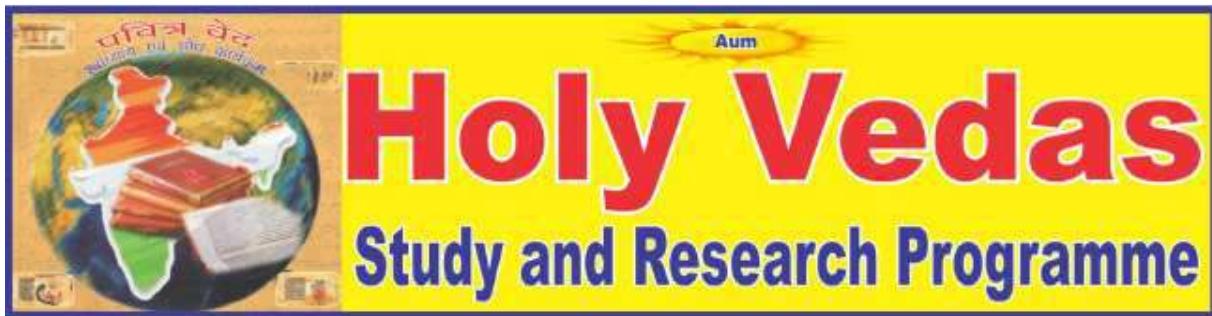
Who holds knowledge in all and awards fruits of all acts?

Every human being has heart and mind. Since God is established in every heart even before one realises the light of divine knowledge. Therefore, everyone should aspire to realise Him.

Whatever materials we have acquired are provided by God. There is none who says that he has acquired nothing from this creation of God. Therefore, God is realisable by all. Being the Creator, Protector and Sustaining of all, He holds knowledge in all and awards fruits of all acts. Thus, certainly, He must be known by all up to the level of realisation.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.60.3 (Total verses 692)

Tam navyasī hrda ā jāyamānam asmat sukīrtir madhujihvam aśyāḥ .

Yam ṛtvijo vṛjane mānuṣāsaḥ prayasvanta āyavo jījananta.

(Tam) That (navyasī) brand new praises and glorifications (hrdah ājāyamānam) emerging in the heart (asmat sukīrtih) our chantings in glorification (of God) (madhujihvam) to the sweet tongue, inspiring sweetness (God) (aśyāḥ) be received (Yam) whom (ṛtvijah) performing yajna activities in every season (vṛjane) in righteous life free from evils (mānuṣāsaḥ) contemplative men working for the welfare of others (prayasvantah) endowed with good knowledge (āyavah) always active at work, truthful (jījananta) enlighten themselves.

Elucidation :

Where do our chanting in praise of God go?

The brand new praises and glorifications through our chanting about God emerge in the heart and be received to that God who is sweet tongue and inspires sweetness. Those performing yajna activities in every season, in their righteous life free from evils and those contemplative men who work for the welfare of others, endowed with good knowledge, always active at work truthfully, enlighten themselves.

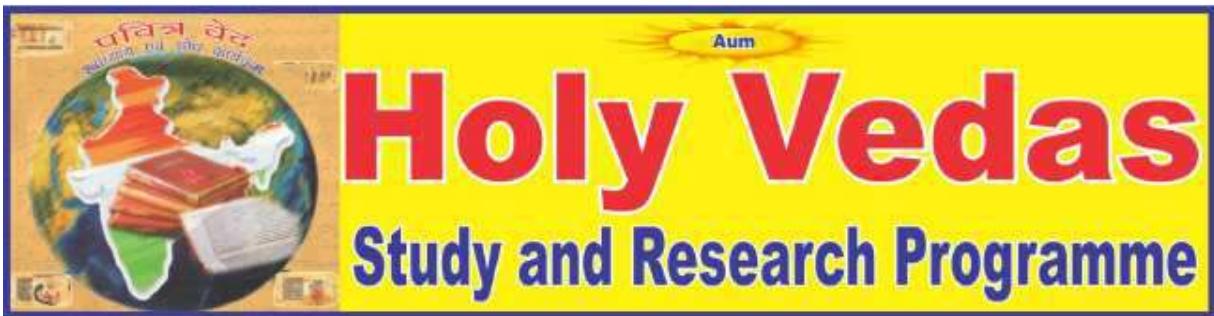
Practical utility in life :

How to receive the light of Divine knowledge?

To gain the light of divine knowledge in us, we need to live a truthful life, working for the welfare of others along with praising God for everything, every moment.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.60.4 (Total verses 693)

Uśik pāvako vasur mānuṣeṣu vareṇyo hotādhāyi vikṣu .
Damūnā gr̥hapatir dama āñ agnir bhuvad rayipatī rayīṇām.

(Uśik) Truly desire for the welfare of soul (pāvakah) purifies his life (vasu) arranges his abode (mānuṣeṣu) in contemplative men (vareṇyah) liable to be adopted (hotā) bringer and giver of all materials (adhāyi) in the heart space (vikṣu) of people (Damūnāḥ) He is mindful in the body of all (gr̥hapatih) Protector of this house (dame) in this house (ā - to be prefixed with abhuvat) (agnih) the Supreme Energy, God (abhuvat – ābhuvat) lives (rayipatih) owner of all wealth (rayīṇām) makes the wealth shine.

Elucidation :

Who desires for the welfare of soul?

Who lives in our mind?

Who is the owner of our wealth?

God truly desires for the welfare of soul, arranges for his abode and purifies his life. The Bringer and Giver of all materials, to the people, is liable to be adopted in the heart space of the contemplative men. He is mindful in the body of all. The Supreme Energy, God, lives in this house. He is the owner of all wealth and makes the wealth shine.

Practical utility in life :

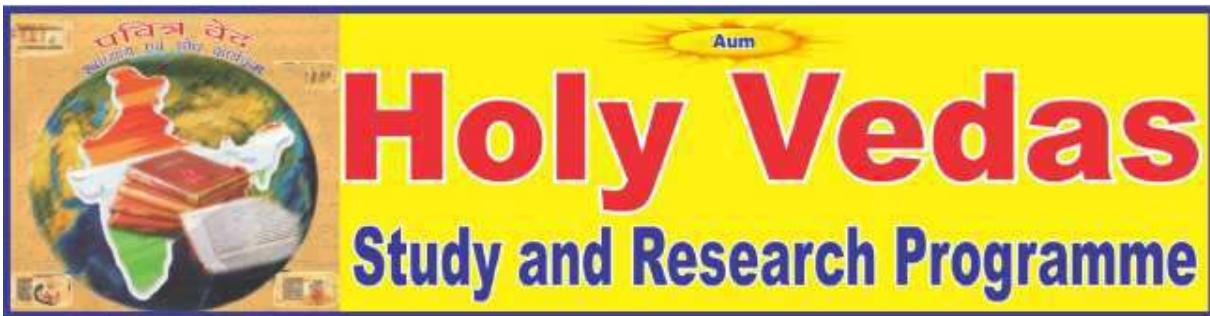
Who adopts God in heart?

Whose wealth shines with the glory of God?

God is Omnipresent, therefore, present in our body also. He is the Giver of our body and every material to everyone. But only contemplative men adopt Him in their heart space. For such great souls, God is their mind who inspires and empowers them for every act. With this consciousness, the wealth of such people shines with the glory of God.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.60.5 (Total verses 694)

Tam tvā vayam patim agne rayīnām pra śāṁsāmo matibhir gotamāsah .

Āśum na vājambharam marjayantah prātarmakṣū dhiyāvasur jagamyāt.

(Tam) To that (tvā) You (vayam) we (patim) owner and protector (agne) the Supreme Energy, God (rayīnām) of all wealth (pra śāṁsāmah) praise and glorify (matibhiḥ) with intellect, with intellectuals (gotamāsah) by purifying and sharpening our senses (Āśum) horses (na) like (vājambharam) fills us with power and speed (marjayantah) purifying us (prātah) in the morning (rmakṣū) very soon (dhiyāvasuh) people living in divine knowledge, wealth from intellectual acts (jagamyāt) be received.

Elucidation :

How shall we praise and glorify God?

What is the result of praising and glorifying God?

To that You, the Supreme Energy, God, the Owner and Protector of all wealth, we praise and glorify with intellect and with intellectuals by purifying and sharpening our senses. By purifying, You fill us with power and speed like horses. Let us receive wealth from intellectual acts and from the people living in divine knowledge very soon in the morning.

Practical utility in life :

What is the fundamental feature to praise and glorify God?

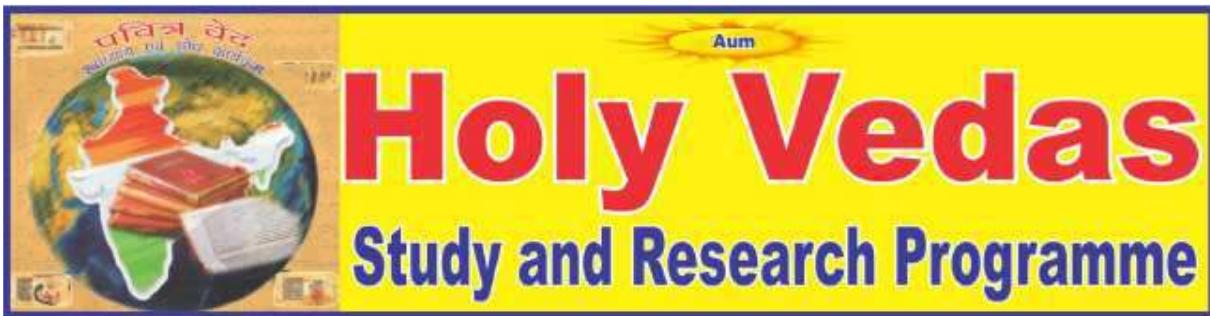
What is splendid wealth?

Purifying and sharpening of senses is the fundamental feature to praise and glorify God. Impure people cannot have a connectivity with God. Impure people doesn't even enjoy good health, physical as well as mental and spiritual.

Without good health either there is no wealth or there is no enjoyment of wealth. Wealth is not only material in nature. It includes mental and spiritual achievements also. All wealth is attributable to God and with this conscious connectivity only, our wealth becomes splendid, useful for the welfare of all.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.56.1

Eṣa pra pūrvīr ava tasya camriṣo 'tyo na yoṣām ud ayamsta bhurvaṇih.
Dakṣam mahe pāyayate hiranyaṇayam ratham āvṛtyā hariyogaṁrbhvasam.
(Eṣah) He, the Giver and Controller of senses (pra - to be prefixed with udayasta) (pūrvīh) completely (ava - to be prefixed with udayasta) (tasya) for Him (for realising God) (camriṣh) body enjoying all objects (atyah) continuously active (na) just as (yoṣām) with intellectual ladies (udayasta - pra ava udayasta) progress completely (bhurvaṇih) holds, sustains himself (Dakṣam) with expertise (mahe) great and divine (pāyayate) receives, drinks (hiranyaṇayam) golden (ratham) chariot (āvṛtyā) remove the modulations of objects (hariyogaṁ) to join God who removes all pains (rbhvasam) inspires all.

Elucidation :

What can a person, living a life with Vedic Wisdom, do for the society? He, the giver and controller of senses, holds, sustains and completely keeps his body active for realising God, just as a head of family and society, progresses with intellectual ladies. He receives and drinks i.e. imbibe great and divine expertise. He removes the modulations of objects from his golden chariot, the most valuable human body. He inspires all to join God who removes all pains and sufferings.

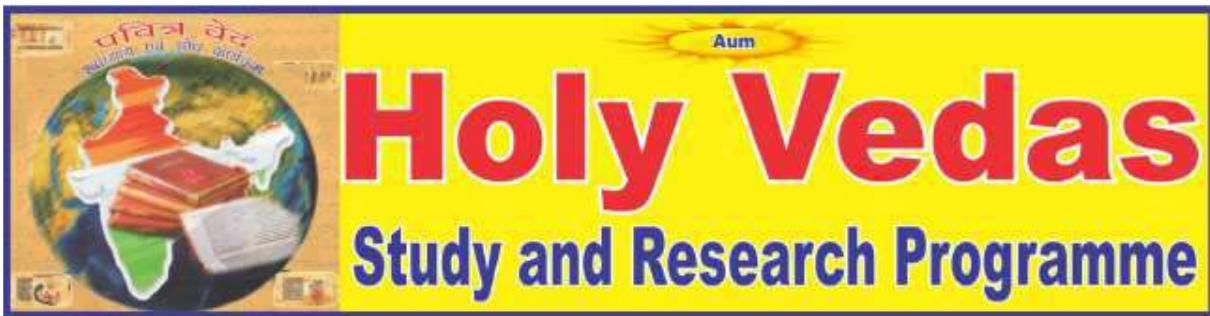
Practical utility in life :

What is the destination of life?

When a man lives his life with Vedic Wisdom (as per verse RV 1.55.7) and becomes a giver for the society and controller of his senses and mind, he becomes competent to progress on the path to God-realisation. As a head of his family or society, he inspires others also on this path because he has gained expertise and has a clear mind free from modulations of objects around. He becomes pure in body and mind because of the two basic features of Vedic Wisdom i.e. a giver for the society and a controller of senses. Thus, he becomes a competent messenger of the ultimate destination of human life i.e. 'Hariyogaṁ ribhvasam'.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.56.2

Tam gūrtayo nemanniṣah parīṇasah samudram na sañcaraṇe saniṣyavah.
Patim dakṣasya vidathasya nū saho girim na venā adhi roha tejasā.

(Tam) Those who are (gūrtayah) admirers (of God) (neman iṣah) humbly after their salutations to God (parīṇasah) pervade with activity (samudram) to the sea (na) just as (sañcaraṇe) join (saniṣyavah) rivers serving various lands (Patim) owner, protector (dakṣasya) of experts, of powerful (vidathasya) of knowledge (nū) be received (sahah) source of power (girim) on mountains (na) just as (venāh) eager, anxious (adhi roha) climbs and establishes (tejasā) with pure strength.

Elucidation :

Who merges in God?

Those who are admirers of God and humbly offer their salutations to Him and pervade with activities, they are received by that source of power and strength, just as rivers serving various lands join the sea and just as an eager and anxious person climbs and establishes on the mountain peak with his pure strength. God is the owner and protector of all expertise and all knowledge.

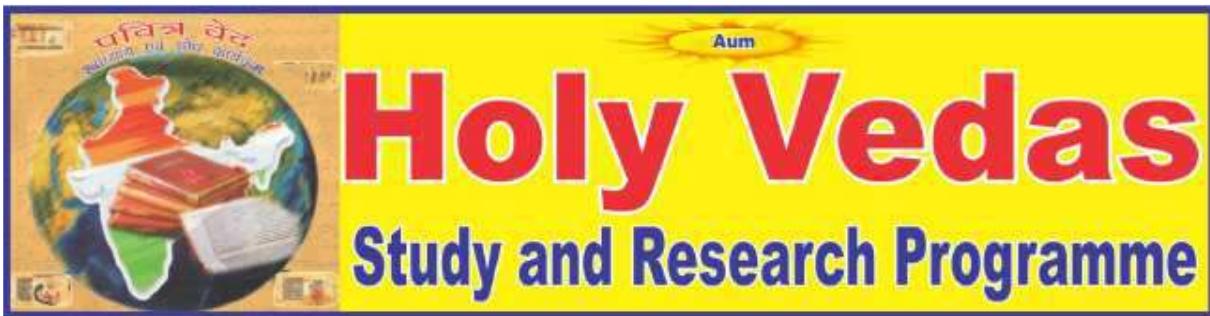
Practical utility in life :

What is the depth and highness of a true seeker?

A true seeker, on one hand, admires God and on the other hand, pervade with activities. His purity merges him deep in God just as rivers merge in sea. He is so high in living with his knowledge and penances that he looks like an anxious mountaineer established on the mountain peak. His depth and highness are unparalleled.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.56.3

Sa turvañir mahāñ areṇu paumṣye girer bhṛṣṭirna bhrājate tujā śavah.
Yena śuṣṇam māyinamāyaso made dudhra ābhūṣu rāmayan ni dāmani.

(Sah) He (turvañih) destroyer of enemies moving very fast (mahāñ) great in all respects (areṇu) undisturbed (paumṣye) in wars, struggles, difficulties (gireḥ bhṛṣṭih) peak of a mountain (na) just like (bhrājate) shines (tujā) destroyer of pains and difficulties (śavah) strength, power (Yena) with which (śuṣṇam) exploiting power (māyinam) dramatic (āyasah) iron bodied, protecting shield (made) in the bliss (dudhraḥ) blocking evil enemies (ābhūṣu) in prison (rāmayat - ni rāmayat) keeps (ni - prefixed with rāmayat) (dāmani) in bonds.

Elucidation :

What happens when a controller of senses work in communion with God? He, the Supreme Power, moving very fast to destroy the enemies, is great in all respects.

With the strength and power of God, when a controller of senses fights undisturbed in wars, struggles and difficulties, he becomes a destroyer of pains and difficulties and shines like a peak of mountain. With this divine support, he is able to keep the dramatic exploiting powers in prison and in bonds. He blocks the evil enemies because such a controller of senses is always in the state of bliss.

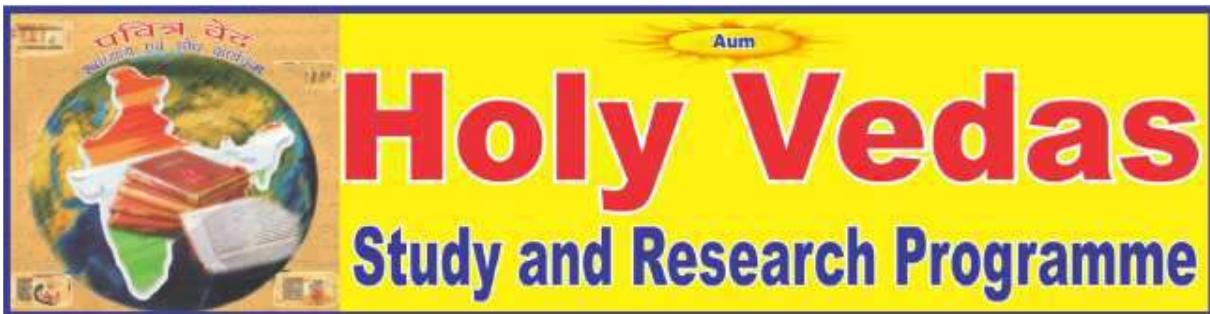
Practical utility in life :

Who gains the divine strength?

A life with Vedic Wisdom becomes a pure life and gains the divine strength and powers of God. In any walk of life, everyone must follow the life of Vedic Wisdom i.e. be a giver for the society and be a controller of senses.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.56.4

Devī yadi taviṣī tvāvṛdhōtaya indram siṣakty uṣasam na sūryah.
Yo dhr̄ṣṇunā śavasā bādhate tama iyarti reṇum bṛhad arhaṁsvanīḥ.

(Devī) Divine (yadi) if (taviṣī) power (tvāvṛdhā) promoting progress towards You (utaye) for protection (indram) to the Indra person, the controller of senses (siṣakty) joins (uṣasam) dawn, the early morning time (na) like (sūryah) receives Sun (Yah) that (dhr̄ṣṇunā śavasā) with strong powers (bādhate tamah) blocks the darkness, ignorance (iyarti) moves (renum) gracious time (bṛhat) greatly (arhaṁsvanīḥ) make the sinners cry.

Elucidation :

What happens when divinity dawns upon an Indra person?

If divine powers of God join the Indra person, the controller of senses, these are used for promoting him and others towards God and for protection of all. Divine powers with Indra person are like Sun joining dawn time. This unity of the two forces, the Supreme Indra and the controller of senses, blocks the darkness and ignorance with these strong powers. It moves everyone towards gracious time ahead and makes the sinners cry.

Practical utility in life :

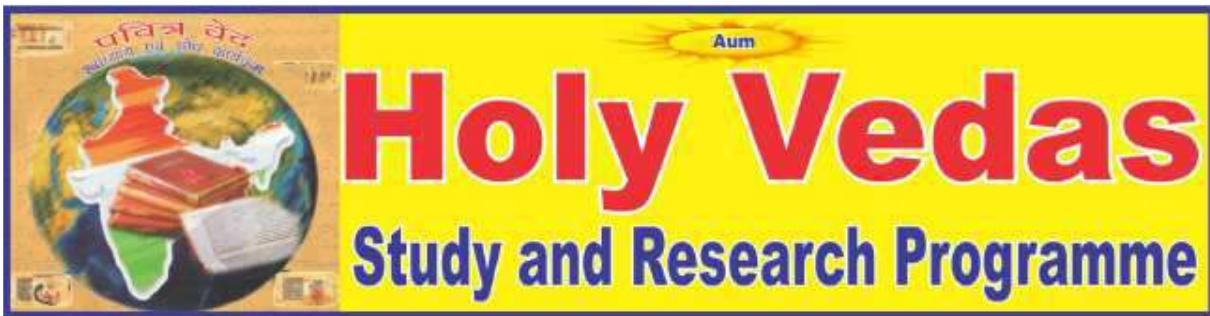
What is the result of joining together of two pure forces?

Focus of this verse is on joining together of the two pure powers to convert their joining into divinity. This ratio is applicable to joining of husband and wife by way of marriage; joining of two business partners with a vow to remain truthful sincere and honest towards each other and towards business motive; joining of two or more social political workers; joining of a servant with his master etc. Such a joining results in :-

- (i) Closeness of the two forces,
- (ii) Protection of the lower in rank,
- (iii) Blocks the darkness, ignorance and evils,
- (iv) Moves both towards a gracious time.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.56.5

Vi yat tiro dharunam acyutam rajo'tishthipo diva ātāsu barhaṇā.
Svarmīlhe yanmada indra harsyāhan vṛtrām nirapām aubjo arṇavam.

(Vi) specially (yat) when (tirah) introvert, slanting (dharuṇam) holds (the powers) (acyutam) without failing, constant (rajah) vital fluid, core power, to all planetary bodies (atiṣṭhipah) establish (diva ātāsu) divinity, light and energy in all directions (barhaṇā) for increasing (Svarmīlhe) in wars, in difficulties, in space (Yat) when (Made) in mood of power (indra) controller of senses, Sun (harsyā) with extreme joy (ahan) destroys (vṛtram) modifications of mind, clouds (nir) certainly (apām) knowledge, light (aubjo) soften, make them friendly (arṇavam) oceans of.

Elucidation :

How does an Indra person make the ocean of knowledge friendly with him?

How does the Sun keep the ocean cool and friendly?

Spiritual Meaning : When an Indra person, a controller of senses, specially holds and establishes the core power, the vital fluid and constantly enjoys its effect in his introvert mind, divinity falls on him in all direction for increasing him. Even in wars and difficult times, he is in the mood of power and with extreme joy he destroys the modifications of mind to certainly achieve the softness of oceans of knowledge and light in his life.

Scientific Meaning : When Indra, the Sun, specially holds all planetary bodies and establishes his powers on them, his light and energy spreads in all directions. When in warm times, he is in the mood of his power and with extreme joy, he destroys the clouds and spreads them to oceans to keep the oceans cool and friendly for all.

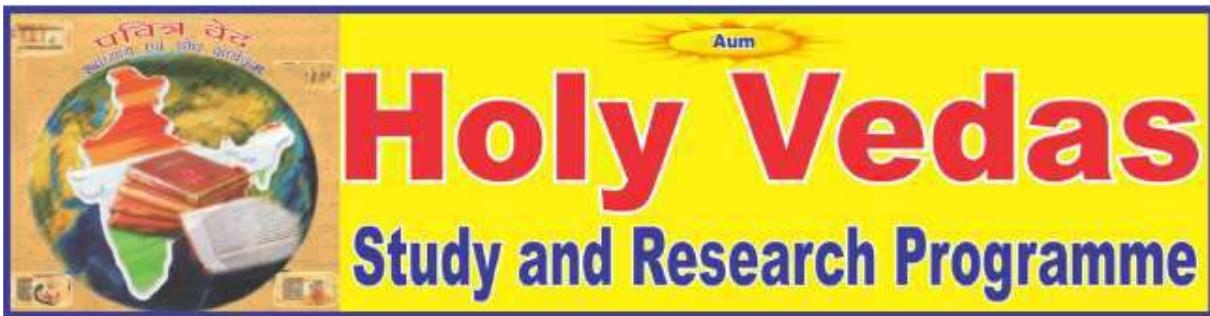
Practical utility in life :

How is the science of Sun related to the science of Spirituality?

The science of Sun destroys the clouds for the welfare of all living bodies, to keep the ocean cool and to create ocean currents. This ratio is equally fond in the life of an Indra person who destroys his personal clouds i.e. modifications of mind, for the welfare of all. He makes all his modifications merge and end in the ocean of knowledge. In this way the ocean of knowledge becomes soft and friendly for him. He warms up that Supreme Knowledge gained after realisation and pull it up to create the currents of that Supreme Knowledge for all.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.56.6

Tvam divo dharuṇām dhiṣā ojasā pṛthivyā indra sadaneṣu māhinaḥ .

Tvam sutasya made ariṇā apo vi vṛtrasya samayā pāṣyārujah.

(Tvam) You (Indra) (divḥ) divine features (dharuṇām) foundation of (dhiṣe) hold (ojasā) with your power (pṛthivyā) body, earth (indra) Sun, controller of senses (sadaneṣu) in these treasures (māhinaḥ) of respectable greatness (Tvam) You (sutasya) of these produced (made) in the bliss of (ariṇāḥ) receive the happiness of (apah) waters (vi - to be prefixed with arujah) (vṛtrasya) of modulations, of clouds (samayā) in time, with nearness of God (pāṣyā) coverings (arujah - vi arujah) destroy, finish.

Elucidation :

What features are gained by a controller of senses?

Indra, the controller of senses! You hold the divine features of respectable greatness in your treasure which are foundation of all divinities. With these powers you hold your body. In the blissful state of these produced features you receive the happiness of water, it's coolness and activity. You also destroy the coverings of modulations of mind in time due to your nearness to God.

This ratio is applicable to Sun also who holds this earth. Sun and water have same chemical composition – hydrogen and oxygen. Both are the source of energy and activity.

Practical utility in life :

How to be an Indra person?

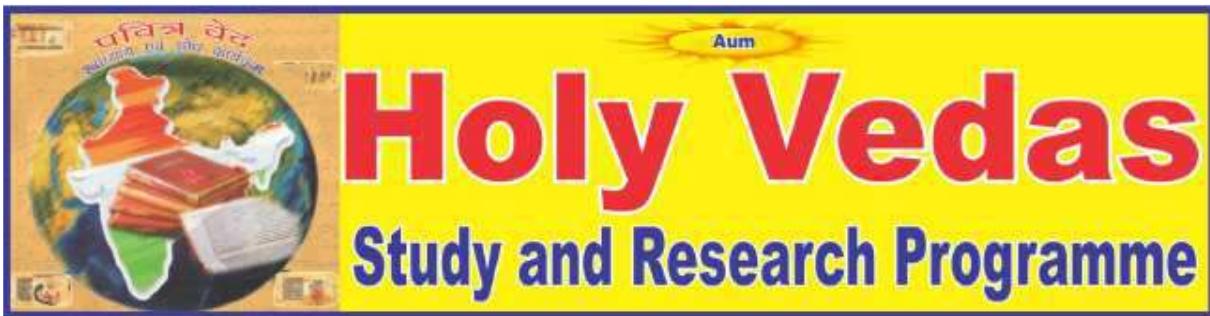
Once a person becomes an Indra, divinity will rise in him.

Sun is Indra, the source of all divinities. Sun is the first creation of this universe. Rest of the creation came into being thereafter and is sustained by Sun.

In our life, we can be Indra by simple vow full determination to keep our senses under control by giving up unnecessary desires except the desire to maintain, sustain this body for God-realisation.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.57.1

Pra mañhiṣṭhāya bṛhate bṛhadraye satyaśuṣmāya tavase matīm bhare.

Apām iva pravaṇe yasya durdharam rādho viśvāyu śavase apāvṛtam.

(Pra – To be prefixed with matīm) (mañhiṣṭhāya) great donor, giver (bṛhate) high in virtues and knowledge (bṛhadraye) high in wealth (satya śuṣmāya) for power of truth (tavase) high in power (matīm - pra matīm) extreme respect, adoration (bhare) hold (Apām) of waters (Iva) just as (pravaṇe) towards down area (yasya) whose (durdharam) not tolerating the evil, wicked (rādhah) wealth (viśvāyu) whole life, complete life (śavase) for power (apāvṛtam) open.

Elucidation :

Why do we respect and adore God?

We hold with extreme respect and adoration that great Giver who is high in virtues and knowledge; high in power of truth and high in all powers. His powers are unbearable for evils and wicked just as it is not possible to hold the water falling towards lower places. His wealth and powers are open to all for whole life.

Practical utility in life :

How to achieve a complete life i.e. healthy and long life?

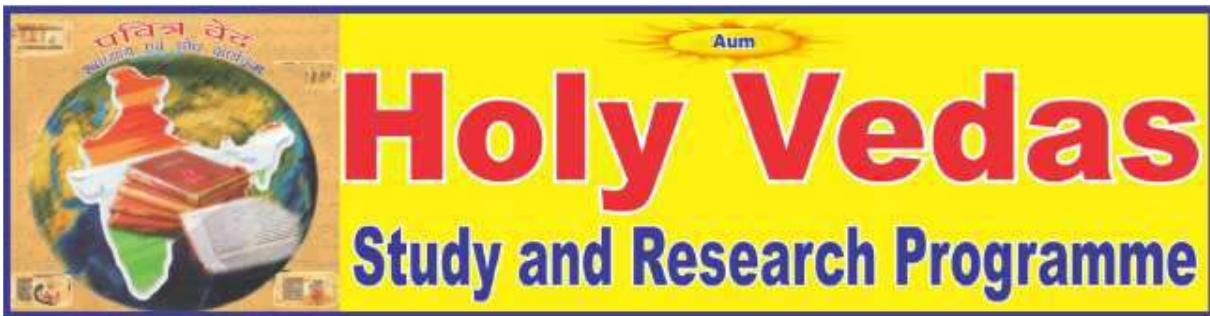
Whatever we are deriving from the treasury of God, the same must be utilized for the purposes that are in tune with the features of God :-

- (i) Be a great giver,
- (ii) Be high in virtues and knowledge,
- (iii) Be high in wealth,
- (iv) Be high in truth,
- (v) Be high in power,
- (vi) Don't promote or tolerate evils and wicked.

If we hold these features religiously, we would get complete age, healthy and long life, for all great activities.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.57.2

Adha te viśvamanu hāsadiṣṭaya āpo nimneva savanā haviṣmataḥ .
Yatparvate na samaśīta haryata indrasya vajrah śnathitā hiranyayah.

(Adha) Hence, thereafter (te) your (viśvam) world, all (anu) become friendly, favourable (ha) certainly (asat) for a person who is above consumerism (iṣṭaya) for the desired target, for God-realisation (āpah) water (nimna) for lower places (iva) just like (savanā) splendid wealth for yajna (haviṣmataḥ) of the best giver of oblations (Yat) when (parvate) on mountains, on clouds (na) not (samaśīta) sleep (haryataḥ) progressive person (indrasya) of Indra (vajrah) weapon (śnathitā) attacking and killing enemies (hiranyayah) shinning (in power and knowledge).

Elucidation :

What happens when one uses his splendid wealth appropriately and rises above consumerism?

As per verse RV 1.57.1, when after appropriate use of wealth received from God, we achieve complete age, thereafter, Your world certainly becomes friendly and favourable for a person who rises above consumerism and helps him to achieve the desired target of God-realisation. The splendid wealth of the best giver of oblations for yajna is just like water at lower places that becomes useful for many purposes. Such a progressive person doesn't sleep over the clouds of modifications of mind when the weapons of such an Indra attacks his enemies and shine in power and knowledge.

Practical utility in life :

What should be our divine target?

Does the Supreme Divine help us in divine targets?

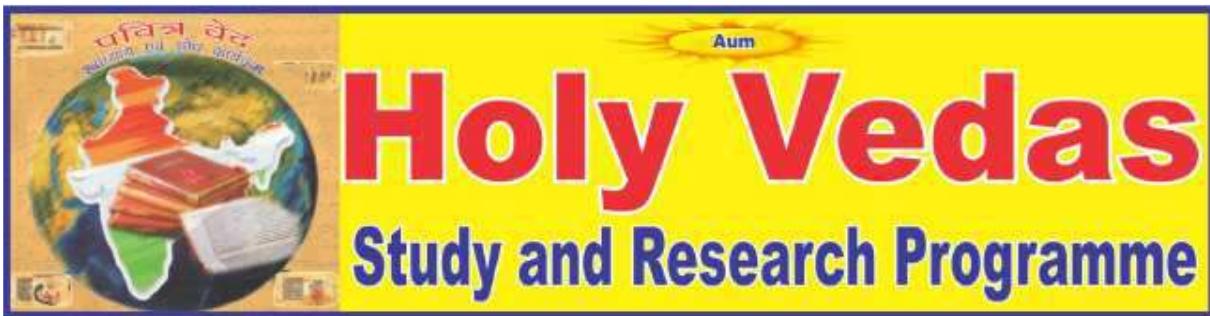
Divinity becomes friendly and favourable for those who follow the divine path of God :-

- (i) Use their splendid wealth given by God for the welfare of all, and
- (ii) Confine themselves to the basic needs of life and rise above consumerism.

The cause of all diseases, crimes and destruction is consumerism. Whereas, a real progressive person would have desired targets in tune with divinity. His target should be to achieve the Supreme Divine through His divinities. Therefore, he doesn't stop even on being helped by divinities. He doesn't fix worldly targets. He is not a simple consumer of this creation but a lover of the Creator. That is why He is helped by the Creator in all yajnas.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.57.3

Asmai bhīmāya namasā sam adhvare uṣo na śubhra ā bharā panīyase.
Yasya dhāma śravase nāmendriyan jyotir akāri harito nāyase.

(Asmai) This (bhīmāya) fierce full for enemies (namasā) with salutations (sam – to be prefixed with ābhara) (adhvare) non-violent, faultless yajna (uṣah) early morning rays of Sun (na) like (śubhre) shines, useful (ābhara – sam ābhara) holds and sustains well (panīyase) for praising, adoring (Yasya) whose (dhāma) shine, glory (śravase) is worth hearing, for our strength (nām) name chanting (indriyan) giver of strength to all senses (jyotiḥ) light of knowledge (akāri) is like that (haritah na) just like horses, direction (reach their destination) (ayase) for reaching our destination.

Elucidation :

What are the benefits of fixing divine targets?

Just as early morning time is useful and shinning, let us receive the fierce full power for enemies, with salutations to God. We may hold and sustain this power for non-violent and faultless yajnas and for praising, adoring God, whose shine and glory is worth hearing and for our strength, whose name chanting vibrates the whole body and gives strength to all our senses, whose light of knowledge makes us reach our destination, just as horses and different directions reach their respective destinations.

Practical utility in life :

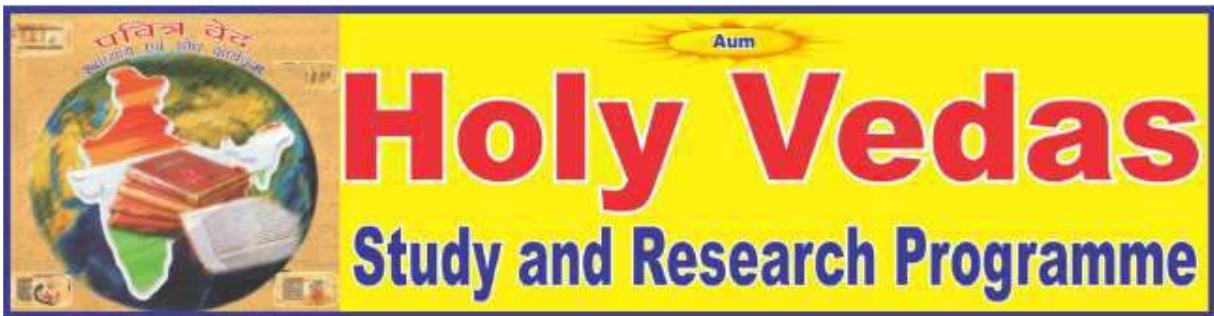
What do we gain from divine companionship?

Always aspire for the companionship of God which is superbly beneficial in human life. In addition, we should aspire for the company of divine people around us in the family and society. We should inspire the people to live a divine life at higher consciousness.

- (i) This process of aspiring and inspiring divinity is the actual divine path for humanity to get rid of the effects of Kaliyuga which is focussed on consumerism.
- (ii) This divine path makes the evils and wicked cry.
- (iii) This divine path ensures non-violent and faultless yajnas.
- (iv) This path keeps us free from diseases and crimes.
- (v) This path strengthens our body through vibrations. This path only can make us reach our destination.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.57.4

Ime ta indra te vayam puruṣṭuta ye tvārabhya carāmasi prabhūvaso.
Nahi tvad anyo girvaṇo girah saghat kṣonīr iva prati no harya tad vacah.

(Ime) These (te) Your (indra) God (te) Your (vayam) we (puruṣṭuta) complete and sustain (ye) who (tvārabhya) shelter of your power (carāmasi) performing activities (prabhūvaso) in the abodes of God, full of happiness (Na hi) there is no (tvat anyah) other than You (girvaṇah) praised and adored with vedic speeches in practice (girah) our speeches in praise (saghat) receives (kṣonih iva) like mother earth

(prati - to be prefixed with harya) (nah) our (harya – prati harya) accept (tat vacah) those speeches.

Elucidation :

What is our relation with God?

How is God the very basis of our life?

O God! We are Your people, whom You complete and sustain; who seek shelter of Your power; who perform all activities in the abodes provided by You that are full of happiness in Your company. There is no other than You who is praised and adored with Vedic speeches in practice. Please receive and accept our prayers.

Practical utility in life :

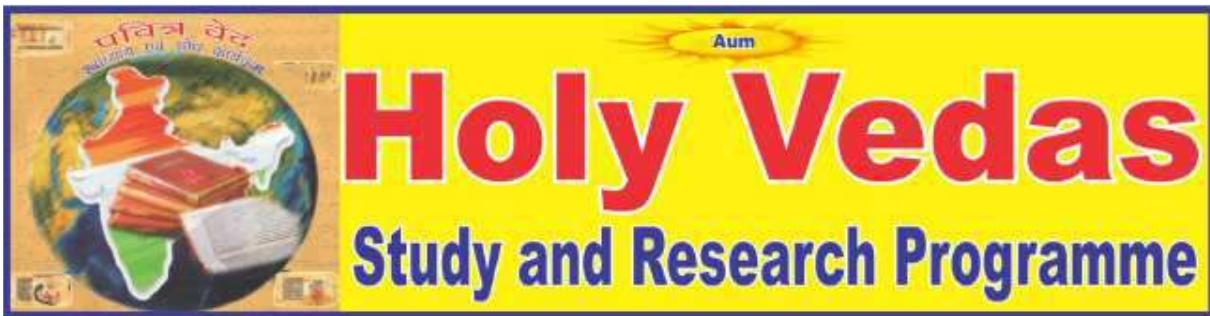
Why is mother earth equated with God?

Our relation with God is unique and unparalleled. Our every breath and consequently whole life is dependent upon Him only. There is no power or personality other than God who deserves our complete praises. He accepts only those praises that are followed by practices of Vedic wisdom.

He is equated with Mother Earth in receiving our praises and prayers because Mother Earth is the direct divine power of God for our birth, sustenance and all our activities. Ultimately, our bodies merge in earth only. Therefore, mother earth is the living example of all powers of God for us.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.57.5

Bhūri ta indra vīryam tava smasyasya stotur maghavan kāmam ā pṛṇa .

Anu te dyaur bṛhaṭī vīryam mama iyam ca te pṛthivī nema ojase.

(Bhūri) extremely excessive (te) Your (indra) The Supreme Power, God (vīryam) strength and power (tava) Your (smasi) dependent (asya) I who is (stotuh) full of praises for You (maghavan) wealthy and powerful, God (kāmam) desires (āpṛṇa) complete (Anu - to be prefixed with mame) (te) Your (dyauḥ bṛhaṭī) huge sky and space (vīryam) strength and power (mame - anu mame) follow and represent (iyam) this (ca) and (te) Your (pṛthivī) earth (neme) bows (ojase) for power.

Elucidation :

How is God the Supreme Power?

Indra, the Supreme Power, God! I am dependent on Your extreme and excessive strength and power. You are wealthy and powerful. I am full of praises for You. Please complete my desires. Huge sky and space follow and represent Your strength and power and this mother earth also bows before You for Your powers.

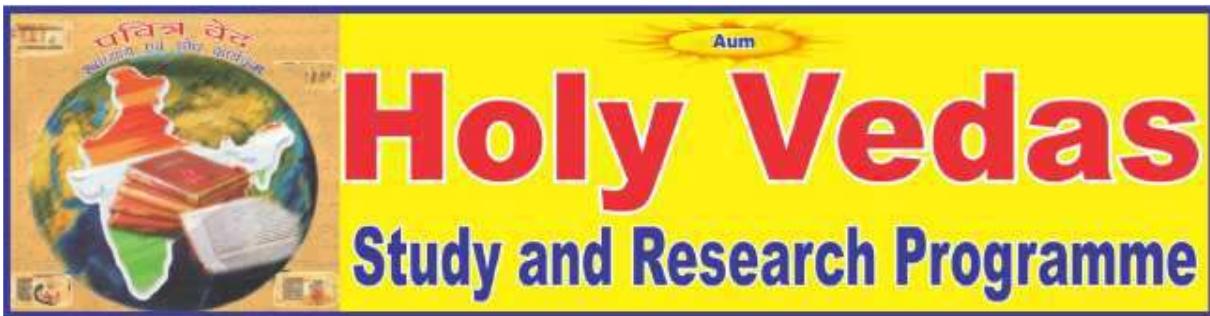
Practical utility in life :

Does God fulfil all our dreams or desires?

God has extreme and excessive strength and power. All living beings and non-living things are dependent upon Him. Even the huge sky, space and the vast earth also follow and represent Him. Being the Supreme Head of this whole universe, God certainly completes the desires of all. But problem begins when man starts exceeding in desires after crossing the boundaries of his basic needs for survival. He is made competent to get his unlimited desires fulfilled but certainly to his own prejudice like king Middas who got a boon to convert everything he touch into gold and ultimately he starved to death. On the path of unlimited desires, man forgets that desires never end but he ends first. Therefore, we should keep a self-control over desires and limit them to necessities.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.57.6

Tvam tam indra parvatam mahāmurum vajreṇa vajrin parvaśāś cakartitha .
Avāṣrjo nivṛtāḥ sartavā apah satrā viśvam dadhiṣe kevalam sahāḥ.

(Tvam) You (tam) Your (indra) Controller of senses (parvatam) clouds, modifications of mind (mahām) great (urum) vast (vajreṇa) with weapons (vajrin) holder of weapons (parvaśāś) part by part (cakartitha) cut into pieces to destroy (Avāṣrjah) build (nivṛtāḥ) frees (sartavā) for flowing (apah) waters, knowledge (satrā) form of truth (viśvam) all pervading (dadhiṣe) hold (kevalam) blissful (sahāḥ) strength.

Elucidation :

Why shall we destroy the modifications of mind?

You, the Supreme Indra, God! Inspire and instruct Your Indra persons, the controller of senses and the holder of weapons (senses) to cut into pieces and to destroy the huge and vast modifications of mind, part by part. Therefore, build the freed mind to follow the divine knowledge which is the form of Supreme Truth that the all pervading God is blissful and hold the Supreme Strength.

Scientific meaning : God, the Supreme Energy, empowers the Sun, who is holding the supreme weapon of energy, to cut the huge and vast clouds into pieces, thereafter, to flow waters as all pervading energy and strength.

Practical utility in life :

Why does Sun destroy the clouds?

How to destroy the mountains of household problems?

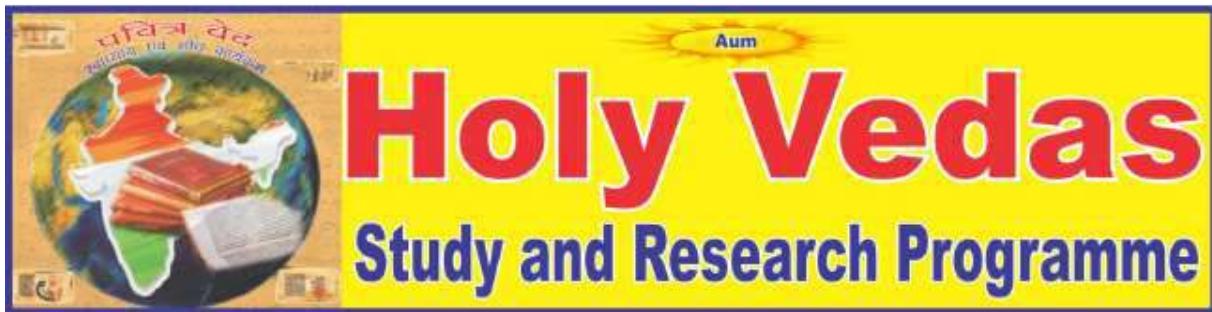
It's necessary to break the clouds in the sky, to spread the water on earth to ensure the free flow of energy and strength for the sustenance of all living beings on earth. Sun does this job.

To reach and realise the Supreme Truth of this creation, one needs to destroy the modifications of mind. A yogi, an Indra person, by controlling his senses does this and realise that only God, the all pervading, is blissful.

For ordinary householders, there are mountains of pains, sufferings and difficulties. They should be inspired to follow the path of Indra i.e. exercising control over senses, putting a limit on the desires beyond basic needs, setting at rest the ego of name and form because ego is actually a non est but builds up the mountains of problems.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.1

मा नो अस्मिन्मधवन्यृत्स्वंहसि नहि ते अन्तः शवसः परीणशे ।
अक्रन्दयो नद्यो३ रोरुवद्धना कथा न क्षोणीर्भियसा समारत ॥

Mā no asmin maghavan pṛtsvar̄hasi nahi te antah śavasaḥ parīṇaśe.
Akrandayo nadyo3 roruvad vanā kathā na kṣonīrbhiyasā samārata.

(Mā) Not (Nah) us (asmin) this (maghavan) Giver of all wealth (pṛtsu) in wars, in conflicts (am̄hasi) in sins (nahi) not (te) yours (antah) end, limit (śavasaḥ) of powers (parīṇaśe) can be attained, can be surpassed (Akrandayah) boggled in, trapped in, cry in (Nadyah) to rivers (Roruvat) roar (vanā) forests (kathā na) why not (kṣonīlh) earth and her children (bhiyasā) out of fear (samārata) attain, receive, accompany.

Elucidation :

Who has made rivers and forests to roar?

Does anyone wishes to be trapped in wars, conflicts and sins?

O God, The Giver of all wealth! Let us not boggled, cry, trapped in wars, conflicts and sins etc. as You make the rivers and forests roar (while in jig-jag manner). No one can attain, surpass the ends, limits of Your powers. Therefore, out of fear, why not this earth and her children attain, receive and accompany You.

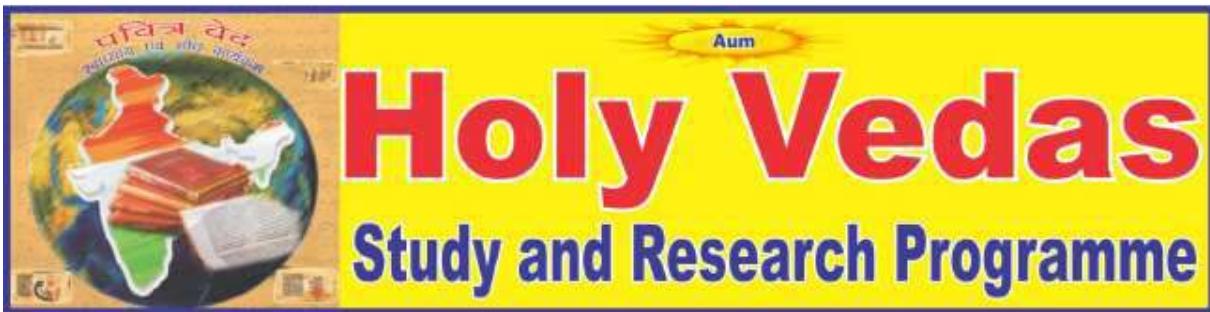
Practical utility in life :

Why shall we accompany God?

No one wishes to spend life in wars, conflicts and sins. All rivers roar while moving in jig-jag manner. All forests, developed in totally unplanned manner, roar in lonliness. We cannot visualize the vast, unlimited and divine powers of God who created all rivers and forests. A life of conflicts and sins is like rivers and forests. Everyone should fear from such a life and therefore, everyone must accompany the Supreme Divine powers to avoid the life of wars, conflicts and sins.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.2

अर्चा शक्राय शाकिने शचीवते शृण्वन्तमिन्द्रं महयन्नभिष्टुहि ।
यो धृष्णुना शवसा रोदसी उभे वृषा वृषत्वा वृषभो न्युंजते ॥

Arcā śakrāya śākine śacīvate śṛṇvantamindram mahayannabhi ṣtuhi.
Yo dhrṣṇunā śavasā rodasī ubhe vṛṣā vṛṣatvā vṛṣabho nyṛñjate.

(Arcā) Offer homage (śakrāya) to the most powerful (śākine) empowering all (śacīvate) most knowledgeable, the basis of all knowledge (śṛṇvantam) listens all (indram) God (mahayan) while paying homage (abhi ṣtuhi) praise and glorify Him (Yah) who (dhrṣṇunā) with crushing (śavasā) power (rodasī) earth and space, body and mind (ubhe) both (vṛṣā) being powerful to rain (vṛṣatvā) with the power to rain (vṛṣabhah) rains (His blessings) (nyṛñjate) continuously arrange, decorate.

Elucidation :

Who showers the powers and knowledge on us?

We offer our homage to the Supreme Indra, God, the most powerful to empower all, the most knowledgeable, the basis of all knowledge, who listens all; being powerful to rain, continuously arrange, decorate the rains of His blessings on us with His power to rain. He showers these rains on both the earth and space i.e. our body and mind. Therefore, we should praise and glorify Him while paying our homage.

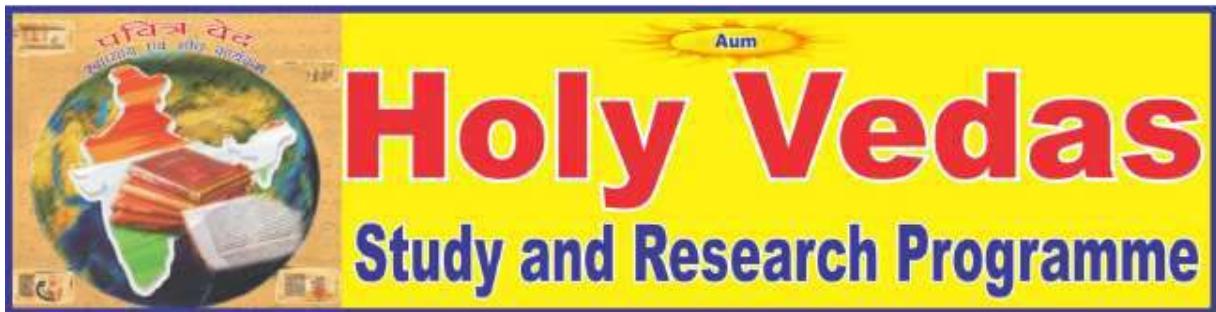
Practical utility in life :

What is the basis of our physical and mental health?

Our physical and mental, material and spiritual, all powers are gifted by the Supreme Power and Supreme Knowledge, God. With His grant of physical powers, we remain disease free and with His knowledge, we live trouble free and tension free life. The very foundation of our physical and mental health is our spiritual level connectivity with the Supreme Energy, God. Therefore, the spiritual course is the very basis of our healthy life in totality.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.3

अर्चा दिवे बृहते शूष्यं॑ वचः स्वक्षत्रं॒ यस्य धृषतो धृषन्मनः॑ ।
बृहच्छ्वा असुरो बर्हणा कृतः पुरो हरिभ्यां॒ वृषभो॒ रथो॒ हि॒ षः॑ ॥

Arcā dive bṛhate śūṣyam vacah svakṣatram yasya dhṛṣato dhṛṣanmanah.
Bṛhacchrvā asuro barhaṇā kṛtah puro haribhyām vṛṣabho ratho hi sah.

(Arcā) Pray, worship (dive) for the enlightened (bṛhate) the biggest (śūṣyam) power, strength (vacah) speeches (in glorification) (svakṣatram) strength of self, soul (yasya) whose (dhṛṣataḥ) of destroyer (of enemies) (dhṛṣat) destroying (manah) mind (Bṛhat) of the biggest (strength) (śravāh) listener (asurah) enlightening (barhaṇā) for increasing (kṛtah) Creator (purah) promoter (haribhyām) with powers of senses (vṛṣabhaḥ) rains (rathah) chariot, carrier (hi) certainly (ṣah) He.

Elucidation :

How does the Biggest Listener, God, enlighten us and become our charioteer? Pray to the Biggest Listener and the most Enlightened. Your speeches in glorification to the Supreme Power would increase your powers and strength. One whose mind is full of strength of his soul can destroy his enemies with his controlling powers. Then only the Biggest Listener, God, provides enlightenment to such a controller and he is promoted in all acts. God certainly becomes a charioteer for such a person by providing him powers of senses and raining all bliss upon him.

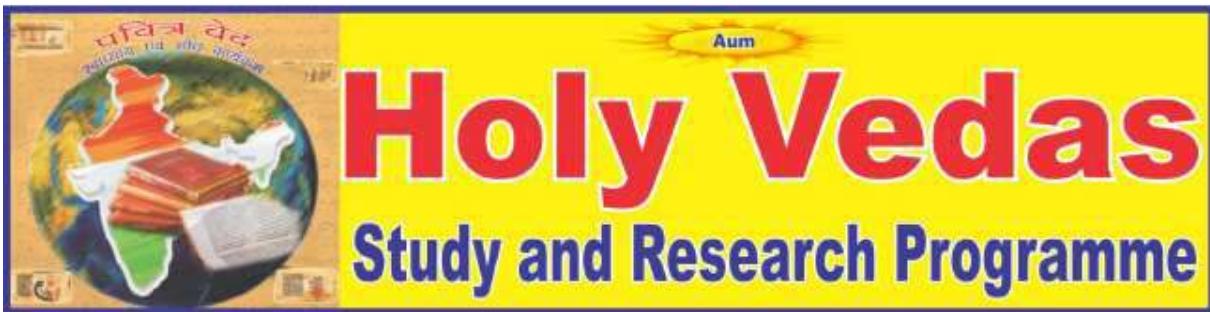
Practical utility in life :

How to share the powers of our elders?

If we love the Supreme Power, setting at rest all our ego and desires, He would certainly regard our life by protecting and promoting us in all ways. This is a universal practical principle even in our worldly life relations. You love and pay respect to your elders, you will certainly be blessed with a share in their powers and strength.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.4

त्वं दिवो बृहतः सानु कोपयोऽ व तमा धृषता शम्बरं भिनत् ।
यन्मायिनो व्रन्दिनो मन्दिना धृषच्छितां गभस्तिमशनिं पृतन्यसि ॥

Tvam̄ divo br̄hataḥ sānu kopayo 'va tmanā dhṛṣatā śambaram̄ bhinat.

Yan māyino vrandinō mandinā dhṛṣacchitāṁ gabhastimaśanīṁ pṛtanyasi.

(Tvam̄) You (divah) with light, with divinities (br̄hataḥ) increasing (sānu) top of clouds (kopayah) shaken (ava – to be prefixed with bhinat) (tmanā) wicked minds (dhṛṣatā) with power to destroy (śambaram) covering peace (with evil thoughts) (bhinat – ava bhinat) cut and finish (Yat) when (māyinah) with illusive cover (of evil thoughts) (vrandinah) group of evil minds (mandināh) enjoying (evil minds) (dhṛṣat) destroying power (śitām) intense (gabhistim) with power of knowledge (aśanīm) with power of acts (pṛtanyasi) inspire to win.

Elucidation :

Who shakes the top of clouds of evils and how?

With Your Supreme Light and with Your Divinities, You shake the top of increasing clouds. With Your power to destroy, You cut and finish wicked minds that cover the peace (with evil thoughts). When group of evil thoughts live in enjoyment with the illusive cover of evil thoughts, You apply Your intense destroying power and inspire them with powers of knowledge and powers of activity.

Practical utility in life :

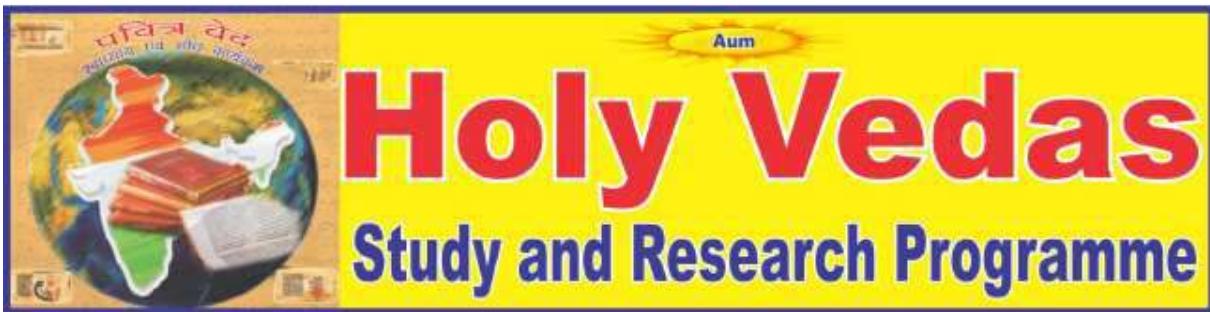
How can we be inspired to destroy all evil thoughts?

Modifications of evil nature are always at rise unless a resolve is made to finish them off from life with the help of Supreme Divine Power. It means only a complete submission to the Supreme Divinity can help in this direction. The modifications of evil thought practically cover the peace of mind. These modifications keep on increasing and make a huge cloud like a group and live in that so-called enjoyment. But the Supreme Light inspires such people at every step of life with two dimensions :-

- A. Power of knowledge and
- B. Power of activities.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.5

Ni yadvṛṇakṣi śvasanasya mūrdhani śuṣṇasya cid vrandino roruvad vanā.

Prācīnena manasā barhaṇāvatā yadadyā cit kṛṇavah kastvā pari.

(Ni – To be prefixed with vṛṇakṣi) (Yat) when (vṛṇakṣi - ni vṛṇakṣi) continuously attacks, separates (śvasanasya) of breath (mūrdhani) mind (śuṣṇasya) of destroying, of exploiting (cit) also, like (vrandinah) groups of evil thoughts (roruvat) roar (vanā) forests (Prācīnena) ancient, continuously (manasā) with mind, with science (barhaṇāvatā) with multiple intellect (yat) when (adya cit) today also (kṛṇavah) does (kah) who is (tvā) your (pari) away, above.

Elucidation :

Can anyone remain away from God?

Who is above all living beings as a protection umbrella?

When You (God) continuously attack, separate breath of those evil thoughts that destroy mind and also the groups of evil thoughts that roar in the forest. With multiple intellects, You do it today also as if You have been doing it with mind, with science, continuously since ancient times, who is away from You? The obvious answer is no one is away from God.

When You (God) continuously attack, separate breath of those evil thoughts that destroy mind and also the groups of evil thoughts that roar in the forest. With multiple intellects, You do it today also as if You have been doing it with mind, with science, continuously since ancient times, who is above You?

The obvious answer is the Supreme Power, God, is above all such controller of senses, like a protective umbrella.

Practical utility in life :

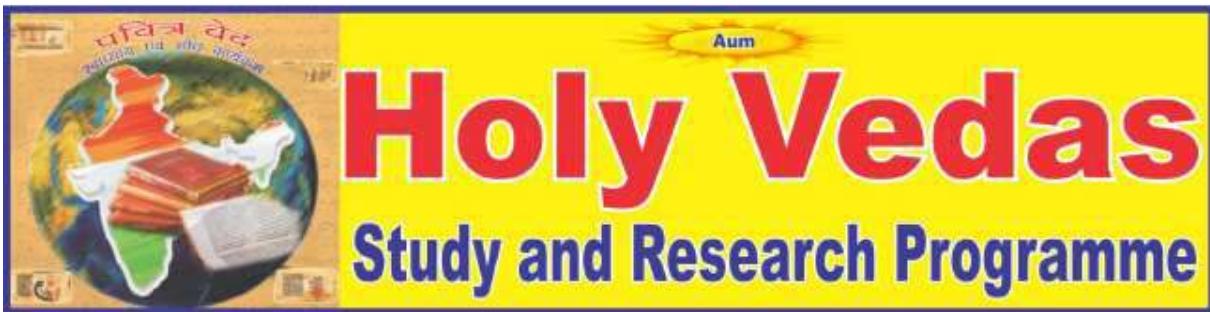
Who are the lions of Kaliyuga?

Who is the hunter of these lions of Kaliyuga?

Evil thoughts destroy human beings. God is the only Supreme Power who can destroy all evil thoughts. Practically, evil thoughts roar in the present day society, as if lions roar in forests. Only a brave hunter can kill lions of forests, similarly only God and His brave devotees who are controller of senses can destroy all evil thoughts of the lions of Kaliyuga. Everyone wishes to live a life free from evil thoughts. Therefore, everyone is bound to live a life near Divinity with awareness that the Divine Supreme is the only protective umbrella of all and none can live without Him.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.6

त्वमाविथ नर्यं तुर्वशं यदुं तवं तुर्वीति॒ वय्यं शतक्रतो॑।
त्वं रथमेतशं कृत्व्ये॒ धने॒ त्वं पुरो॒ नवतिं॒ दम्भयो॒ नव॑॥

Tvamāvitha naryam turvaśam yadum tvam turvītim vayyam śatakrato.

Tvam rathametaśam kṛtvye dhane tvarī puro navatim dambhayo nava.

(Tvam) You (āvitha) protect (naryam) in human beings (turvaśam) best, with speed (yadum) engaged in efforts (tvam) You (turvītim) destroying evils and wicked (vayyam) best in knowledge and activity (śatakrato) having unlimited knowledge and innumerable acts (Tvam) You (Ratham) chariot, body (etaśam) horses, senses of action (kṛtvye dhane) for earning wealth (tvam) You (purah) cities (navatim) ninety (dambhayaḥ) destroy (nava) nine.

Elucidation :

Whom does God protect?

You (God), the performer of unlimited knowledge and innumerable acts, protect following persons :-

- A. Naryam - human beings,
 - B. Turvaśam - best, with speed,
 - C. Yadum - engaged in efforts,
 - D. Turvītim - destroying evils and wicked,
 - E. Vayyam - best in activity and knowledge,
 - F. Ratham etaśam kṛtvye dhane –sense organs of body for earning wealth.
- On the other hand, You destroy ninety nine cities, forts of evils and wicked.

Practical utility in life :

How does God give rewards of all acts and thoughts?

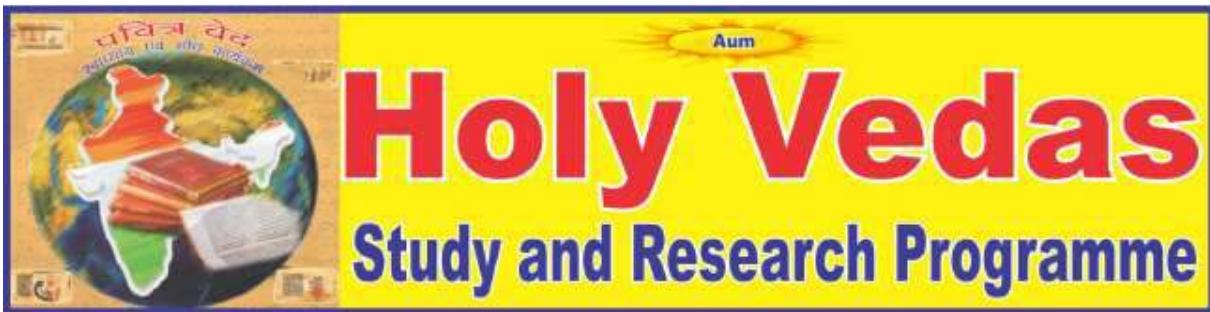
What is the real import of the word ‘śatakrato’?

God has unlimited powers and all knowledge. He knows all our acts and thoughts. He is empowered to give the rewards of all our acts and thoughts. Our good acts and thoughts result in good, whereas bad result in bad.

This verse supports the principle of action and reward i.e. karma phala. This is the thunderbolt power of God who is the performer of innumerable acts. Therefore, with His unlimited knowledge of every act of every being and even the small vibrating thoughts of mind, He rewards every act suitably.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.7

स घा राजा सत्पतिः शूशुवज्जनो रातहव्यः प्रति यः शासमिन्वति ।
उकथा वा यो अभिगृणाति राधसा दानुरस्मा उपरा पिन्वते दिवः ॥

Sa ghā rājā satpatih śūśuvajjano rātahavyah prati yah śāsaminvati.

Ukthā vā yo abhigrñāti rādhasā dānurasmā uparā pivate divah.

(Sa) He (ghā) certainly is (rājā) regulator of life, enlightened with judicious mind (satpatih) protector of truth (śūśuvat) competent to promote himself (janah) man (rātahavyah) giver of oblations (prati – to be prefixed with śāsam) (yah) who (śāsam – prati śāsam) rule and dictates of God (invati) pervade, obey (Ukthā) the divine instructions (vā) and (yah) who (abhigrñāti) preaches for all (rādhasā) with the purpose of gaining (dānuh) Giver (of all rewards) (asmā) to him (controller of senses) (uparā) upper, divine (pivate) completes (divah) divine knowledge.

Elucidation :

What are the features of a divine king?

He certainly is the king, the regulator of life, enlightened with judicious mind, who is :-

- (A) Satpatih - protector of truth,
- (B) śūśuvat janah – man competent to promote himself,
- (C) Rātahavyah - giver of oblations,
- (D) Prati śāsam invati – pervade, obey rule and dictates of God
- (E) Ukthā abhigrñāti rādhasā – preaches the divine instructions for all with the purpose of gaining.

Giver of all rewards i.e. God completes him with upper divine knowledge - dānuh asmā uparā pivate divah.

Practical utility in life :

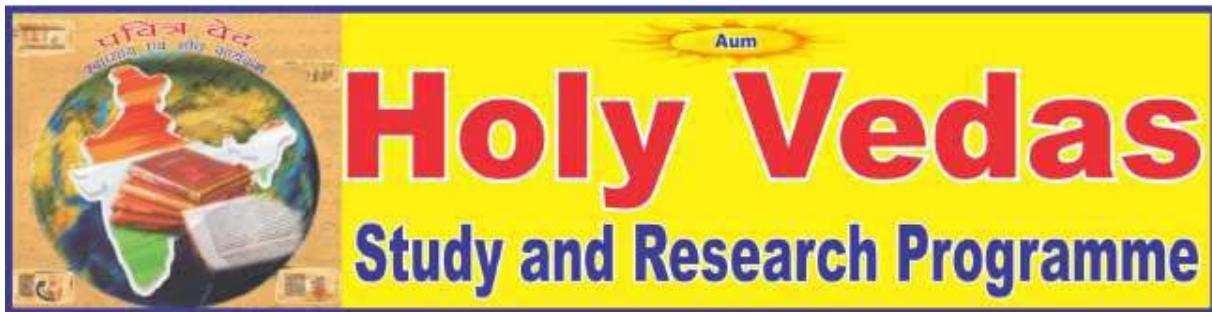
How can a head in modern age become a divine head?

A true king is not the one who is forcefully imposed as a king over the people or who manages the weakness of election process to get himself elected as a king. A true king must have the important features of a king as mentioned in this verse like – truthfulness, competence to promote people, a good donor, pervading in the rules and dictate of God, preaches divine instructions.

God completes only such a king with upper divine knowledge. A head of the family, organisation or a nation should also bear these features to establish himself as a divine head.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.8

असमं क्षत्रमसमा मनीषा प्र सोमपा अपसा सन्तु नेमे।
ये त इन्द्र ददुषो वर्धयन्ति महि क्षत्रं स्थविरं वृष्यं च ॥

Asamāṁ kṣatram asamā manīṣā pra somapā apasā santu neme.

Ye ta indra daduṣo vārdhayanti mahi kṣatram sthaviram vṛṣṇyam ca. (Asamāṁ) Unparallel (kṣatram) power, strength (asamā) unparallel (manīṣā) intellect (pra – to be prefixed with santu) (somapā) protector of virtues (apasā) with acts (of welfare) (santu - pra santu) highly increased (neme) these (Ye) those (Te) for you (indra) God (daduṣo) dedicated (vārdhayanti) increase (mahi kṣatram) great power, strength (sthaviram) greatly established (vṛṣṇyam) rain of welfare (ca) and.

Elucidation :

Who gets unparallel powers and intellect?

Indra, the Supreme Energy, God! Those who are fully dedicated to You, have unparallel power, strength and intellect. Those protector of virtues are highly uplifted, increased with their acts of welfare. They are also increased in the great power/strength and they are greatly established to rain the welfare on people.

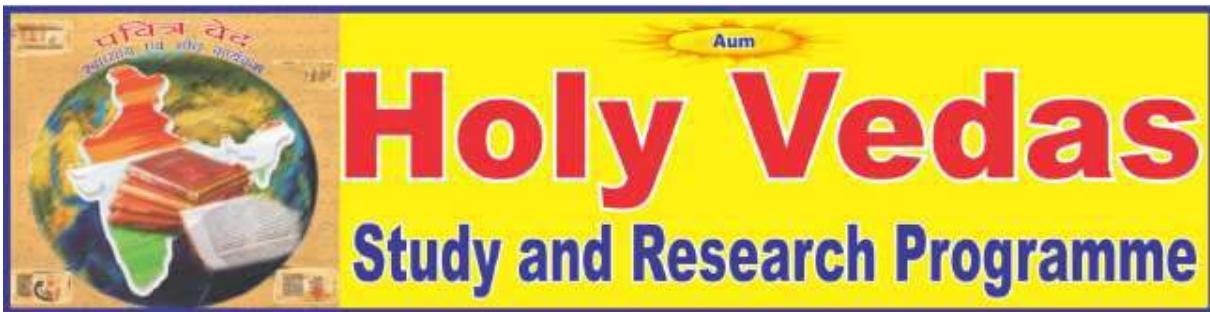
Practical utility in life :

What's the importance of complete dedication?

Complete dedication to God is a very strong factor in increasing one's powers and strength. Complete dedication means complete surrender to God. This would help us in becoming egoless and desireless. Once we become egoless, our dedication becomes pure and we get more closer to the Supreme Pure. Similarly, once we dedicate our efforts in the lotus feet of our parents, we get more love from them. Dedication to guru fetches more knowledge with love. Dedication to the heads of organisations fetches more powers and more faith. Dedication to the nations earns the status of a great patriot and a great leader. Therefore, dedicate fully to your work to get unparallel results.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.9

Tubhyedete bahulā adridugdhāścamūṣadaścamasā indrapānāḥ.

Vyaśnuhi tarpayā kāmameśāmathā mano vasudeyāya kṛṣva.

(Tubhya) For you (Ita) certainly (ete) these (bahulā) in large amount (adri dugdhā) complete virtues for the tree i.e. body, divine knowledge from nature (camūṣadah) due to sit in body (camasāḥ) for drinking in the body (indra pānāḥ) for being protected by an Indra purusha, for attaining, realising the Supreme Indra (Vyaśnuhi) specially pervade them in body (tarpayā) satisfy (kāmam) desires (eśām) of these (athā) hence (manah) to the mind (vasudeyāya) Giver of wealth (kṛṣva) make.

Elucidation :

For whom are virtues made?

Where do virtues live?

What help do these virtues give us?

What should be our principal desire?

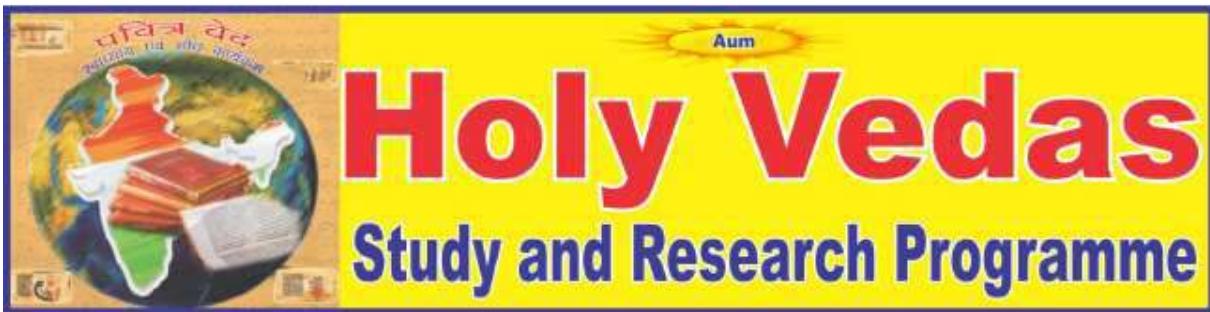
Complete virtues are meant for this tree i.e. body. Virtues are divine knowledge received from nature. These are in large amount certainly for you. These are due to live in this body, for consumption by this body. These virtues can be protected by an Indra Purusha only and these virtues will help you attain and realise the Supreme Indra. An Indra purusha should specially pervade his body and whole life with these virtues to satisfy his desire for these virtues. Hence, an Indra purusha makes his mind as a giver.

Practical utility in life :

How is a virtuous life the most important for a spiritual and noble social life? Virtues means ‘excellence in being’. Virtuous life is the most important foundation of progress on spiritual path to God-realisation, but it is equally important for a noble social life and all round stable progress in all walks of life. Only a human life is meant to be a virtuous life. Only a virtuous life can strive for human excellence and discover a dignity and the core Supreme Power of God within. Without virtues, a man lives with animalistic vices like chasing our likes and attacking dislikes, developing inimical relationship. Education combined with virtuousness makes a complete human life sensitive to its divine purposes. Only such a life can be a life of yajna, doing welfare of all.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.10

अपामतिष्ठद्वरुणहवरं तमोऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषु पर्वतः ।
अभीमिन्द्रो नद्यो वव्रिणा हिता विश्वा अनुष्टाः प्रवणेषु जिघते ॥

Apām atiṣṭhad dharunahvaram tamo 'ntarvr̄trasya jathareṣu parvataḥ.

Abhīmindro nadyo vavriṇā hitā viśvā anuṣṭhāḥ pravaṇeṣu jighnate.

(Apām) Of waters, of people (atiṣṭhat) establish, stops (dharuṇa hvaram) holding vices (tamah) darkness (antah) inside (vṛtrasya) clouds, modifications of mind (jathareṣu) of stomach (parvataḥ) flying in sky like birds, flying without destination (Abhi) towards, in front of (Īma) now certainly (indra) Supreme Power, controller of senses, Sun (Nadyah) rivers, flowing like water (vavriṇā) see, realise (hitāḥ) moving every moment (viśvāḥ) all (anuṣṭhāḥ) following the established (pravaṇeṣu) with humbleness (jighnate) progress.

Elucidation :

Who makes the clouds move towards rivers?

Who destroys the modifications of mind and makes us move towards divinity?
Scientific meaning : Water stops and is established in the stomach of clouds, flying in the sky holding vices of darkness. Now certainly when they appear in front of the Sun, they see a flow towards rivers moving every moment, always following the established nature, progresses with humbleness.

Spiritual meaning : People are established in the stomach of modifications of mind, flying undestined like clouds and like birds, holding all vices and particularly the biggest of all vices, the ignorance. Now certainly when these vices appear in front of a controller of senses and the Supreme Power, God, they realise that every moment they are moving towards divinity following the established nature of their existence, progressing with humbleness.

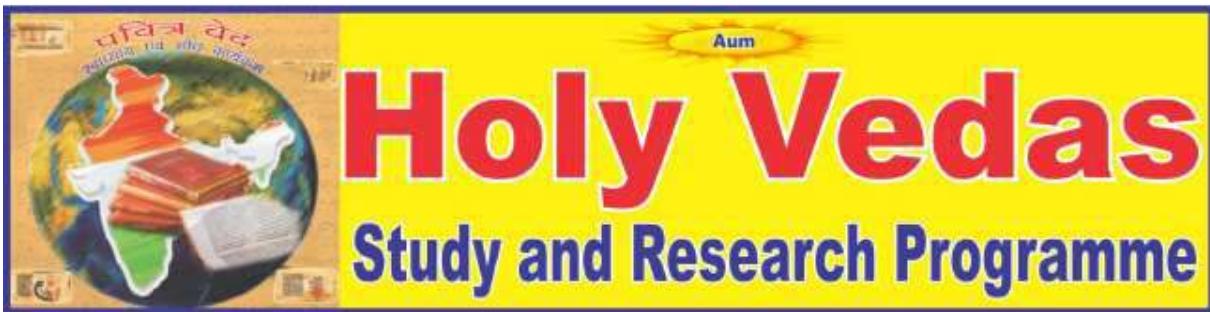
Practical utility in life :

What is the status of modifications of mind?

Modifications of mind are non-est but certainly keep us trapped. They have no destination but are the cause of our ignorance. To destroy these modifications, one need to be an Indra i.e. the controller of senses, only then he will realise the Supreme Indra. Such a life follows the natural behaviour of a human being i.e. humbleness and welfare of all like rivers, always and every moment.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.54.11

स शेवृधमधि धा द्युम्नमस्मे महि क्षत्रं जनाषङ्गिन्द्र तव्यम् ।
रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन्नाये च नः स्वपत्या इषे धा ॥

Sa śevṛdhamadhi dhā dyumnamasme mahi kṣatram janāśālindra tavyam.

Rakṣā ca no maghonah pāhi sūrīn rāye ca nah svapatyā iṣe dhāḥ.

(Sah) He (śevṛdham) gives happiness and promotes (adhi dhāḥ) holds in plenty (dyumnam) splendid wealth (asme) for us (mahi) great (kṣatram) powers and strength, kingdom (janāśāt) tolerating people (indra) Supreme Power, God (tavyam) powerful (Rakṣā) protect (ca) and (nah) our (maghonah) sacrificing, performing yajna (pāhi) protect (sūrīn) great intellectuals (rāye) for wealth (ca) and (nah) for us (svapatyā) for best progeny (iṣe) for your desire, company (dhāḥ) hold.

Elucidation :

What does God hold for us and why?

Whom does God protect?

Whom does God tolerate?

He, the Supreme Energy, God, holds the splendid wealth for us for giving happiness to us and for promoting us. He holds all great powers and strengths. He tolerates people. He protects those who are sacrificing and performing yajna. He protects all great intellectuals. He holds and protects wealth for us and for our progeny. He holds us also, so that we may desire Him and His company. Otherwise He tolerates rest of all.

Practical utility in life :

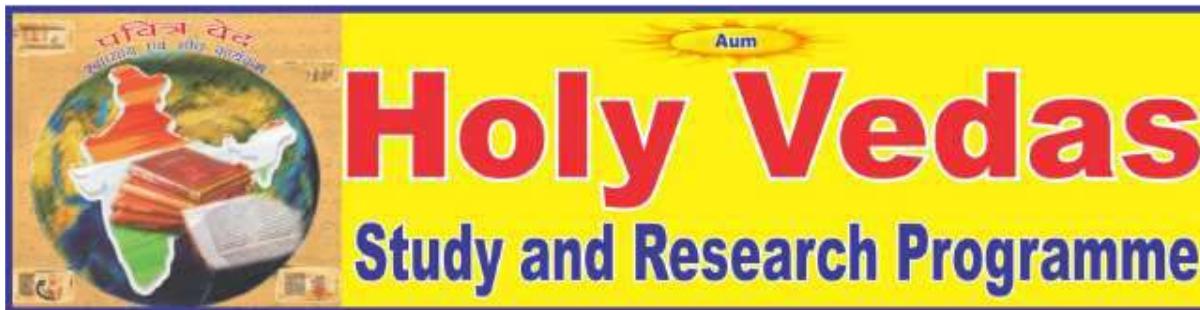
Whom do governments protect?

Whom do governments tolerate?

Every nation is supposed to be a welfare state. Governments hold all wealth and properties for the happiness of citizens. A good government promotes great intellectuals and those citizens who perform sacrifices i.e. yajna for the welfare of all. A good government ensures happiness of the future generations also. Governments tolerate other people who are neither intellectuals nor perform yajna acts. Every power, may it be a higher authority or our parents, holds nobility and tolerate others.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



RV 1.51.1

अभि त्यं मेषं पुरुहृतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् ।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषा भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥ १ ॥

Abhi tyam meṣam puruhūtam ṛgmiyam indram gīrbhīmadatā vasvo arṇavam.
yasya dyāvo na vicaranti mānuṣā bhuje mamhiṣṭham abhi vipram arcata. (1)

(Abhi – To be prefixed with madat) (tyam) that (meṣam) rainer (puruhūtam) praised, called by all (ṛgmiyam) with Veda mantra (indram) God, Sun, the Great king, Controller of senses (gīrbhīh) with speeches of knowledge (madata – abhi madat) makes them happy every moment (vasvah – for abodes (arṇavam) sea of wealth (yasya) whose (dyāvah) rays of Sun (na) like (vicaranti) spread everywhere (mānuṣā) for men (bhuje) for consumption (mamhiṣṭham) the Supreme Giver (abhi – to be prefixed with arcata) (vipram) specially completing (arcata – abhi arcata) worship every moment.

Elucidation :-

How shall we praise and invoke God?

How much time shall we worship God?

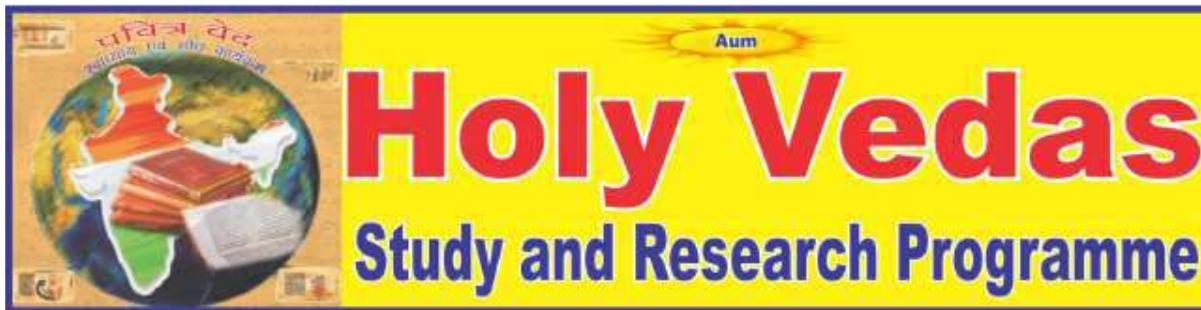
The Rainer, who makes everyone happy every moment by providing sea of wealth for abodes of all, is praised and called by all with Ved mantras and speeches of knowledge. His grants are spread everywhere, like rays of Sun, for the consumption of men. He is the Supreme Giver and specially completing for everyone. Therefore, He is to be worshipped every moment.

Practical Utility in Life :-

Who is the Universal Giver?

God is the Universal Giver. He gives every moment and He gives to all. But we should realise that we are not equally thankful to Him. We should worship Him every moment as thanks for His every moment grants beginning from breath to all sorts of wealth.

Similarly, our parents and great teachers are also the givers of our body and mind, respectively. We should worship them also for all they have done for us.



RV 1.51.2

अभीमवन्वन्स्वभिष्टिमूतयोऽन्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् ।

इन्द्रं दक्षास ऋभवो मदच्युतं शतक्रतुं जवनी सूनृतारुहत् ॥२॥

Abhīmavavansvabhiṣṭimūtayo 'ntarikṣaprām taviṣībhīr āvṛtam.

Indram dakṣāsa ṛbhavo madacyutam śatakratum javanī sūnṛtāruhat. (2)

(Abhi im avanvan) Every moment certainly ensures progress (svabhiṣṭim) the best desire of self-realisation (ūtayah) protecting (antarikṣaprām) completing everyone in space, in peace (after removing one's weaknesses) (taviṣībhīh) with all powers (physical, mental and spiritual) (āvṛtam) covered (Indram) God, Sun, the Great king, Controller of senses (dakṣāsa) competent to increase strengths (ṛbhavah) enlightened mind (madacyutam) devoid of ego (śatakratum) performing hundreds of acts (javanī) inspiring for the best acts (sūnṛtā) truthful speeches (āruhat) established.

Elucidation :-

How does Indra help us?

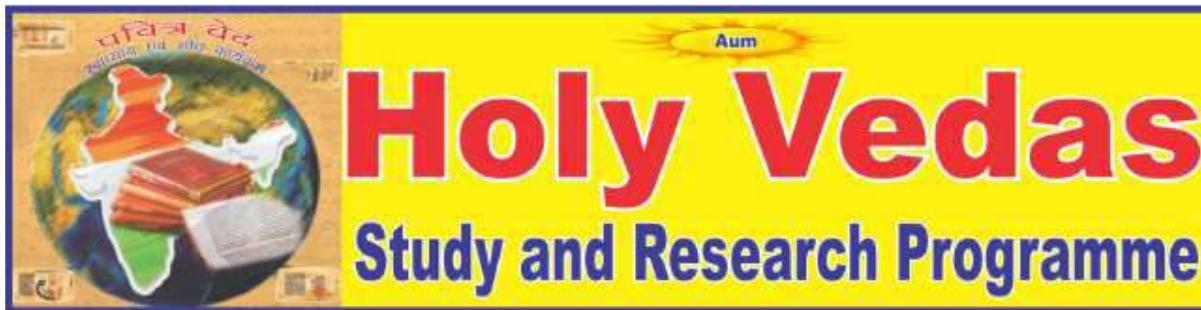
What features shall we ensure to get the help of Indra?

Indra i.e. God, Sun, the Great king, Controller of senses, help us in following achievements :-

- (i) Abhi im avanvan – Every moment certainly ensures progress,
- (ii) Svabhiṣṭim – the best desire of self-realisation,
- (iii) Antarikṣaprām - completing everyone in space, in peace (after removing one's weaknesses),
- (iv) Taviṣībhīh āvṛtam – cover us with all powers (physical, mental and spiritual).

All the aforesaid achievements are possible only if we ensure following features in life :-

- (i) Dakṣāsa – Competent to increase strengths,
- (ii) ṛbhavah – We enlighten our mind,
- (iii) Madacyutam - We live a life devoid of ego,
- (iv) śatakratum - Be prepared to perform hundreds of acts,



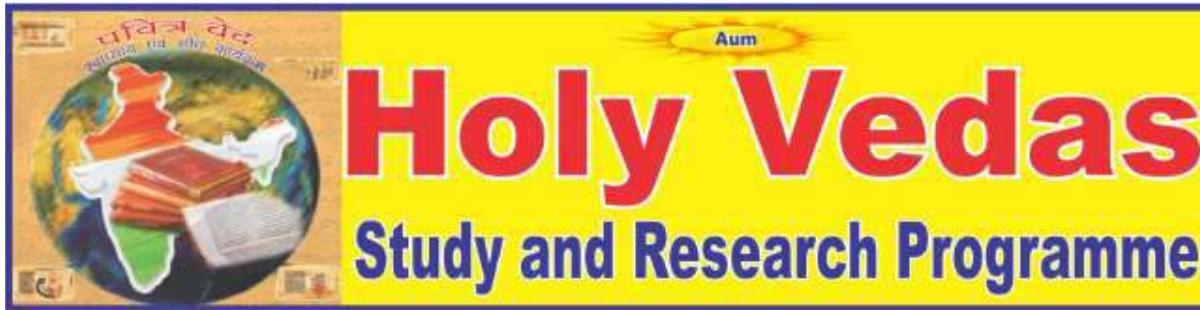
- (v) Javanī – We inspire ourself for the best acts with speed,
- (vi) Sūnṛtā āruhat – We establish truthful speeches in us.

Practical Utility in Life :-

What are the inputs for a great and divine life?

There are three dimensional powers of Indra, God and Sun on the first and second dimension, the great kings including the great politicians, social workers and the Indra persons i.e. controller of sense on the third dimension. All these grant us all the powers needed for a great and divine life, provided we ensure a focus on our inputs :-

- (A) Desire to gain competence in our respective working field.
- (B) Enlighten our mind with all round relevant knowledge.
- (C) Free ourself from egoistic entanglements.
- (D) Preparedness to do all jobs requiring our indulgence.
- (E) Doing best jobs without wasting time.
- (F) A divine truthful speech.



RV 1.51.3

त्वं गोत्रामङ्गिरोभयोऽ वृणोरपोतात्राये शतदुरेषु गातुवित् ।
ससेन चिद्विमदायावहो वस्वाजावन्दिं वावसानस्य नर्तयन् ॥ ३ ॥

Tvam gotramāngirobhyo 'vr̥ñor apotātraye śatadureṣu gātuvit .
Sasena cidvimadāyāvaho vasvājāvadrim vāvasānasya nartayan . (3)

(Tvam) You (Gotram) great and divine knowledge (āṅgirobhyah) Angira etc. seers (avṛṇoh – apa avṛṇoh) make entitle (apa – prefixed with avṛṇoh) (uta) and (atraye) rise above the three pains (spiritual, mental and physical) (śatadureṣu) while in abode of body with hundreds of doors (gātuvit) show the path (Sasena) chief with his army (Cita) certainly (Vimadāya) devoid of the four – kama, krodha, lobha and moha (āvaho) make available (vasu) elements of abode (ājou) strength of enemies (adrim) mountainous ignorance (vāvasānasya) for best abode (nartayan) make it dance.

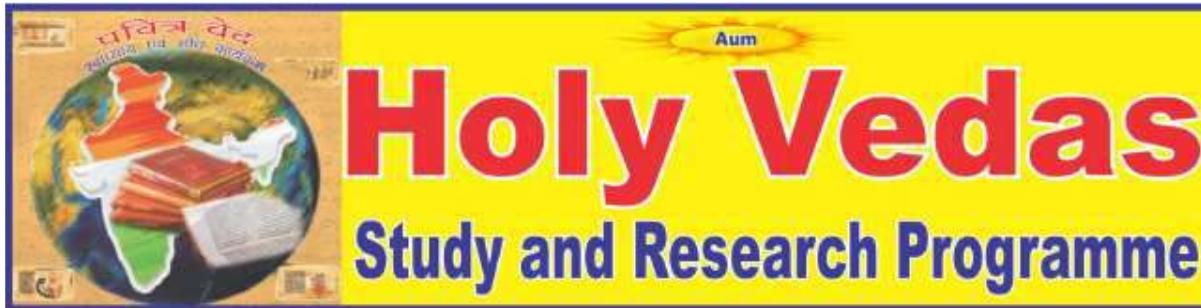
Elucidation :-

Who made Angirah etc. seers to receive Vedas?

Who makes us move on the path of self-realisation?

You made seers, like Angirah etc., entitled to receive great and divine Vedic knowledge and to rise above the three pains – physical, mental and spiritual. Thus, You showed them the path to self-realisation, while in abode in this body with hundreds of doors for evils to enter. Only due to your grace, they could progress on the spiritual path.

Such a chief (soul) with its army of senses and complete body certainly becomes devoid of four evils – sensual lust i.e. kama, anger i.e. krodha, greed i.e. lobha, and attachment i.e. moha. Such a chief certainly makes himself available to all essential divine elements of abode, strength of armies and makes it the best abode. He makes the mountainous ignorance to dance as per the tune of divinity.



Practical Utility in Life :-

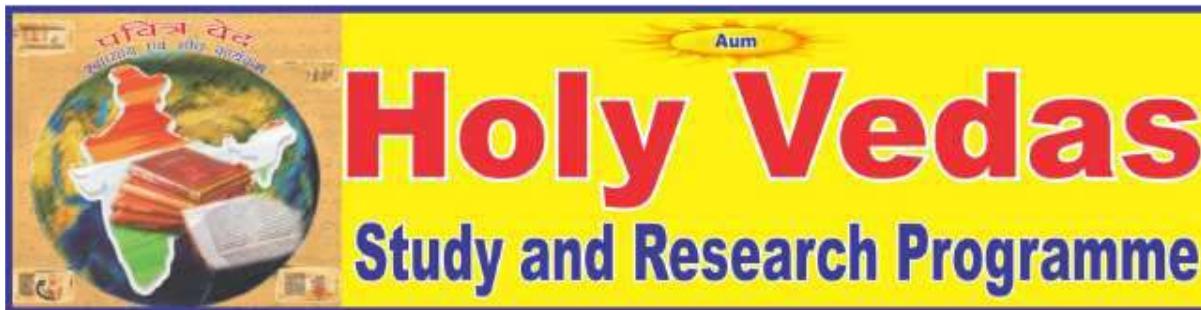
What can free us from all pains?

So long as a person is fixed in either of the three types of pains, he will obviously first try to get himself free from those pains. Till then he should remain engaged in acquiring knowledge to check and counter the three types of pains.

But more than the knowledge and efforts to get rid of the three pains, it's small blessings of God achieved through pure devotion i.e. bhakti that can free us from three pains. Then only time comes for progress on the spiritual path of self-realisation.

Once on this path of self-realisation, the following features appear in our life :-

- (i) Freedom from four evils – sensuality, anger, greed and attachment.
- (ii) We get divine abode – simple but happy living.
- (iii) Strength of our senses because of effective control over them.
- (iv) Mountainous ignorance dances to the tune of divine knowledge.



RV 1.51.4

त्वमपामपिधानावृणोरपाऽधारयः पर्वते दानुमद्भसु ।
वृत्रं यदिन्द्रं शवसावधीरहिमादित्सूर्यं दिव्यारोहयो दृशे ॥ 4 ॥

Tvamapāmapidhānāvṛṇarapā 'dhārayah parvate dānumad vasu.

Vṛtram yadindra śavasāvadhīrahim ādit sūryam divyārohayo dṛṣe. (4)

(Tvam) You (Apām) of waters, of subjects (Apidhānā) coverings (of desires and ignorance) (apāvṛnoh) uncover, remove (ā 'dhārayah) hold (parvate) mountainous (clouds) (dānumat) decorated with the sense of donation (vasu) wealth, water (Vṛtram) clouds (Yat) for what (indram) God, Sun, the Great king, Controller of senses (śavasā) with strength (avadhīh) kills, destroys (ahim) killer in all ways (of ego, desires) (ādit – aat ita) then only (sūryam) Sun, the light of knowledge (divi) in space of mind (ārohayah) establish (dṛṣe) for seeing, for realising (that light of permanent nature i.e. God).

Elucidation :-

Who uncovers the coverings of mind?

What's the result of uncovering the coverings of mind?

You, Indra (God, Sun, the Great king, Controller of senses) uncover the coverings of water and of your subjects.

You hold the mountainous clouds having water i.e. wealth decorated with the sense of donation for welfare.

Indra, the Sun, destroys the clouds with his strength for the reason of its being a killer in all ways. Thereafter, Sun, the light of true knowledge, is established in the space of mind for realising that permanent light of God.

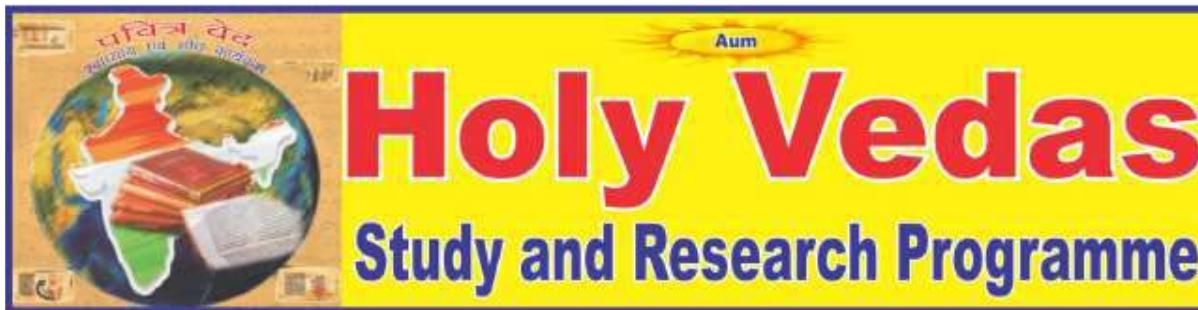
Practical Utility in Life :-

What shall we pray and concentrate in meditation?

Everyone should aspire to be an Indra in life i.e. a controller of senses. Once there is an effective control over senses, the coverings of ego and desires are destroyed, paving way for the splendid wealth for donation for the welfare of all. These coverings of ego and desires are the killers in all ways.

Therefore, to destroy these coverings, we must exercise an effective control over our senses.

After becoming a real Indra in our life, we should pray for the establishment of Sun of divine light i.e. God in the space of our mind. This prayer followed in long and continuous meditations would result in the uncovering of the coverings of mind.



RV 1.51.5

त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधभिर्ये अधि शुप्तावजुहवत् ।
त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहत्येष्वा विथ ॥ ५ ॥

Tvam māyābhīrapa māyino 'dhamah svadhābhīrye adhi śuptāvajuhvata.
Tvam piprornrmaṇah prārujah purah pra ṛjīsvānam dasyuhatyeṣvāvitha. (5)

(Tvam) You (Māyābhīh) with Your material creation, with tricks (apa – to be prefixed with adhamah) (māyinah) those trapped in material creation and tricks (adhamah) apa adhamah) keep away (svadhābhīh) with grains etc. (ye) those who (adhi śuptou) after others sleep (ajuhvata) steel, put in their own mouth (Tvam) You (Piproh) completing their own self (nr̄maṇah) having mind in human beings (God) (prārujah) destroy (purah) gathering, cities (pra – to be prefixed with vāvitha) (ṛjīsvānam) those moving on the path of nature, truthful (dasyu hatyeṣu) after killing evil minded (vāvitha – pra vāvitha) specially protect.

Elucidation :-

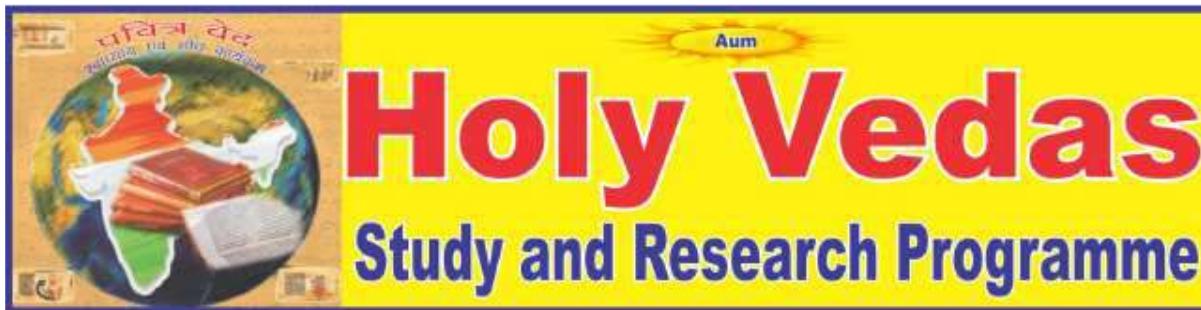
How does God keeps materialistic and tricky people away from Him?

What's the fate of selfish people?

Who are protected by God?

You, Indra, with Your material creation and with Your tricks, keep away all those trapped in the material creation and tricks, those who steel and put grains in their own mouth when others fall asleep.

You, Indra, destroy the gatherings and cities of those who keep on completing their own self, keep on fulfilling their own desires only, because You have put up Your mind in all human beings. It means You know the minds of all i.e. selfish people as well as of selfless people who always keep You only in mind.



Practical Utility in Life :-

What are the tricks of God?

What is the difference between a selfish person and a self-seeker?

God protects spiritualist people in a spiritual way by sitting close to them in their mind.

God destroys the selfish and materialist people by keeping them engaged in materialistic pursuits and desires etc. because God lives in their minds also and know them.

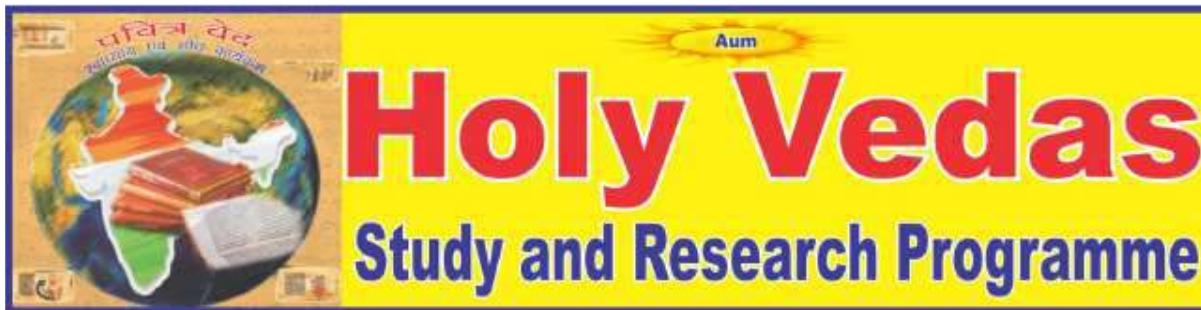
Spiritualist people keep on increasing their closeness to God day by day and consciously keep themselves away from materialistic pursuits, ego and desires.

God lives in the minds of the materialistic people also and knows their desires and ego. God keeps such people away from His realisation and destroys them with their materialistic achievements of ego and desires. Such people never come to the level of realising God i.e. the Supreme Consciousness and are thus, destroyed in materials. They play tricks and are destroyed by the tricks of God.

Spiritualist people live a life with nature and are always with truth. Whereas, materialist people live an unnatural, egoistic and desire fulfilling life.

Entanglement in materialist pursuits, ego and desires, generate all types of diseases and crimes and cause destruction of materials.

Whereas, freedom from diseases, desires and ego is the cause of great divine health for the spiritualists. They live a happy and peaceful life.



RV 1.51.6

त्वं कुत्सं शुष्णाहत्येष्वाविथारन्धोऽतिथिग्वाय शम्बरम् ।
महान्तं चिदर्दुदं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहत्याय जज्ञिषे ॥ ६ ॥

Tvam kutsam śuṣṇahatyeṣvāvithārandhayo 'tithigvāya śambaram.
Mahāntam cidarbudam nikramīḥ padā sanādeva dasyuhatyāya jajñiṣe. (6)

(Tvam - You (kutsam) to the Rishi who has destroyed all desires, greed and modulations (śuṣṇa hatyeṣu) after killing the exploitive (thoughts or people) (āvitha) protect (arandhayah) kill (atithigvāya) for the welcome of guests (people and new thoughts) (śambaram) mountainous power (Mahāntam) great and huge features (of knowledge and wealth) (Cit) and also (arbudam) magnified ego (nikramī) destroy (padā) in feet (sanāt) always (eva) only (dasyu hatyāya) for killing evils (jajñiṣe) born, made.

Elucidation :-

Who are the rishis?

Who protect the rishis?

How to welcome new thoughts and new people?

You, the Indra, protect the rishis who destroyed all desires, greed and modulations of mind etc. You kill their exploitive thoughts and people. You kill huge egoistic features of wealth and knowledge as if all these are crushed under the feet. You do all this for the welcome of guests i.e. new thoughts and people in life. You are there for killing all evils.

Practical Utility in Life :-

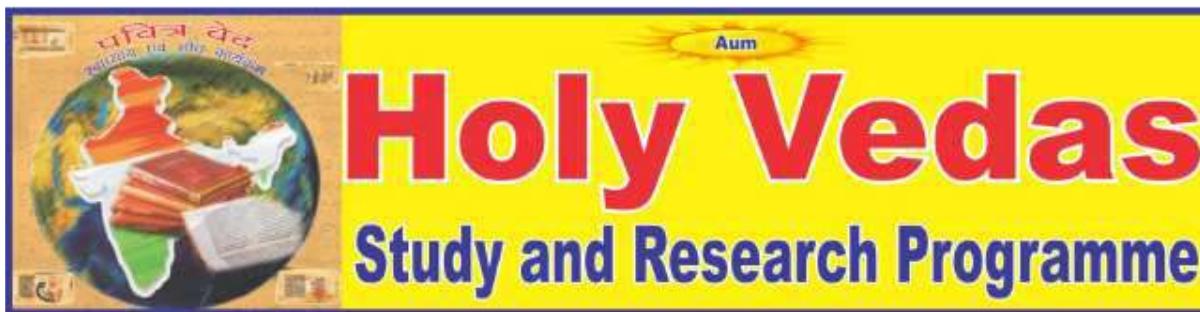
Who are holding features of an Indra?

Great powers are born to perform great jobs of protecting the virtues and destroying evils.

God is great and supreme. Sun follows the greatness and supremacy of God in principle.

Great king is also the one who follows this divine rule of protecting good and destroying bad.

Similarly, a person following this principle is called an Indra person.



RV 1.51.7

त्वे विश्वा तविषी सध्यग्निता तव राधः सोमपीथाय हर्षते ।
तव वज्रश्चकिते बाह्वोर्हितो वृश्चा शत्रोरव विश्वानि वृष्ण्या ॥ 7 ॥

Tve viśvā taviṣī sadhrayagghitā tava rādhah̄ somapīthāya harṣate.
Tava vajrāscikite bāhvohritō vr̄scā śatrorava viśvāni vr̄ṣṇyā. (7)

(Tve) In You (viśvā) all (taviṣī) strength, powers (sadhrayaka) to be used for all, jointly (hitā) established (tava) Your (rādhah̄) wealth, person performing worship (of God) (soma pīthāya) for protection and consumption of virtues (harṣate) happiness giving (Tava) Your (Vajrah) weapons (cikite) is known (bāhvo) in arms (hitah) is established (vr̄scā) destroy (śatroph) of enemies (ava) far off, protection (viśvāni) all (vr̄ṣṇyā) powers, strength.

Elucidation :-

What are the great powers and wealth for us?

All powers and wealth, that are established in you i.e. Indra, are to be used for all jointly. Your wealth is for the protection and consumption of virtues, therefore, it's happiness giving. People, who worship You, are also the producers of virtues for the happiness of all.

Your weapons (strength) established in arms is known to destroy the enemies and his strength far off. It's also known and is meant to protect all powers of brave people.

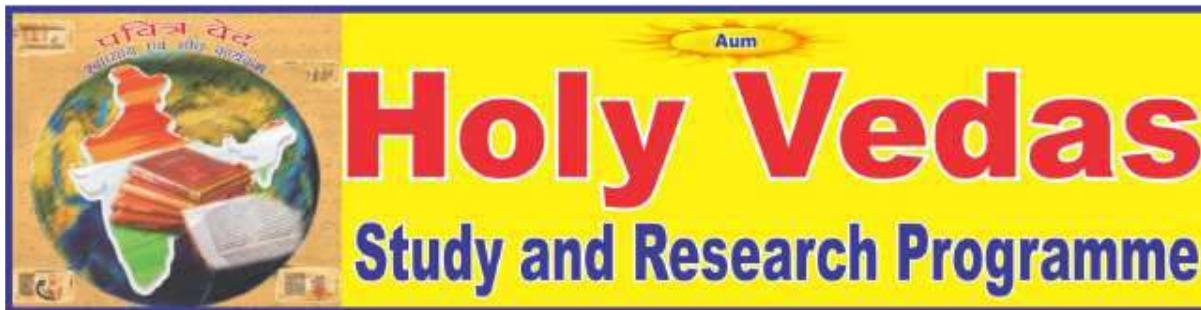
Practical Utility in Life :-

How to achieve great powers and wealth?

How to use great powers and wealth?

The purposes of all wealth and all powers are as follows :-

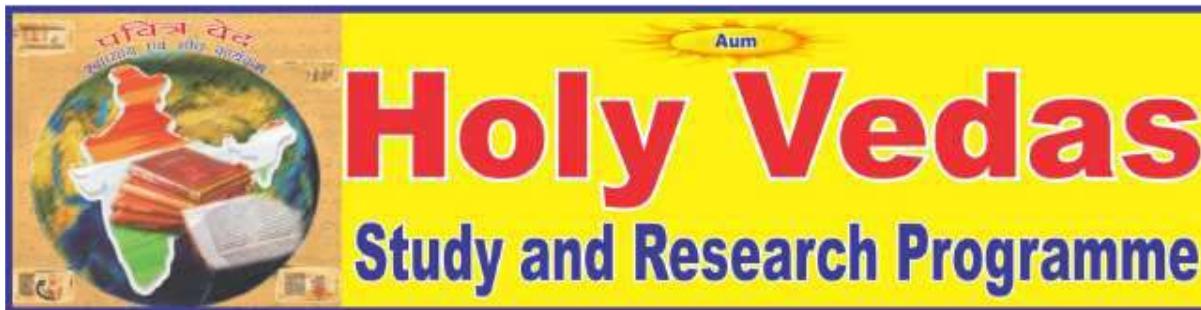
- (i) sadhrayaka – to be used jointly for all,
- (ii) soma pīthāya – to get happiness out of it while protecting and consuming virtues,



- (iii) vṛścā śatrah, ava viśvāni – to destroy the powers of evil enemies and to protect the powers of brave people,
- (iv) rādhah - all wealth and powers come from the worship of God, the Supreme Giver.

Therefore, everyone should follow the true worship of God to achieve strength, powers and wealth. Thereafter, to use these achievements as laid down by the divinity in this verse. Leading people in all walks of life, particularly politicians, wealthy, knowledgeable intellectuals, should follow this principle.

True worship fetches great and divine powers to be used in yajna.



RV 1.51.8

वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्पते रन्धया शासदव्रतान् ।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ॥ 8 ॥
Vijānīhyāryānye ca dasyavo barhiṣmate randhayā śāśadavratān.
Śākī bhava yajamānasya coditā viśvettā te sadhamādeṣu cākana. (8)

(Vijānīhi) Know (Āryān) noble (people and thoughts) (ye) who (ca) and (dasyavah) wicked (barhiṣmate) for complete knowledge and virtues (randhaya) destroy (śāsat) rule, inspire (avratān) devoid of vows (Śākī) powers and strength (bhava) established (yajamānasya) for the performer of yajna acts (coditā) inspiring (viśvā itta) all these (yajna acts) (te) in your company (sadhamādeṣu) jointly (cākana) desire.

Elucidation :-

How to deal with the wicked?

Know the noble people and thoughts and also those who are wicked. For complete knowledge and virtues, destroy those who are devoid of vows, rule over them and inspire them.

Establish powers and strength and inspire for the performance of yajna by those who desire for all such acts, jointly in your company.

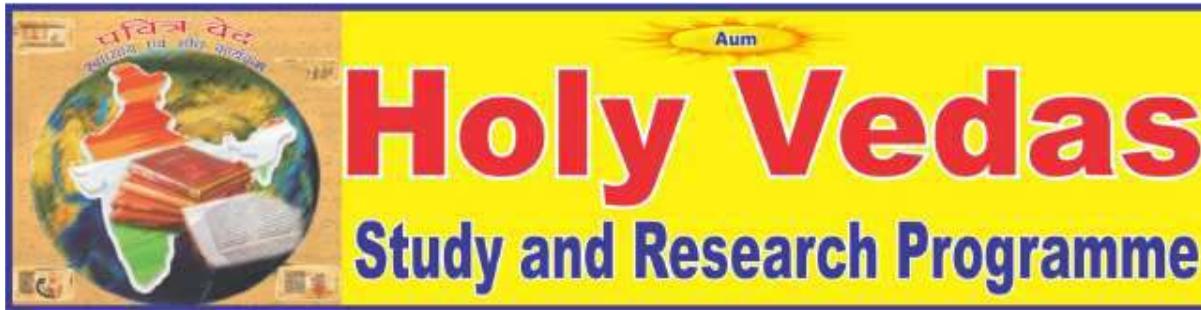
Practical Utility in Life :-

What should be the focus of nobility?

This verse is also equally applicable to all the four dimensions of Indra i.e. God, Sun, the Great king, Controller of senses.

An Indra is supposed to know that is noble and what is wicked around him. Indra empowers nobility and inspires the wicked to improve or to face destruction.

Thereafter, the inspiration and empowerment of noble people should be focussed at doing acts of yajna realising the company of God.



RV 1.51.9

अनुव्रताय रन्धयन्नप्रव्रतानाभूभिरिन्द्रः शनथयन्नाभुवः ।
वृद्धस्य चिद्वर्धतो द्यामिनक्षतः स्तवानो वम्रो वि जघान सन्दिहः ॥ ९ ॥

Anuvratāya randhayannapavratānābhūbhīrindraḥ śnathayannanābhuvah.
Vṛddhasya cid vardhato dyāminakṣataḥ stavāno vamro vi jaghāna sandihah. (9)

(Anuvratāya) For vowful people (Randhayan) destroying (Apavratān) devoid of vows (Ābhūbhīh) with brave warriors, with those associated with God and engaged in best deeds (indrah) God, Sun, the Great king, Controller of senses (śnathayan) kills, destroys (anābhuvah) not associated with God, anti-social, wicked (Vṛddhasya cit) noble in knowledge and deed (Vardhatah) increasing (Dyām) enlightened in knowledge like Sun (inakṣataḥ) moving on the path (stavānah) praises (vamrah) unethical beings (vi jaghāna) destroyed (sandihah) with certainty (over what is noble and what is ignoble).

Elucidation :-

What are the powers of an Indra?

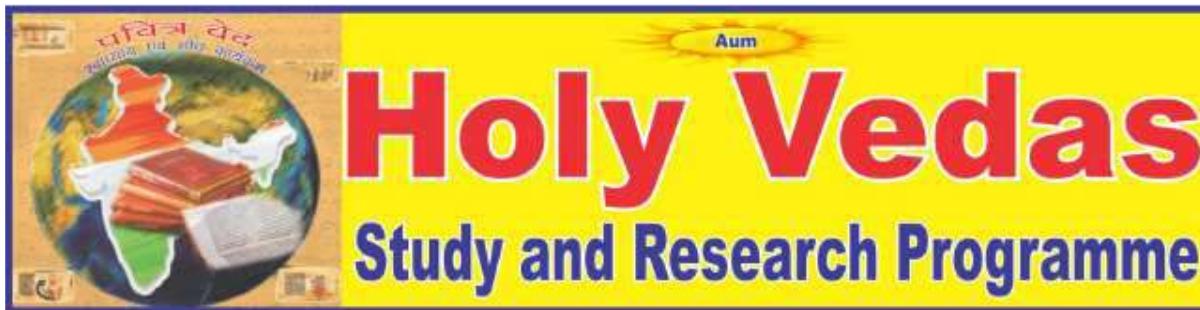
Indra is a multi-dimensional word that covers God to Great human beings and Sun, the basic power of nature. Indra destroys those devoid of vows for the upliftment of vow full. God and the great king destroys those who live without vows because they are duty bound to protect only vow full people.

Indra is to ensure bravery at all levels – physical, mental and spiritual. Therefore, Indra destroys anti-nationals and all those who are not associated with God.

Indra promotes nobles in knowledge and deed.

Indra praises those moving on the path of enlightenment.

Indra is certain about what is noble and what is ignoble. With that certainty, Indra destroys all unethical beings.



Practical Utility in Life :-

What are the benefits of being noble?

What are the harms of being ignoble?

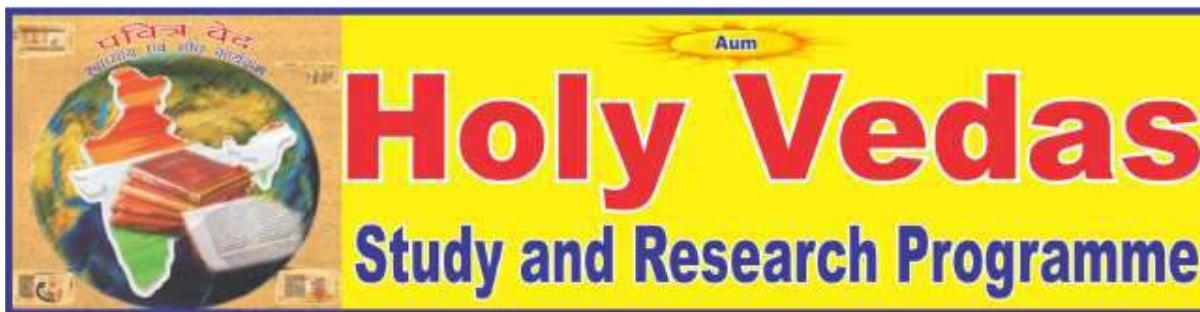
Focus of this verse is on the survival of the noble. Only a complete noble person lives a glorious and praiseworthy life in his own eyes as well as in the eyes of the whole society including God to the Great king. Such a person achieves spiritual progress because God also likes him.

On the other hand, ignoble and wicked people face destruction every moment from all sides. First, they die in their own eyes. Second, they become liable to receive punishment from the great kind. They are never liked by God and therefore, never progress on the path of spiritual realisation. Such wicked, evils and ignoble people go to various lives again and again to receive the rewards of their acts in the form of innumerable pains and deaths. They remain in the cycle of births and deaths. Whereas, noble people ultimately get salvation.

Follow God – He will ensure salvation.

Follow the Great kind – He will ensure a protected life.

Be an Indra yourself, to get everything.



RV 1.51.10

तक्षद्यत् उशना सहसा सहो वि रोदसी मज्जना बाधते शवः ।
आ त्वा वातस्य नृमणो मनोयुज आ पूर्यमाणमवहनभि श्रवः ॥ 10 ॥

Takṣad yat uśanā sahasā saho vi rodasī majmanā bādhate śavah.
Ā tvā vātasya nr̥maṇo manoyuja ā pūryamāṇam avahannabhi śravah. (10)

(Takṣat) Sharpen (yat) if (uśanā) desired by all (God) (sahasā) with His powers (sahah) Your powers (vi – to be prefixed with bādhate) (rodasī) to earth and space (majmanā) with purifying powers (bādhate – vi bādhate) terrify (śavah) Your powers (Ā – to be prefixed with vahan) (tvā) Your (vātasya) for powers like wind, for power of soul (nr̥maṇah) giving mind to all (manoyujah) enjoined with mind i.e. all senses (ā pūryamāṇam) while completing (vahan – Ā vahan) makes available (abhi) towards (śravah) being heard (in knowledge and fame).

Elucidation :-

What is the result of protecting vows?

If uśanā, the God desired by all, sharpens your powers with His powers then your powers would terrify the earth and space with your purifying acts.

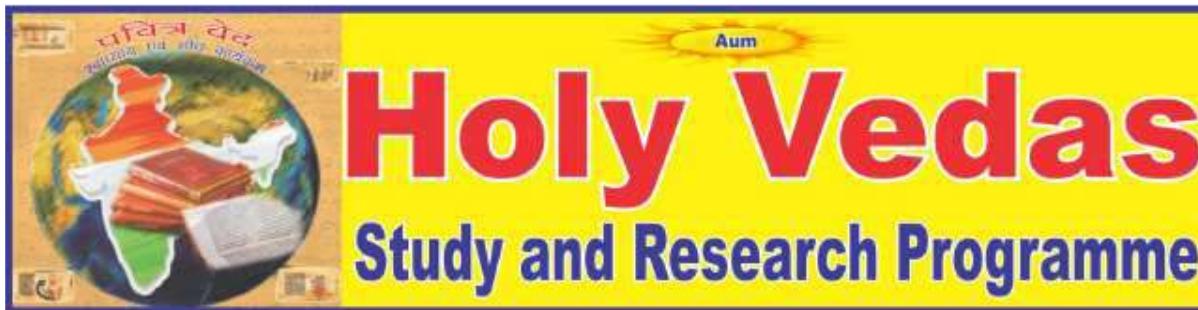
Nṛmaṇah is one who gives mind to all i.e. works for the upliftment of all universally. You do so with the powers of your soul like powers of mind. You do so with the help of all your senses enjoined with powers of mind. Your life becomes complete in this way and makes available to you the knowledge and fame, liable to be heard.

This is the result of protecting his vows by an Indra.

Practical Utility in Life :-

How to gain the powers and blessings of the Supreme Authority?

To gain the powers and blessings of the Supreme Divine, the very first step of eligibility is that you must be an Indra. After being established as an Indra then only you can protect your vows. And then only an Indra is blessed and empowered by the Supreme authority in any walk of life. Parents trust and bless such a son who is a vow full Indra.



RV 1.51.11

मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रो वडकू वडकुतराधि तिष्ठति ।
उग्रो ययिं निरपः स्त्रोतसासृजद्वि शुष्णस्य दृंहिता ऐरयत्पुरः ॥ 11 ॥

Mandiṣṭa yaduśane kāvye sacāñ indro vankū vaṅkutarādhi tiṣṭhati.

Ugro yayim nirapah srotasāśrjadvi śuṣṇasya dṝnhitā airayat purah. (11)

(Mandiṣṭah) Feeling the bliss (Yat) when (uśane) with that desired by all (kāvye) in His Supreme poem (sacāñ) with Him (indrah) God, Sun, the Great king, Controller of senses (vankū) crooked (vaṅkutarā) over the crooked (adhi tiṣṭhati) controls (Ugrah) aggressive, Sun (yayim) pathways, clouds (nih) certainly (apah) acts, waters (srotasā) with the original source (asrjat) creates, enjoins (vi – to be prefixed with airayat) (śuṣṇasya) of ego, anger etc., of dryness (dṝnhitā) strongest (airayat – vi airayat) specially tremble (purah) cities, forts.

Elucidation :-

Who feels the bliss of divine poem?

What is the result of divine connectivity?

As per RV 1.51.9 and 10, after having established himself as Indra and after protecting his vows, one feels the bliss of divine poem with that Supreme, desired by all :-

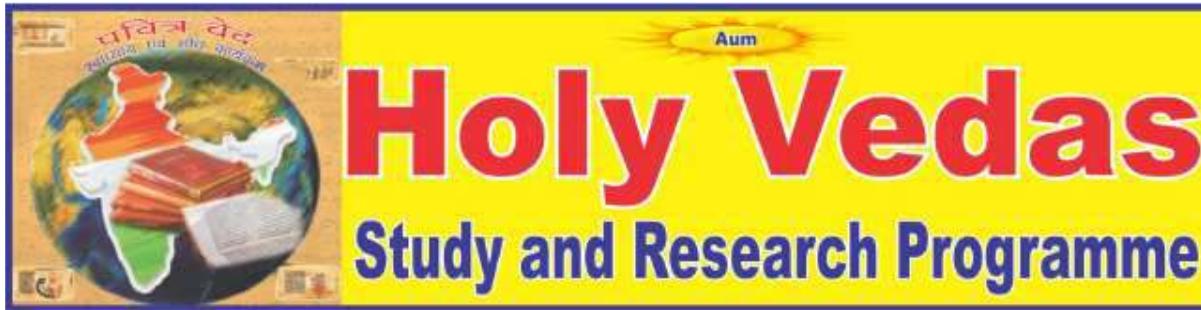
- (i) He controls the crooked over the crooked,
- (ii) He certainly becomes aggressive on the acts of his path,
- (iii) He enjoins himself and his acts with the original source, and
- (iv) He specially advances upon the stronghold of ego, anger etc.

Practical Utility in Life :-

What are the results of a constant connectivity with your supreme authority?

Anyone, receiving blessed and blissful company of his supreme authority, is bound to attain following features :-

- (i) He becomes competent and authorised to control the wicked minds.
- (ii) He performs his acts with unchallenged determination.
- (iii) He always keeps his acts in connection with the supreme authority.
- (iv) He successfully controls his ego and anger etc.



RV 1.51.12

आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु मन्दसे ।
इन्द्र यथा सुतासोमेषु चाकनोऽनर्वणं श्लोकमा रोहसे दिवि ॥ 12 ॥

Ā smā ratham vṛṣapāneṣu tiṣṭhasi śāryātasya prabhṛtā yeṣu mandase.
Indra yathā sutasomeṣu cākano 'narvāṇam ślokam ārohase divi. (12)

(Ā – To be prefixed with tiṣṭhasi) (Sma) certainly (ratham) to the chariot (body) (vṛṣapāneṣu) for drinking virtues of nature (tiṣṭhasi – Ā tiṣṭhasi) You rule (śāryātasya) in the life of brave men (prabhṛtā) are held (yeṣu) with that (mandase) feel delighted (Indra) Controller of senses (yathā) just as (sutomeṣu) for those produced virtues (cākanah) desire (anarvāṇam) not liable to be killed (ślokamā) fame (ārohase) receives (divi) light.

Elucidation :-

For what purpose God and soul rule over human body?

Certainly, You rule over the body chariot for drinking divine virtues. When these divine virtues are held and established in the life of a brave man, with that you feel delighted.

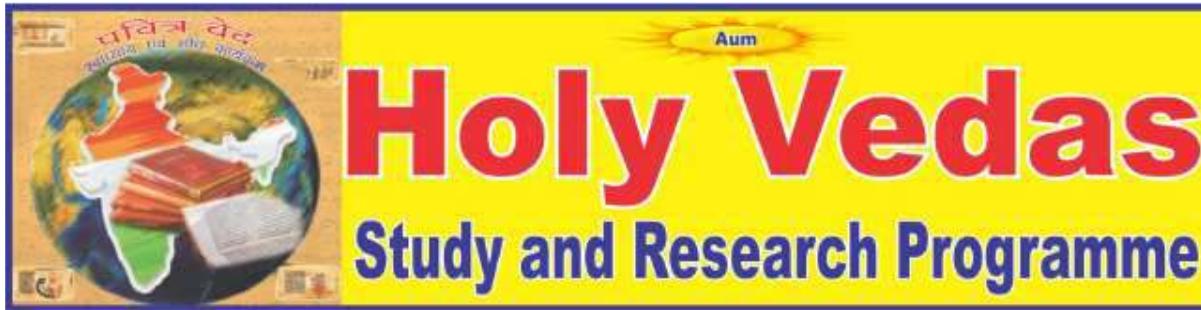
Just as a controller of senses desires for these produced virtues which are indestructible, you receive fame and light of knowledge.

Practical Utility in Life :-

What do virtues and vedic wisdom provide?

The principal desire of both, the God and the soul, is to see the establishment and rule of divine natural virtues in this body chariot. Every human being certainly feels delighted over his virtues and vedic values, because these provide him great fame and light of true knowledge.

This appears to be the core purpose of human life and a fundamental requirement for realising the light of God that divine virtues and vedic values must rule over our life.



RV 1.51.13

अददा अर्भा महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्चते।
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेता ते सवनेषु प्रवाच्या ॥ 13 ॥

Adadā arbhām mahate vacasyave kakṣīvate vṛcayām indra sunvate.

Menābhavo vṛṣaṇaśvasya sukrato viśvet tā te savaneṣu pravācyā. (13)

(Adadā) Gave (arbhām) small knowledge (knowledge to be small) (mahate vacasyave) for those who greatly desire for knowledge (kakṣīvate) for expert (vṛcayām) expert knowledge (indra) God, Sun, the Great king, Controller of senses (sunvate) for preacher (Menā) devotional knowledge (Abhavah) be (vṛṣaṇaśvasya) for powerful (sukrato) doing best acts (viśva it) all these (te) your (savaneṣu) in all stages of life (pravācyā) well preached.

Elucidation :-

What are the three stages of life to gain different levels of knowledge?

Three stages of life and the three respective levels of knowledge are mentioned in this verse :-

- A. In students life one greatly desire for knowledge. They are given small knowledge i.e. knowledge to be small, humble and respectful for elders.
- B. In household life, everyone gains expert knowledge.
- C. In Vanaprashtha and Sanyas Ashrama, one needs devotional knowledge to gain divine powers.

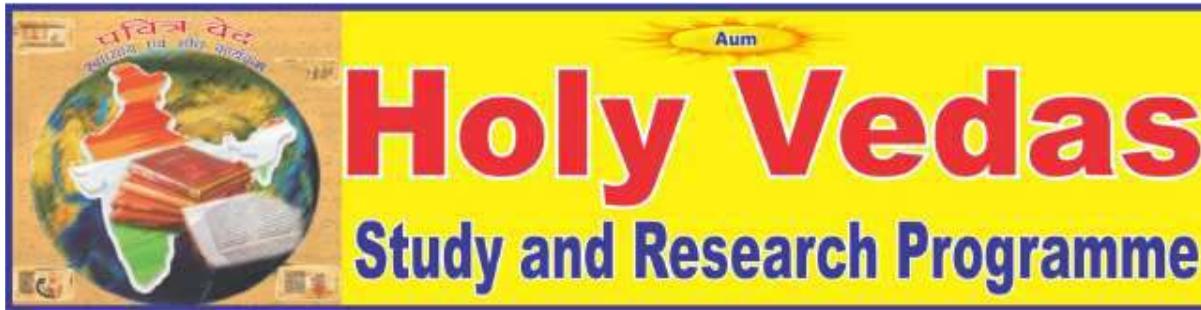
Thus, in all stages of life, people are preached best knowledge for best acts.

Practical Utility in Life :-

How does God decides the level of our knowledge?

God grants knowledge to all according to one's maturity level. At every stage, we progress in knowledge – small knowledge, expert knowledge and devotional knowledge.

- A. Small knowledge to be small and humble learner.
- B. Expert knowledge to share the burdon of society.
- C. Devotional knowledge to devote rest of the life to God.



RV 1.51.14

इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके पज्रेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः ।
अश्वयुर्गव्यू रथयुर्वसूयुरिन्द्र इद्रायः क्षयति प्रयन्ता ॥ 14 ॥

Indro aśrāyi sudhyo nireke pajreṣu stomo duryo na yūpah .

Aśvayurgavyū rathayurvasūyur indra id rāya kṣayati prayantā. (14)

(Indrah) Destroyer of evils and enemies (aśrāyi) is accepted (sudhyah) for best meditation (nireke) for preventing evils and diseases, without any doubt (pajreṣu) in the life of devotees (stomah) singing glories of God (duryah) in doors (na) like (yūpah) pillar (Aśvayuh) controller of horses (senses of action) (gavyūh) controller of cows (senses of knowledge) (rathayuh) controller and giver of chariot (body) (vasūyuh) giver of abodes (indrah) God, Sun, the Great king, Controller of senses (ita) that (rāyah) of all wealth (kṣayati) giver and owner (prayantā) in accordance with our entitlement.

Elucidation :-

Who is the destroyer of evils and enemies?

How does God distributes wealth?

Indra, the destroyer of evils and enemies, is accepted by us for preventing evils and diseases, without any doubt and for the meditation.

Those who are devotees and worshippers of God, sing His glories, are like pillars in the doors.

Indra i.e. God, is the controller of horses (senses of action), controller of cows (senses of knowledge), controller of this chariot (body), giver of abodes and owner as well as giver of all wealth. He gives us all these in accordance with our entitlement i.e. karma bank.

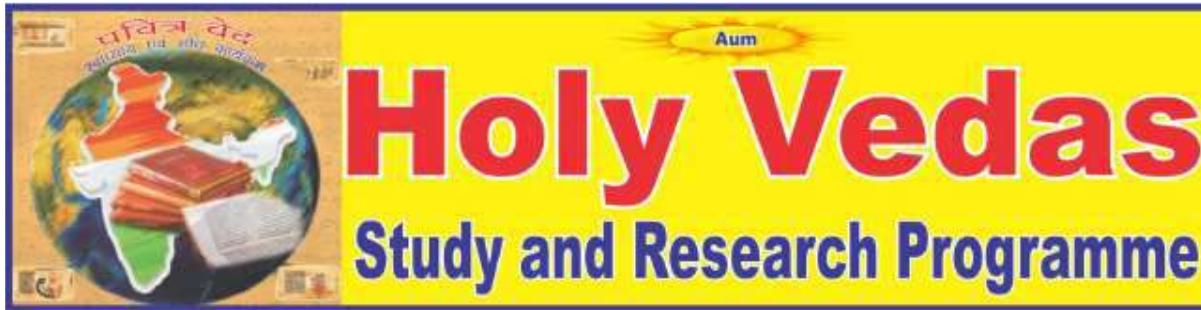
Practical Utility in Life :-

Shall we pray to God for anything?

Is it necessary to worship or love God?

Worship of God or love for God is compared to the pillars of door. If there are no pillars in a door, it means actually there can be no door in our house. Such a house will not be safe. Just as pillars are the principal support of a door that prevents the entry of unwanted elements. Similarly, worship of God and love for God keeps evils and enemies away from us.

God gives us everything as fruits of our past deed. Therefore, we should neither pray nor beg anything from God nor forget or give up the path of worship of God or love for God.



RV 1.51.15

इदं नमो वृषभाय स्वराजे सत्यशुभ्याय तवसेऽवाचि ।
अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीरा: स्मत्सूरिभिस्तव शर्मन्तस्याम ॥ 15 ॥

Idam namo vṛṣabhbāya svarāje satyaśuṣmāya tavase 'vāci.

Asminnindra vṛjane sarvavirāḥ smat sūribhistava śarmantsyāma. (15)

(Idam) This (namah) salutations (vṛṣabhbāya) for the Rainer of happiness (svarāje) self-effulgent (satyaśuṣmāya) having eternal strength (tavase) extremely powerful in all respects (avāci) is said (Asmin) we (indra) God, Sun, the Great king, Controller of senses (vṛjane) in this war (of life) (sarvavirāḥ) all powerful (smat) best (sūribhih) in the company of intellectuals (tava) Your (śarmanta) in asylum, in company (syāma) be, live.

Elucidation :-

Whom shall we address our salutations?

How to live in the asylum of God?

Salutations are addressed to that who is :-

- (i) Vṛṣabhbāya – for the Rainer of happiness,
- (ii) Svarāje – self-effulgent,
- (iii) Satyaśuṣmāya – having eternal strength,
- (iv) Tavase – extremely powerful in all respects.

In this way of life, we wish to live in your asylum, company, the great Indra, while enjoying Your company as :-

- (i) Sarvavirāḥ - all powerful,
- (ii) Smat sūribhih – best in the company of intellectuals.

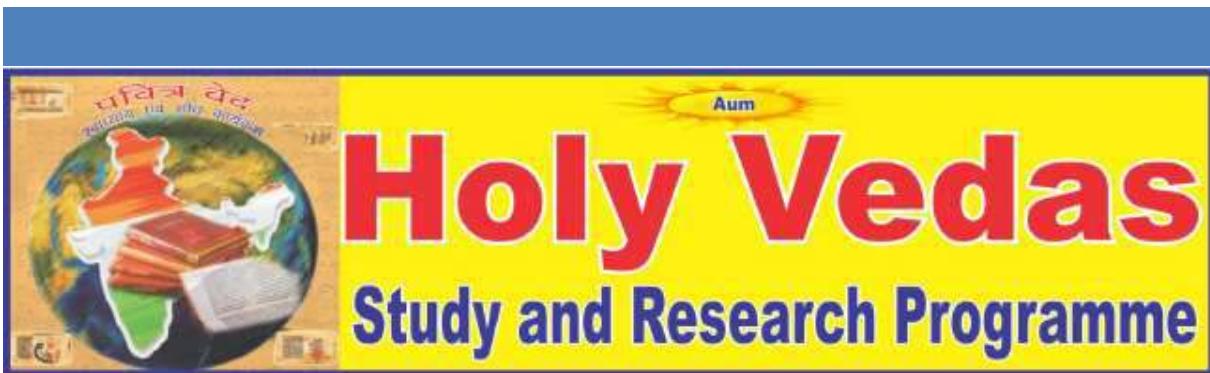
Practical Utility in Life :-

“Singing glories to seek protection” – Is it a universal formula?

Singing the glories of God for all His special, extreme and eternal powers would entitle us for His protection.

The protection of God can be realised in the company of the best intellectuals and selfless great devotees of God.

Singing glories to seek protection is the divine assurance of God. This formula can't be applied to selfish and unintelligent people because in case their interests are at stake, such people never hesitate to destroy even those who are their well-wishers.



RV 1.52.12

त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः ।

चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽ पः स्वः परिभूरेष्या दिवम् ॥

Tvamasya pāre rajaso vyomanah svabhūtyojā avase dhṛṣanmanah .

Cakṛṣe bhūmim pratimānamojaso 'pah svah paribhūreṣyā divam.

Tvam) You (asya) this (pāre) cross over (rajaso) having rajas feature (of activities) (vyomanah) sky (svabhūti) realisation of self (ojāḥ) splendour (avase) protecting (dhṛṣanmanah) mind having full control over senses and emotions (Cakṛṣe) do (bhūmim) abode of this life i.e. body (pratimānam) representing (ojasah) strength and splendour (apah) waters and space (svah) enlightened (paribhū) from all sides (āesi) receiving divinity (divam) in mind.

Elucidation :

What are the spiritual results of control over senses?

You, dhṛṣan manah, the one who has successfully controlled mind and destroyed most of the modifications, cross over the sky that has rajas features and is full of activities. Such a dhṛṣan manah, while protecting his splendor, moves for the realisation of self. He makes his body represent the strength and splendor. His waters and space are enlightening receiving divinity in mind from all sides.

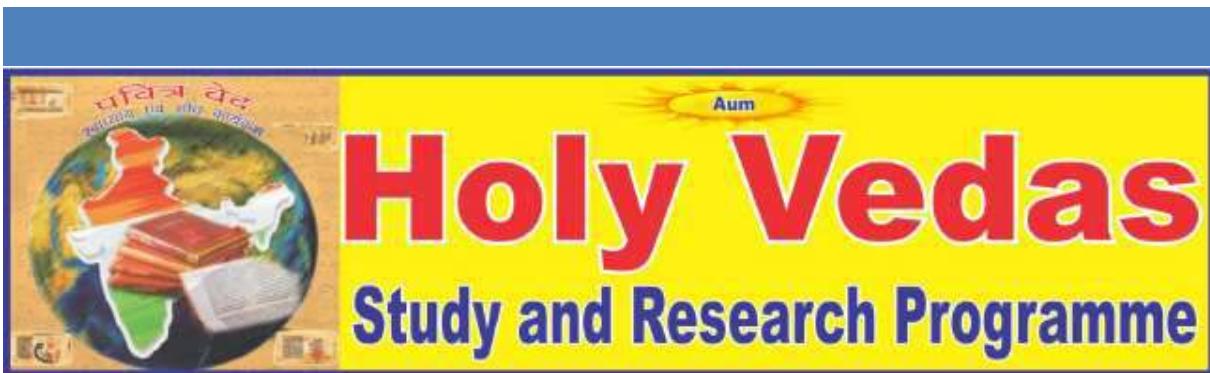
Therefore, a controller of senses realises great spiritual results :-

- (A) He lives a life at higher consciousness above the level of activities i.e. rajas level.
- (B) While protecting his splendor i.e. the complete strength of body and mind, he proceeds towards self-realisation.
- (C) He continuously receives divinities from all sides.

Practical utility in life :

What are the material results of control over senses?

Control over senses is equally important in a material life (i) to focus on your prime acts, (ii) to avoid the wastage of sensual powers, and (iii) to protect yourself from diseases and resulting pain.



RV 1.52.13

त्वं भुवः प्रतिमानं पृथिव्या ऋषवीरस्य बृहतः पतिर्भूः ।
विश्वमाप्नो अन्तरिक्षं महित्वा सत्यमद्वा नकिरन्यस्त्वावान् ॥

Tvam bhuvah pratimānam prthivyā ṛṣavīrasya bṛhataḥ patirbhūḥ .
Viśvamāprā antarikṣam mahitvā satyamaddhā nakir anyastvāvān. (13)

(Tvam) You (bhuvah) of sky (pratimānam) Creator (prthivyā) of earth (ṛṣva vīrasya) of brave men having great qualities, whole creation (bṛhataḥ) big, powerful (patih) protector (bhūḥ) are (Viśvam) whole (āprā) complete (antarikṣam) space (mahitvā) with your pervading power (satyam) true (addhā) it is (nakih) no one (anya) other (tvāvān) like You.

Elucidation :

What are the observations of a person who has realised God?

Once a person successfully controls his senses and destroys the modifications of mind, he addresses God in this verse what he realises about Him :-

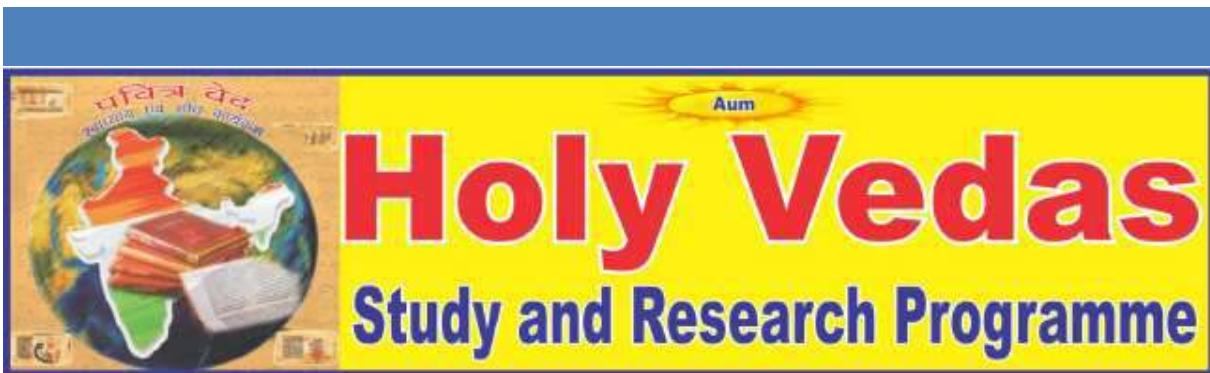
- (i) You are the Creator of earth and sky.
- (ii) You are the Protector of the whole powerful creation including the powerful brave men having great qualities.
- (iii) You complete the space with Your pervading power.
- (iv) It's a truth that there is no other like You.

Practical utility in life :

Why should we desire to associate with supreme authority?

There is no other power or person parallel, in powers, to God. Because only He is the Creator and Protector of every part of this creation. He pervades this whole creation and space.

Everyone is always desirous to get associated with the supreme authorities in the family, society, nation and at international level because one gains immensely by associating with higher authorities. God, the true Creator, is the Supreme Authority of this creation. Therefore, everyone must desire to associate with Him through meditative practices to gain divine powers and to realise Supreme Divinity.



RV 1.52.14

न यस्य द्यावापृथिवीं अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशः ।

नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चक्षे विश्वमानुषक् ॥

Na yasya dyāvāpṛthivī anu vyaco na sindhavo rajasо antamānaśuh .

Nota svavṛṣṭim made asya yudhyata eko anyaccakrṣe viśvamānuṣak. (14)

(Na) Not (yasya) whose (dyāvā pṛthivī) space and earth (anu vyacah) follow the all pervasiveness (na) not (sindhavah) flowing waters (rajasah) this active world (anta mānaśuh) receive, catch the end (Na) not (uta) and (sva vṛṣṭim) his own rains (made) for bliss (asya) whose (yudhyatah) while struggling, warring (ekah) alone (anyat) other than Him (cakrṣe) does (viśvam) whole world (ānuṣak) encloses in His pervasiveness, makes dependent.

Elucidation :

How is God all pervasive?

Continuing the observations of a realised person about God, this verse further explains the all pervasiveness of God :-

- (i) Space and earth cannot follow His pervasiveness.
- (ii) Flowing waters and the active word cannot receive, catch His end.
- (iii) While struggling or warring for His rains of grants also, none can catch Him.
- (iv) He encloses all others in His pervasiveness and makes everything and every person dependent upon Him.

Practical utility in life :

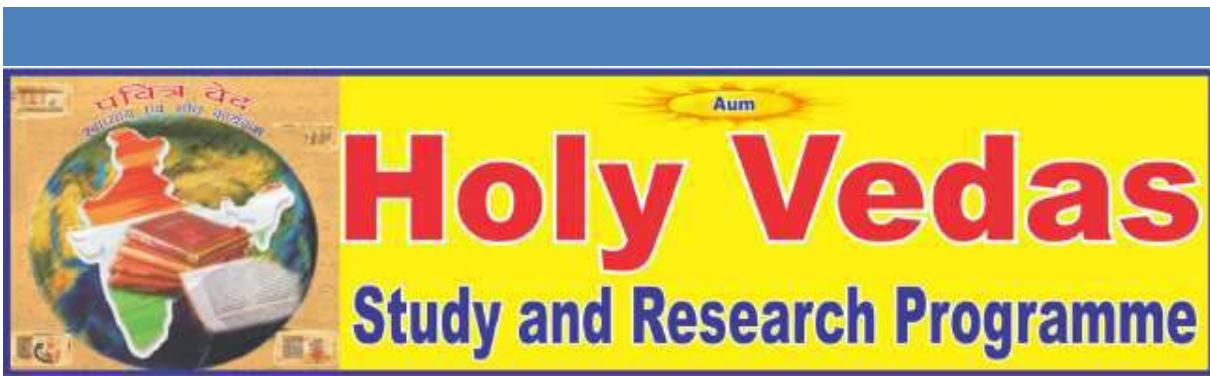
Why is everyone dependent upon Him?

Because of just one feature of God i.e. All Pervasiveness, everything and everyone is dependent upon Him.

He pervades both our body and mind. Therefore, whatever we do with the help of these tools, we remain dependent upon Him. Our life force, our pranas, are also pervaded by Him. Therefore, even at our spiritual level also, we are dependent upon Him.

We must remain conscious about this core reality of His all pervasiveness.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



RV Eng 1.52.

आर्चन्नत्र मरुतः सस्मिन्नाजौ विश्वे देवासो अमदन्ननु त्वा ।
वृत्रस्य यद्धृष्टिमता वधेन नि त्वमिन्द्रं प्रत्यानं जघन्थ ॥

Ārcannatra marutah sasminnājau viśve devāso amadann anu tvā .
Vṛtrasya yad bhr̄ṣṭimatā vadhenā ni tvamindra pratyānam jaghantha.

(Ārcanna - Ni Ārcanna) Always and regularly worship and invoke You (atra) here, in this life (marutah) divine devotees, speaking less (sasminn) in all (ājau) wars, troubles (viśve) all (devāsah) divine people (amadann) delight (anu) while following (tvā) You (Vṛtrasya) modifications, impressions etc. (Yat) that (bhr̄ṣṭimatā) wicked mind (vadhenā) killing with weapon (ni - prefixed with Ārcanna) (tvam) You (indra) God, Controller of senses (pratiānam) targeted at face (jaghantha) attack.

Elucidation :

Why do divine people worship and invoke God?

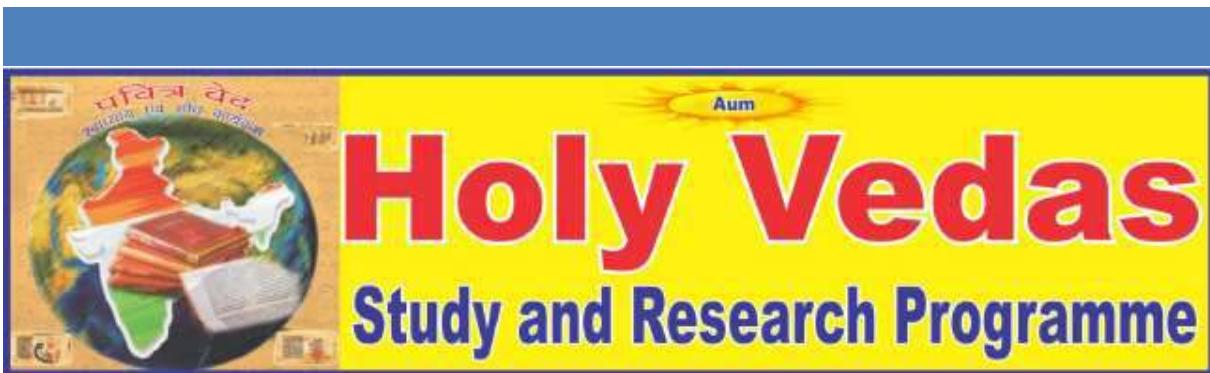
Divine devotees, who speak less, worship and invoke God always and regularly in all wars and troubles here, in this life. All divine people feel delighted while following You. Indra, God, target the mouth of all modifications and attack, of course through Indra, the controller of senses, as if a wicked mind is killed with a weapon.

Practical utility in life :

Who destroys our modifications?

The theme of Yog Darshanam is to control the modifications of mind i.e. *yogah chitavritti nirodhah*. This sukta 52 of mandal 1 of Rigveda is the foundation theme of Yog Darshanam. The present verse is a clear assurance to the divine people that the Supreme Indra, God, makes his ardent devotee also an Indra by making them the controller of senses and thus, attacks on the mouth of all modifications. Therefore, it should be borne in mind by all divine people that regular invocation of Supreme Indra is the only way to make your own self an Indra and thus, to ensure the destruction of all modifications to progress on the path of God-realisation.

- (1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



RV 1.52.2

स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्रत्रमूतिस्तविषीषु वावृधे ।
इन्द्रो यद् वृत्रमवधीन्नदीवृत्तमुञ्जन्नर्णासि जुर्हृषाणो अन्धसा ॥

Sa parvato na dharuṇeṣvacyutah sahasramūtistaviṣīsu vāvṛdhe.
Indro yad vṛtram avadhīnnadīvṛtam ubjann arṇāmsi jarhṛṣāṇo andhasā .

(Sah) He(Parvataḥ) mountain (na) like (dharuṇeṣu) in vows (acyutah) stable (sahasram) in thousands of ways (ūtih) protects (taviṣīsu) strengths (vāvṛdhe) increases (Indrah) controller of senses (Yat) who (vṛtram) coverings of mind (avadhīta) destroys (nadīvṛtam) flowing in rivers, liquidates (ubjan) keeps under control (arṇāmsi) the vital fluid (jarhṛṣāṇah) feels delighted (andhasā) with materials like food etc.

Elucidation :

How to gain stability and strength in our vows?

How is the life of an Indra Purusha?

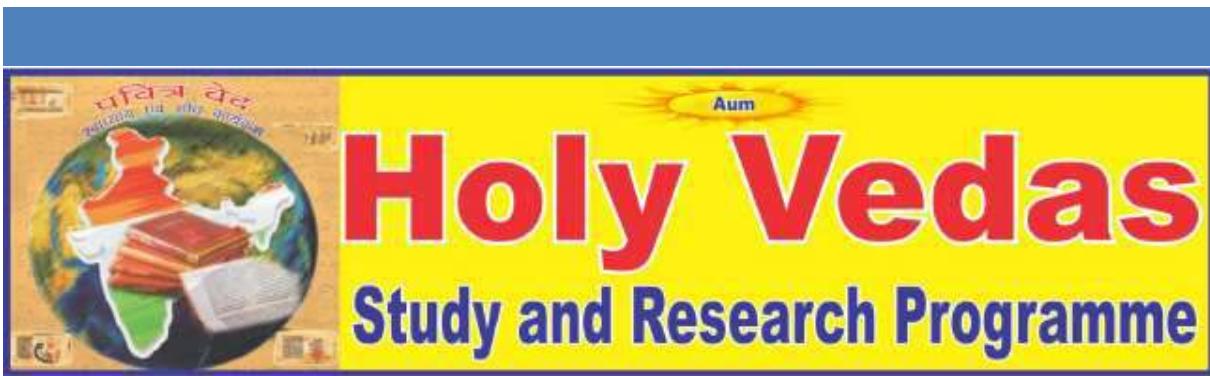
Once the body chariot surrounds the Supreme Power, God, all times in all acts, he is established in his vows with stability like mountains and increases in strength to protect himself in thousand ways. Such an Indra, the controller of senses, who destroys the coverings of mind, makes those coverings flow in rivers and keeps the vital fluid under control. Such a person feels delighted with whatever materials he has.

Practical utility in life :

How to raise our consciousness level?

The core purpose of life is to keep the Supreme Power, God, at the center of all activities of our life. We should raise our consciousness to realise that the Supreme Power has always surrounded us from outside and is being surrounded by us within. Since He is the Supreme Inducer into all activities, He will certainly ensure stability and strength for all such acts. It is this raised consciousness that can raise our consciousness to the level of that Supreme Energy. We only need to focus always that “I’m not the doer, God is the doer and inducer in all acts.”

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



RV 1.52.3

स हि द्वारो द्विषु वग्र ऊधनि चन्द्रबुद्ध्नो मदवृद्धो मनीषिभिः ।
इन्द्रं तमहवे स्वपस्या धिया मान्हिष्ठरातीर्ति स हि पप्रिरन्धसः ॥

Sa hi dvaro dvariṣu vavra ūdhani candra budhno madavṛddho manīṣibhiḥ.
Indram tamahve svapasyayā dhiyā marīhiṣṭharātātiṁ sa hi papri andhasah.

(Sah) He(hi) certainly (dvarah) covers in his shadow (dvariṣu) in all troubles, darkness (vavra) pervades (ūdhani) in our hearts (candra budhno) source of all bliss (mada vṛddho) increases bliss (manīṣibhiḥ) in those who are full in mind, heart and thinking (Indram) to Indra (Tam) that (ahve) call, invoke (svapasyayā) doing best deeds (dhiyā) with mind, intellect (marīhiṣṭharātātiṁ) with best donations (sah) He (hi) only (papri andhasah) all foods etc.

Elucidation :

Why does an Indra person call the Supreme Indra?

What does the Supreme Indra do for the Indra purusha?

- (i) He certainly covers (protects) us, in all troubles and dark times, under His shadow.
- (ii) He pervades in our hearts.
- (iii) He is the source of all bliss and therefore, He increases the bliss in those who are full in their minds, heart and thinking.

I invoke that Indra with my best deeds performed with mind and intellect i.e. consciously and with best donations. He only completes us in all foods and materials.

Practical utility in life :

Who is a manīṣi i.e. a person living at higher consciousness?

Who is the actual donor and doer?

This verse focusses on what God promises to a person living at higher consciousness :-

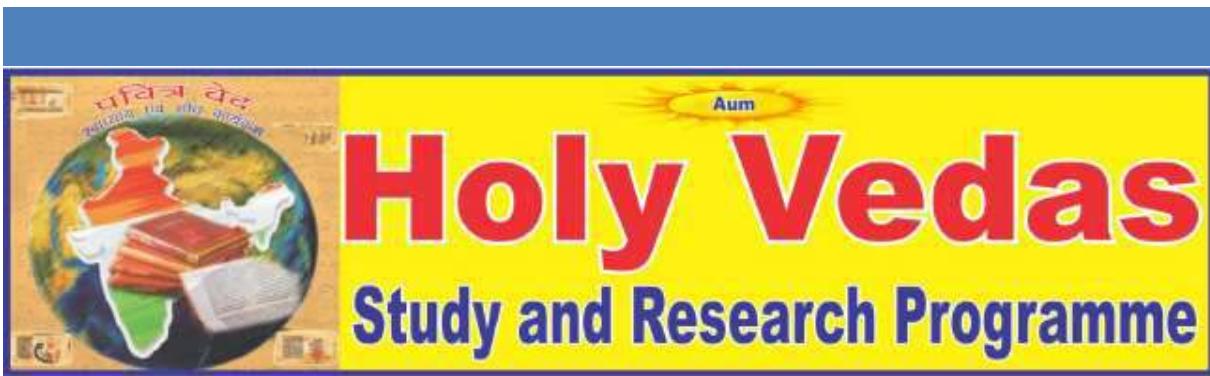
- (A) God extends His protection cover in all times of troubles and darkness.
- (B) God pervades in the heart of such a person who lives at higher consciousness.
- (C) God is the source of all bliss and keep it increasing in those who are manīṣi i.e. contemplating people living in their mind, heart and thinking at higher consciousness.

To be a manīṣi, one is required to focus on two aspects of life activities :-

- (i) Perform all the best acts with mind and intellect i.e. svapasyayā dhiyā. It means we must always be conscious towards our acts.
- (ii) Give the best donations with the consciousness that only God completes us with all food and materials.

Therefore, conscious feeling must prevail in all donations and acts that the actual donor and doer is God only.

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)**



RV 1.52.4

आ यं पृणन्ति दिवि सद्मद्यर्हिषः समुद्रं न सुभ्वः स्वा अभिष्टयः।
तं वृत्रहत्ये अनु तस्थुरुतयः शुष्मा इन्द्रमवाता अहृतप्सवः॥

Ā Yam pṛṇanti divi sadmabarhiṣah samudram na subhvah svā abhiṣṭayah.
Tāṁ vṛtrahatye anu tasthurūtayah śuṣmā indramavātā ahrutapsavah.

(Ā – To be prefixed with pṛṇanti) (Yam) to whom (pṛṇanti – Ā pṛṇanti) completes by himself, pleases, joins (divi) on enlightenment (sadmabarhiṣah) sitting in the best place, best level (samudram) to the ocean (na) like (subhvah) those having best level (svāh) of their own (abhiṣṭayah) desired target (Tāṁ) to that (vṛtrahatye) destroyer of modification (of mind) (anu tasthu) fixed as target (ūtayah) protecting (śuṣmā) with power to destroy enemies (Indram) Supreme Indra (avātāh) fixed in retained air (ahrutapsavah) without any wickedness.

Elucidation :

What happens on enlightenment?

What area the divine features gained after the achievement of spiritual targets?

When He completes, pleases and joins a devotee on enlightenment while sitting at the best level (spiritually) the person feels a merger in the ocean of his own desired target.

That Indra person, the destroyer of modifications, achieves his own fixed target with divine feature like :-

- (A) Protecting himself in all manners.
- (B) Has powers to destroy inimical tendencies.
- (C) Fixed in the retained air.
- (D) Without any wickedness in acts or mind.

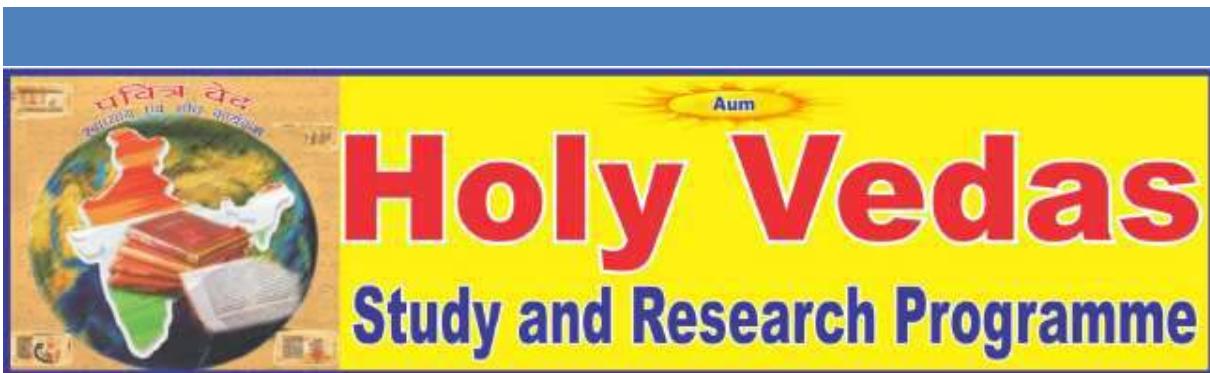
Practical utility in life :

What shall we do when we achieve best position and power?

In materialistic life also when one gains new powers or positions, he should ensure that he is at the best level having joined the Supreme Authority. On every position, one should never allow his personal modifications or impressions to rule over him. With gained powers and positions in all manners, he should always ensure that :-

- (i) He protects himself in all manners.
- (ii) He has powers to destroy inimical tendencies both inner and outer.
- (iii) He should perform his duties in air retention mode i.e. fixing all attentions on job, with one-pointedness.
- (iv) He should never allow any wicked thoughts to enter in him.

Only with these features, one can maintain the best level achieved so far and to remain one with the superior authorities.



RV 1.52.5

अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतो रघ्वीरिव प्रवणे सस्त्रुरुतयः ।
इन्द्रो यद्वज्जी धृषमाणो अन्धसा भिनद् वलस्य परिधीरिव त्रितः ॥

Abhi svavr̄ṣṭim made asya yudhyato raghvīriva pravaṇe sasruūtayāḥ .

Indro yad vajrī dhṛṣamāṇo andhasā bhinad valasya paridhīñr iva tritāḥ.

(Abhi) Towards (svavr̄ṣṭim) desired rain, realisation of self (made) in that happiness (asya) this (seeker of realisation) (yudhyatah) warring (against evils, desires, ego) (raghvī) flowing with speed (iva) just as, like (pravaṇe) towards low lands (sasruh) received (ūtayah) all protections (Indrah) the Indra purusha (Yat) when (vajrī) active with weapons, fully equipped (dhṛṣamāṇah) destroying the enemies (andhasā) with protection of virtues (bhinat) kills, destroys (valasya) of covering (paridhīñ) outer boundries (iva) like (tritāḥ) all the three.

Elucidation :

What happens when a seeker progresses on the path of God-realisation?

How to destroy the coverings of outer mind?

When a seeker progresses towards the desired rain, towards the realisation of self, in that happiness he marches ahead, warring against all hurdles like ego, desires and evils etc. He receives the protection of God just as rivers flowing with speed comes down to low lands, fully protected.

When such an Indra purusha becomes active with weapon (of spiritually divine features) and destroys all enemies and with the protection of his virtues, he destroys the coverings of outer mind like kama, krodha, lobha and moha i.e. sensual desires, anger, greed and attachment and shows his worth in tritah i.e. gyan, karma and upasana i.e. knowledge, acts and worship.

Practical utility in life :

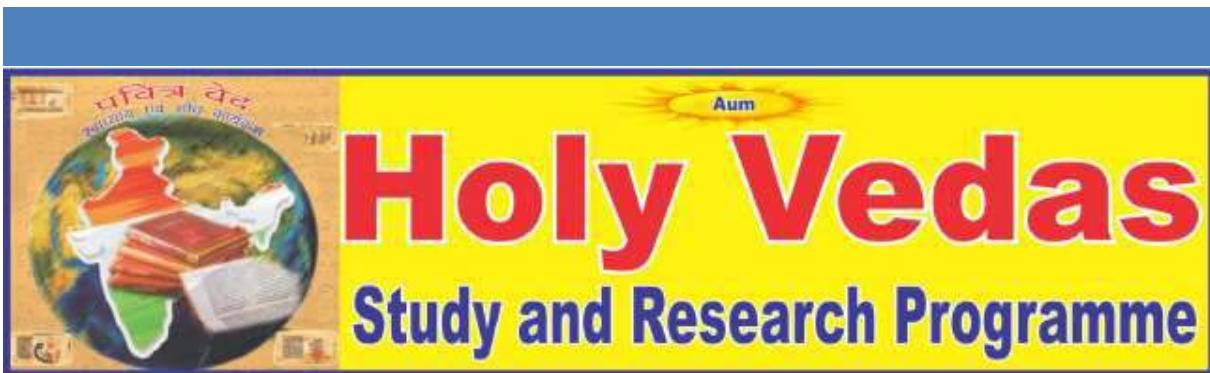
What is the most important aspect on the journey to achieve desired targets?

The most important aspect of life on the journey to achieve desired destination is a divine happiness while removing all hurdles from the path.

Only with such happiness and one-pointed progress, one can receive the protection of higher authorities. This points out towards a very high level of confidence to achieve desired levels.

There are four universal coverings of outer mind i.e. kama, krodha, lobha and moha i.e. sensual desires, anger, greed and attachment. A person progressing towards his desired levels easily destroys these coverings and works with inner higher consciousness. Thus, he achieves a perfection in knowledge, actions and worship.

**(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)**



RV 1.52.6

परीं घृणा चरति तित्विषे शवोऽ पो वृत्वी रजसो बुध्नमाशयत् ।
वृत्रस्य यत्प्रवणो दुर्गृभिश्वनो निजघन्थ हन्योरिन्द्र तन्यतुम् ॥

Parīm ghṛṇā carati titviṣe śavo 'po vṛtvī rajasō budhnamāśayat .

Vṛtrasya yat pravaṇe durgr̥bhiśvano nijaghantha hanvorindra tanyatum.

(Parī – To be prefixed with carati) (ghṛṇā) enlightenment of knowledge (carati – Parī carati) pervades in all sides (titviṣe) for shinning (śavah) of strength (apah) to all subjects/people (vṛtvī) cover the knowledge (rajasah) in deep spaces (budhnam) of body (āśayat) establish (Vṛtrasya) of this clouds, modifications (of mind) (yat) when (pravaṇe) forceful impact (durgr̥bhiśvanah) received very badly (nijaghantha) gives a blow (hanvoh) on the parts of mouth (Indrah) controller of senses (tanyatum) with focus on divinity.

Elucidation :

Why does an Indra need to destroy the modifications of mind?

What happens when the modifications are destroyed?

When Indra, the controller of senses, with his focus on divinity, gives a strong blow on the mouth of the clouds, modifications of mind, a forceful impact is received by them very badly. Those modifications (of ego, desires and of various thoughts) cover the knowledge and get established in the deep space.

But once these modifications are destroyed, the enlightenment of knowledge pervades on all sides for the shinning and strength of such an Indra.

Practical utility in life :

How to maintain one-pointed focus on the target?

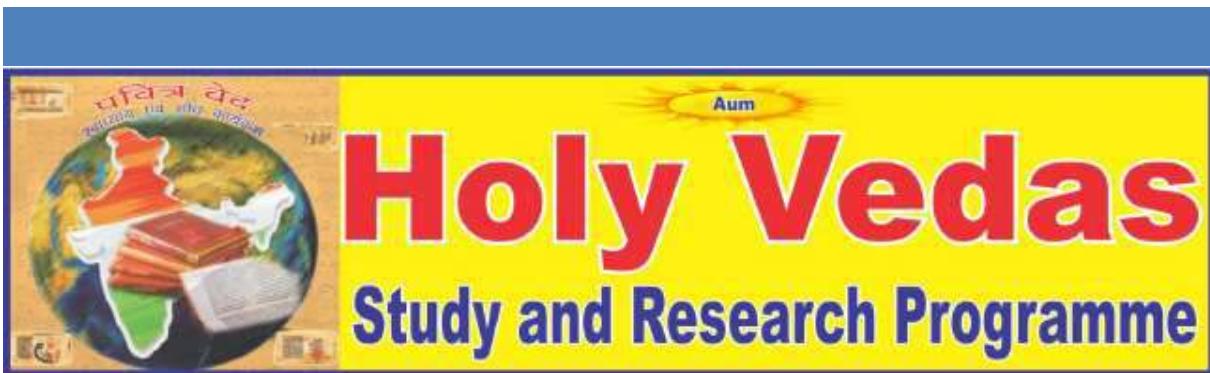
As per Yog Darshanam (1.6) there are five principal causes of the generation of modifications of mind – pramaana, vipraya, vikalpa, nidra and smriti i.e. right knowledge, wrong knowledge, imaginary knowledge, no knowledge and past knowledge.

There are many ways to destroy these modifications. First and foremost is abhyas and vairagya i.e. practice and renunciation. Practice to live egoless life and renunciation of all desires. It is possible only if one is tanyatum i.e. having a focus on divinity.

Yog Darshanam (1.23) explains it as ishwara pranidhaanaatva i.e. complete surrender to God, devotion and worship of God till the feeling of oneness with God. Therefore, we must have one-pointed focus on our target without permitting any deviations while proceeding towards that target. This principle applies to the spiritual path as well as in the worldly material life.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



RV 1.52.7

ह्रदं न हि त्वा न्यृषन्त्यर्मयो ब्रह्माणीन्द्र तव यानि वर्धना ।

त्वष्टा चिते युज्यं वावृधे शवस्ततक्ष वज्रमभिभूत्योजसम् ॥

Hradam na hi tvā nyṛṣanty ūrmayo brahmāṇīndra tava yāni vardhanā .
Tvaṣṭā cit te yuṣyam vāvṛdhe śavas tatakṣa vajram abhibhūtyojasam.

(Hradam) To the ocean, to the heart (na) just as (hi) certainly (tvā) to You (God) (nyṛṣanty) are received with humbleness (ūrmayah) streams, waves, vibrations (brahmāṇi) glories of God (Indra) controller of senses (tava) Your (yāni) which (vardhanā) cause of progress (Tvaṣṭā) of You (God) (cit) certainly (te) Your (yuṣyam) competent, attached (vāvṛdhe) increase (śavah) strength (tatakṣa) make (vajram) weapon (abhibhūtyojasam) powerful to defeat.

Elucidation :

Why shall we sing the glories of God?

Just streams and waves emerging in the ocean and rivers are received with humbleness, just as vibrations in the heart become the cause of your progress, similarly your glories for God would certainly be received with humbleness and would become the cause of your progress.

O Indra! competence of your strength and your attachment to God certainly increases your strength and make your weapon powerful to defeat your enemies and to remove all hurdles.

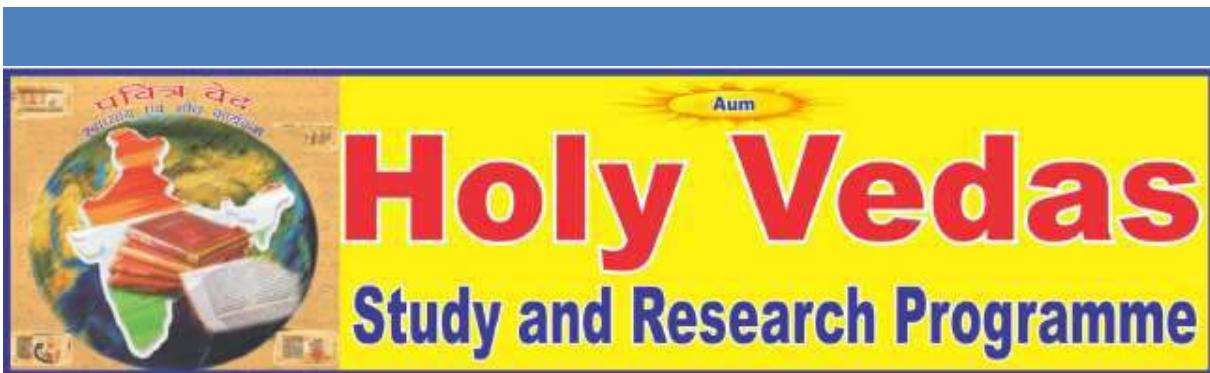
Practical utility in life :

Why shall we glorify our elders?

Every heart should vibrate to sing the glories of God and to get attached to that core universal power as streams and waves rise to merge in the ocean. More one sings the glories of God, more he gets attached to that core strength resulting in the all round progress of life. With such attachment and progress, his weapons are more strengthened to defeat the hurdles of life.

Our elders and other seniors should also be glorified by us. The glorification increases our attachment to them resulting in our progress.

- (1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



RV 1.52.8

जघन्वां उ हरिभिः संभृतक्रतविन्द्र वृत्रं मनुषे गातुयन्पः ।
अयच्छथा बाह्योर्वज्ञायसमधारयो दिव्या सूर्य दृशे ॥

Jaghanvāṁ u haribhiḥ sambhṛtakratav indra vṛtram manuṣe gātuyann apah.

Ayacchathā bāhvoh vajramāyasyamadhārayo divyā sūryam dṛśe.

(Jaghanvāṁ) Kills, destroys(u) certainly (haribhiḥ) with rays, with powers of senses of action (sambhṛtakrato) holder of vows to perform karma and to gain knowledge (Indra) Sun, controller of senses (vṛtram) clouds, modifications (of mind) (manuṣe) for contemplating on God (gātuyann) desiring the path (apah) works, waters (Ayacchathāh) receives (bāhvoh) in arms engaged in activities (vajram) weapon (āyasam) made of iron (dhārayah) holds (divi) in mind, in space (sūryam) to Sun (dṛśe) for seeing its light, for enlightenment.

Elucidation :

What is the path to enlightenment?

Sun, certainly, destroys the clouds with its rays because it holds the vow of spreading light and heat to the whole world and is determined to proceed on its path. Thus, it receives and holds the iron strength in its rays to spread its light to the whole world.

A controller of senses destroys the modifications of mind with the powers of his senses of action because he is the holder of vows to perform karma and to gain knowledge and desires to proceed on his path. Thus, he receives the strength of iron in his arms to spread his enlightenment for the welfare of all.

Practical utility in life :

What is the path of complete personality development?

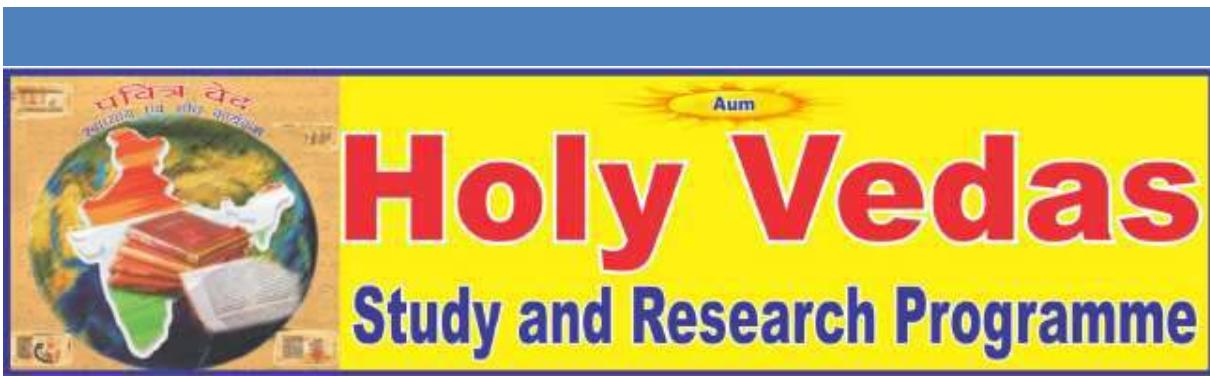
How to understand this principle – Destroy the modifications of mind to get enlightenment for the welfare of all?

There are just four steps to achieve the level of personality development :-

- (A) Destroy the modifications of mind.
- (B) Perform duties for the welfare of others.
- (C) Gain iron like powers for senses of action.
- (D) Gain enlightenment i.e. a complete personality.

Modification of mind are the first hurdle on the path of our life activities and to gain enlightenment about our core power. Therefore, first of all destroy these modifications. Only then we will be able to perform our duties for the welfare of others. Lastly, as a result, we will gain iron like powers and enlightenment to develop into a complete personality.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhwani Yogacharya 9968357171)



RV 1.52.9

बृहत्स्वश्चन्द्रममवद्युक्थ्यैमकृष्णतं भियसा रोहणं दिवः ।
यन्मानुषप्रधना इन्द्रमूलयः स्वर्नृषाचो मरुतोऽमदन्ननु ॥

Bṛhat svaścandram amavad yadukthyam akṛṇvata bhiyasā rohaṇam divah .

Yan mānuṣapradhanā indramūtayah svar nr̄ṣāco maruto 'madannanu.

(Bṛhat) Big (svaścandram) with self-enlightenment (amavat) best knowledge, best strength (yat) when (ukthyam) praise worthy (God) (akṛṇvata) establish (in heart) (bhiyasā) out of fear (rohaṇam) for progress (divah) to divine level (enlightenment, salvation) (Yat) when (mānuṣa pradhanā) for the welfare of men (Indram) controller of senses (ūtayah) protects (svah) self (nr̄ṣācah) progressing person (marutah) air (pranas) (amadan) cause delightfulness (nanu) certainly.

Elucidation :

When do pranas cause delight in us?

When a controller of senses establishes the best knowledge and the best strength with self-enlightenment of the praiseworthy, God, in his heart due to fear and/or for the progress to the divine level of salvation; when he protects the self (soul) of the progressing life for the welfare of others, thereafter, the pranas (air) certainly become the cause of delight in him.

Practical utility in life :

What are the two principal causes to establish God in heart?

What is the sequence of progress in life?

There are two principal causes for which we must establish God in our heart truly and respectfully :-

(i) To save our self from the fear of pains.

(ii) To progress for the divine level of salvation.

After establishing God in heart, one can protect his own self and become useful for the welfare of others. Only then pranas will become delightful for him.

Thus, the sequence of progress in our life can be understood as :-

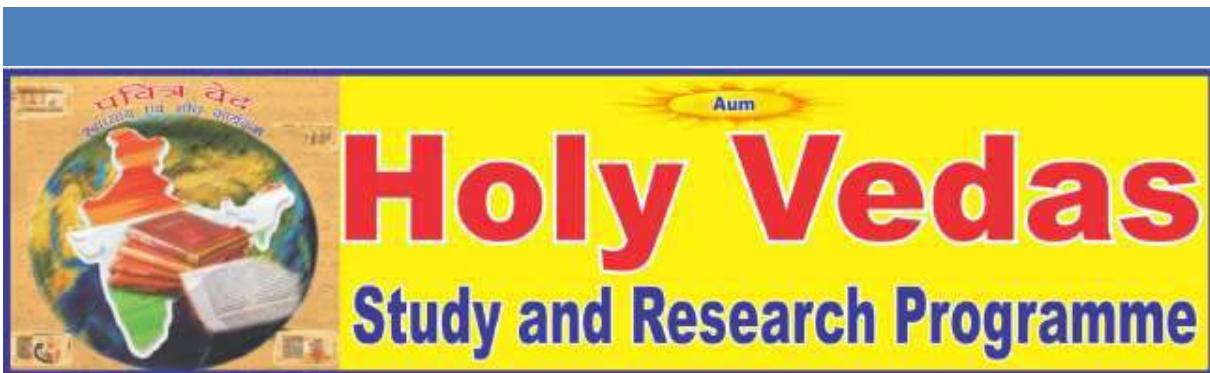
First, destroy the modifications of mind to focus on one thought i.e. progressing towards realising God within.

Second, protect self (soul) for the welfare of others.

Only such a progressing life can feel the delight of pranas or in other words. Pranas become delightful in him whose life is useful for others.

This sequence of progress is equally applicable in materialistic pursuits – first, destroy the modifications and deviations of mind to make it focused and one-pointed, second, develop your core power to protect your own self and to do welfare of others. After ensuring these two steps in life, one can feel that pranas become delightful for him.

(1) Download TELEGRAM, (2) Join HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
(Contact for any query -Vimal Wadhawan Yogacharya 9968357171)



RV 1.52.10

द्यौश्चिदस्यामवाँ अहे: स्वनादयोयवीद्धियसा वज्र इन्द्र ते ।
वृत्रस्य यद्धद्वधानस्य रोदसी मदे सुतस्य शवसाभिनच्छरः ॥

Dyauscidasyāmavāñ aheḥ svanād ayoyavīd bhiyasā vajra indra te.

Vṛtrasya yad badbadhānasya rodasī made sutasya śavasābhinac cchirah.
(Dyauh) Light, knowledge (Cit) also, certainly (Asya) of this (amavāñ) with strength (ahe) of these (modifications, desires) (svanāt) thundering sound (ayoyavīt) separates (bhiyasā) due to fear (vajra) weapon (strength) (Indra) controller of senses (te) You (Vṛtrasya) of modifications, of desires (Yat) that (badbadhānasya) hurdle creating, pain giving (rodasī) to body and mind, to earth and sky (made) in the delight of (sutasya) knowledge, virtues, light (śavasā) with strength (abhinat) cut off (śirah) head.

Elucidation :

What are the dangers of modifications of mind and desires?

Who can destroy the modifications of mind?

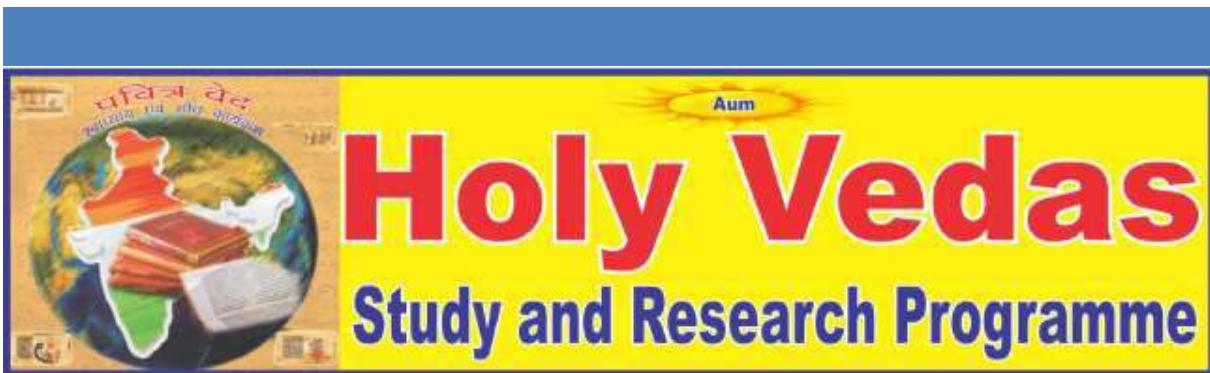
With the strength of the thundering sound of these modifications of mind and of desires, even our inner light and knowledge also separates due to fear. But the weapon (strength) of Indra, the controller of senses, with the delight of knowledge, virtues and light etc., cuts off with full strength the head of these modifications and desires for the earth and sky, that are hurdle creating and pain giving for the body and mind.

Practical utility in life :

How to proceed fast towards destinations?

Modifications of mind and our desires are certainly a great hurdle creator and pain giving for our body and mind. These modifications relate to our past, whereas our desires relate to the future, both separate us from the present and thus, they separate us from our ultimate destination. The only weapon to destroy these modifications and desires lies with an Indra, the controller of senses.

While progressing towards any destination of life, we must learn to strengthen our self to keep the senses under control so that we may not get separated from the destination. That's the only way to proceed fast towards destination.



RV 1.52.11

यदिन्विन्द्रं पृथिवी दशभुजरहानि विश्वा ततनन्त कृष्टयः ।

अत्राहं ते मघवन्विश्रुतं सहो द्यामनु शवसा बर्हणा भुवत् ॥

Yadinnvindra pṛthivī daśabhujiḥāni viśvā tatananta kṛṣṭayah.

Atrāha te maghavan viśrutam saho dyāmanu śavasā barhaṇā bhuvat.

(Yat it nu) When certainly (Indra) controller of senses (pṛthivī) earth, body (daśabhujiḥ) with ten arms, ten senses (ahāni) days (viśvā) all (tatananta) expand (your powers) (kṛṣṭayah) working (men) (Atrā) here (iha) certainly (te) Your (maghavan) with splendid wealth, performing yajna (viśrutam) special fame, worth hearing (sahah) strength (dyām) knowledge, light (anu) according to (śavasā) with speed (barhaṇā) giver of all comforts (bhuvat) be.

Elucidation :

How can we gain strength and wealth?

When certainly you enjoy this earth with ten directions and your body enjoys with ten senses, with this, all working human beings should expand powers, here in this life only. Thus, your splendid wealth and strength would gain special fame worth hearing. Your acts must be according to your knowledge and inner light. You should perform your acts with speed because these acts would become the giver of all comforts.

Practical utility in life :

What are the results of control over senses?

Everyone enjoys his physical living through senses on this earth having ten directions. We must keep our senses under control, only then our knowledge and splendid fame worth hearing. Our acts must follow our knowledge with speed only then we would gain splendid wealth to perform yajna and to enjoy all comforts.

Cycle of Control Over Senses

Control over senses ----- leads to ----- Strength of Knowledge ----- Great Acts ----- Splendid Wealth ----- Special Fame ----- Yajna ----- Comforts



Rigveda 1.55.1

Divaś cidasya varimā vi papratha indram na mahnā pṛthivī cana prati.

Bhīmas tuviṣmāñ carṣanibhya ātapaḥ śiśite vajram tejase na vamsagah.
(Divaḥ) the enlightened space (Cit) also (asya) whose (of God) (varimā) supremacy (vi papratha) specially extended (indram) of that Supreme controller, God (na) not (mahnā) greatness (pṛthivī) this earth (cana) comparable to (prati) represent (Bhīmāḥ) due to His extreme strength (tuviṣmāñ) Supreme knowledge (carṣanibhya) for hard working (ātaphah) blazing penance (śiśite) sharpens, radiates (vajram) weapons, rays (tejase) for great acts, for light (na) like (vamsagah) thunderbolt strikes.

Elucidation :

Who is supreme in space and in greatness?

What is He for the hardworking people?

Whose supremacy is specially extended beyond the whole lightened space also, even the whole earth is also not comparable to represent that Supreme Controller, God, from the view of greatness. He is blazing penance for the hardworking people due to His extreme strength and Supreme Knowledge. He sharpens the weapons for great acts like thunderbolt strikes. He radiates rays for light like thunderbolt strikes.

Practical utility in life :

Who gives strength for thunderbolt strikes?

Who gives supreme knowledge for the enlightenment of others?

Whom shall we delegate our authority?

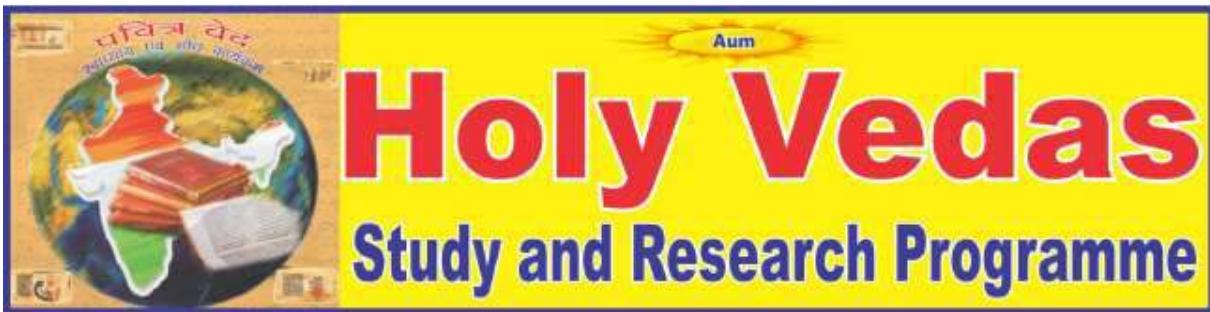
God is bigger than the biggest, greater than the greatest. All His powers can be categorised as (i) Material powers and (ii) Light of knowledge. These are actually gifted to hard working people who remain connected to God, rest others i.e. selfish people, are just enjoying the powers of God like a thief.

God increases the strength of those who perform great acts like yajna i.e. welfare of others. God gives special divine effect to those minds who are devoted to Him and enlighten others.

Deriving a ratio from this verse regarding delegating of authority, all seniors should delegate their powers only to those who perform yajna i.e. complete welfare of others.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.55.2

So arṇavo na nadyah samudriyah prati gr̥bhñāti viśritā varīmabhiḥ.
Indraḥ somasya pītaye vṛṣāyate sanāt sa yudhma ojasā panasyate.

(Sah) He (God) (arṇavah) sea (na) just as (nadyah) rivers (samudriyah) going towards sea (prati gr̥bhñāti) accepts (viśritāḥ) resting at various places (varīmabhiḥ) spread (Indraḥ) controller of sense (somasya) of virtuous knowledge (pītaye) by drinking (vṛṣāyate) behaves like a powerful person (sanāt) eternal i.e. sanatan (sah) He (yudhmaḥ) warring, struggling (ojasā) with his glories, powers and acts (panasyate) desires to realise God, desires to rule over people.

Elucidation :

Who can desire to realise God?

Who can desire to rule over people?

Just as sea accepts the rivers, spread and resting at various places, going towards sea; just as a controller of senses, after drinking virtuous knowledge, behaves like a powerful person; just as He, being an eternal power, keeps on warring, struggling, a person with his glorious powers, knowledge and acts, desires to realise God. Applying this verse in the worldly life, a person with his glorious powers, knowledge and acts should desire to rule over people.

Practical utility in life :

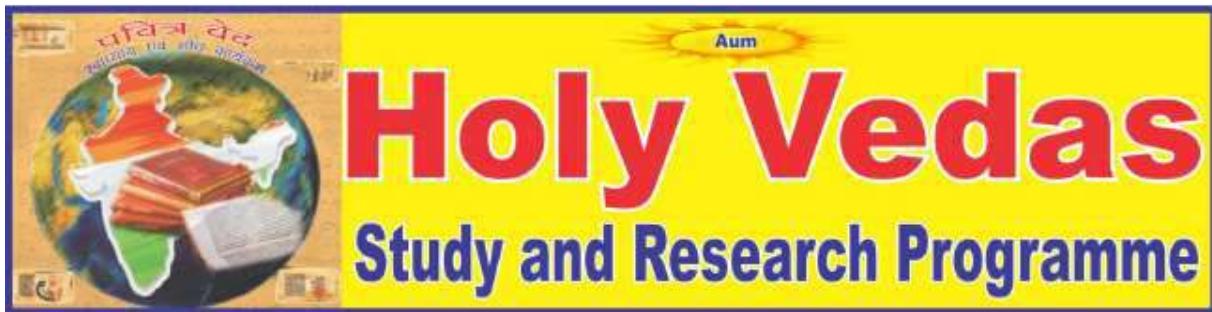
How to acquire glorious powers, knowledge and acts?

Everyone should endeavour hard to acquire glorious powers, knowledge and acts. With such a karma bank, one can desire to realise God on spiritual path. Whereas, in worldly life one can desire to rule over people.

Glorious powers come to us when we establish ourself in the eternal power of God, always warring and struggling with all odds, allurements, ego and desires etc. and become a true controller of senses. Win over all evils and protect all virtues.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.55.3

Tvam tamindra parvatam na bhojase maho nṛmnasya dharmaṇām irajyasi.

Pra vīryeṇa devatāti cekite viśvasmā ugraḥ karmane purohitah.

(Tvam) You (Tam) that (indra) controller of senses (parvatam) clouds (of modifications, of ego, of ignorance) (na) not (bhojase) protect, consume (mahaḥ nṛmnasya) of great wealth (dharmaṇām) for dharma (principles and acts liable to be held) (irajyasi) become divine, enjoy rule (Pra vīryeṇa) due to huge strength (Devata) divine life (ati cekite) well known (viśvasmai) for all (ugraḥ) strong, enlightening (karmane) for all acts (purohitah) ensuring welfare of all.

Elucidation :

What are the duties of a controller of senses?

You, the controller of senses, are not to protect or consume the clouds (of modifications, of ego, of desires). You become divine and enjoy your rule with great wealth to be used as dharma, hold the principles of dharma and perform the acts of dharma.

You will be well known for your divine life due to your huge strength of body, mind and soul.

Ensure the welfare of all with all your strong enlightening acts.

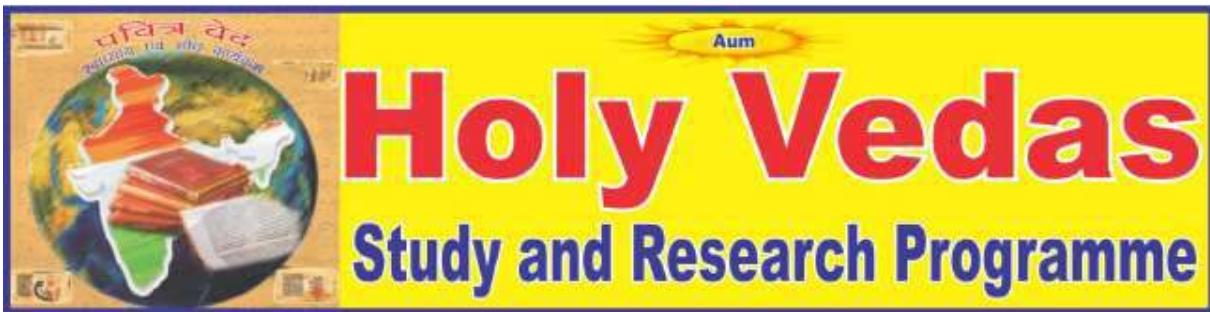
Practical utility in life :

What does a controller of senses gain?

Sun doesn't eat the clouds but rain them down for the protection and welfare of all. Similarly, a controller of senses doesn't protect or consume the modifications his ego or desires but rain them down to gain strong enlightenment and divinity, which he uses for the protection of dharma and for the welfare of all. Thus, a controller of senses becomes popular for his divinity.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.55.4

Sa id vane namasyubhir vacasyate cāru janeṣu prabruvāṇa indriyam.

Vṛṣā chandur bhavati haryato vṛṣā kṣemeṇa dhenām maghavā yadinvati.

(Sa it) He only (vane) in lonely place, with concentrated mind (namasyubhiḥ) by humble admirers (vacasyate) praised, glorified (cāru) beautiful (janeṣu) for people (prabruvāṇa) expressed (indriyam) His knowledge and power (Vṛṣā) rainer (chanduḥ) joyous and free (bhavati) He is (haryataḥ) for those performing best deeds (vṛṣā) rain (kṣemeṇa) for power and protection (dhenām) best speeches (for knowledge and inspiration) (maghavā) glorious wealth (yat invati) pervades, receives.

Elucidation :

Why is God praised by humble admirers?

He is praised and glorified only by humble admirers in lonely place, with concentrated mind, because He expresses His beautiful knowledge and divine powers for such people. He is joyful and free Rainer for those performing best deeds. When He rains His best speeches and glorious wealth for the power and protection of all, He pervades and receives all praises and glorifications.

Practical utility in life :

How to earn respect from the people from their deep heart?

Why do all saints prefer forests i.e. devotional loneliness for penances?

How to create a forest like situation in our mind?

This verse lays down a divine path for all human beings to undertake best deeds for the welfare of all and to receive best knowledge, divine speeches and glorious wealth for the protection of all. Thus, such a person also pervades in the heart of all and is praised and glorified by all with concentrated mind, not merely as a formality. He earns respect of the people from their deep hearts.

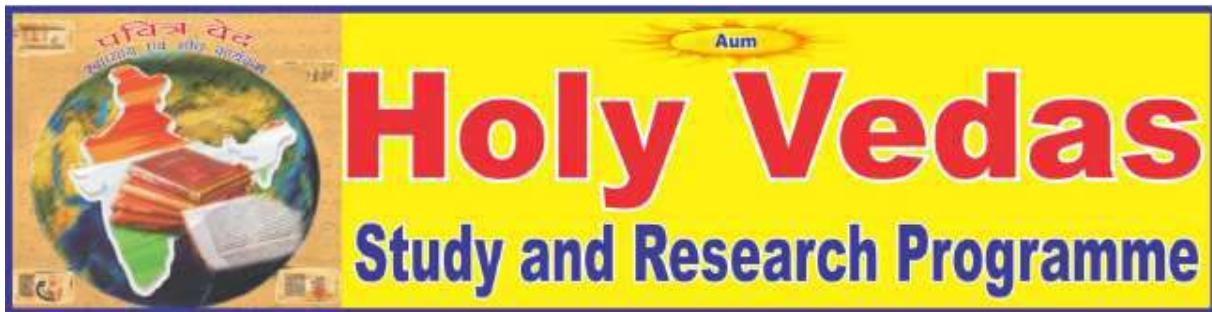
We should follow the path of God to be respected and praised like God. Follow God to be like God. Follow the divine path to gain divine powers.

Second important aspect of this verse is ‘Vane’ i.e. forest, loneliness, isolation, concentration in deep mind and heart. Divinity doesn’t need public glorification. Real divinity needs real and core surrender. All great saints and rishis moved to forests and other lonely places to gain the concentration of mind and heart for glorifying God and gaining divinity. ‘Vane’ has both the connotations – physical and mental i.e. to create a forest like loneliness situation in mind.

To conclude, this verse inspires us to do the best jobs and to submit all your mental faculties in the glorification of the Supreme Divine by devoting mind at one-pointed destination i.e. to realise unity with the Supreme Divine. Devotional loneliness helps in acquiring equanimity of mind, the balance of mind.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.55.5

Sa in mahāni samithāni majmanā kṛṇoti yudhma ojasā janebhyah.
Adhā cana śrad dadhati tviśimata īndrāya vajram nighanighnate vadham.

(Sah) He (Ita) certainly (mahāni) in big (samithāni) wars, struggles and difficulties (majmanā) to empower, to purify (kṛṇoti) does (yudhmah) becomes a great warrior (ojasā) the strength (janebhyah) for the people (Adhā cana) after this victory, people (śrad dadhati) offer respect, full faith (tviśimata) splendour, majesty (īndrāya) the supreme controller of all enemies, God (vajram) the supreme weapon (nigha nighnate) with thunderbolt strike (vadham) to kill, destroy.

Elucidation :

Who makes us victorious in struggles and difficult situations?

What is the purpose of wars and difficult situations?

He certainly makes us face big wars, struggle and difficulties to gain power and to purify ourself. He Himself becomes a great warrior and the strength of the people. After victory, people offer respect and express full faith in the splendour and majesty of that Supreme controller of enemies. He is the Supreme weapon with His thunderbolt strike to kill and destroy the enemies, evil thoughts and wickedness.

Practical utility in life :

What is the weapon to destroy all difficulties?

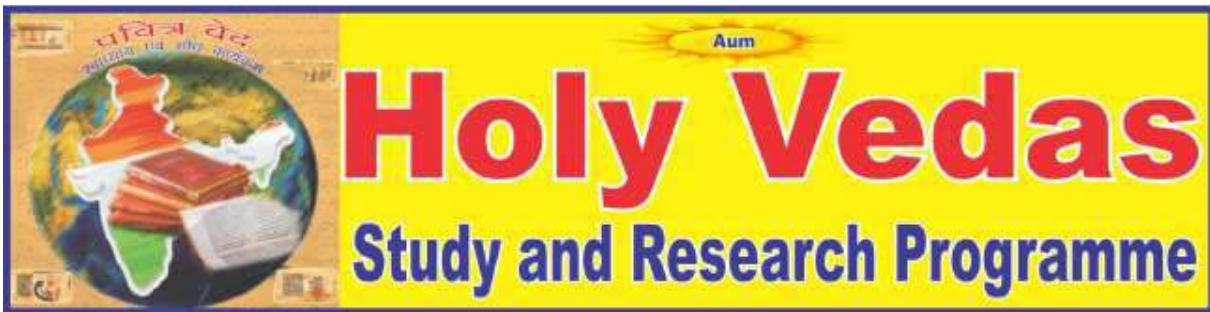
Why do we respect God?

How do we get purified?

After every difficult situation, we gain a new strength, of course, already hidden in us. We just realise that we have some divine hidden powers. Thus, people start realising and respecting that Divine Power and its source, the Supreme Divine, God. In this process, ultimately we get purified by realising the divinity within.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.55.6

Sa hi śravasyuh sadanāni kṛtrimā kṣmayā vṛdhāna ojasā vināśayan.
Jyotīṁshi kṛṇvann avṛkāṇi yajyave'va sukratuh sartavā apah srjat.

(Sah) He (hi) only (śravasyuh) keen to make us worthy of hearing (sadanāni kṛtrimā) dwellings of evils and wicked (kṣmayā) with power (vṛdhānah) expanding like earth (ojasā) with bravery (vināśayan) destroying (Jyotīṁshi) rays of knowledge (kṛṇvann) produces (avṛkāṇi) free from concealment (yajyave) for performing good deeds (ava – to be prefixed with srjat) (sukratuh - ava sukratuh) performer of best deeds, God (sartavā) enables to flow (apah) waters, vast activities (srjat) produces.

Elucidation :

Who can make us worthy of hearing?

He only is keen to make us worthy of hearing by destroying the dwellings of evil and wicked tendencies in us, with His powers and bravery. He expands like earth. Being the Performer of best deeds, God produces rays of knowledge free from concealment for performing good deeds and enables the waters to flow and produces vast activities.

Practical utility in life :

What is the purpose of following vast knowledge and activities of God?

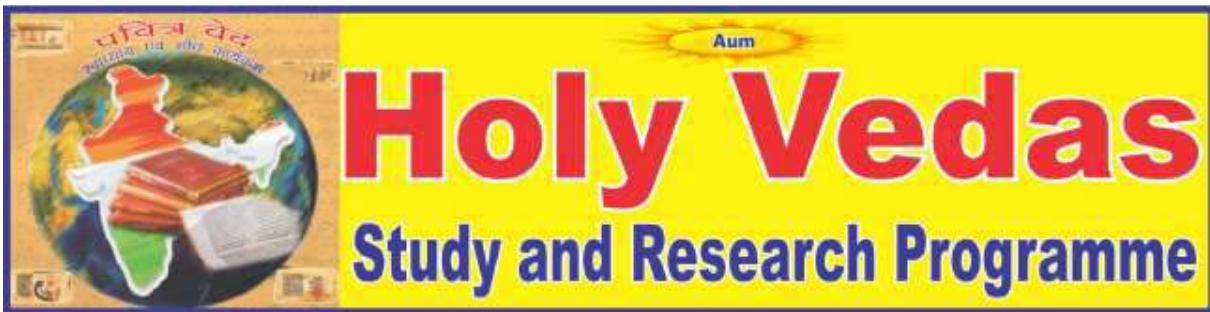
What is the divine path of gyan, karma and upasana?

God has vast knowledge and vast activities. He has opened His treasures for us. He inspires and helps us to destroy evil thoughts and to engage ourself in best activities like Him. As He is worthy of hearing, He is keen to make us also worthy of hearing.

Therefore, the divine path is to follow and gain knowledge from God, to act like God for the welfare of all and to become renowned like God. It means God is the Giver of both – gyan and karma. If we follow these two gifts of God religiously, it would be supreme bhakti i.e. upasana in itself.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.55.7

Dānāya manah somapāvann astu te'rvāñcā harī vandanaśrud ā kṛdhi.

Yamiṣṭhāsaḥ sārathayoh ya indra te na tvā ketā ā dabhnūvanti bhūrnayah.
(Dānāya) for donating, for charity (manah) mind (soma pāvan) drinker of virtues, great divine knowledge (astu) be (te) your (arvāñcā) introvert (harī) all senses (vandanaśrut) listener of all glories of God (ākṛdhi) completely make (Yamiṣṭhāsaḥ) fully control (sārathayah) the chariot, the intellect (ya) who (indra) the controller of senses (te) you (na) not (tvā) for you (ketāḥ) knowledge (ādabhnūvanti) violent, disturbing from all sides (bhūrnayah) relating to sustenance.

Elucidation :

What are the basic traits of a life full of Vedic Wisdom?

The one aspiring to drink virtues and great divine knowledge! Let your mind be inclined towards donating, giving charities.

The one aspiring to listen the glories of God! Your senses may become introvert completely.

The Indra, the controller of senses! Like a good charioteer, your intellect may keep your senses fully under control.

Your knowledge relating to your sustenance should not become violent or disturbing for you.

Practical utility in life :

What is the destructive consumerism of Kaliyuga life?

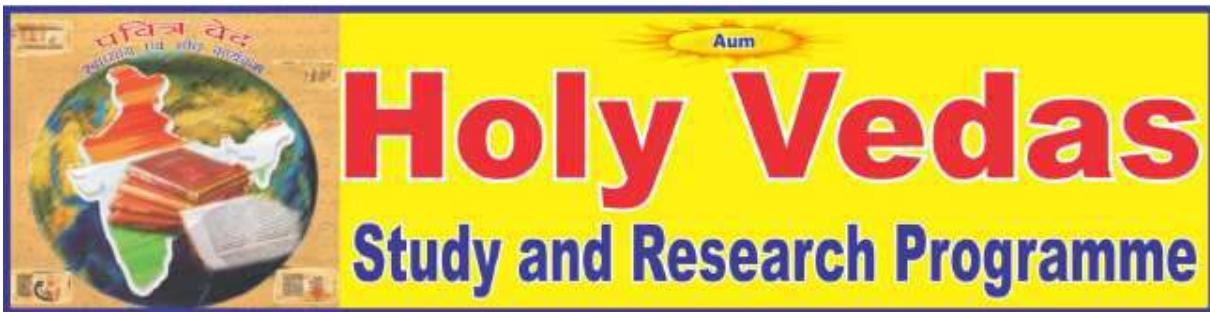
Whatever knowledge and development man is mastering in the present age of Kaliyuga, is ultimately becoming violent and disturbing for him, if there is absence of Vedic Wisdom in one's life.

- (i) In case man is not accustomed to donating his wealth for the welfare of all.
- (ii) In case his senses and mind are not introvert.
- (iii) In case his intellect is not accustomed to keep the senses under full control.

In these situations, man has become destructive for himself. Apparently, present day man is progressing but actually he is destroying the basic qualities of a peaceful and noble life. It's neither progress nor development. It's just a destructive consumerism, a way of Kaliyuga life.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.55.8

Aprakṣitam̄ vasu bibharṣi hastayor aṣāḥam̄ sahas tanvi śruto dadhe.

āvṛtāso 'vatāso na kartṛbhīś tanūṣu te kratava indra bhūrayah.

(Aprakṣitam̄) Imperishable, indestructible (vasu) wealth (bibharṣi) holds (hastayoh) in hands (aṣāḥam̄) inviolable, indefeasible (sahah) strength (tanvi) in body (śrutah) worth hearing (dadhe) holds (āvṛtāsah) full of happiness (avatāsah) full of protection (na) like (kartṛbhīḥ) duty bound and active (tanūṣu) in bodies (te) your (kratavah) knowledge and activities (indra) controller of senses (bhūrayah) precious, valuable.

Elucidation :

What type of life does a person with Vedic Wisdom enjoy?

The previous verse (RV 1.55.7) inspires to possess all knowledge with Vedic Wisdom of being a giver and controller of senses.

This present verse envisions the resulting life of a person having Vedic Wisdom :-

- (i) He holds indestructible wealth in his hands,
- (ii) He holds inviolable and indefeasible strength in his body worth hearing,
- (iii) Being a duty bound and active person, he is full of happiness like a fully protected person.
- (iv) An Indra person holds precious and valuable knowledge and activities.

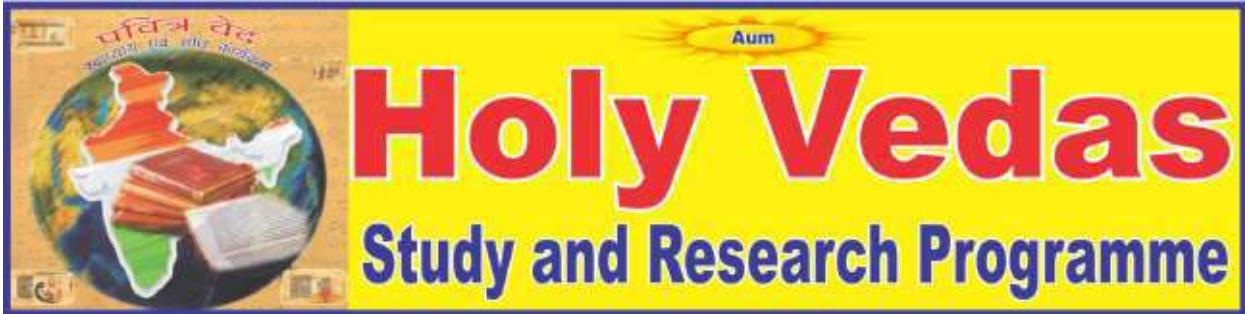
Practical utility in life :

How to use wealth and knowledge in Kaliyuga?

Wealth used for the welfare of others never gets destroyed, rather it increases. While using our knowledge, we must keep our senses and mind introvert i.e. focussed on divinity and under full control. We should never use senses indiscriminately. Such a knowledge would certainly be inviolable and indefeasible. Thus, the splendid wealth of materials and knowledge can make us a fully protected person even in this dark age of crimes and diseases i.e. Kaliyuga.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.13 (Total verses 707)

Asyedu pra brūhi pūrvyāṇi turasya karmāṇi navya ukthaiḥ .
Yudhe yad iṣṇāna āyudhānyṛ ghāyamāṇo niriṇāti śatrūn.

(Asya ita u) Of this only (of God's) (pra brūhi) say well (pūrvyāṇi) for completing (human life) (turasya) working speedily (karmāṇi) activities (navyah) new (ukthaiḥ) with speeches (Yudhe) for wars, for struggles (Yat) who (iṣṇānah) while making available (āyudhāny) weapons (for wars) (ghāyamāṇah) for destroying (niriṇāti) faces (śatrūn) enemies.

Elucidation :

Who completes our life?

Speak well about God only with new speeches who completes our human life for doing all activities speedily, who, while making available all weapons for wars and struggles, faces all enemies for destroying them.

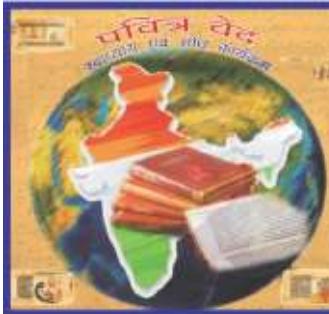
Practical utility in life :

How does one become free from evils and karmas i.e. duties?

Once a person becomes successful in destroying the modifications of mind with the help of God and by controlling over senses, he gets divine consciousness. At that stage divinity works through such a person to complete his life and to finish his karma bank. God provides him all knowledge and energy to face and finish all inimical thoughts instantly. Such a divine life becomes free from all evils and free from duties.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Aum

Holy Vedas

Study and Research Programme

Rigveda 1.61.12 (Total verses 706)

Asmā id u pra bharā tūtujāno vṛtrāya vajram īśānah kiyedhāḥ.

Gorna parva vi radā tiraśceṣyannarṇāṁsy apāṁ caradhyai.

(Asmai ita u) Of this only (of God's) (pra bharā) completely hold, fill (tūtujānah) working speedily (vṛtrāya) clouds (in sky), modifications, coverings (of mind) (vajram) to the weapon (īśānah) ruling over all (kiyedhāḥ) holding innumerable features and powers (Goh) speech, cow, earth (it's relevant here to take the meaning of 'goh' as speech to suit the theme of this verse because speech is the medium of knowledge by which modifications are to be destroyed, cow and earth are irrelevant meanings in this verse) (Na) like (parva) parts (vi radā) cut, explain, elucidate (tiraścā) hidden movement (iṣyan) desiring to receive (arṇāṁsy) flowing knowledge (apāṁ) rivers (caradhyai) in the feel.

Elucidation :

Who holds the weapon to destroy the modifications?

To destroy the modifications, coverings of mind, certainly, You completely hold and fill the weapon because :-

- (i) You are working speedily.
- (ii) You are ruling over all.
- (iii) You are holding innumerable features and powers.

Just as speeches are elucidated into parts to clarify the hidden moving knowledge for those desiring to receive that knowledge, flowing in the feet of rivers and seas of knowledge.

Practical utility in life :

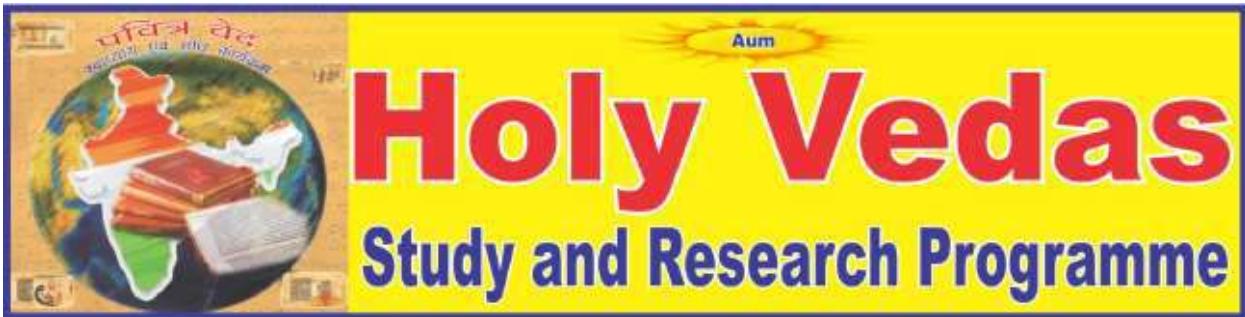
What is the role of deep hidden knowledge on the path of realisation?

As clarified in RV 1.61.10, modifications of mind are destroyed only with the help of God, this present verse lays down three reasons.

A controller of senses has to ensure the deep knowledge by living at higher consciousness. Lack of true divine knowledge is the only cause of modifications of mind. Once a devotee achieves the realisation of divine consciousness, he progresses to realise the hidden light of knowledge. Similarly, vice-versa, by knowing the hidden light of knowledge, one can succeed in destroying modifications and thus, gain a state of realisation and living at higher consciousness.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.11 (Total verses 705)

asyed u tveśasā ranta sindhavaḥ pari yad vajreṇa sīm ayacchat.
Īśānakṛd dāśuṣe daśasyan turvītaye gādham turvanīḥ kah.

(Asya ita u) Of this only (of God's) (tveśasā) with the light of knowledge, strength and justice (ranta) feels comfortable (sindhavaḥ) like seas (of knowledge) (pari) on all sides (yat) when (vajreṇa) with weapons (sīm) certainly, inimical forces (ayacchat) controls, overpower (Īśānakṛt) makes divine (dāśuṣe) completely sacrificing person (daśasyan) doing favour of all (turvītaye) for the victorious over all enemies (gādham) firm standing over shallow waters, established (turvanīḥ) doing speedily (kah) makes, does.

Elucidation :

What happens after controlling modifications of mind?

What does a sacrificing person achieves?

With the supreme light of knowledge, strength and justice of God only, one feels comfortable like seas (of knowledge) after controlling the inimical forces (like modifications and desires) from all sides with the weapons of sense control. God makes divine a completely sacrificing person doing favour of all. One who is victorious over his enemies and does his duty speedily, God makes him established with firm standing over shallow waters.

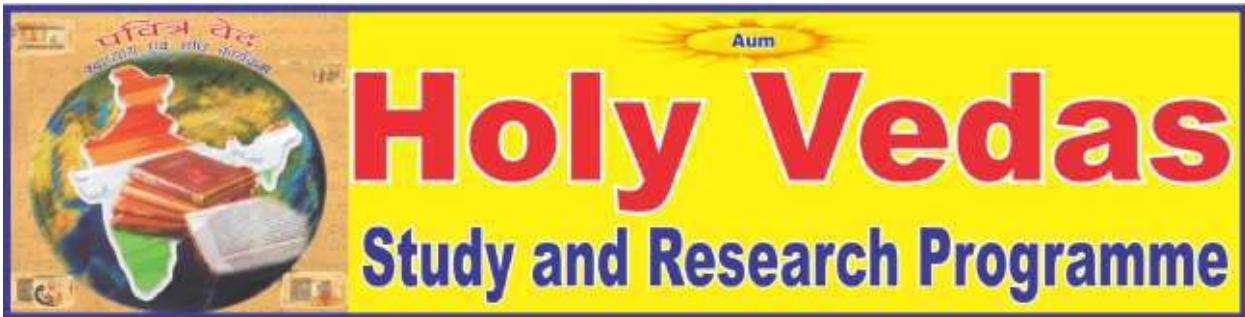
Practical utility in life :

How does a sacrificing person become divine in nature?

The result of over powering the modifications of mind is the end of ego and desires. With this state of life, one certainly becomes a sacrificing personality doing good for all. God showers all sorts of divinities upon such a sacrificing person. A sacrificing person is like a rishi or a saint doing nothing for his personal benefit but always doing good for all. Therefore, his life gets closer to God and projects all divinities.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.10 (Total verses 704)

Asyed eva śavasā śuṣantam vi vṛścad vajreṇa vṛtram indrah.
Gā na vrāṇā avanīr amuñcadabhi śravo dāvane sacetāḥ.

(Asya ita eva) Of this only (of God's) (śavasā) with the strength (śuṣantam) weakening (vi vṛścat) cut to destroy (vajreṇa) with weapons (vṛtram) modifications, desires (indrah) controller of senses (Gāḥ) releasing cows from cowpen (na) like (vrāṇāḥ) covered with desires (avanīḥ) vital powers (amuñcat) frees (from coverings) (abhi) take towards (śravah) worth listening knowledge (dāvane) for sacrificing (devotee) (sacetāḥ) conscious.

Elucidation :

Who can weaken the modifications of our mind and desires?

Who is taken towards higher knowledge?

With the strength of God only, the modifications of our mind and desires get weakened and ultimately cut to be destroyed with the weapons of a controller of senses. Vital powers that were covered with desires are freed from the coverings as if cows are freed from cow-pen.

One who is a complete sacrificing devotee and is always conscious of his destination, is taken towards the higher knowledge worth listening.

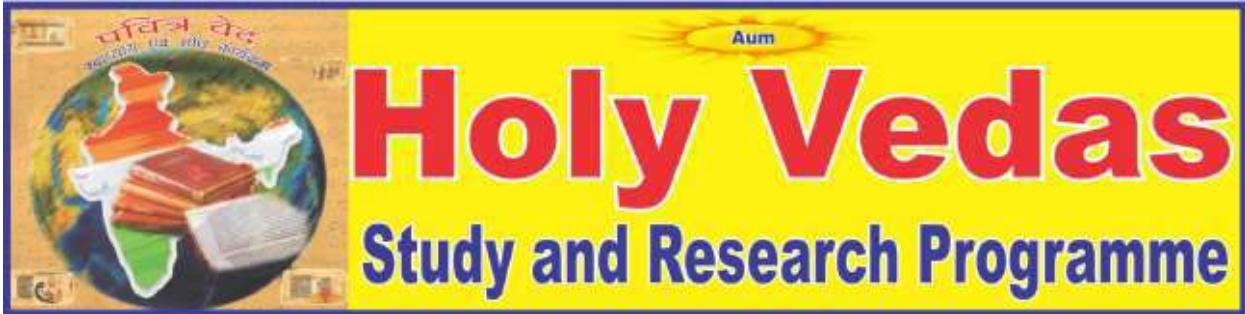
Practical utility in life :

How to progress and achieve success on one target?

Once we fix any destination and start progressing to achieve that target, we need to ensure only one most important feature in us i.e. to keep our senses fully under control, not allowing the senses to scatter here and there running behind other desires. One destination or one target means full devotion to that target and to remain fully conscious about that target always. Consciousness means continued deep awareness without scattering the faculties of mind and senses. With such deep consciousness, all faculties of mind become divine and attract divine help of God to achieve success.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.9 (Total verses 703)

Asyed eva pra ririce mahitvam divas pr̄thivyāḥ paryantarikṣāt.
Svarāl indro dama ā viśvagūrtah svarir amatru vavakṣe raṇāya.

(Asya ita eva) Of this only (of God's) (pra ririce) is broader (mahitvam) grandeur and greatness (divah) from divinities (pr̄thivyāḥ) from earth (pari antarikṣāt) even from the space (Svarāt) self-radiating (indrah) the Supreme Controller (dame) to suppress (ā – to be prefixed with vavakṣe) (viśva gūrtah) always encouraged to do His duties (svarih) with best attack on enemies (amatrah) with unlimited knowledge and speed (vavakṣe - ā vavakṣe) powerful (raṇāya) for wars.

Elucidation :

How is God supreme?

The greatness of grandeur of God only is broader than the divinities, broader than the earth and even the space for the following reasons :-

- (i) The Supreme Controller is self-radiating.
- (ii) He is competent to suppress all evils and enemies.
- (iii) He is always encouraged to do His duties.
- (iv) He ensures the best attacks on enemies with unlimited knowledge and speed.
- (v) He is powerful for all wars.

Practical utility in life :

How can we gain supremacy in the society?

If we follow the features of God by just trying to be an Indra, the controller of senses, we too can develop following features in us :-

- (i) Our pure light would radiate divine vibrations.
- (ii) We would be able to suppress evils.
- (iii) We would always be ready to do our duties.
- (iv) We would increase our knowledge and speed to ensure solution to any difficult situation.

Such a powerful divine personality is always considered supreme in the society.

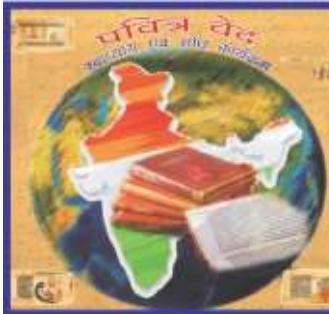
Quote :

(Asya ita eva pra ririce mahitvam divah pr̄thivyāḥ pari antarikṣāt)

The greatness of grandeur of God only is broader than the divinities, broader than the earth and even the space.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Aum

Holy Vedas

Study and Research Programme

Rigveda 1.61.8 (Total verses 702)

Asmā idu gnāścid devapatiñī indrāyārkam ahihatya ūvuh.

Pari dyāvāprthivī jabhra urvī nāsyā te mahimānam pari stah.

(Asmai ita u) For this certainly is (for God) (gnāś cid) Vedic speeches (devapatiñī) protector of divine features (indrāya) for the Supreme Indra (arkam) source of divinity (ahihatye) for destroying the enemy (ūvuh) expand (Pari – to be prefixed with jabhre) (Dyāvā prthivī) space and earth (Jabhre – pari jabhre) wins over, controls from all sides (urvī) huge (na) not (asya) this (te) they (mahimānam) greatness and grandeur (pariṣṭah) pervades in all sides.

Elucidation :

What are the benefits of Vedic speeches?

This certainly is for the Supreme Indra who is competent to destroy the enemies and whose Vedic speeches are the protector of divine features. These Vedic speeches expand the source of His divinity, who wins over and controls from all sides, the huge space and earth. Even these huge bodies are not competent to pervade the greatness and grandeur of God.

Practical utility in life :

Can any divine person or power compete with God?

How to gain and maintain divinities?

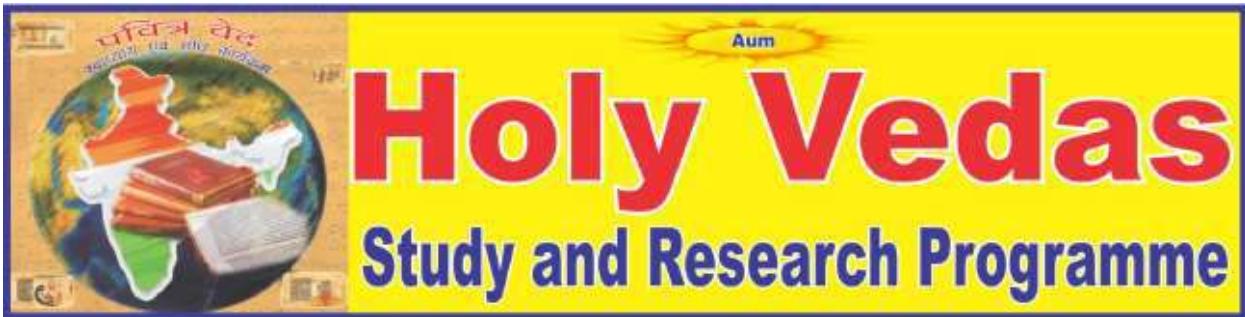
Vedic speeches produce a divine Vedic wisdom which protects the divine features of all divine bodies including divine people. Thus, their divinity is surely able to destroy the enemies by expanding them to the source of divinity i.e. God. They are controlled from all sides by God. But in any case, no person or cosmic body is competent to pervade God, His greatness and grandeur.

God has given enormous divine powers to the cosmic bodies like Sun and Earth etc. because these bodies neither express their ego against the Supreme source of their divinity nor do they have any personal desire but work silently for the welfare of all. But when some divine powers are given to human beings, they start expressing their ego and involve their desires. They deviate from the path of yajna i.e. living for others only. Yajna wisdom is the only way to gain and maintain divinities.

Therefore, when an Indra person is bestowed with some divine features and divine powers, he should not try to compete or pervade God in any manner. But ego makes some of them to claim or to project that they are equivalent to God. Their followers also should not compare them with God.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.7 (Total verses 701)

Asyedu mātuḥ savaneṣu sadyo mahaḥ pitum papivāñ cārvannā .

Muṣāyat viṣṇuh pacatam sahīyān vidhyad varāham tiro adrimastā.

(Asya ita u) For this certainly is (for God) (mātuḥ) for the creator (savaneṣu) to create (to hold His light in deep heart) (sadyah) very soon (mahah) great (pitum) protector (papivāñ) eat and drink (cāru) beautiful, pure (annā) from food (Muṣāyat) extract (viṣṇuh) pervading soul (in body) (pacatam) mature (sahīyān) tolerate and defeat (vidhyat) pierce, destroy (varāham) the clouds, modifications (of mind) (tirah) far away (adrima) huge mountains (of ignorance) (astā) throws.

Elucidation :

How is our soul able to destroy the modifications of mind?

This is certainly for the Creator to create i.e. to hold Him and His light in our deep heart. Very soon a great protector devotee eats and drinks beautiful pure extract from food. The Supreme soul, pervading in body, with the help of mature extract of food tolerates and defeats the clouds and modifications of mind by piercing and destroying. He ultimately, throws far away the huge mountains of ignorance, of clouds.

Practical utility in life :

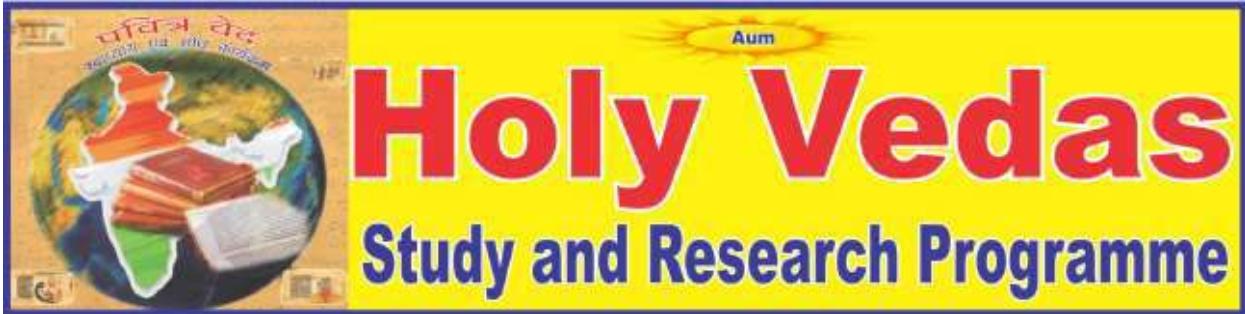
What's the importance of pure food on spiritual path?

We should develop a consciousness in our deep heart about the Creator by holding His light, His love.

The beginning of this path to higher consciousness is very simple. The devotee should strive to eat and drink only pure food. The extract of pure food is in the form of a mature vital fluid i.e. veerya, also called seminal fluid. This is the basic strength of our body and mind that helps us in higher consciousness living. It results in destroying the modifications of mind that encircle the divine light of God. Once these modifications are destroyed, the ignorance vanishes and the light of God emerges to guide us and rule over our mind. Thus, the pure food ensures both a sound health and spiritual progress.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.6 (Total verses 700)

Asmā idu tvaṣṭā takṣad vajram svapastamam svaryam raṇāya.

Vṛtrasya cid vidat yena marma tujann īśānas tujatā kiyedhāḥ.

(Asmai ita u) For this certainly is (for God) (tvaṣṭā) the maker (God) (takṣat) makes (vajram) weapon (svapastamam) for best noble and purified deeds (svaryam) for giving peace and happiness (raṇāya) for wars, struggles, difficult times (Vṛtrasya) clouds, coverings (of mind) (cit) place, spot (vidat) received (yena) with which (marma) center (tujann) killing (īśānah) having prosperity, power (tujatā) harming (kiyedhāḥ) holds, controls the power of enemies.

Elucidation :

Who makes the weapons for our best acts, peace and happiness?

This life, our acts and our glories are certainly for that who is the maker of everything and makes the weapons for our best, noble and purified deed and for giving us peace and happiness in wars, struggles and difficult times. A deep consciousness about that Supreme power is received at the central-spot of the coverings of our mind just as the rays of Supreme Energy. Sun rays reach the centre of clouds. Thus, that deep consciousness kills and harms the evils, controls the power of enemies. Such a person holds prosperity and power.

Practical utility in life :

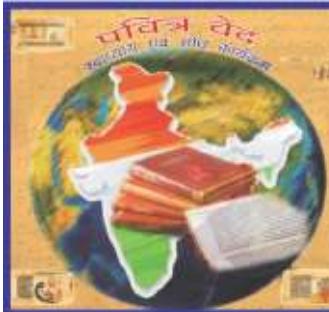
What is the real benefit of God-worship?

What's the life of higher consciousness?

A life dedicated to glorify God simply means to live a life with our own core power duly glorified. God worship is nothing outside your life, but it relates to magnifying your own core spiritual power. With that raised spiritual power, you will certainly attain peace and happiness after destroying all evils in your life as well as outside enemies. Thus, in the name of God-worship, you just arouse your spiritual faculties. This is called a life of higher consciousness, free from lower level animalistic traits.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Aum

Holy Vedas

Study and Research Programme

Rigveda 1.61.4 (Total verses 698)

Asmā id u stomāni saṁ hinomi ratharī na taṣṭeva tatsināya .

Giraś ca girvāhase suvrktīndrāya viśvaminvam medhirāya.

(Asmai ita u) For this certainly is (for God) (stomāni) glories of God (saṁ hinomi) equally spread and increase (ratharī) chariot (na) like (taṣṭeva) maker of the chariot (tatsināya) for the master of the chariot (Gira) speeches of Vedic wisdom (ca) and (girvāhase) holders of speeches of Vedic wisdom (suvrkti) best features after renouncing evils (indrāya) for the Supreme Indra (viśvaminvam) all pervading oblations, knowledge (medhirāya) to realise the source of knowledge.

Elucidation :

For whose benefit a maker makes a chariot?

For whose purpose we should make our life?

I receive and hold the glories of God certainly for realising Him and to equally spread and increase these glories just as a maker of the chariot submits the chariot for the master's use. And the speeches of Vedic Wisdom are for the Supreme Indra so that the holders of those speeches may create and hold best features after renouncing evils. Our oblations and knowledge pervade and help us to realise the source of that knowledge and oblations.

Practical utility in life :

What's meant by 'Get and Spread'?

What are the harms of not following Vedic wisdom?

We must prepare and maintain this body chariot, our life, so that it may help its master in running the creation. We must use the knowledge and oblations also to spread it for the benefit of all. This is the crux of Vedic Wisdom. 'Get it and Spread it', whether it's material or mental. This way we will be able to use this creation appropriately and to realise the creator.

Using the materials and knowledge for selfish interests, concentrating on one life or one family or one group, would create conflicts and wars, harmony among men and between men and nature would be disturbed. Disharmony, all around, would result in mental imbalance, nature's imbalance and precisely the prevailing scenario of Kaliyuga. Therefore, the only solutions to the problems of Kaliyuga is to follow Vedic Wisdom of 'Getting and Spreading'.

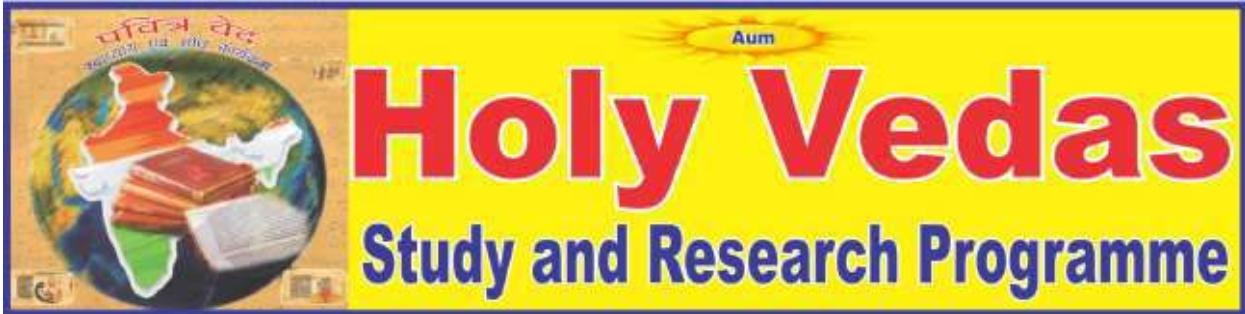
Quote ;

(viśvaminvam medhirāya)

Our oblations and knowledge pervade and help us to realise the source of that knowledge and oblations.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.5 (Total verses 699)

Asmā id u saptim iva śravasyendrāyārkam juhvā samañje .
Vīram dānaukasam vandadhyai purām gūrtaśravasam darmāṇam.

(Asmai ita u) For this certainly is (for God) (saptim iva) just as horses (having power and speed) (śravasyā) for acquiring great knowledge (indrāya) for the Supreme Controller (arkam) glorifying speech (juhvā) with my tongue (samañje) enjoin (Vīram) brave (dānaukasam) house of charity (vandadhyai) for His worship (purām) of the cities, of forts(gūrta śravasam) having deep knowledge (darmāṇam) destroys.

Elucidation :

How shall I use my speech power?
What for shall I glorify God?

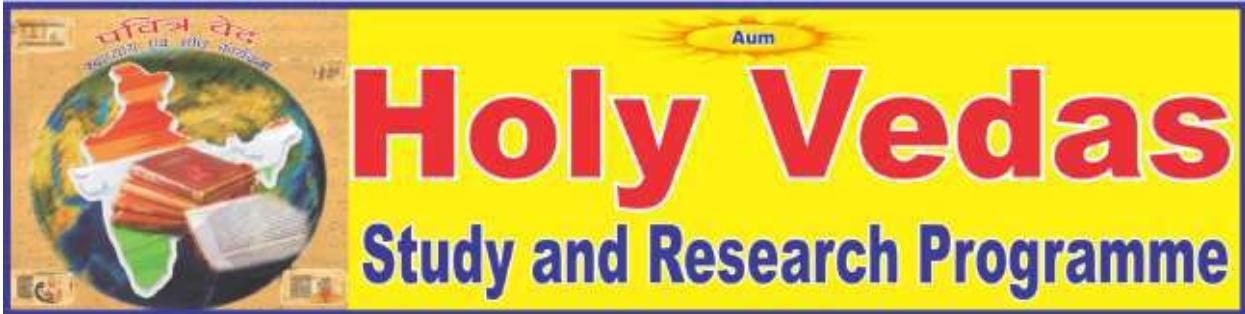
Certainly for realising the Supreme Controller and for acquiring great knowledge, I enjoin my glorifying speeches with my tongue just as a horse (having power and speed) is enjoined to the chariot. I do it for His worship who is superbly brave and the treasure house of charity. He is the deep knowledge worth hearing and competent to destroy the forts and cities of evils.

Practical utility in life :

What is the purpose of human life?
How can our life represent Supreme consciousness?
The supreme purpose of human life is to realise the Supremacy of God and His unity with our individual life. We should use our speech power to glorify God. All our acts should be dedicated to the welfare of others which is the core purpose of creation. Only a deep and continuous consciousness about the connectivity with God can provide us materials and knowledge with an inspiration to use it for divine purposes, worth hearing by the society. Our life should represent Supreme consciousness.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.3 (Total verses 697)

Asmā id u tyam upamāṁ svarṣām bharāmy āṅgūṣam āsyena .

Māṁhiṣṭham accoktibhir matnāṁ suvṛktibhiḥ sūrīm vāvṛdhadhyai.

(Asmai ita u) For this certainly is (for God) (tyam) that (upamāṁ) following Him (God) nearly, closely (svarṣām) raining happiness (bharāmi) hold, do (āṅgūṣam) chanting glories of God (āsyena) from mouth (Māṁhiṣṭham) extremely great (accoktibhiḥ) with noble speeches (matnāṁ) of revered and magnanimous people (suvṛktibhiḥ) following best features after renouncing evils (sūrīm) great knowledge (vāvṛdhadhyai) for advancement, for increasing.

Elucidation :

How to realise God? Why to realise God?

Who chants the glories of God and follow Him?

Those people who certainly aspire for their advancement, for increase, realise God by following Him nearly, closely, because He is the Rainer of happiness. Such people chant glories of God from their mouth and hold it. With noble speeches of revered and magnanimous people, God is established as great. Such noble speakers are of great knowledge and follow best features after renouncing evils.

Practical utility in life :

Who is the core Rainer of happiness?

How to follow any great personality in life?

The purpose of chanting glories of God is to follow Him in spirit. Once we realise Him in spirit, we feel that He alone is the core Rainer of all happiness. He is the source of everything we enjoy in our life both materials and thoughts. Therefore, after chanting glories of God, hold it in your heart and mind to follow it in life. Following God nearly and closely means chanting glories, holding and following.

If you wish to follow any great personality in life, chant His glories, hold these glories in your mind and heart to follow it in life. Following God nearly and closely means chanting glories, holding and following.

If you wish to follow any great personality in life, chant his glories, hold these glories in your mind and heart to follow them in life. That energy of high level, which you are praising and glorifying, will energise you in return.

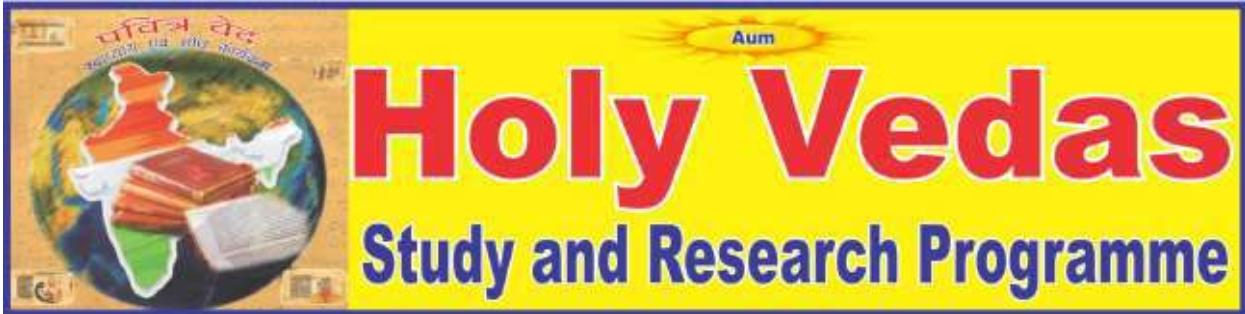
Quote ;

(accoktibhiḥ matnāṁ suvṛktibhiḥ sūrīm vāvṛdhadhyai)

With noble speeches of revered and magnanimous people, God is established as great. Such noble speakers are of great knowledge and follow best features after renouncing evils.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.2 (Total verses 696)

Asmā id u prayā iva pra yamī bharāmy āngūṣam bādhe suvṛkti.

Indrāya hṛdā manasā manīṣā pratnāya patye dhiyo marjayanta.

(Asmai ita u) For this certainly is (for God) (prayah) satisfying food and wealth (iva) just as (prayamī) gives himself (bharāmi) hold, do (āngūṣam) chanting glories of God (bādhe) competent to stop (enemies) (suvṛkti) creating best traits, features (Indrāya) for an Indra (hṛdā) with heart (manasā) with mind (manīṣā) with intellect (pratnāya) is ancient (patye) protector (dhiyah) intellect and acts (marjayanta) purify.

Elucidation :

Why do we chant glories of God?

Who is our ancient protector?

Who purifies us physically and mentally?

You give yourself for this God certainly, just as you accept and eat satisfying food and wealth.

You do and hold the chanting of glories of God because these are competent to stop (the enemies and evils) and create best traits and features.

That is why contemplative people make efforts with their heart, mind and intellect for realising that Supreme Indra who is the ancient protector and purifies our intellect and acts.

Practical utility in life :

How is our relation with God similar to eating food frequently?

We accept and eat food frequently. It is our physical requirement. It protects our body. It helps in our progress. It gives us strength.

Similarly, we should submit our-self before God, remain conscious about the presence of God in our life, and about our love-full relation with that core power within. We should live in this higher conscious frequently, every moment because this conscious relation with God would help us :-

- (i) In mental purification,
- (ii) In our permanent protection against evils and enemies,
- (iii) In creating best traits and features.

Quote :

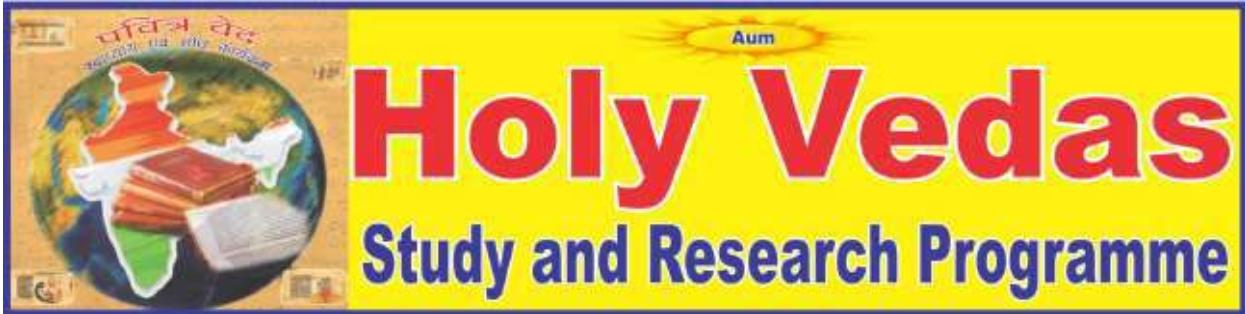
(Indrāya hṛdā manasā manīṣā)

The contemplative people make efforts with their heart, mind and intellect for realising that Supreme Indra. (pratnāya patye dhiyah marjayanta)

God is the ancient protector and purifies our intellect and acts.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.1 (Total verses 695)

Asmā idu pra tavase turāya prayo na harmi stomam māhināya .

Rcīsamāyādhrigava oham indrāya brahmāṇi rātataṁā.

(Asmai ita u) For this certainly is (for God) (pra – to be prefixed with harmi) (tavase) strong, increased powers (turāya) doing speedily (prayah) satisfying food and wealth (na) like (harmi – pra harmi) give, receivable (stomam) praises (māhināya) full of glories, best features (Rcīsamāya) praises beyond limit (adhrigave) path without any hurdle (oham) liable to receive (indrāya) God, great king, controller of senses (brahmāṇi) best cultured (rātataṁā) liable to be given.

Elucidation :

Why is God liable to be praised?

How can we earn praises?

Indra, the Supreme Controller, God, is liable to receive our praises full of glories. He has best features beyond limit because He performs His work speedily with strong and increased powers and there is no hurdle on His path. We offer our praises to Him as we receive satisfying food and wealth from Him. He gives us best cultured food and wealth.

Similarly, an Indra person, a controller of senses, is liable to receive everyone's praises full of glories beyond limit. He performs His work speedily with strong and increased powers. There is no hurdle on His path. He receives praises like satisfying food and wealth. He distributes wealth among others also.

Practical utility in life :

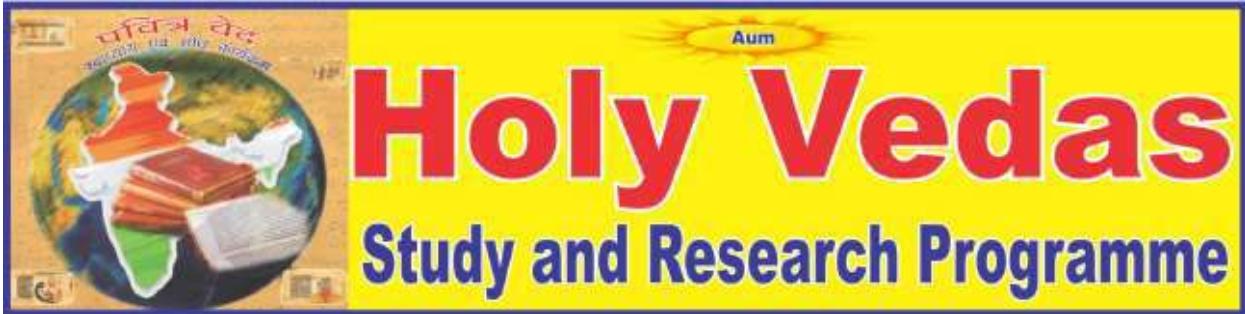
Why is praising God compared with satisfying food and wealth?

God is the Supreme Indra. We too can become Indra by following one-pointed programme of keeping full control over our senses. We too can gain immense powers and intellect, resulting into praises, glory and wealth from all sides.

Praising God is very uplifting for our own self like food and wealth. It strengthens us mentally and spiritually. Like food and wealth, the practice of praising God should be followed on regular basis. Like a wealthy person in material richness, a devotee feels wealthy in spirit. He submits before God out of love, even in odd situations. Praising God and living in His connectivity gives him more satisfaction than the material wealth.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Rigveda 1.61.16 (Total verses 710)

Evā te hāriyojanā suvrktīndra brahmāṇi gotamāśo akran.

Aiṣu viśvapeśasam dhiyam dhāḥ prātar makṣū dhiyāvasur jagamyāt.

(Eva te) For You only (for God) (Hāri yojana) knowing how to successfully complete the journey of life and making us competent for that by enjoining our senses to that chariot (suvṛkti) one who has removed evils and become the best in deed (indra) the Supreme Controller, God (brahmāṇi) divine speeches (gotamāśah) with their best senses and intellect (akran) do, make (Aiṣu) in these (Viśva peśasam) making the whole world beautiful (dhiyam) divine intellect (ādhāḥ) establish (prātar makṣū) very soon in the morning (dhiyāvasuh) living in divine knowledge (jagamyāt) be received.

Elucidation :

Who can make us competent to successfully complete the journey of life?

Who makes divine speeches in praise of God?

The Supreme Controller, God! You know how to successfully complete the journey of life and make us competent for that by enjoining our senses to the body chariot appropriately. One who has removed evils and become the best in deed, makes the divine speeches in Your praise only with his best senses and intellect, in such people, You establish the divine intellect by making the whole world beautiful. Very soon in the morning, let such people gain wealth from intellectual acts and living in divine knowledge.

Practical utility in life :

What type of people shall we aspire to meet everyday?

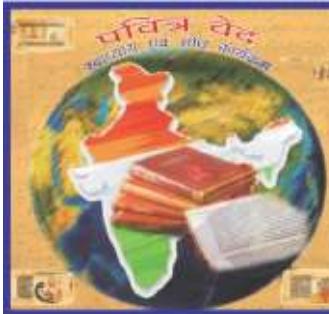
What is the successful completion of human life journey?

The successful completion of human life journey is not simply acquiring material comforts. More important is to maintain a connectivity with God, the Supreme Energy and Supreme Controller. It's possible only if you are yourself a good controller of senses. Having removed the evils from your life, you have become best in deed.

You are aspiring to make the whole world beautiful and connected to the divinity. That is why the people desire to receive you early morning every day.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Holy Vedas

Study and Research Programme

Rigveda 1.61.15 (Total verses 709)

Asmā idu tyadanu dāyyeśāmeko yad vavne bhūrerīśānah .

Praitaśām sūrye pasprdhānām sauvaśvye suśvim āvad indrah.

(Asmai ita u) Of this only (of God's) (Tyat) that (act) (anu dāyi) is given (eśām) of his (nodhaah as per RV 1.61.14) (ekah) the only one (God) (yat) who (vavne) wins (bhūreh) all that sustains us (īśānah) is the owner (Pra – to be prefixes with āvat) (etaśām) makes us active and energetic to weaken the evils (sūrya pasprdhānām) compete with Sun (sauvaśvye) having best senses like horses (suśvim) producing virtues, knowledge (āvat - pra āvat) completely protect (indrah) the Supreme Controller, God.

Elucidation :

Why shall we devote our acts to God?

As per last verse RV 1.61.14, a divine warrior, called nodhaah, is competent to get near God, live in higher consciousness.

All his acts certainly go to God who is the only Supreme Power to win and own all that sustain us.

When all acts are devoted to God, the devotee gains the following features :-

- (i) He is made active and energetic to weaken evils.
- (ii) With his senses like horses, he competes with Sun.
- (iii) He produces virtues and knowledge.
- (iv) The Supreme Indra, God, protects such a person.

Practical utility in life :

What is the basis of principle of renouncing karma phala?

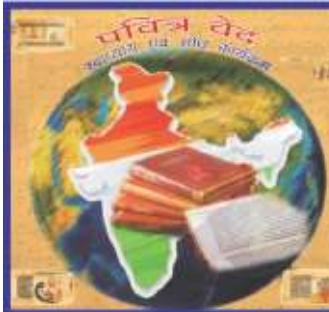
Actually, Karma Phala principle is a universal feature of the divine creation. There is no need to express your desire to achieve rewards of your acts. You will certainly get what is due as reward of your acts. When you detach yourself from the rewards, you become more competent to focus on your acts and gain many additional benefits.

Thus, it becomes a great and divine science of spirituality to get connected to God by devoting all your acts to Him. You will be double benefitted – materially and spiritually.

Continuing with the spiritual progress and higher consciousness, a time comes when a realised soul even rejects the enjoyment of comfortable rewards of his acts because of the firm belief that all acts are performed actually by God and not by him.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



Aum

Holy Vedas

Study and Research Programme

Rigveda 1.61.14 (Total verses 708)

Asyedu bhiyā girayaśca dṛlhā dyāvā ca bhūmā januṣas tujete.

Upo venasya joguvāna oṇīm sadyo bhuvad vīryāya nodhāḥ.

(Asya ita u) Of this only (of God's) (bhiyā) with fear (girayah) mountains (ca) and (dṛlhā) strong, firm (dyāvā) dyuloka i.e. heavenly bodies (ca) and (bhūmā) earth (januṣah) men and everything created (tujete) tremble, shaken (Upa) near (venasya) of the great intellect (joguvāna) singing stories (of God) (oṇīm) for keeping away evils and sufferings (sadyah) very soon (bhuvat) becomes (near) (vīryāya) for strength (nodhāḥ) holding speeches in praise (of God), a divine warrior.

Elucidation :

Who makes the whole creation tremble in fear?

How to get closer to the Supreme Intellect, God?

With the fear of God only, the strong and firm mountains, heavenly bodies like earth etc. and everything created including men tremble.

One holding speeches in praise of God, a divine warrior comes near that great intellect for gaining because he keeps all evils and sufferings away from him.

Practical utility in life :

What is the rampant effect of Kaliyuga?

How to get rid of the effects of Kaliyuga?

With particular reference to the scenario in Kaliyuga, where every mind is trembling in fear, everyone is facing the imbalance of mind in one way or the other, this verse provides a way to get rid of that fear and imbalanced state of mind. Try to be near God by loving Him, singing His glories, by developing Vedic wisdom of yajna, by exercising full control over senses, by living a life without ego and desires, by living a life at higher consciousness through meditational practices, self-searching to God-realisation.

Lord Krishna also explained this one feature of Ishwar Bhakti i.e. loving God, as the only remedy to avoid the effect of Kaliyuga while explaining the fear of Pandavas about the possible scenario in Kaliyuga.

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.16 (कुल मन्त्र 710)
एवा ते हारियोजना सुवृत्तीन्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन्।
ऐषु विश्वपेशसं धियं धा: प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यात् ॥

(एव ते) केवल आपके लिए (परमात्मा के लिए) (हारियोजन) यह जानना कि जीवन यात्रा को कैसे सफलता पूर्वक पूर्ण करना है और अपनी इन्द्रियों को उस रथ के साथ जोड़कर हमें योग्य बनाना। (सुवृत्ती) जिसने अपनी बुराईयों को समाप्त कर दिया हो और कर्मों में उत्तम बन गया हो (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (ब्रह्माणि) दिव्य वाणियाँ (गोतमास:) अपनी उत्तम इन्द्रियों और बुद्धि के साथ (अक्रन्) करता है, बनाता है (ऐषु) इनमें (विश्वपेशसम) समूचे विश्व को सुन्दर बनाते हुए (धियम्) दिव्य बुद्धि (आधा:) स्थापित (प्रातः काल में अति गौघ्र (धियावसु:) दिव्य ज्ञान में जीने वाला (जगम्यात्) प्राप्त करे।

व्याख्या :-

जीवन की यात्रा को सफलता पूर्वक पूरा करने के लिए कौन हमें सक्षम बना सकता है?

परमात्मा की प्रशंसा में कौन दिव्य वाणियों का निर्माण करता है?

सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! आप जानते हो कि इस जीवन की यात्रा को किस प्रकार सफलता पूर्वक पूरा करना है और हमारे शरीर रथ के साथ समुचित प्रकार से हमारी इन्द्रियों को जोड़कर आप ही हमें इसके लिए सक्षम बनाते हो। जिस व्यक्ति ने बुराईयों का त्याग कर दिया हो और कार्यों में उत्तम बन चुका हो, अपनी उत्तम इन्द्रियों और बुद्धि के बल पर जो आपकी प्रशंसा में दिव्य वाणियाँ बोलता हो, ऐसे लोगों में, सारे संसार को सुन्दर बनाकर, आप दिव्य बुद्धि स्थापित करते हो। प्रातःकाल अतिशीघ्र ऐसे लोगों को बौद्धिक कार्यों तथा दिव्य ज्ञान में जीने के कारण सम्पदाएं अर्जित करने दो।

जीवन में सार्थकता :-

हमें प्रतिदिन कैसे लोगों से मिलने की आशा करनी चाहिए?

मानव जीवन यात्रा की सफल पूर्णता कैसे होती है?

मानव जीवन की यात्रा की सफल पूर्णता केवल भौतिक सुख-सुविधाओं की कमाई से ही नहीं होती। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा और सर्वोच्च नियंत्रक के साथ सम्पर्क बनाकर रखना। यह तभी सम्भव है यदि आप स्वयं इन्द्रियों के एक अच्छे नियंत्रक हैं। अपने जीवन से बुराईयों को हटाकर आप कार्यों में उत्तम बन चुके हो। आप समूचे संसार को सुन्दर बनाना चाहते हो और दिव्यता के साथ इसे जोड़ना चाहते हो। इसलिए लोग प्रतिदिन प्रातःकालीन वेला में आपको प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.61.15 (कुल मन्त्र 709)

अस्मा इदु त्यदनु दायेषामेको यद्बन्ने भूरेरीशानः ।

प्रैतशं सूर्ये पस्पृधानं सौवश्ये सुष्ठिमावदिन्द्रः ॥

(अस्मै इत् उ) केवल इसका (परमात्मा का) (त्यत) वह (कार्य) (अनु दायी) दिया गया है (एषाम्) उसके लिए (ऋग्वेद 1.61.14 के अनुसार नोधाः के लिए) (एक) केवल एक (परमात्मा) (यत) जो (वन्ने) जीतता है (भूरेः) वह सब जो हमारा पालन करता है (ईशानः) स्वामी है (प्र - आवत् से पूर्व लगाकर) (एतशम्) बुराईयों को कमजोर करने के लिए हमें सक्रिय और ऊर्जावान् बनाता है (सूर्य पस्पृधानम्) सूर्य के साथ स्पर्धा करता है (सौवश्ये) अश्वों के समान उत्तम इन्द्रियाँ धारण करने वाला (सुष्ठिम्) शुभ गुण, ज्ञान पैदा करते हुए (आवत् - प्र आवत्) पूरी तरह से रक्षा करता है (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा ।

व्याख्या :-

हमें अपने कार्य परमात्मा के प्रति समर्पित क्यों करने चाहिए?

ऋग्वेद 1.61.14 के अनुसार एक दिव्य योद्धा, नोधाः, ही परमात्मा की निकटता प्राप्त करने और उच्च चेतना का जीवन जीने में सक्षम हो सकता है।

उसके सभी कार्य परमात्मा के पास जाते हैं जो अकेली सर्वोच्च सत्ता है, हमारा पालन पोषण करने के लिए आवश्यक सभी वस्तुओं का स्वामी बनने के लिए।

जब सभी कार्य परमात्मा को समर्पित हो जाते हैं तो साधक को निम्न लक्षण प्राप्त होते हैं :—

1. वह बुराईयों को कमजोर करने के लिए सक्रिय और ऊर्जावान हो जाता है।
2. अश्वों की तरह अपनी इन्द्रियों के साथ वह सूर्य से प्रतिस्पर्धा करता है।
3. वह शुभ गुणों और ज्ञान को उत्तम करता है।
4. सर्वोच्च इन्द्र, परमात्मा, ऐसे व्यक्ति का संरक्षण करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

कर्मफल त्याग करने के सिद्धान्त का क्या आधार है?

वास्तव में कर्मफल का सिद्धान्त इस दिव्य सृष्टि का एक सदा सत्य रहने वाला लक्षण है। आपको अपने कार्यों के फलों को प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप निश्चित रूप से वह प्राप्त करोगे जो आपके कार्यों का फल निर्धारित है। जब आप स्वयं को कार्यों के फल से पृथक कर लेते हो तो आप अपने कार्यों पर ध्यान लगाने में और अधिक सक्षम बन जाते हो तथा इसके अतिरिक्त भी आपको कई लाभ होते हैं।

इस प्रकार अपने कार्यों को परमात्मा के प्रति समर्पित करके आप उससे जुड़ने के लिए एक महान् और आध्यात्मिकता के दिव्य विज्ञान के साथ जुड़ जाते हो। आपको इससे दोगुना लाभ होता है — भौतिक रूप में और आध्यात्मिक रूप में।

अपनी आध्यात्मिक प्रगति और उच्च चेतना को जारी रखते हुए, एक समय ऐसा आता है जब वह अनुभूति प्राप्त आत्मा अपने कार्यों के सुविधाजनक फलों को भोगने से भी इन्कार कर देता है। क्योंकि उसका यह दृढ़ विश्वास हो जाता है कि सभी कार्य वास्तव में परमात्मा के द्वारा ही सम्पन्न किये गये हैं, उसके द्वारा नहीं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.14 (कुल मन्त्र 708)

अस्येदु भिया गिरयश्च दृळहा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते ।
उपो वेनस्य जोगुवान् ओणिं सद्यो भुवद्वीर्यो नोधाः ॥

(अस्य इति उ) केवल इसका (परमात्मा का) (भिया) भय के साथ (गिरः) पर्वत (च) और (दृळहा) मजबूत, दृढ़ (द्यावा) द्यूलोक अर्थात् आकाशीय शरीर (च) और (भूमा) पृथ्वी (जनुषः) मनुष्य तथा सब कुछ जो निर्मित हुआ है (तुजेते) हिलाना, कंपन करना (उप) निकट (वेनस्य) महान् बुद्धि का (जोगुवान) कथाओं का गान (परमात्मा की) (ओणिम्) बुराईयों और कष्टों को दूर करने के लिए (सद्यः) अत्यन्त शीघ्र (भुवत) होता है (निकट) (वीर्याय) बल के लिए (नोधाः) परमात्मा की प्रशंसा में वाणियों को धारण करने वाला, एक दिव्य योद्धा ।

व्याख्या :-

कौन समूची सृष्टि को डर से कंपित कर सकता है?

सर्वोच्च बुद्धि, परमात्मा के निकट कैसे हो सकते हैं?

केवल परमात्मा के भय से ही बलशाली और दृढ़ पर्वत, आकाशीय शरीर जैसे धरती आदि तथा मनुष्यों सहित सब कुछ जो निर्मित हुआ है, कंपित होने लगता है।

परमात्मा की प्रशंसा में वाणियों को धारण करने वाला व्यक्ति, एक दिव्य योद्धा उस महान् बुद्धि के निकट आ पाता है जिससे वह बल प्राप्त कर सके और क्योंकि वह सभी बुराईयों और कष्टों को अपने से दूर रखता है ।

जीवन में सार्थकता :-

कलियुग का अनियंत्रित प्रभाव क्या है?

कलियुग के प्रभाव से मुक्त कैसे रहा जा सकता है?

विशेष रूप से कलियुग के दृश्य को ध्यान में रखकर, जहाँ प्रत्येक मन डर से कांप रहा है, प्रत्येक व्यक्ति किसी एक या अन्य रूप में मन के असंतुलन का सामना कर रहा है, यह मन्त्र उस डर और असंतुलित मन की अवस्था से छुटकारा पाने का मार्ग उपलब्ध कराता है। परमात्मा से प्रेम करते हुए उसके निकट होने का प्रयास करो, उसकी महिमा का गान करो, यज्ञ का वैदिक विवेक विकसित करो, अपनी इन्द्रियों पर पूरा नियंत्रण रखो, अहंकार और इच्छाओं के बिना जीवन जियो, ध्यान-साधना के अभ्यास से उच्च चेतना के स्तर पर जीवन जियो, अपने अन्दर की खोज से परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास करो ।

भगवान् श्रीकृष्ण ने ईश्वर भक्ति अर्थात् परमात्मा से प्रेम के एक ही लक्षण को कलियुग के प्रभावों से मुक्त रहने के उपाय के रूप में पाण्डवों को बताया जब वे कलियुग के दृश्यों की सम्भावनाओं को समझा रहे थे ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.13 (कुल मन्त्र 707)

अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्वाणि तुरस्य कर्माणि नव्य उकथैः ।
युधे यदिष्णान आयुधान्यृधायमाणो निरिणाति शत्रून् ॥

(अस्य इत् उ) केवल इसका (परमात्मा का) (प्र ब्रूहि) अच्छे प्रकार से कहना है (पूर्वाणि) पूर्ण करने के लिए (मानव जीवन) (तुरस्य) गति के साथ कार्य करते हुए (कर्माणि) गतिविधियाँ (नव्यः) नई (उकथैः) वाणियों के साथ (युधे) युद्धों के लिए, संघर्षों के लिए (यत्) जो (इष्णानः) उपलब्ध कराते हुए (आयुधानि) वज्र (युद्धों के लिए) (ऋधायमाणः) नष्ट करने के लिए (निरिणाति) सामना करना (शत्रून्) शत्रु ।

व्याख्या :-

हमारे जीवन को पूर्ण कौन करता है?

परमात्मा के बारे में नई वाणियों के साथ अच्छा बोलना चाहिए जो हमारे जीवन को सभी गतिविधियाँ तीव्रता के साथ पूरी करने के लिए पूर्ण करता है, जो, युद्धों और संघर्षों के लिए सभी वज्र उपलब्ध कराते हुए, सभी शत्रुओं का नाश करने के लिए उनका सामना करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

कोई व्यक्ति बुराईयों और कर्मों अर्थात् कर्तव्यों से मुक्त कैसे हो सकता है?

जब एक व्यक्ति परमात्मा की सहायता से मन की वृत्तियों का नाश करने में सफल हो जाता है और अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण कर लेता है, उसे दिव्य चेतना प्राप्त होती है । उस अवस्था में ऐसे व्यक्ति के माध्यम से दिव्यता काम करती है जो उसके जीवन को पूर्ण करती है और उसके कर्म संकलन को समाप्त करती है । परमात्मा उसे हर प्रकार का ज्ञान और ऊर्जा उपलब्ध कराते हैं जिससे वह शत्रु विचारों का सामना कर सके और तुरन्त उन्हें समाप्त कर सके । ऐसा दिव्य जीवन सभी बुराईयों तथा कर्तव्यों से मुक्त हो जाता है ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.61.12 (कुल मन्त्र 706)

अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः कियेधाः ।
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चेष्यन्नर्णास्यपां चरध्यै ॥

(अस्मै इत् उ) केवल इसका (परमात्मा का) (प्रभर) पूरी तरह से धारण करता है, भरता है (तूतुजानः) गति से कार्य करने वाला (वृत्राय) बादल (आकाश में), वृत्तियाँ, आवरण (मन के) (वज्रम्) वज्र को (ईशानः) सब पर शासन करते हुए (कियेधाः) असंख्य लक्षण और शक्तियाँ धारण करने वाला (गोः) वाणी, गाय, भूमि (इस मन्त्र के मूल विचार के अनुसार गोः का अर्थ वाणी स्वीकार करना ही उचित है, क्योंकि वाणी ही ज्ञान का माध्यम है जिसके द्वारा वृत्तियों का नाश किया जाता है, गोः के अर्थ गाय और पृथ्वी इस मन्त्र में उपयुक्त नहीं है।) (न) जैसे (पर्व) अंग (विरद) काटना, स्पष्ट करना, व्याख्या करना (तिरश्च) छिपी हुई गति (इष्वन्) प्राप्त करने की इच्छा करते हुए (अर्णासि) प्रवाहित ज्ञान (अपाम्) नदियाँ (चरध्यै) एहसास में।

व्याख्या :-

किसके पास वृत्तियों के नाश का वज्र होता है?

मन की वृत्तियाँ और आवरणों का नाश करने के लिए आप उस वज्र को पूरी तरह से धारण करते हो क्योंकि :-

1. आप तीव्रता से कार्य करते हो।
2. आप सब पर शासन करते हो।
3. आप असंख्य लक्षणों और शक्तियों को धारण करते हो।

जिस प्रकार वाणियों के एक-एक भाग की व्याख्या उनके अन्दर छिपे हुए गतिमान ज्ञान को उन लोगों तक पहुंचाने के लिए की जाती है जो उस ज्ञान को प्राप्त करने की इच्छा करते हैं, जैसे ज्ञान की नदियों और समुद्रों के चरणों में बह रहा हो।

जीवन में सार्थकता :-

अनुभूति के पथ पर गहरे और गुप्त ज्ञान की क्या भूमिका है?

जैसा कि ऋग्वेद 1.61.10 में स्पष्ट किया गया है कि मन की वृत्तियाँ केवल परमात्मा की सहायता से ही नष्ट होती हैं, यह वर्तमान मन्त्र उसके तीन कारण बताता है।

इन्द्रियों के नियंत्रक को उच्च चेतना के स्तर पर जीवन जीते हुए गहरा ज्ञान सुनिश्चित करना होता है। सच्चे दिव्य ज्ञान के अभाव के कारण ही मन की वृत्तियाँ पैदा होती हैं। एक बार जब कोई साधक दिव्य चेतना की अनुभूति प्राप्त कर लेता है तो वह ज्ञान के छिपे हुए प्रकाश की अनुभूति प्राप्त करने की तरफ अग्रसर होता है। इसी प्रकार, इसके विपरीत, ज्ञान के छिपे हुए प्रकाश को जानकर, कोई व्यक्ति वृत्तियों का नाश करने में सफल हो सकता है और इस प्रकार अनुभूति की अवरथा और उच्च चेतना में जीने की कला प्राप्त कर सकता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.61.11 (कुल मन्त्र 705)
 अस्येदु त्वेषसा रन्ति सिन्धवः परि यद्वज्जेण सीमयच्छत् ।
 ईशानकृद्वाशुषे दशस्यन्तुर्वीर्तये गाधं तुर्वणिः कः ॥

(अस्य इत् उ) केवल इसका (परमात्मा का) (त्वेषसा) ज्ञान के प्रकाश के साथ, बल और न्याय के साथ (रन्ति) सुविधाजनक महसूस करता है (सिन्धवः) समुद्रों की तरह (ज्ञान के) (परि) सभी दिशाओं में (यत) जब (वज्जेण) वज्रों के साथ (सीम) निश्चित रूप से, शत्रु ताकतें (अच्छत्) नियंत्रण करता है, काबू करता है (ईशान कृत) दिव्य बनाता है (दाशुषे) पूर्ण त्याग करने वाला व्यक्ति (दशस्यन्) सबका सहयोग करने वाला (तुर्वीर्तये) सभी शत्रुओं पर विजयी व्यक्ति के लिए (गाधम्) उथले पानी पर मजबूती से स्थापित (तुर्वणिः) गति के साथ कार्य करने वाले (कः) करता है, बनाता है।

व्याख्या :-

मन की वृत्तियों पर नियंत्रण करने के बाद क्या होता है?

एक त्यागशील व्यक्ति क्या प्राप्त करता है?

केवल ज्ञान के सर्वोच्च प्रकाश, बल और परमात्मा के न्याय के साथ ही कोई व्यक्ति ज्ञान के समुद्र की तरह सुविधाजनक महसूस करता है। जब वह इन्द्रियों पर नियंत्रण रूपी वज्र के साथ चारों तरफ से (मन की वृत्तियों और इच्छाओं रूपी) शत्रु ताकतों पर नियंत्रण कर लेता है। जो व्यक्ति सबका कल्याण करता है और पूर्ण त्यागशाली होता है, उसे परमात्मा दिव्य बना देते हैं। जो व्यक्ति अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेता है और अपने कर्तव्यों का पालन तीव्र गति से करता है। परमात्मा उसे उथले पानी पर भी दृढ़ता के साथ स्थापित कर देते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

एक त्यागशील व्यक्ति किस प्रकार दिव्य प्रकृति का बन जाता है?

मन की वृत्तियों पर नियंत्रण करने का परिणाम अहंकार और इच्छाओं के अन्त के रूप में प्राप्त होता है। जीवन की इस अवस्था के साथ कोई भी व्यक्ति निश्चित रूप से सबका भला करने वाला त्यागशील व्यक्तित्व बन जाता है। परमात्मा ऐसे त्यागशील व्यक्ति पर हर प्रकार की दिव्यताओं की वर्षा करते हैं। एक त्यागशील व्यक्ति उस ऋषि या सन्त की तरह होता है जो अपने लिए कुछ नहीं करता केवल दूसरों का ही भला करता है। इसलिए उसका जीवन परमात्मा के निकट हो जाता है और सभी दिव्यताओं को प्रकट करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.10 (कुल मन्त्र 704)
अस्येदेव शवसा शुष्नतं वि वृश्चद्वज्ञेण वृत्रमिन्दः ।
गा न ब्राणा अवनीरमुचदभि श्रवो दावने सचेताः ॥

(अस्य इत् एव) केवल इसका (परमात्मा का) (शवसा) बल के साथ (शुष्नतम्) कमजोर करने वाला (वि वृश्चत्) नष्ट करने के लिए काटना (वज्रेण) वज्रों के साथ (वृत्रम्) वृत्तियाँ, इच्छाएं (इन्द्रः) इन्द्रियों का नियंत्रक (गा:) गऊओं को गऊशाला से छुड़ाने वाला (न) जैसे (ब्राणाः) इच्छाओं के आवरण में (अवनीः) मूल शक्तियाँ (अमुंचत्) मुक्त करता है (आवरणों से) (अभि) की तरफ ले जाना (श्रवः) सुनने योग्य ज्ञान (दावने) त्याग करने वाले के लिए (सचेताः) चेतन।

व्याख्या :-

हमारे मन की वृत्तियाँ और इच्छाओं को कौन कमजोर कर सकता है?

उच्च ज्ञान की तरफ किसे ले जाया जाता है?

केवल परमात्मा की शक्ति के साथ और इन्द्रियों के नियंत्रक के वज्र के साथ ही हमारे मन की वृत्तियाँ और इच्छाएँ कमजोर होती हैं और अन्ततः नष्ट होने के लिए कट जाती हैं। हमारी मुख्य शक्तियाँ जो इच्छाओं के आवरण से ढंक गई थीं वे उन आवरणों से मुक्त हो जाती हैं जैसे – गाय गौशाला से मुक्त होती है।

जो व्यक्ति पूर्ण त्यागी साधक है और अपने लक्ष्य के प्रति सदैव सचेत रहता है, उसी को उच्च ज्ञान की तरफ ले जाया जाता है जो सुनने के योग्य होता है।

जीवन में सार्थकता :-

एक लक्ष्य की तरफ किस प्रकार प्रगति और प्राप्ति की सफलता हो सकती है?

एक बार जब हम अपना कोई भी लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं और उस लक्ष्य की प्राप्ति की तरफ प्रगति करने लगते हैं तो हमें केवल एक ही सबसे महत्वपूर्ण लक्षण अपने अन्दर सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपनी इन्द्रियों को पूरी तरह से अपने नियंत्रण में रखें, अपनी इन्द्रियों को इधर-उधर इच्छाओं के पीछे भागने के लिए अनुमति नहीं देनी चाहिए। एक लक्ष्य का अर्थ है उस लक्ष्य के प्रति पूरी साधना और सदैव उस लक्ष्य के प्रति पूरी तरह सचेत रहना। चेतना का अर्थ है अपने मन और इन्द्रियों की कलाओं को अलग-अलग दिशाओं में जाने से रोककर लगातार हम गहरी जागृत अवस्था में रहें। ऐसी गहरी चेतना के साथ मन की सभी कलाएँ दिव्य हो जाती हैं और सफलता को प्राप्त करने के लिए परमात्मा की दिव्य सहायता को आकर्षित कर लेती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.9 (कुल मन्त्र 703)

अस्येदेव प्रेरिते महित्वं दिवस्पृथिव्या: पर्यन्तरिक्षात् ।
स्वराळिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः स्वरिमत्रो ववक्षे रणाय ॥

(अस्य इत् एव) केवल इसका (परमात्मा का) (प्रेरिते) विस्तृत है (महित्वम्) महिमा और महानता (दिवः) दिव्यताओं से (पृथिव्याः) पृथ्वी से (परि अन्तरिक्षात्) अन्तरिक्ष से भी (स्वराट) स्व-तरंगित (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक (दमे) दमन करना (आ – ववक्षे से पूर्व लगाकर) (विश्वगूर्तः) सदैव अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित (स्वरि:) शत्रुओं पर उत्तम हमलों के साथ (अमत्रः) असीमित ज्ञान और गति के साथ (ववक्षे – आ ववक्षे) शक्तिशाली (रणाय) युद्धों के लिए ।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सर्वोच्च है?

परमात्मा की महानता और उसकी शान दिव्यताओं से भी विस्तृत है और धरती तथा अन्तरिक्ष से भी विस्तृत है। इसके निम्न मुख्य कारण हैं :-

(क) वह सर्वोच्च नियंत्रक स्व-प्रकाशित है।

(ख) वह सभी बुराईयों और शत्रुओं को कुचलने में सक्षम है।

(ग) वह सदैव अपने दायित्वों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित रहता है।

(घ) वह अपने असीमित ज्ञान और गति के साथ शत्रुओं पर उत्तम हमले सुनिश्चित करता है।

(ङ) वह सभी युद्धों के लिए शक्तिशाली है।

जीवन में सार्थकता :-

हम समाज में सर्वोच्चता कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

यदि हम इन्द्रियों के नियंत्रक अर्थात् इन्द्र बनकर परमात्मा के लक्षणों का अनुसरण करें तो हम भी निम्न लक्षण अपने अन्दर विकसित कर सकते हैं :-

1. हमारा शुद्ध प्रकाश दिव्य तरंगों को प्रसारित करने लगेगा।

2. हम बुराईयों को कुचलने के योग्य बन जायेंगे।

3. हम सदैव अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे।

4. हम अपने ज्ञान और गति को बढ़ायेंगे जिससे किसी भी कठिन परिस्थिति का निदान किया जा सके।

ऐसे शक्तिशाली दिव्य व्यक्तित्व को समाज में सदैव सर्वोच्च समझा जाता है।

सूक्ष्म :-

(अस्य इत् एव प्रेरिते महित्वम् दिवः पृथिव्या: परि अन्तरिक्षात्) परमात्मा की महानता और उसकी शान दिव्यताओं से भी विस्तृत है और धरती तथा अन्तरिक्ष से भी विस्तृत है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.61.8 (कुल मन्त्र 702)

अस्मा इदु ग्राश्चद्वेषपत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊः।

परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वा नास्य ते महिमानं परिष्टः ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (ग्नाः चित्) वैदिक वाणियाँ (देवपत्नीः) दिव्य लक्षणों का रक्षक (इन्द्राय) सर्वोच्च इन्द्र के लिए (अर्कम्) दिव्यता का स्रोत (अहिहत्ये) शत्रुओं को नष्ट करने के लिए (ऊः) विस्तृत (परि – जभ्र से पूर्व लगाकर) (द्यावापृथिवी) अन्तरिक्ष और पृथ्वी (जभ्र – परि जभ्र) जीतता है, सब तरफ से नियंत्रण करता है (उर्वा) विशाल (न) नहीं (अस्य) यह (ते) वे (महिमानम्) महानता और महिमा (परिष्टः) सब दिशाओं में व्यापक।

व्याख्या :-

वैदिक वाणियों के क्या लाभ हैं?

यह निश्चित रूप से सर्वोच्च इन्द्र का ही दायित्व है जो भात्रुओं का नाश करने में सक्षम हैं और जिसकी वैदिक वाणियाँ दिव्य लक्षणों की रक्षक हैं। यह वैदिक वाणियाँ उसकी दिव्यता के स्रोत को विस्तृत कर देती हैं जो चारों तरफ से विशाल अन्तरिक्ष और पृथ्वी को भी जीतकर नियंत्रित करने में सक्षम है। यह विशाल शरीर भी इतने सक्षम नहीं हैं कि वे परमात्मा की महानता और शान को ढक सकें।

जीवन में सार्थकता :-

क्या कोई दिव्य व्यक्ति या शक्ति परमात्मा के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकता है?

दिव्यताओं को किस प्रकार प्राप्त करें और उन्हें बनाकर रखें?

वैदिक वाणियाँ दिव्य वैदिक विवेक को उत्पन्न करती हैं जो सभी दिव्य शरीरों और दिव्य लोगों के दिव्य लक्षणों की रक्षा करती है। इस प्रकार उनकी दिव्यता अपने को दिव्यता के स्रोत तक अर्थात् परमात्मा तक विस्तारित करके शत्रुओं का नाश करने के योग्य होती है। वे चारों तरफ से परमात्मा के द्वारा ही नियंत्रित होती हैं। परन्तु किसी भी अवस्था में कोई भी व्यक्ति या आकाशीय शरीर परमात्मा को, उसकी महानता और उसकी शान को व्याप्त करने अर्थात् ढंकने में सक्षम नहीं है।

परमात्मा ने सूर्य और भूमि जैसे अनेकों आकाशीय शरीरों को अपार दिव्य शक्तियाँ प्रदान की हैं। क्योंकि वे शरीर अपनी दिव्यता के सर्वोच्च स्रोत के विरुद्ध न तो कभी अपना अहंकार व्यक्त करते हैं और न ही उनकी कोई व्यक्तिगत इच्छा होती है। परन्तु वे शान्त रहकर सबके कल्याण के लिए कार्य करते हैं। परन्तु कुछ दिव्य शक्तियाँ जब मनुष्यों को दी जाती हैं तो वे अपना अहंकार व्यक्त कर देते हैं और अपनी इच्छाओं को शामिल कर लेते हैं। वे यज्ञ के मार्ग अर्थात् केवल दूसरों के लिए जीने वाले मार्ग से हट जाते हैं। दिव्यताओं को प्राप्त करने और उन्हें बनाये रखने के लिए यज्ञ की विवेकशीलता ही एक मात्र मार्ग है।

अतः जब एक इन्द्र पुरुष को कुछ दिव्य लक्षण या दिव्य शक्तियाँ प्राप्त हों तो उसे किसी भी रूप में न तो परमात्मा से प्रतिस्पर्धा का प्रयास करना चाहिए और न ही परमात्मा को व्याप्त करने का प्रयास करना चाहिए। परन्तु अहंकार कुछ लोगों को यह दावा करने के लिए या दिखावा करने के लिए तैयार कर देता है कि वे परमात्मा के समकक्ष हैं। उनके अनुयायियों को भी उनकी तुलना परमात्मा से नहीं करनी चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.7 (कुल मन्त्र 701)

अस्येदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितुं पपिवांचार्वन्ना ।
मुषायद्विष्णुः पचतं सहीयान्विध्यद्वराहं तिरो अद्रि मस्ता ॥

(अस्य इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (मातुः) निर्माता के लिए (सवनेषु) निर्माण करने के लिए (उसके प्रकाश को गहरे हृदय में धारण करने के लिए) (सद्यः) अतिशीघ्र (महः) महान् (पितुम्) संरक्षक (पपिवान्) खाना और पीना (चारू) सुन्दर, शुद्ध (अन्ना) अन्नों से (मुषायत) निचोड़ निकालना (विष्णुः) व्यापक आत्मा (शरीर में) (पचतम्) परिपक्व (सहीयान्) सहन करता है और पराजित करता है (विध्यत) भेदन करता है, विनाश करता है (वराहम्) बादल, वृत्तियाँ (मन की) (तिरः) बहुत दूर (अद्रिम) विशाल पर्वत (अज्ञानता के) (अस्ता) फेंकता है।

व्याख्या :-

हमारी आत्मा किस प्रकार मन की वृत्तियों का नाश करने के योग्य हो सकती है?

यह निश्चित रूप से निर्माता का ही दायित्व है कि वह स्वयं को और अपने प्रकाश को हमारे गहरे हृदय में धारण करे। एक महान् रक्षक साधक बहुत शीघ्र सुन्दर और भुद्ध रूप में भोजन के सार तत्त्व को खाता और पीता है। सर्वोच्च आत्मा, जो हमारे शरीर में व्याप्त है, भोजन के उस सार और परिपक्व तत्त्वों की सहायता से मन की वृत्तियों तथा बादलों को सहन करता है और उन्हें भेदकर, उनका नाश करके उन्हें पराजित कर देता है। इस प्रकार अन्ततः वह अज्ञानता और बादलों के बड़े-बड़े पर्वतों को दूर फेंक देता है।

जीवन में सार्थकता :-

आध्यात्मिक मार्ग पर शुद्ध भोजन का क्या महत्त्व है?

हमें अपने गहरे हृदय में उस निर्माता के प्रकाश और उसके प्रेम को धारण करके एक चेतना का विकास कर लेना चाहिए।

उच्च चेतना के इस पथ का प्रारम्भ करना अत्यन्त सरल है। साधक को केवल पवित्र भोजन और पवित्र पेय ही ग्रहण करने चाहिए। पवित्र भोजन का सार परिपक्व बहुमूल्य तरल अर्थात् वीर्य के रूप में होता है। यह हमारे शरीर और मन की मूल शक्ति है जो हमें उच्च चेतना के जीवन में सहायता करती है। यही हमारे मन की वृत्तियों का नाश करती है जो परमात्मा के दिव्य प्रकाश को चारों तरफ से धेर लेती हैं। एक बार यह वृत्तियाँ नष्ट हो जायें तो अज्ञानता भी समाप्त हो जायेंगी और परमात्मा के प्रकाश का उदय होगा जो हमें मन पर शासन करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेगा। इस प्रकार उत्तम स्वास्थ्य और आध्यात्मिक प्रगति दोनों ही पवित्र भोजन पर निर्भर करती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.61.5 (कुल मन्त्र 699)
अस्मा इदु सप्तिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुहवाः समंजे ।
वीरं दानौकसं वन्दध्यै पुरां गूर्तश्रवसं दर्माणम् ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (सप्तिम इव) अश्वों की तरह (बल और गति वाले) (श्रवस्या) महान् ज्ञान प्राप्त करने के लिए (इन्द्राय) सर्वोच्च नियंत्रक के लिए (अर्कम) महिमागान करने वाली वाणी (जुहवा) अपनी जिहवा के साथ (समंजे) संयुक्त करना (वीरम) बहादुर (दानौकसम) दान का घर (वन्दध्यै) उसकी पूजा के लिए (पुराम) शहरों के, किलों के (गूर्तश्रवसम) गहरे ज्ञान वाले (दर्माणम) विनाश करते हैं।

व्याख्या :-

मुझे अपनी वाणी की शक्ति का प्रयोग कैसे करना चाहिए?

मुझे परमात्मा का महिमागान किसलिए करना चाहिए?

सर्वोच्च नियंत्रक परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करने के लिए और महान् ज्ञान प्राप्त करने के लिए निश्चित रूप से अपनी जिहवा से मैं महिमामण्डन की वाणियाँ जोड़ देता हूँ, जैसे एक अश्व (बल और गति धारण करने वाला) रथ के साथ जोड़ा जाता है। मैं ऐसा उसकी पूजा के लिए करता हूँ जो अत्यन्त महान् है और दान का भण्डारगृह है। वह सुनने लायक गहरा ज्ञान है और बुराईयों के किले और नगरों को नष्ट करने में सक्षम है।

जीवन में सार्थकता :-

मानव जीवन का क्या उद्देश्य है?

हमारा जीवन किस प्रकार सर्वोच्च चेतना का प्रतिनिधित्व कर सकता है?

मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य परमात्मा की सर्वोच्चता की अनुभूति प्राप्त करना है और उसके साथ अपने व्यक्तिगत जीवन की एकता की अनुभूति प्राप्त करना है। हमें अपनी वाणी शक्ति का प्रयोग परमात्मा की महिमा के गान के लिए ही करना चाहिए। हमारे सभी कार्य अन्य लोगों के कल्याण के लिए ही समर्पित होने चाहिए। जो इस सृष्टि का मूल उद्देश्य है। परमात्मा के साथ सम्बन्ध की गहरी और लगातार चेतना ही हमें वह साधन और ज्ञान उपलब्ध करा सकती है। जिनका उपयोग दिव्य उद्देश्यों के लिए करने हेतु हम प्रेरित हों और जो समाज के द्वारा सुने जाने योग्य हों। हमारा जीवन सर्वोच्च चेतना का प्रतिनिधित्व करे।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.61.6 (कुल मन्त्र 700)

अरसा इदु त्वष्टा तक्षद्वजं स्वपस्तमं स्वर्यैरणाय ।
वृत्रस्य चिद्विदद्येन मर्म तुजन्नीशानस्तुजता कियेधाः ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (त्वष्टा) निर्माता (परमात्मा) (तक्षत) निर्माण करता है (वज्रम्) वज्र (स्वपस्तमम्) उत्तम, श्रेष्ठ और पवित्र कार्यों के लिए (स्वर्यम्) शांति और प्रसन्नता देने के लिए (रणाय) युद्धों, संघर्षों और कठिन समय के लिए (वृत्रस्य) बादल, आवरण (मन के) (चित) स्थान, स्थल (विदत) प्राप्त किये (येन) जिसके द्वारा (मर्म) केन्द्र (तुजन्न) संहार करना (ईशानः) समृद्धि, बल धारण करने वाला (तुजता) हानि पहुँचाने वाला (कियेधाः) शत्रुओं की शक्तियों को नियंत्रित करता है, रोकता है।

व्याख्या :-

हमारे उत्तम कार्यों, शांति और प्रसन्नता के लिए वज्र कौन बनाता है?

हमारा जीवन, हमारे कार्य और हमारी महिमाएँ निश्चित रूप से उस निर्माता के लिए हैं जिसने सब कुछ बनाया है और जो हमारे उत्तम, श्रेष्ठ और शुद्ध कार्यों के लिए वज्र बनाता है और युद्धों में, संघर्षों में और कठिन समय में हमें शांति देता है। सर्वोच्च सत्ता के विषय में गहरी चेतना सर्वोच्च ऊर्जा की किरणों की तरह हमारे मतिष्क के आवरणों के केन्द्र बिन्दु पर प्राप्त होती है। सूर्य की किरणें, बादलों के केन्द्र में पहुंचती हैं। इस प्रकार वह गहरी चेतना बुराईयों को नष्ट कर देती है और शत्रुओं की शक्तियों को भी नियंत्रित कर लेती है। ऐसा व्यक्ति सम्पन्नता और शक्ति को धारण करता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की पूजा का वास्तविक लाभ क्या है?

उच्च चेतना का जीवन क्या है?

परमात्मा की महिमा के लिए समर्पित जीवन का सरल सा अर्थ है कि अपने अन्दर की मूल शक्ति को महिमा मंडित करते हुए जीना। परमात्मा की पूजा आपके जीवन से बाहर कुछ भी नहीं है, परन्तु इसका सम्बन्ध केवल अपने अन्दर की मूल आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाना है। इस प्रकार बढ़ी हुई आध्यात्मिक शक्ति के साथ आप निश्चित रूप से अपनी सभी बुराईयों तथा बाहरी शत्रुओं का भी नाश करके सुख और शांति प्राप्त कर पाओगे। इस प्रकार, परमात्मा की पूजा के नाम पर, आप केवल मात्र अपनी आध्यात्मिक कलाओं को ही उन्नत करते हो। इसी को उच्च चेतना का जीवन कहते हैं। जो निम्न स्तर की पाश्चिक वृत्तियों से मुक्त होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.4 (कुल मन्त्र 698)

अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्ट्रेव तत्सिनाय ।

गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तीन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए हैं (परमात्मा के लिए) (स्तोमम्) परमात्मा की महिमाएँ (सम् हिनोमि) समान रूप से फैले हुए और बढ़े हुए (रथम्) रथ (न) जैसे (तष्ट्रेव) रथ के निर्माता (तत्सिनाय) रथ के स्वामी के लिए (गिरः) वैदिक विवेक की वाणियाँ (च) और (गिर्वाहसे) वैदिक विवेक की वाणियों को धारण करने वाले (सुवृक्ति) बुराईयों का त्याग करके उत्तम लक्षण (इन्द्राय) सर्वोच्च इन्द्र के लिए (विश्वमिन्वम्) सर्वत्र व्यापक आहुतियाँ, ज्ञान (मेधिराय) ज्ञान के स्रोत की अनुभूति ।

व्याख्या :-

रथ का निर्माता किसके लिए रथ का निर्माण करता है?

हमें अपना जीवन किसके लिए बनाना चाहिए?

मैं परमात्मा की महिमाओं को प्राप्त करता हूँ और धारण करता हूँ निश्चित रूप से उसकी अनुभूति के लिए और उन महिमाओं को समान रूप से फैलाने के लिए और उनके संवर्द्धन के लिए जिस प्रकार एक रथ का निर्माण करने वाला उस रथ को उसके स्वामी के लिए समर्पित कर देता है।

वैदिक विवेक की वाणियाँ सर्वोच्च इन्द्र के लिए हैं जिससे उन वाणियों को धारण करने वाले बुराईयों का त्याग करके उत्तम लक्षण पैदा कर सकें और उन्हें धारण कर सकें। हमारी आहुतियाँ और ज्ञान सर्वत्र व्याप्त हो जाता है और हमें उस ज्ञान और आहुतियों के स्रोत की अनुभूति प्राप्त करने में सहायक होता है।

जीवन में सार्थकता :-

'पाओ और फैलाओ' से क्या अभिप्राय है?

वैदिक विवेक का अनुसरण न करने की क्या हानियाँ हैं?

हमें अपना यह शरीर रथ अर्थात् अपना जीवन इस प्रकार से तैयार और बनाकर रखना चाहिए जो इसके स्वामी को सृष्टि चलाने में सहायता कर सके। हमें अपने ज्ञान और आहुतियाँ सबके कल्याण के लिए फैला देनी चाहिए। वैदिक विवेक का यही सार है। 'इसे पाओ और इसे फैलाओ', चाहे वह भौतिक हो या मानसिक। इस प्रकार हम इस सृष्टि का उपयोग समुचित प्रकार से कर पायेंगे और इसके निर्माता की अनुभूति प्राप्त कर सकेंगे।

पदार्थों और ज्ञान को केवल स्वार्थ के लिए प्रयोग करना, अपने जीवन पर या अपने परिवार पर या एक वर्ग पर केन्द्रित रहना विवादों और युद्धों को जन्म देता है। मनुष्यों के बीच सद्भाव तथा मनुष्यों और प्रकृति के बीच सद्भाव असंतुलित हो जायेगा। चारों तरफ सद्भाव बिगड़ने पर मानसिक असंतुलन, प्रकृति का असंतुलन और संक्षिप्त में कलियुग का वर्तमान दृश्य पैदा होता है। अतः कलियुग की समस्याओं का एक मात्र समाधान है कि हम वैदिक विवेक का अनुसरण करें - 'पाना और फैलाना।'

सूक्ति :-

(विश्वमिन्वम् मेधिराय) हमारी आहुतियाँ और ज्ञान सर्वत्र व्याप्त हो जाता है और हमें उस ज्ञान और आहुतियों के स्रोत की अनुभूति प्राप्त करने में सहायक होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



पवित्र वेद

स्वाध्याय एवं शोध कार्यक्रम

ऋग्वेद मन्त्र 1.61.3 (कुल मन्त्र 697)

अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षा भराम्याङ्गूषमास्येन ।

मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरि वावृधध्यै ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (त्यम) उस (उपमम) निकटता से उसका अनुसरण करने वाले (स्वर्षम) प्रसन्नता की वर्षा करने वाले (भरामि) धारण करते हैं (आंड़गूषम) परमात्मा की महिमा का गान करना (आस्येन) मुख से (मंहिष्ठम) अत्यन्त महान् (अच्छोक्तिभिः) श्रेष्ठ वाणियों के साथ (मतीनाम) सम्मानित और उदार लोगों का (सुवृक्तिभिः) बुराईयों का त्याग करके उत्तम लक्षणों का अनुसरण करने वाले (सूरिम) महान् ज्ञान (वावृधध्यै) प्रगति के लिए, बढ़ाने के लिए ।

व्याख्या :-

परमात्मा की अनुभूति कैसे करें?

परमात्मा की अनुभूति क्यों करें?

कौन परमात्मा की महिमागान करता है और उसका अनुसरण करता है?

जो लोग अपनी उन्नति, अपनी वृद्धि के इच्छुक होते हैं वे परमात्मा का अनुसरण करते हुए बड़े निकट उसकी अनुभूति प्राप्त करते हैं । क्योंकि वह प्रसन्नता की वर्षा करने वाला है । ऐसे लोग अपने मुख से परमात्मा की महिमा का गान करते हैं और उसे धारण भी करते हैं । सम्मानजनक और उदार लोगों की श्रेष्ठ वाणियों के साथ परमात्मा महान् रूप में स्थापित होता है । ऐसे श्रेष्ठ वक्ता महान् ज्ञान वाले होते हैं और वे बुराईयों का त्याग करके उत्तम लक्षणों का अनुसरण करते हैं ।

जीवन में सार्थकता :-

प्रसन्नता की मूल वर्षा करने वाला कौन है?

अपने जीवन में किसी भी महान् व्यक्तित्व का अनुसरण कैसे करें?

परमात्मा की महिमागान का उद्देश्य उसका आत्मा में अनुसरण करना है । एक बार जब हम उसे अपनी आत्मा में अनुभव कर लेते हैं तो हमें महसूस होता है कि हर प्रकार की प्रसन्नता की मूल वर्षा करने वाला अकेला वही है । हम अपने जीवन में जो कुछ भी भौतिक वस्तुओं या विचारों का आनन्द प्राप्त करते हैं, उन सबका स्रोत वही है । अतः परमात्मा का महिमागान करने के बाद उसे अपने हृदय में तथा मन में धारण करना चाहिए जिससे जीवन में उसका अनुसरण कर सकें । परमात्मा का निकटता के साथ अनुसरण करने का अर्थ है उसकी महिमाओं का गान करना, उन्हें धारण करना और उनका अनुसरण करना ।

यदि आप जीवन में किसी भी महान् व्यक्ति का अनुसरण करना चाहते हो तो उसका महिमागान करो, अपने मन और हृदय में इन महिमाओं को धारण करो और जीवन में उनका अनुसरण करो । उच्च स्तर की वह ऊर्जा, जिसकी आप प्रशंसा करते हो और जिसका महिमागान करते हो, बदले में आपको भी ऊर्जान्वित कर देती है ।

सूक्ष्म :-

(अच्छोक्तिभिः मतीनाम् सुवृक्तिभिः सूरिम वावृधध्यै) सम्मानजनक और उदार लोगों की श्रेष्ठ वाणियों के साथ परमात्मा महान् रूप में स्थापित होता है । ऐसे श्रेष्ठ वक्ता महान् ज्ञान वाले होते हैं और वे बुराईयों का त्याग करके उत्तम लक्षणों का अनुसरण करते हैं ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on TELEGRAM app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.61.2 (कुल मन्त्र 696)

अस्मा इदु प्रयइव प्र यंसि भराम्याङ्गूषं बाधे सुवृक्ति ।

इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त ॥ २ ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (प्रयः) संतुष्टि देने वाला भोजन और सम्पदा (इव) जैसे कि (प्रयंसि) स्वयं को देता है (भरामि) धारण करना (आंड़गूषम्) परमात्मा की महिमाओं का गान (बाधे) शत्रुओं को रोकने योग्य (सुवृक्ति) उत्तम लक्षण पैदा करना (इन्द्राय) एक इन्द्र के लिए (हृदा) हृदय से (मनसा) मन से (मनीषा) बुद्धि से (प्रत्नाय) प्राचीन है, सनातन है (पत्ये) संरक्षक (धियः) बुद्धि तथा कार्य (मर्जयन्त) शुद्ध करता है।

व्याख्या :-

हम परमात्मा की महिमा का गान क्यों करते हैं?

हमारा प्राचीन संरक्षक कौन है?

हमें शारीरिक और मानसिक रूप से कौन शुद्ध करता है?

आपको निश्चित रूप से स्वयं को ही परमात्मा के प्रति समर्पित कर देना चाहिए, जिस प्रकार आप संतोषजनक भोजन और सम्पदा स्वीकार करते हो और ग्रहण करते हो। आपको परमात्मा का महिमागान करके उसे धारण करना चाहिए, क्योंकि ये शत्रुओं और बुराईयों को रोकने में सक्षम है तथा हमारे अन्दर उत्तम आदतें और लक्षण पैदा करने में सक्षम हैं।

इसीलिए मननशील व्यक्ति सर्वोच्च इन्द्र की अनुभूति के लिए अपने हृदय, मस्तिष्क और बुद्धि से प्रयास करते हैं, जो कि हमारा प्राचीन संरक्षक है और हमारी बुद्धियों तथा कार्यों को शुद्ध करता है।

जीवन में सार्थकता :-

भगवान के साथ हमारा सम्बन्ध बार-बार भोजन करने के समान किस प्रकार है?

हम बार-बार भोजन स्वीकार करते हैं और ग्रहण करते हैं, यह हमारी शारीरिक माँग है। इससे हमारा शरीर संरक्षित होता है। यह हमारे विकास में सहायक है। यह हमें बल देता है।

इसी प्रकार हमें स्वयं को परमात्मा के प्रति समर्पित कर देना चाहिए, अपने जीवन में परमात्मा की उपस्थिति के प्रति सचेत रहना चाहिए और हमारे भीतर उस मूल शक्ति के साथ प्रेम पूर्ण सम्बन्ध के प्रति भी सचेत रहना चाहिए। हमें इस उच्च स्तरीय चेतना में प्रतिक्षण बार-बार जीना चाहिए, क्योंकि परमात्मा के साथ हमारे इस चेतन रिश्ते से निम्न लाभ होंगे :—

1. मानसिक शुद्धि प्राप्त होगी।
2. बुराईयों और शत्रुओं के विरुद्ध हमें स्थाई संरक्षण मिलेगा।
3. हमारे अन्दर उत्तम आदतें और लक्षण पैदा होंगे।

सूक्ति :-

(इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा) मननशील व्यक्ति सर्वोच्च इन्द्र की अनुभूति के लिए अपने हृदय, मस्तिष्क और बुद्धि से प्रयास करते हैं।

(प्रत्नाय पत्ये धियः मर्जयन्त) परमात्मा हमारा प्राचीन संरक्षक है और हमारी बुद्धियों तथा कार्यों को शुद्ध करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 1.61.1 (कुल मन्त्र 695)

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय ।

ऋचीषमायाद्विगव ओहमिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा ॥

(अस्मै इत् उ) निश्चय से यह उसके लिए है (परमात्मा के लिए) (प्र – हर्मि से पूर्व लगाकर) (तवसे) बलशाली, बढ़ी हुई शक्तियाँ (तुराय) तीव्रता से कार्य करने वाले (प्रयः) संतोष प्रदान करने वाला भोजन और सम्पदा (न) जैसे (हर्मि – प्र हर्मि) देता है, प्राप्त करने योग्य (स्तोम) प्रशंसाएं (माहिनाय) महिमाओं से परिपूर्ण, उत्तम लक्षण (ऋचीषमाय) असीम प्रशंसाएं (अद्विगवे) बिना बाधा का मार्ग (ओहम) प्राप्त करने योग्य (इन्द्राय) परमात्म, महान् राजा, इन्द्रियों का नियंत्रक (ब्रह्माणि) उत्तम सुसंस्कृत (राततमा) देने के योग्य ।

व्याख्या :-

परमात्मा प्रशंसा के लायक क्यों है?

हम प्रशंसाएँ कैसे अर्जित कर सकते हैं?

इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, हमारी तरफ से महिमागान से भरी प्रशंसा एँ प्राप्त करने योग्य है। उसके असीम महान् लक्षण हैं, क्योंकि वह अपने कार्यों को मजबूत और बढ़ी हुई भावितयों के साथ तेज गति से सम्पन्न करता है और उसके मार्ग में कोई बाधा नहीं होती। हम उसे अपनी प्रशंसाएँ प्रस्तुत करते हैं, क्योंकि हमें उससे संतुष्टि जनक भोजन और सम्पदा प्राप्त होती है। वह हमें उत्तम सुसंस्कृत भोजन तथा सम्पदा देता है।

इसी प्रकार, एक इन्द्र पुरुष, इन्द्रियों का नियंत्रक, भी हर व्यक्ति से महिमायुक्त असीम प्रशंसा एँ प्राप्त करने का अधिकारी है। वह अपना कार्य बलशाली और बढ़ी हुई शक्तियों के साथ तीव्र गति से करता है। उसके मार्ग पर कोई बाधा नहीं होती। वह प्रशंसाओं को संतुष्टि जनक भोजन और सम्पदा की तरह प्राप्त करता है। वह सम्पदा को अन्य लोगों में बांटता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की प्रशंसाओं की तुलना संतुष्टि जनक भोजन और सम्पदा के साथ क्यों की गई है?

परमात्मा सर्वोच्च इन्द्र है। अपनी इन्द्रियों पर पूरा नियंत्रण करके एक सूत्रीय कार्यक्रम की तरह हम भी इन्द्र बन सकते हैं। हमें भी अपार शक्तियाँ और बुद्धि प्राप्त हो सकती हैं जिसके परिणामस्वरूप चारों तरफ से हमें प्रशंसा एँ, महिमा और सम्पदा एँ प्राप्त हों।

भोजन और सम्पदा की तरह परमात्मा की प्रशंसा करना हमारे अपने लिए ही उत्थान का माध्यम बन सकता है। इससे हमें मानसिक और आध्यात्मिक बल मिलता है। भोजन और सम्पदा की तरह परमात्मा की प्रशंसा करने की आदत नियमित बनाये रखनी चाहिए। जिस प्रकार एक सम्पन्न व्यक्ति भौतिक सम्पदा में आनन्द महसूस करता है, एक साधक अपनी आत्मा की सम्पदा में भी उसी प्रकार का आनन्द महसूस करता है। वह विशम परिस्थितियों में भी परमात्मा के प्रति प्रेम भाव से समर्पित रहता है। परमात्मा की प्रशंसा करना और उससे जुड़कर रहना उसे भौतिक सम्पदा से भी अधिक संतोष प्रदान करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Join on **TELEGRAM** app in your mobile. For any query please contact **Vimal Wadhawan Yogacharya 0091-9968357171**